राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भंडारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८० ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखक :—

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी

सम्पादक :—

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न



प्रकाशक :—

केशरलाल बख्शी

मंत्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण
५०० प्रति

महावीर जयन्ति
वि० सं० २०१९
अप्रेल १९६२



मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ
श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

★ विषय-सूची ★

प्रकाशकीय	....	पत्र संख्या १–२
भूमिका	....	३–४
प्रस्तावना	....	५–२३
प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	....	२४–४८
,, ,, विवरण	....	४९–५६
विषय		पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एवं चर्चा	....	१—४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र	....	४८—९८
अध्यात्म एवं योगशास्त्र	....	९९–१२८
न्याय एवं दर्शन	....	१२९–१४१
पुराण साहित्य	....	१४२–१५९
काव्य एवं चरित्र	....	१६०–२१२
कथा साहित्य	....	२१३–२५६
८ व्याकरण साहित्य	....	२५७–२७०
९ कोश	....	२७१–२७८
१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान	....	२७९–२९५
११ आयुर्वेद	....	२९६–३०७
१२ छन्द एवं अलंकार	....	३०८–३१५
१३ संगीत एवं नाटक	....	३१६–३१८
१४ लोक विज्ञान	....	३१९–३२३
१५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र	....	३२४–३४६
१६ मंत्र शास्त्र	....	३४७–३५२
१७ काम शास्त्र	....	३५३
१८ शिल्प शास्त्र	....	३५४

		पत्र संख्या
१९ लक्षण एवं समीक्षा	....	३५५–३५९
२० फागु रासा एवं वेलि साहित्य	....	३६०–३६७
२१ गणित शास्त्र	....	३६८–३६९
२२ इतिहास	....	३७०–३७८
२३ स्तोत्र साहित्य	....	३७९–४५२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	....	४५३–५५६
२५ गुटका संग्रह	....	५५७–७९९
२६ अवशिष्ट साहित्य	....	७९९–८००
	....	८०१–८८४
७ ग्रंथानुक्रमणिका	....	८८५–९२८
८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार	....	९२९–९३०
९ शासकों की नामावलि	....	९३१–९३९
१० ग्राम एवं नगरों की नामावलि	....	९४०–९४३
११ शुद्धाशुद्धि पत्र		



★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मट्टसार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, खुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा, इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness. तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में यथाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी बज, अनूपचंदजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी छाबड़ा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो. सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूं कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

ता० ३१—८—६१ **केशरलाल बख्शी**

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर उठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्त्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की ब्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ़ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) में नगरों की बसापत का संवत्‌वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो : संवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शतियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकडी, व्याहलो, बधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छप्पय, भावना, बिनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, बारामासा, बटोई, बेलि, हिंडोलणा, चूनडी, सज्झाय, बाराखड़ी, भक्ति, बन्दना, पच्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूल्य सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्त्ता इस भारी दायित्व के प्रति जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहु व्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महावीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान बीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय
३-१०-१९६१

वासुदेव शरण अग्रवाल

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हे नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भन्डारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भन्डार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से ग्रन्थों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

४. पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। ये शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानो के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उतनी आनाकानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ५५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्ठों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि ये ग्रंथ भंडार नगर कस्बे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर आरम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वी शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी नन्दलाल छाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द बिलाला (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रन्थों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार है और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ञ भण्डार प्रमुख हैं। ग्रथ सूची में आये हुये इन भंडारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह भंडार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय[1] भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भंडार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्त्ति सुरेन्द्रकीर्त्ति, सुखेन्द्रकीर्त्ति एवं नरेन्द्रकीर्त्ति का क्रमशः संवत् १८१५,

---

१. देखिये ग्रंथ सूची पृष्ठ संख्या १९६, व ४६०

१८२८, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक[1] हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२४७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह हैं।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वी, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वार्थ सूत्र (सं० १४५८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्मसंग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४२) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्दि कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द्र (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (असग कवि सं. १५५२) णेमिणाह चरिए (लक्ष्मण देव सं. १६३६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं. १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं. १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

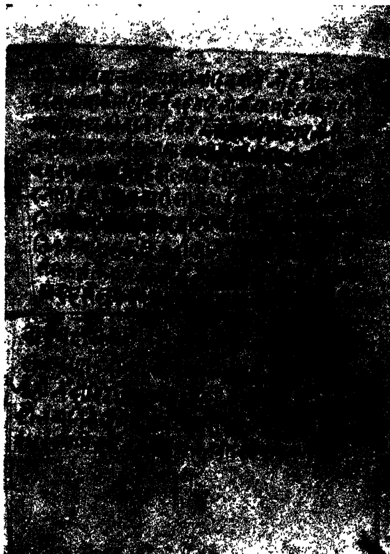
शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

---

१. भट्टारक पट्टावली: आमेर शास्त्र भंडार जयपुर वेष्टन सं० १७२४

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी




पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की
मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मलूकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्त्ति एवं देवेन्द्रकीर्त्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्त्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमलसेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रल्ह कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्त्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) बिहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनायें हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इसी लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसालंकृति (आ० विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ में सुल्तान गयासुद्दीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डालूराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में अल्हू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मटसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छाबड़ा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) छत्रपति जैसवाल की मनमोहन पंचविंशति भाषा (सं० १९१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छाबडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १९२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनन्दिपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। यहां विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर कोंली के कुआ के पास चौकडी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालूरामजी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों में पं. जयचन्द्र छाबड़ा कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं. १८२२) खुशालचन्द कृत त्रिलोकसार भाषा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं. १८८३ एवं छीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

'घ' भंडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत है। यह मन्दिर वैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें वीरनन्दि कृत चन्द्रप्रभ चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भादवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (सं० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की षष्ठ्यधिक शतक की टीका संवत् १५७६ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। भंडार में ऋषिमंडल स्तोत्र, ऋषिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ड, अष्टान्हिका जयमाल की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बार्डर सुन्दर बेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (ङ भंडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान झूंथारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् १९६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति-

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों में भ. हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ. शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१९ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश बत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनायें हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्नाय के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छाबड़ा, डालूराम। मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे। प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं. १८७७, गोम्मटसार सं. १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८७, छत्र चूड़ामणि सं० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	ले. का सं० १५५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	सं० १६०७	"
अमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभवजिणणाह चरिए (अपभ्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (र० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं। भंडार में पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र भंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी	
सीमन्धर स्तवन	"	"	"	"
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	"	"	"

नेमीश्वर चौमासा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,,	,,	,, ,,
नेमीश्वर रास	मुनि रतनकीर्ति	,,	,, ,,
नेमीश्वर हिंडोलना	,,	,,	,, ,,
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	,,	र० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	डालूराम	,,	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बूचराज, छीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय है। संवत् १६२६ में रचित डूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० में रचित हरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में उमास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६८३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं. १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) सं. १६५३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

९ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १५६४, पं० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर बिजयराम पांड्या जयपुर (झ भंडार)

बिजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीबा चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र. का. १७५६) स्योजी-राम सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत षडलेश्यावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ञ भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रास्ता चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०४ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ५४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४५५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञात ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले. काल	भाषा
१५३५	षट्पाहुड	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	णेमिणाहचरिए	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	"

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले. काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५१४	”
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	”
१०२१	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	”
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	”
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	”

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छाबड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेंट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३९९ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पाण्डव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्यामसिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा वंशीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहां इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहां दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थंकरों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैनाचार्यों ने अपने पाण्डित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है।। इस बार हमने फागु, रासो एवं बेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैनेतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलियां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने वृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष बिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से[1] भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सबं प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२९७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

---

१. देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jain Granth Bhandars in Rajsthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुवे ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१९२०
९७	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं. टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२९२५	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३९५२	पंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
४४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
५३८२	मिथ्यात्व खंडन	बख्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	टेकचंद	—
५९५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मरायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, अ एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई अ भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द्र, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत हैं। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलियां, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं तो कहीं बिना पुट्ठों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा यह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्त्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट पं. सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४१ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये प्रशंसनीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छाबड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्द्रलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर, भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य किया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं. परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनांक १०—११—६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे श्रीकुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु-रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री श्रीगुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाग्रंथ कर्मक्षयार्थं लोहट सुत पंडित श्री सावलदास पठनार्थं॥ काव्य की एक प्रति ज भंडार में हैं। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आध्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम षट् पद छप्पय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जाणंति गुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्व परम्मुहा विरला।
ते विरला जगि अत्थि जिकिवि परदव्वु ण इछहिं, ते विरला ससहाव करहिं रुइ णियमणि पिछहिं॥
विरला सेवहिं सामि णिच्चु णिय देह वसंतउ, विरला जाणहिं अप्पु शुद्ध चेयण गुणवंतउ।
अणु पत्तणु दुल्लह लहिवि सरवय कुलु उत्तमु जियउ, जिणु एम पयंपइ णिसुणि बुह गाह भणिण छप्पय कियउ॥

इसकी एक प्रति ज भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभा-चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनंन्दि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्ध-मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसमर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुमहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशो स्वलीलया गच्छति सर्वलोके॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है। यह अभीतक अप्रकाशित है।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं। एक बिहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास बिहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे।| बिहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबड़ा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी। मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है। पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है। कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सुधरो, संघई सकल बखान।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की बांनी, जगत मांहि प्रगटै सुखदानी।
या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांहि अभिलाषी॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा।
देवीसिंघ नाम सब भाषै, कवित मांहि [illegible] राखै॥

गीता छंद

श्री सिद्धांत उपदेशरत्नमाला रतनयुत मंडित करी
सब सुकवि कंठ करहु भूषित सुभवलोकित विधिकरी ।।
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम विलात विकास है।
इमि पढ़े परमागम सुवानी विदत रुचि अवदात है ।।

दोहा

सुखनिधान नरवरपती, छत्रपति अवतंस।
कीरति वंत प्रवीन अति, राजत कूरम वंश ।।१६४।।
जाके राज सुचैन सौं, विना ईति अरु भीति।
रच्यौ ग्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ।।१६५।।
सत्रहसै अरु छएनवै, संवत् विक्रमराज।
भादव सुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ।।१६६।।
ग्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार।
जे समझे याको अरथ ते पावै भवपार ।।१६७।।

चौबोला

सावन वदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह ग्रंथ।
भादव वदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ ।।
एक अधिका आठ दिना में कियो समापत आंनि।
पढे सुनै प्रकटै चितआनि बोध सदा सुख खांनि ।।१६८।।

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा ।।

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है.—

"अथ गोम्मटसार ग्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नैं संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है।"

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरं।
टीकां गुम्मटसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है। [1]मुख्तार साहब ने उसकी गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है। इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहाभ्यंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिंधुरसिंहायमानसिंहनंदि मुनींद्राभिनंदित गंगवंशललामराज सर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेय-श्रीमद्राचमल्लदेव महावल्लभ—महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्चामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपकं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मटसारनामधेयं पंचसंग्रहशास्त्रं प्रारभ्य समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयन् तत्रादौ मलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपपरं मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूत्रं कथयति।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीमदर्हन्मार्तांस्तान् वृषभादि जिनेश्वरान्।
धर्ममार्गोपदेष्टृत्वात् सर्वकल्याणदायिकान् ॥१॥
श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वादवेदकं।
श्रीमद्गुम्मटसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥२॥
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्षे सुन्दरे।
चतुर्दशशते षट्-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥३॥
विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भि: संयुतसप्ततौ ॥४॥

---

1. देखिये पुरातन जैन वाक्य सूची प्रस्तावना पत्र ८८ :

कार्तिके चासिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने।
शुक्रे च हस्तनक्षत्रे योगे च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंद्याम्नाये सुसद्गणे।
बलात्कारे अगम्नमे गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
श्रीमत्कुंदकुंदाख्य सूरेरन्वयके भवत्।
पद्मादिनंदि दित्याख्यो भट्टारकविचक्षणः ॥ ७ ॥
तत्पट्टांभोजमार्त्तंडः चंद्रांतश्च शुभादिक।
तत्पदस्थोभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिधोगणी ॥ ८ ॥
तत्पट्टे सद्गुणैर्युक्तो भट्टारकपदेश्वरः।
पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ ९ ॥
तत्शिष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्क्रमांबुधि चंद्रमा।
तदाम्नाये भवत भव्यास्ते वर्ण्यते यथाक्रमं ॥१०॥
पुरे नागपुरे रम्ये राजो महादखानके।
पाटणीगोत्रके धुर्ये खंडेलवालान्वयभूषणे ॥११॥
दानादिभिर्गुणैर्युक्तः लूणानामविचक्षणः।
तस्य भार्या भवत् शस्ता लूणाश्री चाभिधानिका ॥१२॥
तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः।
राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संघभारधुरंधर ॥१३॥
तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका।
शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥१४॥
प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारधुरंधरः।
तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचक्षणा ॥१५॥
दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी।
प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥१६॥
द्वितीयो देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः।
पतिव्रता गुणैर्युक्ता भार्यादेवासिरीति च ॥१७॥
पितुर्भक्तो गुणैर्युक्तो होलानामातृतीयकः।
होलादेवा च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥१८॥
लिखापि दत्तं निर्मिलै सुभक्तितः।
सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि गुम्मट ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्मोद्यानये।
हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है। यह रचना मुनि भद्र-सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है। कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप झणकार। पणघट पांणी भरण कौं, छार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात। ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अगनि मांझि जरिबौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान। शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान। उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं। पद्य संख्या १८८ है। रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है। श्री मोतीलाल[1] मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६७५ माना है। इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी[2] कथा भी मिलता है। अभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है। इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार डूंगरपुर में प्राप्त हुई है।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है। ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देव-कीर्ति के शिष्य थे। कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था। रचना में

---

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १९१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ[1] रासो: (सं० १६६७) बावनी[2], जीरावलि पार्श्वनाथ स्तवन: (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थंकर बिनती[3] (सं० १७२३) आदीश्वर[4] बधावा आदि रचनायें मिल चुकी है।

६ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ विद्वान थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बड़ी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित वंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।
ब्रह्म जिनदास भासैं विवुध प्रकासैं, पढई गुणे जे धम्मं धनि ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

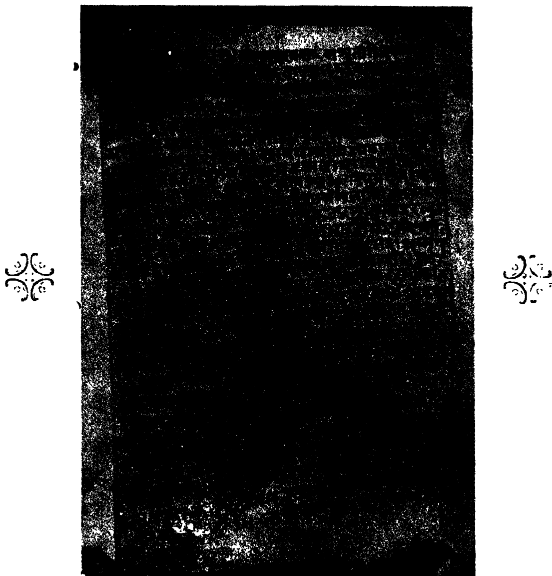
इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रल्ह कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२९७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

---

१. राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृष्ठ ७४
२. „ „ „ पृष्ठ १०६
३. „ „ भाग ३ पृष्ठ १४१
४. „ „ „ पृष्ठ १५२



रल्ह कवि द्वारा संवत् १३५४ में रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्रः—
पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
(इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की पृष्ठ संख्या ३० पर देखिये)





१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित गोम्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र।
यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।
(सूची क्र. सं. ६७ वे. सं. ४०३)



संवत् तेरहसे चउवरणे, भादव सुदिपंचमगुरु दिएणे।
स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्हु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, बाईसइ पाडल उतपाति।
पंचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्हु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा बिरचित जिएयत्तचरिउ (सं. १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल पद्य ५५४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों में गया था। उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है। इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी। कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौं जान। पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमों, बर दसमों कर लेखि। इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

बरष लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि। वा दिन उतनी घडी, जु पल बीते लग्नविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय। ता घर के मूल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं। इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं. नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिषिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिष्ठोदयः।
श्रीमान् मुगलवंशशारद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सद्यात्रधर्मोन्नतेः।
तन्मंत्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमन् टोडरसाह पुत्र निपुणः सद्दानचिंतामणिः।
श्रीमन् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिरवश्रिया।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः।
श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविपया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पाशा था। स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन "अब नेरो मुख देखूं जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है।

१३ णेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है। महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है:—

वारहसयाइं सत्तसियाइं, विक्कमरायहो कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरणु, णरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी। ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की संख्या १४५ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति अ भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं। प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥
जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसद्देवैः शुभेंदुमुनितेरितैः । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति—हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं। यह रचना अ भंडार में संग्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी क भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेंडूगांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १९३२ में समाप्त किया था।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें चौवीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है।

मोक्ष की राह बनावत जे। अरु कर्म पहाड करै चकचूरा,
विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, लब्धि के हेत नमौं परिपूरा।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ जानियो मेडूगाम सुधाम। मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान। वंश इक्ष्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय। केवल भक्ति सुधर्म की बसी सुहृदय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि। भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हंत है सिद्ध साध चपसार। तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार। मूलग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
कारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार। अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण।
संवत् १९५३ चैत्र कृष्णा १३ बुधे।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलाला थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिण्डौन) आकर रहने लगे थे। उक्त विद्वान के अतिरिक्त १९ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १९२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है।

बीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार।
कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ९९० में समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १९१८), योगसार भाषा (संवत् १९१९), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १९१९), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १९२०), षोडश-

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अष्टाह्निकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूषो। सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूंवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुयणिंद सदपुज्जं। नेमिससिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहएं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है। यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं। ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंच-विंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है । रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूं तह्म पाय करू सेव ।
हवे निजामणि कहु सार, जिम क्षपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो क्षपक सुणे जिनवाणि, संसार अथिर तू जाणि ।
इहां रह्या नहिं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर ॥ २ ॥
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी ।
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण मुमी जित्यो मार ।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो भार ।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार ।
जे क्षपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ५३ ॥
श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणेसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे । अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि मुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात्।
पूर्व्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात्॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो..........।
शाश्वत् छ्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्ततात्॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति ञ भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति द भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहइं घूघलि सिवदास पुत्तेण सग्गग्गवाल छीजा सुपसाएण लब्भए णाणं अरविंद दिक्खा अट्ठमसंधी परिसमत्तो॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान थे तथा क्णहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था। पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे। रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, भुजंगप्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' भण्डार के संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखडी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि खण्डेलवाल जैन थे। ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामें जाकर रहने लगे थे। पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया हैं वह निम्न प्रकार है:—

> दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए।
> तिन से पुरस तणु संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय॥ ३२॥
> दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो।
> रामकृष्ण तैं जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय ॥ ३३॥
> सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय।
> तहां भी बहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि॥

× × ×

साहिपुरा सुभथान में, रूलो सहारो पाय।
धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय॥
नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान।
तिन अपने भुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि॥
ताके राज सुराज में ईतिभीति नहीं जान।
अवलूं पुर में सुखथकी तिष्ठे हरष जु आनि॥
करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि।
ग्रंथ करन कछु बीचि में, आकुल उपजी नांहि॥ ५३॥
साहि नगर साहौ भयो, पायो सुभ अवकास।
पूरण ग्रंथ सुख तैं कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यवास॥ ५४॥

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है। इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है। कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, उपरि बीस दोय फिरि आंनि।
फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि॥ ५५॥

प्रारम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्यास्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्त्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की। टेकचंद ने संभवतः इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी। कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संसकृत परवीन जु थए।
तौं यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान॥
जिन धुनि तो बिन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय।
तो प्राकृत मैं करै बखांन, तब सब ही सुनि है गुणखानि॥ ३॥
तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत बानी श्रुति ठई।
फेरि अलप बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्त्ति आदिक जोय॥
तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए॥

२७ बारहभावना

पं० रइधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्रायः सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश-ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखै घट मांहि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं:—

संसार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × ×

करन करावन ग्यान नहिं, पढ़ि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि विन ऊपजै, मोहा तणी हु कोंर ॥

रचना में रइधू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर "इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण" लिखा हुआ है जिससे इसको रइधू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्त्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द्र द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान[1] थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

[1] विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य-जैन सन्देश शोधांक-११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्त्तिः पूतकीर्त्तिः स तस्माद्। अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः॥
जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः। शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नही रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई पट सत पन वरसहि। प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसहि॥
उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी। पूर्वाषाढ नक्षत्र अर्क दिन सब सुखकारी॥
वर वृद्धि जोग सिक्षत इहग्रंथ समापित करिलियो। अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौं धरि मन नेह॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करैं चारि बात कौं। उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के॥
दोष देखि दाबै पीठ पीछे होय जस गावै। कारज करत रहै सदा उपकार के॥

साधारन रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके। जब तब वचन प्रकासत पचार के ।।
दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार। मति कौ सुठार गुनवीसरै न यार के ।।२१३।।
अंतरंग बाहिज मधुर जैसी किसमिस। चलत्तरचम कौ कुबेरवांनि घर है ।।
गुन के बधाय कूं जैसे चन्द सागर कूं। दुख तम चूरिबे कूं दिन दुपहर है ।।
कारज के सारिबे कूं हरू बहू विधना है। मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है ।।
ऐसे सार मित्र सो न कीजिबे जुदाई कभी। धन मन तन सब वारि देना वर है ।।२१४।।

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है।

२१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है। घासी के पिता का नाम बहालसिंह था। कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी। ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं। कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गति मैं घसीट फिरयौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है।
भारामल मित्र वो बहालसिंह पिता मेरौ, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है ।।
यो मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है।
दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है ।।

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, बरनुं वस्तु स्वाभाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मंझार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ।।
शुभ अशुभ मन की आयति होय, संग कुसंग तणो फल सोय।
पुद्गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूं करनी है तहकीक ।।

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभाने वाली है। ग्रंथ प्रकाशन योग्य है।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं।

३२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है। इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरक्षता में आकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे की चित धरी।।

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौं चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान।।
कवि बरनै छवि खांन की, सौ बरनी नहीं जाय।
कासमखांने सुजांन की अंग रही छवि छाय।।

रागमाला में भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी. विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे बरष, उपर बीते दोइ।
फागुन सुदी तनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ।।

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के।।

इति रागमाला ग्रंथ स्यामसिश्र कृत संपूरण।

३३ रुकमणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देशा भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रूक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, त्रोटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आणंद भरीए सोहती, त्रिभवणरूप मोहती।
रुणं झणंत नेधरी, सुचल चरण घुघरी॥
झब झबै झबक झाल, श्रवण हंस सोमती।
रतन हीर जडत जाम, खीर ली अनोपती॥
झलमलै ज चंद सूर, सीस फूल सोहए।
वासिग वेणि रुलै जेम, सिरह मणिज मोहए॥
सोवन मै रलहार, जडित कंठ मैं रुलै।
अबंध मोति जडित जोति, नाकिउ जलाढुलै॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैचन्दजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ५२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति झ भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:—

३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भादव मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥१६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही ॥१६७॥
सांगानेरी बसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खंड नाम।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥१६८॥
जैनधर्म की महिमां बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।
श्रावक लोक बसै सुजांण, सांझ संवारा सुणै पुराण ॥१६६॥
आठ विधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोष नहीं मन मैं धरै।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥२००॥
कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हुवा दोइसै प्रमाण।
जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥२०१॥
इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३४६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरननु चितलाय।
खेत्रपाल दुखहरन को, सुमति सुबुधि बताय ॥

चौपई

श्री जिनचंद्र सुवाच बखांनि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिजान।
इम सीख दीनी जीव दया आंनि, संतोष वंश लइ तिरहमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर कृत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

३९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ब्र० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र जैसे उच्चकोटि के विद्वान हुये।

व्रतकथा कोश भी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत पद्य में हैं। भ० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

असमगुण समुद्रान, स्वर्ग मोक्षाय हेतून।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधांक अंक ११

त्रिभुवनपतिभव्यैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) बाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये। इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रत्नविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था। इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे।

स रहसै अठसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष।
गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिक्ष ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है। कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:....

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूनौ को,
हाट हू बजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥
गोठै जैउ नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ।।

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची बनाइ ।
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ।।
पढै सुनै जो भाव धर, औरे देइ सुनाइ ।
मनवंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ।।

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अलाउद्दीन के साथ झगडा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोडने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अलाउद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है । कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कब और कहां लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिले रावपति साही षीर ज्यौ नीर समाही ।
ज्यों पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ।।
अलादीन हमीर से हुआ न हौस्यौ होयसे ।
कवि महेस यम उच्चरै वै सभांसहै तसु पुरवसै ।।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१.	४३८१	अनंतव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचंद्र	सं०	म	१६३०
२.	४३६२	अनंतचतुर्दशीपूजा	शांतिदास	सं०	ख	×
३	२८६५	अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	सं०	म	×
४.	४३११	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५.	५६६	अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचंद्र	सं०	अ	१६ वीं शताब्दी
६.	४४०१	अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	म	१८५१
७.	२५३५	आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८.	६१६	आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	सं०	ख	१३ वीं शताब्दी
९.	४४३५	ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	सं०	ख	×
१०.	४४८०	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	सं०	म	×
११.	२५४३	कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	म	×
१२.	५४५६	कथासंग्रह	ललितकीर्त्ति	सं०	म	×
१३.	४४४६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	छ	×
१४.	३८२८	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	म	×
१५.	३८२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	पं० आशाधर	सं०	म	१३ वीं ,,
१६.	४४६७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	म	१५ वीं ,,
१७.	२७५८	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	सं०	म	१६ वीं ,,
१८.	४४७३	कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	म	×
१९.	२०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	म	×
२०.	४४८४	गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	सं०	ख	×
२१.	२०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	सं०	ङ	×
२२.	३८३९	गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्त्ति	सं०	म	×
२३.	११७	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×
२४.	११८	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	११	गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	सं०	क	×
२६.	५४३१	चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	सं०	म	×
२७.	२०४८	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनंदि	सं०	अ	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२८.	४५१२	चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं०	च	×
२९.	४६१४	ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	च	×
३०.	४६२१	णमोकारपैंतीसीव्रतविधान	कनककीर्त्ति	सं०	ङ	×
३१.	२१३	तत्ववर्णन	शुभचंद्र	सं०	अ	×
३२.	५४४६	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	भ	×
३३.	४७०५	दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं०	ङ	×
३४.	४७०६	दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लिभूषण	सं०	छ	×
३५.	४७०२	दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिसागर	सं०	ङ	×
३६.	४७२१	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	भ	१७७२
३७.	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनंदि	सं०	भ	×
३८.	४७२५	,, ,, ,,	जगत्कीर्त्ति	सं०	च	×
३९.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	सं०	अ	×
४०.	२१५२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं०	ट	×
४१.	४८१	निजस्मृति	×	सं०	ट	×
४२.	४८१९	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	भ	×
४३.	४८२३	पंचकल्याणकपूजा	,,	सं०	क	×
४४.	३६७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	सं०	भ	×
४५.	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं०	भ	×
४६.	१६१८	पुराणसार	श्रीचंदमुनि	सं०	भ	१०७७
४७.	५४४०	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	सं०	भ	×
४८.	४०५३	भूपालचतुर्विंशतिटीका	आशाधर	सं०	भ	१३ वीं शताब्दी
४९.	४०५५	भूपालचतुर्विंशतिटीका	विनयचंद्र	सं०	भ	१३ वीं ,,
५०.	५०५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	सं०	छ	१७५६
५१.	५३८१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभाचंद्र	सं० हिं०	भ	×
५२.	९७९	मूलाचारटीका	वसुनंदि	प्रा० सं०	भ	×
५३.	२३२३	यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं०	अ	×
५४.	२६८३	रत्नत्रयविधि	आशाधर	सं०	भ	×
५५.	२९३५	रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं०	भ	१६४४
५६.	२३५०	वर्द्धमानकाव्य	मुनिपद्मनंदि	सं०	भ	१३ वीं ,,

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	सं०	अ	१७२६
५८.	५४४७	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	सं०	अ	×
५९.	५२२५	शारदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	सं०	अ	×
६०.	५८२६	शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	सं०	छ	×
६१.	४१०७	शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१९६	षणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	सं०	अ	×
६३.	५४६	षष्ठ्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	च	×
६४.	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७	सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
६६.	४९४९	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	क	×
६७.	२७३१	सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमकरमुनि	सं०	अ	×
६८.	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ङ	×
६९.	३९३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५	यत्याचार	आ० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	अ	१५०५
७२.	६४५४	कल्याणकविधि	विनयचंद	अप०	अ	×
७३.	५४४	चूनडी	"	"	अ	×
७४.	२६८८	जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५.	५४३९	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप०	अ	१७ वीं
७६.	२०९७	गोमिणाहचरिउ	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
७७.	२०९८	गोमिणाहचरियं	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचउवीसी	महणसिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३९	दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०.	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८१.	४९८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	अ	×
८२.	२६८८	निर्झरपंचमीविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८३.	२१७९	पासचरियं	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३९	रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५.	२६८३	रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वीं

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
८६.	२४३७	सम्भवजिणणाहचरिउ	तेजपाल	अप०	व	×
८७.	५४५४	सम्यक्त्वकौमुदी	सहणपाल	अप०	अ	×
८८.	२६८८	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	अप०	अ	×
८९.	५४३९	सुगन्धदशमीकथा	"	अप०	अ	×
९०.	५३९१	अंजनारास	धर्मभूषण	हि० प०	अ	×
९१.	४३४७	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि० प०	ङ	×
९२.	२५०८	अठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचंद	हि० प०	अ	×
९३.	६००३	अनन्तकेछप्पय	धर्मचन्द्र	हि० प०	झ	×
९४.	४३८१	अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वीं
९५.	४२१५	अर्हनकचौढालियागीत	विमलकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६८१
९६.	५७६७	आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि० प०	ङ	×
९७.	५४२५	आदित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि० प०	अ	×
९८.	५३९२	आदीश्वरकासमवसरन	×	हि० प०	अ	१६६७
९९.	५७३०	आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	घ	१७४१
१००.	५९१५	आदिनाथस्तवन	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वीं
१०१.	५४८७	आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	×
१०२.	३८६४	आरतीसंग्रह	ब्र० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वीं शताब्दी
१०३.	३४००	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	हि० प०	अ	×
१०४.	४४२८	ऋषिमंडलपूजा	आ० गुणनंदि	हि० प०	अ	×
१०५.	२५४०	कठियारकानडरीचौपई	×	हि० प०	अ	१७४७
१०६.	६०५२	कवित्त	अगरदास	हि० प०	ट	१८ वीं शताब्दी
१०७.	६०६५	कवित्त	बनारसीदास	हि० प०	ट	१७ वीं शताब्दी
१०८.	५३९७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचंद	हि० प०	अ	१७ वीं शताब्दी
१०९.	५६०८	कविवल्लभ	हरिचरणदास	हि० प०	अ	×
११०.	३८६४	कृपणछंद	चन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी
१११.	५४८७	कृष्णरुक्मिणीवेलि	पृथ्वीराज	हि० प०	अ	१६३७
११२.	२५५७	कृष्णरुक्मिणीमंगल	पदमभगत	हि० प०	अ	१८९०
११३.	५९१५	गीत	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वीं शताब्दी
११४.	३८६४	गुरुछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५.	५६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि० प०	छ	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्त्ति	हि० प०	म	१७७७
११७.	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि० प०	क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचंद	हि० प०	च	१६२६
११६.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि० प०	ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	हि० प०	म	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि० प०	म	×
१२२.	१८७६	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	हि० प०	क	१६१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि० ग०	म	×
१२४.	१५४	चर्चासार	पं० शिवजीलाल	हि० ग०	क	×
१२५	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	हि० प०	म	१६६२
१२६.	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१२७.	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वीं शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौबीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	म	×
१२९.	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि० प०	म	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिषसार	कृपाराम	हि० प०	म	१७६२
१३१.	६०६१	ज्ञानबावनी	मतिशेखर	हि० प०	ट	१५७४
१३२.	५८२६	टंडाणागीत	बूचराज	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१३३.	३६६	तत्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्त्ति	हि० ग०	ङ	१८ वी „
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि० ग०	छ	१८ वी „
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि० ग०	म	१७ वी „
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचंद	हि० प०	क	१६ वी „
१३७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि० प०	क	१८६४
१३८.	६००६	तीसचौबीसीचौपई	श्याम	हि० प०	क्ष	१७४६
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१४०.	१७३६	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि० प०	क	१६२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि० ग०	क	१६२३
१४२.	४२४५	देवकीकीढाल	लूणकरणकासलीवाल	हि० प०	म	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि० ग०	क	१६६६

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१४४.	५८८१	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि० ग०	छ	१७३१
१४५.	५४०२	नगरों की वसापतका विवरण	×	हि० ग०	म	×
१४६.	२६०७	नागमंता	×	हि० प०	म	१८६३
१४७.	४२४६	नागश्रीसज्झाय	विनयचंद	हि० प०	म	×
१४८.	८११	निजामणि	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं शताब्दी
१४९.	५४४६	नेमिजिनंदव्याहलो	खेतसी	हि० प०	म	१७ वीं ,,
१५०.	२१५८	नेमीजीकाचरित्र	म्राणन्द	हि० प०	म	१८०४
१५१.	५३६२	नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषण	हि० प०	म	१६६८
१५२.	३८६४	नेमिनाथछंद	शुभचंद	हि० प०	म	१६ वीं ,,
१५३.	४२५४	नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि० प०	म	×
१५४.	२६१४	नेमिराजुलव्याहलो	गोपीकृष्ण	हि० प०	म	१८६३
१५५.	५४२६	नेमिराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	हि० प०	म	१७ वीं ,,
१५६.	५९१५	नेमीश्वरकाचौमासा	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वीं ,,
१५७.	५८२६	नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्त्ति	हिं० प०	छ	×
१५८.	५८२६	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	×
१५९.	३६५०	पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि० प०	छ	१८२३
१६०.	२१७३	पांडवचरित्र	लाभवर्द्धन	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७	पद	ऋषिशिवलाल	हि० प०	म	×
१६२.	१४३६	परमात्मप्रकाशटीका	खानचंद	हि०	क	१८३६
१६३.	५८३०	प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१६४.	५३६१	पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि०	म	१७ वीं ,,
१६५.	४२६०	पार्श्वनाथचौपई	पं० लाखो	हि० प०	ट	१७३४
१६६.	३८६४	पार्श्वछन्द	ब्र० लेखराज	हि० प०	म	१६ वीं ,,
१६७	३२७७	पिंगलछंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प०	म	१८६३
१६८.	२६२३	पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचंद	हि० प०	क	१९२८
१६९	५२५	बंधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०.	५८५६	बिहारीसतसईटीका	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१७१.	५६०८	बिहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि० प०	म	१८३४
१७२.	५४६७	भुवनकीर्त्तिगीत	बूचराज	हि० प०	म	१६ वीं ,,

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल	
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	हि० प०	घ	१७१४	
१७४.	३४८६	मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१९१६	
१७५.	६०४६	मनोहरमञ्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×	
१७६.	३८६४	महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	घ	१६ वीं	„
१७७.	२६३८	मानतुंगमानवतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×	
१७८.	३१८५	मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	ख	×	
१७९.	३४९१	मित्रविलास	घासी	हि० प०	क	१७८९	
१८०.	१९४८	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ग	१८८५	
१८१.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१	
१८२.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१९१२	
१८३.	५११३	रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	घ	१६ वीं	
१८४.	५५०१	रविव्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	घ	१७ वीं	„
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२	
१८६.	३४९४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	झ	×	
१८७.	५३९८	राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	घ	×	
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोरास	तिपरदास	हि० प०	ट	×	
१८९.	२६८९	रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं	„
१९०	६०९७	रोहिणीविधिकथा	बंसीदास	हि० प०	ट	१६९५	
१९१.	४९६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×	
१९२.	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७	
१९३.	४९५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×	
१९४.	६१०५	बसंतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वीं	„
१९५.	५५१९	वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	घ	×	
१९६.	२३५६	विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	अ	१७२४	
१९७.	३८६४	विजयकीर्त्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	घ	१६ वी.	„
१९८.	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१	
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	घ	×	
२००.	३७०४	षटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	झ	१७३०	
२०१.	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	घ	×	

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७	शीलरास	गुणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१७११
२०३	५६४१	शीलरास	ब्र० रायमलादेवसूरि	हि० प०	क	१६ वीं
२०४	३६६६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	अ	१६ वीं
२०५	२७०१	श्रेणिकचौपई	डू गावैद	हि० प०	अ	१८२६
२०६	२४१२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्त्ति	हि० प०	अ	१८२०
२०७	५३९२	समोसरण	ब्र० गुलाल	हि० प०	अ	१६६८
२०८	५५२८	स्याम्रबत्तीसी	नंददास	हि० प०	अ	×
२०९	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	अ	१७२४
२१०	१२१६	सामायिकपाठभाषा	तिलोकचंद	हि० प०	च	×
२११	३७०१	हम्मीररासो	महेशकवि	हि० प०	ङ	×
२१२	१११४	हरिवंशपुराण	×	हि० ग०	अ	१६७?
२१३	२७४२	होलिका चौपई	डूंगरकवि	हि० प०	छ	१६२९



भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।
राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है।
रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन संख्या ११४)

❀ श्री महावीराय नमः ❀

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१. **अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि** । पत्र सं० ५७ से ६८ तक । आकार १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन संख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२. **अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल** । पत्र सं० ३०३ । आ० ११½×८ इंच । भा० राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) विषय—सिद्धान्त । र० काल सं० १९१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान ङ भण्डार ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल सं० १९३५ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८१६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है ।

५. **अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन**·········। पत्र सं० ४९ । आ० ९×६ इंच । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है । अन्त में व्रतों एवं प्रतिमाओं का भी वर्णन किया हुआ है ।

६. **अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन**···············। पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७. **आर्हत्प्रवचन**··········। पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान ञ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ है। पांच अध्याय हैं।

८. अर्हत्प्रवचनव्याख्या………… ……। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भा० संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारांगसूत्र…………×। पत्र सं० ५३। आ० १०½×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—छठा पत्र नहीं है। हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है।

१०. आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक………… । पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान च भण्डार।

११. आश्रवत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। आ० ११¼×५½ इंच। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८९२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। प्राप्ति स्थान ञ भण्डार।

१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १८८३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान ञ भण्डार।

१४. आश्रवत्रिभंगी………… । पत्र सं० ६। आ० १२×५¾ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१५. आश्रववर्णन………… ……। पत्र सं० १४। आ० ११½×६½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १६६। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

१७. इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन सूरि। पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन………… ……। पत्र सं० २५। आ० ६¾×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। प्राप्तिस्थान अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१६. उत्तराध्ययनभाषाटीका...... .... । प० सं० ३ । ग्रा० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय-ग्रागम । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, ग्राला पूरण काज ।
चउवीसे जिणवर नमूं, चउवीसे गणधार ॥ १ ॥
धरम ध्यान दाता सुगुरु, ग्रहनिस ध्यान धरेस ।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन चउवमइ, मित्र छुए ग्रधिकार ।
ग्रलप ग्रकल गुण छइ घणा, कहूं बाल मति ग्रनुसार ॥ ३ ॥
चतुर चाह कर सांभलो, ऐ ग्रधिकार ग्रनूप ।
निद्रा विकथा परिहरी, सुणु ज्यो ग्रालस मूढ ॥ ४ ॥

ग्रागे साकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई हैं ।

२०. उदयसत्ताबंधप्रकृति वर्णन................। पत्र सं० ५ । ग्रा० ११×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१. कर्मग्रन्थसत्तरी.......... । पत्र सं० २८ । ग्रा० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान ख भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । ग्रा० १०½×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६८१ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान ख भण्डार ।

विशेष—पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वरषे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पांडे डालू पठनार्थ लिखितं सुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७६८ । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७ । वे० सं० १०५ । क भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि विद्यानन्दि के शिष्य अमैराम मलूकचन्द ने रूडमल के लिये की थी । प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है ।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६७१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मालपुरा मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया ।

२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० १०४ ङ । भण्डार ।

२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

३०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल x । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे संकेत दिये हुये है ।

३१. प्रति सं० १० । पत्र सं० ११ । ले० काल x । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—१५६ गाथायें हैं ।

३२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १६० । ज भण्डार ।

विशेष—सम्भावती में पं० रूडा महात्मा ने पं० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १७ । ले० काल x । वे० सं० १२३ । ञ भण्डार ।

३४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० का० सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२६ । ञ भण्डार ।

३५. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २१५ । ञ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में राव सूर्यसेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ख भण्डार ।

३७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८० । ख भण्डार ।

३८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ख भण्डार ।

३९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । व्य भण्डार ।

४०. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ५ से १७ । ले० काल सं० १७६० । अपूर्ण । वे० सं० २००० । ट भंडार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य पं० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की। प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ से ४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। गुजराती टीका सहित है।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी।

४३. कर्मप्रकृति………………। पत्र सं० १० । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भा० हिन्दी । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९५ । ख भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० ३७ । ङ भण्डार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७९८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्त्ता आ० नेमिचन्द्र हैं।

४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे सं० १२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

४८. कल्पसिद्धान्तसग्रह………………। पत्र सं० ५२। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६६। अ भण्डार।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा से प्रतिलिपि हुई थी। गुजराती भाषा में टीका सहित है।

अन्तिम भाग—मूलः—तेणं कालेणं तेणं समयणं……… ……सित्ताणं पडि बुद्धा।

अर्थ—तिणइ कालइं गर्भापहार कालइ तिणइ समयइ गर्भापहार थकी पहिली श्रमण भगवंत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरी सहित इ जिहुंता ने भणी इमजि जाणइ नेहरिणे गाम परियवतायइं। इहा थकी लेइ त्रिसलानी कूंखइ संक्रमाविस्यइं। अनइ जिणि वलाखइ संक्रमावइ ने वेला न जाणइ। अपहरणकाल अंतर्मुहूर्त्त मंजाबियइ अनइ उपयोग काल तिणि अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण। पर छद्मस्थनाउपयोग थिकउ। संहरण काल सूक्ष्म जाणिवउ वली श्री आचारांग मांहि कहिउलइ। संहरण काल तिणि जाणइ। परं ए पाठ सगलइ नहो। ते भणी आवीर्णन ही। तिसलानी कूंखि आया पछी जाणइ। जिणी रात्रिइ श्रमण भगवंत श्री महावीर देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्या सूती। कांई सूती, कांई जागती। यहं वाउदार स्फाटं जिस्या पूर्वइ वर्णव्या तिस्या चउदह महास्वप्न त्रिशला क्षत्रियाणी पइ माहराहभा खासी लीधा। इमउ स्वप्न देखि जागी। जे भणी कल्याण कारिया निरूपद्रव। धन धान्य ना करणहार। मंगलीक। स श्री कजियइ चरि वाजइ बीपइ घर पहुंता। हिवइ त्रिशला क्षत्रियाणी जिणइ पुकारइ सुपिना देखिस्यइ ने प्रसातइ वाचेस्या। य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तणइ अधिकारइ। एवं भाग्यवंत दान द्यइ। शील पालइ। तप तपइ। भावना भावई एवंविध धर्म कर्त्तव्य करइं ते श्री देवगुरु तणउ प्रसाद देवनइ अधिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्श्वनाथ तणइ प्रसादि गुरुनी परंपरायइ सुविहित चक्रचूडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री वर्द्धमान सूरि श्री। श्री जिनेश्वर सूरि। श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकब्बर पातिसाहि प्रतिबोधकं युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तत्पट्टे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तत्पट्टे प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवर्त्तइ। श्रीरस्तु।

संस्कृत में श्लोक तथा प्राकृत में कई जगह गाथाएँ दी है।

४८. कल्पसूत्र (भिक्खू अज्झयणं)…… ……। पत्र सं० ४१। आ० १०×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ६०६। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४६. कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र सं० ११६। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। अपूर्ण। वे० सं० ३६। छ भण्डार।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नही है। गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से ४०२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है। कहीं २ टब्बा टीका भी दी हुई है। बीच के कई पत्र नहीं हैं।

५१. कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० का × । ले० का सं० १६६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

५३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपाध्याय । पत्र सं० २५ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल सं० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० सं० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम में ग्रंथ की रचना हुई थी । टीका का नाम कल्पलता है । सारक ग्राम में पं० भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५४. कल्पसूत्रवृत्ति.......... । पत्र सं० १२६ । आ० ११×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१८ । ट भण्डार ।

५५. कल्पसूत्र .... । पत्र सं० १० से ४८ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है ।

५६. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० ६७ । आ० १२×७½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल शक सं० ११२५ वि० सं० १२६० । ले० काल सं० १८१६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं. ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्राचार्य है ।

५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५९. क्षपणासार—टीका............. । पत्र सं० ६१ । आ० १२½×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । क भण्डार ।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २७३ । आ० १३×८ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महा पं० टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१. गुणस्थानचर्चा ………………। पत्र सं० ४५। आ० १२×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०३। अ भण्डार।

६२. प्रति सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ५०४। अ भण्डार।

६३. गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

६४. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७३५ आसोज बुदी १४। वे० स० ३७६। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित।

६५. गुणस्थानचर्चा………………। पत्र सं० ३। आ० ९×४½ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १३६०। अपूर्ण। अ भण्डार।

६६. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २४। वे० सं० १३७। ङ भण्डार।

६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २२ से ५१। अपूर्ण। ले० काल ×। वे० सं० १३८ ङ भण्डार।

६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० का० सं० १८६३। वे० सं० ५३३। च भण्डार।

६९. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५। ले० का ×। वे० सं० २३६ छ भण्डार।

७०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ३४९। ञ भण्डार।

७१. गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ३३। आ० ७×७ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११६।

७२. गुणस्थानचर्चा एवं चौबीस ठाणा चर्चा…………। पत्र सं० ८। आ० १२×५½ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० का० ×। ले० का० ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३१। ट भण्डार।

७३. गुणस्थानप्रकरण…………। पत्र सं० ६। आ० ११×४ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त र० का ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे सं १३८। 'ङ' भण्डार।

७४. गुणस्थानभेद…………। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६३। अ भण्डार।

७५. गुणस्थानमार्गणा…………। पत्र सं० ४। आ० ८×६½ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३७। च भण्डार।

७६. गुणस्थानमार्गणारचना…………। पत्र सं० १८। आ० ११×४½ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७७। च भण्डार।

७७. गुणस्थानवर्णन…………। पत्र सं० २० आ० १०×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७८। च भण्डार।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है।

७८. गुणस्थानवर्णन…………। पत्र सं० १५ से ३१। आ० १२×५½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३६। क भण्डार।

७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १७९३। वे० सं० ४१६। ञ भण्डार।

८०. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० १३। आ० १३×५ इंच। भा०—प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १५५७ आषाढ सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ११८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५५७ वर्षे आषाढ शुक्ल नवम्यां श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तच्छिष्य मुनि श्री मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति देवास्तच्छिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये खंडेलवालवंशे सा० देल्हा भार्या दल्ही तत्पुत्र सा० भाजा तद्भार्या अमाभास्तत्पुत्रा सा० भावणो द्वितीय अमरसी तृतीय जाल्हा एते शास्त्रमिदं लेखयित्वा तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्तं।

८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११९४। अ भण्डार।

८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४९। ले० काल सं० १७२६। वे० सं० १११। अ भण्डार।

८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५ से ४८। ले० काल सं० १६२४। चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० १२८। क भण्डार।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र सुमपथी ने प्रतिलिपि की थी।

८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३६। क भण्डार।

८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १३६। ख भण्डार।

८६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३७५। ले० काल सं० १७३८ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १४। घ भण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है। श्री वीरदास ने अकबराबाद में प्रतिलिपि की थी।

८७. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७४। ले० काल सं० १८६९ आषाढ सुदी ७। वे० सं० १३८। क भण्डार।

८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

८९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७२–२४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । च भण्डार ।

९०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

९१. **गोम्मटसारटीका—सकलभूषण** । पत्र सं० १४३४ । आ० १२½×७ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १५७६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने पन्नालाल चौधरी से प्रतिलिपि कराई । प्रति ७ वेष्टनों में बंधी है ।

९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । क भण्डार ।

९३. **गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्र** । पत्र सं० ३३ । आ० १०×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर आचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर (नागौर) में महंमदखां के शासनकाल में गोलहा आदि बांदवाड़ गोत्र वाले श्रावकों ने भट्टारक धर्मचन्द्र को यह प्रति लिखकर प्रदान की थी ।

९४. **गोम्मटसारवृत्ति—केशववर्णी** । पत्र सं० ४३० । आ० १०½×४½ इंच । भा० संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८१ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल गाथा सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति अभयचन्द्र द्वारा संशोधित है । 'पं० गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

९५. **गोम्मटसारवृत्ति**…… । पत्र सं० ३ से ६१२ । आ० १०¾×४½ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१४ । ले० काल × । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

९७. **गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र सं० २२१ से ३६४ । आ० ६½×६ इंच । भा० हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पंडित टोडरमलजी के स्वयं के हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगह २ कटा हुआ है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन–योग्य ।

९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५ । ख भण्डार ।

९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५६ । ले० का० सं० १६४८ भादवा सुदी १५ । वे० सं० १४१ । क भण्डार ।

१००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६५ । अ भण्डार ।

१०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७६ । ले० काल सं० १८८५ माघ सुदी १५ । वे० सं० १८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह तथा मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी

१०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—२७४ से आगे ५४ पत्रों पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है ।

१०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० १५० । ङ भण्डार ।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है ।

१०४. गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २१३ । आ० १५×१० इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १६४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षपणासार की टीका है । गणेशलाल मुंवरलाल पांड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी ।

१०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११० । ले० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५ । वे० सं० ५३८ । च भण्डार ।

१०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७१ से ७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार ।

१०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१८ । ले० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० २२१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में कलापूर्ण गोलाकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र नहीं है ।

१०८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । आ० १२×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । ङ भण्डार ।

१०९. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड)········· । पत्र सं० २६५ । आ० ११×८½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ञ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्वप्रदीपिका है ।

११०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३१ । ञ भण्डार ।

१११. गोम्मटसारसंदृष्टि—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८२ । आ० १५×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । ग भण्डार ।

११२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ से २०४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३६ । च भंडार ।

११३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ११६ । आ० ११×५½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ८१ । च भण्डार ।

११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२ । च भण्डार ।

११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । च भण्डार ।

११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४४ चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १८२० । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य छात्र सर्वसुख के अध्ययनार्थ अटेरिए नगर में प्रतिलिपि की गई ।

११७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—कनकनंदि । पत्र सं० १० । आ० ११½×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीय अधिकार तक) । वे० सं० १३५ । क भण्डार ।

११८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५४ । आ० ११¾×७½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

विशेष—सुमतिकीर्त्ति की सहाय्य से टीका लिखी गयी थी ।

११९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १६७३ फागुण सुदी ५ । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

१२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । क भण्डार ।

१२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० २५ । ख भण्डार ।

१२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७५……… । वे० सं० ४१० । ञ भण्डार ।

१२३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६१४ । आ० १३×८ इंच । भा० हिन्दी गद्य (ढूंढारी) । विषय-सिद्धान्त । र० काल १६ वी शताब्दी । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ङ भण्डार ।

विशेष—संदृष्टि सहित है ।

१२५. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० २०१७। ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं. १०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछ्या तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री में जबाव लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है ।

१२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । । ले० काल सं० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे. सं. १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर में कल्याण पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथमपाद के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं । इन्होंने १० से अधिक प्राकृत व संस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है ।

१२७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका……… । पत्र सं० १६ । आ० ११½×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

१२६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है:—

इति प्रायः श्रीसुमट्टारकमुखात्टीकाच्च निःश्रयक्रमेणएकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसैद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिग्रंथस्य टीका समाप्ताः ।

१३०. गौतमकुलक—गौतम स्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य हैं ।

१३१. गौतमकुलक………… । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१३२. चतुर्दशसूत्र………… । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

१३३. चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल सं० १६८२ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ङ भण्डार ।

१३४. चतुर्दशांगबाह्यविवरण……… । पत्र सं० ३ । आ० ११×६ इंच । भा० संस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराय । पत्र सं० १०३ । आ० ११½×८ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल सं० १९२९ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है ।

१३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी १२ । वे० सं० १५० । क भण्डार ।

१३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४६ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

१३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १९३१ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० १७१ । ङ भण्डार ।

१३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल-× । वे० सं० १७२ । ङ भण्डार ।

१४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९३४ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १७३ । ङ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी [illegible] भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १९६८ । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनायें और हैं।

१. अक्षर बावनी – द्यानतराय – हिन्दी
२. गुरु विनती – भूधरदास – „
३. बारह भावना – नवल – „
४. समाधि मरण – „

१४२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन— । पत्र सं० ८१ से ११४ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

१४४. चर्चासंग्रह……… । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

१४५. चर्चासंग्रह……… । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । विषय सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५१ । अ भण्डार ।

१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । ज भण्डार ।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास । पत्र सं० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धांत । र० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । अ भण्डार ।

१४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १९०८ आषाढ सुदी ६ । वे० सं० ४४३ । अ भण्डार ।

१४९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २६ । ग भण्डार ।

१५०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ५० । ग भंडार ।

१५१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १९६४ चैत सुदी १५ । वे० सं० १७४ । क भंडार ।

१५२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४ से १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३ । छ भण्डार ।

[illegible] प्रति सं० ७ । पत्र सं० [illegible] । ले० काल सं० १८८३ पौष सुदी १३ । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

विशेष—जयनगर निवासी महात्मा शंभूलाल ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपी की थी ।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १३३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल–× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । क भण्डार ।

१५५. चर्चासार……। पत्र सं० १६२ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४० । छ भण्डार ।

१५६. चर्चासागर……। पत्र सं० ३६ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ भण्डार ।

१५७. चर्चासागर—चंपालाल । पत्र सं० ३०४ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १९१० । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं ।

१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१० । ले० का० सं० १९३८ । वे० सं० १४७ । क भण्डार ।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा—अखयराज । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५½ इञ्च । भा० हिन्दी गद्य । (राजस्थानी) विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १–४१ । ले० का० × । वे० सं० ८६० । अ भण्डार ।

१६१. चौदहमार्गणा……। प० सं० १० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १८५५ । ट भण्डार ।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा–नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल । सं० १८२० बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५७ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८१७ पौष बुदी १२ । वे० सं० १६० । क भण्डार ।

विशेष–पं० ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द के पठनार्थ मरायणा ग्राम में ग्रन्थ की प्रतिलीपि की ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक बुदि ५ । वे० सं० ५१ । ख भंडार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई श्रीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति सं ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ५२। ख भण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिंहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ पं० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ से ४३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है। १४३वी गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० का० सं० १६४६ चैत सुदी २। वे० सं० १८६। क भंडार।

१७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७३. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २०१। ज भण्डार।

१७५. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ से २५। ले० काल सं० १६६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १८१५। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्तिः—संवत् १६६५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौबीस ठाणो ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ९। वे० सं० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति—संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्यां सोमवासरे हडुवती देशे मराहृयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेदं विद्वद् छात्र सर्व सुखाह्वयाध्यापनर्थ लिपिकृतं स्वक्षयेना चन्द्र तारकं स्थीयतामिदं पुस्तकं।

१७७. प्रति सं० १५। पत्र सं० ६६। ले० का० सं० १८४० माघ सुदी ११। वे० सं० १८१७। ट भण्डार।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १८८९। ट भण्डार।

विशेष—५ पत्र तक चर्चायें है इससे आगे शिक्षा की बातें तथा फुटकर श्लोक हैं। चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न आदि का वर्णन है।

१७६. चतुर्विंशति स्थानक—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६५। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका भी है।

१८०. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका……… ……। पत्र सं० १८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२५। ट भण्डार।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा………। पत्र सं० २ से २४। आ० १२×५½ इञ्च। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६४। अ भण्डार।

१८२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२ से ५१। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। ले० काल सं० १८६१ पोष सुदी १०। वे० सं० १६६६। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्रेन चाणानगरमध्ये लिखितं।

१८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल ×। वे० स० १६८। अ भण्डार।

१८४. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति……… …। पत्र सं० १२३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८। अ भण्डार।

१८५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८४१ जेठ सुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ७७७। अ भण्डार।

१८६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० १५५। क भण्डार।

१८७ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८१० कार्त्तिक बुदि १०। जीर्ण-शीर्ण। वे० सं० १५६। क भण्डार।

विशेष—पं० ईश्वरदास के शिष्य तथा शोभाराम के गुरुभाई रूपचन्द्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के द्वारा प्रतिलिपि करवायी गई। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा………। पत्र सं० ११। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धात। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३०। अ भण्डार।

विशेष—समाप्ति में ग्रन्थ का नाम 'इकवीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है।

१८९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० १०४७। अ भण्डार।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६२. प्रति सं ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष–हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष–बेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई ।

१६६. छियालीसठाणाचर्चा ………… । पत्र सं० १० । आ० ६½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल–× । ले० काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपफल ………… । पत्र सं० ३२ । आ० १२¾×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८. जीवस्वरूप वर्णन ………… । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में मे लिया गया है ।

१६६. जीवाचारविचार ………… । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ । क भण्डार ।

२०१. जीवसमासटिप्पण ………… । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा ………… । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार ………… । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

२०४. जैन सदाचार मार्त्तण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द। पत्र सं० २५। आ० १२×७½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-चर्चा समाधान। र० काल सं० १९४६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०८। क भण्डार।

२०५. प्रति सं० २। पत्र सं० २९। ले० काल ×। वे० सं० २१७। क भण्डार।

२०६. ठाणांगसूत्र.........। पत्र सं० ४। आ० १०¾×४½ इन्च। भाषा संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० १९२। अ भण्डार।

२०७. तत्त्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल संघी। पत्र सं० ७२७। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० का० ×। ले० काल सं० १९४४। पूर्ण। वे० सं० २३१। क भण्डार।

विशेष-यह ग्रन्थ तत्वार्थराजवार्त्तिक की हिन्दी गद्य टीका है। यह १० अध्यायों मे विभक्त है। इस प्रति मे ४ अध्याय तक हैं।

२०८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४६। ले० काल सं० १९४४। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष-५वे अध्याय से १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है। नवा अध्याय अपूर्ण है।

२०९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२८। र० काल सं० १९३४। ले० काल ×। वे० सं० २४०। ङ भंडार
विशेष-राजवार्त्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है।

२१०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२८ से ७७३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४१। ङ भण्डार।
विशेष-तीसरा तथा चौथा अध्याय है। तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और है। ४७ अलग पत्रों में सूचीपत्र है।

२११. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०७ से ४०७। ले० काल ×। वे० सं० २४२। ङ भण्डार।

विशेष-५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है।

२१२. तत्त्वदीपिका—। पत्र सं० ३१। आ० ११½×६¾ भाषा हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१४। अ भण्डार।

२१३. तत्त्ववर्णन— शुभचन्द्र। पत्र सं० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धात र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। ञ भण्डार।

विशेष-आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

२१४. तत्त्वसार— देवसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७१९ पौष बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२५।
विशेष-पं० बिहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १९३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

विशेष—देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण........। पत्र सं० ३१ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १२½×५¾ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र ९ से भी देवसेन कृत आलापपद्धति दी हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धांत । र० काल सं० १८७९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध ......। पत्र सं० ३६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण........। पत्र सं० १० । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेंट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र सं० ४२ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौंसा का है । श्लोक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ब्र० हरदेव के लिए ग्रंथ बनाया था । संघही कँवर ने जोशी गंगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ । ख भण्डार ।

२२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष-अन्तिम पुष्पिका— इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विरचिते ब्रह्मजैत साधु हावादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथनं दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२२९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं० ३६० । आ० १६×७ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति की प्रतिलिपि सं० १५७८ वाली प्रति से जयपुर नगर मे की गई थी ।

२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२८ । ले० काल सं० १९४१ भादवा सुदी ६ । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ २ वेष्टनो में है । प्रथम वेष्टन मे १ से ६०० तथा दूसरे मे ६०१ से १२२८ तक पत्र है । प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

विशेष-मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १९७४ पौष सुदी १३ । वे० सं० २४४ । ङ भण्डार ।

विशेष-जयपुर में म्होरीलाल भावसा ने प्रतिलिपि की ।

२३३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । ङ भण्डार ।

२३४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ से २१० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा .... । पत्र सं० ५८२ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । ङ भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० ९७ । आ० ११½×७¼ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचनाकाल × । ले० काल सं० १९५८ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष–वृत्ति का नाम सुखबोध वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर के निवासी थे । यह नगर कनारा जिले मे है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । अ भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष–इस ग्रन्थ मे ६१८ श्लोक है जो ९ अध्यायों मे विभक्त है । इनमे ७ तत्त्वो का वर्णन किया गया है ।

२३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० २३९ । क भण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ९९ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १३२ । ञ भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ९१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । ञ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है । रचना १२ अध्यायों मे विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नही है जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है ।

२४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७. तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २८९ । आ० १२३/४×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल सं० १९३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति । पत्र सं० २९ । आ० ७×३१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २११९ (क) ञ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर है । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रशस्ति—सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ ······।

२५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९९९ । वे० सं० २२०० ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर बेले हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी मे रखने योग्य है । नवीन प्रति है । सं० १९९९ में जौहरीलालजी नंदलालजी घी वालों ने व्रतोद्यापन मे प्रति लिखा कर चढाई ।

२५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २२०२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । लि० काल × । वे० सं० १८५५ । अ भण्डार ।

२५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । लि० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४१ । अ भण्डार ।

२५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । लि० काल सं० १८८९ । वे० सं० ३३० । अ भण्डार ।

२५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४४ । अ भण्डार ।

२५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । लि० काल सं० १८३७ । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२५७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । लि० काल × । वे० सं० १०७५ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । लि० काल × । वे० सं० १०३० । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पं० अमीचंद ने अलवर में प्रतिलिपि की ।

२५९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४ । लि० काल × । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७५ अ भण्डार ।
विशेष—पत्र १७ से २० तक नहीं है ।

२६१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६ से ३३ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १००८ । अ भण्डार ।

२६२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३६ । लि० काल सं० १८९२ । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

२६३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । लि० काल × । वे० सं० ४८ । अ भण्डार ।

२६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । लि० काल सं० १८२० चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ८११ ।
विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२६५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २४ । लि० काल × । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ११ से २२ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

२६७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १९ लि० काल सं० १८९८ । वे सं० १२४४ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति सं० २० । पत्र सं० २४ । लि० काल × । वे० सं० १२७५ । अ भण्डार ।

२६९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८ । लि० काल × । वे० सं० १३३१ । अ भण्डार ।

२७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ५ । लि० काल × । वे० सं० २१४३ । अ भण्डार ।

२७१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १२ । लि० काल × । वे० सं० २१५९ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ३८ । लि० काल सं० १९४६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है । फूलचंद बिंदायक्या ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६ ......। वे. सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास दौलतराम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६३६ भादवा सुदी ४ । वे० सं० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

२७८. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी पं० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति सं० ३४ पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० सं० ४० । ग भण्डार ।

२८४. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल X । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ५८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे सं० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ८ से २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

२९१. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २६ । ले० काल X । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२९२. प्रति सं० ४४ । पत्रसं० १५ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २५१ । क भण्डार ।

२९३. प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२९४. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० २५३ । क भण्डार ।

२९५. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २५४ । क भण्डार ।

२९६. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९२१ कार्त्तिक बुदी ४ । वे० सं० २५५ । क भंडार

२९७. प्रति सं० ४९ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

२९८. प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२९९. प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं २५८ । क भण्डार ।

३००. प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ९ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५९ । क भण्डार ।

३०१. प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० ं० २६० । क भण्डार ।

३०२. प्रति सं० ५४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३. प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३०४. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । क भण्डार ।

३०५. प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६. प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । ख भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७. प्रति सं० ५९ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२९ । ख भण्डार ।

३०८. प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । जीर्ण । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर अग्रवाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०९. प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० १३१ । ख भण्डार ।

३१०. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे० सं० १३२ । ख भंडार ।

३११. प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२. प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १३३ । ख भण्डार ।

३१३. प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २५ । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

३१४. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

३१५. प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३७ ख भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नही है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० १३८ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० ५७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों मे तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं । इससे आगे भक्तामर स्तोत्र है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं ३८ । ज भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२२ फागुनसुदी १५ । वे० सं० ८८ । ज भण्डार।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० सं० २७३ । ञ भंडार

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४४८ । ञ भण्डार ।

३२७. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३२८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३२९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

३४०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल बिंदायक्या ने गोकुलाल पांड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक सिवमोचन्द छाबड़ा खजांची की है ।

३४१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय से है। इसके आगे कलिकुण्डपूजा, पार्श्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५६। आ० १२×५ इञ्च। भाषासंस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावण सुदी ७। वे० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वी शताब्दी के संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इन्होंने ३८ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विद्यानंदि था जो भट्टारक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फागन सुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल–×। वे० सं० २६६। क भण्डार।

३४६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल–×। वे० सं० ३३०। ञ भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गणि। पत्र सं० २४८। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल×। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही है। आगे पत्र नहीं हैं। तत्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति………………। पत्र सं० ६३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल–×। ले० काल–सं० १६३३ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कनककीर्त्ति ने अपने पठनार्थ मु० जेसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे फागुण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ रविवारे श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री श्री चंद्रकीर्त्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्त्ति लिखापितं आत्मार्थे पठनीया तू मु० जेसा केन लिखितं।

३४६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६५६ फागुण सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्ण। वे० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बख्श शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ से ५६३। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वे० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से २२। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ३२६। 'ञ' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १६१० फागुण बुदि १०। ले० काल–×। पूर्ण। वे० सं० २४५। क भण्डार।

विशेष—यह तत्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में सुन्दर टीका है।

३५५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५१। लें० काल सं० १६४३ श्रावण सुदी १५। वे० सं० २४६। क भण्डार।

३५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०२। ले० काल सं० १६४० मंगसिर बुदी १३। वे० सं० २४७। क भण्डार।

३५७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी ६। वे० सं० ६६। अपूर्ण। ग भण्डार।

३५८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है।

३५६. प्रति सं० ६। पत्र सं० २८३। ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ८। वे० सं० ३३। क भण्डार

३६०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० २७०। क भण्डार।

३६१. प्रति सं० ८। पत्र सं० १०२। ले० काल ×। वे० सं० २७१। क भण्डार।

३६२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२८। ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८। वे० सं० २७२। क भण्डार।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई।

३६३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ५७३। च भण्डार।

विशेष—मांगीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया।

३६४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १६५५। वे० सं० १८५। छ भण्डार।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३६५. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७१। ले० काल १६१५ आषाढ सुदी ६ वे० सं० ६१। झ भण्डार।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई।

३६६. तत्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ११८। आ० १३×७ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। र० काल सं० १८५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५१। क भण्डार।

३६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६७। ले० काल सं० १८४६। वे सं० ५७२। च भण्डार।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत। पत्र सं० ६६। आ० १३×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध है केइक जीव उर्द्ध सिद्ध है इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पांडे जयवंत कृत संपूर्ण समाप्ता। श्री सवाई के कहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति। पत्र सं० १४५। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६६। क भण्डार।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है। १४५ से आगे पत्र नहीं है।

३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० १०२। ले० काल ×। वे० सं० १३८। भ्र भण्डार।

३७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६१। ले० काल सं० १७८३। चैत्र सुदी ६। वे० सं० २७२। ञ भण्डार।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० ४४६। भ्र भण्डार।

३७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३८। ले० काल सं० १६११। वे० सं० १६३८। ट भण्डार।

विशेष—वैद्य अमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल। पत्र सं० ५ से ४८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६१।। भ्र भण्डार।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल। पत्र सं० २१। आ० १३×५¾ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १६३२ आसोज बुदी ८। ले० काल सं० १६५२ आसोज सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २४४। क भण्डार।

विशेष—मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की। छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह अलीगढ जिला के मेडू ग्राम के रहने वाले थे। टीका हिन्दी पद्य मे है जो अत्यन्त सरल है।

३७६. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० २६७। क भण्डार।

३७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७।। ले० काल ×। वे० सं० २६८। क भण्डार।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखरचन्द। पत्र सं० २७। आ० १०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १८६८। ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० २४८। क भण्डार।

३७९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा········। पत्र सं० ६४। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३६।

३८०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४६। ले० काल सं० १८५० बैशाख बुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० ६७। ख भण्डार।

३८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६८। ख भण्डार।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है।

३८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६४१ फागुण बुदी १४। वे० सं० ६६। ख भण्डार

३८३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ४१। ग भण्डार।

३८४ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६८ से ८१३। ले० काल सं० ×। अपूर्ण। वे० सं० २६४। क भण्डार।

३८५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ८७। र० काल-×। ले० काल सं० १९१७। वे० सं० ५७१। ख भण्डार।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित।

३८६. प्रति सं० ८। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ५७४। ख भण्डार।

विशेष—पं० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति सं० ९। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ५७५। ख भण्डार।

३८८. प्रति सं० १०। पत्र सं० २३। ले० काल ×। वे० सं० १८५। छ भण्डार।

३८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा…………। पत्र सं० ३३। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८९।

विशेष—१५वां तथा ३३ से आगे पत्र नहीं है।

३९०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा………। पत्र सं० ६० से १०८। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-×। हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १७१९। अपूर्ण। वे० सं० २०८१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७१९ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्रं सुज्ञानात्मक ग्रन्थ जन बोधाय विदुषा जयवंता कृतं साह जगन……पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता। किमर्थं सूत्राणां। मूलसूत्रं अतीव गंभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते। इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमां पठति ज्ञानोद्योतं भविष्यति। लिखापितं साह विहारीदास खाजांनची सावडावासी आमेर का कर्म्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिंहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद।

३९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २९। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ७०। ख भण्डार।

विशेष-हिन्दी में टिप्पण रूप से अर्थ दिया है।

३९२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। र० काल ×। ले० काल सं० १९०२ आसोज बुदी १०। वे० सं० १६८। झ भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है। हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पांड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी।

३९३. त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६६। आ० ६¾×४¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल सं० १८५० सावन सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७४। ख भण्डार।

विशेष—लालचन्द टोंग्या ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की।

३९४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १९१९। अपूर्ण। वे० सं० १४६। ख भण्डार।

विशेष—जौंहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की।

३९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६९। ले० काल सं० १८७६ कार्त्तिक सुदी ४। वे० सं० २४। क भण्डार।

विशेष—भ० क्षेमकीर्त्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी।

३९६. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

३९८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३९९. दशवैकालिकसूत्र……… । पत्र सं० १८ । आ० १०३×४२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका………… । पत्र सं० १ से ४२ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

४०१. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×४२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । र० काल × । ले० काल सं० १६३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ ।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ आसोज सुदी १३ । वे० स० १३१० । अ भण्डार

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

४०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ भादवा सुदी ३ । वे० सं० ३१३ । क भण्डार

४०८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८१५ पौष सुदी १० । वे० सं० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४४ श्रावण सुदि १ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १२ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ३१९ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में छाया दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टोंक में पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० डूंगरसी के शिष्य पेमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ४० । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४३ । घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल X । वे० सं० ३१४ । ङ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५। ले० काल X । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ द्वि० आषाढ सुदी २ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ भादवा सुदी ६ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३। ले० काल X । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० १२७ । ञ भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २६४ । ञ भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० २७५ । ञ भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ४६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सीलोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के अंबावती पट्ट के भट्टारक जगतकीर्त्ति तथा उसके पट्ट में भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के आम्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ४६५। व भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनचित्तवल्लभ' मल्लिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति सं० ३४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० १९४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

४३५. प्रति सं० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १८४५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०५३। अ भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६५६ पौष सुदी ३। वे० सं० ३१७। क भण्डार।

४३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३२। ले० काल सं० १७३....। अपूर्ण। वे० सं० ३१७। ङ भण्डार

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने फागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७१४ द्वि० श्रावण बुदी ११। वे० सं० १६८। ख भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भांवसा जोबनेर वालों ने सांगानेर में लिखी।

४४०. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १०८। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में मालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे संवत् १६३५ वर्षे आसोज बदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंघ राज्य प्रवर्तमाने मालपुर वास्तव्ये श्री चंद्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे मं० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्सिष्य मं० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्सिष्य मं० श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तत्सिष्य मं० श्री चन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाए खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे सा. नानिग द्वि पदारथा। सा. नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा. खामा तद्भार्या द्वे। प्र. खनिसिरि। द्वि० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि० सा. पदारथ तद् भार्या पिदिमदे तत्पुत्र सा. गोइंद तद्भार्या मारादे तत्पुत्रापंच प्र. वीका, द्वि नराइण, तृ. उदा, चतुर्थ विरम पं० दसरथ। प्र. विका भार्या विक्रम दे एतेषां सा. कमा इदं सास्त्र लिख्याप्य आचार्य श्री सिवनंदए घटापितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं ३२३ । क भण्डार ।

४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०० । वे० सं० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७८४ असाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५. द्रव्यसंग्रहटीका.............। पत्र सं० ५८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ मे लिखा है कि आ० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल मे श्रीपाल मंडलेश्वर के आश्रम नाम नगर मे सोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६७० भादवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भंडार ।

विशेष—नागपुर निवासी खंडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पल्य व्रतोद्यापन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९. प्रति स० ६६ । ले० का० सं० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसंग्रह भाषा ....। पत्र सं० ११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७७१ सावरण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—दव्व-संगहमिणं मुणिणाहा दोस-संचयचुदा सुदपुण्णा ।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंद मुणिणा भणियं जं ॥

अर्थ— भो मुनि नाथ ! भो पंडित कैसे हो तुम्ह दोष संचय मुति दोषनि के जु संचय कहिये समूह तिनतें जु रहित हो । मया नेमिचंद्र मुनिना भणितं । यत् द्रव्य संग्रह इमं प्रत्यक्षी भूतां में जु हो नेमिचंद मुनि तिन जु कह्यो यहु द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि सोधयंतु । सो धी हुं कि कि सो हूं । तनु सुत्त धरेण तनु कहिये थोरों सौ सूत्र कहिये । सिद्धात ताको जु धारक ह्यौ । अल्प शास्त्र करि संयुक्त हो जु नेमिचंद्र मुनि तेन कह्यो जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताको भो. पंडित सोधो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावरण मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेण स्वात्मार्थे ।

४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

४५२ प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से १६। ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८। वे० सं० ७७४। ख भण्डार।

विशेष—हिन्दी सामान्य है।

४५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १८१४ मंगसिर बुदी ६। वे०सं० ३६३। ख भण्डार

विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है।

४५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १५५७ आसोज सुदी ८। वे० सं० ८८। ख भण्डार

४५५. प्रति सं० ६। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० ४४। ग भण्डार।

४५६. प्रति सं० ७। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १७४३ श्रावण बुदी १३। वे० सं० १११। छ भण्डार।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रेण सभाषया। द्रव्यसंग्रहशास्त्रस्य व्याख्यालेशो वितन्यते ॥१॥

४५७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी। पत्र सं० १६। आ० १३×५३/४ इञ्च। भाषा–गुजराती। लिपि हिन्दी। विषय–छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १८०० माघ बुदि १३। वे० सं० २१/२६२ छ भण्डार।

४५८. द्रव्यसंग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १६। आ० १११/२×७१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२। घ भण्डार।

४५९. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ३१। आ० ११३/४×५१/२ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल सं० १८८३ सावन बुदि १४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१२। अ भण्डार।

४६०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८६३ सावण बुदी १४। वे० सं० ३२१। क भण्डार।

४६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५१। ले० काल ×। वे० सं० ३१८। क भण्डार।

४६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० १६५८। ट भण्डार।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है।

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी (पद्य) विषय–छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२२। क भण्डार।

४६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १९३६। वे० सं० ३१८। क भण्डार।

४६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १९३३। वे० सं० ३१९। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया हुआ है।

४६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८७९ कार्तिक बुदी १४। वे० सं० ५९१। च भण्डार।

विशेष—पं० सदासुख कासलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है।

४६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । ऋ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । ऋ भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-छह द्रव्यों का वर्णन । र० काल सं० १९६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छाबड़ा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९. द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ६ से १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छह द्रव्यों का लक्षण वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६०५ सावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट भंडार ।

४७०. धवल………… । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जैनागम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र………… । पत्र सं० ८ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल सं० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि पं० नयसमुद्रगणि नामा देश ? तस्मु शिष्यै वी. गुणलाभ गणिभि लिलेखि ।

४७४. नवतत्त्वगाथा………… । पत्र सं० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-९ तत्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पं० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-९ तत्वों का वर्णन । र० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०९ । वे० सं० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । रायचन्द शक्तावत ने अरिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४७८. नवतत्त्ववर्णन………। पत्र सं० ५। आ० ८३×४३ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-जीव अजीव आदि ९ तत्त्वों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०१। च भण्डार।

विशेष—जीव अजीव, पुण्य पाप, तथा आस्रव तत्त्व का ही वर्णन है।

४७९. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ५१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-९ तत्त्वों का वर्णन। र० काल सं० १९३४ आषाढ सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४८०. नवतत्त्वविचार………। पत्र सं० ६ से २४। आ० ९×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-९ तत्त्वों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। ञ भण्डार।

४८१. निजस्मृति—जयतिलक। पत्र सं० ५ से १३। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३१। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इत्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचितं निजस्मृत्ये बंध-स्वामित्वाख्यं प्रकरणमेतच्चतुर्थः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थः। ग्रन्थाग्रन्थ ५९० प्रमाणं। केतरांतरां श्री तपोगच्छीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सौभाग्य-विजयगणि तच्छिष्य मु० सिवविजयेन। पं० पन्नालाल ऋषभचन्द की पुस्तक है।

४८२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द। पत्र सं० १००। आ० १०३×५३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव। पत्र सं० २२२। आ० १२३×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ३८०। क भण्डार।

४८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ३७१। ञ भण्डार।

४८५. निरयावलीसूत्र………। पत्र सं० १३ से ३६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६। घ भण्डार।

४८६. पञ्चपरावर्तन………। पत्र सं० ३। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३८। अ भण्डार।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है।

४८७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ४१३। क भण्डार।

४८८. पञ्चसंग्रह—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० २६ से २४८। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४००। क भण्डार।

४८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नऋद्धिगणि ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

४९१. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४–२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५२ से ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष–कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति–रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में साधु सांगा के सहयोग से की थी ।

४९४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—बुन्दावती में पार्श्वनाथ मन्दिर में औरंगशाह (औरंगजेब) के शासनकाल में हाडा वंशोत्पन्न राव श्री भावसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४९५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४९६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२४ । ले० काल सं० १९५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार

४९७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नहीं है ।

४९८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । च भण्डार ।

४९९. पंचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य में लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाथुराणामनघद्युतीनां संघोऽभवद् वृत्त विभूषितानाम् ।
हारो मणीनामिवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्रः ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणनीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीयः ।
भूयसि सत्यवतीव शशांकः श्रीमति सिंधुपतावकलंकः ।। २ ।।
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिर्मोक्षार्थिनामग्रणी ।
रेतच्छास्त्रमशेषकर्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ।।
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्भव्योपकारोद्यतो ।
दुर्वारस्मरदंतिदारणहरिः श्रीगौतमोऽनुत्तमः ।। ३ ।।
यदत्र सिद्धान्त विरोधिवद्ध ग्राह्यं निराकृत्यतदेतदार्यैः ।
गृह्णंति लोका ह्यु पकारियत्नावं निराकृत्य फलं पवित्रं ।। ४ ।।
अमरवरं केवलमर्चनीयं यावस्थिरं तिष्ठतिमुक्तपंक्तौ ।
तावद्धरायामिदमत्रशास्त्रं स्थेयाच्छुभं कर्मनिरासकारि ।।
त्रिसप्तत्यधिकेब्दनां सहस्रे शकविद्विषः ।
मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ।। ५ ।।
इत्यमितगतिकृता नैराण सार तपागच्छे ।

५००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१५ । ले० काल सं० १७६६ माघ बुदी १ । वे० सं० १८७ । अ भण्डार

५०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८० । ले० काल सं० १७२४ । वे० सं० २१९ । अ भण्डार ।

विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२. पञ्चसंग्रह टीका—। पत्र सं० २५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३९९ । क भण्डार ।

५०३. पंचास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १९४० । वे. सं० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं०१८६६ । वे० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । क भण्डार

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओं पर टीका भी दी है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५०९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ५ । वे० सं० १९१ । ञ भंडार ।

विशेष—अंबावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं १९६ । क भण्डार ।

५११. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९३८ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ४०२ । ङ भण्डार ।

५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वे० सं० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९५६ । वे० सं० २०३ । च भण्डार ।

५१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० । ञ भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा. फहरी भार्या धमला तयोः पुत्रचालु तस्य भार्या धनसिरि नाम्या पुत्र सा. होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद सा. हंसराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पंचास्तिकायाभिधं लिखायां कुलभूषणस्य कर्म्मक्षयार्थ दत्तं ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद में बादशाह जहांगीर के समय में प्रतिलिपि हुई ।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

५१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १९४७ । वे० सं० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४९ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । ङ भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १९३६ आषाढ़ सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । च भण्डार

५२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । र० काल × । वे० सं० ६२२ च भण्डार ।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धांत । र० काल सं० १८९२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८८१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५. बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८८१ । ले० काल × । वे० सं० १९०५ । पूर्ण । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमुं पाय, मुनिसुव्रत कूं सीस नवाय ।
सतगुरु सारद हिरदै धरूं, बंध उदय सत्ता उचरूं ॥ १ ॥

अन्तिम—बंध उदै सत्ता बखाणै, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तै जाणि ।
शुद्ध अशुद्ध सुधा रसु माण, अल्प बुद्धि मैं करूं बखाण ।। १२ ।।
साहिब राम मुझकूं बुध दई, नगर पचेवर मांही लही ।
मुझ उतपत डगी के माहि, श्रावक कुल गंगवाल कहाहि ।। १३ ।।
काल पाय कै पंडित भयो, नैणचन्द के शिष्य म भयो ।
नगर पचेवर माहि गयो, आदिनाथ मुझ दर्शण दियो ।। १४ ।।
पापकर्म तै विछुत भयो, लाव आ कर रहतो भयो ।
शीतल जिनकूं करि परिणाम, स्वपर कारण तैं कहे बखाण ।। १५ ।।
संवत् अठरासै का कह्या, अवर अक्यासी ऊपर लह्या ।
पढत सुणत अघ खय होय, पुन्य बंध बुधि बहु होय ।। १६ ।।
।। इति श्री उदै बंध सत्ता समाप्ताः ।।

इससे आगे चौबीस ठाणा की चौपाई है—

प्रारम्भ—देव धर्म गुरु ग्रन्थ पद बंदौं मन वच काय ।
गुणठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहूं बणाय ।।

अन्तिम—इह विधि जस गुणस्थान की रचना वरणी सार ।
भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु सुधार ।।
छठि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मझार ।
उगणीसै अरु पाच के साल जाय श्रीलाल ।।
।। इति सम्पूर्ण ।।

५२६. भगवतीसूत्र—पत्र सं० ५० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । अ भण्डार ।

५२७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र दुबारा लिखा गया है ।

५२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८११ माघ सुदी ३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में की थी ।

५२९. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २१८ । आ० १२×७½ । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

५३०. मरणकरंडिका........। पत्र सं० ८ । आ० ६¼×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३–५५। आ० १४×५ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४२। ट भण्डार।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ से १८। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय–सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र सं० १५३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०। वे० सं० २०३२। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गाथाओं के ऊपर छाया दी हुई है।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ५७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२१। च भण्डार।

विशेष—५७ से आगे पत्र नहीं है। संस्कृत टीका सहित है।

५३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२२। च भण्डार।

५३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० १६००। ट भण्डार।

५३७. लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७। आ० १३×८ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १६५६। पूर्ण। वे० सं० ६३८। क भण्डार।

५३८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० १८०। आ० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल १६४६। पूर्ण। वे० सं० ६३९। क भण्डार।

५३९. प्रति सं० २। पत्र सं० १६३। ले० काल ×। वे० सं० ७५। ग भण्डार।

५४०. लब्धिसार क्षपणासार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० १००। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। ग भण्डार।

५४१. लब्धिसार क्षपणासार संदृष्टि—पं० टोडरमल। पत्र सं० ४६। आ० १४×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १८८६ चैत बुदी ७। वे० सं० ७७। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

५४२. विपाकसूत्र—। प० सं० ३ से ३५। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१३१। ट भण्डार।

५४३. विशेषसत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४३। अ भण्डार।

५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८०२ आसोज बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ८५४ । अ भण्डार ।

विशेष—३० से ३४ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल आस्रव त्रिभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७९० । अ भण्डार ।

विशेष—दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५४८. षट्लेश्या वर्णन ...... । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६० । अ भण्डार ।

विशेष—षट लेश्याओं पर दोहे हैं ।

५४९. षष्ठ्याधिक शतक टीका—राजहंसोपाध्याय । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १५७९ भादवा । ले० काल सं० १५७९ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमज्जडकर्दाभिख्यो गोत्रे गौत्रावतंसिके, सुश्रावकशिरोरत्न देल्हाख्यो समभूत्पुरा ।। १ ।।

स्वजन–जलधिचन्द्रस्तत्तनूजो वितंद्रो, विबुधकुमुदचन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयति प्रकृतिभद्रः प्राज्यराज्ये समुद्रः, खल हरिणा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्रः ।। २ ।।

तदंगजन्माजिनजैनभक्तः परोपकारव्यसनैकशक्तः सदा सदाचारविचारविज्ञः सीहगराज सुकृतीकुलज्ञः ।। ३ ।।

श्रीमाल–भूपालकुलप्रदीप, समेदिनी मल्लड पावनीय । नंद्यादमंद्य गुणमावधान, तत्सूनुरन्यूनगुणप्रधान ।। ४ ।।

भार्याविद्यगुणैरार्या करमादे पतिव्रता, कमलेव हरेस्तस्य यास्वामागे विराजते ।। ५ ।।

तत्पुत्रोभद्यचंद्रोस्ति भव्यश्चन्द्र इवापरः निर्भयो निष्कलंकश्च निःष्कुरंग. कलानिधिः ।

तस्याभ्यर्थनया तया विरचिता श्रीराजहंसाभिद्योपाध्यायै शतषष्ठिकस्य विमलावृत्तिः शिशूनां हिता ।

वर्षे नंद मुनिषुचंद्र सहिते सावाच्यमाना बुधै । मासे भाद्रपदे सिकंदरपुरे नंद्याच्चिरं भूतले ।। ७ ।।

स्वच्छे खरतरगच्छे श्रीमाज्जिनदत्तसूरिसंताने । जिनतिलकसूरिसुगुरो शिष्य श्रीहर्षतिलकोऽभूत् ।। ८ ।।

तच्छिस्येन कृतेयं पाठकमुख्येन राजहंसेन षष्ठ्यधिकशतप्रकरणटीका नंद्याच्चिरं मह्यां ।। ९ ।।

इति षष्ठ्यधिकशतप्रकरणस्य टीका कृतां श्री राजहंसोपाध्यायैः ।। समयहंसेन लि० ।।

संवत् १५७९ समये अगहण वदि ६ रविवासरे लेखक श्री भिखारीदासेन लेखि ।

५५०. श्लोकवार्त्तिक—आ० विद्यानन्दि । पत्र सं० १५८५ । आ० १२×७½ । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल १८४४ श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । क भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की वृहद टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनों में बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७८ । ञ भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । ञ भण्डार।

५५३. संग्रहणीसूत्र……। पत्र सं० ३ से २८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२ । ख भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ८, २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार। ३११ गाथायें हैं।

५५५. संग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि । पत्र सं० ७ से ५३ । आ० १०½×४½ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १००१ । अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार……। पत्र सं० ३ से ७ तक । आ० ८¾×४¾ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धांत र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ४० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४२ । ट भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र सं० ११८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धांत र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । अ भण्डार।

५५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६८ । ले० काल सं० १९४४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं०……। ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०७ । ङ भण्डार।

५६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२२ । ले० काल × । वे० सं० ३७७ । च भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । च भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १-१३३, २००-२९३ । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३७९ । च भण्डार।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

सं० १६९३ माघ शुक्ला ७-६ कालाडेरा में श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। सं० १७१७ कार्त्तिक सुदी १३ ब्रह्म नाथू ने भेंट में दिया था।

५६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । वे० सं० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० ८५ । छ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १७०४ बैशाख बुदी ९ । वे० सं० २१९ । व्य भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र सं० ६४३ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा हिन्दी विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ७९९ क भण्डार ।

५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । ले० काल × । वे० सं० ८०८ । ङ भण्डार ।

५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ७०५ । च भण्डार ।

५७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७० । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तअर्थसार—पं० रइधू । पत्र सं० ९९ । आ० १३×८ इंच । भाषा अपभ्रंश । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वे० सं० ७९९ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं० १५९३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ८०० । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं० १५९३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा— । पत्र सं० ७५ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह……। पत्र सं० ९४ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६. सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र सं० २२२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९१ ।

५७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ । वे० सं० १९८ । अ भंडार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १७९२ । वे० सं० १३२ । अ भण्डार ।

५७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १८३२ । वे० सं० ८०२ । क भण्डार ।

विशेष—सन्तोषराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८१३ । बैसाख सुदी ८ । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाला हीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७३ । ले० काल सं० १८२७ बैशाख बुदी १२ । वे० सं० २६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

५८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८–१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक……। पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिर्लोक वर्णन वाला १४वां अधिकार है।

५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला । पत्र सं० ८७ । आ० १३½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८४५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५० । ले० काल × । वे० सं० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति में है।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

५८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३० मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० १५० । ञ भंडार

विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५९०. सूत्रकृतांग……। पत्र सं० १६ से ५६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीमकों ने खा लिये है। बीच में मूल गाथायें हैं तथा ऊपर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका षोडषमाध्याय।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१. अट्ठाईसमूलगुणवर्णन……। पत्र सं० १। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनिधर्म वर्णन। र० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०३०। अ भण्डार।

५६२. अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर। पत्र सं० ३७७। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनिधर्म वर्णन। र० काल सं० १३००। ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६३१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है। बोली नगर में श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल में साहजी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी। सं० १८२६ में पं० सुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था। ६२ से १६१ तक नवीन पत्र है।

५६३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल ×। वे० सं० १८। ग भण्डार।

५६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७७। ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी ५। वे० सं० १६। ग भण्डार।

५६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० ४६७। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति संग्रह' भी है।

५६६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र सं० ४४०। आकार १२×५३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्य। विषय-धर्म। र० काल सं० १७८१ पौष बुदी ५। ले० काल सं० १८१४। अपूर्ण। वे० सं० १। घ भण्डार।

५६७ प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१। छ भण्डार।

५६८. अनुभवानन्द……। पत्र सं० ५६। आ०१३३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १३। क भण्डार।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव। पत्र सं० ३ से ६६। आ० १०३/४×४३/४ भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० २३४। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं। अन्तिम पुष्पिका:—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य आचारवर्णनं श्रावकव्रतनिरूपणं चतुर्विंशति प्रकरणं संपूर्णं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुणरत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थं। लोहटसुत पंडितश्री सावलदास पठनार्थं। अन्तिलीश्यसावयट्ठप्रकाशन धर्मउपदेशकमार्थं। चन्द्रप्रभ चैत्यालयं माघ मासे कृष्णपक्षे पुष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे सं० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-मेनिमहार्थं तत्सुत चतुर्भुज जगमनि परमराम खेमराज भ्राता पंच सहायिका। शुभं भवतु।

६००. आगमविलास—द्यानतराय। पत्र सं० ७३। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-धर्म। र० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १९२८। पूर्ण। वे० सं० ४२। क भण्डार।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी पद्य—"युग वसु शैल सितंश"

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को आकू को बेचा तथा उसके पास से वह मूल प्रति जगतराय के हाथ में आयी। ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में स्वर्गवास हो जाने के कारण जगतराय ने संवत् १७८४ मे मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया। आगम विलास मे कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है।

६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १९५४। वे० सं० ४३। क भण्डार।

६०२. आचारसार—वीरनंदि। पत्र सं० ४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९४। पूर्ण। वे० सं० १२७। अ भण्डार।

६०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०१। ले० काल ×। वे० सं० ४४। क भण्डार।

६०४. प्रति सं० ३। पत्र स० १०६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४। घ भण्डार।

६०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२ से ७२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४८५। ञ भण्डार।

६०६. आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० २०३। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचारशास्त्र। र० काल सं० १९३४ वैशाख बुदी ६। ले० काल ×। वे० सं० ४५। क भंडार।

६०७. प्रति सं० २। पत्र सं० २६२। ले० काल० ×। वे० सं० ४६। क भंडार।

६०८. आराधनासार—देवसेन। पत्र सं० २०। आ० ११×४½। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-१०वीं शताब्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७०। अ भण्डार।

६०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल ×। वे० सं० २२०। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ३३७। अ भण्डार

६११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २८४। ख भण्डार।

६१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २१५१। ट भण्डार।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल सं० १९३१ चैत्र बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नही है ।

६१४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

६१५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ६९ । क भण्डार ।

६१६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ङ भण्डार ।

विशेष—गाथायें भी है ।

६१७. **आराधनासार भाषा**……। पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । ट भण्डार ।

६१८. **आराधनासार वचनिका—बाबा दुलीचन्द** । पत्र सं० २२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल २०वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ भण्डार ।

६१९. **आराधनासार वृत्ति—पं० आशाधर** । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल १३वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । ख भण्डार ।

विशेष—मुनि नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी । टीका का नाम आराधनासार दर्पण है ।

६२०. **आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास** । पत्र सं० २ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचारशास्त्र । र० काल सं० १७५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । भ्न भण्डार ।

६२१. **उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगणि** । पत्र सं० २० । आ० १०×४½ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७५५ कार्त्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८२८ । अ भण्डार ।

६२२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

६२३. **उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण** । पत्र सं० १२९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल सं० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १३९ । ले० काल × । वे० सं० २७ । अ भण्डार ।

६२५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १७२० श्रावण सुदी ४ । वे० सं० २८० । अ भण्डार ।

६२६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १९१ । ले० काल सं० १६८८ कार्त्तिक सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० ८५० अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ९० से ९३ तथा १०८ नही है । प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है—"शेरपुर की समस्त श्रावकणी ज्ञान कल्याण निमित्त इस शास्त्र को श्री पार्श्वनाथ निमित्त भण्डार मे रखवाया ।"

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२ । ङ भण्डार ।

६३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । ङ भण्डार ।

६३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । अ भण्डार

६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।

६३५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ४५२ । अ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ७९ । क भण्डार ।

६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वे० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

६३९. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द्र । पत्र सं० २८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को सं० १९६७ में कालूराम पांड्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ८० । क भण्डार

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९४३ सावण बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भंडार ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वे० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । ङ भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । ङ भण्डार ।

६४८. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४६. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह छाबड़ा। पत्र सं० २०। आ० ११३×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७६६ भादवा बुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६। क भण्डार।

विशेष—नरवर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी।

६५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ८८। क भण्डार।

६५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ८६। क भण्डार।

६५२. उपसर्गार्थ विवरण—बुपाचार्य। पत्र सं० १। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६०। अ भण्डार।

६५३. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र। पत्र सं० २७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १५५५ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २२३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ का नाम श्रावकाचार भी है। पं० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

स्वस्ति सवत् १५५५ वर्षे कार्त्तिक सुदी १५ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० विद्यानंदी पट्टे भ० मल्लिभूषण तच्छिष्य पंडित लक्ष्मण पठनार्थं दूहा श्रावकाचार शास्त्रं समाप्तं। ग्रंथ स० २७०। दोहों की संख्या २२४ है।

६५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० स० २४८। अ भण्डार।

६५५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १७। अ भण्डार।

६५६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० २६४। अ भण्डार।

६५७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल ×। वे० सं० ६६५। क भण्डार।

६५८. उपासकाचार............। पत्र सं० ६५। आ० १३३×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० सं० ४२। च भण्डार।

६५६. उपासकाध्ययन............। पत्र सं० ११४–३४१। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० २०६। अ भण्डार।

६६०. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र संख्या ६। आ० १०३×५। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल सं० १६०६ बैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २०। ख भण्डार।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा से सवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६६१. कुशीलखंडन—जयलाल। पत्र सं० २६। आ० १२×७३। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १६३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४११। अ भण्डार।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । क भण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

६६४. केवलज्ञान का ब्यौरा……। पत्र सं० १ । आ० १२½×५½ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२२ । आ० ११½×५½ । भाषा-संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ११५ । क भंडार ।

६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं १७६५ भादवा सुदी ४ । वे० सं० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखी गई थी ।

६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १५७७ बैशाख बुदी ४ । वे० सं० १८८७ । ट भण्डार ।

विशेष—'प्रशस्ति संग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९. क्रियाकलाप……। पत्र सं० ७ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका……। पत्र सं० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज मांडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयासुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशेमहाशेरखानध्याप्रीयमाने वेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राघौ लिखितं ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ञ भण्डार ।

६७२. क्रियाकलापवृत्ति……। पत्र सं० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ।। छ ।। छ ।। सा० पूना पुत्रेण छाजूकेन लिखितं श्लोकानामष्टादश-शतानि ।। पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति संग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १७८४ भादवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०२ । अ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८३३ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ । अ भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८८५ आषाढ़ बुदी १० । वे० सं० ८ । ग भंडार

विशेष—ग्योलालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ से ११५ । ले० काल सं० १८८८ । अपूर्ण । वे० सं० १३० । ङ भण्डार ।

६७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० १३१ । ङ भण्डार ।

६७९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । च भण्डार ।

६८०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८५१ मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० १९५ । छ भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १९५६ आषाढ़ सुदी ६ । वे० सं० १९६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति किशनगढ़ के मन्दिर की है ।

६८२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०४ । ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १ से १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है ।

६८४. क्रियाकोश……। पत्र सं० ५० । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०९ । अ भण्डार ।

६८५. कुगुरुलक्षण……। पत्र सं० १ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१९ । अ भण्डार ।

६८६. क्षमाबत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४१ । अ भण्डार ।

६८७. क्षेत्र समासप्रकरण……। पत्र सं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{4}$ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७०७ । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

६८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० × । अ भण्डार ।

६८९. क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । अ भण्डार ।

६९०. गणसार……। पत्र सं० ८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । च भण्डार ।

६९१ चउसरण प्रकरण……। पत्र सं० ४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजोगविरइ उक्कित्तण गुणवउ अपडिवत्ती ।

रवलि अस्सय निंदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चेव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाणं वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छएण किज्जइय ।

अच्चपत्त अगुण कित्तण रूवेणं जिणवरिंदाणं ॥३॥

अन्तिम—मवणभावाबद्धा तिव्वणु भावाउ कुणई ताचेव ।

असुहाऊ निरणु बंधउ कुणई निव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि ।

होई तिक्कालं सम्मं अमंकिले संमि सुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो नकउ चउरंगसरण मवि नकमं ।

चउरंगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरंभद्द तमेव अज्झयणं ।

भाए सुति संभम वंभं कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं मणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. बारभावना……। पत्र सं० ६ । आ० १०½×६½ । भाषा–संस्कृत । विसय–धर्म । र० काल × लं० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. चारित्रसार—श्रीमच्चामुंडराय । पत्र सं० ६६ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५४५ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसंयमसम्पन्न श्रीमज्जिनसेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रसादासादित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसंग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्म्मसमाप्तः ॥ ग्रन्थ संख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे वैशाख बदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंद-कुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवाः तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयोः पुत्राः साह डावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयोः पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्म्मा तयोः पुत्रः साह दामा साह योजा भार्या होली तयोः पुत्री रत्नमल क्षेमराजसा. डाकुर भार्या खेत तयोः पुत्र हरराज । सा. जालप साह तेजा भार्या त्यजसिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीनां एतेषां मध्ये सा. अर्जुन इदं चारित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तं लिखितं ज्योतिकुण ।

६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १९३५ आषाढ सुदी ४ । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

विशेष—बा० दुलीचन्द ने लिखवाया ।

६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १५८५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० १७७ । क भण्डार ।

६९६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

६९७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १३५ । ञ भण्डार ।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिलिपि हुई ।

६९८. चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ३७ । आ० १२×६ । भाषा–हिन्दी(गद्य)। विषय-धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७ । ग भण्डार ।

६९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १७८ । क भण्डार ।

७००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० १७९ । क भण्डार ।

७०१. चारित्रसार……। पत्र सं० २२ से ७६ । आ० ११×५ । भाषा–संस्कृत । विषय-आचारशास्त्र र० काल × । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २१६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षे शाके १५०७ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे दशम्यां तिथौ सोमवासरे पातिसाह श्री अकब्बरराज्येंप्रवर्त्तते पोथी लिखितं माधौ तत्पुत्र जोसी गोदा लिखितं मालपुरा ।

७०२. चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दि । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । अ भण्डार ।

विशेष–लहरीराम ने रामपुरा में पं० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १८९९ । अ भण्डार ।

७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ४ । वे० सं० १५४ । क भंडार ।

७०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १९० । ङ भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १९१ । ङ भण्डार ।

७०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १९२ । ङ भण्डार ।

७०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३५ । च भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७३६ । च भण्डार ।

७१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य हैं ।

७११. चौरासी आसादना······। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्जनीय ८४ क्रियाओं के नाम है ।

७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

७१३. चौरासी आसादना······। पत्र सं० १ । आ० १०×४½" । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१४. चौरासीलाख उत्तर गुण······ । पत्र सं० १ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष–१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५. चौसठ ऋद्धि वर्णन······ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

७१६. छहढाला—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भंडार

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषह, पंचमंगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं संकटहरणबिनती आदि भी दी हुई है ।

७२०. छहढाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

७२१. छेदपिण्ड—इन्द्रनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–प्रायश्चित शास्त्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० २४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १६३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६६ आसोज सुदी १० । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

७२४. **ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल** । पत्र सं० २३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

७२५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । ऋ भण्डार ।

७२६. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । ङ भण्डार ।

७२७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २३२ । ले० काल सं० १६३२ श्रावण सुदी १४ । वे० सं० २२२ । ङ भण्डार ।

७२८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १०२ से २७४ । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।

७२६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । च भण्डार ।

७३०. **ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास** । पत्र सं० १० । आ० ६३⁄४×५१⁄२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ३३ । ग भंडार

७३२ **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द है ।

७३३. **तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण** । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–धर्म । र० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १६३५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

७३४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७६६ चैत बुदी ८ । वे० सं० ३३३ । अ भंडार ।

७३५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० २६३ । क भंडार

७३६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८१४ । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

७३७. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २४३ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७८० फागुण सुदी १५ । वे० सं० ५१३ । च भण्डार ।

७३६. **त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन** । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार-धर्म । र० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के है ।

७४०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८३८ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित वखतराम और उनके शिष्य शम्भुनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ञ भण्डार ।

७४२. त्रिवर्णाचार .... । पत्र सं० १८ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । ख भण्डार ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २८५ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

७४४. त्रेपनक्रिया........ । पत्र सं० ३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक की क्रियाओं का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । आ० १२×६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । र० काल सं० १७९५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. दण्डकपाठ......... । पत्र सं० २३ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य (आचार) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप......... । पत्र सं० १६ । आ० ११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति.... । पत्र सं० ५६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । र० काल सं० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० सं० १०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियो का वर्णन है । भट्टारक पद्मनंदि के आम्नाय वाले खण्डेलवाल ज्ञातीय सा० ठाकुर वंश मे उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्त्ति के लिए मौजमाबाद मे प्रतिलिपि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० २९५ । ङ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २९६ । ङ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २९७ । ङ भण्डार ।

७५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९६३ कार्त्तिक सुदी ६ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९४१ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

७५८. **दशलक्षणधर्मवर्णन** । पत्र सं० २८ । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । च भण्डार ।

७५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०. **दानपंचाशत—पद्मनंदि** । पत्र सं० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराश्रित मुनि पुगमदान पंचाशत ललितवर्गा श्रयो प्रकरण ।। इति दान पंचाशत समाप्त ।।

७६१. **दानकुल**.......। पत्र सं० ७ । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यवदनक भाष्य दिया है ।

७६२. **दानशीलतपभावना—धर्मसी** । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । ट भण्डार ।

७६३. **दानशीलतपभावना**....... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ ५ पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७६४. **दानशीलतपभावना**...... । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—मोती और कांकडे का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है ।

७६५. **दीपमालिकानिर्णय**.......। पत्र सं० १२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाछूलाल व्यास ।

७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । क भण्डार ।

७६७. **दोहापाहुड—रामसिंह** । पत्र सं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल १०वी शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ से १६ तक पत्र नहीं है ।

७६८. धर्मचाहना...... । पत्र सं० ८ । आ० ८½×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । ङ भण्डार ।

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचितं धर्मपंचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल संघी । पत्र सं० ६४ । आ० १२×७½ । भाषा–हिन्दी । र० काल सं० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १९६२ आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । पं० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्त्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०½×४½ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ फागुन सुदी ५ । अ भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर है— १. दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५. कर्म विपाक पृच्छा । ६. सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण :— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् ।
अनन्तमहिमारूढान् वंदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर में शांतिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर ...... । पत्र सं० २७ । आ० ८½×४ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी........ । पत्र सं० ४ से ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय– धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ । अपूर्ण । वे० सं० ५९८ । च भण्डार ।

विशेष—पं० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र सं० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय– श्रावकों के आचार का वर्णन है । र० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । ङ भण्डार ।

७७६. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार ……। पत्र सं० १ से ३५ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० । भ्र भण्डार ।

७७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता पं० मंगल । पत्र सं० १६१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल सं० १६८० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६८० वर्षे काष्ठासंघे मंदतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७९. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ५ । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

७८१. धर्मरसायन…… । पत्र सं० ८ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । अ भण्डार ।

७८२. धर्मलक्षण……। पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । ट भण्डार ।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० का सं० १५४१ । ले० काल सं० १५४२ कार्त्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है। मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में अंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है । लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसार पैरोजापत्तने सुलतानश्रीबहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सारस्वतगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवाः । तत्पट्टे कुवलयवनविकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे षट्तर्कचक्रवर्तिकृतसेवाः भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्शिष्ये मंडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्त्तिः तस्य शिष्यो दिगम्बर मूर्तिर्मुनि श्री विमलकीर्त्ति पंडितश्रीमोहाख्यः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधूनामा तस्याद्या भार्या देवगुरुपादारविंद सेवनतत्परा साध्वी लाच्छिसंज्ञिका तयो श्रावकाचारोत्पन्नौ साधुभोजा—केशोभिधानौ । साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाहूधी इति नाम्नी । तन्नंदनो निमित्तज्ञानविशारदसाधुसावलाभिधेयः अथ साधुभोजापत्नीपातिव्रत्याद्विगुणनिलयाभोलसिरि संज्ञा । तयोः प्रथमपुत्रः साधुधामीख्य । तद्भार्यादेवगुरुचरणारविंदचंचरीका साध्वी धनश्रीः । द्वितीय पुत्रः श्री गिरनारिगिरौ श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघपति हल्हा नामा । तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संज्ञिका । तयोर्ज्येष्ठपुत्रश्चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षः शान्तिदासः तस्य भामिनी अनेकगुणशालिनी साध्वी हिउसिरि नाम-

धेयाः । द्वितीय पुत्रः पंचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्य भार्या विहितानेकधर्म्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धिः तत्पुत्रौ चिरंजीविनौ संसार चंदराय चंदाभिधानौ । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नखानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयमनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमभाविकासाध्वी सूबरीनामा तत्तनूजः सम्यक्त्वालंकृतद्वादशव्रतपालकः । संघपति डूगराह । तस्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्रं साधु लाडी नाम धेयं । तयोः सुतो देवपूजाविषट्क्रिया कमलिनीविकास-नैकमार्तण्डोपमो जिनदासः तन्महिलाधर्म्मकर्म्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषां मध्येसंघपति रूल्हाख्यं भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शांतिदासनेमिदासयो न्योपार्जितवित्तेन इदं श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्म्मक्षयार्थं आचन्द्रार्क्कादिनंदतात् ।

७८४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । **क** भण्डार ।

७८५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७८६ । वे० सं० ३४२ । **ङ** भण्डार ।

७८६. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० सं० १७२ । **च** भण्डार ।

७८७. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ४८ से ५५ । ले० काल सं० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७३ । **च** भण्डार ।

७८८. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । **छ** भंडार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य संपतिराम हरिवंशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९. **धर्मसंग्रहश्रावकाचार**........ । पत्र सं० ६६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । **अ** भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. **धर्मसंग्रहश्रावकाचार**........। पत्र सं० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४१ । **ङ** भण्डार ।

७९१. **धर्मशास्त्रप्रदीप** ....। पत्र सं० २३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६६ । **अ** भण्डार ।

७९२. **धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका** । पत्र सं० ३६ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्मोपदेश । र० काल सं० १७२४ आषाढ़ सुदी ऽऽ । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । **क** भंडार

विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति सं० २ के आधार से रचना संवत् है

७९३. **प्रति सं० २** । ले० काल सं० १७२७ कार्त्तिक सुदी ५ । वे० सं० ३४४ । **क** भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सांगानेर में हुई थी ।

७९४. **धर्मसार—पं० शिरोमणिदास** । पत्र सं० ११ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४० । **अ** भण्डार ।

७९५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० सं० ४६ । **ग** भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर में सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७९६. धर्मामृतसूक्तिसंग्रह—आशाधर। पत्र सं० ६५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचारएवं धर्म। र० काल सं० १२९६। ले० काल सं० १७४७ आसोज बुदी २। पूर्ण। वे० सं० २९५।

विशेष—संवत् १७४७ वर्षे आसौज सुदी २ बुधवासरे अयं द्वितोय सागरधर्म्म स्कंधः ग्रन्थाग्रषट्सप्तत्य-धिकानि चत्वारिंशछतानि ॥४७६॥ छ ॥

अंतमहुत्तमञ्लेषी रस मुछियं सिमापन्ना ॥
हुंति असंख्य जीवानिद्दिग सव्वदरसी ॥ दुग्धा गाथा ॥
संगर कड्ड मिथीमूगचरोगमसू कम्मासं।
एव सर्व्व विदलं वज्जोपव्वापयत्रेग ॥ १ ॥
विदलं जी भी पछा मुहं च पत्तं च दोविघो विज्जा।
अहवावि अत्र पत्तो भुंजिज्जं गोग्साईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मामृत' है। यह दो भागों में विभक्त है। एक सागारधर्मामृत तथा दूसरा अनागार धर्मामृत।

७९७. धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि। पत्र सं० ३९। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४८। घ भण्डार।

७९८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोघवर्ष। पत्र सं० ३३। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४८। घ भण्डार।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि की गई थी।

७९९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र सं० २६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४५। छ भण्डार। अन्तिम पत्र नहीं है।

८००. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८६९ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० सं० ८०। ज भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

८०१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० २३। ञ भण्डार।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार……। पत्र सं० २९। आ० ६¾×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८०३. धर्मोपदेशसंग्रह—सेवाराम साह। पत्र सं० २१८। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८५८। ले० काल ×। वे० सं० ३४३।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं० १८५८ में हुई किन्तु कुछ अंश स० १८६१ में पूर्ण हुआ।

८०४. प्रति सं० २। पत्र सं० १६०। ले० काल ×। वे० सं० ५९७। च भण्डार।

८०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७६। ले० काल ×। वे० सं० १८९५। ट भण्डार।

८०६. नरकदुःखवर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–नरक के दुखों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण में से है ।

८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८. नरकवर्णन.......। पत्र सं० ८ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नरकों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९. नवकारश्रावकाचार.......। पत्र सं० १४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावकों का आचार वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१२ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में खंडेलवाल गोत्र वाली बाई तील्हू ने श्री आर्यिका विनय श्री को भेंट किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे बैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई तोल्हू इदं शास्त्रं नवकारे श्रावकाचारं ज्ञानावरणी कर्मक्षयं निमित्तं अर्जिका विनैसिरीए दत्तं ।

८१०. नष्टोदिष्ट.......। पत्र सं० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३३ । अ भण्डार ।

८११. निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

८१२. नित्यकृत्यवर्णन....... । पत्र सं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । क भण्डार ।

८१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०½×८½ भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

८१५. निर्वाणप्रकरण.......। पत्र सं० ६२ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण·········। पत्र सं० ५ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२० । अ भण्डार ।

८१८, पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र सं० ७३ । आ० ४½×४½ । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । र० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । झ भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५८९ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १६७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये वैद्य गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सोनपाल···········।

८२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थं । देवुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शवदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १७४८ माघ सुदी ४ । वे० सं० १०२ । ख भण्डार ।

विशेष—भट्ट बल्लभ ने अवंती में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १५७८ माघ सुदी २ । वे० सं० १०३ । ख भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्त-त्भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य आचार्य श्री यशःकीर्ति उपदेशात् हूंबड़

ज्ञातीय बागडदेशे सागवाड़ शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हुंबड़ ज्ञातीय गांधी श्री पोपट भार्या धर्मादेस्तयोःसुत गांधी राना भार्या रामादे सुत डूंगर भार्या दाडिमदे ताभ्यां स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इयं पंचविंशतिका दत्ता।

८२७. प्रति सं० ९। पत्र सं० २८८। ले० काल सं० १९३८ आषाढ़ सुदी ६। वे० सं० ५४। घ भण्डार

विशेष—बैराठ नगर में प्रतिलिपि की गई थी।

८२८. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१८। ङ भण्डार।

८२९. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५१ से १४९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१९। ङ भण्डार।

८३०. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२०। ङ भण्डार।

८३१. प्रति सं० १३। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२१। ङ भण्डार।

८३२. प्रति सं० १४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं १६८२ पौष बुदी १०। वे० सं० २९०। ज भण्डार

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

८३३. प्रति सं० १५। पत्र सं० १९८। ले० काल सं० १७३२ सावरण सुदी ६। वे० सं० ४६। ञ भण्डार।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई।

८३४. प्रति सं० १६। पत्र सं० १३७। ले० काल सं० १७३५ कार्त्तिक सुदी ११। वे० सं० १०८। ञ भण्डार।

८३५. प्रति सं० १७। पत्र सं० ७८। ले० काल ×। वे० सं० २९४। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है।

८३६. प्रति सं० १८। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १५८५ बैशाख सुदी १। वे० सं० २१२०। ट भण्डार।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासंघे माथुरगर्गके (माथुरान्वे) पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव। तत्.......।

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका........। पत्र सं० २००। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९५० भादवा बुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ४२३। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं।

८६८. पद्मनंदिपचीसीभाषा—जगतराय। पत्र सं० १८०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७२२ फागुण सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेब के शासनकाल में आगरे में हुई थी।

८३९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७१। र० काल सं० १७५८। वे० सं० २९२। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

८४०. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका। पत्र सं० ६४१। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल सं० १६१५ मंगसिर बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार

विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका लिखना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जौंहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी। 'सिद्ध स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई। पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया। रचनाकाल प्रति सं० ३ के आधार से लिखा गया है।

८४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१७। ले० काल ×। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५७। ले० काल सं० १६४४ चैत बुदी ३। वे० सं० ४१७। ङ भण्डार।

८४३. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा........। पत्र सं० ६७। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१८। क भण्डार।

८४४. पद्मनंदिश्रावकाचार—पद्मनंदि। पत्र सं० ४ से ५३। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१३। अपूर्ण। वे० सं० ४२८। क भण्डार

८४५. प्रति सं० २। पत्र सं० १० से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१७०। ट भण्डार।

८४६. परीषहवर्णन........। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४१। क भण्डार।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है।

८४७. पुच्छीसेग........। पत्र सं० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२७०। पूर्ण। अ भण्डार।

८४८. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० १६। आ० १३½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७०७ मंगसिर सुदी ३। वे० सं० ५३। अ भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी।

८४९. प्रति स० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×।। वे० सं० ५५। छ भण्डार।

८५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १८३२। वे० सं० १७८। अ भण्डार।

८५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १६३४। वे० सं० ४७१। क भण्डार।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है।

८५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ४७२। क भण्डार।

८५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ६७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ४७३ । क भण्डार ।

८५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ११८ । ञ भण्डार ।

८५९. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ११६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल सं० १९५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क

८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८६१. पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र सं० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । ज्योजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।

८६४. प्रतिक्रमण……। पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमण पाठ…… । पत्र सं० २६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय किये हुये दोषो की आलोचना र० काल × । ले० काल सं० १८९९ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७. प्रतिक्रमणसूत्र……। पत्र सं० ६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८. प्रतिक्रमण…… । पत्र सं० २ से १८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०९९ । ट भण्डार ।

८६९. प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित)…… । पत्र सं० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८७०. प्रतिमाउत्थापक कूं उपदेश—जगरूप । पत्र सं० ४७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ख भण्डार ।

विशेष—औरङ्गाबाद में रचना की गयी थी ।

८७१. प्रत्याख्यान········ । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७२ । ट भण्डार ।

८७२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार ······ । पत्र सं० २५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८७३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १७४७ बैशाख सुदी २ । ले० काल सं० १८८६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—श्योलालजी के पुत्र छाजूलालजी साह ने प्रतिलिपि करायी । इस ग्रन्थ का ¾ भाग जहानाबाद तथा चौथाई ¼ भाग पानीपत में लिखा गया था ।

'तीन हिस्से या ग्रन्थ को भये जहानाबाद ।
चौथाई जलपथ विषै वीतराग परसाद ।।'

८७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८८५ सावण सुदी १ । वे० सं० ६३ । ग भण्डार ।

विशेष—श्योलालजी साह ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर ग्रन्थ चढाया ।

८७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १८२१ फागुण सुदी १३ को बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति से इस की नकल उतारी गई है । महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसको प्रतिलिपि की ।

८७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ६४८ । अपूर्ण । च भण्डार ।

८७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १९६६ माघ सुदी १२ । वे० सं० १९१ । छ भण्डार ।

८७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी १८ । वे० सं० १६ । झ भण्डार ।

८७९. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३४८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १९३१ पौष बुदी १४ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०० । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३१ से ४६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४६ । च भण्डार ।

८८२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार........। पत्र सं० ३३ । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४७ । च भण्डार ।

८८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १३१ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाड़नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सोमकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्त्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० सं० १७४ । अ भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८८१ मंगसिर सुदी ११ । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल मे जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे अंबावती (आमेर) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जती तनसागर के शिष्य मन्नालाल के यहां सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के चढ़ो में (१२वें दिन पर) श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में सं० १८६३ में भेंट की ।

८८९. प्रति सं ४ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १६०० । वे० सं० २१७ । अ भण्डार ।

८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१६ । ले० काल सं० १६७६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेस—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंघ राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्तितत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे श्रावक-जनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीलतोय-तरङ्गिणी विनय-वागेश्वरी धनसिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रथमपुत्रधर्मधुराधरण धीरसाह श्री रूपा तद्भार्या दानसीलगुणभूषणभूषितगात्रानाम्ना गूजरि तयोः पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रतापदिनकरमुकुलिकृतशत्रुमुखकुमुदाकर स्वज·······निसाकरमाह्लादित कुवलयदानगुण मरीकृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठिचितन पवित्रितचित्त सकलगुणिजनविश्रामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया सुजानदे चतुर्था सलालदे पंचम भार्या लाडी। हरखमदेजनितपुत्राः त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह आशकर्ण तद्भार्या अहंकारदेपुत्र नाथु। दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूणकरण भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण द्वितीय लाडमदे। तृतीय पुत्र चि० बलिकर्ण भार्या बालमदे। चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे। साह धनराज द्विती पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जौणादेतयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या मोहागदे तयो पुत्र चि० दयालदास भार्या दाडमदे। द्वितीपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याद्वे। प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह डूंगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रौ द्वे। प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास। जोधा तृतीय पुत्र जिणचरणकमल-मधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे। साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुणश्रेयाससकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालन-समर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या नौलादे तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र क्षुपाल तद्भार्या मुप्यारदे तयोःपुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे। श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि० सार्दूल द्वि० पुत्र चि० सिघा तृतीय पुत्र चि० मलहदी। साह रतनसी तृतीय पुत्र साह भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे। एतेषा मध्ये सिघवी श्री नानू भार्या प्रथम नारंगदे। भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं व्रतनिमित्तं घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं। ज्ञानवान ज्ञानदाने····

८६१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६ से १६४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८३। अ भण्डार।

८६२. प्रति सं० ७। पत्र सं० १३०। ले० काल सं० १८६२। अपूर्ण। वे० सं० १०१६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। बीच के कुछ पत्र नहीं है। पं० केशरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महात्मा शंभुराम से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि करायी।

८६३. प्रति सं० ८। पत्र सं० १६५। ले० काल सं० १६८२। वे० सं० ५१६। क भण्डार।

८६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १६५८। वे० सं० ५२०। क भण्डार।

८६५. प्रति सं० १०। पत्र सं० २२१। ले० काल स० १६७७ पौष सुदी। वे० सं० ५१७। क भण्डार।

८६६. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १८८····। वे० सं० ११५। ख भण्डार।

विशेष—पं० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

८६७. प्रति सं० १२। पत्र सं० ११६। ले० काल ×। वे० सं० ६४। ख भण्डार।

८६८. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ से २६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१७। ङ भण्डार।

८६९. प्रति सं० १४। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१७। ङ भण्डार।

९००. प्रति सं० १५। पत्र सं० १२६। ले० काल ×। वे० सं० ५२०। ङ भण्डार।

६०१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १४५ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद मे लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० सं० १०६ ।

विशेष—पांचोलास में चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबड़ा ने सांगानेर में गोधों के मन्दिर में चढाई ।

६०४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० ७८ । ञ भण्डार ।

६०५. प्रति स० २० । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० २२३ । ञ भण्डार ।

६०६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ३७५ । ञ भण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० सं० ३४३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इदं पुस्तकं लिखापितं ।

६०९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १८७३ । ट भण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार ...... । पत्र संख्या ५० । आ०–१०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १६०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरू नगर में स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र संख्या १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—बख्तराम के शिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देवं सर्व विघ्न विनाशनं ।
गुरुं च करुणानाथं ब्रह्मानंदाभिधानकं ।।१।।
प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।
सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ।। २ ।।
चतुर्णामपि वर्णानां क्रमतः कार्यकारिका ।
लिख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ।। ३ ।।

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपरोपि च।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रात: क्रिया······ । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित ग्रंथ ······ । पत्र सं० ३ । आ० ११×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४ प्रायश्चित विधि—अकलंक देव । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र से आगे अन्य ग्रंथो के प्रायश्चित पाठों का संग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ चैत्र बुदी १ । वे० सं० ११७ । ग भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जोबनेर के मंदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी ।

६१७. प्रति सं० ४ । ले० काल-× । वे० सं० ५२३ । ङ भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल-सं० १७४८ । वे० सं० २४४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने मूंबावती (अंबावती) मे प्रतिलिपि की ।

६१९. प्रति सं० ५ । ले० काल-सं० १७६६ । वे० सं० ८ । व्य भण्डार ।

विशेष—बगरू नगर में पं० हीरानंद के शिष्य प चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६२०. प्रायश्चित विधि······ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल-× । ले० काल सं० १८०५ । अपूर्ण । वे० सं०-१२८० । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वां तथा २६ वां पत्र नही है ।

६२१. प्रायश्चित विधि······ । पत्र सं० ६ । आ० ८¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुये दोषो का पश्चाताप । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२८१ । अ भण्डार ।

६२२. प्रायश्चित विधि— भ० एकसंधि । पत्र सं० ४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल-× । वे० सं० २४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है ।

६२४. प्रति सं० ३ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ३३ । व्य भण्डार ।

६२५. प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० १४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-किये हुए दोषों का पश्चाताप । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित शास्त्र······ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय–किये हुए दोषों की आलोचना र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

६२७. **प्रायश्चित समुच्चय टीका—नंदिगुरु** । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–सं० १६३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ११८ । ख भण्डार ।

६२८. **प्रोषध दोष वर्णन** ··· । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–× । वे० सं० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

६२९. **बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द** । पत्र सं० ३२ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–श्रावकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । र० काल–सं० १६४१ बैशाख सुदी ५ । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । क भण्डार ।

६३०. **बाईस अभक्ष्य वर्णन** · × । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

६३१. **बाईस परीषह वर्णन—भूधरदास** । पत्र स० ६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहों का वर्णन । र० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

६३२. **बाईस परीषह** ····· × । पत्र सं० ६ । आ० ६×४। भाषा–हिन्दी । विषय–मुनियों के सहने योग्य परीषहों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । ङ भण्डार ।

६३३. **बालाविबोध (णमोकार पाठ का अर्थ)** ·· × । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ । भाषा प्राकृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४. **बुद्धि विलास—बखतराम साह** । पत्र सं० ७५ । आ० ७×६ । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. **ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन** ··· ·· × । पत्र सं० ४ । आ० ८×५ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० पूर्ण । वे० सं० २३१ । झ भण्डार ।

६३७. **बोधसार**···· · × । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५½ भाषा–हिन्दी विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६२८ । काती सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बीसपंथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है ।

९३८. भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाद)····× । पत्र सं० २२ से ४६ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १५६७ । ट भण्डार ।

९३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र सं० ३२१ । आ० ११½×५३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण वे सं० ५४९ । क भण्डार ।

९४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० ५५० । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ९६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए है ।

९४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । वे० सं० २५९ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये है ।

९४२. प्रति सं० ४ । २६५ । ले० काल × । वे० सं० २६० च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

९४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९३ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टोका भी दी है ।

९४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगण । पत्र सं० ४३४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १७९३ माघ बुदी ७ पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

९४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१५ । ले० काल सं० १५९७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ३३१ । अ भण्डार ।

९४६. भगवती आराधना भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ६०७ । आ० १२½×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । क भण्डार ।

९४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३० । ले० काल सं० १९५५ माह बुदी १३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

९४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२२ । ले० काल सं० १९११ जेष्ठ सुदो ९ । वे सं० ६६५ । च भण्डार ।

९४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ५१९ । ले० काल सं० १९२८ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी बगडा का है । मिती १९४२ माघ सुदी १० को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढ़ाई ।

९५०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०५ । ज भण्डार ।

९५१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० १६६७ । ट भण्डार ।

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका। पत्र सं० १ से २७७। आ० १०×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५६। च भण्डार।

६५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल–सं० १८५७ पौष सुदी १५। अपूर्ण। वे० सं० ६५६। च भण्डार।

६५३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७३। र० काल ×। ले० काल–सं० १६०४ कार्तिक सुदी १०। वे० स० २५४। ज भण्डार।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय। पत्र सं० ४१। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल–×। ले० काल–सं० १५१६ श्रावण बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८४। अ भण्डार।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्तं।

६५५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ऽऽ। वे० सं० २११६। ट भण्डार।

६५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७४। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नहीं हैं।

६५७. भावसंग्रह—देवसेन। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल–×। ले० काल–सं० १६०७ फागुण बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ कर्त्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे। प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा············।

६५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल–सं० १६०४ भादवा सुदी १५। वे० सं० ३२६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण सलेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकंदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्त्ति तस्य शिक्षणी बा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्रं प्रदत्तं।

६५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल–×। वे० सं० ३२७। अ भण्डार।

६६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल–सं० १८६४ पौष सुदी १। वे० सं० ५५८। क भण्डार।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

६६१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० ७ से ४५ । ले० काल-सं० १५६४ फागुण बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

६६२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ४० । ले० काल-सं० १५७१ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० २१६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १५७१ वर्षे आषाढ बदि ११ आदित्यवारे पेरोजा साहे । श्री मूलसंघे पंडितजिणदासेन लिखापितं ।

६६३. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ से आगे पत्र नही है ।

६६४. **भावसंग्रह—श्रुतमुनि** । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-सं० १७६२ । अपूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीसवां पत्र नही है ।

६६५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । ख भण्डार ।

६६६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५६ । ले० काल-सं० १७८३ । वे० सं० ५६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६६७. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १८४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत मे अर्थ भी दिये हैं ।

६६८. **भावसंग्रह—पं० वामदेव** । पत्र सं० २७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

६६९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है । २ प्रतियो का मिश्रण है । अन्त के पृष्ठ पानी मे भीगे हुये है । प्रति प्राचीन है ।

६७०. **भावसंग्रह**……। पत्र सं० १४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । १४ से आगे पत्र नही है ।

६७१. **मनोरथमाला**…… । पत्र सं० १ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

६७२. **मरकतविलास—पन्नालाल** । पत्र सं० ६१ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६६२ । च भण्डार ।

६७३. **मिथ्यात्वखण्डन—बखतराम** । पत्र सं० ५८ । आ० १४×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । र० काल-सं० १८२१ पौष सुदी ५ । ले० काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल–× । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल–सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नही हैं । पत्र फटे हुये है ।

६७७. मिथ्यात्वखंडन……। पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नही है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र सं० ३६८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १८२६ मंगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७३ । ले० काल–× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीहै ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

६८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल–× । वे० सं० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल–× । वे० सं० २७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल–× । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल–सं० १८३० पौष सुदी २ । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचंद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८० । ले० काल–सं० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३७ । ले० काल–सं० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० सं० ४५५ । अ भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–सं० १८८८ । ले० काल–सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।

९९०. मूलाचार भाषा·······। पत्र सं० ३० से ६३। आ० १०½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। र० काल–×। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ५९७।

९९१. प्रति सं० २। पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६०। आ० १०½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। र० काल–×। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ५९९। क भण्डार।

९९२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६००। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ६००।

९९३. मौक्षपैडी—बनारसीदास। पत्र सं० १। आ० ११½×६¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल–×। ले० काल–×। पूर्ण। वे० सं० ७६५। अ भण्डार।

९९४. प्रति सं० २। पत्र सं ४। ले० काल–×। वे० सं० ६०२। क भण्डार।

९९५. मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल। पत्र स० ३२१। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–ढूंढारी (राजस्थानी) गद्य। विषय–धर्म। र० काल–×। ले० काल–सं० १९५४ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८३। क भण्डार।

विशेष—ढूंढारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये है।

९९६ प्रति सं० २। पत्र सं० २८२। ले० काल–सं० १९५४। वे० सं० ५८४। क भण्डार।

९९७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१२। ले० काल–सं० १९४०। वे० सं० ५९५। क भण्डार।

९९८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१२। ले० काल–सं० १८८८ वैशाख बुदी ९। वे० सं ६८। ग भण्डार।

विशेष—छाजूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

९९९. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२८। ले० काल–×। वे० सं० ६०३। क भण्डार।

१०००. प्रति सं० ६। पत्र सं० २७६। ले० काल–×। वे० सं० ६५८। च भण्डार।

१००१. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१ से २१६। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ६५९। च भण्डार।

१००२. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३ से २२५। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ६६०। च भण्डार।

१००३. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३५१। ले० काल–×। वे० सं० ११९। झ भण्डार।

१००४. यतिदिनचर्या—देवसूरि। पत्र सं० २१। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल–×। ले० काल–सं० १६६८ चैत सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० १९२६। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सुविहितशिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा।

प्रशस्तिः—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभौमवासरे श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री ५ विजयसेन सूरीश्वराय लिखितं ज्योतिसी उधव श्री शुजाउलपुरे।

१००५. यत्याचार—आ० वसुनंदि। पत्र सं० ९। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–

मुनि धर्म वर्णन । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६. **रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र** । पत्र सं० ७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । ग्रंथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टिप्पणियां दी हुई है । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १० । वे० सं० १५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । ङ भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । ङ भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । ङ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल संघी कृत टीका भी है । टीका सं० १९३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१०१७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १९५० । वे० सं० ६३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । ङ भण्डार ।

१०१९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २९२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २९३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९ । ले० काल-× । वे० सं० २९४ । च भण्डार ।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

१०२४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० ७४० । च भण्डार ।

१०२५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० ७४२ । च भण्डार ।

१०२६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० ७४३ । च भण्डार ।

१०२७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

१०२८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १४४ । ज भण्डार ।

१०२६. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।

१०३० प्रति सं० २५ । पत्र सं० १२ । ले० काल-सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १५८ । ञ भण्डार ।

१०३१. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ४३ । आ० १०३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-सं० १८६० श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

१०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल-× । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।

१०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१-५३ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे सं० ३८० । अ भण्डार ।

१०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६-६२ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ३२६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम उपासकाध्ययन टीका भी है ।

१०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३६ । ङ भण्डार ।

१०३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-सं० १७७६ फागुण सुदी ५ । वे० सं० १७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे खंडेलवाल ज्ञातीय भौसा गोत्रोत्पन्न साह छाजमलजी के वंशज साह चन्द्रभाण की भार्या ल्होडी ने ग्रंथ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति के निमि कर्मक्षय निमित्त भेट की ।

१०३७. रत्नकरण्डश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० १०४२ । आ० १२३/४×८३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १६२० चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ २ वेष्टनो में है । १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

१०३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६२० । क भण्डार ।

१०३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ से १७६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।

१०४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल-आसोज बुदि ८ सं० १६२१ । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

१०४१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

विशेष—नेमीचंद कालख वाले ने लिखा और सदासुखजी डेडाकाने लिखाया—यह अन्त में लिखा हुआ है।

१०४२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल-× । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—"इस प्रकार मूलग्रंथ के प्रसाद तै सदासुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग्रंथ समाप्त किया ।" अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२१ । ले० काल-सं० १९६३ कार्तिक बुदी ऽऽ । वे० सं० १९८ । छ भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३६ । ले० काल-सं० १९५० वैशाख सुदी ६ । वे० सं० । भ्क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं सदासुखजी के हाथ से लिखे हुये सं० १९१९ के ग्रंथ से सामोद मे प्रतिलिपि की गई है । महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र सं० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९२० माघ सुदी ६ । ले० काल-× । वे० सं० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८. रत्नकरण्डश्रावकाचार—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ४४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९३१ पौष बुदी ७ । ले० काल-सं० १९५३ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं ६१४ । क भण्डार ।

१०५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २९ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा……। पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७० । ले० काल-सं० १९५३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल-× । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ से १५९ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६४० । ङ भण्डार ।

१०५६. रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र सं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भः—

सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहं ।
प्रणमामि महामोहशांतये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं यत्सर्वसारेषु वंद्यं यद्वंदितेष्वपि ।

अनेकांतमयं वंदे तदर्हत् वचनं सदा ।।२।।

अन्तिम—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा ।

सशुद्धचरणो नूनं शिवकोटित्वमाप्नुयात् ।।

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-सं १८८३ । पूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

१०५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १८१० । ट भण्डार ।

१०६०. रात्रि भोजन त्याग वर्णन……। पत्र सं० १६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ४८० । अ भण्डार ।

१०६१. राधा जन्मोत्सव……। पत्र सं० १ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. रिक्तविभाग प्रकरण……। पत्र सं० २६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. लघुसामायिक पाठ……। पत्र सं० २ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति:—

१८१४ अगहन सुदी १५ सनै बुन्दी नग्रे नेमनाथ चैत्याले लिखितं श्री देवेन्द्रकीर्ति आचारज सीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल-× । वे० सं० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल-× । वे० सं० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. लघुसामायिक……। पत्र सं० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. लाटीसंहिता—राजमल्ल । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १६४१ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ८८ ।

१०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल-सं० १८६७ वैशाख बुदी……रविवार वे० सं० ६६५ । क भण्डार ।

१०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल-सं० १८६७ मंगसिर बुदी ३ । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना—भूधरदास । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र० काल–× । ले० काल–× पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण में से है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल–सं० १८८८ पौष सुदी २ । वे० सं० ६७२ । च भण्डार ।

१०७२. वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३. वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनंदि । पत्र सं० ५६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-श्रावक धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं० १८६२ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम उपासकाध्ययन भी है । जयपुर में श्री चिरागदास बाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी । संस्कृत मे भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २३ । ले० काल–सं० १६११ पौष सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—सारंगपुर नगर में पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल–सं० १८७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी । गाथाओं के नीचे संस्कृत टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल–× । वे० सं० ८७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल–× । वे० सं० ४५ । च [illegible] ।

१०७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ले० काल–सं० १५६८ भादवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५६८ वर्षे भादवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेअमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्त्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि वीरनंदिने इदं शास्त्रं लिखापितं । पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्श्वनाथ (सोनियों) के मंदिर में चढाया ।

१०७९. वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । आ० १२¾×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–सं० १९३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल–सं० १९३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१. वार्त्तासंग्रह........। पत्र सं० २५ से ६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक........। पत्र सं० २७ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं है । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४. विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ८६० । आ० १४×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १६३६ माघ सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

१०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४३ । ले० काल सं० १६४२ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ६७३ । ख भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर दीवान अमरचन्दजी के मे चढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका........। पत्र सं० ४४ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पांचवें उल्लास तक है ।

१०८७. विवेकविलास........। पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १७७० फागुण बुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी ३ । वे० सं० ८२ । ञ भण्डार ।

१०८८. वृहत्प्रतिक्रमण........। पत्र सं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१५६ । ट भण्डार ।

१०९०. प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

१०९१. वृहत्प्रतिक्रमण........। पत्र सं० १६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

१०६३. वृहत्प्रतिक्रमण। पत्र सं० ३१। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२२। ट भण्डार।

१०६४. व्रतों के नाम……। पत्र सं० ११। आ० ६३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६। ञ भण्डार।

१०६५. व्रतनामावली……। पत्र सं० १२। आ० ८३×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल सं० १६०४। पूर्ण। वे० सं० २६५। ख भण्डार।

१०६६. व्रतसंख्या……। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल × ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५७। अ भण्डार।

विशेष—१५१ व्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये है।

१०६७. व्रतसार……। पत्र सं० १। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८१। अ भण्डार।

विशेष—केवल २२ पद्य है।

१०६८. व्रतोद्यापनश्रावकाचार……। पत्र सं० ११३। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३। घ भण्डार।

१०६६. व्रतोपवासवर्णन……। पत्र सं० ५७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३८। ञ भण्डार।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नही है।

११००. व्रतोपवासवर्णन ……। पत्र सं० ४। आ० १२×४ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४७८। ञ भण्डार।

११०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४७६। ञ भण्डार।

११०२. षट्आवश्यक (लघुसामायिक)—महाचन्द्र। पत्र सं० ३। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६४०। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

११०३. षट्आवश्यकविधान—पन्नालाल। पत्र सं० १४। आ० १४×७३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल सं० १६३२। ले० काल सं० १६३४ बैशाख बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७४४। क भण्डार।

११०४. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १६३२। वे० सं० ७४५। क भण्डार।

११०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २३। ले० काल ×। वे० सं० ४७६। क भण्डार।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है।

११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कम्मोवरस)—महाकवि अमरकीर्त्ति । पत्र सं० ३ से ७१ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ३५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें खण्डेलवालान्वय पाटनीगोत्रवाले श्रीमतीहरषमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

११०७. षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी ६ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक पं० सदासुख दिल्लीवालों की है ।

११०९. षट्संहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन······· । पत्र सं० २२ से २६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

११११. षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदरुण । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००४ । ख भण्डार ।

१११२. षोडषकारणभावना—पं० सदासुख । पत्र सं० ८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है ।

१११३. षोडशकारणभावना जयमाल— नथमल । पत्र सं० २८ । आ० ११½×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५० । ङ भण्डार ।

१११७. षोडशकारणभावना········· । पत्र सं० ६४ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९६२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५४ । ङ भण्डार ।

११११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । ङ भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१. षोडशकारणभावना........। पत्र सं० १७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलनववाड़........। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना-काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । ङ भण्डार ।

११२३. श्राद्धषडिकम्मणसूत्र........। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४० । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन........। पत्र सं० १० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण........। पत्र सं० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुकमीजीवण ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण........। पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८९ । ङ भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित—वीरसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० १९० ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. श्रावकाचार—अमितिगति। पत्र सं० ६७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६४। क भण्डार।

विशेष—कही कही संस्कृत में टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४४। च भण्डार।

११३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

११३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६२६ आषाढ़ सुदी २। वे० सं० २६०। अ भण्डार।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र सं० २१। आ० १०३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६२ बैशाख बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० १३८। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे बैशाख बुदी ४ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे सं० परवत तस्य भार्या रोहातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे। तत्पुत्र मलिदास तस्य भार्या भ्रमरी द्वितीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नथमल द्वतीय खीवा सा० नरसिंह महादास एतेषांमध्ये इदंशास्त्रं लिखायतं कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार। अर्जिका पदमसिरिज्योग्य बाई नारिंग घटापित।

११३७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १५२६ भादवा बुदी १। वे० सं० ५०१। ञ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र ब्र० नरसिंघ खंडेलवालान्वये सं० भालय भार्या जैश्री पुत्र हाम्य लिखावदतु।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनन्दि। पत्र सं० २ से २६। आ० १११/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०७।

विशेष—३६ से आगे भी पत्र नही है।

११३९. श्रावकाचार—पूज्यपाद। पत्र सं० ६। आ० ६१/२×६ इञ्च। भाषा– संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १०२। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८८० पौष बुदी १५। वे० सं० ८६। क भण्डार।

११४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८४ आषाढ़ सुदी २ । वे० सं० ४३ । च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०४ । सावन सुदी ६ । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

११४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६६ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८५५ । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ श्रावकाचारभाषा—पं० भागचन्द । पत्र सं० १८६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १६२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ ।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार…… । पत्र संख्या १ से २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नही हैं ।

११४९. श्रावकाचार…… । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-आचारशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गाथाये है ।

११५०. श्रावकाचारभाषा…… । पत्र सं० ५२ से १३१ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ से १७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

११५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ७१० । ङ भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । संवत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

११५५. मुक्तावलीरास ...... । पत्र सं० ८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । क भण्डार ।

११५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

११५७. समस्तलोकीगीता .... । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४० । ट भण्डार ।

११५८. समकितढाल—आसकरण । पत्र सं० १ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

११५९. समुद्घातभेद .... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । क भण्डार ।

११६०. सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं० ८१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । र० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० ७९५ । क भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।

११६३. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६९० । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४. सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र सं० १०९ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५९ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।
अश्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रन्थ समापत ठान ।।

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८८४ चैत सुदी २ । वे० सं० ७८ । ग भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८८७ चैत सुदी १५ । वे० सं० ७९६ । क भण्डार ।

विशेष—स्योजीरामजी भांवसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १९११ पौष बुदी १५ । वे० सं० २२ । भ्र भण्डार ।

११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं० ३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९७ । क भण्डार ।

११६६. सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ञ भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन ····। पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । ञ भण्डार ।

११७१. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० १४३ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावकों के आचार धर्म का वर्णन । र० काल सं० १२९६ । ले० काल सं० १७९८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के है बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५९ । ले० काल सं० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचियता एवं लेखक दोनो की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४० । ले० काल × । वे० सं० १ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६९ । ले० काल सं० १५९५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । ञ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरगोत्रे पांडे डीडा तेन इदं धर्मामृतनामोपाध्ययनं आचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य मं० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । ञ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४५० । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र प्रति प्राचीन है।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १५६४ फागुरा सुदी १२ । वे० सं० ५०० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ रविवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नन्दिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्ततमुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तैरियं धर्मामृतनामाशाधरश्रावकाचारटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकानाम्नी लिखापितात्मपठनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं च ।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

११८६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ७२ । ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० संख्या २११० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्वाध्याय……। पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७३ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी दी हुई है जिसके आठ पद्य हैं ।

११८८. साधुदिनचर्या……। पत्र सं० ६ । आ० ११¾×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीमत्तपोगणे श्री विजयदानसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखितं ।

११८९. सामायिकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २१०१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिविरचितं सामयिकपाठ संपूर्ण ।

११९०. सामायिकपाठ……। पत्र सं० २५ । आ० ८¾×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामायिकपाठ ·· ··· । पत्र सं० ५० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य विजयकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६६. सामायिक पाठ········। पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे सं० ८१४ । क भण्डार ।

१२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ८१५ । क भण्डार ।

१२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४. सामायिकपाठ (लघु) । पत्र सं० १ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५४ सावन बुदी ३ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

१२०९. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ८२। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ७८०। अ भण्डार।

१२१०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १९५९। वे० सं० ७८१। अ भण्डार।

१२११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८२। अ भण्डार।

१२१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८३। अ भण्डार।

१२१३. प्रति सं० । पत्र सं० २९। ले० काल सं० १९७१। वे० सं० ८१७। अ भण्डार।

विशेष—श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३९। ले० काल सं० १८७४ फागुण सुदी ६। वे० सं० १८३। ज भण्डार।

१२१५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १९११ आसोज सुदी ८। वे० सं० ५६। ञ भण्डार।

१२१६. सामायिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द। पत्र सं० ६४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८६२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१०। च भण्डार।

१२१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ सावन बुदी १३। वे० सं० ७१३। च भण्डार।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० ४५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७९८ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १२८। झ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे जती नैणसागर तपागच्छ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१२१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १७४० बैशाख सुदी ७। वे० सं० ७०९। च भण्डार।

विशेष—महात्मा सांवलदास बगद वाले ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत अथवा प्राकृत छन्दों का अर्थ दिया हुआ है।

१२२०. सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० २ से ३। आ० ११¾×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१२। ङ भण्डार।

१२२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ८१६। च भण्डार।

१२२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४८९। ङ भण्डार।

१२२३. सामायिकपाठभाषा……। पत्र सं० ६७। आ० ६×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी (ढूंढारी) विषय–धर्म। रचनाकाल ×। ले० काल सं० १७९३ मंगसिर सुदी ८। वे० सं० ७११। च भण्डार।

१२२४. सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र सं० १५ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६०७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५. सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. सिद्धों का स्वरूप…… । पत्र सं० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । ङ भण्डार ।

१२२७. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द । पत्र सं० ४०५ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल सं० १८६१ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६११ । ले० काल सं० १९४४ । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १८९३ । वे० सं० ९२ । ग भण्डार ।

विशेष—ख्यालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ से १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९९ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । घ भण्डार ।

१२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५४५ । ले० काल सं० १८९८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ८६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है ।

१२३४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी ५ । वे० सं० ८६९ । ङ भण्डार ।

१२३५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १९४९ चैत बुदी ८ । वे० सं० ११ । ज भण्डार ।

१२३७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल सं० १८३९ फागुण बुदी ४ । वे० सं० ८९ । झ भण्डार ।

१२३८. सुदृष्टितरंगिणीभाषा…… । पत्र सं० ५१ से ५७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६७ । ङ भण्डार ।

१२३९. सोनागिरपचीसी—भागीरथ । पत्र सं० ८ । ग्रा० ५३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ४६ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२३ । च भण्डार ।

१२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

१२४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १९२७ सावण सुदी ११ । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में गणेशीलाल पांड्या ने काशी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

१२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ से ६६ । ले० काल सं० १९५८ माह सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १९० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३० पत्र नहीं है । सुन्दरलाल पांड्या ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी ।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ११४ । साइज ११३×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४१ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ९४ । ग भण्डार ।

१२४५. स्थापनानिर्णय……। पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । ङ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम कांड का अष्टम उल्लास है । हिन्दी टीका सहित है ।

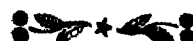
१२४६. स्वाध्यायपाठ……। पत्र सं० २० । ग्रा० ९×६३ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ । ज भण्डार ।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा…… । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११३×७३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । क भण्डार ।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला……। पत्र सं० १२ । ग्रा० १९×३३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । ख भण्डार ।

१२४९. हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द । पत्र सं० ६ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० ८५५ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।



विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव। पत्र सं० १०। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०। क भण्डार।

१२५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ६। वे० सं० ४। क भण्डार।

विशेष- ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है।

१२५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १०। वे० सं० ८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ७। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। र० काल १८वीं शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७। क भण्डार।

१२५४. अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास। पत्र सं० २। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६६। अ भण्डार।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत। पत्र सं० १५। आ० ५३×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वीं शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। क भण्डार।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सं० १० से २७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०२३। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। १ से ६ तथा २४–२५वां पत्र नहीं है।

१२५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६४३। वे० सं० ७। क भण्डार।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ४३०। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६७ भादवा सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३। क भण्डार।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुंद है।

१२५९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७ से २४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४। क भण्डार।

१२६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल ×।। वे० सं० १५। क भण्डार।

१२६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६७। ले० काल ×। वे० सं० १६। क भण्डार।

१२६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३४। ले० काल सं० १६२६। वे० सं० १। क भण्डार।

१२६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४५१। ले० काल सं० १६४३। वे० सं० २। क भण्डार।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ३ । घ भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति है । ८८ से १२३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ से १६३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं ।

१२६६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८३ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ बुदी १४ । वे० सं० ३६ । ङ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १८७ । ले० काल × । वे० सं० ५०८ । च भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८० सावन बुदी ६ । वे० सं० ३८ । ऋ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आत्मचिंतन । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७०. आत्मप्रबोध—कुमारकवि पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८० (क) ब भण्डार ।

१२७२. आत्मसंबोधनकाव्य········। पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । ङ भण्डार ।

१२७४. आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ से २६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८७ । अ भण्डार ।

१२७५. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७७४ फागुन बुदी । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१२७६. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६२ । पूर्ण । जीर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— ············ वर्षे ············ शाके············

श्रीनमिनाथचैत्यालये । श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्नाये । लिखितं ज्योति (षी) श्री गैबा तत्पुत्र महेस लिखितं ।

१२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५६४ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

१२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० सावण सुदी ४ । वे० सं० ३१५ । अ भण्डार ।

१२७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८६ । अ भण्डार

१२८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वे० सं० ५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले संस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है।

१२८८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १२ । वे० सं० ५४ । ङ भण्डार ।

विशेष- -पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की था ।

१२८६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६७० फागुन सुदी २ । वे० सं० २६ । च भण्डार ।

विशेष—महिनपुर निवासी चौधरी मोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२६०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६६५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० २२० । ञ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२६१. आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २७ । च भण्डार ।

१२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६०१ । वे० सं० ४८ । क भण्डार ।

१२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मंगसिर सुदी १४ । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८३२ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

१२६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १६१६ आषाढ सुदी १ । वे० सं० ७१ ।

विशेष—साहू तिहुण अग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी।

१२६६. आत्मानुशासनभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३७१ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

१२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

१२६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० ४३४ । अ भण्डार ।

१३००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्राचार्य कृत संस्कृत टीका भी है।

१३०१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल सं० १६८० । वे० सं० ५१ । क भण्डार ।

१३०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ५ । घ भण्डार ।

१३०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५ । ङ भण्डार ।

१३०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८६ से १०२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । ङ भण्डार ।

१३०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५७ । ङ भण्डार ।

१३०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६३३ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ५८ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है।

१३०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । ङ भण्डार ।

१३०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६१ से १६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६० । ङ भण्डार ।

१३०९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ७१ से १८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१३ । च भण्डार ।

१३१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९६ से १४३ । ले० काल सं० १६२४ कार्तिक सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ५१४ । च भण्डार ।

१३११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । च भण्डार ।

१३१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८५४ आषाढ बुदी ५ । वे० सं० २२२ । ज भण्डार ।

विशेष—रायचन्द साहवाड मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१३१३. प्रति सं० १८। पत्र सं० १४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१२४। ट भण्डार।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इश्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२८। अ भण्डार।

१३१५. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्त्तिकेय। पत्र सं० २४। आ० १२×५ इश्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६०४। पूर्ण। वे० सं० २६१। अ भण्डार।

१३१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। वे० सं० ६२८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं। १८६ गाथाये है।

१३१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ६१४। अ भण्डार।

विशेष—२८३ गाथाये है।

१३१८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। वे० सं० ८४४। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है।

१३१९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १८८८। वे० सं० ८४५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है।

१३२०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३१। ख भण्डार।

१३२१. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४। ङ भण्डार।

१३२२. प्रति सं० ८। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६४३ सावण सुदी ४। वे० सं० ११६। ङ भण्डार।

१३२३. प्रति सं० ९। पत्र सं० २८ से ७४। ले० काल सं० १८८६। अपूर्ण। वे० सं० ११७। ङ भण्डार।

१३२४. प्रति सं० १०। पत्र सं० ५०। ले० काल सं० १८२५ पौष बुदी १०। वे० सं० ११६। ङ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है। मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१३२५. प्रति सं० ११। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ४३७। च भण्डार।

१३२६. प्रति सं० १२। पत्र सं० २३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३८। च भण्डार।

१३२७. प्रति सं० १२। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी ६। वे० सं० ४३६। च भण्डार।

१३२८. प्रति सं० १३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १६२० सावण सुदी ८। वे० सं० ४४०। च भण्डार।

१३२९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४४२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१३३०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ भादवा बुदी १० । वे० सं० ८० । छ भण्डार ।

१३३१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० १०७ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । झ भण्डार ।

१३३३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२५ । झ भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० से आगे के पत्र नहीं है ।

१३३५ प्रति सं० २० । पत्र सं० ३८ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका ……। पत्र सं० ५४ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

१३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ से ११० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

१३३८. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र स० २१० । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १६०० माघ बुदी १० । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । क भण्डार ।

१३३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

१३४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४१ । च भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८३२ । अपूर्ण । वे० स० ४४३ । च भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८९२ आसोज सुदी १२ । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में माधोसिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में पं० चोखचन्द के शिष्य रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल स० १८६६ आषाढ सुदी ८ । वे. सं० ५०५ । व्य भण्डार ।

१३४४. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० २३७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८६३ सावण बुदी ३ । ले० काल सं० १०२६ । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९. कुशलाणुबंधिअज्झुयणं……। पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १९८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबंधिअज्झुयणं समत्तं । इति श्री चतुशरण टबार्थ ।

इसके अतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां और हैं ।

१३५०. चक्रवर्तिकीबारहभावना…… । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान……। पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । ञ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७७९ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२९ । ङ भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १०८६ सावण सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमस्सकाले दससयछासी जु'यमि वहमाणेह

सावणसिय णवमीए अंवयणपरीम्मकयं मेयं ॥

१३५६. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य। पत्र सं० १०५ । आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। र० काल ×। ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २७४। अ भण्डार।

विशेष—बैराट नगर मे श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३६०. प्रति सं० २। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १३। वे० सं० ४२। अ भण्डार।

१३६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०७। ले० काल सं० १६४२ पौष सुदी ६। वे० सं० २२०। क भण्डार।

१३६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१। क भण्डार।

१३६३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। वे० सं० २२२। क भण्डार।

१३६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६४। ले० काल सं० १८३५ आषाढ सुदी ३। वे० सं० २३४। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नही है।

१३६५. प्रति सं० ७। पत्र सं० १० से ८२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६२। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नही है।

१३६६. प्रति सं० ८। पत्र सं० १३१। ले० काल ×। वे० सं० ३२। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१३६७. प्रति सं० ९। पत्र सं० १७६ से २०१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२३। ङ भण्डार।

१३६८. प्रति सं० १०। पत्र सं० २६८। ले० काल ×। वे० सं० २२४। अपूर्ण। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। हिन्दी टीका सहित है।

१३६९. प्रति सं० ११। पत्र सं० १०६। ले० काल ×। वे० सं० २२५। ङ भण्डार।

१३७०. प्रति सं० १२। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५। ङ भण्डार।

१३७१. प्रतिसं० १३। पत्र सं० १३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२६। ङ भण्डार।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है।

१३७२. प्रति सं० १४। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० २२७। ङ भण्डार।

१३७३. प्रति सं० १५। पत्र सं० १४०। ले० काल सं० १६४८ आसोज बुदी ८। वे० सं० १२४। ङ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र बैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

१३७४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० सं० २८२ । छ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । श्रथ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । ग्रांबेर गए स्थानत् । कूरमवंशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पंचायत शास्त्रं ज्ञानार्णव लिखापितं त्रैपनक्रियावर्तनिवनंबाइ धनाइयोग्यु घटापितं कर्मक्षयनिमितं ।

१३७७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । । वे० सं० ६० । झ भण्डार ।

१३७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ञ भण्डार ।

१३७६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३ से ७३ । ले० काल सं० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्त्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १७८८ । वे० सं० ३७० । ञ भण्डार ।

१३८१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६०१ । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । क भण्डार ।

१३८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १० । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

१३८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद मे आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० सदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । क भण्डार ।

१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । क भण्डार ।

विशेष—पं रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । ख भण्डार ।

१३९१. ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं० ७७९ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलासेन साह पाशा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-दिवाकरसाहऋषिदासस्य श्रवणार्थं पं० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल × । । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।

१३९३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र सं० १५८ । आ० ११×६¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-योग । र० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १९४ । छ भण्डार ।

१३९४. ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६९३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-योग । र० काल सं० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । क भण्डार ।

१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वे० सं० २२४ । क भण्डार ।

१३९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२१ । ले० काल सं० १८८३ सावण सुदी ७ । वे० सं० ३४ । ग भण्डार ।

विशेष—शाह जिहानाबाद मे संतूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने मोनपाल सांवला से प्रतिलिपि कराके चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

१३९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल × । वे० सं० ५६५ । च भण्डार ।

१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ से २१९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १९११ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २९० पत्र नही है ।

१४००. तत्त्वबोध……। पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० ३१० । ञ भण्डार ।

१४०१. त्रयोविंशतिका……। पत्र सं० १३। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४०। च भण्डार।

१४०२. दर्शनपाहुडभाषा……। पत्र सं० २६। आ० १०३/४×८१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ भण्डार।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है।

१४०३. द्वादशभावना दृष्टान्त……। पत्र सं० १। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–गुजराती। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १। वे० सं० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४. द्वादशभावनाटीका……। पत्र सं० ६। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५५। ट भण्डार।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं।

१४०५. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० २०। आ० १०३/४×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८५। ट भण्डार।

१४०६. द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०७. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० १। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १६१। ञ भण्डार।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्र। पत्र सं० ८३। आ० १२३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १९०७ भादवा बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३९। क भण्डार।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू। पत्र सं० ४। आ० ६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९०४। ट भण्डार।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२८। ङ भण्डार।

१४१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ञ भण्डार।

१४१३. पञ्चतत्त्वधारणा……। पत्र सं० ७। आ० ६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२३२। अ भण्डार।

१४१४. पञ्चछक्तिणी ''''''। पत्र सं० ४। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३१। क भण्डार।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द। पत्र सं० २४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४ सावन सुदी ११। पूर्ण। घ भण्डार।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २२। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ६२३। च भण्डार।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र सं० १३ से १४४। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–अध्यात्म। र० काल १०वीं शताब्दी। ले० काल सं० १७९९ आसोज सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० २०८३। अ भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ९७। ले० काल सं० १९३५। वे० सं० ४४५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७९। ले० काल सं० १९०४ श्रावण बुदी १३। वे० सं० ५७। घ भण्डार। संस्कृत टीका सहित है।

विशेष—ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक। अन्तिम ६ पृष्ठों मे बहुत बारीक लिपि है।

१४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३४। ङ भण्डार।

१४२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३५। ङ भण्डार।

१४२२. प्रति सं० ६। प्रत्र सं० २५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०९। च भण्डार

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

१४२३. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०। च भण्डार।

१४२४. प्रति सं० ८। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १८३० बैसाख बुदी ३। वे० सं० ८२। ज भण्डार।

विशेष—जयपुर में शुभचन्द्रजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की। संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं।

१४२५. परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६६ से २४५। आ० १०¾×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। ङ भण्डार।

१४२६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वे० सं० ४५३। ञ भण्डार।

१४२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७१७ पौष सुदी ५ । वे सं० ४५४ । अ भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८. परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र है ।

१४३०. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० १६३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८९० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । च भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९९६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४. परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । आ० ११×६ । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४४९ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १९५० । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशबालावबोधिनीटीका—खानचन्द । पत्र सं० २४१ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९१९ चैत्र सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४० । क भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९४८ । वे० सं० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र सं० १५४ । आ० १२३/४×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८४३ आषाढ बुदी ७ । ले० काल सं० १६५२ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । क भण्डार ।

१४४५. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ५६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ६३ से १०८ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

१४४८. प्रवचनसार—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ४७ । आ० १२×४१/२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५०८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ भादवा बुदी ५ । वे० सं० २३८ । च भण्डार ।

१४५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८३७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० २४० । च भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१४५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४. प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल १०वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्वदीपिका है ।

१४५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८५२ । अ भण्डार ।

१४ ६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१४५६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

१४६२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १६४० भादवा बुदी ३ । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३. प्रवचनसारटीका .... । पत्र सं० ४१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१० । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राकृत मे मूल संस्कृत मे छाया तथा हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४. प्रवचनसारटीका ...... । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति ...... । पत्र सं० ५१ से १३१ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ । अपूर्ण । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे नेवटा में महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६. प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० ८३ से ३०५ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १७२५ । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे ओसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । ले० काल × । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १७४३ पौष सुदी २ । वे० सं० ५१३ । ङ भण्डार ।

१४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२. प्रति सं० ७। पत्र सं० १८४। ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २। वे० सं० १६३। छ भण्डार।

विशेष—लवाण निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका। पत्र सं० ३८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १७२६। ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ६४४। च भण्डार।

१४७४. प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास। पत्र सं० २१७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६३३ ज्येष्ठ बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५११। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त मे वृन्दावनदास का परिचय दिया है।

१४७५. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० ८६। आ० ११×६¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१२। ङ भण्डार।

१४७६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४२। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

१४७७. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० १२। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२२। ट भण्डार।

१४७८. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० १४५ से १८५। आ० ११¾×७¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। अपूर्ण। वे० सं० ६४५। च भण्डार।

१४७९. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० २३२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६२६। वे० सं० ६४३। च भण्डार।

१४८०. प्राणायामशास्त्र……। पत्र सं० ६। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–योगशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५६। अ भण्डार।

१४८१. बारह भावना—रइधू। पत्र सं० ५। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

विशेष—लिपिकार ने रइधू कृत बारह भावना होना लिखा है।

प्रारम्भ—ध्रुववस्त निश्चल सदा अध्रुभाव परजाय।
स्कंदरूप जो देखिये पुद्गल तणो विभाव॥

अन्तिम—अकथ कहाणी ज्ञान की कहन सुनन की नाहि।
आपनही मे पाइये जब देखे घटमाहि॥
इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण।

१४८२. बारहभावना......। पत्र सं० १५। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिन्तन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५२६। क भण्डार।

१४८३. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० ६८। ऋ भण्डार।

१४८४. बारहभावना—भूधरदास। पत्र सं० १। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२४७ ञ भण्डार।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है।

१४८५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २५२। ख भण्डार।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की बारह भावना है।

१४८६ बारहभावना—नवलकवि। पत्र सं० २। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। क भण्डार।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुंदकुंद। पत्र सं० ७। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३५।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४८८. भववैराग्यशतक......। पत्र सं० १५। आ० १०×६ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८२८ फागुरण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४५५। ञ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१४८९. भावनाद्वात्रिंशिका......। पत्र सं० २६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५७। क भण्डार।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह और है। यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपंचविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र। प्रति स्वर्णाक्षरों मे है।

१४९०. भावनाद्वात्रिंशिकाटीका......। पत्र सं० ४६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल × [ले]० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६८। क भण्डार।

१४९१. भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सं० ६। आ० १४×५१/२ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३०। ज भण्डार।

विशेष—प्राकृत गाथाओ पर संस्कृत श्लोक भी हैं।

१४९२. मृत्युमहोत्सव......। पत्र सं० १। आ० १११/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४१। ञ भण्डार।

१४९३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख। पत्र सं० २२। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १९१८ आषाढ सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०। घ भण्डार।

१४९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ६०४। क भण्डार।

१४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६५ । म भण्डार ।

१४६८. योगबिंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ञ भण्डार ।

१४६६. योगभक्ति ......। पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । क भण्डार ।

१५००. योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६३ । अ भण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र........। पत्र सं० ६४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ आषाढ़ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ । अपूर्ण । वे० स० ८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सुखराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६०७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३१० । ङ भण्डार ।

१५०७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० २८२ । च भण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०४ आसोज बुदी ३ । वे० सं० ३३६ । ञ भण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१६ । ञ भण्डार ।

१५१०. योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२½×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

विशेष—आगरे में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११. योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १६३२ सावन सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । क भण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा·······। पत्र सं० ६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । क भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह·······। पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्त्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन·······। पत्र सं० २ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

'धर्म्मनाथंस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।
धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तकं ॥

१५१९. लिंगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ञ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । व्य भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । अ भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में पं० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यो में भी अर्थ दिया है ।

१५२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८० ख भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

१५३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३८ । क भण्डार ।

१५३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २७ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

१५३३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ७४० । क भण्डार ।

१५३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३५७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ३८० । अ भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७१५ । वे० सं० १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नयनपुर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १ से ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राभृत है– दर्शन, सूत्र, चारित्र । चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से आगे नही है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३६. षट्पाहुडटीका…… …। पत्र सं० ५१ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

१५४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

१५४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८० फागुण सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर में प्रतिलिपि हुई ।

१५४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१५४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८८३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ६ । ञ

विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ६८ । ञ भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८ संबोधअक्षरबावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१५४९. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं ४ । आ० ८×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८४० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत सं० २६३ सर्व भवंति । वे० सं० १८१ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसंघे नंदिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार ।

१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में अर्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८७७ बैशाख बुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१५५६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्डार ।

१५६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष बुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट भण्डार ।

१५६४. **समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितिया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेताम्बरशाखायां श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य ऋषि लक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है–संवत् १६६७ वर्षे असाढ बदि सतम्यां शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे अंबावतीमध्ये लिखाइतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थं । लिखितं जोशी आलिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोकों की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल × । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । क भण्डार ।

विशेष—कलशो पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६१४ पौष बुदी ८ । वे० सं० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१५८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०३ । वे० सं० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-संवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णाषष्ठ्यां तिथौ बुद्धवारे लिखितेयम् ।

१५८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१५८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० से ४६ । ले० काल × । वे० सं० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १७०३ बैशाख बुदी १० । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :—सं० १७०३ वर्षे बैशाख कृष्णादशम्या तिथौ लिखितम् ।

१५८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० स० ७४० । क भण्डार ।

१५८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १७०६ । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवंत दुबे ने सिरोज ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

१५८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१५९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७९ । ले० काल सं० १६४८ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० १०६ । घ भण्डार ।

विशेष—अकबर बादशाह के शासनकाल में मालपुरा मे लेखक सूरि श्वेताम्बर मुनि जेसा ने प्रतिलिपि की थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तियां और लिखी हैं—

'पांडे खेतु सेठ तत्र पुत्र पाडे पारमु पोथी देहुरे ।

घाली सं० १६७३ तत्र पुत्र बीसाखानन्द कवहर ।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये है ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १९८ । ले० काल सं० १९१८ माघ सुदी १ । वे० सं० ७५ । ज भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ११२ से १७० तक नीले पत्र है ।

१५९३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १७३० मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०९ । ञ भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति.......। पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । घ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका........। पत्र सं० ८१ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ । ङ भण्डार ।

१५९६. समयसारनाटक—बनारसीदास। पत्र सं० ९७। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १६९३ आसोज सुदी १३। ले० काल सं० १८३८। पूर्ण। वे० सं० ४०६। अ भण्डार।

१५९७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८९७ फागुण सुदी ६। वे० सं० ४०६। अ भण्डार।

विशेष—आगरे में प्रतिलिपि हुई थी।

१५९८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६६। अ भण्डार।

१५९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९८४। अ भण्डार।

१६००. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४ से ११५। ले० काल सं० १७८९ फागुण सुदी ४। वे० सं० ११२८ अ भण्डार।

१६०१ प्रति सं० ६। पत्र सं० १८४। ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ बुदी १५। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—पद्यों के बीच में सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है। टीका रचना सं० १९१४ कार्तिक सुदी ७ है।

१६०२. प्रति सं० ७। पत्र स० १११। ले० काल सं० १९५६। वे० सं० ७४[illegible]। क भण्डार।

१६०३. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४ से ५९। ले० काल ×। वे० सं० २०८। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही हैं।

१६०४. प्रति सं० ९। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८। वे० सं० ८४। ग भण्डार।

१६०५. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३९९। ले० काल सं० १९२० बैशाख सुदी १। वे० सं० ८५। ग भण्डार।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है। लिपि बहुत सुन्दर है। अक्षर मोटे है तथा एक पत्र में ५ लाइन और प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं। पद्यों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रो मे है। यह ग्रन्थ तनसुख सोनी का है।

१६०६. प्रति सं० ११। पत्र सं० २८ से १११। ले० काल सं १७१४। अपूर्ण। वे० सं० ७६७। ङ भण्डार।

विशेष— रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रति सं० १२। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १९५१ चैत्र सुदी २। वे० सं० ७६८। ङ भण्डार।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी।

१६०८. प्रति सं० १३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १९४३ मंगसिर बुदी १३। वे० सं० ७६९। ङ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी।

१६०६. प्रति सं० १४। पत्र सं० १६०। ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३। वे० सं० ७७०। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है।

१६१०. प्रति सं० १५। पत्र सं० १०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ७७१। क भण्डार।

१६११. प्रति सं० १६। पत्र सं० २ से २२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३५७। क भण्डार।

१६१२. प्रति सं० १७। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १७६३ आषाढ़ सुदी १५। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

१६१३. प्रति सं० १८। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० ६६२। च भण्डार।

विशेष—पांडे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई।

१६१४. प्रति सं० १६। पत्र सं० ६०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

१६१५. प्रति सं० २०। पत्र सं० ४१ से १३२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६६५ (क)। च भण्डार।

१६१६. प्रति सं० २१। पत्र सं० १३। ले० काल X। वे० सं० ६६५ (ख)। च भण्डार।

१६१७. प्रति सं० २२। पत्र सं० २६। ले० काल X। वे० सं० ६६५ (ग)। च भण्डार।

१६१८. प्रति सं० २३। पत्र सं० ४० से ५०। ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ६२ (अ)। छ भण्डार।

१६१९. प्रति सं० २४। पत्र सं० १८३। ले० काल सं० १७८८ आषाढ बुदी २। वे० सं० ३। ज भण्डार।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२०. प्रति सं० २५। पत्र सं० ४ से ८१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५२६। ट भण्डार।

१६२१. प्रति सं० २६। पत्र सं० ३६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७०८। ट भण्डार।

१६२२. प्रति सं० २७। पत्र सं० २३७। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १६०६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३. प्रति सं० २८। पत्र सं० ६०। ले० काल X। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ५१३। आ० १३X८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १०। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० ७४८। क भण्डार।

१६२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६६। ले० काल X। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

१६२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१६। ले० काल X। वे० सं० ७५०। क भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवाब गजुद्दीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका ······ । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं है । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा······ । पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका······ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र······ । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा······ । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. **समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी** । पत्र सं० ४१५ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । र० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी १० । वे० सं० ७८० । ङ भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

१६५०. **समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र सं० १८७ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–गुजराती लिपि हिन्दी । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये है । सारंगपुर निवासी पं० उधरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्त्तिक सुदी ६ । वे० सं० ११४ । घ भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । ङ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । ङ भण्डार ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१६५८. **समाधिमरण**.........। पत्र सं० ४ । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२६ ।

१६५९. **समाधिमरणभाषा—द्यानतराय** । पत्र सं० ३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४२ । अ भण्डार ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

१६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०१ । म्रा० १२×[illegible] इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है। टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद। पत्र सं० ७। म्रा० ७३/४×५१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

१६६४. समाधिमरणभाषा……। पत्र सं० १३। म्रा० १३३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७८४। क भण्डार।

१६६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० १७३७। ट भण्डार।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा……। पत्र सं० २५। म्रा० १०१/२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। अ भण्डार।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८८३ मंगसिर बुदी ११। वे० सं० ८६। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १८२७। वे० सं० ६९९। च भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी १। वे० सं० ७००। च भण्डार।

१६७०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी ८। वे० सं० २३९। छ भण्डार।

१६७१. प्रति सं० ६। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १८५३ पौष बुदी ९। वे० सं० १७५। ज भण्डार।

विशेष—हरवंश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद। पत्र सं० १९। म्रा० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

१६७३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १९२४ बैशाख बुदी ६। वे० सं० ७७। ज भण्डार।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र सं० ५२। म्रा० १२१/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ७६३। क भण्डार।

१६७६. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० ७६५। क भण्डार।

१६७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ फागुण बुदी १३ । वे० सं० ३७३ । च
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८. प्रति स० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७८५ । क भण्डार ।

१६८०. समाधिशतकटीका········। पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । श्र भण्डार ।

१६८१. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. सबोधपंचासिका—रइधू । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । श्र भण्डार ।

विशेष—पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७१६ वर्षे मिती पौस वदि ७ सुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री वलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति साबडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री बिहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा—पूरव श्रावक कौ कहे, गुण इकवीस निवास ।
सो परतखि पेखिये, श्रंगि बिहारीदास ॥

लिखतं महात्मा डूंगरसी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहाणात् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम २० पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४. संबोधसत्तरी········। पत्र सं० २ से ७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८ । श्र भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय········। पत्र सं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं० २१ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९५६ चैत्र सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका········। पत्र सं० २१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल। पत्र सं० २ से ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७५। अ भण्डार।

१६८९. अष्टशती—अकलंकदेव। पत्र सं० १७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७९४ मंगसिर बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० २२२। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। पं० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६९०. प्रति सं० २। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १८७५ फागुन सुदी ३। वे० सं० १५९। अ भण्डार।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि। पत्र सं० १९७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैनदर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७९१ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २४४। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई। प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मंडनमणिः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकभिधा, श्री देवसंघाग्रणी संवत्सरे चंद्र रंध्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चोखचंदेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्यासतप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचंद्रेण धीमता।
ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४०। क भण्डार।

१६९३. आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि। पत्र सं० २४७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३६ कार्त्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५८। क भण्डार।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी। भीगने से पत्र चिपक गये हैं।

१६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ५९। क भण्डार।

विशेष—कारिका मात्र है।

१६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३३। अपूर्ण। च भण्डार।

१६६६. आप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ८४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आषाढ़ सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ६०। क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती' दिया हुआ है।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १०१। ले० काल ×। वे० सं० ६१। क भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० ६३। क भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० ६२। क भण्डार।

१७००. आप्तमीमांसालंकृति—विद्यानन्दि। पत्र सं० २२६। आ० १६×७ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ भादवा सुदी १५। वे० सं० १४।

विशेष—इसी का नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है। मालपुरा ग्राम मे महाराजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति काफी बड़ी साइज की है।

१७०१. प्रति सं० २। पत्र सं० २२५। ले० काल ×। वे० सं० ८६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

१७०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७२। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७८४ श्रावण सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७३। ङ भण्डार।

१७०३. आप्तमीमांसाभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ६२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–न्याय। र० काल सं० १८६६। ले० काल १८६०। पूर्ण। वे० सं० ३६५। अ भण्डार।

१७०४. आलापपद्धति—देवसेन। पत्र सं० १०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०। अ भण्डार।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतसार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और हैं।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्त्तंड रियजनन्दिपंच शाक्तिकदेवेनेदं कथितं।

१७०५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० २०१० फागुण बुदी ४। वे० सं० २२७०। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है। जयपुर में नाथूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

१७०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ७६। ङ भण्डार।

१७०७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६। च भण्डार।

१७०८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ३। च भण्डार।

१७०९. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ४। अ भण्डार।

विशेष—मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

१७१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

१७११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद ...... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय- दर्शन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । ञ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३. गर्भषडारचक्र—देवनंदि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । झ भण्डार ।

१७१४. ज्ञानदीपक........ । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष- स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । झ भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार ।
सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्णं ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति .... पत्र सं० ८ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ-

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृतं ।
सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिंगितमीश्वरं ॥१॥
ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरैः ।
स्वरस्नेहन संयोज्यं ज्वालयेदुत्तराधरैः ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण ...... । पत्र सं० ४० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका ...... । पत्र सं० १५ । आ० १४×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह सुदी १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१७२०. तर्कप्रमाण ······ । पत्र सं० ८ से ५० । ग्रा० ६¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । अ भण्डार ।

१७२१. तर्कभाषा—केशव मिश्र । पत्र सं० ४४ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।

१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २७३ । ङ भण्डार ।

१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० २२५ । ज भण्डार ।

१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र । पत्र सं० ३५ । ग्रा० १०×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ५११ । अ भण्डार ।

१७२५. तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १३५ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६४ । अ भण्डार ।

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है ।

१७२६. तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ भण्डार ।

१७२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२४ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ४७ । ज भण्डार ।

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१२ माह सुदी ११ । वे० सं० ४८ । ज भण्डार ।

विशेष—पोथी माणकचन्द लुहाड्या की है । 'लेखक विजराम पौष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा हुआ है ।

१७२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० १७६५ । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—चेला प्रतापसागर पठनार्थं ।

१७३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६६, १८३२) और हैं।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका·········। पत्र सं० ८ । आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४२। व्य भण्डार।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ। पत्र सं० ८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५८०। अ भण्डार।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन। पत्र सं० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–दर्शन। र० काल सं० ६६० माघ सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४८। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी।

१७३५. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—पं० बख्तराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधों के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१७३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है।

१७३७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३। व्य भण्डार।

१७३८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १८५० भादवा बुदी ८। वे० सं० ५। व्य भण्डार।

विशेष—जयपुर में पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल। पत्र सं० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–दर्शन्। र० काल सं० १६२० प्र० श्रावण बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। क भण्डार।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० २८१। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–दर्शन। र० काल सं० १६२३ माघ सुदी १०। ले० काल सं० १६३६। पूर्ण। वे० सं० २६४। क भण्डार।

१७४१. प्रति सं० २। पत्र सं० १२०। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

१७४२. दर्शनसारभाषा·········। पत्र सं० ७२। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०। ख भण्डार।

१७४३. द्विजवचनचपेटा। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३८२। ञ भण्डार।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र सं० ४५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सात नयो का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १९४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे तीन प्रतियां (वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) और हैं ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । आ० १२¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–सात नयो का वर्णन । र० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १७२६ । वे० स० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र मे तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है ।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ड, छ, ज, झ भण्डारों मे एक एक प्रति (वे० सं० ३४५, १८७, ६२३, ८१) क्रमशः और हैं ।

१७४८. नयचक्रभाषा…… । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । र० काल × । ले० काल सं० १९४८ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अग्रवाल । पत्र सं० १३७ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–न्याय । र० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट में की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १९३८ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र सं० १५ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १ से ९ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टाकलंकशशांकानुस्मृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८१४ पौष सुदी ७ । वे० सं० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव। पत्र सं० ५८८। आ० १४½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ३९६। क भण्डार।

विशेष—भट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति। पत्र सं० ३ से ८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२०७। अ भण्डार।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३९७, ३९८) घ एवं ङ भण्डार में एक २ प्रति (वे० सं० ३४७, १८०, च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) और है।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ७१। आ० १४×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। र० काल सं० १९३०। ले० काल स० १९३८ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ३४६। क भण्डार।

१७५७. न्यायदीपिकाभाषा—संघी पन्नालाल। पत्र सं० १९०। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय। र० काल सं० १९३५। ले० काल सं० १९४१। पूर्ण। वे० सं० ३९९। क भण्डार।

१७५८. न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि। पत्र सं० ८६ से १२७। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९०० सावण बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २०९३। अ भण्डार।

१७५९. न्यायशास्त्र ·····। पत्र सं० २ से ५२। आ० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७६। अ भण्डार।

१७६०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४६। अ भण्डार।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ मे उद्धृत है।

१७६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५। ज भण्डार।

१७६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६८। ट भण्डार।

१७६३. न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७। आ० १०½×४½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल सं० १७४९। अपूर्ण। वे० सं० १३४३ अ भण्डार।

१७६४. न्यायसार·····। पत्र सं० २४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६११। अ भण्डार।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है।

१७६५. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ। पत्र सं० १४ से ४६। आ० ६½×३½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १७७४। अपूर्ण। वे० सं० १५७८। अ भण्डार।

१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि । पत्र सं० २८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३ । ज भण्डार ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७. न्यायसूत्र·······। पत्र सं० ४ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—हेम व्याकरण मे से न्याय सम्बन्धी सूत्रों का सग्रह किया गया है । आशानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट । पत्र सं० २ से ६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका– इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽयं कियानपि विष्णुभट्टैः पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृतः । प्रति प्राचीन है ।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि । पत्र सं० १५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ भण्डार ।

१७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७७ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

विशेष—शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय में लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७७१. पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी । पत्र सं० ३७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । क भण्डार ।

१७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४५८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३. परीक्षामुख—माणिक्यनंदि । पत्र सं० ५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी १ । वे० सं० २१३ । च भण्डार ।

१७७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ से १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४ । च भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

१७७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार ।

लेखन काल अष्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७३८ । ट भण्डार ।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ३०६ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल सं० १८६३ आषाढ सुदी ४ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

१७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है । एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ अधूरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १९३० मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५९ । घ भण्डार ।

१७८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । आ० १०½×५¼ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१८ । ले० काल × । वे० सं० ६३९ । च भण्डार ।

१७८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९५ । ले० काल सं० १९१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ६४० । च भण्डार ।

१७८५. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र सं० ९ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र सं० २८८ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४९६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि है ।

१७८७ प्रमाणनिर्णय·······। पत्र सं० ९४ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४९७ । क भण्डार ।

१७८८. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४९८ । क भण्डार ।

१७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १७९ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेश्यामलके तिथौ तृतीयायां प्रमाणाख्य परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९०. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र सं० २०२ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल सं० १९१३ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४९९ । क भण्डार ।

१७९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१९ । ले० काल × । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र सं० ६७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । क भण्डार ।

१७९३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि। पत्र सं० ४० । आ० ११३/४×७३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७९४. प्रमाणमीमांसा……। पत्र सं० ६२ । आ० ११३/४×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९५७ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

१७९५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७९ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३८ तथा २७९ से आगे नही है ।

१७९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल सं० १९४२ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

१७९७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । क भण्डार ।

१७९८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० १९१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि में सदेहवादियों के खण्डन तक है ।

१७९९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ३४ । आ० १०×४१/२ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४७ । ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८९८ । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १७९७ माघ सुदी १० । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर मे रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३. बालबोधिनी—शंकर भगति । पत्र सं० १३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३९२ । अ भण्डार ।

१८०४. भावदीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । आ० १३×६१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धानमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है ।

१८०५. महाविद्याविडम्बन…… । पत्र सं० १२ से १९ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १५५३ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १९८९ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५५३ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अर्थेह श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । ६०५ । क भण्डार ।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं० १८८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

१८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १९४७ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

१८११. वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी । संवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट दुर्गे लिखितः ।

१८१२. वीरद्वात्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७७ । अ भण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नही है ।

१८१३. षड्दर्शनवार्त्ता ...... । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनविचार ...... । पत्र सं० १० । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१८१५. षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० १२½×५ इंच । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०९ । क भण्डार ।

१८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ९८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १५७० भादवा सुदी २ । वे० सं० ३९९ । अ भण्डार ।

१८१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२०. षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १८५ । आ० १३×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ द्वि० भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१८२१. षड्दर्शनसमुच्चयटीका……। पत्र सं० ६० । म्रा० १२३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । क भण्डार ।

१८२२. संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया …… । पत्र सं० ४६ । म्रा० १२×५१/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७२७ । वे० सं० ३६७ । व्य भण्डार ।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं० ६ । म्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन (सप्त नयों का वर्णन है) । र० काल × । ले० काल सं० १७४५ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ— विनय-मुनि-नयस्थाः सर्वभावा भुविस्था ।
जिनमतकृतिगम्या नेतरेषा सुरम्याः ॥
उरुकृतगुरुपादासेव्यमाना सदा मे ।
विदधतु सुकृपांते ग्रन्थ प्ररम्यमाणे ॥१॥
मादर्देवं प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधकं
यं श्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुधियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः णीञ् प्रापणे इति वचनात् ।

अन्तिम— तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मलं ।
लब्धं येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंधोदितः ॥
स्याद्वादमार्गाश्रयिणो जनाः ये श्रोष्यति शास्त्रं मुनयावबोधं ।
मोच्यंति चैकांतमतं मुदोषं मोक्षं गमिष्यंति सुखेन भव्याः ॥

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं चेयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी……। पत्र सं० ३६ । म्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है । ले० काल × । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८ । व्य भण्डार ।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं० × । म्रा० १०१/४×४१/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैशेषिक न्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६३ । ट भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२६. सन्मतितर्क—मूलकर्त्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४८ । म्रा० १०×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०३ । अ भण्डार ।

१८२७. सारसंग्रह—वरदराज । पत्र सं० २ से ७३ । म्रा० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

१७२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट । पत्र सं० ६८ । म्रा० ११×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११७२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है ।

१८२९. स्याद्वादचूलिका……। पत्र सं० १५ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १६३० कार्त्तिक बुदी ५ । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—सागवाड़ा नगर में ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । समयसार के कुछ पाठों का अंश है ।

१८३०. स्याद्वादमञ्जरी —मल्लिषेणसूरि । पत्र सं० ४ । आ० १२३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १०६ । ले० काल सं० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । ञ भण्डार ।

१८३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३/४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल कारिकामात्र है ।

१८३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६० । ञ भण्डार ।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि। पत्र सं० २७३। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १७१६। ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २१८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७८६ वर्षे मिती जेष्ट सुदी ६। जहानाबादमध्ये लिखापितं आचार्य हर्षकीर्त्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं।

१८३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७। छ भण्डार।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह। पत्र सं० १२६। आ० ६३×४ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। र० काल सं० १५०५ कार्त्तिक सुदी १५। ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२८। अ भण्डार।

विशेष—सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल मे सिकन्दराबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८३७. अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र सं० ८। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७४। ञ भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है।

१८३८. आगामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णन…… पत्र सं० ८ से २१। आ० १२३×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८। अ भण्डार।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषों का भी वर्णन है।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ५२७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ६२। ञ भण्डार।

विशेष—जयपुर में पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१८४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५०६। ले० काल सं० १६६४। वे० सं० १५४। अ भण्डार।

१८४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०४२। अ भण्डार।

१८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८१। ले० काल सं० १६५०। वे० सं० ५६। क भण्डार।

१८४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३७। ले० काल × वे० सं० ५७। क भण्डार।

विशेष—देहली में सन्तलालजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १९१४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ६ । घ भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८९४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी । प्रशस्ति काफ़ी बड़ी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कहीं कही कठिन शब्दो का संस्कृत मे अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० सं० १४६ । च भण्डार ।

१८४७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० २५२ । च भण्डार ।

१८४८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५१० । ले० काल सं० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९. प्रति सं० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६) च भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१, ३२) ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६३० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साह व्यहराज ने पंचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । [illegible] । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

१८५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६५ । ले० काल सं० १७१६ । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७. आदिपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४०० । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४६ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १८२४ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) ङ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ६७, ६८, ६९, ७०) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१८, ५१९) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५५) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८६, १४६) और है । ये सभी प्रतिया अपूर्ण हैं ।

१८६०. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । अ भण्डार ।

१८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८३ । ले० काल स० १६०६ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ८ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच मे २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये है । काष्ठासंघी माथुरान्वयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की बड़ी प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल मे चौहाणाराज्यान्तर्गत अलाउपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम में श्री आदिनाथ चैत्यालय में श्री गोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४० । ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ५ । वे० सं० ५६० । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे संकेतार्थ दिया है ।

१८६३. प्रति स० ४ । पत्र सं० ३०६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुरमे महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई । सा० हेमराज ने संतोषराम के शिष्य बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५३ । ले० काल सं० १८८८ सावरण सुदी १३ । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १७०६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पांडे गोर्धन ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल सं० १७१८ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २७१ । व्य भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और ड भण्डार में एक-एक प्रति (वे० सं० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८६८. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल सं० १०८० । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । व्य भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य संवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविवरणसागरसेनसैद्धांतान् परिज्ञाय मूलटिप्पणिकाचावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीसंघाचार्य सत्कवि शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दोर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ।। १०२ ।।

इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितंसमाप्तं ।। अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द संवत् १५७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिकंदर पुत्र सुलितानबाहिमुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगसी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इदं उत्तरपुराण टीका लिखापितं । शुभं भवतु । मांगल्यं ददाति लेखक पाठकयोः ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्ठिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिलमल कलंकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पंडितेन महापुराण टिप्पणकं सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति ।

१८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १८७६ । ट भण्डार ।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १७८६ मंगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द का ५३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बख्तावरलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० । ले० काल सं० १८८३ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१५ । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी १ । वे० सं० ६ । ख भण्डार ।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १८५८ कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० १८ । क भण्डार ।

१८७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४०४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १३७ । म भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५२२, ५२३, ५२४) और हैं ।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ७६३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १९३० आषाढ़ सुदी ३ । ले० काल सं० १९४५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७५ । क भण्डार ।

१८७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ङ भण्डार ।

विशेष—५३४वां पत्र नही है । कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१८७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रंग के है । यह संशोधित प्रति है । ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९) च भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ५२१, ५२५) तथा छ भण्डार मे एक प्रति और है ।

१८७९. चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल । पत्र सं० ३१२ आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १९१३ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

१८८०. जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण । पत्र सं० ६६० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—जिनेन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षसागर के भाई थे । १९५ अधिकार है । पुराण के विभिन्न विषय हैं ।

१८८१. त्रिषष्टिस्मृति—महापंडित आशाधर । पत्र सं० २४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल सं० १२९२ । ले० काल सं० १८१५ शक सं० १६८० । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ञ भण्डार ।

विशेष—नलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी । लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

१८८२. त्रिषष्टिशलाकापुरुषवर्णन ...... । पत्र सं० ३७ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८८३. नेमिनाथपुराण—भागचन्द । पत्र सं० १६६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १९०७ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

१८८४. नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र सं० २९२। आ० १४×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। छ भण्डार।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र सं० १६०। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। जीर्ण। वे सं० १४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा द्वितीयशिष्य मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीसहसकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाम्नाये अगरवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्राः पंच। प्रथम पुत्र सा. खेता तस्य भार्या छानाही। सा. जीणा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्राः त्रय प्रथम पुत्र सा. देइदास तस्य भार्या साताही तयोः पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र चि० सिरवंत द्वितीयपुत्र चि० मांगा तृतीयपुत्र चि० चतुरा। द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतीयपुत्र सा. चीमा तस्य भार्या मानु। सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा. मानु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र चि० मोहनदास। सा. जीणातस्य चतुर्थपुत्र सा. मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्राः त्रय प्रथमपुत्र सा. उत्मा तस्य भार्या वनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा. महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा. टेमा तस्य भार्या मोरवणही। सा. जीणा तस्य पंचमपुत्र सा. साधू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषां मध्ये सा. मल्लूनेनेदं शास्त्रं हरिवंशपुराणाख्यं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं मंडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्दतस्यशिष्या अर्जिका शांति श्री योग्य घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं।

१८८६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२७। ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३। वे० सं० ३८७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है।

१८८७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५७। ले० काल सं० १६४६ माघ बुदी १। वे० सं० १८६। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

१८८८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८८। ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी १२। वे० सं० ३१। छ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३८) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) तथा ब्र भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं।

१८८९. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्र सं० ८७९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ९३ । अ भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह खीवसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण को भेंट किया ।

१८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५९५ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५२ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी १२ । वे० सं० ४२२ । ङ भण्डार ।

१८९२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७९८ । ले० काल सं० १८३२ सावण सुदी १० । वे० सं १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—चौधरियो के चैत्यालय मे पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १७१२ आसोज सुदी । वे० सं० १८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—अग्रवाल जातीय किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा ङ भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ४२३, ४२४) और है ।

१८९४. पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं० ५२० । आ० ६¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक सं० १६५६ श्रावण सुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

१८९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—योगी महेन्द्रकीर्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है । लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१८९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १८३६ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८ । छ भण्डार ।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सांगानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७९४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर मे गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई ।

१८६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर में मद्दूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६६. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० २०७ । आ० १३×६¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६००. पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)········ । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१६०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । र० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर में चढ़ाया ।

१६०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार में दो तथा एक प्रति (वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१६०४. पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ऽऽ । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६. पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १७३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ तथा १३७ बाद मे सं० १८८६ मे पुनः लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०० । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था । महाचन्द्र ने इसका संशोधन किया ।

१६०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १६१३ चैत्र बुदी १० । वे० सं० ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में (वे० सं० २०६०) और है ।

१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण । पत्र सं० २४६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६५० । ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र बडकरो है ।

१६१०. पाण्डवपुराण—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० ३४० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

१६११. पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १४६ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १७५४ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वे० सं० ४६० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ५ पत्रों मे बाईस परीषह वर्णन भाषा मे है ।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १११८) और है ।

१६१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ५५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । ङ भण्डार ।

१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । ङ भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १० । वे० सं० ६२६ । च भण्डार ।

१६१६. पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २२२ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १६२३ बैशाख बुदी २ । ले० काल सं० १६३७ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२० । ले० काल सं० १६४१ कार्त्तिक सुदी १५ । वे० सं० ४६४ । क भण्डार ।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में इसकी एक प्रति (वे० सं० ४४८) और है ।

१६१८. पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि। पत्र सं० १०० । आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण। वे० सं० २३६ । अ भण्डार।

विशेष—आमेर (आम्रगढ़) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

१६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५४३ फाल्गुण बुदी १० । वे० सं० ४७१ । क भण्डार।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १५६ । आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १८५६ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण। वे० सं० ४६९ । क भण्डार।

१६२१. बालपद्मपुराण—पं० पन्नालाल बाकलीवाल। पत्र सं० २०३ । आ० ८×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण। वे० सं० ११३८ । अ भण्डार।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है। कलकत्ते में रामप्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका……। पत्र सं० ३१ । आ० १४×७३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २१७८ । ट भण्डार।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३. भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध)……। पत्र सं० ६७ । आ० १४३×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २०८८ । ट भण्डार।

१६२४. प्रति सं० २ (षष्ठम स्कंध)……। पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २०९६ । ट भण्डार।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं।

१६२५. प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध)……। पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० सं० २०६० । ट भण्डार।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६२६. प्रति स० ४ (अष्टम स्कंध)……..। पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २०६१ । ट भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध)……। पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २०६२ । ट भण्डार।

विशेष—६७ से आगे पत्र नहीं हैं।

वे० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं।

१६२८. भागवतपुराण……। पत्र सं० १४ से ६३ । आ० १०३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० २१०६ । ट भण्डार।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है।

१६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८३६) और है ।

१६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७२० माह सुदी १४ । वे० सं० ५७१ । क भण्डार ।

१६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ५७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे रखी ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० फागुण सुदी ३ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावण सुदी ८ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी ८ । वे० सं० ५८७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सुदी ३ । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ४ । वे० सं० १५२ । व भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१. मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० ३६ । आ० १२×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२. महापुराण (संक्षिप्त)……… । पत्र सं० १७ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८६ । ङ भण्डार ।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्त्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष–बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण……। पत्र सं० ३२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्त्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में इसकी दो प्रतियां (वे० सं० २३३, २४६,) और हैं ।

१६४६. मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६८१ कार्त्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८. मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । अ भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने वटेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१६४९. लिंगपुराण……। पत्र सं० १३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैनेतर पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६५०. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । घ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८१२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८५ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० १५ । व्य भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४६३ । व्य भण्डार ।

विशेष—ग्रा० शुभचन्द्रजी, चोखचन्दजी, रायचन्दजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति ने आदिनाथ चैत्यालय मे लिखवायी थी ।

१६५८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६६८ भादवा सुदी १२ । वे० सं० १८६३ । ट भण्डार ।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर मे भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हूबडज्ञातीय बजियाणा गोत्र वाले साह भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६, ३२६) व्य भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३२, ४६) और हैं ।

१६५६. वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । ग्रा० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ ।

विशेष—बालचन्दजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द के ग्राग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई ।

च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६७४, ६७५, ६७६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५६) और हैं ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७० । छ भण्डार ।

१६६१. वासुपूज्यपुराण......। पत्र सं० ६ । ग्रा० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२. विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र सं० ७५ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । श्र भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० ९६ । घ भण्डार ।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब्र० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री [illegible] महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे [illegible] भट्टारक श्री रामसेनान्वये [illegible] भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्त्ति ब्र० श्री

मगल्याग्रज स्थविराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्त्ति तत्गुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखितं स्वज्ञानावर्ण कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ५ जयकीर्त्ति पं० दीपचन्द पं० मयाचंद युक्तै भ्रातम पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिननाथपुराण—महाकवि असग । पत्र सं० १४३ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक संवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—संवत् १५५३ वर्षे भादवा वदि बारीस रवौ अद्येह श्री गंधारमध्ये लिखितं पुस्तकं लेखक पाठकयो चिरंजीयात् । श्री मूलसंघे श्री कुंदकुन्दाचार्य्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मंडलाचार्य्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्य्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना सं० बाधर सं० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्रः विद्याधर द्वितीयः पुत्र धर्मधर एतैः सर्वैः शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः ।
अन्नदानात् सुखी नित्यं निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ।।१।।

१६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १८९१ । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की क, ञ और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १९३५) और हैं ।

१६६७. शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द । पत्र सं० ५१ । मा० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं ।

१६६८. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३१४ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक सं० ७०५ । ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर में पं० डूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० [illegible] । ले० काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० १३२ । घ भण्डार ।

विशेष—[illegible] नगर में [illegible] से प्रतिलिपि की थी ।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से ५१७ । ले० काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) और है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ से ३४३ । ले० काल सं० १६९३ कार्तिक बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० सं० २६० । ञ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल मे सागानेर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) छ भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ७६ में) और हैं ।

१६७४. हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १६६१ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १३१ । घ भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली शुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये…… आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि कृतं ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८०४ । वे० सं० १३३ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १७३० । वे० सं० ४४८ । ख भण्डार ।

१६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५२ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौंली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी । ब्र० जिनदास भ० सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २९८ । ले० काल सं० १५३७ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३३३ । ञ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—सं० १५३७ वर्षे पौष बुदी २ सोमे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनंदि पठनार्थं । हूंबड़ ज्ञातीय.........।

१६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । ञ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, ङ एवं ञ भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ८५१, ९०६, ९७) और हैं ।

१६८१. हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४९१ । ञ भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० २७१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३. हरिवंशपुराण—धवल । पत्र सं० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९६ । अ भण्डार ।

१६८४. हरिवंशपुराण—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० १६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् राज्ये संवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अलावलखां राज्ये श्री काष्ट ....। अपूर्ण ।

१६८५. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । आ० ६×४½ । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । ग भण्डार ।

१६८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल सं० १९२६ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ९०१ (क) क भण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२५ । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७०६ । ले० काल सं० १९०३ आसोज सुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १३४, १५१) क, तथा म भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ९०९, १४४) और हैं ।

१६६०. हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २०७ । ग्रा० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वे० सं० ३७२ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

१६६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । छ भण्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नही हैं । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल × । वे० स० ४६६ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ४ पत्रो में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१६६३. हरिवंशपुराणभाषा……। पत्र सं० १५० । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०७ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वे० सं० ६०८) और है ।

१६६४. हरिवंशपुराणभाषा…… । पत्र स० ३८१ । ग्रा० ८¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य (राजस्थानी) । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६७१ ग्रासोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवंत महावीरे रायगेहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवंत श्री वीर वर्द्धमानं राजग्रही नगरी आवी समोसर्‌या । ते किसा छइ वीतराग चउतीस अतिसइ करी सहित, पइंतीस वचन वाणी करी सोभित, चउदइसह साध छत्रीस सहस परवर्‌या । अनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी आवी समोसरया । तिवारइं वनमाली आवी राजा श्री सेणिक कनइ । वधामणी दिधी । सामी आज श्री वर्द्धमान आवी समोसरया छइ । सेणीक ते बात सांभली नइं बधामणी आपी । राजा आपण महाहर्षवत थकउ । वांदवांनी सामग्री करावण लागउ । ते किं सामा गलीसा …… कीधउ । पछि आनंद भेरि उछली जय जयकार वद थउ । भवीक लोक सघलांइ आनंद परिणया । धन धन कहता लोक सघलाइं वादिवा वाल्या । पछइ राजा श्रेणक सिचाणक हस्ती सिणगारी उपरि छइठउ । माथइं सेत छत्र धराणउ । उभइ पास चामर ढालइ छइ । वंदी जण कइ वार करइ छइं । मंगिण जण वडिद बोलइ छइ । पाच शब्द वाजित्र वाजते । चतुरंगिनी सेना सजकरी । राय रांणा मंडलीक मुकुव्बधनी सामंत चउरासिया……।

एक अन्य उदाहरण– पत्र १६८

तिणी अजोध्या नउ हेमरथ राजा राज पालै छइं । तेह राजा नइ धारणी राणी छइ । तेह नउ भाव धर्म्म उपरि घणउ छइं । तेहनी कुषि तें कुंमर पणइ उपनो । तेह नउ नाम बुधकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाणे सिस समान छइं । इम करता ते कुंमर जोबन भरिया । तिवारइं पिताइं तेह नइं राज भार थाप्यउ । तिवारइं तेण जाना मुख भोगवता काल अतिक्रमई छइं । वली जिण नउ धर्म घणु करइं छइं ।

पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा सांभलउं । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउं । पछइं मरी रोइ सर्प्प थयउ । सयंम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहां थको मरण पाम्यो । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी । छेदन भेदन तारन दुख भोगवी । वली तिहां थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चांडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउं । पछइं ते एक बार वन मांहि तिहां उबर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०—८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउं । पछइं देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । वलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप संपनीयउ दान दीयउ । पछइं गिरनार आव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक संबोध्या । पछइ सहस बरस आउषउ भोगवीनइं दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइं घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइं । समो सरण त्याग कीयउं । तिवारइं ते घातिया कर्म षय करी चउदमइं गुणठाणइं रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा आठ गुण सहित जाणवा । वली पाच सइं छत्रीस साध साथइं मूकति गया । तिणी सामी अचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइं । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते मोध तिरती कीज्यो । वली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुध थकी । हरवंस कथा माहि अध कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

संवत् १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथौ । लिखितं मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये । ....ज ····· शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थं ।



काव्य एवं चरित्र

१९९५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

१९९६. अकलङ्कचरित्र……। पत्र सं० १२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१९९७. अमरुशतक……। पत्र सं० ६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ज भण्डार ।

१९९८. उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध……। पत्र सं० ८ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

१९९९. ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ११९ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६१ पौष बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० २०४० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १५६१ वर्षे पौष बुदी ऽऽ रवौ । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ पद्मनंदिदेवाः भ० श्री ६ सकलकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ६ भुवनकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ विजयकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ सुमतिकीर्त्तिदेवाः स्थविराचार्य श्री ६ चंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवंत ते शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६० । ले० काल शक सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । क भण्डार ।

एक प्रति वे० सं० ६६६ की और है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १० । वे० सं० ६४ । ङ भण्डार ।

२००३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ६५ । ङ भण्डार ।

२००४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७१। ले० काल सं० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८। वे० सं० ३०। छ भण्डार।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

२००५. प्रति सं० ७। पत्र सं० १८१। ले० काल सं० १७७४। वे० सं० २८७। ञ भण्डार।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१८३) और हैं।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास। पत्र सं० १३। आ० १०×३३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १०। वे० सं० ४७१। ञ भण्डार।

विशेष- प्रशस्ति—संवत् १६२४ वर्षे अश्वनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव सूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे।

२००७. करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर। पत्र सं० ६१। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६५ फागुण बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १०२। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८४। आ० १०×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६११। ले० काल सं० १६५६ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २७७। ञ भण्डार।

विशेष- प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भौमे सोझंत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्य ब्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखितं।

आचार्यवराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्तिजी की पुस्तक।

२००९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० २८४। ञ भण्डार।

२०१०. कविप्रिया—केशवदेव। पत्र सं० २१। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-काव्य (शृङ्गार)। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११३। छ भण्डार।

२०११. कादम्बरीटीका······। पत्र सं० १५१ से १८३। आ० १०३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७७। ञ भण्डार।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक······। पत्र सं० ८३। आ० १०१/२×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७८। ञ भण्डार।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है।

२०१३. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि। पत्र सं० ४६। आ० १०१/२×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०२। ञ भण्डार।

२०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५३० भादवा बुदी ८ । वे० सं० १२२ । ङ भण्डार ।

२०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी । वे० सं० १२३ । ङ भण्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८१७ । वे० सं० १२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में पं० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२०१९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३८) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५) च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६४, २५१, २५२) और है ।

२०२०. कुमारसम्भव—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७५७ । वे० सं० १८४५ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १२५ । ङ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ११८०, ११३) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७१, ७२) व्य भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३८, ३१०) तथा ट भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० २०५२, ३२३, २१०४) और हैं ।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४. क्षत्र-चूड़ामणि—वादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल सं० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जीवंधर चरित्र भी है ।

२०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ७३ । च भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी के मन्नूलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५। वे० सं० ३३२। अ भण्डार।

२०२७. खण्डप्रशस्तिकाव्य······। पत्र सं० ३। आ० ८३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १३१४। अ भण्डार।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ में रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा।

२०२८. गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि। पत्र सं० २३। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५। ङ भण्डार।

विशेष—२१ व २२वां पत्र नही है।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव। पत्र सं० २। आ० ११३×७३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२। क भण्डार।

विशेष—झालरापाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० १८२६। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है।

२०३१. गोतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र। पत्र सं० ५३। आ० ६३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत विषय–चरित्र। र० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१। अ भण्डार।

२०३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३६ कार्तिक सुदी १२। वे० सं० १३२। क भण्डार।

२०३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८९४। वे० सं० ५२। छ भण्डार।

२०३४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १९०९ कार्तिक सुदी १२। वे० सं० २१। म भण्डार।

२०३५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० २५४। व्य भण्डार।

२०३६. गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९४० मंगसिर बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १३३। क भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं। रचना संवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता।

२०३७. घटकर्परकाव्य—घटकर्पर । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ लिखा गया था ।

अ और ञ भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) और है ।

२०३८. चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६२५ । ले० काल स० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८२५ माह बुदी ३ । वे० सं० १७२ । क भण्डार ।

२०४०. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८९३ द्वि० श्रावण । वे० सं० १६७ । ङ भण्डार ।

२०४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८३७ माह बुदी ७ । वे० सं० ५८ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर मे पं० सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८९१ भादवा सुदी ८ । वे० सं० ५८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

२०४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ५० । ञ भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनदि । पत्र स० १३० । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५८९ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८९ । ले० काल सं० १९४१ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भादवा बुदी १० । वे० सं० १९ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मल्लेडल वंशे विबुध मुनि अनानंदकंदे प्रसिद्धे कृपालामिति साधुः सकलकलिमलक्षालनेक प्रवीण मध्यस्तांस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेदं बालकाव्यं निजकरलिखितं चन्द्रनाथस्य सार्थं सं० १५२४ वर्षे भादवा वदी ७ ग्रन्थ लिखितं कर्मक्षयानिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्ति देवातत्शिष्य ब्र० संजैयति इदं शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखापित्वा ठीकुरवारस्थाने·······साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९४१) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ६०, ८८) ज भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १०३, १०४, १०५) अ एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १६४, २१६०) और हैं ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका—टीकाकार गुणनन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वीरनंदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों में है ।

२०४९. चंद्रप्रभचरित्रपञ्जिका ·······। पत्र सं० २१ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ संवत् १६४१ वर्षे पोह शुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे मा··········· (अपूर्ण)

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्यवर श्री मेरुकीर्त्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य नंदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६६) और हैं ।

२०५४. [illegible]—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० [illegible] सुदी [illegible] । ले० काल सं० [illegible] सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १९ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चंद्रप्रभो नित्यां चंद्रं दश्चन्द्र लांछनः ।

अथ कुमुदचंद्रोवदचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥

कुशासनवचो चूडजगतारणहेतवे ।

तेन स्ववाक्यसूरोत्स्नैर्द्ध मपोतः प्रकाशितः ॥२॥

युगादौ येन तीर्थेशाधर्मतीर्थः प्रवर्त्तितः ।

तमहं वृषभं वंदे वृषदं वृषनायकं ॥३॥

चक्री तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महावली ।

शांतिनाथः सदा शान्ति करोतु नः प्रशांति कृत् ॥४॥

अन्तिम भाग—

भूभृन्नेत्राचल (१७२१) शशधरांक प्रमे वर्षेऽतीते

नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि

नाभेयस्वप्रवरभवने भूरि शोभानिवासे ॥८५॥

रम्यं चतुः सहस्राणि पंचदशयुतानि वै

अनुष्टुपैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ॥८६॥

इति श्री मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नामः सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं पं० चोखचंद्रस्य शिष्य सुणारामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य खुशालचंद्रेण स्वहस्तेनपूर्णीकृतं ॥

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १४ । वे० सं० १७५ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८३४ असाढ सुदी २ । वे० सं० २५५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्दजी शिष्य पं० रामचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०४७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६६ । आ० १२½×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १६वी शताब्दी । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग में आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १६६, १६७, १६८) और हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्त्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । र० काल सं० १६६२ । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में पं० अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

आदिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री सारदाई नमः ॥

आदिजिनआदिस्तवु अंति श्री महावीर ।
श्री गौतम गणधर नमुं वलि भारति गुणगंभीर ॥१॥

श्री मूलसंघमहिमा घणो सरस्वतिगछ शृंगार ।
श्री सकलकीर्त्ति गुरु अनुक्रमि नंमुश्रीपद्मनंदि भवतार ॥२॥
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रचुं नमी पाय ॥३॥

अन्तिम— .... भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभाग्य अति विचक्षण वदि वारण केशरी ।
भट्टारक श्री पद्मनंदिचरणकंज सेवि हरि ॥१०॥
एसहु रे गछ नायक प्रणमि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।
धरिचित्त चरणे नमि कल्याणकीरति इम भणौं ।
चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिमि आदर घणि ॥११॥
रायदेश मध्यि रे भिलोड वसि
निज रचनायि रे हरिपुर जिहसि
हसि अमर कुमारनितिहां धनपति वित्त विलसए ।
प्रासाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत संचए ॥१२॥
सुकृत संचि रे व्रत बहु आचरि
दान महोत्सवे जिन पूजा करि
करि उद्दव मान मंडप् चन्द्र जिन प्रासादए ।
बावन सिखर सोहामण ध्वज कनक कलश विलासए ॥१३॥
मंडप मध्यि समवसरण सोहि
श्री जिन बिंबरे मनोहर मन मोहि ।

सोहि जिनमन प्रति उन्नत मानस्तंभविशालए ।
तिहां विजयभद्र विख्यात सुन्दर जिनशासन रक्षपालए ।।१४।।
तहां चोमासि रे रचनां करि
सोलवांणु पिरे आसो अनुसरि ।
अनुसरि आसो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणरुदय धरि ।
कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो आदर करि ।।१५।।

दोहा—आदर बहु संघ जीतणि विनय सहित सुखकार ।
ते देखि चारुदत्त नो प्रबंध रच्यो मनोहार ।।१।।
भणि सुणि आदर करि याचक नि दिय दान ।
इंद्रो तणो पद ते लहि अमर दीपि बहुमान ।।२।।
इति श्री चारुदत्त प्रबंध समाप्तः ।।

विशेष—संवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैत्यालये भट्टारक श्री ५ धर्म्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्ति तत्शिष्य पंडित अमीचंद स्वहस्तेन लिखितं ।

।। श्री रस्तु ।।

२०५९. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८१३ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

२०६०. चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० १६ । आ० १३३⁄४×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य विषय–चरित्र । र० काल सं० १९२९ सावन सुदी १ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । छ भण्डार ।

२०६१. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र सं० १०७ । आ० १२×४३⁄४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० १७१ । आ भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७५६ फागुण बुदी ५ । वे० सं० २५५ । अ भण्डार ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२५ भादवा सुदी १२ । वे० सं० १८४ । क भण्डार ।

क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) और है ।

२०६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल × । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५५ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० सं० २०० । ङ भण्डार ।

२०६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । ञ भण्डार ।

२०७०. जम्बूस्वामीचरित्र—पं० राजमल्ल । पत्र सं० १२६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१. जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्त्ति । पत्र सं० २० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ञ भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४२७ । अ भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र········। पत्र सं० ६ से २० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० सं० १८९ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । ङ भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १९०४ आसोज सुदी २ । वे० सं० १०३ । च भण्डार ।

२०८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८०७ मंगसिर सुदी १३ । वे० सं० १०४ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० चोखचन्द एवं रामचंद की थी ऐसा उल्लेख है ।

छ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

२०८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १९०४ कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३९ । व्य भण्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने फागी में प्रतिलिपि की थी ।

२०८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० २४३ । व्य भण्डार ।

विशेष—भिलाय में पं० गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३६ माघ सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९० । क भण्डार ।

२०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० १९१ । क भण्डार ।

२०८५. जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १५९६ । ले० काल सं० १८४० फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८६६) और है ।

२०८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ८ । वे० सं० ४१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ जिन चैत्यालय (गोधों का मन्दिर) में बखतराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ४२ । छ भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९१ । ले० काल सं० १८३३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २७ । ज भण्डार ।

२०९०. जीवंधरचरित्र—नथमल बिलाला । पत्र सं० ११४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८४० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ से १५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४३ । ट भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । ङ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहों द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्र……। पत्र स० ४१ । आ० ११३/४×८१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. णेमिणाहचरिउ—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ शाक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२०६८. णेमिणाहचरिउ—दामोदर । पत्र सं० ४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–काव्य । र० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

विशेष—चंदेरी मे आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९. त्रेसठशलाकापुरुषचरित्र……। पत्र सं० ३६ से ६१ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

३०००. दुर्घटकाव्य……। पत्र सं० ४ । आ० १२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

३००१. द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । आ० १०३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है ।

३००३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

३००४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी ।

३००५. द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र। पत्र सं० २२ । प्रा० १२३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (पंचम सर्ग तक) वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

३००६. द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र । पत्र सं० ३६१ । विषय–काव्य । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है ।

३००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५८ । ले० काल सं० १८७५ माघ सुदी ८ । वे० सं० १५७ । क भण्डार ।

३००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १५०६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ११३ । ञ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा डूगरेंद्र के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३००९. द्विसंधानकाव्यटीका……। पत्र सं० २६४ । प्रा० १०३×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । क भण्डार ।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणभद्र । पत्र सं० ५३ । प्रा० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ । क भण्डार ।

३०११. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४५ । ले० काल सं० १५६७ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—दूदू गांव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी । उस समय दूदू (जयपुर) पर सडसीराय का राज्य लिखा है ।

३०१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० ४३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है । आमेर में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३०१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६०४ । वे० सं० १२८ । ञ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । ञ भण्डार ।

३०१५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६०३ भादवा सुदी ३ । वे० सं० ४५८ । ञ भण्डार ।

विशेष—श्राविका लीवाधी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्त्ति को भेंट दिया था ।

३०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १०७ । प्रा० ११×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० आषाढ़ सुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ भण्डार ।

विशेष—२१ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ भण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वां पत्र नहीं है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भादवा बुदी ८ । वे० सं० ४४ । छ भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दौसा) में पं० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिये हैं । कुल ७ अधिकार है ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ञ भण्डार ।

३०२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६९१ बैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट भण्डार ।

विशेष—संवत् १६९१ वर्षे बैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे·········।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १९०१ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ८६ । च भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८१६ फागुण सुदी ७ । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचन्द । पत्र सं० ३० । आ० १२×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० [illegible] । [illegible] भण्डार ।

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ४१२ । ञ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।

३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ङ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६६४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८५२ । वे० स० २४ । झ भण्डार ।

३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४६५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संतोषराम छाबड़ा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६४) तथा छ और झ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १६८ व १२) और हैं ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र········। पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ । ङ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० ३२४ । ङ भण्डार ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं० १५३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १६३८ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० २०३ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १४८१, ३४६) और है ।

३०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकीर्ति । पत्र सं० ४ मे ६६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह ध्वांत दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४६) की और है ।

३०४१. नलोदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३४२ । ञ भण्डार ।

पत्र सं० १ से ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नही हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं० नही है ।

विशेष—इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुरान' भी है । इसकी रचना सं० १४६४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाल्गुन वदि ८ शुक्रे लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नलोदयकाव्य—कालिदास। पत्र सं० ६। प्रा० १२×६३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६। पूर्ण। वे० सं० ११४३।। अ भण्डार।

३०४३. नवरत्नकाव्य*……। पत्र सं० २। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६२। अ भण्डार।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नो का परिचय दिया हुआ है।

३०४४. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० ११४६। अ भण्डार।

३०४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि। पत्र सं० २२। प्रा० १०½×६¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २३४। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सांगा द्वि० सहसा तृ० कुंडा सा० सांगा भार्या सूहवदे द्वि० शृंगारदे तृ० सुरताणदे त० सा० ग्रासा, धणपाल ग्रासा भार्या हंकारदे, धणपाल भार्या धारादे। द्वि० सुहागदे। सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल। पासा भार्या गुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल……महिमादे। कुंडा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषां मध्ये ग्रासा भार्या ग्रहंकारदे इदंशास्त्र लि०मंडलाचार्य श्री धर्म्मचंद्राय।

३०४६. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ५। वे० सं० ३६५। क भण्डार।

३०४७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १८०६ चैत्र बुदी ५। वे० सं० ५०। घ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये है। १० से ११ तथा ३२वां पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं। अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है। पांडे रामचन्द के माथै पधराई पोथी। संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली।

३०४८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १५८०। वे० सं० ३५३। ङ भण्डार।

३०४९. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६४१ माघ बुदी ७। वे० सं० ४६६। अ भण्डार।

विशेष—तक्षकगढ मे कल्याणराज के समय में ग्रा० मोपति ने प्रतिलिपि कराई थी।

३०५०. प्रति सं० ६ पत्र सं० २१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८०७। ट भण्डार।

३०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर। पत्र सं० ५५। ग्रा० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५११ श्रावण सुदी १५। ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २३०। अ भण्डार।

३०५२. नागकुमारचरित्र……। पत्र सं० २२। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ८६। ज भण्डार।

३०५३. नागकुमारचरित्रटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र। पत्र सं० २ से २०। ग्रा० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिनो परापरमेष्ठिप्रणामोपार्जितमलपुण्यनिराकृताखिलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन श्री मत्पंचमी टिप्पणकं कृतमिति।

३०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल। पत्र सं० ३६। ग्रा० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५४। क भण्डार।

३०५५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ३५५। क भण्डार।

३०५६. नागकुमारचरित्रभाषा……। पत्र सं० ४५। ग्रा० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७७। अ भण्डार।

३०५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १७३। छ भण्डार।

३०५८. नेमिजी का चरित्र—आणन्द। पत्र सं० २ से ५। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५। ले० काल सं० १८५१। अपूर्ण। वे० सं० २२५७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग—

नेम तस तात सचर मध्ये रे रह्या ज रूड भावो।
वरत पाल्ये सात सारे सहस बरसना आव ॥
सहस वरसना आवज पूरा जिणवर करडी वीरडी।
आठ कर्म कीधा चकचूरा पांच सद्य तास सघात पूरा जी।
संवत १८ विक्रोत्तर फागुण मास मंझारो।
सुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ॥
कीधो चरत उदार आणंदा इम जाणी छाडो ग्रहफंदा।
धन २ समुद गिरानंदा अघ जेम लह नेम जिणंदा ॥५२॥
इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त।

सं० १८५१ बैसाखे श्री श्री भोजराज जी लिखतं कल्याणजी राजगढ मध्ये। आगे नेमिजी के भव लिख दिये हुये हैं।

२१५६. नेमिनाथ के दशभव……। पत्र सं० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ३५४ । ङ भण्डार ।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र सं० २२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७३ । ख भण्डार ।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ७८ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५८१ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२१६३. नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नेमिनाथ का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० सं० ३८६) और है ।

२१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८२ । ङ भण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका…… । पत्र सं० ६२ । आ० ११½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं २६ । ञ भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिश्वरं चित्ते लब्धानंत चतुष्टयं ।
कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७. नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र सं० २ से ३० । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८. पद्मचरित्रसार……। पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है ।

२१६९. पर्यूषणाकल्प……। पत्र सं० १०० । आ० ११½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ । अपूर्ण । वे० सं० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं । भुलस्कंध का ८वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—सं० १६६६ वर्षे मूलताणमध्ये सुश्रावक सोतू तत् बधू हरसी तत् सुता मुलंकणी मेतुषु षडाग्रहे बधू तेन एषा प्रति पं० श्री राजकीर्त्तिगणिनां विहरेऽर्पिता स्वपुन्याय ।

२१७०. परिशिष्टपर्व········। पत्र सं० ५८ से ८० । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७३ । अपूर्ण । वे० सं० १९९० । अ भण्डार ।

विशेष—६१ व ६२वां पत्र नही है । वीरमपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १९५५ में राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के अवलोकनार्थ ललितपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२१७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४५६ । क भण्डार ।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन । पत्र सं० ९७ । आ० १०¾×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वे० सं० १९२३ । ट भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र । र० काल शक सं० ९४७ । ले० काल सं० १५७७ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । अत्यन्त जीर्ण । वे० सं० २२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ९ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये साधु गोत्रे साह काधिल तस्य भार्या कांवलदे तयोः पुत्रः चतुर्विधदान कल्पवृक्षः साह वछा तस्य भार्या पदमा तयोः पुत्र पंचाइण तस्य भार्या बातारदे तयोपुत्रः····साह दूलह एते नित्यं प्रणमंति ।

२१७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १५९५ फाल्गुण सुदी २ । वे० सं० २१८ । ख भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

२१७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८७१ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २१९ । ख भण्डार ।

२१७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६८५ आषाढ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

२१७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—कृष्णावती में आदिनाथ चैत्यालय मे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १२०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल १५वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १३। अ भण्डार।

२१८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १८२३ कार्तिक बुदी १०। वे० सं० ४६६। क भण्डार।

२१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६१। ले० काल सं० १७६१। वे० सं० ७०। घ भण्डार।

२१८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७५ से १३६। ले० काल सं० १८०२ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ४५६। ङ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखितं श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक सा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं।

२१८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५२ से २२६। ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० २१६। च भण्डार।

विशेष—प्रति दीवान संगही ज्ञानचन्द की थी।

२१८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८। वे० सं० २१७। च भण्डार।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थी।

२१८६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ९१। ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६। वे० सं० १५। छ भण्डार।

विशेष—पं० श्योजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई।

२१८७. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६१ से १४४। ले० काल सं० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १९४५। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६९, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) ञ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और हैं।

२१८९. पार्श्वनाथचरित्र—रइधू। पत्र सं० ८ से ७९। आ० १०३⁄४×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१२७। ट भण्डार।

२१९०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास। पत्र सं० ९२। आ० १०३⁄४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल सं० १७८९ आषाढ सुदी ५। ले० काल सं० १८३३। पूर्ण। वे० सं० ३५९। अ भण्डार।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

२१६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७ । ग भण्डार ।

२१६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८१ पौष सुदी १४ । वे० सं० ४५३ । ङ भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ से १३० । ले० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० सं० १७५ । छ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० १०४ । झ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० सं० १० । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८५२ में लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ से १५४ । ले० काल सं० १६०७ । अपूर्ण । वे० सं० १८४ । ञ भण्डार ।

२२००. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ५८ । ञ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल संघी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भादवा सुदी ४ को चढाया ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४५५, ४०८, ४४७) ग तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ५६, ७१) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४४६, ४५२, ४५४) च भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) छ भण्डार मे एक तथा ज भण्डार में २ (वे० सं० १५६, १, २) तथा ट भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १६१६, २०७४) और हैं ।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र सं० ५८ । आ० $10\frac{1}{2}\times4\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । ञ भण्डार ।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने गुरुवासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेलवालान्वये कांटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्भार्या हरषखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह दामा द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयोः पुत्रः सा० बोदिथ तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयोः पुत्रः सा० खरहथ एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदरेण सा० वेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं निमित्तं सत्पात्रायमं श्री धर्म न्द्राय प्रदत्त ।

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । प्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १५३० । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् 'क' प्रति में से है । संवत् १७२१ वर्षे आसोज बदि ७ गुरु दिवे लिखितं आबहु (आमेर) मध्ये लि०ग्रंथि आचार्य श्री महीचंद्रकीर्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ॥

२२०५. प्रति स० २ । पत्र सं० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हांसी (झांसी) वाले भैया श्री ठमल्ल अग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि करवाई थी । पं० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं० ५०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिख्यतं पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित गोर्द्धनदासेन आत्मार्थं ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ श्रावण सुदी ३ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० ९३ । ञ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १८०४ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमरचन्दजी चांदवाड़ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४१६, ६४८, २०८६ तथा ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है ।

२२१२. प्रद्युम्नचरित्र ·· । पत्र सं० ५० । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३५ । च भण्डार ।

२२१३. प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२२१४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ५०१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र० काल सं० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल सं० १९३७ बैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । क भण्डार ।

२२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १९३३ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५०६ । ङ भण्डार ।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७. प्रद्युम्नचरित्रभाषा········ । पत्र सं० २७१ । आ० ११३/४×७३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

२२१८. प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो तीन तरह की लिपि है ।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० बैशाख । वे० सं० १२१ । ख भण्डार ।

२२२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० श्रावण सुदी १० । वे० सं० १२२ । ख भण्डार ।

२२२३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८३१ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ९१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० रामचन्दजी ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतियां ख भण्डार में (वे० सं० १२०, २८६) और हैं ।

२२२४. प्रीतिंकरचरित्र—जोधराज गोदीका। पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७२१ । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८२ । अ भण्डार।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल ×। वे० सं० १५६ । छ भण्डार।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६ । छ भण्डार।

२२२७. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि। पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण। वे० सं० १२८ । अ भण्डार।

२२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल ×। वे० सं० ५५१ । क भण्डार।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है।

२२३ . प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ बैशाख सुदी ६ । वे० सं० ५५८ । च भण्डार।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालों ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार।

विशेष—बखतराम ने प्रतिलिपि की थी।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । ञ भण्डार।

विशेष—क्षेमकीर्त्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की थी।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१३३ । ट भण्डार।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—[illegible]। पत्र सं० ४८ । आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण। वे० सं० ५५६ । ङ भण्डार।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम। पत्र सं० ३८ । आ० १२३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० श्रावण सुदी १५ । ले० काल ×। वे० सं० १६५ । छ भण्डार।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र........। पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८५ । अ भण्डार।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६५ । छ भण्डार।

२२३८. भरतेशवैभव........। पत्र सं० ५ । आ० ११×४¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४६ । छ भण्डार।

२२३६. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर । पत्र सं० १०८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२२४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६१४ माघ बुदी ८ । वे० सं० ५५३ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ में हुई थी । लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १७२४ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० १३१ । ख भण्डार ।

विशेष—मेडता निवासी साह श्री ईसर सोगाणी के वंश मे से सा० राइचन्द्र की भार्या रइणादे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूपचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया ।

२२४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७ । वे० सं० ७५ । घ भण्डार ।

विशेष—अजमेर गढ मध्ये लिखितं अर्जुन सुत जोशी सूरदास ।

दूसरी ओर निम्न प्रशस्ति है ।

हरसौर मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८३७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । ङ भण्डार ।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास ।

२२४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

२२४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ५१ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये है तथा अन्त के २५ पत्र नही लिखे गये है ।

२२४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ७७ । ञ भण्डार ।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १६४४ । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२४८. भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०० । आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३७ । ले० काल सं० १९५० । पूर्ण । वे० सं० ५५४ । क भण्डार ।

२२४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५१. भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर बल्लाल । पत्र सं० २६ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

२२५२. प्रति स० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० सं० ४६ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२२५३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (राजस्थानी) विषय–चरित्र । र० काल सं० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—चीतोड़ा ग्राम में श्री रंगविनयगणि के शिष्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह वा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ ।
पुण्य पुरुषणा गुण थुणतां थतां पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥
शांतिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।
मंगलकलसमुनि सतरंगा कह्या गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥
गछ खरतर युग वर गुण आगलउ श्री जिनराज सुरिंद ।
तसु पट्टधारी सूरि शिरोमणि श्री जिनरंग मुणिंद ॥४॥ ए० ॥
तासु सीस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।
रंगविनय वाचक मनरंग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥
नगर अभयपुर अति रलियामणउ जहा जिन गृहचउसाल ।
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेवक जन सु रसाल ॥६॥ ए० ॥
जिन मनइवलि सोवत थणी चूणा देवल ठाम ।
जिहां देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ वंछित काम ॥७॥ ए० ॥
निरमल नीर भरयउं सोहइं अणु ऊंक महेश्वर नाम ।
आप विधाता जगि अवतरी कीधउ श्री मति काम ॥८॥ ए० ॥
जिहां किण श्रावक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।
श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिणवर आण ॥९॥ ए० ॥

आसु तणइ आग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
अधिकउ उछउ जे इहां भाखियउ मिच्छा दुक्कड़ तास ।।१०।। ए० ।।
शासण नायक वीर प्रसाद थी चउपी चडीय प्रमाण ।
भणिस्यइं सुणिस्यइं जे नर भावसु धारयइं तासु कल्याण ।।११।। ए० ।।
ए संबंध सरस रस गुण भरयउ भाष्य मति अनुसारि ।
धरमी जण गुण गावण मन रली रंगविनय सुखकार ।।१२ ।। ए० ।।
एह वा मुनिवर निसि दिन गाईयइ सर्व गाथा दूहा ।। ५३२ ।।

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्त्तिमगमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी विजय दसमी वासरे श्री चीतोडा महाग्रामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविनयगणि शिष्य पण्डित दयामेरु मुनि आत्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयोः ।।

२२५५. महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ४१ । आ० ११३⁄४×५१⁄२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७३१ श्रावण सुदी १२ (छ) । ले० काल सं० १८१८ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १९५ । अ भण्डार ।

विशेष—जौंहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५९१ । क भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० २७१ । च भण्डार ।

विशेष—दोहूराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

२२५९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५१⁄२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ९२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९३९ श्रावण सुदी ३ । वे० सं० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता चारित्र भूषण ।

२२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १९३५ । वे० सं० ५९२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल सदासुख कासलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १९२९ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । च भण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । ङ भण्डार ।

२२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल सं० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत गद्य पद्य । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं । अंबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७९९ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्तिलकचम्पूटीका·······। पत्र सं० ६४६ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

२२७७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६१० । ले० काल × । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

२२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८१ । ले० काल × वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

२२७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०६ से ४५६ । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वे० सं० ५८७ । क भण्डार ।

२२८०. यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४०७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेस्मिन १४०७ वर्षे अश्वनिमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे नस्मिन चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराजमाने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवंश उद्योतक सुरित्राणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्त्रकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्त्ति देवास्तच्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवास्तम्याम्नाये अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यामुनखा तयोः पुत्रास्त्रयः जेष्ठः सा मैणपाल द्वितीयः सा. पूना तृतीयः सा. झाभरण । साधु मैणपाल भार्ये द्वे बाऊ भूराही । सा. झाभरण पुत्र जगमल मोमा एतेषामध्ये इदंपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं बाइ वधो इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य महात्मा हरिषेणदेवा, दत्तं पठनार्थं । लिखितं पं० विजयसिंहेन ।

२२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टीका भी दी हुई हैं ।

२२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल सं० १६३० भादो·····। अपूर्ण । वे० सं० २८८ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि आमेर मे राजा भारमल के शासनकाल मे नेमीश्वर चैत्यालय में की गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी २ । वे० सं० २८६ । च भण्डार ।

२२८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६७२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २८७ । च भण्डार ।

२२८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० २१२६ । ट भण्डार ।

२२८६. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५१ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । अ भण्डार ।

२२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल X । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७१५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । छ भण्डार ।

२२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत्सर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य आम्नायि आचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० चोखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी—अन्त में यह और लिखा है—

संवत् १३५२ थेलो भौंसे प्रतिष्ठा कराई लाकरणा में तपस्वी ल्होडसाजल उपजो ।

२२९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१ । ज भण्डार ।

२२९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति जीर्णशीर्ण है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ४९३ । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टौंक में प्रतिलिपि की थी ।

ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९०४) क भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५१६, ५१७) और हैं ।

२२९७. वरांगचरित्र—कामराज पण्डितार्य । पत्र सं० ७० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

२२९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६५ सावन सुदी १३ । वे० सं० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से आचार्य भुवनकीर्त्ति की शिष्या आर्यिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा बैशाख सुदी १० सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्त्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

२२९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८५ । ले० काल स० १६६७ । वे० सं० ६०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८३३ पौष सुदी १३ । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० सुखराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० भादवा बुदी १० । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुणकीर्त्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० २ से १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । अपूर्ण । वे० सं० ८९२ । अ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२४ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ से १६ । ले० काल सं० १५१८ । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२३०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१३८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७. यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० १ से २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २८१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल सं० १५६५ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे बृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव श्रीमालदे राज्यप्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसी प्रतापे सांचोरा नाम नगरे श्रीशांतिनाथ जिणचैत्यालये श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे

नंद्याम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे सा. तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय: प्रथम सा. ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा. ऊल्हा ईसरभार्या मजसिरी तयो: पुत्रा: चत्वार: प्र० सा० लोहट द्वितीय सा० भूणा तृतीय सा. ऊधर चतुर्थ सा. देवा सा. लोहट भार्या ललितादे तयो: पुत्रा: पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होना पंचम राज। सा. भूणा भार्या भूणसिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो: पुत्रो द्वौ प्रथम साला द्वितीय खरहथ—सा० देवा भार्या धोसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरंजी धीरा भार्या रमायी सा. टोहा भार्या द्वे बृहद्भ्राता कब्वी सुहागदे तत्पुत्रदाल पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या बाली तयो: पुत्र सा. डालू तद्भार्या डलसिरि एतैषांमध्ये चतुर्विधदान वितरणशक्तैनत्रिंशतभाविकस्तक्रिया प्रतिपालक सावधानेन जिणपूजापुरंदरेण सद्गुरुपदेशनिर्वाहकेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय घटापितं ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तं।

२३०९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४ से ५४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७३। अ भण्डार।

२३१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६६० बैशाख बुदी १३। वे० सं० ५९३। क भण्डार।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी।

२३११. यशोधरचरित्र......। पत्र सं० १७ से ४५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। ट भण्डार।

२३१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ६९३। क भण्डार।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १५८१ भादवा सुदी १२। ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ५६१।

विशेष—कवि फफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद। पत्र सं० ३७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। ले० काल सं० १७९६ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १०४१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति-

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७९६ लिखतं। श्रे० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद की सुतलिखोलजी के देहुरे पूर्ण कर्तव्यं।

दिवालो जिनराज को देखत दिवालो थाय।

निसि दिवालो कलाकूचे कर्म दिवालो थाय।

श्री रस्तु। कल्याणमस्तु। जहानाबाद मध्ये परिपूर्णा।

२३१५. यशोधरचरित्र—पन्नालाल। पत्र सं० ११२। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९३२ सावन बुदी ऽऽ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६००। क भण्डार।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है।

२३१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ७४। ले० काल ×। वे० सं० ६१२। क भण्डार।

२३१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८२। ले० काल ×। वे० सं० १६४। छ भण्डार।

२३१८. यशोधरचरित्र……। पत्र सं० २ से ६३। आ० ६३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६११। क भण्डार।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतसागर। पत्र सं० ६१। आ० १२×५१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५९४ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ५९४। क भण्डार।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्त्ति। पत्र सं० ६३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १६५९। ले० काल सं० १६६० आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २६५। अ भण्डार।

विशेष—संवत् १६६० वर्षे आसौजमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिथौ सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमाबाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमानसिंघराज्यप्रवर्त्तते श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे नंद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालये पान्बांक्यागोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे। तयो पुत्राचत्वार। प्रथम पुत्र साह नानू तस्यभार्या नौलादे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नादु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर। द्वितीयपुत्र साह वोहिथ तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरंजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा। तृतीयपुत्र टेहु। तृतीय पुत्र तस्यभार्या कपूरदे। साह हीरा। द्वितीयपुत्र वोहथ तस्यभार्या चावणदे। तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह गुजर तस्यभार्या गारवदे। द्वितीयपुत्र चिरंजी छाजू। हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण। हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुरंगा एनेषांमध्ये वोहिथ तेनेदंशास्त्र यशोधरचरित्रकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्तितत्शिष्य आर्य लालचंद योग्य घटापितं।

२३२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १५७७। वे० सं० ६०९। क भण्डार।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२३२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २। वे० सं० ६१०। क भण्डार।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६०८) और हैं।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचंद। पत्र सं० १२। आ० १०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५८५ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ३७६। अ भण्डार।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४. रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ से १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पांड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८९ मंगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हासिये पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ में पं० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ९६ से १३४। ले० काल सं० १६९६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। छ भण्डार।

२३३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ भण्डार।

२३३१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मंगसिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १०२८, १२९४, १२९५, १८७४, २०६५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५ [क])। ङ भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २८९, २९०) छ और ट भण्डार में एक एक प्रतियां (वे० सं० २६३, १९९६) और हैं।

२३३२ रघुवंशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र सं० २३२। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २१२। ञ भण्डार।

२३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८। ञ भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल–

निर्विग्रहंरस शशि संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्त्तुः टीकायाः । विक्रम्पुर में टीका की गयी थी ।

२३३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२८ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रुमानीराम के शिष्य पं० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२६) और है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल सं० १६६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य संख्यवतुल्य श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ६२६ । क भण्डार ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३५०, १०८१) और हैं । केवल ञ भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—दैवज्ञ पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

२३४१. रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा वरांग का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । ञ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—

सं० १५६४ वर्षे शाके १४५६ कार्तिगमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवासरे धनिष्ठानक्षत्रे गंडयोगे आंबां नाम महानगरे राव श्री सूर्यसेणि राज्यप्रवर्त्तमाने कवर श्री पुरणमल्लप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल-

संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये, भ० श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये [illegible] संघाधि-पति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सं. श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा सं० खेमलदे द्वितीया सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० मौलादे । तृतीय सं. डूंगरसी तद्भार्या दाडमोदे एतेसां मध्ये सं. विमलादे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भादवा सुदी १४ । वे० सं० ६६१ । क भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । ख भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में संतोषराम के शिष्य वख्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगावती (सांगानेर) में गोधों के चैत्यालय में पं० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रति-लिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पं० रामचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र सं० ५० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ख भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनंदि विरचिते सुखलामां विने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेदः

२३५१. वर्द्धमानकथा—जयमित्रहल। पत्र सं० ७३। आ० ६३×५३ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १६६५ बैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १५३। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति–

सं० १६५५ वरषे बैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मृगसीरनखित्रे मूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचंद तत्पट्टे भट्टारक श्रीचंदकीर्तिः विरचित श्री नेमदत्त आचार्य चंपावतीगढ महादुर्गात: श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुछाहावंस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यंघराज्ये अजमेरागोत्रे सा. धीरा तद्भार्याधारादे तत्पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र……………। (अपूर्ण)

२३५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० १६५३। ट भण्डार।

२३५३. वर्द्धमानचरित्र………। पत्र सं० १६८ से २१२। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८६। अ भण्डार।

२३५४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७४। अ भण्डार।

२३५५. वर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह। पत्र सं० १८५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८६१ ले० काल सं० १८६४ सावन बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६४८। क भण्डार।

विशेष—सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३५६. विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अभयसोम। पत्र सं० ४ से ५। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–विक्रमादित्य का जीवन। र० काल सं० १७२४। ले० काल सं० १७८१ श्रावण बुदी ४। अपूर्ण। वे० सं० ११६। अ भण्डार।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३५७. विदग्धमुखमंडन—बौद्धाचार्य धर्मदास। पत्र सं० २०। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० ६२७। अ भण्डार।

२३५८. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १०३३। अ भण्डार।

२३५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० ६५७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १७२४। वे० सं० ६५८। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी है।

२३६१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ११३। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह बाबिराज जाति सोगाणी पोमा सुत।

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं १९१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गणि हैं ।

इनके प्रतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११३, १४६) ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०७) प्रौर है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न । पत्र सं० ३३ । प्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ प्रासोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विहारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । प्रा० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । प्र भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के समय में लिखी गई थी ।

२३६८. शंबुप्रद्युम्नप्रबंध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । प्रा० १०½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रीकृष्ण, शंबुकुमार एवं प्रद्युम्न का जीवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५९ । अपूर्ण । वे० सं ७०१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५९ वर्षे विजयदशम्यां श्रीस्तंभतीर्थे श्रीबृहत्खरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालदीन अकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरश्वराणां (सूरीश्वराणां) साहिसमक्षस्वहस्तस्थापिता चार्यश्रीजिनसिंहसूरिमुखरिकराणां (सूरीश्वराणां) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना श्रीजैसलमेरु वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक सो० सिवराज समभ्यर्थनया कृतः श्री शंबप्रद्युम्नप्रबन्धे प्रथमः खंडः ।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र सं० १६६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नही हैं ।

२३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से १०५ । ले० काल सं० १७१४ पौष बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७०६ चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपियां हैं ।

२३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघही मालाबता के मन्दिर लिखी । लिखाप्यतं चंपारामजी छाबडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३४१ । घ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति क्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

२३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १७६६ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १४ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था ।

२३७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७ से १२७ । ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४६४ । व्य भण्डार ।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त छ, व्य तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३, ४८६, १६२६) और हैं ।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर । पत्र सं० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है ।

२३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । व्य भण्डार ।

२३७९. शालिभद्र चौपई········। पत्र सं० ५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० ।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है । अन्तिम पाठ नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सारदा नायक सुमरिये बर्द्धमान जिनचंद ।
अलीइ विघन दुरोहरं आपै प्रमानंद ।।१।।

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४१ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । अ भण्डार ।

२३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११३×५२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार ।

२३८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्श्वनाथाय ।

हेरंबस्व किमंब किम् तव कारता तस्य चांद्रीकला
कृत्यं किं करजन्मनोऽक मम पार्वताक रं स्याचिति तातः ।
कुप्यति गुह्यतामिति विहृगयाहतुं ग्रन्यां कला–
माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंबेरमग्रामणी ।।१।।
यः साहित्यसुधैकुर्नरहरि रत्नाकरनंदनः ।
कुरुते सैवश्रवण भूषणाख्यां विदग्धमुखमंडनव्याख्या ।।२।।
प्रकाराः संतु बहवो विदग्धमुखमंडने ।
तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं श्रवण-भूषणं ।।३।।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः संपूर्ण ।

२३८७. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६८। म्रा० १०३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल सं० १५८५। ले० काल सं० १६४३। पूर्ण। वे० सं० २१०। ग्र भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं. धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडलाचार्य विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये मं० सहसकीर्तिदेवा तदन्वये मंडलाचार्य नेमचंद तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त ………।

२३८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० ६९९। क भण्डार।

२३८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० सं० १९२। ख भण्डार।

विशेष—मालवदेश के पूर्णासा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी। विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में अपने पुत्र चि० टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसको तीन दिन में प्रतिलिपि की थी।

यह प्रति पं० सुखलाल की है। हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है।

२३९०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३९। ले० काल सं० १८९५ आसोज सुदी ४। वे० सं० १९३। ख भण्डार।

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी।

२३९१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४२ से ७९। ले० काल सं० १७६१ सावन सुदी ४। वे० सं० । ङ भण्डार।

विशेष—वृन्दावती में राव बुधसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२३९२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३१ फागुण बुदी १२। वे० सं० ३८। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३९३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी १४। वे० सं० ३२७। ज भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० ऋषभदास ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी।

२३९४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १८२६ माह सुदी ८। वे० सं० ९। ञ भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्दजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२३९५. प्रति सं० ९। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १६४४ भादवा सुदी ५। वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३३, २५६) क, छ तथा ञ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३९ तथा ८५) और हैं।

२३९६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ५९। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल शक सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०१४। अ भण्डार।

विशेष—ब्रह्मचारी माणकचंद ने प्रतिलिपि की थी।

२३९७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२८। ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२। वे० सं० ४०। छ भण्डार।

विशेष—तारणपुर में मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी।

२३९८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० १९२। ज भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोठ्या ने सं० १९६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था।

२३९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २९ (६० से ८८) ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९७। ञ भण्डार।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी।

२४००. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० १२ से ३४। आ० ११¾×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९३। अ भण्डार।

२४०१. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० १७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९६। अ भण्डार।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल। पत्र सं० १४४। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६५१। आषाढ बुदी ८। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ४०७। अ भण्डार।

२४०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६४। ले० काल सं० १८९८। वे० सं० ४२१। अ भण्डार।

२४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२ से १४४। ले० काल सं० १८५९। वे० सं० ४०४। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था।

२४०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९६। ले० काल सं० १८८९ पौष बुदी १०। वे० सं० ७९। ग भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ आमरे में आलमगंज में लिखा था।

२४०६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३। वे० सं० ७१७। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

विशेष—अभयराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८९२ माघ बुदी २ । वे० सं० ६८३ । च भण्डार ।

२४०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७९० पौष सुदी २ । वे० सं० १७४ । छ भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिरणौद में प्रतिलिपि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रो मे कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल सं० १७९३ आसोज बुदी १३ है । सांगानेर में गुरूजी मदूराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० सं० २२८ । झ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० १०७७, ४१८) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०४) क भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ७१५, ७१८, ७२०) छ, झ और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २२५, २२९ और १६१३) और हैं ।

२४११. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० २५ । मा० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । घ भण्डार ।

विशेष—अमीचन्दजी सौगाणी तबेला वालोंकी बहूने लिखवाकर विजैरामजी पाड्या के मन्दिर मे विराजमान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । क भण्डार ।

२४१३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं० १९२६ पौष सुदी ८ । वे० सं० ८० । ग भण्डार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १९३० फागुण सुदी ६ । वे० स० ८२ । ग भण्डार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९३४ फागुन बुदी ११ । वे० सं० २५९ । ज भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७४ । ञ भण्डार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० ४४० । ञ भण्डार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० २४ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१. श्रेणिकचरित्र……। पत्र सं० २७ से ४८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । क भण्डार ।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३७ कार्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० सं० २७ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

२४२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २८ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

२४२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० २९ । छ भण्डार ।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है

२४२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११९ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० १९४ । अ भण्डार ।

२४२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १९२९ । वे० सं० १०५ । घ भण्डार ।

२४२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखणोती में प्रतिलिपि की थी ।

२४३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ ले० काल सं० १८६४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० ३५२ । च भण्डार ।

२४३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ श्रावण सुदी १ । वे० सं० ३५३ च भण्डार ।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्त्ति। पत्र सं० १२६। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८२० फागुण बुदी ७। ले० काल सं० १९०३ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ४३७। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय–

> विजयकीर्त्ति भट्टारक जान, इह भाषा कीधी परमाण।
> संवत अठारास बीस, फागुण बुदी साते सु जगीस ॥
> बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र बृद्ध जोग सुथई।
> गोत पाटणी है मुनिराय, विजयकीर्त्ति भट्टारक थाय ॥
> तसु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछाणि।
> त्रिलोकेन्द्रकीर्त्तिरिषिराज, नितप्रति साधय आतम काज ॥
> विजयमुनि शिषि दुतिय सुजाण श्री बैराड देश तसु आण।
> धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वरण्यो अभिराम।
> मलयखेड सिंघासण मही, कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ८३। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी पांड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय मे चढ़ाया।

२४३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १६३। छ भण्डार।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा........। पत्र सं० ५५। आ० ११×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३३। क भण्डार।

२४३६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३ से ६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३४। क भण्डार।

२४३७. संभवजिणणाहचरिउ (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल। पत्र सं० ६२। आ० १०×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३६५। ञ भण्डार।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि। पत्र सं० १८ से २०। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १७२७ कार्तिक बुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ८३५। अ भण्डार।

विशेष–आरम्भ के १७ पत्र नहीं हैं।

ढाल पचतालीसमी गुरुवाली—

संवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुण नर सांभलो० ।। 1729
मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुगुण०
गढ जालोरइ युग तस्यु लिखीउए अधिकार ।
अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु०
भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार ।
भविक नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु०
लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
गुरु झांझण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ।। ८ ।। सु०
समरथथिवर महा मुनी सुंदर रूप उदार ।
तत शिष भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ।। ९ ।। सु०
उछौ अधिकयों कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
मिथ्या दुःकृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु०
सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास ।
नरनारी धर्मातिमा पंडित म करो को हास ।। ११ ।। सु०
दुरजन नइ न सुहाबई नही आवइ कहे दाय ।
माखी चंदन नादरइ असुचितिहां चलि जाय ।। १२ ।। सु०
प्यारो लागइ संतनइ पामर चित संतोष ।
ढाल भली २ संभली चिते थी ढाल रोष ।। १३ ।। सु०
श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
हीर मुनि आसीस अइ हो ज्यो कोडि कल्याण ।। १४ ।। सु०
सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहु अधिकार ।
हीर मुनि गुरु नाम थी आणंद हरष उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्णं । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोमवासरे लिखतं श्री धन्यजी ऋषि श्री केसवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदंतेवासी लिपिकृतं मुनिसावलं आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय—पं० नरसेन । पत्र सं० ४७ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४१० । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द (बालक) । पत्र सं० १०० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्त्तिक बुदी ९ । वे० सं० ७१९ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सजिल्द है ।

२४४३. सुकुमालचरिउ—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७० शाके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टम्या तिथौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचंद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीसहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीयशकीर्त्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौंसागोत्रे सा. सोनू तस्यभार्या सोनश्री तयो पुत्र सा. फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा षट् । प्रथम पुत्र सा० नरसिंह तस्यभार्या नरसिंघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र सा. ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. खेता तस्यभार्या खेतलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा. रणमल तस्यभार्या रमणादे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० चि० कवरा द्वितीय पुत्र चि० धनेड । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वि० पुत्र चि० उदयसिंघ । चतुर्थ पुत्र सा. रूपा तस्यभार्या रूपलदे । पंचमपुत्र सा. तेजा तस्यभार्या तेजलदे । तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० वछू द्वितीयपुत्र सुलतान । षष्टमपुत्र सा. भीवा तस्यभार्या द्वे प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्वे प्रथमा नानिगदे द्वितीया नौलादे तयोः पुत्र चि० उदयसिंघ । सा. भीवा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरण । एतेषांमध्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेदं शास्त्रं सुकुमालचरित्राख्यं ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य सत्पात्राय प्रदत्तं ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८१६। वे० सं० ३२। छ भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० ३४। छ भण्डार।

विशेष—सांगानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ। वे० सं० ८६। व्य भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ, क, छ, झ तथा व्य भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४) और है।

२४५०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी। पत्र सं० १४३। आ० १२३×४३ इश्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९१८ सावन सुदी ७। ले० काल सं० १९३७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८०७। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं।

२४५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १९६०। वे० सं० ८६१। क भण्डार।

२४५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल ×। वे० सं० ८६४। क भण्डार।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल। पत्र सं० १५३। आ० ११×५ इश्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९१८। ले० काल सं० १९२९ कार्त्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७२०। च भण्डार।

२४५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १७४। ले० काल सं० १९३०। वे० सं० ७२१। च भण्डार।

२४५५. सुकुमालचरित्र·········। पत्र सं० ३६। आ० ७×५ इश्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ८६२। क भण्डार।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है।

२४५६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६० से ७९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६०। क भण्डार।

२४५७. सुखनिधान—कवि जगन्नाथ। पत्र सं० ५१। आ० ११३×५३ इश्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७०० आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १७१४। पूर्ण। वे० सं० १९९। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मौजाबाद (मौजमाबाद) मध्ये श्री आदीश्वर चैत्यालये लिखितं पं० दामोदरेण ।

२४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० २३६ । व भण्डार ।

२४५९. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ । अपूर्ण । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यांसोमे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रजयरामेणेदं सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१५ । च भण्डार ।

२४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । च भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ४९ । छ भण्डार ।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ६९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२ । अ भण्डार ।

२४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन लिखे हुए है ।

२४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६५२ फागुण बुदी ११ । वे० सं० २२९ । ख भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुंददास से प्रतिलिपि कराई थी ।

पीछे– सं० १६२८ में अषाढ बुदी ९ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई ।

२४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३० चैत्र बुदी ९ । वे० सं० ६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० ३३५ । ञ भण्डार ।

२४६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६६० फागुन सुदी २ । वे० सं० २१६८ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि। पत्र सं० २७ से ३६। आ० १२¾×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६३। क भण्डार।

२४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० २१८। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ४१३। च भण्डार।

२४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१४। च भण्डार।

२४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १६६५ भादवा बुदी ११। वे० सं० ४८। छ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादौं बुदि ११ गुरुवासरे कृष्णपक्षे अर्गलापुरदुर्ग शुभस्थाने अश्वपतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकुवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालंब शुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखितं।

२४७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १८६३ बैशाख बुदी ४। वे० सं० ३। झ भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ़ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की। प्रशस्ति अपूर्ण है।

२४७४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

२४७५. सुदर्शनचरित्र........। पत्र सं० ४ से ५६। आ० ११½×५¼ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६८। अ भण्डार।

२४७६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं।

२४७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

२४७८. सुदर्शनचरित्र........। पत्र सं० ५४। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। छ भण्डार।

२४७६. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द। पत्र सं० ३७। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र। र० काल सं० १६८३ भादवा सुदी ५। ले० काल सं० १८५०। पूर्ण। वे० सं० ५५। छ भण्डार।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया। पं० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी। हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी १ । वे० सं० १४१ । च भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोडरमल की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१. हनुमच्चरित्र—ब्र० अजित । पत्र सं० १२४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८२ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—भृगुकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे वाहुलपक्षे एकादश्यांतिथौ काव्यवारे । लिखापितं पंडित श्री शावल इदं शास्त्रं लिखितं जोधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६४४ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

२४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० सं० २४३ । ख भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास मोतीराम गंगवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाडेहरा (कृष्णगढ़) में प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

२४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १५८४ । वे० सं० १४० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ क । व्य भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

भट्टारक पद्मनंदि की आम्नाय में खंडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री वोहीथ के वंश में होने वाली बाई सहलालदे ने सोलहकारण व्रतोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० सं० ३४७ । ब भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वे० सं० ५१२ । ब भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ६, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके अतिरिक्त अ और ब भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ६६ । आ० ११×८ इश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०५ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० ९४१ । छ भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८२ सावण सुदी ६ । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १८५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बंकी वालों के घड़ों पर संघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२५००. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१ । म भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तम । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—पं० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अतः महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

स्वस्ति श्रीमते शांतिनाथाय । संवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ शुक्रवासरे हस्तनक्षत्रे श्री रणस्तंभदुर्गस्य शाखानगरे शेरपुरनाम्नि श्रीशांतिनाथजिनचैत्यालये श्री आलमसाह साहिआलम श्रीसल्लेमसाहराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोल्हू तद्भार्या फूला तत्पुत्रास्त्रयः प्र. सा. पचायण द्वि. सा. डीडा तृतीय सा. करमा । सा. पचायण भार्या वील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे, प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय सा. वोषू तृतीय सा० तेजा । सा. नेमा भार्या चतुरा । सा. वोषू भार्या सवीरा सा. डीडा भार्या गौरां तत्पुत्र सा. हेमा तद्भार्ये द्वे प्रथम थीरणि द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. भीखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोवालु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रौ द्वौ प्र. सा. धर्मदास द्वि० सा. जसवंत । सा. धर्मदास भार्या सिंगारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास एतेषांमध्ये जिनपूजापुरंदरेण उत्तमगुणगणालंकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्यं येनेदंशास्त्रलिखाप्य आचार्य श्री ललितकीर्त्तये घटापितं दशलक्षणव्रतोद्यापनार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

२५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १७२६ माघ सुदी ७ । वे० सं० ४५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० रायमल्ल के द्वारा वृन्दावती (बून्दी) में स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई थी । कवि जिनदास रणथंभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में सं० १६०८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा.........। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५६। ट भण्डार।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा.........। पत्र सं० ६। आ० २२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३४। ट भण्डार।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० ४२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १८०५ माह सुदी ५। ले० काल सं० १८८३ कार्त्तिक बुदी ८। वे० सं० ६६८। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग–

संवत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार।
भणय मुहुरत सुभ जोग मैं जी हो कथरण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥
श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम।
श्री सीध दोलती दो धणी जी हो सीध की पूरी जें हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥
तलहटी श्री सींगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार।
बेटा बेटी पोतरा जी हो धनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥
श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ।
था रावत सुराणा एोखत दीपता जी हो श्रोर बाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥
श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वांखांण।
पाट चणार श्रांतर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥
सांभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याण।
परवारा पूरो सही जी हो सकल वातां सु बीयाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥
श्री बीजबेगछै गीडवोधणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट।
श्री तीलक सुरंद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुणों का थाट ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥
साध सकल में सोभतो जी. हों ऋषि लालचन्द सुसीस।
अठारा नता चोबी कभी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस आठारा नाता चरीत्र संपूर्ण समाप्ता ॥

लिखतु चेली सुवकुवर जी आरज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखणी जी श्री श्री डमरुजा श्री रामकुवर जी। श्री सेवकुवर जी श्री चंदनणाजी श्री दुल्हडी भणतां गुणतां संपूर्ण।

संवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती आसोज (काती) वदी ८ मुं दिन वार सोमरे। ग्राम संग्रामगडमध्ये संपूर्ण, चोमासो तीजो कीधो ठाणा ६॥ की धो छो जदी लखीइ छ जी। श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुली ॥ श्री श्री मासत्या जी वांचवाने अरथ। आरभा जी वाचवान अरथ ठाणा ॥ ६ ॥

२५०९. अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर। पत्र सं० १२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२३। अ भण्डार।

२५१०. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३। च भण्डार।

२५११. अनन्तचतुर्दशीकथा........। पत्र सं० ३। आ० ९×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। झ भण्डार।

२५१२. अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५८। ट भण्डार।

२५१३. अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २) क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८, ९, १०, ११) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं।

२५१४. अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७८२ सावन बुदी १। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२५१५. अनन्तव्रतकथा........। पत्र सं० ४। आ० ७½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७। क भण्डार।

२५१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८०। ट भण्डार।

२५१७. अनन्तव्रतकथा........। पत्र सं० १०। आ० ६×३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी ७। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

२५१८. अनन्तव्रतकथा—खुशालचन्द। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७ आसोज बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ९९९। अ भण्डार।

२५१६. अंजनचोरकथा.......। पत्र सं० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य.... ...। पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० २ से ३६ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नही हैं । आठों अङ्गों की अलग २ कथायें हैं ।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र सं० २८ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३. अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचंद्र । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३) ङ भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १६, २०) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५२४. अष्टाह्निकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १६२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २७, २८, २६, ७६३) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७६) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२५२५. अष्टाह्निकाकौमुदी.......। पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६. अष्टाह्निकाव्रतकथा.......। पत्र सं० ४३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है ।

२५२७. अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि। पत्र सं० १४। आ० ६३/४×६१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ३५। क भण्डार।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० १८। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। क भण्डार।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० १०। आ० ८१/२×६ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। र० काल सं० १७८४ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८१। ञ भण्डार।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० ११३/४×६१/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०० श्रावण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५१। ङ भण्डार।

२५३२. आकाशपंचमीकथा……। पत्र सं० ६ से २१। आ० १०×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५०। ङ भण्डार।

२५३३. आराधनाकथाकोष……। पत्र सं० ११८ से ३१७। आ० १२×५३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७३। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २१७४) और है तथा दोनों ही अपूर्ण हैं।

२५३४. आराधनाकथाकोश……। पत्र सं० १४४। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

विशेष—८४वी कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्त्ता का निम्न परिचय दिया हैं।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुंदाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥
देवेंद्रचंद्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचित सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥६॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्चनिगद्यते सः।
मार्गेन किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोकः ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० १५६। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६५। ट भण्डार।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नहीं हैं।

२५३६. आरामशोभाकथा……। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं।

प्रारम्भ—

अन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥

सद्धर्ममूलसम्यक्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्षदि ॥२॥

देवपूजादिश्रीराज्यसंपदं सुरसंपदं।
निर्वाणकमलांचापि लभते नियतं जनः ॥३॥

अन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्यं नाम्ना मलयसुंदरे।
क्षिपामि सफलं तावत्करिष्यामि निजं जनु ॥७५॥

सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजांगजे।
आरामशोभयायुक्तो राजाव्रतमुपाददे ॥७६॥

अधीत सर्वसिद्धांतं संविग्नगुणसंयुतं।
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥

गीतार्थाये तथारामशोभाये गुणभूमये।
प्रवर्त्तिनीपदं प्रादात् गुरुस्तद्गुणरंजितः ॥७८॥

संबोध्य भविकान् सूरिः कृत्वा तैरनशनं तथा।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसंपदं प्रापतुर्वरं ॥७९॥

ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुव्रता वरान्।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वतीं सिद्धिमेष्यत ॥८०॥

एवं भोस्तीर्थकृद्भक्तेः फलमाकर्ण्य सुंदरं।
कार्यस्तत्करणोयत्नो युष्माभिः प्रमदात्सदा ॥८१॥

॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा……। पत्र सं० १४। आ० ८¾×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२३। अ भण्डार।

२५३८. ऋणसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि। पत्र सं० ४। आ० १०×४३ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ८४०। अ भण्डार।

विशेष—आणंदरायगुरुणा सीसेण अभयचंदगणिणाय माहणचन्द्रपुत्राणं कहाकियं ग्यारधनरसए ।।१२।।

इति रिण संबंधे छ ।।१।।

श्री श्री पं० श्री श्री आणंदविजय मुनिभिर्लेखि। श्री किहरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने।

२५३९. औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८१। ट भण्डार।

विशेष—२ से ५ तक पत्र नही हैं।

२५४०. कठियारकानडरीचौपई—मानसागर। पत्र सं० १४। आ० १०×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००३। अ भण्डार।

विशेष—आदि भाग।

श्री गुरुभ्योनमः ढाल जंबूद्वीप मझार एहली प्रथम—
मुनिवर आर्यसुहस्तिकिण इक अवसरइ नयइ उजेणी आवियारे।
चरण करण व्रतधार गुणमणि आगर बहु परिवारे परिवस्याए ।।१।।

वन वाड़ी विश्राम लेइ तिहां रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए।
थानक मांगण काज मुनिवर मान्हता भद्रानइं घरि आविया ए ।।२।।

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनास्यै काजै आव्या इहां ए।
आर्यसुहस्तिना सीस अम्हे छां श्राविका उद्याने गुरु छै तिहाए ।।३।।

अन्तिम—

सत्तरै सैताले समै म. तिहां कीधौ चौमास ।। मं० ।।
सदगुरु ना परसाद थी म. पूगी मन की आस ।। म० ।।
मानसागर सुख संपदा म. जति सागरगणि सीस ।। मं० ।।
साधुतणा गुणगावतां म. पूगी मनह जगीस ।।
दिग पट कथा कोस थी म. रचीयो ए अधिकार।
अधिक को उछो भाषीयो मं. मिछा दुकड़ कार ।।
नवमी ढाल सोहामजी मं० गौडी राग सुरंग।
मानसागर कहै सांभलो दिन दिन वधतो रंग ।। १० ।।

इति श्री सील विषय कठीआर कानडरी चौपई संपूर्ण।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणाचार्य। पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४ । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संघी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५३ इंच । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ अषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नही हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्मां शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उमेसिंहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविद्यानंदिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्यं शास्त्रलिखापितं धर्म्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयार्थं मंगलभूयाच्चतुर्विधसंघानां ।

२५४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्त्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६. कथाकोश........। पत्र सं० २५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७, ५८) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७. कथाकोश........। पत्र सं० २ से ६८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । ङ भण्डार ।

२५४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५४। अ भण्डार।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं।

२५४९. कथासंग्रह—महाज्ञानसागर। पत्र सं० २५। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ३६८। अ भण्डार।

नाम कथा	पत्र	पद्य संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसल्याष्टमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिव्रत कथा	७ से १२	६६
[४] अष्टाह्लिका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रक्षबंधन कथा	१५ से १६	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१६ से २३	६५
[७] आदित्यवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथौ २ गुरुवासरे। लिख्यंतं महात्मा स्यंभुराम सवाई जयपुर मध्ये। लिखायतं चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौंसा पठनार्थं।

२५५०. कथासंग्रह……। पत्र सं० ३ से ६। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा–प्राकृत हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२६३। अपूर्ण। अ भण्डार।

२५५१. कथासंग्रह……। पत्र सं० ६४। आ० १२×७½ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

विशेष—व्रत कथायें भी है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००) और है।

२५५२. कथासंग्रह……। पत्र सं० ७८। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। अ भण्डार।

२५५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १५७८। वे० सं० २३। ख भण्डार।

विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है।

२५५४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२। ख भण्डार।

विशेष—निम्न कथायें हो हैं।

१. षोडशकारणकथा- -पद्मप्रभदेव।

२. रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकीर्ति।

क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है।

२५५५. कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि। पत्र सं० १५। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल सं० १७२१। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० २४। ख भण्डार।

विशेष—नयनविजय ने कृष्णगढ में प्रतिलिपि की थी।

२५५६. कर्मविपाक……। पत्र सं० १८। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी १४। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसंवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण।

२५५७. कवलचन्द्रायणव्रतकथा……। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०५। ञ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४४२) और है।

२५५८. कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत। पत्र सं० ७३। आ० ११¾×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ११६०। पूर्ण। ञ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशाय नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। अथ रुकमणि मंगल लिखते।

याद कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहां बैठा रुकमणी जादुराय।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि।
रुकमणि मंगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मंगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय।
वै नारी इंद्र की अपछरा जी, वै नर बैंकुंठ जाय ॥
व्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गांव ॥
बोलै राणी रुकमणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण।
या किया रति केशो तणी जी, बेसबीर करोजी बखाण ॥
वो मंगल परगट करो जी, सत को सबद विचारि।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

गुरु गोविंद नैं बिनवा जी, व अभिनासी जी देव ।
तन मन तो आगै धरा जी, कराजी गुरां की जी सेव ।।
गुरु गोविंद बताइया जी, हरी थापै ब्रहमंड ।
गुरु गोविंद के सरनै आये, होजो कुल की लाज सब पेली ।
कृष्ण कृपा तैं काम हमारो, भएता पदम यो तेली ।।

पत्र ४० – राग सिंधु ।

ससिपाल राजा बोलियो जी मुणि जे राज कवार ।
जो जादु जुध आयसी, तो भौत बजाऊ सार ।।
ये के सार धार करु वेरखा, बाण वहै अपार ।
गोला नालि अनेक छूटै सारयां री मार ।।
डाहलतणि फौजै भली पर आप सुणिज्यौं राज्य के बार ।।
भूप बतलाइयाइ जी·············· ।

अन्तिम— माता करौ नै प्रभुजी रो आरितो ओमि दान दत होय ।
श्रवण सत गुर साभलो, दोष न लागै कोय ।।
श्रीकृष्ण को ब्याहलौ, मुणै सकल चितलाय ।
हरि पुरवै सब कामना, भगति मुकति फलदाय ।।
द्वारामति आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।
जन पिय सामलिया, सीगासणि जगदीस ।।

रुकमणि जी मंगल संपूर्ण ।।

संवत १८७० का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां चित्राभौमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलालग्नेयं समाप्तोयं ।। शुभं ।।

२५५९. **कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति** । पत्र सं० ३ से ३४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्ण । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म डूंगरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नही है ।

२५६०. **ख्याल गोपीचंदका**·········। पत्र सं० १६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ऋ भण्डार ।

विशेष—अंत मे और भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६१. **चतुर्दशीविधानकथा**·········। पत्र सं० ११ । आ० ८×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

२५६२. चंद्रकुंवर की वार्ता—प्रतापसिंह। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० सं० १७१। अ भण्डार।

विशेष—९६ पद्य हैं। पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

अन्तिम—

प्रतापसिंघ घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ।
जुग जुग जीवों चंदकुवर, बात कही कविराय ॥ ९६ ॥

२५६३. चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्भ— स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमौं श्री जगदीस।
तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥
वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात।
प्रणमौं मन धरि मोद सौं, हरै विघन संघात ॥२॥
मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार।
बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥
कहां चन्दन कहा मलयगिरि, कहां सायर कहां नीर।
कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर संग।
आंसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥
दुख जु मन में सुख भयो, मागौ विरह विजोग।
आनन्द सौं च्यारौं मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाहा— कच्छवि चंदन राया, कच्छव मलयागिरिविते।
कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिढता संजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं। ६ कलिका हैं।

२५६४. चन्दनमलयागिरिकथा—चतुर। पत्र सं० १० । आ० १०½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७०१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७२। अ भण्डार।

अन्तिम ढाल—ढाल एहनी साधमुसु।

कठिन माहावरत राख ही अंत रावीहि सोह चतर सुजाण ॥
अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवंता साधनमु ॥

गुण दान सील तप भावना, ज्या रे धरम प्रधान ॥
सुधइ चित्त जे पालइ जी पासी सुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥

सतियाना गुण गावता जी जावइ पातिग दूर ॥
भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥

संमत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम अभास ॥
जे नर नारी सांभलो जी तस मन हुइ उलास ॥ ४ ॥ गुण० ॥

राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहां सरावक लोक ॥
देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सघला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥

गुजराति गच्छ जाणीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥
आचारइ करी सोभतो जी सं........वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥

तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाण ॥
मोहला जी ना जस घणा जी सीव्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥

वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥
भाऊ थिवर वरवाणीयइ जी पंडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥

तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय ॥
गुणभणता गुणता भावसूजी तस मन वंछित थाय ॥ ९ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमापतं ॥

२५६५. चन्दनषष्ठिकथा—ब्र० श्रुतसागर। पत्र सं० ४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७०। क भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति वे० सं० १६६ की और है।

२५६६. चन्दनषष्ठिकथा……। पत्र सं० २४। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८। घ भण्डार।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं।

२५६७. चन्दनषष्ठिव्रतकथाभाषा—खुशालचंद काला। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इंच। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। क भण्डार।

२५६८. चंद्रहंसकी कथा—टीकम। पत्र स० ७०। आ० ९×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७०८। ले० काल सं० १७३३। पूर्ण। वे० सं० २०। घ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं।

२५६६. चारमित्रों की कथा—अजयराज। पत्र सं० ५। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३। ले० काल सं० १७३३। पूर्ण। वे० सं० ५५३। च भण्डार।

२५७०. चित्रसेनकथा……। पत्र सं० १८। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१ पौष बुदी २। पूर्ण। वे० सं० २२। ञ भण्डार।

विशेष—श्लोक संख्या ४६५।

२५७१. चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज। पत्र सं० ६२। आ० १२१/२×७३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९४६ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० २२। घ भण्डार।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

सं० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है। मूल्य– ५) ≡) ।।) इस तरह कुल ५।।≡ लिखा है।

२५७२. जयकुमारसुलोचनाकथा……। पत्र सं० १६। आ० ७×८१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा……। पत्र सं० ४। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। ञ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में (वे० सं० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मांगीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम। पत्र सं० ५। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७६। अ भण्डार।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप मे वर्णन किया है।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा……। पत्र सं० ४। आ० १३×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४८३। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० सं० ४८४) की एक प्रति और है।

२५७६. ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्त्ति। पत्र सं० ११ से १४। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७३७ आसोज बुदी ४। अपूर्ण। वे० सं० २०८०। अ भण्डार।

विशेष—जसकीर्त्ति देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि। पत्र सं० २८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। क भण्डार।

२५७८. ढोलामारुणीकीबात····· । पत्र सं० २ से ७७ । आ० ६×८३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०० आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५६१ । ट भण्डार ।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नही है ।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं । कुल ६८८ दोहे है जिनमे ढोलामारू की बात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारूजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै सीख दीनी । ई भाति नरवल को राज करै छै । मारूजी की कूंख कंवर लिछमण स्यंघ जी हुवा । मालवण की कूंखि कंवर वीरभाण जी हुवा । दोय कंवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारूजी को श्री महादेव जी की किरपा सु अमर जोड़ी हुई । लिछमण स्यंघ जी कंवर सुं औलाद कुछाहा की चाली । ढोला सूं राजा रामस्यंघ जी ताई पीढी एक सौदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिंहजी तांई पीढी एक सौ चार हुई ।।

इति श्री ढोलामारूजी वा राजा नल का विषा की वारता संपूरण । मिती साढ सुदी ८ बुधवार सं० १६०० का लिछमणराम चांदवाड की पोथी सु उतार लिखितं·······रामगंज में··· ·······।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियां भी हैं ।

२५७९. ढोलामारुणी की बात········। पत्र सं० ६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६० । ट भण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित है । बीच बीच मे दोहे भी दिये गये है ।

२५८०. णमोकारमंत्रकथा····· ·····। पत्र सं० ४२ से ७१ । आ० १२½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३७ । छ भण्डार ।

विशेष—णमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाये हैं ।

२५८१. त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)—पं० अभ्रदेव । पत्र सं० २ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३०८) की और है ।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि । पत्र सं० २ । आ० १०½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५४) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४) और हैं।

२५८३. त्रिलोकसारकथा……। पत्र सं० १२। ग्रा० १०३/४×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १६२७। ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३८७। ग्र भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायितं पं० जी श्री भागचन्दजी लाल कोटै पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेबा। दक्षण्याकैर उं भाई कै राडि हुई सूबादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फते हुई। लिखितं गुरुजी मेघराज नगरमध्ये।

२५८४. दत्तात्रय……। पत्र सं० ३६। ग्रा० १३३/४×६३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० र० काल ×। ले० काल सं० १६१५। पूर्ण। वे० सं० ३४१। ज भण्डार।

२५८५. दर्शनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० २३। ग्रा० १२×७१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८१। ग्र भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २६३) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६) च भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० २६५, २६६, २६७) और हैं।

२५८६. दर्शनकथाकोश……। पत्र सं० २२ से ६०। ग्रा० १०३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८। छ भण्डार।

२५८७. दशमूर्खोकी कथा……। पत्र सं० ३६। ग्रा० १२×५३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६। पूर्ण। वे० सं० २६०। क भण्डार।

२५८८. दशलक्षणकथा—लोकसेन। पत्र सं० १२। ग्रा० ६३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वे० सं० ३५०। ग्र भण्डार।

विशेष–घ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३७, ३८) और हैं।

२५८९. दशलक्षणकथा……। पत्र सं० ५। ग्रा० ११×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१३। ग्र भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०२) की और है।

२५९०. दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ३। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०७। ग्र भण्डार।

२५६१. दानकथा—भारामल्ल। पत्र सं० १८। आ० ११३/४×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। अ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६७६) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८०) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २६८) और है।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० ३। आ० १०×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१७६) की और है। जिस पर केवल दान शील तप भावना ही दिया है।

२५६३. देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि। पत्र सं० २३। आ० ११×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०७। क भण्डार।

२५६४. देवलोकनकथा......। पत्र सं० २ से ५। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। अ भण्डार।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० ७। आ० ६×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२५। क भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७३ एक ही वेष्टन) और हैं।

२५६६. द्वादशव्रतकथासंग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर। पत्र सं० २२। आ० १२×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३६६। अ भण्डार।

विशेष—निम्न कथायें और हैं।

मौन एकादशीकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
श्रुतस्कंधव्रतकथा— " " "
कोकिलापंचमीकथा— ब्र० हर्षा " हिन्दी र० काल सं० १७३६
जिनगुणसंपत्तिकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७ द्वादशव्रतकथा.........। पत्र सं० ७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २००। अ भण्डार।

विशेष—पं० अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है।

अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं।

२५९८. धनदत्त सेठ की कथा……। पत्र सं० १४। आ० १२३/४×७१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७२५। ले० काल ×। वे० सं० ६८३। अ भण्डार।

२५९९. धन्नाकथानक……। पत्र सं० ६। आ० १११/२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। घ भण्डार।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई……। पत्र सं० २४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं। २४ से आगे के पत्र नही हैं। प्रति अधिक प्राचीन नही है।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द। पत्र सं० ३७। आ० ११३/४×४१/२ इञ्च। विषय-कथा। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७३९। ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ९०। ख भण्डार।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है। (पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा……। पत्र सं० १२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५५। पूर्ण। वे० सं० ९१। ख भण्डार।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन। पत्र सं० २४। आ० ११×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १८०७। ले० काल सं० १९२७ सावरण बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ३३९। क भण्डार।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३९२।

विशेष—सांगानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) सं० १७८२ की लिखी हुई और है।

२६०५. नंदीश्वरविधानकथा—हरिषेण। पत्र सं० १३। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३९५। क भण्डार।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा……। पत्र सं० ३। आ० १०१/२×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७३। ट भण्डार।

२६०७. नागमंता……। पत्र सं० १०। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३९३। अ भण्डार।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

श्री नागमंता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव।
नमणि करइ वर नाम लेई नइं, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥
करइ तुम्हारी सेवनइं, वसिगराइ तेडावीया।
काल कंकोडनइं तित्यगिक्तंयर, अवर वेग बोलावीया ॥२॥
नाद वेद आणंद अधिका, करइ तुम्हारी सेव।
नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव ॥३॥
राउ देहरासर बइठउ, आणे निरमल नीर।
डंक गयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥
नीर लेई डंक मोकल्यउ लागी अति घणवार।
आपं सवारथ पडीउ लोभइ, समुद्रइं पइलेपार ॥५॥
सहस्र अठ्यासी जिहां देवता, जाई तिणवनि पइठउ।
गंगा तणउ प्रवाह जु आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥
राम मोकल्या छे वाडीये, आणे सुर ही जाइ।
आणे सुरही पातरी, आणे सुरहीं भाइ ॥७॥
आणे सुरही भाइ नइ, आणे सुगंधी पातरी।
आकतुल छीनइ पाषची, करि कण वीर सुरातडी ॥८॥
जाइ बेउल करणउ, केवडो राइ मच कुंद जु सारी।
पुप्फ करंडक भरीनइ, आयो राइमो कल्याणइ बाडी ॥९॥

अंत—

एक कामिणि अवर बाली, विछोही भरतार।
डंक तणइ शिर बरसही, ताल्हण अमी संचारि ॥
ताल्हण अमीय संचारि, मुझ प्रिय मरइ अपूटइ।
बाजि लहरि विष धंधालिउ, ताल्ह धवल नइं ऊठइ
रुदन करइ मुख धाह हउं सु सनेहा टाली।
विछोही भरतार एक कामिणि अर बाली ॥३॥
डाकसुंडा कल बाजही, बहु कांसी भमकार।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धरण मिली भरतार नइ ।।
तित्थ गिराणउ तूठउ बोलइ, प्रमीयविष गयउ छंडी ।
डंक तणइ शिर बूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ।।
मूंध मंगलक छाजइ,………………………… ।
बहु कांसी झमकार डाक छंडा कल वाजइ ।।
इति श्री नागमंता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी ग्रा० मेरुकीर्त्ति जी की ।। कथा के रूप में है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० १६ । प्रा० ११३⁄४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) को और है ।

ञ भण्डार वाली प्रति की गरूडमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०६. नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २ ७५ । प्रा० ७३⁄४×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु अपूर्ण है ।

२६१०. निःशल्याष्टमीकथा……। पत्र सं० १ । प्रा० १०×४१⁄२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० मे ५५ । प्रा० ८१⁄२×६१⁄४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८) की और है जिसकी कि सं० १८०१ में महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा……। पत्र सं० २१ । प्रा० १२×५१⁄२ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिब्याहलो……। पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राजियाहु समदविजय राय धारो।
तस नंदन श्री नेमजी हुं सावल वरण सरीरौ ॥

धन धन श्रदे छी ज्यो तेव राजसदरसण करता।
दालदरनासै जीनमो सो सोरजी हु हुतो ॥

समदवजजी रो नंद अतेरो ले आवण जी।
हुतो सावली हुं श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ॥

प्रति अशुद्ध एवं जीर्ण है।

२६१४. नेमिराजलब्याहलो—गोपीकृष्ण। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १८६३ प्र० सावण बुदी ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५०। अ भण्डार।

प्रारम्भ—

श्री जिण चरण कमल नमो नमो अणगार।
नेमनाथ र ढाल तणे व्याहव थहुं सुखदाय ॥

द्वारामती नगरी भली सोरठ देस मझार।
इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुंदर बहु विस्तार ॥

चौडा नो जोजण तिहां लाबा बारा जाण।
साठि कोठि घर मांहि रे बाहर थहत्तर प्रमाण ॥२॥

अन्तिम—

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी।
भण गुण सुणसी भलो जी पावसी सुख अपार ॥

कलश—
प्रथम सावण चोथ सुकली वार मंगलवार ए।
संवत् अठारा वरस तरेसठि मांग सुल मुझार ए।
श्री नेम राजल कसन गोपी तास चरत वखानइ।
सुतार सीखा ताहि ताहि भाखी कही कथा प्रमाण ए ॥

इति श्री नेम राजल विवाहलो संपूर्ण।

इसमे आगे नव भव की ढाल दी है वह अपूर्ण है।

२६१५. पंचाख्यान—विष्णु शर्मा। पत्र सं० १। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००६। अ भण्डार।

विशेष—केवल ६३वां पत्र है। क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४०१) अपूर्ण और है।

२६१६. परसरामकथा……। पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७ पल्यविधानकथा—खुशालचन्द । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २० । झ भण्डार ।

२६१८. पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ११७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८३) जिसका ले० काल सं० १६१७ शाके है और है ।

२६१९. पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे पं० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२०. पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र सं० २०० । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४६७) तथा छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६, ७०) और है किन्तु तीनो ही अपूर्ण है ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र सं० २४८ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १७७७ भादवा सुदी ५ । ले० काल सं० १७८८ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद में श्री अभयसेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा ङ भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६३५) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७७) ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३) झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९४९) और है ।

२६२२. पुण्याश्रवकथाकोश……। पत्र सं० ९४ । आ० १६×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मंदिर में चढाई ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २९०) [अपूर्ण] और हैं ।

२६२३. पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र सं० ३४१ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १६२८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४. पुण्याश्रवकथाकोश की सूची……। पत्र सं० ४ । आ० ९¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । झ भण्डार ।

२६२५. पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) और है ।

२६२६. पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति बागड देश स्थित घाटसल नगर मे श्री वासुपूज्य चैत्यालय मे ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य गणदास ने लिखी थी ।

२६२७. पुष्पांजलीव्रतविधानकथा ……। पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । च भण्डार ।

२६२८. पुष्पांजलीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६४२ कार्त्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६२९. वैतालपच्चीसी……। पत्र सं० ५५ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५० । च भण्डार ।

२६३०. भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं० ८६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १८२६ । ले० काल सं० १८५६ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३१) और है ।

२६३१. भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं० १५७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७४७ सावन सुदी २ । ले० काल सं० १६४६ । अपूर्ण । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५३, ५५४) छ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १८१, २२८) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२६) की और है ।

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १२८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १९३१ फागुण सुदी ४। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५४०। क भण्डार।

२६३३. भोजप्रबन्ध……। पत्र सं० १२ से २५। आ० ११½×४¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२५६। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) की और है।

२६३४. मधुकैटभवध (महिषासुरवध)……। पत्र सं० २३। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५३। अ भण्डार।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदास। पत्र सं० ४८। आ० ९×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२८ फागुण बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ५८०। ङ भण्डार।

विशेष—पद्य सं० ९२८। सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है। इसी भण्डार मे १ प्रति [अपूर्ण] (वे० सं० ५८१) तथा १ प्रति (वे० सं० ५८२) की [पूर्ण] और हैं।

२६३६. मृगापुत्रचउढाला……। पत्र सं० १। आ० ९¾×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३७। अ भण्डार।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७. माधवानलकथा—आनन्द। पत्र सं० २ से १०। आ० ११×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८०९। ट भण्डार।

२६३८. मानतुंगमानवतिचौपई—मोहनविजय। पत्र सं० २६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१ कार्त्तिक सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

विशेष—आदि अंतभाग निम्न प्रकार है-

आदि—

ऋषभ जिणंद पदांबुजे, मधुकर करी लीन।
आगम गुण सोइसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥

यान पान सम जिनकम, तारण भवनिधि तोय।
आप तर्‌या तारे अवर, नेहनै प्रणमति होइ ॥२॥

भावे प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास।
बावन अक्षर की भरयी, अखय खजानो जास ॥३॥

शुक्र करया केई शनि थका, एह बीजे हनी शक्ति ।
किम मूंकाइं तेहना, पद नीको विषे भक्ति ।।४।

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचद्र सुप वर्ष, बुद्धि मास शुचि पक्षे है । (आगे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल हैं ।

२६३९. **मुक्तावलिव्रतकथा—श्रुतसागर** । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदो ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—यति दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४०. **मुक्तावलिव्रतकथा—सोमप्रभ** । पत्र सं० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में नेमिनाथ चैत्यालय मे कानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१ **मुक्तावलिविधानकथा**……। पत्र सं० ६ से ११ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १९९८ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदाकुंदाचार्यान्वये भट्टारिक श्रीपद्मनंदिदेव। तत्पट्टे भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा खंडेलवालान्वये भावसागोत्रे संघवी खेता भार्या होली तत्पुत्रा: संघवी चाहड, आसल, कालू, जालप, लखमण तेषा मध्ये संघवी कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिषभदास तैने री साह हेमराज भार्या हिमसिरी एतं रिदं रोहिणीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६४२. **मेघमालाव्रतोद्यापनकथा**…… । पत्र सं० ११ । आ० १२×६$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । घ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७६) और है ।

२६४३. **मेघमालाव्रतकथा**…… । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) की और है ।

२६४४. **मेघमालाव्रतकथा—खुशालचंद** । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८१ । क भण्डार ।

२६४५. **मौनिव्रतकथा—गुणभद्र** । पत्र सं० ५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४१ । अ भण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा.........। पत्र सं० १२ । आ० ११३⁄४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२ । घ भण्डार ।

२६४७. यमपालमातंगकीकथा.........। पत्र सं० २६ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । छ भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच नमस्कार कथा दी हुई है । कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं ।

२६४८. रक्षाबंधनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२३⁄४×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

२६४९. रक्षाबन्धनकथा.........। पत्र सं० १ । आ० १०३⁄४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७३ । छ भण्डार ।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १० । आ० ११३⁄४×५३⁄४ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५७) और है ।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० ११३⁄४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३) और है ।

२६५२. रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र सं० ४ । आ० ११×४१⁄२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० १८ । आ० ६३⁄४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९ । ज भण्डार ।

२६५४. रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १८ । आ० ६×३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि । पत्र सं० १० । आ० ६३⁄४×६३⁄४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४), ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११३) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५०) और हैं ।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी ······। पत्र सं० ३ से ८ । आ० ६३⁄४×४ इंच । भाषा–हिन्दी [राजस्थानी] विषय–कथा । र० काल सं० १५१३ वैशाख शुक्ला ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दोहा—

सावित्रीउमया श्रीया आगै साम्ही आई ।
सुंदर सोचनै, इंदिर लइ बधाइ ।।१।।

हूया अवलि मंगल हरष वधीया नेह नवल ।
सूर रतन सतीयां सरीस, मिलीया जाइ महल्ल ।।२।।

औ सुरनर फुरउधरे, वैकुंठ कीधावास ।
राजा रयणायरतणी, जुग अविचल जस वास ।।३।।

पख वैशाखह तिथि नवमी पनरोतरै वरस्स ।
वार शुकल डोयाविहृद, हीदू तुरक वहस्स ।।४।।

जोडि भणै खिडीयौ जगै, रासो रतन रसाल ।
सूरा पूरा संभलउ, भउ मोटा भूपाल ।।५।।

दिली राउ वाका उजेणी रासा का च्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी ।। इति श्री राठोडरतन महेस दासौत्तसरी वचनिका संपूर्ण ।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११½×८ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । अ भण्डार ।

२६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है ।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २४ । आ० १३×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७७३ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १६२८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है । कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६६०. रात्रिभोजनकथा·······। पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११ । ख भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६१) और है ।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई……। पत्र सं० २। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३१। अ भण्डार।

२६६२. रूपसेनचरित्र……। पत्र सं० १७। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६०। क भण्डार।

२६६३. रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१२। अ भण्डार।

२६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

विशेष—लश्कर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६१) की और हैं।

२६६५. रैदव्रतकथा……। पत्र सं० ४। आ० ११×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३६। क भण्डार।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ आसोज सुदी ४ है।

२६६६. रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ जेष्ठ सुदी ६। वे० सं० ६०८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७२) और है।

२६६७. रोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० २। आ० ११×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६२। क भण्डार।

विशेष—क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ले० काल सं० १६१७ वैशाख सुदी ३ और हैं।

२६६८. लब्धिविधानकथा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० ६। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ३१७। ख भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भादवा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराज

श्रीरामचंदराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये……मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सा. पद्मा तद्भार्या केलमदे……… सा. कालू इदं कथा……… मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय दत्तं ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा ……। पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । च भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा……। पत्र सं० ७ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । ले० काल × । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५० । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक सं० २४३ हैं । प्रति प्राचीन है ।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र सं० ५ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ६७४ । क भण्डार ।

विशेष—चूहामल बिलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६७२. विक्रमचौबोलीचौपई—अभयचन्दसूरि । पत्र सं० १३ । आ० ६×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० । अ भण्डार ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा…… । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । ख भण्डार ।

२६७५. वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरंग ।
सो राधा राजा राणेह ढाल भवहु रंग ॥१॥
रंग विणरस न भावसी किवता करो विचार ।
पढता सवि सुख संपजे हुरस भाव हानइ भाव ॥
सुख मामणे हो रंग महल ने निस भार पोढी सेजजी ।
दोष अनता उफण्या आसेनवार विछोराछ मेहजी ॥

अन्तिम— कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वैरवार।
सुख अनंता भोगिया वेले हुवा अणगार ।।
दान देई चारित्त लीयौ होवा तो जय जयकार।
पेमराज गुरु इम भणी, मुकत गया तत्काल ।।
भणे गुणे जे सांभली वैदरभी तणो विवाह।
भएण तास वे सुख संपजे पहुत्या मुकत मझार।
इति वैदरभी विवाह संपूर्ण ।।

ग्रन्थ जीर्ण है। इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं।

२६७६. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर। पत्र सं० ७६। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८७८। अ भण्डार।

२६७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १६४७ कार्तिक सुदी ३। वे० सं० ६७। छ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारे इदं पुस्तकं लिखायितं श्रीमद्काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यशःकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्त्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापितं खंडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद् पुत्र जीनो भार्या जमनादे। द्वि० पुत्र लोबसी तस्य भार्या लेनलदे तृ० पुत्र डूसर तस्य भार्या अहंकारदे, चतुर्थ पुत्र नान्नू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साहू वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इदं पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदाये ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं लिखाप्य प्रदत्तं। लेखक लषमन श्वेतांबर।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जयकीर्त्ति पं० दीपचंद पं० भयाचंद युक्ते।

२६७८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७३ से १२६। ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२६७९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १७६५ फागुण बुदी ६। वे० सं० ६३। छ भण्डार।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७५, ६७६) ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८८) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २० ७१, २१००) और हैं।

२६८०. व्रतकथाकोश—पं० दामोदर। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७३। क भण्डार।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६४ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२) की और है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है । श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ८६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं । क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) और है ।

२६८३. व्रतकथाकोश........। पत्र सं० ३ से १०० । ग्रा० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत अपभ्रंश । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के २२ से २५ तथा ६५ से ६६ तक के भी पत्र नही है । निम्न कथाओं का संग्रह है—

१. पुष्पांजलिविधान कथा ....।   संस्कृत पत्र ३ से ५

२. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव   „ „ ५ से ८

अन्तिम—चंद्रभूषणशिष्येण कथेयं पापहारिणी ।
सस्कृता पंडिताभ्रेण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३.	रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्ति	....	संस्कृत गद्य पत्र	८ से ११
४.	षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव	....	„ पद्य „	११ से १४
५.	जिनरात्रिविधानकथा........। २६३ पद्य हैं ।	....	„ „	१४ से २६
६.	मेघमालाव्रतकथा ...... ।	....	„ गद्य „	२६ से ३१
७.	दशलाक्षणिककथा—लोकसेन ।	....	„ „ „	३१ से ३५
८.	सुगंधदशमीव्रतकथा........।	....	„ „ „	३५ से ४०
९.	त्रिकालचउवीसीकथा—अभ्रदेव ।	....	„ पद्य „	४० से ४३
१०.	रत्नत्रयविधि—आशाधर	....	„ गद्य „	४३ से ५१

प्रारम्भ—   श्रीवर्द्धमानमानस्य गौतमादींश्चसद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मंडितवामवंशसुगणेः सज्जैनचूडामणेः ।
मालाख्यस्यसुतः प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

यः शुक्लादिपदेषु मालवपतेः आत्रातियुक्तं शिवं ।
श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥

श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुषा ।
पाक्षिकश्रावकीभावं तेन मालवमंडले ॥
सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुंजरः ।
पंडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्तः सम्यगेकदा ॥३॥

प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धधर्माश्रितस्य मे ।
भाद्रं किंचिदनुष्ठेयं व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥

ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तरं ।
उपदिष्टसतामिष्टस्तस्यायं विधिसत्तमः ॥५॥

तेनान्यैश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठितः ।
ग्रंथो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृतः ॥६॥

विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये ।
दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथतां कथा ॥७॥

पत्नी श्रीनागदेवस्य नंद्याद्धर्मेण नायिका ।
यासीद्रत्नत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधिः समाप्तः ॥

११.	पुरंदरविधानकथा........।	संस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२.	रत्नाविधानकथा........।	गद्य	५४ से ५६
१३.	दशलक्षणजयमाल—रइधू।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४.	पल्यविधानकथा ....।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५.	अनथमोव्रतकथा—पं० हरिचंद्र।	अपभ्रंश	६३ से ६९

अगरवाल वरवंसि उप्पण्णइं हरियंदेण ।
भत्तिए जिणुमणपंणवेवि पयडिउ पद्धडियाछंदेण ॥१६॥

१६.	चंदनषष्ठीकथा—	"	"	६९ से ७१
१७.	मुक्तावलोकनकथा	—	संस्कृत	७१ से ७५
१८.	रोहिणीचरित्र—	देवनंदि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	"	"	८१ से ८५

२०.	अक्षयनिधिविधानकथा —	संस्कृत	८५ से ८८	
२१.	मुकुटसप्तमीकथा—पं० अभ्रदेव	,,	८८ से ८९	
२२.	मौनव्रतविधान—रत्नकीर्ति	संस्कृत गद्य	९० से ९४	
२३.	रुक्मणिविधानकथा—छत्रसेन	संस्कृत पद्य	१००	[अपूर्ण]

संवत् १६०९ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये........।

२६८४. व्रतकथाकोश........। पत्र-सं० १५२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९२। छ भण्डार।

२६८५. व्रतकथाकोश—खुशालचंद। पत्र सं० ८९। आ० १२३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६७। अ भण्डार।

विशेष—१८ कथायें हैं।

इसके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९१) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८९) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७८) और हैं।

२६८६. व्रतकथाकोश........। पत्र सं० ५०। आ० १०×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	खुशालचंद	र० काल सं० १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविव्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	,,	र० काल सं० १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	,,	—
षोडशकारणव्रतकथा—	,,	—
मेघमालाव्रतकथा—	,,	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	,,	—
लब्धिविधानकथा—	,,	—
जिनपूजापुरंदरकथा—	,,	—
दश[illegible]कथा—	,,	—

नाम	कर्ता	विशेष
पुष्पांजलिव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
आकाशपंचमीकथा—	"	र० काल सं० १७८५
मुक्तावलीव्रतकथा—	"	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७. व्रतकथासंग्रह………। पत्र सं० ६ से ६०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं।

२६८८. व्रतकथासंग्रह………। पत्र सं० १२३। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत अपभ्रंश। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १५१६ सावण बुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ११०। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीव्रतकथा………।		अपभ्रंश	—
अनन्तव्रतकथा………।		"	—
रोहिणीव्रतकथा—	×	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	"	—
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद।	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	विमलकीर्त्ति।	"	—
निर्भरपञ्चमीविधानकथा—	विनयचंद्र।	"	—
पुष्पांजलिविधानकथा—	पं० हरिश्चन्द्र।	"	—
श्रवणद्वादशीकथा—	पं० अभ्रदेव।	"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन।	"	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं।
रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्यानां बोधकारणं॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	"	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्त्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्त्ति शिष्य ब्र० नरसिंह निमित्तं। खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघी राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गणोपुत्र कातु पदमा धर्मा आत्मः कर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रादत्तं।

२६८६. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० ८८। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशव्रतकथ—	पं० अभ्रदेव।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द।	हिन्दी	—
नंदीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		"	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	"	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	"	

२६९०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर। पत्र सं० २७। आ० १०×४½। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७७। क भण्डार।

२६६१. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० ४। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७२। क भण्डार।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका संग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती में है।

२६६२. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० २२ से १०४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० २६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६० भादवा सुदी ५। वे० सं० ७२२। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुक्मिणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्त्ता का नाम पं० मदनकीर्त्ति है। ट भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०२६) और है।

२६६४. शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट। पत्र सं० २२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७२। अ भण्डार।

विशेष—३२ से आगे पत्र नही है। स्कंधपुराण में से है।

२६६५. शीलकथा—भारामल्ल। पत्र सं० २०। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६६६, ११११) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १००), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०८), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८०), ज भण्डार मे एक प्रति (ले० सं० १६६७) और हैं।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि। पत्र सं० १३१। आ० ६×४ इंच। भाषा–गुजराती लिपि हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—४३वी कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है)।

२६६७. शुकसप्तति……। पत्र सं० ६४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४५। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६६८. श्रावणद्वादशीउपाख्यान……। पत्र सं० ३। आ० १०½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८०। अ भण्डार।

२६९९. श्रावणद्वादशीकथा……। पत्र सं० ६८। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत गद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७११। ङ भण्डार।

२७००. श्रीपालकथा……। पत्र सं० २७। ग्रा० ११×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२६ वैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ७१३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है।

२७०१. श्रेणिकचौपई—डूंगा वैद। पत्र सं० १४। ग्रा० ९½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १८२६। पूर्ण। वे० सं० ७९४। अ भण्डार।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे।

अथ श्रेणिक चौपई लीखते—

आदिनाथ बंदौ जगदीस। जाहि चरित थे होई जगीस ।।
दूजा बंदौ गुर निरगंथ। भूला भव्य दीखावरण पंथ ।।१।।
तीजा साधु सबै का पाइ। चौथा सरस्वती करौ सहाय।
जहि सेया थे सब बुधि होय। करौ चौपई मन सुधि जोई ।।२।।
माता हमनै करो सहाई। अख्यर हीरण सवारो आई।
श्रेणिक चरित बात मै लही। जैसी जाणी चौपई कही ।।३।।
राणी सही चेलना जाणि। धर्म जैनि सेवै मनि आणि।
राजा धर्म चलावै बोध। जैन धर्म को काटै खोध ।।४।।

पत्र ७ पर–दोहा—

जो झूठी मुख थे कहै, अणवोल्या दे दोस।
जे नर जासी नरक मैं, मत कोइ आणौ रोस ।।१५१।।

चौपई—
कहुं जती इक साह सुजाण। वामरण एक पढ्यो अति आणि।
जइ कौ पुत्र नहीं को आय। तवै न्यौल इक पाल्यो जाय ।।५२।।
वेटो करि राख्यो निरताइ। दुवैउ पाव एक पै आइ।
वांभणी सही जाइयो पूत। पली थावै जाणि अउत ।।५३।।
एक दिवस वांभरण विचारि। पाणी नैवा चाली नारि।
पालरण बालक मेल्हौ तहां। न्यौल वचन ए आखै जहां ।।५४।।

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार। जे सुणिसी ते उतरै पार।
हीन पद अक्षर जो होय। जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
मैं म्हारी बुधि सारू कही। गुणियर लोग सवारो सही।
जे ता तणो कहै निरताय। सुणता सगला पातिग जाइ ॥२६०॥
लिखिवा वाल्यौ सुख नित लहौ, जै साधा का गुण यौ कहौ।
यामैं भोलो कोइ नही, हूगै वैद चौपइ कही ॥६१॥

वास भलो मालपुरो जाणि। टौक मही सो कियो वखाण।
जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग ॥६२॥
पौणि छतीसौं लीला करै। दुख ये पेट न कोइ भरै।
राइस्यंघ जी राजा वखाणि। भौर वबाहन राखै आणि ॥६३॥
जीव दया को अधिक सुभाव। सबै भलाई साधै डाव।
पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि। बुरी कही भवि सुणै बहोडि ॥६४॥
धनि हिंदवाणो राज वखाणि। जह मैं सीसोद्यो सो जाणि।
जीव दया को सदा वीचार। रैति तणौं राखै आधार ॥६५॥
कीरति कहौ कहा लगि जाणि। जीव दया सहु पालै आणि।
इह विधि सगला करै अगीस। राजा जीज्यौ सौ अरु बीस ॥६६॥

एता वरस मै भोलो नही। बेटा पोता फल ज्यो सही।
दुखिया का दुख टालै आय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥
इ पुन्य तणौ कोइ नहीं पार। वेंदि खलास करै ते सार।
वाकी बुरी कहै नर कोइ। जन्म आपणौ चालै खोइ ॥६८॥
संवत् सौलह सै प्रमाण। उपर सहो इतासौ जाण।
निन्याणवे कह्या निरदोष। जीव सबै पावै पोष ॥६६॥
भाद्रव सुदी तेरस सनिवार। कथा तीन से वट अधिकाय।
इ सुणता सुख पासी देह। आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के सं० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं वखतसागर वांचै जहनै निम्सकार नमोस्तं बांच ज्यो जी।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ११। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६८६ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ३५०। अ भण्डार।

२७०३. सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्त्ति। पत्र सं० ४१। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल सं० १५२६ माघ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७०४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १७७२ श्रावण बुदी १३। वे० सं० १००२। अ भण्डार।

प्रशस्ति— सं० १७७२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ अर्कवासरे बिजैरामेण लिपिचक्रे अकब्बरपुर समीपेषु केरवाग्रामे।

२७०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी ६। वे० सं० ३६३। च भण्डार।

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवाण संगही अमरचंदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई।

२७०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १। वे० सं० ६६। भ भण्डार।

विशेष—पं० नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी।

२७०७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १६४७ आसोज सुदी ६। वे० सं० १११। ञ भण्डार।

२७०८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १७५६ कात्तिक बुदी ६। वे० सं० १३६। ञ भण्डार।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

इनके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७५) और हैं।

२७०९. सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० ८६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६८८। च भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं। अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

२७१०. सप्तव्यसनकथाभाषा····। पत्र सं० १०६। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६३। ङ भण्डार।

विशेष—सोमकीर्त्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है।

च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८९) और है।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ आषाढ बुदी... । वे० सं० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्त्ति के शिष्य थे । रेवाड़ी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वहीं लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—म्ह भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०) और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा....... । पत्र सं० १३ से ३३ । आ० १२×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठम्यां शनौ ....श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल महोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिरं नंदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा....... । पत्र सं० ८६ । आ० १०½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । ब्र० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलागणपुर निवासी के बंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ बैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

श्री डूंगर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था ।

अथ संवत्सरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्त्तितदाम्नाये अगरवालान्वये मित्तलगोत्रे साहु दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा । सा. गोपी तस्य भार्या वीवो तयो पुत्र सा. भावन साहु उवा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदास । साहु उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र डूंगरसी सास्त्र सम्यक्त कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार रायमलदत्वात् पठनार्थं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयहेतु । शुभं भवतु । लिखितं जीवात्मज गोपालदास । श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमध्ये ।

२७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७११ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ७५४ । क भण्डार ।

विशेष—भाङूराम साह ने जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०६६, ८६४) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२), क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८००), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८७), म भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१), ब्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनों अपूर्ण] और हैं ।

२७१९. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७४९ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८७ । ग भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४३५ । अ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबचंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं० १८६८ में पोथी की निछरावलि दिवाई पं० खुस्यालजी, पं० ईसरदासजी गोदीका सूं हस्ते महात्मा फत्ताह्नै भाई रु० १) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी २ । वे० सं० २११ । ख भण्डार ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार ।

२७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । म भण्डार ।

इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५४३) और हैं ।

२७२६. सम्यक्त्वकौमुदीभाषा""""। पत्र सं० १७४ । आ० १०३/४×७१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०१) और है ।

२७२८. शालिभद्रधन्नानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४१ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ८४२ । ङ भण्डार ।

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा""""। पत्र सं० २ से ११ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । ङ भण्डार ।

२७३०. सिंहासनबत्तीसी""""। पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९७ । ट भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वात्रिंशिका—क्षेमंकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा विक्रमादित्य की कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्धं ।
पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मयं महाश्चर्यकरंनराणां ॥
क्षेमंकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबंधेनयुक्तिकृतसंस्कृतबंधुरेण ।
विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनाथचक्रे चिरादमरपंडितहर्षहेतु ॥

२७३२. सिंहासनद्वात्रिंशिका""""। पत्र सं० ६३ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७९८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा""""। पत्र सं० २७ । आ० ११३/४×७१/२ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४. सुगन्धदशमीकथा……। पत्र सं० ६। आ० ११½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है।

२७३५. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज। पत्र सं० ५। आ० ८½×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। लें० काल सं० १६८५ श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते–

चौपई—
वर्द्धमान बंदौ सुखदाई, गुर गौतम वंदौ चितलाय।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा, वर्द्धमान परकाशी यथा ॥१॥
पूर्बदेस राजग्रह गांव, श्रेनिक राज करै अभिराम।
नाम चेलना ग्रहपटरानी, चंद्ररोहिणी रूप समान।
नृप सिंहासन बैठो कदा, वनमाली फल ल्यायो तदा ॥२॥

अन्तिम—
सहर गहे लोउ तिम वास, जैनधर्म को करैप्रकास ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरै, दान पूजा सो पातिक हरै।
हेमराज कवियन यों कही, विस्वभूषन परकासी सही।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन वच काय सुनै जो कोय ॥३८॥
इति कथा संपूरणम्

दोहा—
श्रावण शुक्ला पंचमी, चंद्रवार शुभ जान।
श्रीजिन भुवन सहावनौ, तिहां लिखा धरि ध्यान ॥
संवत् विक्रम भूप को, इक नव आठ सुजान।
ताके ऊपर पांच लखि, लीजै चतुर सुजान ॥
देश भदावर के विषै, भिंड नगर शुभ ठाम।
ताही मैं हम रहत है, रामसाय है नाम ॥

२७३६. सुदयवच्छसावलिंगाकी चौपई—मुनि केशव। पत्र सं० २७। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १६६७। ले० काल सं० १८३७। वे० सं० १६४१। ट भण्डार।

विशेष—कटक में लिखा गया।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल (कथा)……। पत्र सं० ६। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। अ भण्डार।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा……। पत्र सं० ७। आ० १०×३½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि। पत्र सं० ९। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल सं० १६९६। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० २९९। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन……। पत्र सं० २०। आ० १०¾×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

२७४१. होलिकाकथा……। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वे० सं० २९३। अ भण्डार।

२७४२. होलिकाचौपई—डूंगरकवि। पत्र सं० ४। आ० ९×४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १६२९ चैत्र बुदी २। ले० काल सं० १७१८। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।
नयर सिकंदराबाद……गुणकरि आगाध, वाचक मंडण श्री खेमा साध ॥८४॥
तासु सीस डूंगर मति रली, अप्पु चरित्र गुण सांभली।
जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई संपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई। मुनि हरचंद लिखितं। संवत् १७१८ वर्षे……आगरामध्ये लिपिकृतं ॥ रचना में कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३. होलीकीकथा—छीतर ठोलिया। पत्र सं० २। आ० ११¾×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५८। अ भण्डार।

२७४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७५०। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ९९। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

२७४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२७४७. होलीकथा—जिनसुन्दरसूरि । पत्र सं० १४ । म्रा० १०३×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा × । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसके अतिरिक्त ३ प्रतियां वे० सं० ७४ में ही और हैं ।

२७४८. होलीपर्वकथा………। पत्र सं० ३ । म्रा० १०×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । श्र भण्डार ।

२७४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८०४ माघ सुदी ३ । वे० सं० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६१०, ६११) और हैं ।



व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका········। पत्र सं० १ । आ० १०३×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२. अनिटकारिकावचूरि········। पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

२७५३. अव्ययप्रकरण········। पत्र सं० ६ । आ० ११½×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४. अव्ययार्थ········। पत्र सं० ८ । आ० ८×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । ख भण्डार ।

२७५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्त्ता-उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७. उपाधिव्याकरण········। पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

मत्वा जिनेंद्रं स्वगुरुं च भक्त्या तत्तत्प्रसादाप्तसुसिद्धिशक्त्या ।
सत्संप्रदायादवचूर्णिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ।।१।।

प्रायः प्रयोगादुर्ज्ञेयाः किलकातंत्र विभ्रमो ।
येषु मो मुह्यते श्रेष्ठः शाब्दिकोऽपि यथा जड़ः ।।२।।

कातंत्रसूत्रविसरः खलु सांप्रतं ।
यस्माति प्रसिद्ध इह चाति खरोगरीयान् ।।

स्वस्येतरस्ये च सुबोधबिवर्द्धनार्थो ।
ऽस्त्वित्थं ममात्र सफलो लिखन प्रयासः ।।

अन्तिम पाठ—

बाणाश्विषडिंदुमिते संम्वति धवलक्कपुरवरे समहे ।
श्रीखरतरगणपुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणा ।।१।।

श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्वभौमानां ।
पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचंद्रसूरिराजेषु ।।२।।

गीति वाचकमतिभद्रगणेः शिष्यस्तदुपास्त्यवासपरमार्थः ।
चारित्रसिंहसाधुर्व्यदधदवचूर्णिमिह सुगमा ।।३।।

यल्लिखितं मतिमाद्यादनृतं प्रश्नोत्तरेत्र किंचिदपि ।
तत्सम्यक् प्राज्ञवरैः शोध्यं स्वपरोपकाय ।४।।

इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः संपूर्णा लिखनतः ।

आचार्य श्रीरत्नभूषणस्तच्छिष्य पंडित केशवः तेनेयं लिपि कृता आत्मपठनार्थं । शुभं भवतु । संवत् १६६९ वर्षे कार्तिक सुदी ५ तिथौ ।

२७५९. कातन्त्रटीका……। पत्र सं० ३ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९०१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६०. कातन्त्ररूपमालाटीका—दौर्गसिंह । पत्र सं० ३६४ । आ० १२१/२×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

२७६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११२ । क भण्डार ।

२७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

२७६३ कातन्त्ररूपमालावृत्ति……। पत्र सं० १४ से ८९ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १५२४ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरत्राणअलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीकम निमित्त । खंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे सं० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र सं. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतयः एतेषांमध्ये सा. दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्ररूपव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२७६५. कारकप्रक्रिया······। पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६. कारकविवेचन·······। पत्र सं० ८ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७. कारकसमासप्रकरण·······। पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ······ । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९. गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १०½×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८० । ट भण्डार ।

२७७०. चंद्रोन्मीलन······। पत्र सं० ३० । आ० १२×५¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुनः श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९६३ फागुन सुदी ९ । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९४ मे २१४ । ले० काल सं० १९६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६६ कार्त्तिक सुदी ३ । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये है । पन्नालाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल सं० १८८० वशाख सुदी १४ । वे० सं० २०० । ञ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१) ञ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२३, २८८) और हैं । (वे० सं० ३२३) वाले ग्रन्थ में सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनंदि । पत्र सं० १०४ से २३२ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६९० । ले० काल सं० १९४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया.......। पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । अ भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७९७ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २९२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ.......। पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५९४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ९२ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३०३) तथा ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९०) और हैं ।

२७८३. धातुरूपावलि……। पत्र सं० २२। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—शब्द एवं धातुओं के रूप हैं।

२७८४. धातुप्रत्यय……। पत्र सं० ३। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२८। ट भण्डार।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है।

२७८५. पंचसंधि……। पत्र सं० २ से ७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७३२। अपूर्ण। वे० सं० १२६२। अ भण्डार।

२७८६. पंचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य। पत्र सं० २ से ४। आ० १२×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४४। ट भण्डार।

२७८७. परिभाषासूत्र……। पत्र सं० ५। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १५३०। पूर्ण। वे० सं० १६५४। ट भण्डार।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिना लिखिता वाचिता च।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट। पत्र सं० ६७। आ० ६×३३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८। ज भण्डार।

२७८९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० १००। ज भण्डार।

२७९०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११२। ले० काल ×। वे० सं० १०२। ज भण्डार।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओं ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सटीक है। टीका का नाम भैरवी टीका है।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी……। पत्र सं० १४३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५०। अ भण्डार।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं हैं।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि। पत्र सं० ३६। आ० ८३×३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६०२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत वरदराज। पत्र सं० ४७। आ० ६३⁄४×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५२२। क भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि की थी।

२७६४. प्राकृतरूपमाला……। पत्र सं० ३१ से ४६। भाषा–प्राकृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४६। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये है।

२७६५. प्राकृतव्याकरण—चंडकवि। पत्र सं० ६। आ० ११३⁄४×५३⁄४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पैशाचिकी, मागधी तथा सौरसेनी आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है।

२७६६. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ५२३। क भण्डार।

२७६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८२३। वे० सं० ५२४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५२२) और है।

२७६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०। ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी १५। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

विशेष—जयपुर के गोधों के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७६९. प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि। पत्र सं० २२४। आ० १२३⁄४×५१⁄२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५२७। क भण्डार।

२८००. भाष्यप्रदीप—कैय्यट। पत्र सं० ३१। आ० १२३⁄४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१। ज भण्डार।

२८०१. रूपमाला……। पत्र सं० ४ से ५०। आ० ८३⁄४×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०६। च भण्डार।

विशेष—धातुओं के रूप दिये हैं।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०७, ३०८) और हैं।

२८०२. लघुन्यासवृत्ति……। पत्र सं० १२७। आ० १०×४१⁄२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७६ ट भण्डार।

२८०३. लघुरूपसर्गवृत्ति……। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। ट भण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर……। पत्र सं० २१५। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०५. लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३११. ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति सं० २।……। पत्र सं० २०। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३११। च भण्डार।

२८०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० सं० ३१३। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं।

२८०८. लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र सं० १०४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ख भण्डार।

२८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० १७३। ज भण्डार।

विशेष—आठ अध्याय तक है।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ……। पत्र सं० ५१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०१२। ट भण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैय्याकरणभूषण—कौण्डभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७७४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६८३। क भण्डार।

२८१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०४। ले० काल सं० १६०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० सं० २८१। क भण्डार।

२८१३. वैय्याकरणभूषण……। पत्र सं० ७। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६८२। क भण्डार।

२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण········। पत्र सं० ४६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरणटीका········। पत्र सं० ७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका········ । पत्र सं० १८ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा—कवि नीलकंठ । पत्र सं० ४३ । ग्रा० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९. शब्दरूपावली········। पत्र सं० ८६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । झ भण्डार ।

२८२०. शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । ग्रा० १०½×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । अ भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । व्य भण्डार ।

२८२२. प्रति सं० २ । । पत्र सं० १० । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११८६) और है ।

२८२३. शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७६ । ग्रा० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० । २२६३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ५२५ । क भण्डार ।

विशेष—अजमेर निवासी पिरागदास महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

२८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भौमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्त्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म.........।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७३६ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं ।
क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया.........। पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३०. सम्बन्धविवक्षा.........। पत्र सं० २४ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी........। पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२. सारस्वतीधातुपाठ.........। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपंचसंधि.........। पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ से १४५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२८३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

विशेष—खीलचंद के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

बशई (बस्सी) नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७५९ । वे० सं० १२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रसागरगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

२८४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६३७ । अ भण्डार ।

२८४२ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७९० । क भण्डार ।

विशेष—त्रिमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ७९१ । क भण्डार ।

२८४५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४९ माघ सुदी १४ । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० जगरूपदास ने दुलोचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक है ।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २६९ । ख भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७···। वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

२८४९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । झ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में १७ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०९, ९०३, १००९,

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार में ७ प्रतियां (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१६, २६८) घ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतियां (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२६, ८३१, से ८३८, ८३६) च भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतिया (वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १६८८, १६६०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८५१· संज्ञाप्रक्रिया……। पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ञ भण्डार ।

२८५२. सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ……। ज भण्डार ।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८५३. सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४. प्रति स० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पूर्वार्द्ध है।

२८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १६६६) और हैं।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी……। पत्र सं० ४३ । आ० १२¾×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—अतिरिक्त क, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८४८, ४०७, २७२) और हैं।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका ·· ···। पत्र सं० ६५। आ० ११३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५। ज भण्डार।

विशेष-पत्रो के कुछ अंश पानी से गल गये हैं।

२८५८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राश्रम। पत्र सं० ४४। आ० ९१/२×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९५१। अ भण्डार।

२८५९. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १९५२। अ भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १९५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १० प्रतिया (वे० सं० १९३१, १९५४, १९५५, १९५६, १९५७, १९५८, ९०८, ९१७, ९१८, २०२३) और है।

२८६१. प्रति सं० ४। पत्र सं ६४। आ० ११३/४×५१/२ इंच। ले० काल स० १७८४ असाढ बुदी १४। वे० सं० ७८२। क भण्डार।

२८६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५७। ले० काल सं० १९०२। वे० सं० २२३। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २२२ तथा ४०८) और है।

२८६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० २९। ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ९ वे० सं० ९०। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है।

२८६४. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३९। ले० काल सं० १८९४ श्रावण बुदी ६। वे० सं० ३५२। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है। संस्कृत मे कही शब्दार्थ भी है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५३) और है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ९ प्रतियां (वे० सं० १२८५, १९५४, १९५५, १९५६, १९५७, ९०८, ९१७, ९१८) ख भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २२२, ४०८) छ तथा ज भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ९०, ३५३ और है। अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११७७, १२९६, १२९७) अपूर्ण। च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४०९, ४१०) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११९) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४९) और है।

ये सभी प्रतियां अपूर्ण है।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर। पत्र सं० १७। आ० ११३/४×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०१। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है।

२८६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८ से ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२८६७. सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि। पत्र सं० १७३। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ८६। छ भण्डार।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८. प्रति सं० २। पत्र सं० १७८। ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे० सं० ३५१। ज भण्डार।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२८६९. सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि। पत्र सं० १६०। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल सं० १६५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६५। क भण्डार।

२८७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६ से ११६। ले० काल सं० १६५७। वे० सं० २६४। छ भण्डार।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८२८। वे० सं० २८३। छ भण्डार।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्ण हैं।

२८७२. प्रति सं० ४ पत्र सं० ३। ले० काल सं० १६९१। वे० सं० १६४३। ट भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त क च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १०५५, ३१८ तथा २०६४) और है।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी……। पत्र सं० १०। आ० १०३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७१८ वैशाख बुदी ११। वे० सं० १३७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२८७४. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका……। पत्र सं० १६। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४१। क भण्डार।

२८७५. सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती। पत्र सं० २८। आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ८१७। अ भण्डार।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तबिदुस्समाप्तः ।। संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे बगरूनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तबिदुरलेखि। शुभमस्तु ।।

२८७६. सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट। पत्र सं० ६३। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३४। ज भण्डार।

२८७७. सिद्धान्तमुक्तावली—पचानन भट्टाचार्य। पत्र सं० ७०। आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ३। वे० सं० ३०८। ज भण्डार।

२८७८. सिद्धान्तमुक्तावली ……। पत्र सं० ७०। आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २८६। ज भण्डार।

२८७९. हैमनीबृहद्वृत्ति……। पत्र सं० ५४। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६। ञ भण्डार।

२८८०. हैमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २४। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४४। ट भण्डार।

२८८१. हैमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८३। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५८।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपणा कवि । पत्र सं० ११ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी········। पत्र सं० १४ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९१५ । ट भण्डार ।

विशेष— तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २१ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । ञ भण्डार ।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० २३ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १६९७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ असाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । क भण्डार ।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह········। पत्र सं० ४१ । आ० १०×४¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । आ० ११½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३५ । ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १० । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० ३७ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८९२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ से १३४ । ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ५ । ख भण्डार ।

२८९३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १९२९ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ८५ । ज भण्डार ।

२८९४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८१३ बैशाख सुदी १३ । वे० सं० १११ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८९५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२७ । अ भण्डार ।

२८९६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८९७. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र सं० २६ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २०७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३५ । वे० सं० १६११ । अ भण्डार ।

२८९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० ९२२ । अ भण्डार ।

२९००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ९२१ । अ भण्डार ।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८९४ । वे० सं० २४ । क भण्डार ।

२९०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ से ६१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० १२ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० २७ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) रु० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८१ वैसाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । व्य भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २१ प्रतियां (वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) क भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १३९ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार १ प्रति (वे० सं० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) और हैं ।

२६०९. अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित। पत्र सं० ११४ आ० १०×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। च भण्डार।

विशेष—बघेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्त्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई।

२६१०. प्रति सं० २। पत्र सं० २४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७। च भण्डार।

२६११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १८८६। ट भण्डार।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपणक। पत्र सं० ४। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२। क भण्डार।

२६१३. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८८६ कार्त्तिक सुदी ५। वे० सं० ५१। च भण्डार।

२६१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल सं० १९०३ चैत बुदी ६। वे० सं० १५५। ज भण्डार।

विशेष—पं० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि। पत्र सं० २। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७१। अ भण्डार।

२६१६. एकाक्षरीकोश……। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३००। अ भण्डार।

२६१७. एकाक्षरनाममाला……। पत्र सं० ४। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १९०३ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ११५। ज भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के समय में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकोश)—अमरसिंह। पत्र सं० ३४। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१। च भण्डार।

विशेष—अमरकोश के काण्डों में आने वाले शब्दों की श्लोक संख्या दी हुई है। प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक अंश भी दिया हुआ है।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० १४२, १४३, १४५) और हैं।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थ. ।

२६२२. नाममाला—धनंजय । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । ख भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२२) और है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—पं० आरामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) तथा ज भण्डार में (वे० सं० २७६) की एक प्रति और है ।

२६२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । ञ भण्डार ।

२६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । ञ भण्डार ।

२६२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७३, १४, १०८६) क, ङ तथा ज भण्डार में १–१ प्रति (वे० सं० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२६२६. नाममाला……। पत्र सं० १२ । आ० १०×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

२६३०. नाममाला—बनारसीदास । पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

२६३१ बीजक(कोश)……। पत्र सं० २३ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००४ । अ भण्डार ।

विशेष—विमलहंसगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३२. मानमञ्जरी—नंददास । पत्र सं० २२ । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—चन्द्रभाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३३. मेदिनीकोश । पत्र सं० ६४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । क भण्डार ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक हैं ।

२६३६. लघुनाममाला—हर्षकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११२ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४६८ । व्य भण्डार ।

२६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से १६, ३७ से ४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८४ । ट भण्डार ।

२६३६. लिंगानुशासन……। पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१. विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका········। पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५. शतक········। पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । आ० १०×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७. शब्दरत्न········। पत्र सं० १६६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

२६४८. शारदीनाममाला········। पत्र सं० २४ से ४७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९. शिलोञ्छकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमरसिंहस्य कृतिरेषाति निर्मला ।
श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिंगानुशासनम् ।
यथानिबोधयत्यर्कः शास्त्राणि कुरुते कविः
तत्सौरभनभस्वंतः संतस्तान्वन्तितद्गुणाः ॥

लूनेष्वमरसिंहेन, नामलिंगेषु शालिषु ।
एष वाङ्मयवप्रेषु शिलोंछ क्रियते मया ।।

२९५०. सर्वार्थसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १५९७ मंगसिर बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २१२ । ख भण्डार ।

विशेष—हिसार पिरोज्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा………… । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा- संस्कृत । वषय–ज्योतिष । र० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२. अरिष्ट कर्ता ……… । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष ० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३. अरिष्टाध्याय………… । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४. अबजद केवली……… । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ञ भण्डार ।

२६५५. उच्चग्रह फल……… । पत्र सं० १ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल………… । पत्र सं० ११ । आ० १०½×४¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ख भण्डार ।

२६५७. करलक्खण……… । पत्र सं० ११ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८. कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४½×११ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २११४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र अवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । पं० खुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० सं० २१६६ अ भण्डार ।

विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल (कर्म विपाक)………। पत्र सं० ३१ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इंच । भाषा–संस्कृत विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण × । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल………। पत्र सं० ३ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२. कालज्ञान—। पत्र सं० १ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । अ भण्डार ।

२६६३. कालज्ञान………। पत्र सं० २ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

२६६४. कौतुक लीलावती………। पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ । वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार………। पत्र सं० २० । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । ट भण्डार ।

२६६६. गर्गमनोरमा……। पत्र सं० ७ । आ० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । भ्क भण्डार ।

२६६७. गर्गसंहिता—गर्गऋषि । पत्र सं० ३ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२६६८. ग्रह दशा वर्णन………। पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रहो की दशा तथा उपदशाओं के अन्तर एवं फल दिये हुए है ।

२६६९. ग्रह फल………। पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२२ । ट भण्डार ।

२६७०. ग्रहलाघव—गणेश दैवज्ञ । पत्र सं० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

२९७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच……। पत्र सं० ५–२१। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९८। क भण्डार।

विशेष—इसके आगे पंचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२९७९. चमत्कारचिंतामणि……। पत्र सं० २–९। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ९३२। अ भण्डार।

२९८०. चमत्कारचिन्तामणि……। पत्र सं० २९। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२९८१. छायापुरुषलक्षण……। पत्र सं० २। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सामुद्रिक शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२९८२. जन्मपत्रीग्रहविचार……। पत्र सं० १। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१३। अ भण्डार।

२९८३. जन्मपत्रीविचार……। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१०। अ भण्डार।

२९८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र सं० २–२०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२९८५. जन्मफल……। पत्र सं० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२४। अ भण्डार।

२९८६ जातककर्मपद्धति……श्रीपति। पत्र सं० १४। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२९८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७। ज भण्डार।

२९८८. जातकपद्धति……। पत्र सं० २९। आ० ८×६½। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४९। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२९८९. जातकाभरण—दैवज्ञढुंढिराज। पत्र सं० ४३। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७३६ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ८६७। अ भण्डार।

विशेष—नागपुर में पं० सुखकुशलगणि ने प्रतिलिपि की थी।

२९९०. प्रति सं० २। पत्र सं० १००। ले० काल सं० १८४० कार्तिक सुदी ६। वे० सं० १५७। ज भण्डार।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

२९९१. जातकालंकार……। पत्र सं० १ से ११। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४५। ट भण्डार।

२९९२. ज्योतिषरत्नमाला……। पत्र सं० ९ से २४। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९८३। अ भण्डार।

२९९३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० १५४। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२९९४. ज्योतिषमणिमाला……केशव। पत्र सं० ५ से २७। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०५। अ भण्डार।

२९९५. ज्योतिषफलग्रंथ……। पत्र सं० ९। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४। ज भण्डार।

२९९६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम। पत्र सं० ३ से १३। आ० ९३×६ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ कार्तिक बुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० १५१३। भण्डार।

विशेष—फतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चोथो भवन सपतम दसमो जान।
पंचम अरु नोमों भवन येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो खसटम ग्यारमो अर दसमो वर सेखि।
इन को उपचै कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

अन्तिम—

बरष लग्यो जा अंस में सोई दिन चित धारि।
वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लगन लिखे तै गिरह जो जा घर बैठो आय।
ता घर के फल सुफल को कीजे मित्र बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण।

२९९७. ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका—काशीनाथ। पत्र सं० ६३। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ पौष सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६३। ख भण्डार।

२९९८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र। पत्र सं० १६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८२। ख भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता सागरचन्द्र हैं।

२९९९. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ११। आ० ५×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१। क भण्डार।

३०००. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ५२१। ख भण्डार।

३००१. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ५। आ० १०×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८४। ट भण्डार।

३००२. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ५८। आ० ६×६१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १११५। ख भण्डार।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी संख्या २२ है। इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा बिशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा विशनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह	जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौड़ि के पुत्र	सं० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम झांझूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)	सं० १७४६ आषाढ सुदी १४

३००३. ताजिकसमुच्चय……। पत्र सं० १५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । ख भण्डार

विशेष—बडा नरायने में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे जीवणराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल……। पत्र सं० ३ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

३००५ त्रिपुरबंधमुहूर्त……। पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८८ । अ भण्डार ।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश……। पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र है । २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

३००७. दशोठनमुहूर्त्त……। पत्र सं० ३ । आ० ७३/४×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७२५ । अ भण्डार ।

३००८. नक्षत्रविचार……। पत्र सं० ११ । आ० ८×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । झ भण्डार ।

विशेष—छींक आदि विचार भी दिये हुये हैं ।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सज्जनप्रकाश दोहा—	कवि ठाकुर	हिन्दी [१० कवित्त]
मित्रविषय के दोहे—		हिन्दी [४४ दोहें है]
रक्तगुञ्जाकल्प —		हिन्दी [ले० काल सं० १६६७]

विशेष—लाल चिरमी का सेवन बताया गया है किसके साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहों में किया गया है ।

३००६. नक्षत्रवेधपीडाज्ञान……। पत्र सं० ६ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६४ । अ भण्डार ।

३०१०. नक्षत्रसत्र……। पत्र सं० ३ से २४ । आ० ६×३१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १७३६ । अ भण्डार

३०११. नरपतिजयचर्या—नरपति। पत्र सं० १४८। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४६। अ भण्डार।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र। पत्र सं० २६। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८१० मंगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १७२। अ भण्डार।

३०१३. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० ३४५। अ भण्डार।

३०१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी ३। वे० सं० ६५। ख भण्डार।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है।

३०१५. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु। पत्र सं० ७७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७। अ भण्डार।

३०१६. निषेकाध्यायवृत्ति ……। पत्र सं० १८। आ० ८×६३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४८। ट भण्डार।

विशेष—१८ से आगे पत्र नही हैं।

३०१७. नीलकंठताजिक—नीलकंठ। पत्र सं० १४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०५८। अ भण्डार।

३०१८. पञ्चांगप्रबोध……। पत्र सं० १०। आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३५। ट भण्डार।

३०१९. पंचांग—चण्डू। छ भण्डार।

विशेष—निम्न वर्षों के पंचाग हैं।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ९०, ९१, ९३, ९७, ९८।

३०२०. पंचांग……। पत्र सं० १३। आ० ७३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १९२७। पूर्ण। वे० सं०, २४७। ख भण्डार।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र)। पत्र सं० ५२। आ० ९×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८८२। वे० सं० १५२१। ट भण्डार।

३०२२. पल्यविचार……। पत्र सं० ६ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–शकुन शास्त्र । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । ज भण्डार ।

३०२३. पल्यविचार……। पत्र सं० २ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–शकुनशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

३०२४. पाराशरी……। पत्र सं० ३ । आ० १३×५¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । ज भण्डार ।

३०२५. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका……। पत्र सं० २३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ आसोज सुदी २ । पूर्ण वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

३०२६. पाशाकेवली—गर्गमुनि । पत्र सं० ७ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वे० सं० ६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है ।

३०२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७३८ । जीर्ण । वे० सं० ९७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ऋषि मनोहर ने प्रतिलिपि की थी । श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुआ है ।

३०२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ६२३ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८१७ पौष सुदी १ । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—निवासपुरी (सांगानेर) मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे सवाईराम के शिष्य नौनगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८९९ वैशाख बुदी १२ । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३२. पाशाकेवली—ज्ञानभास्कर । पत्र सं० ५ । आ० ९×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख भण्डार ।

३०३३. पाशाकेवली……। पत्र सं० ११ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार ।

३०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १७७५ फागुण बुदी १० । वे० सं० २०१९ । अ भण्डार ।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने आमेर में मल्लिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८२४) और हैं।

३०३५. पाशाकेवली……। पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । ञ भण्डार ।

३०३८. पाशाकेवली……। पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९. पाशाकेवली……। पत्र सं० १३ । आ० ८३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विशनलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं हैं।

३०४०. पुरश्चरणविधि……। पत्र सं० ४ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भीग गये हैं जिसमे कई जगह पढा नही जा सकता ।

३०४१. प्रश्नचूडामणि……। पत्र सं० १३ । आ० ६×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ आसोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३ प्रश्नविद्या……। पत्र सं० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद……। पत्र सं० १६ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६२८ भादवा सुदी ७ । वे० सं० १७४१ । ट भण्डार ।

३०४६. प्रश्नमाला……। पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रश्नसुगनावलिरमल…… । पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । म भण्डार ।

३०४८. प्रश्नावलि……। पत्र सं० ७ । आ० ६×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

३०४९. प्रश्नसार……। पत्र सं० ११ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२९ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३०५०. प्रश्नसार—हयग्रीव । पत्र सं० १२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९२१ । वे० सं० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है ।

३०५१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्त्ता ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सं० २७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

३०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविंद मधुकरोपमा ब्र० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोधिकार: ।। प्रथम पत्र नहीं है ।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला……। पत्र सं० २ से २२ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८२४ । अपूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बलदेव बालाहेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ५ । वे० सं० ११४ । ख भण्डार ।

३०५५. भवानीवाक्य……। पत्र सं० ५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १९०५ से १९२१ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६. भड्डली........। पत्र सं० ११ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं।

३०५७. भास्वती—पद्मनाभ । पत्र सं० ६ । आ० ११×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

३०५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

३०५९. भुवनदीपिका....... । पत्र सं० २२ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ज भण्डार ।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र सं० ५८ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है।

३०६३. भृगुसंहिता........। पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामणि..........। पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली........। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है।

३०६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८७१ बैशाख बुदी १ । वे० सं० १४८ । ख भण्डार ।

३०६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाणा नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावलि........। पत्र सं० १५ से २६ । आ० ६३/४×४ इंच । भाषा–हिन्दी, संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४९ । ख भण्डार ।

३०७०. मुहूर्त्तमुक्तावली....... । पत्र सं० ९ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३९४ । अ भण्डार ।

३०७१. मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७९७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डूंगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसंग्रह........। पत्र सं० २२ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला........। पत्र सं० २ से १८ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९६ । अ भण्डार ।

विशेष—वर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं० ३४९ है ।

३०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८७ । ट भण्डार ।

३०७६. योगफल.....। पत्र सं० १९ । आ० ६१/४×३१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८३ । च भण्डार ।

३०७७. रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक........। पत्र सं० ५ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चिंतामणि । पत्र सं० १५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५४ । ङ भण्डार ।

३०८०. रमलशास्त्र........। पत्र सं० १६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । ञ भण्डार ।

३८८१. रमलज्ञान........। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा- हिन्दी गद्य। विषय-निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय में आचार्य रतनकीर्त्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३८८२. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४४। ले० काल सं० १८७८ आषाढ बुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५६४। ट भण्डार।

३८८३. राजादिफल........। पत्र सं० ४। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वे० सं० १६२। ख भण्डार।

३८८४. राहुफल........। पत्र सं० ८। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६६६। च भण्डार।

३८८५. रुद्रज्ञान ......। पत्र सं० १। आ० ६½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७५७ चैत्र। पूर्ण। वे० सं० २११६। अ भण्डार।

विशेष—देधराग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३८८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा........। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४८। झ भण्डार।

३८८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६। ज भण्डार।

३८८८. लघुजातक—भट्टोत्पल। पत्र सं० १७। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १६३। व्य भण्डार।

३८८९. वर्षबोध........। पत्र सं० ५०। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६३। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है।

३८९०. विवाहशोधन........। पत्र सं० २। आ० ११×१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१९२। अ भण्डार।

३८९१. बृहज्जातक—भट्टोत्पल। पत्र सं० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०२। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी।

३०९२. षट्पंचासिका—वराहमिहर। पत्र सं० ६। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० ७३६। क भण्डार।

३०९३. षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल। पत्र सं० २२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७८८। अपूर्ण। वे० सं० ६४४। अ भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसमे १, २, ८, ११ पत्र नहीं हैं।

३०९४. शकुनविचार……। पत्र सं० ५। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १४८। छ भण्डार।

३०९५. शकुनावली……। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५८। अ भण्डार।

विशेष—५२ अक्षरों का यंत्र दिया हुआ है।

३०९६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० १०२०। अ भण्डार।

विशेष—पं० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०९७. शकुनावली—गर्ग। पत्र सं० २ से ५। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५४। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है।

३०९८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११६। अ भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०९९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० २७१। अ भण्डार

३१००. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३ से ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६८। ट भण्डार।

३१०१. शकुनावली—अभजद। पत्र सं० ७। आ० ११×५१ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२ सावन सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २५८। ज भण्डार

३१०२. शकुनावली……। पत्र सं० १३। आ० ८३×४ इंच। भाषा-पुरानी हिन्दी। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४। छ भण्डार

३१०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७८१ सावन बुदी १४। वे० सं० ११४। छ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा संग्रामसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं। पत्र ५ से आगे प्रश्नों का फल दिया हुआ है।

३१०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ३४०। ञ भण्डार

३१०५. शकुनावली ……। पत्र सं० ५ से ८। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८९०। अपूर्ण। वे० सं० १२५८। अ भण्डार।

३१०६. शकुनावली……। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६६६। अ भण्डार।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७. शनश्चिरदृष्टिविचार……। पत्र सं० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४९। अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८. शीघ्रबोध—काशीनाथ। पत्र सं० ११ से ३७। आ० ८३/४×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४३। अ भण्डार।

३१०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० १८६। ख भण्डार।

विशेष—पं० माणिकचन्द्र ने चोढीग्राम में प्रतिलिपि की थी।

३११०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १८४८ आसोज सुदी ६। वे० सं० १३८। छ भण्डार।

विशेष—संपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७१। ले० काल सं० १८६८ आषाढ बुदी १४। वे० सं० २५५। छ भण्डार।

विशेष—आ० रत्नकीर्त्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८७) छ, ञ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३८, १९२ तथा २११६) और हैं।

३११२. शुभाशुभयोग ……। पत्र सं० ७। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८७५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १८८। ख भण्डार।

विशेष—पं० हीरालाल ने आंबनेर में प्रतिलिपि की थी।

३११३. संक्रांतिफल……। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१। ख भण्डार।

३११४. संक्रांतिफल·······। पत्र सं० १६ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६०१ भादवा बुदी ११ । वे० सं० २१३ । ज भण्डार

३११५. संक्रांतिवर्णन······ । पत्र सं० २ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार

३११६. समरसार—रामवाजपेय । पत्र सं० १८ । आ० १३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल सं० १७१३ । पूर्ण । वे० सं० १७३२ । ट भण्डार

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुआ है ।

३११७. संवत्सरी विचार········। पत्र सं० ८ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । म भण्डार

विशेष—सं० १६५० से सं० २००० तक का वर्षफल है ।

३११८. सामुद्रिकलक्षण······ । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । स्त्री पुरुषो के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये है । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । व भण्डार

३११६. सामुद्रिकविचार········। पत्र सं० १४ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त । शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६८ । ज भण्डार ।

३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र । पत्र सं० ११ । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—अंत मे हिन्दी मे १३ शृङ्गार रस के दोहे है तथा स्त्री पुरुषों के अगो के लक्षण दिये है ।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र······। पत्र सं० ६ । आ० १४×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है ।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र·······। पत्र सं० ४१ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल × । लें० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११०६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । २, ३, ४ पत्र नही हैं ।

३१२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । लें० काल सं० १७६० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नही है ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र ……। पत्र सं० ८ । ग्रा० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । लि० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । श्र भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । श्र भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र ……। पत्र सं० १४ । ग्रा० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–निमित्त । र० काल × । लि० काल सं० १६०८ ग्रासोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २७७ । म्ह भण्डार ।

३१२७. सारणी……। पत्र सं० ४ से १३४ । ग्रा० १२×४½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–ज्योतिष । र० काल × । लि० काल सं० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और है ।

३१२८. सारावली……। पत्र सं० १ । ग्रा० ११×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । श्र भण्डार ।

३१२९. सूर्यगमनविधि ……। पत्र सं० ५ । ग्रा० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । श्र भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३०. सोमउत्पत्ति ……। पत्र सं० २ । ग्रा० ८½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । लि० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १३८६ । श्र भण्डार ।

३१३१. स्वप्नविचार …… । पत्र सं० १ । ग्रा० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । लि० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । श्र भण्डार ।

३१३२. स्वप्नाध्याय ……। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । श्र भण्डार ।

३१३३. स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । ग्रा० १२×७½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । लि० काल सं० १६५८ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । लि० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि……। पत्र सं० २ । ग्रा० १०×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६. होराज्ञान……। पत्र सं० १३ । ग्रा० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । र० काल × । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । श्र भण्डार ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी……। पत्र सं० ५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। अ भण्डार।

३१३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३६। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं० ५। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। ख भण्डार।

३१४०. अमृतसागर……। पत्र सं० ४०। आ० ११¾×४¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४०। अ भण्डार।

३१४१. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं० ११७ से १६४। आ० १२½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २९। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१) अपूर्ण और हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।

३१४४. अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। आ० १०½×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १९८४ सावरण बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८८। ञ भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक मे विभक्त किया गया है।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं० ४२। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८०७ भादवा बुदी १४। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह……। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ज भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे……। पत्र सं० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २९६, २९६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ……। पत्र सं० १६ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. अयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । अ भण्डार ।

३१५४. कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या)……। पत्र सं० २१ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्ण । वे० सं० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समाप्तं ।।

३१५६. कालज्ञान……। पत्र सं० ३ से १९ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख भण्डार ।

विशेष—भिवद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३१६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं० २० । आ० ६X८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार........। पत्र सं० ११ । आ० १३X६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५-३१ । । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार.........। पत्र सं० १२ । आ० १३X६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. ज्वरलक्षण........। पत्र सं० ४ । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरचिकित्सा........। पत्र सं० ५ । आ० १०½X४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं० ६४ । आ० १०X६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल सं० १८०६ माह सुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर मे किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६९ त्रिशती—शार्ङ्गधर । पत्र सं० ३२ । आ० १०½X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० २५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि........। पत्र सं० ३ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३०१ । अ भण्डार ।

३१७२. नाडीपरीक्षा........। पत्र सं० ६ । आ० ११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३१७३. निघंटु……। पत्र सं० २ से ८८ । पत्र सं० ११×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७७ । अ भण्डार ।

३१७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८४ । अ भण्डार ।

३१७५. पंचप्ररूपणा……। पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १५५७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० . ट भण्डार ।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है । ग्रन्थ में कुल १५८ श्लोक हैं ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने ब्र० आदू लिखितं कर्मक्षयनिमित्तं । ब्र० जालप जोगु पठनार्थं दत्तं ।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार……। पत्र सं० ३ से ४४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है । १६ से आगे के पत्रों में दीमक लग गई है ।

३१७७. पाराविधि……। पत्र सं० १ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३१७८. भावप्रकाश—मानमिश्र । पत्र सं० २७५ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकमलतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाशः संपूर्ण ।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिती वैशाख शुक्ला ६ शुक्रे लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७६. भावप्रकाश……। पत्र सं० १६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है–

इति श्री जगु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसतिकायां रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८०. भावसंग्रह……। पत्र सं० १० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

३१८१. मदनविनोद—मदनपाल। पत्र सं० १५ से ६२। आ० ८३/४×३३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० १७६८। जीर्ण। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है–

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे अपादिवर्गः।

पत्र १८ पर— यो राज्ञां मुकुटतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे वटादि पंचमवर्गः।

लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ गुरौ तद्दिने लि·········शामजी विप्रकेन परोपकारार्थं। संवत् १७६५ विश्वेश्वर सन्निधौ····

मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघंटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश: ॥

३१८२. मंत्र व औषधि का नुस्खा·········। पत्र सं० १। आ० १०×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख भण्डार।

विशेष—तिल्ली काटने का मन्त्र भी है।

३१८३. माधवनिदान—माधव। पत्र सं० १२४। आ० ६×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६५। अ भण्डार।

३१८४. प्रति सं० २। पत्र सं० १५४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००१। ट भण्डार।

विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं० ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमासोक्षरार्थो मधुकोष परमार्थः।

पं० धन्नालाल ऋषभचन्द रामचन्द की पुस्तक है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १४३, १६५) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) और है।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह। पत्र सं० ६७। आ० ११३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४४। ख भण्डार।

प्रति हिन्दी टीका सहित है। ६७ से आगे पत्र नहीं हैं

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द। पत्र सं० २। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६१। अ भण्डार।

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र सं० १२ से ४८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नहीं हैं ।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अंतेवासि मनूसिंहकृते योगचितामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय: ।

३१८८. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० ४ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० १२ से १०५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९०. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० २०० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक……। पत्र सं० ५ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० १५८ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में संक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८३४ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ८८ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सांगानेर में गोधो के चैत्यालय में पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

३१९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७७९ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१९७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७९६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नही हैं ।

३१९८. योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९१० श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चंपावती (चाटसू) में पं० शिवचन्द ने व्यास चुन्नीलाल से लिखवाया था ।

३१९९. योगशतटीका········। पत्र सं० २१ । आ० ११½×३¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशतक········। पत्र सं० ७ । आ० १०¼×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक········। पत्र सं० ७८ । आ० ११¼×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५९ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शार्ङ्गधर । पत्र सं० २६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९४१ सावन बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १९१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर निवासी ने जयपुर मे चिन्तामणिजी के मन्दिर मे शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२०४. रसप्रकरण········। पत्र सं० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५. रसप्रकरण········। पत्र सं० १२ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं० २१९ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आयुर्वेद । र० काल सं० १६२० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शार्ङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० १६३ । ख भण्डार ।

विशेष—जीवणलालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६९९, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१०. रासायिनिकशास्त्र .... । पत्र सं० ५२ । आ० ५½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८९ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२. लङ्घनपथ्यनिर्णय........ । पत्र सं० १२ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३ विषहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल सं० १७४१ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिष वैद अर खंडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।
चंद्रापुरी संवत् गिनौ चंद्रापुरी मुकाम ।।२७।।
संवत यह संतोष कृत तादिन कविता कीन ।
ससि मनि गिर बिव विजय तादिन हम लिख लीन ।।२८।।

३२१४. वैद्यकसार........ । पत्र सं० ५ से ५४ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां विलास तक है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ३२ । ले० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ भण्डार ।

३२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८७२ फागुण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) और है ।

३२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८१ । ङ भण्डार ।

३२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ……। पत्र सं० ३ से १८ । आ० १०½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नही है ।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० २०१६, २०१७) और हे ।

३२२२. वैद्यमनोत्सव—नयनसुख । पत्र सं० ३२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल सं० १६४९ आषाढ सुदी २ । ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १८७६ । अ भण्डार ।

३२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०९ । वे० सं० २०७९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है ।

३२२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८० । ङ भण्डार ।

३२२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

३२२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८६९ सावण बुदी १४ । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

विशेष—पाटण में मुनिसुव्रत चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

३२२७. वैद्यवल्लभ……। पत्र सं० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९०१ । पूर्ण । वे० सं० १८७१ ।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २९७ । ख भण्डार ।

३२२९. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १६७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। ख भण्डार।

विशेष—भानुमती नगर में श्रीगजकुशलगणि के शिष्य गणिसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी। प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है।

३२३०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १७७३ माघ। वे० सं० १४६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट। पत्र सं० २०। आ० ६×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १९१६। पूर्ण। वे० सं० ३५४। अ भण्डार।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे।

३२३२. वैद्यविनोद........। पत्र सं० १८३। आ० १०३/४×८३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०६। अ भण्डार।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशंकर। पत्र सं० २०७। आ० ८३/४×४३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं।

३२३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३१। छ भण्डार।

३२३५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १८७७। वे० सं० १७३३। ट भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ वैशाख सुदी ५। वार चंद्रवासरे वर्ष शाके १६२३ पातिसाहजी नौरंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखांजी के नायबरूल्लमखां स्याहीजी श्री स्याहआलमजी की तरफ मियां साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक। सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्यं पुत्र रामनारायणे पठनार्थं।

३२३६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२ से ४८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७०। ट भण्डार।

३२३७. शार्ङ्गधरसंहिता—शार्ङ्गधर। पत्र सं० ५८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं।

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २७०, २७१) और है ।

३२३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शार्ङ्गधरसंहिताटीका—नाढमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शार्ङ्गधरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तव्यान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभावसिंहात्मजेनाढमल्लेन विरचितायाम शार्ङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे नेत्रप्रसादन कर्मविधि द्वाविंशोरध्यायः । प्रति सुन्दर है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १२३६ । अ भण्डार ।

विशेष—कालाडहरा में महात्मा कुशलसिंह के आत्मज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)……। पत्र सं० १८ । आ० ७¾×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७१८ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १२८३ । अ भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि……। पत्र सं० ३० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध मे कई नुस्खे है ।

३२४५. सन्निपातनिदान……। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाहडदास । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८३९ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

३२४७. सन्निपातकलिका········। पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३। पूर्ण। वे० सं० २८३। ख भण्डार।

विशेष—यौवनपुर में पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८. सप्तविधि········। पत्र सं० ७। आ० ८३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४१७। अ भण्डार।

३२४९. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण········। पत्र सं० ४२। आ० ६×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८८१। पूर्ण। वे० सं० २२६। ञ भण्डार।

३२५०. सारसंग्रह·······। पत्र सं० २७ से २५७। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७४७ कार्तिक। अपूर्ण। वे० सं० ११५६। अ भण्डार।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२५१. सालोत्तररास········। पत्र सं० ७३। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

३२५२. सिद्धियोग········। पत्र सं० ७ से ४३। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५७। अ भण्डार।

३२५३. हरडैकल्प········। पत्र सं० ४। आ० ५३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१६। अ भण्डार।

विशेष—मालकांगडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)



विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचंद्रिका……। पत्र सं० ७५ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–छंद अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३ । ज भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है ।

३२५५. अलंकाररत्नाकर—दलिपतराय बंशीधर । पत्र सं० ५१ । आ० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । क भण्डार ।

३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि । पत्र सं० २७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । क भण्डार ।

३२५७. अलङ्कारटीका……। पत्र सं० १४ । आ० ११×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८१ । ट भण्डार ।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र ……। पत्र सं० ७ से ११२ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है । बीच के पत्र भी नही है ।

३२५९. कविकर्पटी……। पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३२६०. कुवलयानन्द ……। पत्र सं० २० । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८१ । ट भण्डार ।

३२६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १७८२ । ट भण्डार ।

३२६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२५ । ट भण्डार ।

३२६३. कुवलयानन्द—अप्पय दीक्षित । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० ६५३ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैणसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७. कुवलयानन्दकारिका…… । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६९. चन्द्रावलोक…… । पत्र सं० ११ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कारशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२. छंदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते छंदोनुशासनेनाम अष्टमोऽध्याय समाप्तः । समाप्तोयग्रन्थः । श्री…… भुवनकीर्त्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यतं । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३ छंदोशतक—हर्षकीर्त्ति (चंद्रकीर्त्ति के शिष्य) । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४. छंदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

३२७५. छंदकोश........ । पत्र सं० २ से २५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

३२७६. नंदिताढ्यछंद........ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-छंद शास्त्र। र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४५७ । व्य भण्डार ।

३२७७. पिंगलछंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६ । आ० १३×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-छंदशास्त्र । र० काल सं० १८६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ भण्डार ।

विशेष—४६ से आगे पत्र नही हैं ।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल । सवैया ।

मंगल श्री गुरुदेव गणेश क्रिपाल गुपाल गिरा सरसानी ।
वंदन कै पद पंकज पावन माखन छंद विलास बखानी ।।
कोविद वृंद वृंदनि कौ कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।
सारद ईंदु मयूष निसोतल सुन्दर सस सुधारस बानी ।।१।।

दोहा— *पिंगल सागर छंदमरिण वरण वरण बहुरङ्ग ।*
रस उपमा उपमेय तै सुंदर अरथ तरंग ।।२।।
तातैं रच्यौ विचारि कै नर बानी नरहेत ।
उदाहरण बहु रसन के वरण सुमति समेत । ३।।
विमल वरण भूषन कलित, बानी ललित रसाल ।
सदा सुकवि गोपाल कौं, श्री गोपाल कृपाल ।।४।।
तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।
एक समै गोपाल कवि, मामन हरिवह दीन ।।५।।
पिंगल नाग विचारि मन, नारी बांनीहि प्रकास ।
यथा सुमति सौं कीजिये, माखन छंद विलास ।।६।।

दोहरागीत— यह सुकवि श्री गोपाल की सुभ भई सासन है जबै ।
पद जुगल वंदन सुनिये उर सुमति बाढी है तबै ।
अति निम्न पिंगल सिंधु मैं मनमीन ह्वै करि संचिरयौ ।
मथि काढि छंद विलास माखन कविन सौ विनती करयौ ।।

दोहा— हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देहु ।
भूल्यौ भ्रम तै हौ बहां जहां सोधि किन लेहु ।।८।।
संवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यौ माखन छंद विलास ।।९।।

पिंगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२७८. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९. पिंगलशास्त्र…… । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ भण्डार ।

३२८०. पिंगलशास्त्र……। पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१. पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्द शास्त्र । र० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८९९ । ट भण्डार ।

विशेष— संवतसर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरंजनी कृत छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ९८ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्हू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३…… पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५. प्राकृतछंदकोश……। पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७९२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं फटी हुई है ।

३२८६. **प्राकृतपिंगलशास्त्र**……। पत्र सं० २। आ० ११×४½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३२८७. **भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़**। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

३२८८. **रघुनाथ विलास—रघुनाथ**। पत्र सं० ३१। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रसालङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है।

३२८९. **रत्नमंजूषा**……। पत्र सं० ९। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९१६। अ भण्डार।

३२९०. **रत्नमंजूषिका**……। पत्र सं० २७। आ० १०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४। ञ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमंजूषिकायां छंदो विचित्यांभाष्यतोऽष्टमोध्यायः।

मङ्गलाचरण—ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः।

३२९१. **वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट**। पत्र सं० १९। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल सं० १६४९ कार्त्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ९५। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— सं० १६४९ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ शुक्रवासरे लिखतं पांडे लूणा माहरोठमध्ये स्वात्मयोः पठनार्थं।

३२९२. **प्रति सं० २**। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६९४ फागुण सुदी ७। वे० सं० ६५३। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए है।

३२९३. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० १७२। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६), क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७२), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८), ज भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ९०, १४३), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७), ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४९) और है।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । व्य भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादड़ी में प्रतिलिपि कराई थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) और है।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र सं० ४० । आ० ६३⁄४×५३⁄४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ऽऽ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे निधिदृगश्वशशांकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवसे सगुरौ सचित्रे ।
लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ।।
श्रीराजसिंहनृपतिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी अणहिल्य तुल्या ।
श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोयं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्कचन्द्रः ।।

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूनां हिता ।
हीनाधिकवचोयदत्र लिखितं तद्बुधैः क्षम्यतां गार्हस्थ्यवनिताथ सेवनाधियासकः स्वःसुतामाभूयात् ।।

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकायां पोमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचितायां कविचंद्रिकायां पंचमः परिच्छेदः समाप्तः । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखतं महात्मौरूपनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभं भूयात् ।।

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ भण्डार ।

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में ·· ······ खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले सम्राट गयासुद्दीन से सम्मानित साह महिणा ······साह पोमा सुत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

३२६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१. वाग्भट्टालङ्कार टीका········। पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पंचम परिच्छेद तक) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार। पत्र सं० ११। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५२। अ भण्डार।

३३०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ६८४। क भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९५०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७५) ज भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० १७७, ३०६) और है।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६। ख भण्डार।

३३०५. वृत्तरत्नाकर······। पत्र सं० ७। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ज भण्डार।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि। पत्र सं० ४०। आ० ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६८। क भण्डार।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० १। आ० १०½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१९। अ भण्डार।

३३०८. श्रुतबोध—कालिदास। पत्र सं० ६। आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६१। अ भण्डार।

विशेष—अष्टगण विचार तक है।

३३०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४६ फागुण सुदी ९। वे० सं० ६२०। अ भण्डार।

विशेष—पं० डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८९५ श्रावण बुदी ९। वे० सं० ७२५। क भण्डार।

३३१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ७२७। भण्डार।

विशेष—पं० रामचंद ने झिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० सं० १७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्त्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ङ, च और ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, ६४८, २८७) भ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५६, १८७) और हैं ।

३३१५. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका……। पत्र सं० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । क भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९. श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १९१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।



विषय—संगीत एवं नाटक



३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मक्खनलाल। पत्र सं० २३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। क भण्डार।

३३२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १९९३ कार्तिक सुदी ६। वे० सं० १७२। छ भण्डार।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास। पत्र सं० ७। आ० १०½×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७०। अ भण्डार।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर। पत्र सं० १२। आ० १२½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या दी हुई है।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि। पत्र सं० ६३। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८। ले० काल सं० १६६८। पूर्ण। वे० सं० १८। अ भण्डार।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५। वे० सं० २३१। क भण्डार।

३३२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६४ आसोज बुदी ६। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इसे संघी अमरचन्द दीवान के मन्दिर मे विराजमान की।

३६२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १९३५ सावण बुदी ५। वे० सं० २३०। क भण्डार।

३३२९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १७६०। वे० सं० १३४। ञ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्त्ति मे प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी थी। इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, ३३७) और है।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल सं० १९१७ बैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १९१७ पौष ११ । पूर्ण। वे० सं० २१९ । क भण्डार।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ से ११५ । ले० काल सं० १९३९ । अपूर्ण। वे० सं० ३४४ । म भण्डार।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द। पत्र सं० ४१ । आ० १३×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण। वे० सं० ५६२ । च भण्डार।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास। पत्र सं० ४० । आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण। वे० सं० २२० । क भण्डार।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ८७ । आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १९२८ बैशाख बुदी ८ । वे० सं० ५६४ । पूर्ण। च भण्डार।

विशेष—जौंहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक........। पत्र सं० ६६ । आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल सं० १९३३ । ले० काल ×। वे० सं० ११० । ज भण्डार।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलदमयंती नाटक........। पत्र सं० ३ से २४ । आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९८ । ट भण्डार।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति। पत्र सं० २९ । आ० ६×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १९०७ भादवा बुदी ४ । पूर्ण। वे० सं० ८१४ । अ भण्डार।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल ×। वे० सं० २१९ । म भण्डार।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह। पत्र सं० ४४ । आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७ । छ भण्डार।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि। पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८५ । अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं है तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ५६७। क भण्डार।

३३४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। ङ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये है।

३३४४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १००। छ भण्डार।

३३४५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६१६। वे० सं० ६४। झ भण्डार।

३३४६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ६। वे० सं० ४८। अ भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० २०१।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८. मदनपराजय········। पत्र सं० ३ से २५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। अ भण्डार।

३३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। अ भण्डार।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द। पत्र सं० ९२। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल सं० १९१८ मंगसिर सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७९। ङ भण्डार।

३३५१. रागमाला········। पत्र सं० ६। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३७६। अ भण्डार।

३३५२. राग रागनियों के नाम········। पत्र सं० ८। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०७। झ भण्डार।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३. अढाईद्वीप वर्णन……। पत्र सं० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८१५। पूर्ण। वे० सं० ३। ख भण्डार।

३३५४. ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन……। पत्र सं० १। आ० ८३/४×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११०। अ भण्डार।

३३५५. चंद्रप्रज्ञप्ति……। पत्र सं० ६२। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा। लिखतं परिष करमचंद।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ९०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १८९६ फाल्गुन सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १००। घ भण्डार।

विशेष—मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

३३५७. तीनलोककथन……। पत्र सं० ९६। आ० १०१/२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५०। ञ भण्डार।

३३५८. तीनलोकवर्णन……। पत्र सं० १५४। आ० ९१/२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १०। ज भण्डार।

विशेष—गोपाल व्यास उग्नियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ मे नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ में लिखा है— ढूंढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदासुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा सुदी १० सं० १९११।

३३५९. तीनलोकचार्ट……। पत्र सं० १। आ० ५×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. त्रिलोकचित्र……। आ० २०×३० इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। अ भण्डार।

विशेष—कपड़े पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१. त्रिलोकदीपक—वामदेव। पत्र सं० ७२। आ० १६×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर बेल बूटे भी है।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचंद्राचार्य। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र है। पहिले नेमिनाथ की मूर्ति का चित्र है जिसके बाई ओर बलभद्र तथा दांई ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े है। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकडी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकडी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिच्छी और कमण्डलु है। उनके आगे दो चित्र और है जिसमे एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनो हाथ जोड़े गोडी ढाले बैठे है। चित्र बहुत सुन्दर है। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र है।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० बैशाख सुदी ११। वे० सं० २८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८२६ श्रावण बुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

३३६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६८। ले० काल ×। वे० सं० २६०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठो पर हाशिया मे सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में बसवा में रामचन्द काला ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमंडल पूजा भी है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २६२, २६३,) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, १४८) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६६. **त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन** । पत्र सं० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नही है ।

३३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १८२ । झ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. **त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल** । पत्र सं० २८६ । आ० १४×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

३३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६४ । ले० काल स० १९६६ । वे० सं० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालों ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. **त्रिलोकसारभाषा**........। पत्र सं० ४५२ । आ० १२३×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वे० सं० २९२ । क भण्डार ।

३३७७. **त्रिलोकसारभाषा**........। पत्र सं० १०८ । आ० ११३×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८. **त्रिलोकसारभाषा**........। पत्र सं० १५० । आ० १२×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९. **त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)**........। पत्र सं० ३१० । आ० १०३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १८९५ । वे० सं० ८५ । झ भण्डार ।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र सं० २४०। आ० १३×८ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १६४५। पूर्ण। वे० सं० २८२। क भण्डार।

३३८१. प्रति सं० २। पत्र सं० १४२। ले० काल ×। वे० सं० ६६। छ भण्डार।

३३८२. त्रिलोकसारवृत्ति……। पत्र सं० १०। आ० १०×११½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८। ज भण्डार।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति……। पत्र सं० ३७। आ० १२¼×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७। ज भण्डार।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति……। पत्र सं० २५। आ० १०×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३३। ट भण्डार।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति……। पत्र सं० ६३। आ० १३×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। व्य भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३३८६. त्रिलोकसारसंदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६३। आ० १३½×८ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८४। क भण्डार।

३३८७. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—उदयलाल गंगवालाल। पत्र सं० ५०। आ० १३×७½ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–लोक विज्ञान। र० काल सं० १६४४। ले० काल सं० १६०४। पूर्ण। वे० सं० ६। ज भण्डार।

विशेष—मु० पन्नालाल भौरीलाल एवं चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी।

३३८८. त्रिलोकवर्णन……। पत्र सं० ३६। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–लोकविज्ञान र० काल ×। ले० काल सं० १८१० कार्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ७७। ख भण्डार।

विशेष—गाथायें नही है केवल वर्णनमात्र है। लोक के चित्र भी हैं। जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३८९. त्रिलोकवर्णन……। पत्र सं० १५ से ३७। आ० १०¼×४½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० ७६। ख भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नही है। पत्र सं० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं हैं। इसके अतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में नरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे मे भौंरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं।

३३६०. त्रिलोकवर्णन······ । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलों का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४½ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कही कहीं पीछे कपड़ा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १×१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओं से बने है । नरक वर्णन नही है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । ञ भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन········ । पत्र सं० ५ । आ० १७×११½ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

३३६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

३३६५. भूगोलनिर्माण········ । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम गणि वाचनार्थं लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एवं त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. संघपणटपत्र········ । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नही हैं ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । आ० १३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।



विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३३६८. अक्कमन्दवार्त्ता·······। पत्र सं० २० । आ० १२×८½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

३३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

३४००. उपदेशछत्तीसी—जिनहर्ष । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेभ्यो नमः । अथ श्री जिनहर्षेण वीर चितायांमुपदेश छत्रीसी कामहमेव लख्यते स्यात् ।

जिनस्तुति—

सकल रूप यामे प्रभुता अनूप भूप,
धूप छाया माहे है न जगदीश जुं ।
पुण्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,
जाप के प्रताप कटे करम अतिसयुं ।।
ज्ञान कौ अंगज पुंज सुख्य वृक्ष के निकुंज,
अतिसय चौतिस फुति वचन ये तिसयु ।
असे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपदेश,
की छतिसी कहौ सवइ एसतीसयु ।।१।।

अथिरत्व कथन—

अरे जिउ कांचिनीउ ताहु परी अमार लीते,
तो अतीगति करी जौ रसी उठानि है ।
तु तो नही चेतता हे जाणे हे रहेगी वृद्ध,
मेरी २ कर रहौ ज्यमि रति मानी हे ।।
ज्ञान की नीजीर खोल देख न कबहे,
तेरी मोह छाक मे भयो वकाणो अज्ञानी हे ।
कहे जीनहर्ष इह तन लगैगी बार,
कागद की गुडी कौलू रहे जी हा पाणी ।।२।।

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
भरम मैं भूलि रहै कुल रूढ कीजीयै ।
कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीयै ।।
दया रूप सोइ धर्म धर्म तै कटै है मर्म,
भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीयै ।
करि कै परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीयै,
कसि कै कसोटी जैसे कंचरण क लीजीयै ।।३५।।

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्ण चतुर नर
है जे याकौ मध्य रस पीजीयै ।
मेरी है अलपमति तो भी मैं कीए कवित,
कविताह सौ हौ जिन ग्रन्थ मान लीजीयै ।।
सरस है है वखाण जौऊ अवसर आए,
दोइ तीन याकै भैया सवैया कहीजीयौ ।
कहै जिनहरष संवत्त गुण सिसि अक्ष कीनी,
जु सुण कै सावास मोकु दीजीयौ ।।३६।।

इति श्री उपदेश छतीसी संपूर्ण ।

संवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि भ्रा, कवण भले रौ देश ।
संपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ।।
सूरवलि तो सूहांमणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
मांडल तणे प्रगणे पांणी अथग अथाह ।।२।।

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कर्पूरप्रकरण……। पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सार प्रबंधस्फुट सद्गुणस्य।
शिष्येण चक्रे हरिणेय मिष्टा
सूक्तावली नेमिचरित्र कर्त्ता ॥१७६॥

इति कर्पूरामिध सुभाषित कोशः समाप्ताः ॥

३४०३. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० १०३। क भण्डार।

३४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४। वे० सं० २७६। ज भण्डार।

विशेष—भूधरदास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा……। पत्र सं० २ से १७। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–नीति। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८०। म भण्डार।

३४०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०८। अ भण्डार।

३४०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३ से ६८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८। अ भण्डार।

३४०८. चाणक्यनीति—चाणक्य। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८११। अ भण्डार।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६५४, १६६५) और है।

३४०६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४६ पौष सुदी ६। वे० सं० ७०। ग भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) और है।

३४१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५। ङ भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३७, ६५७) और हैं।

३४११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६ से १३। ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ऽऽ। अपूर्ण। वे० सं० ६३। च भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३४१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं० २४६। ञ भण्डार।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता–चाणक्य। संग्रहकर्त्ता–मथुरेश भट्टाचार्य। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१०। अ भण्डार।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा........। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नीति शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१६। ट भण्डार।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है। ७वें अध्याय के २ पद्य हैं। दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग हुआ है।

३४१५. छंदशतक—वृन्दावनदास। पत्र सं० २६। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १८९८ माघ सुदी २। ले० काल सं० १९४० मंगसिर सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १७८। क भण्डार।

३४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ९। वे० सं० १८१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७९, १८०) और हैं।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास। पत्र सं० १७। आ० ९×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १७८१ पौष सुदी १२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००५। अ भण्डार।

३४१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९७७ फागुन सुदी ५। वे० सं० २१८। क भण्डार।

३४१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २१७। क भण्डार।

विशेष—प्रति नीले कागजों पर है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६) और है।

३४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल ×। वे० सं० ५६०। च भण्डार।

३४२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १८८९। वे० सं० १५८। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है।

३४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १८८१। वे० सं० १६४०। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है।

३४२३. ढालगण........। पत्र सं० ८। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। क भण्डार।

३४२४. तत्त्वधर्मामृत·······। पत्र सं० ३३ । म्रा० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति–

संवत् १६३६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिघयोगे अत्रा दिवसे। आदीश्वर चैत्यालये। चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म्म (चं) द्र देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भसावड्या गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज। साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्षिमीदास। साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदेह द्वितीक·······। अपूर्ण।

३४२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४५। ट भण्डार।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—   शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्यं गुरो गुरुं।
                 तत्वधर्म्मामृतं नाम वक्ष्ये संक्षेपतः ॥
                 धर्मे श्रुते पापमुपैति नाशं धर्मे श्रुते पुण्य मुपैति वृद्धिः।
                 स्वर्गापवर्ग प्रवरोरु सौख्यं, धर्मे श्रुते रेव न चात्यतोम्ति ॥२॥

३४२६. दशबोल·······। पत्र सं० २। म्रा० १०×६½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९४७। ट भण्डार।

३४२७. दृष्टांतशतक·······। पत्र सं० १७। म्रा० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८५६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है। पत्र १५ से आगे ६३ फुटकर श्लोको का संग्रह और है।

३४२८. द्यानतविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २ से १३। म्रा० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। क भण्डार।

३४२९. धर्मविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २३४। म्रा० ११½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६५८ फागुण बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३४२। क भण्डार।

३४३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १८८१ आसोज बुदी २। वे० सं० ४५। ग भण्डार।

विशेष—जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापंथी से दौसा में प्रतिलिपि करवायी थी।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १९१६ । वे० सं० ३३९ । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)........ । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १९३४ । वे० सं० १७९ । च भण्डार ।

विशेष—पंचरत्न और है । श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार........ । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ९वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९३७ भादवा सुदी ४ । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—झलायनगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में गोर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ९ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७९ । क भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । ञ भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

३४४६. नीतिविनोद······· । पत्र सं० ४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९१८ । वे० सं० ३३५ । झ भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था ।

३४४७. नीलसूक्त । पत्र सं० ११ । आ० ६¾×४¼ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२८ । ज भण्डार ।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की दस ताज । पत्र सं० ५ । आ० ४½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–उपदेश । र० काल × । ले० काल सं० १९४६ बैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४० । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४९. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा । पत्र सं१ ६४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१८ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है ।

३४५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ख भण्डार ।
विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ से १९८ । ले० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १९४ । च भण्डार ।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर) में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । इस प्रति का जीर्णोद्धार सं० १८५५ फागुण बुदी ३ में हुआ था ।

३४५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८८७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ६११ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में संगही दीवान अमरचंदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी ।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा······· । पत्र सं० २२ से १४३ । आ० ६×७½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–नीति । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । ट भण्डार ।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है ।

३४५४. पांचबोल······· । पत्र सं० ९ । आ० १०×४ इंच । भाषा–गुजराती । विषय–उपदेश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९९९ । ट भण्डार ।

३४५५. पैंसठबोल····· । पत्र सं० १ आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–उपदेश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७६। अ भण्डार।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेषा भाई बंधव [६] असंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बांच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगग्रही [११] वेद रोगी हांसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट बलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगर्हाण मनुष होसी [२०] अलप मेघ [२१] उस्ल सात बोली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संथा········ [२५] ·········· [२६] ·········· [२७]·········· [२८] ·········· [२९] अणकीधा न कीधो कहसी [३०] आपको कीधो दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साष भणसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेष धारांबैरागी होसी [३४] अहंकार द्वेष मुरख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नहीं [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंद्या घणी करेसी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] वेसां भगतण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवंत होसी [४७] मुंहमाग्या मेव नहीं होसी [४८] धरतो में मेह थोड़ो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोड़ो हांसी [५०] बिना देख्यां चुगली करसी [५१] जाको सरणों लेसी तासूं ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीणा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] अवंबंसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतबा प्रास होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री सील हीण घणी होसी [६१] सीलवंती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जाण जोसी।

।। इति श्री पचावन्न बोल संपूरण ।।

३४५६. प्रबोधसार—यशःकीर्ति। पत्र सं० २३। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७५। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में मूल अपभ्रंश का उल्था है।

३४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९५७। वे० सं० ४९५। क भण्डार।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास। पत्र सं० २। आ० ९३⁄४×३३⁄४ इंच। भाषा-गुजराती। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९७०। ट भण्डार।

३४५९. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष। पत्र सं० २। आ० ११×४३⁄४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७। अ भण्डार।

३४६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १६७१ मंगसिर सुदी ५। वे० सं० ५१६। क भण्डार।

३४६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

३४६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १७६२। ट भण्डार।

३४६३. प्रस्तावित श्लोक……। पत्र सं० ३६। आ० ११×६१⁄२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है।

३४६४. बारहखड़ी……सूरत। पत्र सं० ७। आ० ९×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६। झ भण्डार।

३४६५. बारहखड़ी……। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६। झ भण्डार।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास। पत्र सं० ५। आ० ९×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १८९९ पौष बुदी ९। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०।

३४६७. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र सं० ९४। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। र० काल सं० १८९१ कार्तिक सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८७। झ भण्डार।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र सं० ४४। आ० ८×५३⁄४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १८७९ ज्येष्ठ बुदी ८। ले० काल सं० १९८० माघ बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ४४४। अ भण्डार।

विशेष—७०० दोहों का संग्रह है।

३४६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ९५४, ६८४) और हैं।

३४७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । लें० काल × । वे० सं० ७२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । लें० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । लें० काल × । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १७५५ बैशाख सुदी ३ । लें० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । लें० काल × । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति गुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३८) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । लें० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । लें० काल सं० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा में महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मिती माह सुदी ६ सं० १८८६ में गोबिन्दराम साहबडा (छाबड़ा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । लें० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में चढाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । लें० काल × । वे० सं० ७३ । ञ भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक········ । पत्र सं० ५६ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । लें० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । लें० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतियां (वे० सं० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) और हैं।

३४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं।

३४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८८) और है।

३४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । व्य भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र सं० १४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । क भण्डार ।

३४८९. मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १९१६ । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर छंदो का संग्रह है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३४९०. मान बावनी—मानकवि । पत्र सं० २ । आ० ६¾×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । व्य भण्डार ।

३४९१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७९९ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १९५२ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता वहालसिंह की सहायता से लिखा था।

३४९२. रत्नकोष........। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है।

३४६३. रत्नकोष ......। पत्र सं० १४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२४। क भण्डार।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम। पत्र सं० १८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८। झ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशायनमः अथ राजनीत जसुराम कृत लीखतं।

दोहा— अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय।
सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय॥

छप्पय— बरनो उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी।
कर करूनो करन तरन सब तारन तरनी॥
शिर पर धरनी छत्र झरन सुख संपत भरनी।
झरनी अमृत झरन हरन दुख दारिद हरनी॥
धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी।
सकल भय जग बंध आदि बरनी जसु जे जग धरनी॥ मात जे०

दोहा— जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार॥३॥

अन्तिम— लोक सीरकार राजी और सब राजी रहै।
चाकरी के कीये बिन लालच न चाइयै॥
किन हुं की भली बुरी कहिये न काहु आगै।
सटका दे लछन कछु न आप साई है॥
राय के उजीर नभु राख राख लेत रंग।
येक टेक हुं की बात उमरनीवाहिये॥
रीझ खीझ सिरकुं चढाय लीजे जसुराम।
येक परापत कु येते गुन चाहीये॥४॥

३४९५. राजनीति शास्त्र—देवीदास। पत्र सं० १७। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–राजनीति। र० काल ×। ले० काल सं० १६७३। पूर्ण। वे० सं० ३४३। अ भण्डार।

३४९६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य। पत्र सं० ६। आ० १२×५१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३९। ज भण्डार।

३४९७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द। पत्र सं० ४। आ० १३१/२×६१/२ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १७६१। ले० काल सं० १८३४। पूर्ण। वे० सं० ७७९। अ भण्डार।

३४९८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० ६८५। ङ भण्डार।

३४९९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १८६७। वे० सं० १९९। छ भण्डार।

३५००. वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय। पत्र सं० ३८। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५१। च भण्डार।

विशेष—माणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी।

३५०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५२। च भण्डार।

३५०२. षष्ठिशतक टिप्पण—भक्तिलाभ। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १५७२। पूर्ण। वे० सं० ३५८। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका–

इति षष्ठिशतकं समाप्तं। श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य पं० चारू चन्द्रे णलिखि।

इसमें कुल १६१ गाथायें हैं। अंत की गाथा मे ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया है। १६०वी गाथा की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा। श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व गुरु विरहे धर्मस्य ज्ञातानाभूत। श्री जिनवल्लभसूरि गुणानश्रुत्वा तत्कृते पिंड विशुद्धयादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ॥ १६० ॥ संख्या गाथा विरचयां चक्रे इति सम्बन्ध।

व्याख्यानवय पूर्वाऽवचूर्णि रैषालुभक्तिलाभकृता।
सुबार्थ ज्ञान फला विज्ञै या पंक्ति शतकस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोपाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभोपाध्याय कृता स्वशिष्या वा. चारित्रसार पं० चारू चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिरं नंदतात्। श्री कल्याणं भवतु श्री श्रमण संघस्य।

३५०३. शुभसीख.........। पत्र सं० २। आ० ८३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। ङ भण्डार।

३५०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—१३६ सीखों का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । श्र भण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क भण्डार ।

३५०७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६५४ पौष बुदी ३ । वे० सं० ७२८ । क भण्डार ।

३५०८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

३५०९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४९ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २०४ । श्र भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९९ । ञ भण्डार ।

३५११. सज्जनचित्तवल्लभ ……। पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५९ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हगूलाल । पत्र सं० ९६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क भण्डार ।

विशेष—हगूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर चले गये थे वहां मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७२९, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचंद । पत्र सं० ३१ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९३१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क भण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३५१६. सद्भाषितावलि—सकलकीर्ति । पत्र सं० ३४ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८६८) और है ।

३५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८१० मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ४७२ । व्य भण्डार ।

विशेष—घासीराम यति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ चढाया था ।

३५१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १३६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । क भण्डार ।

विशेष—पुट्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है ।

३५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १९४० । वे० सं० ७३३ । क भण्डार ।

३५२१. सद्भाषितावलीभाषा……। पत्र सं० २५ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९११ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । व्य भण्डार ।

३५२२. सन्देहसमुच्चय—धर्मकलशसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । छ भण्डार ।

३५२३. सभासार नाटक—रघुराम । पत्र सं० १५ से ४३ । आ० ५१/२×८१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । अपूर्ण । वे० सं० २०७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में पचमेरु एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है ।

३५२४. सभातरंग ……। पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १०० । छ भण्डार ।

विशेष—गोधों के नेमिनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२५. सभाशृङ्गार……। पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७३१ कार्त्तिक सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ ।

विशेष—प्रारम्भ–

सकलगणि गजेंद्र श्री श्री श्री साधु विजयगणिगुरुभ्योनमः । अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते । श्री ऋषभ देवाय नमः । श्री रस्तु ॥

नाभि नंदनु सकलमहीमंडनु पंचशत धनुष मानु तो···· तोर्ण सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कंधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकान्हिमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाडई । साच संसार अंधकूप (अंधकूप) प्राणिवर्ग पडता दइं हाथ । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवंत श्री आदिनाथ श्री संघतणो मनोरथ पुरो ।।१।। वीतराग वांणी संसार समुत्तारिणी । महामोह विध्वंसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग प्रकाशिनी । सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी । आगमोदगारिणी वीतराग वांणी ।।२।।

विशेष अतीसय विधान सकलगुणप्रधान मोहांधकारविछेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अछेद्य अभेद्य प्राणिगण हृदय भेदक अनंतानंत विज्ञान इसिउं अपनुं केवलज्ञान ।।३।।

अन्तिम पाठ—

अथस्त्री गुणा— १. कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७. गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ६. कृतज्ञा १०. धर्मवती ११. सोत्साहा १२. संभवमंत्रा १३. क्लेससही १४. अनुपतापीनी १५. सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७. संपूस्पृहा १८. अल्पाहारा १६. अलडोला २०. अल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी २२. चितज्ञा २३. जीतरोषा २४. अलोभा २५. विनयवती २६. सरूपा २७. सौभाग्यवती २८. सूविवेषा २६. भुषाश्रया ३०. प्रसन्नमुखी ३१. सुप्रमाणशरीर ३२. सूलषणवती ३३. स्नेहवती । इतियोद्गुणा ।

इति सभाशृङ्गार संपूर्ण ।।

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० संवत् १७३१ वर्षेमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखतं रूपविजयेन ।।

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाओं के लक्षण एवं सुभाषित के रूप में विविध बातें दी हुई हैं ।

३५२६. सभाशृङ्गार·······। पत्र सं० २८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । ङ भण्डार ।

३५२७. संबोधसत्तासु—वीरचंद । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ— परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।
परमारथ पणि पक्षणमुं, संबोधसतासु बीसार ।।१।।
आदि अनादि ते आत्मा, अडवड्यु ऐहअनिवार ।
धर्म्म विहुणो जीवणो, वापडु पंक्षी ये संसार ।।२।।

अन्तिम— सूरी श्री विद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद ।
तसपरि मांहि मांनितो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ।। ६६ ।।

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जती वीरचंद ।
सुगता भगता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संबोधसत्तारादुमा संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । क्षेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने लखा मे प्रतिलिपि की थी ।

३५२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २७ । ले० काल सं० १६०३ । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणस्यस्य व्याख्याया हर्षकीर्त्तिभिः सूरिभिर्विहितायांत ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावण सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४½ । भाषा-हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३० । ले० काल सं० १६३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बघावर के रहने वाले थे । बाद में वे मालवदेश के इंदावतिपुर मे रहने लगे थे ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७) और हैं ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल सं० १६३७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली······ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नसन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६) और है ।

३५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—संग्रामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से ४६ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । ङ भण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६१० कार्त्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । च भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पांड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९३३ । ले० काल × । वे० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १६७६) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३०, २६८) और हैं ।

३५४४. सुभाषितसंग्रह········ । पत्र सं० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण (वे० सं० २२५६) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, १६८०) और हैं।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८८२ । ङ भण्डार ।

३५४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६३ । ञ भण्डार ।

३५४८. सुभाषितसंग्रह........ । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसंग्रह........ । पत्र स० ११ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । अ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं चौबे रूपसी खीवसी आत्मज ज्ञाति सनाबद वराहटा मध्ये । लिखापितं पहाड्या मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवासरे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२४ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० नौनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०२ समये पौष बुदी २ शुक्रवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा: तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा. तदाम्नाये मंडलाचार्य श्री सिंहनंदिदेवा: तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा: तत्शिष्यणी पंचाणुव्रतधारिणी बाईक्योसिरि तत्शिष्यनि बाई उदइ सिरि पठनार्थं अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयबा तयो पुत्राः त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रइमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाइमल भार्या अजैसिरि तयोः पुत्र परात । तृतीयपुत्र [तपवपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इदं ग्रन्थं लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकायस्थगौडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ।।

३५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५ । श्र भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये संवत् १६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

संवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्यां मालपुरेमध्ये श्रीम्रादिनाथचैत्यालये शुद्धी-कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पांडेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

श्र भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है ।

३५५४. प्रति स० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है ।

३५५५. प्रति सं० ६ । पत्र ं० २६ । ले० काल सं० १८४९ ज्येष्ठ सुदी ९ । वे० सं० २३३ । ख भण्डार

विशेष—पं० माणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द से जवनपुर (जोबनेर) में प्रतिलिपि कराई ।

३५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । ङ भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं ।

३५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ३६५ । छ भण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज भण्डार ।

३५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३० । ले० काल सं० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६०. सुभाषितावली……। पत्र सं० २१ । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान संगही ज्ञानचन्दजी का है ।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४१८, ४१६) अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६३५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० सं० १०८१) अपूर्ण प्रति और है।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०६। आ० १२३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१२। क भण्डार।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द। पत्र सं० १३१। आ० १२३/४×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १९३१ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८०। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८१) और हैं।

३५६३. सुभाषितावलीभाषा—……। पत्र सं० ४५। आ० ११×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ११। ञ भण्डार।

विशेष—५०५ दोहे हैं।

३५६४. सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं० १७। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३५६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ११७। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

संवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषण तत्पट्टे भ० श्री यशःकीर्त्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं।

अ भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८ २०३३, ११६३) और हैं।

३५६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६३४ सावन सुदी ८। वे० सं० ८२२। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८२४) और है।

३५६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १७७१ आसोज सुदी २। वे० सं० २३४। ख

विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

३५६८. प्रति सं० ५। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० २२६। ख भण्डार।

विशेष—दीवान आरतराम खिंदूका के पुत्र कुंवर बखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २३२, २६८) और हैं।

३५६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

ङ भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और है ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ऽऽ । वे० सं० ४२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२२, ४२३) और हैं ।

३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६ । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—रैनवाल में ऋषभनाथ चैत्यालय में आचार्य ज्ञानकीर्त्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे (वे० सं० १०३) मे ही ४ प्रतियां और है ।

३५७२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी २ । वे० सं० १८३ । ज भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६) और है ।

३५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८० । भ भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० १६५, २८६, ३७७) तथा ट भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १६६४, १८३१) और है ।

३५७४. सूक्तावली……। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५. स्फुटश्लोकसंग्रह ……। पत्र सं० १० से २० । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । ख भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । आ० १३½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र सं० ३६ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचंद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । व्य भण्डार ।

३५७६. हितोपदेशभाषा⋯ ⋯ । पत्र सं० २६ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१११ । श्र भण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।



विषय— मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल........। पत्र सं० २ से ४२। आ० ८३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–तन्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७८ बैशाख सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१०। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोल माव वंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरचिते पुरंदरमाया नाम ग्रन्थ वह्नित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्तं।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं। कई कौतूहल की सी बातें हैं। मंत्र संस्कृत मे है अजमेर में प्रतलिप हुई थी।

३५८२. कर्मदहनव्रतमन्त्र........। पत्र सं० १०। आ० १०३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०४। छ भण्डार।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र........। पत्र सं० ४। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६०६ मंगसिर सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ११३७। अ भण्डार।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३८। ज भण्डार।

३५८५. प्रति स० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९६६। वे० सं० २८२। भ्ह भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है।

३५८६. घंटाकर्णकल्प........। पत्र सं० ५। आ० १२१/२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र र० काल ×। ले० काल सं० १९२२। अपूर्ण। वे० सं० ४५। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है। ५ यंत्र तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमें तीन घण्टे दिये हुये है।

३५८७. घंटाकर्णमन्त्र........। पत्र सं० ५। आ० १२३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९२५। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प·······। पत्र सं० ६। प्रा० १०३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९१३ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५। घ भण्डार।

३५८९. चतुर्विंशतियंत्रविधान·······। पत्र सं० ३। प्रा० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६६। अ भण्डार।

३५९०. चिन्तामणिस्तोत्र·······। पत्र सं० २। प्रा० ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८७। झ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २४५। ञ भण्डार।

३५९२. चिन्तामणियन्त्र·······। पत्र सं० ३। प्रा० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-यन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९७। ख भण्डार।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र·······। पत्र सं० १। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११८७, ११९६, २०६४) और है।

३५९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८८३। वे० स० ३९७। ञ भण्डार।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान·······। पत्र सं० २। प्रा० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ख भण्डार।

३५९६. णमोकारकल्प·······। पत्र सं० ४। प्रा० ८३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९। पूर्ण। वे० सं० २८८। झ भण्डार।

३५९७. णमोकारकल्प·······। पत्र सं० ६। प्रा० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९०८। पूर्ण। वे० सं० ३५५। अ भण्डार।

३५९८. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७४। ख भण्डार।

३५९९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९९५। वे० सं० २३२। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है।

३६००. णमोकारपैंतीसी·······। पत्र सं० ४। प्रा० १२×५३ इंच। भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। छ भण्डार।

३६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १२५। च भण्डार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र सं० ४५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।

३६०३. नवकारकल्प ……। पत्र सं० ६ । आ० ६×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—अक्षरों की स्याही मिट जाने से पढने मे नही आता है ।

३६०४. पंचदश (१५) यन्त्र की विधि ……। पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ज भण्डार ।

३६०५. पद्मावतीकल्प……। पत्र सं० २ से १० । आ० ८×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८२ । अपूर्ण । वे० सं० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८२ आमावेर्गलपुरे श्री मूलसंघसूरि देवेन्द्रकीत्तिस्तदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीत्तिभिरिदमलखि । चिरं नंदतु पुस्तकम् ।

३६०६. बीजकोश……। पत्र सं० ६ । आ० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घंट भी है ।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल ……। पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पत्र में 'अथातः संप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९. भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ मंत्र एवं विधि सहित हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३२२, १२७६) और हैं ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७६३ बैशाख सुदी १३ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० सं० ५६३) और है।

३६११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ५७५। क भण्डार।

३६१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८६८ चैत बुदी ....। वे० सं० २६६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे० सं० २७०) और है।

३६१३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १६३६। ट भण्डार।

विशेष—बीजाक्षरों में ३१ यंत्रों के चित्र है। यत्रविधि तथा मंत्रो सहित है। संस्कृत टीका भी है। पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोण मे आभूषण पहिने खड़े हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे है। दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है। यन्त्रविधि है। ३ से ६ व ६ से ४६ तक पत्र नहीं है। १–२ पत्र पर यंत्र मंत्र सूची दी है।

३६१४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४७ से ५७। ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १६३७। ट भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे० सं० १६३८) और है।

३६१५. भैरवपद्मावतीकल्प ......। पत्र सं० ४०। आ० ६×४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७४। क भण्डार।

३६१६. मन्त्रशास्त्र ....। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न मन्त्रों का संग्रह है।

१. चौकी नाहरसिंह की २. कामण विधि ३. यंत्र ४. हनुमान मंत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६. पलीता भूत व चुडेल का ७. यंत्र देवदत्त का ८. हनुमान का यन्त्र ९. सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारों कोनों पर औरङ्गजेब का नाम दिया हुआ है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र।

३६१७. मन्त्रशास्त्र........। पत्र सं० १७ से २७। आ० ६३/४×५१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५८५, ५८६) और हैं।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—पं० महीधर। पत्र सं० १२०। म्रा० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६१६। अ भण्डार।

३६१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ५८३। ङ भण्डार।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२०. मन्त्रसंग्रह……। पत्र सं० फुटकर। म्रा० । भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६८। ङ भण्डार।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं। प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह)……। पत्र सं० २०। म्रा० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है।

३६२२. यक्षिणीकल्प……। पत्र सं० १। म्रा० १२×५¾ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०५। ङ भण्डार।

३६२३. यंत्र मंत्रविधिफल……। पत्र सं० १५। म्रा० ६½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६६। ट भण्डार।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये है। कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये है। मन्त्र बीजाक्षरों मे हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक। पत्र सं० ६ से २६। म्रा० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १४६५। अपूर्ण। वे० सं० १६६७। ट भण्डार।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १६ से २१ पत्र नही हैं। प्रति प्राचीन एवं जोर्ण है।

८वें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्यः श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोज्वलविशदमना लिखत वान्कल्पं ॥६६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्पः ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पंक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जापः। गूगल गउ बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई।

पत्र ८ पंक्ति ६— ॐ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २। जग मन मोहनी सूती बइठी उठी जयमरण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ। माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बायदेवी कामाख्या म्हरी शक्ति आकर्षि।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकारः ॥ ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६ सं० १४६५ वर्षे सगरकूपशालायां अणिहल्लपाटकपरपर्याये श्रीरत्नमहानगरेऽलेखि।

पत्र २५— गुटिकाओं के चमत्कार हैं। दो स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर नालिकेर कल्प दिया है।

३६२५. विजययन्त्रविधान········। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८००। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५६८, ५६६) तथा ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३३१) और है।

३६२६. विद्यानुशासन·······। पत्र सं० ३७०। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। र० काल ×। ले० काल सं० १६०६ प्र० भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६५६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ पं० मोतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति सं० २। पत्र सं० २८५। ले० काल सं० १६३३ मंगसिर बुदी ५। वे० सं० ६५। घ भण्डार।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यंत्रसंग्रह········। पत्र सं० ७। आ० १३३×६३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४५। अ भण्डार।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है।

३६२९. षटकर्मकथन········। पत्र सं० ३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१०३। ट भण्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३०. सरस्वतीकल्प········। पत्र सं० २। आ० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७०। क भण्डार।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र…… । पत्र सं० ६ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । र० काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न विषयों का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिसंस्कारविधि आदि ।

३६३२. कोकसार……। पत्र सं० ७ । आ० ६×६३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । क भण्डार ।

३६३३. कोकसार—आनन्द । पत्र सं० ५ । आ० १३३/४×६३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१६ । अ भण्डार ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ञ भण्डार ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १५५२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जट्टू व्यास ने नरायणा में प्रतिलिपि की थी ।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल । पत्र सं० ३२ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसमे कामसूत्र की गाथायें दी हुई हैं । इसका दूसरा नाम सत्तसप्रसमत भी है ।



विषय- शिल्प-शास्त्र



३६३८. बिम्बनिर्माणविधि........। पत्र सं० ६ । आ० ११३⁄४×७१⁄२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-शिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । क भण्डार ।

३६३९. बिम्बनिर्माणविधि........। पत्र सं० ६ । आ० ११×७१⁄२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-शिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३४ । क भण्डार ।

३६४०. बिम्बनिर्माणविधि........। पत्र सं० ३६ । आ० ८१⁄२×६१⁄२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । च भण्डार ।

विशेष—कापी साइज है । पं० कस्तूरचन्दजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में ३ पत्र की भूमिका है । पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोको का हिन्दी अनुवाद किया गया है । श्लोक ६१ है । पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है । इसी के साथ ३ प्रतिमाओ के चित्र भी दिये गये है । (वे० सं० २४६) च भण्डार । कलशारोपण विधि भी है । (वे० सं० २४८) च भण्डार ।

३६४१. वास्तुविन्यास........। पत्र सं० ३ । आ० ६३⁄४×४१⁄२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पकला । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।



विषय- लक्षण एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा……। पत्र सं० ३ । आ० ७×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–समीक्षा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । आ० ९×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–लक्षण । र० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी …। ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १९३६ । ट भण्डार ।

३६४४. छंदकोय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकोयकवित्वे कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते समवृत्तप्रकरण समाप्त ।

प्रारम्भ मे कमलबंध कवित्त में चित्र दिये हैं ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय–समीक्षा । र० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जाणि ।
कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तास वखाणि ।।
संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुंदरदास सहाय ।
साधर्मी जन समझि ने दशरथ कृति चितलाय ।।

टीका— विषया कै वसि पड्या जिपरण जीव पाप ।
करै छै अरु त जाई ती वे दुखी होइ मरे ।।

लेखक प्रशस्ति— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगौवारे दिवसा नगर्या (दौसा) जिन चैत्यालये लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्त्ति तत्शिष्य पं० (गिरधर) कटा हुआ ।

३६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तत्र धर्म्मार्थी दशरथेन कृता: समाप्ताः ।

३६४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १८९६ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

३६४८. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं० ८५ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । र० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

३६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७८४, ९४५) और हैं ।

३६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १९३९ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

३६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९४ । ले० काल सं० १७८७ माघ बुदी १० । वे० सं० ३२९ । ङ भण्डार ।

३६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३३ । ले० काल सं० १६५३ बैशाख सुदी २ । वे० सं० ५९ । छ भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल मे लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०, ६१) और हैं ।

३६५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३४४, ४७४) और हैं ।

३६५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५९३ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २१५७ । ट भण्डार ।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे जमू से लिखवाकर ब्र० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

३६५६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी। पत्र सं० १०२। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-समीक्षा। र० काल १७००। ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ७७३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) और हैं।

३६५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० ३३६। क भण्डार।

३६५८. प्रति स० ३। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १८२६ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ५६५। च भण्डार।

विशेष—हंसराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। पत्र चिपके हुये हैं।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३६५६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३४५। झ भण्डार।

विशेष—केशरीसिह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) और है।

३६६०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १८२५। वे० सं० ५२। ञ भण्डार।

विशेष—वख्तराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३८६। आ० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-समीक्षा। र० काल सं० १६३२। ले० काल सं० १६४२। पूर्ण। वे० सं० ३३८। क भण्डार।

३६६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२२। ले० काल सं० १६३८। वे० सं० ३३७। क भण्डार।

३६६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५०। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ३३४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं।

३६६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० १७०७। ट भण्डार।

३६६५. धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १८। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-समीक्षा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ६७३। अ भण्डार।

विशेष— १६ व १७वां पत्र नही है। अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र हैं।

आदिभाग— धर्म जिणेसर २ नमूं ते सार,
तीर्थंकर जे पनरमु वांछित फल बहु दान दातार,
सारदा स्वामिणि बली तवुं बुधिसार,

गुरू देउमाता श्रीगणधर स्वामी नमसकरूंश्री सकलकीर्त्ति भवतार,
मुनि भवनकीर्त्ति पाय प्रणमनि कहिसूं रासहूं सार ।।१।।

दूहा— धरम परीक्षा करूं निरूमली भवीयण सुणु तह्यं सार ।
ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जांणु विचार ।।२।।
कनक रतन माणिक आदि परीक्षा करी लीजिसार ।
तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ।।३।।

अन्तिम प्रशस्ति—

दूहा— श्री सकलकीरतिगुरुप्रणमीनि मुनिभवनकीरतिभवतार ।
ब्रह्म जिणदास भणिरू अदु रासकीउ सविचार ।।६०।।
धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतणुं निधान ।
पढि गुणि जे सांभलि तेहनि उपजि मति ज्ञान ।।६१।।

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये आचार्य श्री विनयकीर्तिः पंडित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा.........। पत्र सं० ६ से ५० । आ० ११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-समीक्षा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

३६६७. मूर्खके लक्षण.........। पत्र सं० २ । आ० ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षणग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं० १७ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

प्रारम्भ— गुरु गणपति सरस्वति समरि यातै वध है बुद्धि ।
सरसबुद्धि छंवह रचो रतन परीक्षा सुधि ।।१।।
रतन दीपिका ग्रन्थ मे रतन परिछ्या जान ।
सगुरु देव परताप तैं भाषा बरनो आनि ।।२।।

अन्तिम— रत्न परीछ्या रंगसु कीन्ही राम कविंद ।
इन्द्रपुरी में आनि कै लिखी जु भामाणंद ।।६१।।

३६६९. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षणग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट भण्डार ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं है ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षणग्रन्थ । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ भण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८३५ आसोज सुदी १३ । वे० सं० २१६ । ज भण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण······ । पत्र सं० ६ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण······ । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । क भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६४५ । क भण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षणग्रन्थ । र० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ भण्डार ।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवस्वेंदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तच्छिष्य पंडितजी श्री चोखचन्दजी तच्छिष्य पंडित विनयवताजिनदासेन लिपीकृतं । सूरामलजी या आका ।।

३६७८. स्त्रीलक्षण······ । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षणग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८१ । अ भण्डार ।



विषय- फागु रासा एवं वेलि साहित्य

३६७६. अञ्जनारास—शांतिकुशल। पत्र सं० १२ से २७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १६६७ माह सुदी २। ले० काल सं० १६७६। अपूर्ण। वे० सं० २। ख भण्डार।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रास रच्यू सती अञ्जना मइ जूनी चउपई जोई रे।
अधिकुं उछउं जे कह्य' मुझ मिथ्या दोकड होई रे॥
संबत् सोलइ सतइ सठि माहा शुदि नी बीज बखाणु रे।
सोवन गिरिरास माभीउ जइ सोलइ पुरु जाणु रे॥
तप गछ नायक गुण निलउ विजय सेन सूरी सरगाजइ रे।
आचारिज महिमा घणो विज देव सूरी पद छाजइ रे॥
तात पचाइणि दीपलु जस महिमा कीरति भरिउस।
मात प्रेमलदे उरि धरया देश कइ पाटणे अवतरिउ रे॥
विनयकुशल पडित वरु परगारी गुणदरिउ रे।
चरण कमल सेवा लही शांतिकुशल इम रास करिउ रे॥
अविचलकीरति अञ्जना जा रवि सस होडइ आकाश रे।
पढै गुणैइ जे सांभलइ रहि लखिमी तम घर पासइ रे॥

३६८०. आदीश्वरफाग—ज्ञानभूषण। पत्र सं० ४०। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-फागु (भगवान आदिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १५६२ बैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—श्री मूलसंघे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण क्षुल्लिका बाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थं लिखितं।

३६८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११ से ५। ले० काल ×। वे० सं० ७२। ख भण्डार।

३६८२. कर्मप्रकृतिविधानरास—बनारसीदास। पत्र सं० १८। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा। र० काल सं० १७००। ले० काल सं० १७८४। पूर्ण। वे० सं० १६२७। ट भण्डार।

३६८३. चन्दनबालारास……… पत्र सं० २। प्रा० ६३/४×४१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सती चन्दनबाला की कथा है। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६५। अ भण्डार।

३६८४. चन्द्रलेहारास—मतिकुशल। पत्र सं० २६। प्रा० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) र० काल सं० १७२८ प्रासोज बुदी १०। ले० काल सं० १८२६ प्रासोज सुदी। पूर्ण। वे० सं० २१७१। अ भण्डार।

विशेष—अकबराबाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एवं अशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

मामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल।
सत्रु मित्र समतागणि, तिमतुटे जग जाल ।।३।।

मरुदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार।
केवल कमला तिण वरी, पाम्यो भवनो पार ।।४।।

सामाइक मन सुद्ध करी, पामी ह्रांम पक्त।
तिण ऊपरिन्दु सांभलो, चंद्रलेहा चरित्र ।।५।।

वचन कला तेह वनिछै, सरसंध रसाल।
तीणे जाणु सक्त पड़सौ, सोभलतां खुस्याल ।।६।।

अन्तिम— संबत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद आसू दसम विचार।
श्री पभीयाल मैं प्रेम सुं, एह रच्यौ अधिकार ।।१२।।

खरतर गणपति सुखकरूंजी, श्री जिन सूरिंद।
वडवतो जिम साखा खमनीजी, जो घू रजनीस दिणंद ।।१३।।

सुगुण श्री सुगुणकीरति गणीजी, वाचक पदवी धरंत।
अंतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ।।१४।।

प्रथमत सुसी अति प्रेम स्युंजी, मतिकुसल कहै एम।
सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भइं लेहा जेम ।।१५।।

रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अभ्यास।
खसय चौबीस गाहा अछै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ।।१६।।

भणै गुणै सुणै भावस्युं जी, गच्छातण गुण जेह।
मन सुध जिनधर्म तैं करैं जी, त्री भुवन पति हुवै तेह ।।१७।।

सर्व गाथा ६२४। इति चन्द्रलेहारास संपूर्ण ।।

३६८५. जलगालणरास—ज्ञानभूषण। पत्र सं० २। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ट भण्डार।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि। पत्र सं० २६। आ० ७½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल सं० १६७२ आसोज बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। अ भण्डार।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगणि ने गिरपोर नगर में प्रतिलिपि की थी।

३६८७. धर्मरासा……। पत्र सं० २ से २०। आ० ११×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४८। ट भण्डार।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० से आगे के पत्र नहीं हैं।

३६८८. नवकाररास……। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–णमोकार मन्त्र महात्म्य वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ११०२। अ भण्डार।

३६८९. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १०२६। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द। पत्र सं० ३। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४०। अ भण्डार।

विशेष—आदिभाग–

दूहा— अरिहंत सिध ने आपरीया उपजाया अणवार।
पांचेपद तेहुंनमूं, अठोत्तर सो वार ॥१॥
मोखगामी बोनु हुवा, राजमती रह नेम।
चित्रेकतर लीया मणी, साभल जे धर प्रेम ॥२॥

ढाल जिणेसुर मुनिराया……………।
सुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेस मन मोहौलाल।
दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥
समुद विजे तिहांभूप सेवा देजी राणी करेक।
महाराणी मानी जतीए ॥२॥

आए जन(म)मीया अरिहन्त देव इह चोसट सारे।
ज्यारी नेव में बाल ब्रह्मचारी बावा समोए ॥३॥

अन्तिम— सिल ऊपर पथ ढालियो दीठो वोय सुता में निचोड़रे।
तिए अनुसार माफक है, रिषि रामचंद्जी कीनो जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तन् सीषणी छोटाजीरी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे। पाली में प्रतिलिपि हुई थी।

३६६१. नेमीश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल। पत्र सं० ८ से ७०। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–फागु। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८३। क भण्डार।

३६६२. पंचेन्द्रियरास……। पत्र सं० ३। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (पांचों इन्द्रियों के विषय का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५६। अ भण्डार।

३६६३. पल्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० ८½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४३। क भण्डार।

विशेष—पल्यविधानव्रत का वर्णन है।

३३६४. बंकचूलरास—जयकीर्त्ति। पत्र सं० ४ से १७। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (कथा)। र० काल सं० १६८५। ले० काल सं० १६६३ फागुण बुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० २०६२। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं है। ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बंकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास।
वीरजि वांदी भावसुं पुहुत राजग्रह वास ॥१॥
संवत सोल पच्यासीइं गूर्ज्जर देस मझार।
कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥
नरसिंघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकंद।
चैत्यालि श्री वृषभवि आवि भवीयण वृंद ॥३॥
काष्ठासंघ विद्यागणे श्री सोमकीर्त्ति मही सोम।
विजअसेन विजयाकर यशकीर्त्ति यशस्तोम ॥४॥
उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्त्ति विख्यात।
रत्नभूषण गछपती हवा भुवनरयण जेहंजात ॥५॥

तस पट्ट सूरीवरभणु जयकीर्त्ति जयकार ।
जे भवियण भवि सांभली ते पामी भवपार ॥६॥
रूपकुमर रलीया मणु बंकचूल बीजु नाम ।
तेह रास रच्यु रूवडु जयकीर्त्ति सुखधाम ॥७॥
नीम भाव निर्मल हुई गुरुवचने निर्द्धार ।
सांभलतां संपद् मलि ये भणि नरतिनार ॥८॥
याद्र सायर नभ्र महीचंद सूर जिनभास ।
जयकीर्त्ति कहिता रहु बंकचूलनु रास ॥९॥
इति बकचूलरास समाप्तः ।

संवत् १६६३ वर्षे फागुण सुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीर्त्ति उपाध्याय श्री वीरचंद ब्रह्म श्री जसवंत वाइ कपूरा या बीच रास ब्रह्म श्री जसवंत लक्षतं ।

३६६५. भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० ३६ । मा० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा-भविष्यदत्त की कथा है । र० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ६८६ । अ भण्डार ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर में श्री मल्लिनाथ चैत्यालय मे श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ५६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—पं० छाजूराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १३२) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

३६६८. रुकमिणीविवाहवेलि (कृष्णरुकमिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड़ । पत्र स० ५१ से १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–वेलि । र० काल सं० १६३८ । ले० काल सं० १७११ चैत्र बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी मे महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पद्य हैं । हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ हैं ।

३६९९. शीलरासा—विजयदेव सूरि । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी ११ । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी ११ बुधवारे श्रीखरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य पं० नंदिरंग लिखितं । उसवंसेसंघ वालेचा: गोत्रे सा हीरा पुत्री रतना कु श्राविका नाम्नी पठनार्थं लिखितं दाऊमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यवंसवंद तसु सुपसाय,

[illegible]

सकल साधु उपाध्याय,

नेमि तणउ नित वेदन कीजि ।

[illegible]

इक चित्त सुणइ मनमोहन जिहां ।

[illegible]

उत्तराध्ययन...

वली मने द्राय थकी भाय, मांहा विना के कहइ होय ।

विफल हो यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाख्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुःख सहूरह दूरि, नेमि आतिम आतम जि पूरि ।

प्राणसुसंयम आणिया, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रासउ समाप्तः ॥

३७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल सं० १६०४ आसोज सुदी १ । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ख भण्डार ।

३७०२. श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (श्रीपाल रासा की कथा है) । र० काल सं० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । अ भण्डार ।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ।। ढाल सिंधनी ।।

चउवीसे प्रणमु' जिणराय, जास पसायइ नवनिधि पाय ।
सुयदेवा धरि रिदय मझारि, कहिस्यु' नवपदनउ अधिकार ।।
मंत्र जंत्र छइ अवर अनेक, पिणि नवकार समउ नही एक ।
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाम्यां श्रीपाल नररायइ ।।
आंबिल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग ।
तास चरित्र कहुं हित आणी, सुणिज्यो नरनारी मुझ वाणी ।।

अन्तिम—
श्रीपाल चरित्र निहालमइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
ध्याईयइ तउ सुख पाईयइं, जगमा जस विस्तार ।।८५।।
श्री गच्छखरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीस ।
गणि शांति हरष वाचक तणो, कहइ जिनहरष सुसीस ।।८६।।
सतरै बयालीसे समै, वदि चैत्र तेरसि जाण ।
ए रास पाटण मां रच्यो, सुणता सदा कल्याण ।।८७।।

इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पद्य सं० २८७ है ।

३७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७७२ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

३७०४. षट्लेश्यावेलि—साह लोहट । पत्र सं० २२ । आ० ८¾×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १७३० आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । अ भण्डार ।

३७०५. सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास । पत्र सं० ३४ । आ० १०¾×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन) । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वे० सं ३६६ । अ भण्डार ।

३७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० १३ । आ० १२×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा (सेठ सुदर्शन का वर्णन है) । र० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७६२ सावण सुदी १० । वे० सं० १०६ । पूर्ण अ भण्डार ।

३७०८. सुभौमचक्रवर्त्तिरास—ब्रह्मजिनदास। पत्र सं० १३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। ञ भण्डार।

३७०६. हमीररासो—महेश कवि। पत्र सं० ८८। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रास। (ऐतिहासिक)। र० काल ×। ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ६०४। क भण्डार।



विषय- गणित-शास्त्र

३७१०. गणितनाममाला—हरदत्त। पत्र सं० १४। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४०। ख भण्डार।

३७११. गणितशास्त्र……। पत्र सं० ६१। आ० ६×३३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

३७१२. गणितसार—हेमराज। पत्र सं० ५। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२२१। अ भण्डार।

विशेष—हाशिये पर सुन्दर बेलबूटे हैं। पत्र जीर्ण है तथा बीच मे एक पत्र नही है।

३७१३. पट्टी पहाड़ों की पुस्तक……। पत्र सं० ४७। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में खेतो की डोरी आदि डालकर नापने की विधि दी है। पुनः पत्र १ से ३ तक सीधो वर्ण समाम्नायः। आदि की पांचो संधियो (पुरस्यिो) का वर्णन है। पत्र ४ से १० तक चारिणक्य नीति के श्लोक हैं। पत्र १० से ३१ तक पहाड़े है। किसी २ जगह पहाड़ों पर सुभाषित पद्य है। ३१ से ३६ तक तोल नाप के गुरु दिये हुये है। निम्न पाठ और हैं।

१. हरिनाममाला—शङ्कराचार्य। संस्कृत … तक।
२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक।
विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन
३. सप्तश्लोकीगीता— पत्र ४६ तक।
४. स्नेहलीला— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७१४. राजप्रमाण……। पत्र सं० २। आ० ८३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२७। अ भण्डार।

३७१५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र। पत्र सं० ८। आ० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणितशास्त्र। र० काल सं० १७१४। ले० काल सं० १८३८ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६४०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास। पत्र सं० ३। आ० ६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४१। क भण्डार।

३७१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। वे० सं० १४४। अ भण्डार।

३७१८. लीलावतीभाषा........। पत्र सं० १३। आ० १३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७१। ख भण्डार।

३७१९. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य। पत्र सं० १७६। आ० ११¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है।

३७२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १८६२ भादवा बुदी २। वे० सं० १७०। ख भण्डार।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे माणकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी।

३७२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५४। ले० काल ×। वे० सं० ३२१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ३२४ से ३२७ तक) और हैं।

३७२३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १७६५। वे० सं० २१६। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २२०, २२१) और हैं।

३७२४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६३। ट भण्डार।



विषय– इतिहास



३७२५. आचार्यों का ब्यौरा·······। पत्र सं० ६ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—सुखानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी । इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

३७२६. खंडेलवालोत्पत्तिवर्णन·······। पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५ । भ्क भण्डार ।

विशेष—८४ गोत्रो के नाम भी दिये हुये हैं ।

३७२७. गुर्वावलीवर्णन·······। पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । च भण्डार ।

३७२८. चौरासीज्ञातिछंद·······। पत्र सं० १ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०३ । ट भण्डार ।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

३७३०. छठा आरा का विस्तार·······। पत्र सं० २ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८६ । अ भण्डार ।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन·······। पत्र सं० १२७ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—रामगढ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है ।

३७३२. जैनबद्री मूडबद्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय·······। पत्र सं० ४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४० । अ भण्डार ।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल·······। पत्र सं० १ । आ० ११×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २१४२ । अ भण्डार ।

३७३५. दादूपथावली ……। पत्र सं० १ । ग्रा० १०×३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाट ।
जुगलबाई निराट निराणी बिराज ही ॥
बलनीस कर पाक जसो बाबौ प्राग टाक ।
बडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥
सांगानेर रजबमु देवल दयाल दास ।
घडसी कडाला बसे धरम कीया जही ॥
ईड बेहू जनदास तेजानन्द जोधपुर ।
मोहन मु भजनीक ग्रासोपनि वाज ही ॥
गूलर मे माधोदास विदाध में हरिसिंह ।
चतरदास सिध्यावट कीयो तनकाज ही ॥
त्रिहाणी पिरागदास डीडवाने है प्रसिद्ध ।
सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ॥
बाबो बनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।
साधु एक मांडोडी मैं नीके नित्य छाजही ॥
सुंदर प्रहलाद दास घाटडेसु छोड मांहि ।
पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥
निराणदास माडाल्यौ सडांग मांहि ।
इकलौद रणतभंवर डाढ चरणदास जानियौ ॥
हाडौती गेगाइ जामैं माखूजी मगन भये ।
जगोजी भडोंच मध्य प्रबाधारी मानियौ ॥
लालदास नायक सो पीराल पटणदास ।
फोफली मेवाड मांहि टीलोजी प्रमानियो ॥
साधु परमानंद इदोखली में रहे जाय ।
जैमल चुहाण भलो कालड हरगानियौ ॥
जैमल जोयो कुछाहो वनमाली चोकन्यौस ।
सांभर भजन सो बिताम तानियौ ॥

मोहन वफतरीसु मारोठ चिताई भलें ।
रघनाथ मेडतैसु भावकर ग्रानियौ ।।
कालैडहरे चत्रदास टीकोदास नांगल मैं ।
झोटवाडै झाकूमांभू लघु गोपाल भानियौ ।।
ग्रांबावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।
बाराहदरी संतदास चावड्यलु भानियौ ।।
ग्रांधी में गरीबदास भानगढ माधव के ।
मोहन मेवाड़ा जोग साधन सौं रहे है ।।
टहटडै मैं नागर निजाम हू भजन कियो ।
दास जग जीवन द्यौसा हर लहे है ।।
मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।
बोकडास संत जूहि गोलगिर भये है ।।
चैनराम कांणौता मे गोदेर कपलमुनि ।
स्यामदास झालाणीसू चोड कै मे ठये है ।।
सौंक्या लाखा नरहर ग्रलूदे भजन कर ।
महाजन खंडेलवाल दादू गुर गहे है ।।
पूरणदास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली ।
ग्रांधी मे भजन कर काम क्रोध दहे है ।।
रामदास राणीबाई ग्रांजल्या प्रगट भई ।
म्हाजन डिगाइचसू जाति बोल सहे है ।।
बावन ही थांभा ग्ररु बावन ही म्हंत ग्राम ।
दादूपंथी चत्रदास सुने जैसे कहे हैं ।। ३ ।।

सोरठ—

जै नमो गुर दादू परमातम ग्रादू सब संतन के हितकारी ।
मैं ग्रायो सरनि तुम्हारी ।। टेक ।।
जै निरालंब निरवाना हम संत ते जाना ।
संतनि को सरना दीजे, ग्रब मोहि ग्रपनू कर लीजे ।।१।।
सबके ग्रंतरयामी, ग्रब करो कृपा मोरे स्वामी
ग्रवगति ग्रबनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ।।२।।
जै दादू दीन दयाला काढो जग जंजाला ।
सतचित ग्रानंद में वासा, गावै वखतावरदासा ।।३।।

राग रामगरी—

ग्रैसे पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई ।
ग्रांख मीच मूनी भया मंछी गढ काई ।।टेक।।
छापा तिलक बनाय करि नांचे ग्ररु गावै ।
ग्रापण तो समझै नही, ग्रौरां समझावै ।।१।।
भगति करै पाखंड की, करणी का काचा ।
कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साचा ।।२।।
।। इति ।।

३७३६. देहली के बादशाहों का ब्यौरा........। पत्र सं० १६ । ग्रा० ५३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । क्न भण्डार।

३७३७. पट्टाधिकार........। पत्र सं० ५ । ग्रा० ११×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से ग्राचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली........। पत्र सं० १२ । ग्रा० ८×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । क्न भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुग्रा है । १८७६ के संवत् की पट्टावलि है । ग्रन्त में खंडेलवाल वंशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९. पट्टावलि........। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४०. पट्टावलि........। पत्र सं० २ । ग्रा० ११३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम है । पीछे संवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से ग्रजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । सं० १५७२ में नागौर से ग्रजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंकुमपत्रिका........। पत्र सं० १ । ग्रा० २५×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १९२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र पिपलोन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी १३ का लिखा है। इसके साथ सं० १९३९ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिखर सम्मेद की ओर है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि········। पत्र सं० २०। आ० ६×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४३। छ भण्डार।

३७४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १४३। छ भण्डार।

३७४४. बलात्कारगणगुर्वावलि········। पत्र सं० ३। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०६। ग्र भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि। पत्र सं० १। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३७। ग्र भण्डार।

विशेष—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११८। ज भण्डार।

विशेष—संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये है।

३७५०. यात्रावर्णन········। पत्र सं० २ से २६। आ० ६×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१४। ङ भण्डार।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचंद। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०८। ग्र भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य हैं– अन्तिम—

एकोनविंशतिशतेवश सहावर्षे मासस्यपञ्चमी दिनेसित फाल्गुनस्य श्रीमज्जिनेन्द्र वर सुवरथस्ययात्रा मेलायकं जयपुर प्रकटे बभूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथितो हृष्टपूर्वकः

नाम्ना मौलिक्यचन्द्रेण साहागोत्रे या संभुवा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥

३७५२. राजप्रशस्ति········। पत्र सं० ५। आ० ६×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८९५। ग्र भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं अंजिका श्रावक वनिता के विशेषण दिये हुए है।

३७५३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज। पत्र सं० १। ग्रा० ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५३। ऋ भण्डार।

विशेष—भोपाल निवासी हंसराज ने जयपुर के जैन पंचों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है। प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मी बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो। इसमें जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है। अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है। इसमे प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिसमे हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है। यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है। सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है।

३७५४. शिलालेखसंग्रह.........। पत्र सं० ८। ग्रा० ११×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६१। अ भण्डार।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है।

१. चालुक्य वंशोत्पन्न पुलकेशी का शिलालेख।
२. भद्रबाहु प्रशस्ति
३. मल्लिषेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन.........। पत्र सं० १। ग्रा० ११×२८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०८। ट भण्डार।

विशेष—चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातियां.........। पत्र सं० १। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३१। अ भण्डार।

३७५७. श्रावकों की ७२ जातियां.........। पत्र सं० २। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। अ भण्डार।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

१. गोलाराडे २. गोलसिंघाडे ३. गोलापूर्व ४. लंबेचु ५. जैसवाल ६. खंडेलवाल ७. बघेलवाल ८. अगरवाल, ६. सहलवाल, १०. असरवापोरवाड, ११. वोसवापोरवाड, १२. दुसरवापोरवाड, १३. जांगडापोरवाड, १४. परवार, १५. वरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७. सोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरंभा, १९. लंबक, २०. बुसर

२१. वाहूरसेन, २२. गहोइ, २३. अग्रपग क्षत्री २४. सद्वाण, २५. प्रजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विठ्ठलस्वा, २८. कठनेरा, २९. नाम, ३०. गुजरपल्लीवाल, ३१. चीकडा, ३२. गागरवाडा, ३३. बोरवाड, ३४. खडेरवाल, ३५. हर मुला, ३६. नेमडा, ३७. सहरीया, ३८. मेवाडा, ३९. खरांडा, ४०. चीतोडा, ४१. नरसंगपुरा, ४२. नागदा, ४३. बाम, ४४. हूमड, ४५. रायकवाडा, ४६. बदनोरा, ४७. दमगणश्रावक, ४८. पंचमश्रावक, ४९. हलधरश्रावक, ५०. सादरश्रावक, ५१. हूमर, ५२. लम्रर, ५३. बवल, ५४. बलगारो, ५५. कर्मश्रावक, ५६. वरिकर्मश्रावक ५७. वेसर ५८. सुदेवज, ५९. बलशीगुल, ६०. कोमडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाश्रावक, ६४. कचंगश्रावक, ६५. हेबगाश्रावक, ६६. मोगाश्रावक ६७. सोमनश्रावक, ६८. दाउदाश्रावक, ६९. नंगवलीश्रावक, ७०. पणीसंगा, ७१. वगोरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने से १ संख्या बढ गई है।

३७५८. **श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र** । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११½×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१ । अ भण्डार ।

३७५९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२९ । ऋ भण्डार ।

३७६०. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१६१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ७ से आगे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रों पर अक्षर मिट गये है।

३७६१. **श्रुतावतार—पं० श्रीधर** । पत्र सं० ५ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

३७६२. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८९१ पौष सुदी १ । वे० सं० २०१ । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पालाल टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३७६३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

३७६४. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ । च भण्डार ।

३७६५. **संघपच्चीसी–द्यानतराय** । पत्र सं० ६ । ग्रा० ८×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ज भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है।

३७६६. **सवत्सरवर्णन**········। पत्र सं० १ से ३७ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।

३७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन……। पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११८। क भण्डार।

ईडर आबा आबली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास।
अरज करूं घरे आवजो रे लाल हूं छूं ताहरी दास।
चतुर नर आवो हम घर छा रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥
भादवड़े पीउ वेगलो रे लाल हूं कीम करूं सणगारे।
अरज करूं घर आवजो रे लाल मोरा छंकत सार ॥२॥
आसोजा मासनी चांदणी रे लाल फुलतणी बीछाइ सेज।
रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयड़े तेज ॥३॥
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास।
संदेसा सयण भण रे लाल अलगायो केम ॥४॥
नजर निहालो बाल हो रे लाल आवो मींगसर मास।
लोक कहावत कहा करो जी पीउड़ा परम निवास ॥५॥
पोस बालम बेगलो रे लाल अवडो मुज दोस।
परीत पतोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
सीयाले अती घणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह। ७॥
लाल गुलाल अबीरसु रे लाल खेलण लागा लोग।
तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥
सुदर पाव सुहामणो रे लाल कुल तणो मही मास।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥
वीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल।
बेसाखे तुम नेम सुं रे लाल तो बजउ ढोल ॥१०॥
केहता वीसे कामो रे लाल काइ करावो बेठ।
ढीठ घणो हुवे काहा करो लाल आछी लायो जेठ ॥११॥

असाढो धरमुमछोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।
तुज बीना मुज नैहारे लाल धरम आवे खीज ॥१२॥
रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सणगार ।
घेर बली पंथी सुदररे लाल थे छोडी नार ॥१३॥
बार घडी नी अब छकी रे लाल आयो मास अरसाढ ।
कामण गालो कंत जी रे लाल सखी न आव्यो आज ॥१४॥
ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जोवे आस ।
थूलभद्र गुरु आदेस थी रे लाल ऐह बठ्यो चोमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई………। पत्र सं० १३ से ३७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—रचना में नामोल्लेख कहीं नहीं है। हमीर व अलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय- स्तोत्र साहित्य

३७६९. अकलंकाष्टक……। पत्र सं० ५। आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०। अ भण्डार।

३७७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २५। अ भण्डार।

३७७१. अकलंकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० २२। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६) और हैं।

३७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० ३। ङ भण्डार।

३७७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २। वे० सं० १८७। च भण्डार।

३७७४. अजितशांतिस्तवन……। पत्र सं० ७। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है।

३७७५. अजितशांतिस्तवन—नन्दिषेण। पत्र सं० १५। आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४२। अ भण्डार।

३७७६. अनाथीऋषिस्वाध्याय……। पत्र सं० १। आ० ९$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९०८। ट भण्डार।

३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र। पत्र सं० २। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३९१। अ भण्डार।

३७७८. अरहन्तस्तवन……। पत्र सं० ६ से २४। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० ११८४। अ भण्डार।

३७७९. अवंतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि। पत्र सं० २। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५९। अ भण्डार।

विशेष—७८ पद्य हैं।

३७८०. आत्मनिंदास्तवन—रत्नाकर। पत्र सं० २ । आ० ६३/४×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । छ भण्डार ।

विशेष—२५ श्लोक हैं । ग्रन्थ प्रारम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गणि को नमस्कार किया गया है । पं० जय विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी।

३७८१. आराधना……। पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

३७८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२) और है ।

३७८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७ । घ भण्डार ।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३७८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १९४० । वे० सं० ६० । ङ भण्डार ।

विशेष—संघी पन्नालाल दूनीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है । सं० १९३५ में भाषा की थी ।

३७८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६७३ पौष बुदी ७ । वे० सं० ४०८ । व्य भण्डार ।

विशेष—वेणीदास ने अगरू में प्रतिलिपि की थी ।

३७८७. इष्टोपदेशटीका—आशाधर । पत्र सं० ३६ । आ० १२३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । क भण्डार ।

३७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ङ भण्डार ।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा ……। पत्र सं० २५ । आ० १२×७३/४ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज में ४॥=)॥ व्यय हुये हैं ।

३७९०. उपदेशसज्झाय—ऋषि रामचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६० । अ भण्डार ।

३७६१. उपदेशसज्झाय—रंगविजय। पत्र सं० ४। प्रा० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८३। अ भण्डार।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नही है।

३७६३. उपदेशसज्झाय—देवादिल। पत्र सं० १। प्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६२। अ भण्डार।

३७६४. उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य। पत्र सं० १४। प्रा० ३¾×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५५३ प्रासोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४१। च भण्डार।

विशेष—श्री वृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी। प्रति यन्त्र सहित है। निम्नलिखित स्तोत्र है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१. अजितशांतिस्तवन—	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा

विशेष—प्राचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है।

२. भयहरस्तोत्र—	×	संस्कृत	६ से १०

विशेष—स्तोत्र प्रक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ प्रासोज सुदी १२ को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल मे कोठारिया नगर मे श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी।

३. भयहरस्तोत्र—	×	"	११ से १४

विशेष—इसमें पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुंगाचार्य कृत दी हुई है।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन। पत्र सं० ७। प्रा० १०¾×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि। पत्र सं० ११। प्रा० १२×६½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—८वें पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है। दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

३७९७. ऋषभस्तुति……। पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९५१ । अ भण्डार ।

३७९८. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । आ० ९½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

३७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० १३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३३८, १४२६, १९००) और है ।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ९१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है ।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २१ ।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९१) और है ।

३८०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) और है ।

३८०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १७९८ । वे० सं० १४ । ञ भण्डार ।

३८०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७६ से १०१ । ले० काल × । वे० सं० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०५. ऋषिमंडलस्तोत्र……। पत्र सं० ५ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०४ । झ भण्डार ।

३८०६. एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)……। पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८९१ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० सं० ३३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रदर्शन योग्य है ।

३८०७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८३ माघ कृष्णा ९ । पूर्ण । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

३८०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९६ । ख भण्डार ।

३८०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ९३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । ञ भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शांतिनाथ स्तोत्र और हैं।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२१/२×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १९३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९४) और है।

३८१४. एकीभावस्तोत्रभाषा........। पत्र सं० १० । आ० ७×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । झ भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका........। पत्र सं० ३ । आ० १२१/२×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १९३९ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ९६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९७) और है।

३८१७. कल्पसूत्रमहिमा........। पत्र सं० ४ । आ० ९३/४×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–महात्म्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०९ । क भण्डार ।

विशेष— पणविवि चउवीसवि तित्थयर,
सुरणर विसहर थुव चलणा ।
पुणु भणमि पंच कल्याण विण,
भवियहु णिसुणह इक्कमणा ।।

अन्तिम—   करि कल्लाणपुञ्ज जिणणाहहो,

                                        अणु दिणु चित्त अविचलं ।

                        कहिय समुच्च एण ते कविणा

                                        लिज्जइ इमगुव भव फलं ।।

                        इति श्री समन्तभद्र कृतं कल्याणक समाप्ता ।।

३८१९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पार्श्वनाथ स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ३८४, १२३९, १२६२) और है ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २९ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां और है (वे० सं० ३०, २६४, २८१) ।

३८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६४९ माह सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० २५६ । छ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नही है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३४) और है ।

३८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं ७ । झ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनंदराम मे सांगानेर मे प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ७० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्त्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

३८२५ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १७४९ । वे० सं० १६९८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमतकुमदखंडचंडनंडरश्मिश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८९६ । वे० सं० २०९५ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। अ भण्डार।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक। पत्र सं० १५। आ० ९¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०। अ भण्डार।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेशगणाब्धिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनाह्लादयन्,
प्रवीण्यागमसारपाठकवरा राजन्ति भास्वांतरं।
तच्छिष्य: कुमुदापिदेवतिलक: सद्बुद्धिवृद्धिप्रदां,
श्रेयोमन्दिरसंस्तवस्य मुदितो वृत्तिं व्यधादद्भुतं ॥१॥
कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति: सौभाग्यमञ्जरी।
वाच्यमानाऽजनैनंदाऽचंद्रार्क मुदा ॥२॥
इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका ...। पत्र सं० ४ से ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११०। क भण्डार।

३८३०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३३। ख भण्डार।

विशेष—रूपचन्द चौधरी कनेसुं सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल। पत्र सं० ४७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०७। क भण्डार।

३८३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १०८। क भण्डार।

३८३३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७१। ट भण्डार।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास। पत्र सं० ८। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४०। अ भण्डार।

३८३५. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० १११। क भण्डार।

३८३६. केवलज्ञानीसज्झाय—विनयचन्द्र। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८८। अ भण्डार।

३८३७. क्षेत्रपालनामावली……। पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४८ । व्य भण्डार ।

३८३८. गीतप्रबन्ध……। पत्र सं० २ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बसन्तराग मे एक भजन है ।

३८३९. गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारुकीर्त्ति । पत्र सं० २६ । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८९ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० २०२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमे २४ प्रबंधो मे भिन्न भिन्न राग रागनियो मे भगवान आदिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है । ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि मे ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विशिष्ट विद्वान् थे । ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना मे ज्ञात नही होता किन्तु वह समय निश्चय ही संवत् १८८९ से पूर्व है क्योकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं० १८८९ को जयपुरस्थ लश्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर अक्षरों मे लिखी हुई है तथा शुद्ध है । ग्रन्थकार ने ग्रंथ को निम्न रागो तथा तालों में संस्कृत गीतो में गूंथा है—

राग रागनी— मालव, गुर्ज्जरी, वसंत, रामकली, कान्हरा कर्णाटक, देशासिराग, देशवैराडी, गुणकरी, मालवगौड, गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो ।

ताल— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तितालो, अठताल ।

गीतों में स्थायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारो ही चरण है इस सबमे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अच्छे संगीतज्ञ भी थे ।

३८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२५ । क भण्डार ।

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने मुरंगपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददास के वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

३८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ख भण्डार ।

३८४२. गुणस्तवन........। पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । ट भण्डार ।

३८४३. गुरुसहस्रनाम ....। पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७४६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र....... । पत्र सं० १ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३ । ञ भण्डार ।

३८४५. घग्घरनिसाणी—जिनहर्ष । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है ।

आदि—
सुख संपति सुर नायक परतषि पास जिणंदा है ।
जाकी छवि कांति अनोपम उपमा दीपत जात दिणंदा है ।

अन्तिम—
सिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक बिलवंदा है ।
घग्घर नीसाणी पास वखाणी गुणी जिनहरष कहंदा है ।
इति श्री घगघर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र.......। पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र सं० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ख भण्डार ।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल........। पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन........। पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधारा स्तोत्र है । पं० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन........। पत्र सं० ४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्म्मावली
रम्भासामजनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरैः ।
भक्त्या वंदितपादपद्मविदुषां संपादयाभोज्झितां ।
रंभासाम जनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरै ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र सं० १५ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रकाशित   ३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

३८५३. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति……। पत्र सं० । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । अ भण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति……। पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र……। पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी आम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र मे है ।

३८५६. चतुष्पदीस्तोत्र……। पत्र सं० ११ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७५ । अ भण्डार ।

३८५७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८१ । अ भण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालस्तवन……। पत्र सं० ४ । आ० ८×½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३४ । अ भण्डार ।

३८५९. चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित……। पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६० । अ भण्डार ।

३८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८३० [illegible] । वे० सं० १८१ । क भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र ...... । पत्र सं० ३ । आ० १२×[illegible] इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २४८ । ञ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये है ।

३८६२. चैत्यवंदना ...... । पत्र सं० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३. चौबीसस्तवन ...... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल सं० १८७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बख्शीराम ने भरतपुर मे रणधीरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसंग्रह ...... । पत्र सं० ६ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद है—

नाम छंद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द्र	१	X
विजयकीर्त्ति छंद	„	२	X
गुरु छंद	„	३	X
पार्श्व छंद	ब्र० लेखराज	३	X
गुरु नामावलि छंद	X	४	X
आरती संग्रह	ब्र० जिनदास	४ „	X
चन्द्रकीर्त्ति छंद	—	४ „	X
कृपण छंद	चन्द्रकीर्त्ति	५ „	X
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ „	X

३८६५. [illegible] । पत्र सं० [illegible] । आ० [illegible] इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । (जैनेतर साहित्य) । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३३ । [illegible] भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र……। पत्र सं० ३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुणमाला……। पत्र सं० १६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। झ भण्डार।

३७६८. जिनचैत्यवन्दना……। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३५। अ भण्डार।

३८६९. जिनदर्शनाष्टक……। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र……। पत्र सं० २। आ० ९½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५४। ट भण्डार।

३८७१. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र सं० ३। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ख भण्डार।

विशेष—पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ३०। ग भण्डार।

३८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २०५। ङ भण्डार।

३८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २६५। झ भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९४। पूर्ण। वे० सं० २०८। ङ भण्डार।

३८७६ जिनवाणीस्तवन—जगतराम। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंबुसाधु। पत्र सं० २६। आ० १०¾×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६१। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम— इति शंबु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्वर्णन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८ प्रति सं० २। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ४६८। अ भण्डार।

३८७९. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४। वे० सं० २६। अ भण्डार।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी।

३८८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १६५६ पौष बुदी १०। वे० सं० २००। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं।

३८८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १६१५ भादवा बुदी १३। वे० सं० १००। छ भण्डार।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभद्र। पत्र सं० १४। आ० १३×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०। ज भण्डार।

३८८३. जिनस्तवनद्वात्रिंशिका········। पत्र सं० ६। आ० ९¾×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६६। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि। पत्र सं० ६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १८७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर। पत्र सं० १७। आ० ९×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०७६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५२१, ११२६, १०७६) और हैं।

३८८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ५७। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) और है।

३८८७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८३३ कार्त्तिक बुदी ४। वे० सं० ११४। च भण्डार।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करों की स्तुति और है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११७) और है।

३८८८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३३) और है।

३८८६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८६३ आसोज बुदी ४। वे० सं० २८। ज भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयंभूस्तोत्र, लघुसहस्रनाम एवं चैत्यवंदना भी है। अंकुरा-रोपण मंडल का चित्र भी है।

३८९०. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४९। ले० काल सं० १६५३। वे० सं० ४७। व्य भण्डार।

विशेष—संवत् सोल १६५३ त्रेपनावर्षे श्रीमूलसंघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचंद्र तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद्र तेषांमध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्थं बाइ अर्जीनमती नारायणाग्रामे इदं सहस्रनाम स्तोत्रं निजकर्म क्षयार्थं लिखितं।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८९) और है।

३८९१. जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ३८। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ५३२, ५४३, १०६४, १०९८) और हैं।

३८९२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ३१। ग भण्डार।

३८९३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल ×। वे० सं० ११७ क। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११८) और हैं।

३८९४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९०३ आसोज सुदी १३। वे० सं० १९५। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१) और है।

३८९५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० २६१। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है।

३८९६. प्रति स० ६। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १८८४। वे० सं० ८८। व्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१६) और है।

३८९७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर। पत्र सं० ४। आ० १२½×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८। घ भण्डार।

३८९८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १७२९ आषाढ बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ८। क भण्डार।

विशेष—पहले गद्य है तथा अन्त में ५२ श्लोक दिये हैं।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचितं श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण । दुबे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६. **जिनसहस्रनामस्तोत्र**........। पत्र सं० २६ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे०० सं० ८११ । क भण्डार ।

३६००. **जिनसहस्रनामस्तोत्र**........। पत्र सं० ४ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं- घंटाकरण मंत्र, जिनपंजरस्तोत्र पत्रों के दोनों किनारों पर सुन्दर बेलबूटे है । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१. **जिनसहस्रनामटीका**........। पत्र सं० १२१ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. **जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर** । पत्र सं० १८० । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६५८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३६०४. **जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्त्ति** । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८४ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७२५ । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—बंध गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

३६०७. **जिनसहस्रनामटीका**........। पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल × । ले० काल सं० १८२२ श्रावण । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । ञ भण्डार ।

३६०८. **जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम** । पत्र सं० १६ । आ० ७×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

३६०६ **जिनोपकारस्मरण**........। पत्र सं० १३ । आ० १२१/२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । ङ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० १०७ से ११३ तक) और है ।

३६१२. णमोकारादिपाठ .... । पत्र सं० ३०४ । आ० १२×७½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार णमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त में द्यानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्वृषभादि वर्द्धमानांतेभ्योनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । ङ भण्डार ।

३६१४. णमोकारस्तवन........ । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५. तकाराक्षरीस्तोत्र........ । पत्र सं० २ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय- स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३ । ज भण्डार ।

विशेस—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेता ततति ततता ताति तातांत तता इत्यादि ।

३६१६. तीसचौबीसीस्तवन .... । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । ङ भण्डार ।

३६१७. दलालीनी सज्झाय........ । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८. देवतास्तुति—पद्मनंदि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । ट भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—अभयचंद साह ने सवाई जयपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १६४, १६५) और हैं ।

३६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

३६२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६२३ वैशाख बुदी ३ । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७७) और है ।

३६२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७२५ फागुन बुदी १० । वे० सं० ६ । झ भण्डार ।

विशेष—पांडे दीनाजी ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत दी गई है ।

३६२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८१ । ञ भण्डार ।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि । पत्र सं० २५ । आ० १३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र (दर्शन) । र० काल × । ले० काल सं० १५५६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचंद्र देवास्तदाम्नाये श्रीखण्डेलवालान्वये खण्डेलवालान्वये बोजुवागोत्रे सा. मदन भार्या हरिसिणी पुत्र सा. परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिदं लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४४ भादवा बुदी १२ । वे० सं० १६० । ज भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी में थोड़े गल गये है । यह पुस्तक पं० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है ।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचंद छाबड़ा । पत्र सं० १३४ । आ० १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय । र० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१०) और है ।

३६२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२६. देवागमस्तोत्रभाषा ...... । पत्र स० ४ । आ० ११×७३/४ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (द्वितीय परिच्छेद तक) वे० सं० ३०७ । क भण्डार ।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है ।

३६३०. देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसूरि के शिष्य अणुभा । पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । भ्ह भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३६३१. धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७२ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

वीतरागायनमः । साटा छंद—

सव्वगो सददं तिआल दिसऊ मञ्त्थ वत्थूगदो ।
विस्सचक्खुवरो स आ अविसऊ जो ईस भाऊ समो ।
सम्मदंसरणाणसञ्चरिअदोईसो मुणीरणा गमो पत्तारणा
त चउट्ठउ सविमलो सिद्धो बमं कुज्जओ ।।१।।

विज्जुमाला छंद—

देवाणं सेवा कामोणं बाणीए अंबाडाऊणं ।
गुरणंदो साराहीत्ताणं विज्जुमाला सोहीआणं ।।२।।

भुजंगप्रयात छंद—

वरे मूलसंघे बलात्कारगण्णे सरस्सत्तिगछे पभंदोपयण्णे ।
वरो तस्स सिस्सो धम्मेदु जोओ बुहो चारूचारित्त भूअंगजीओ ।।३।।

आर्याछंद—

सअल कलापव्वीणो लाणो परमागमस्स सत्थम्मि ।
भविअ अजरण उद्धारो धम्मचदो जओ मुरिणदो ।।४।।

कामावतारछंद—

मिछाक भक्खेण आईसरेण आइट्ठिसुण्णाण पव्वज्जभिगाण । ।।१।।
सिस्साण माणेण सत्थाण दाणेण धम्मोपएसेण बूहाणरंजेण ।।२।।
मिछ्......तप्पस्ससूरेण दूम्मत फेडेण सुअव्वपूरेण ।।३।।
भव्वाण भव्वेण लोआण लोएण झाणग्गि मूहेण कम्मेह हूएण ।।४।।
जित्तोह मादेण कामावआरेण इंदीकदूरेण मोक्खक्करत्तेण ।।५।।

जलावंदेजाए मव्वाज्जरोभाए अलाजईभाए कत्तासुहभरए ॥६॥
धम्मदुकंदेए सद्धम्मचंदेए एम्मोत्थुकारेए भत्तिव्वभारेए ॥
त्थुउ अरिट्ठे ए एमीवि तित्थेए दासेए बूहेए संकुज्जभत्तेए ॥८॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलबंधः ॥

आर्याछंद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो अजईए सासणे लीणो ।
मा अमोहवि खीणो मारत्थी कंकणो छेसी ॥६॥

भुजंगप्रयातछंद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।
सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विमामो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

आर्याछंद—

सम्मद् सएणाणं सचारित्तं तहे वसु एाएो ।
चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुण्ण विक्खाओ ॥११॥

मौत्तिकदामछंद—

तिलंग हिमाचल मालव अंग वरव्वर केरल कण्णड वंग ।
तिलात्त कलिंग कुरंगडहाल कराडअ गुज्जर डंड तमाल ॥१२॥
सुपोट अवंति किरात अकीर सुमुक्क तुरुक्क बराड सुवीर ।
मरुत्थल दक्खए पूरवदेस सुणागवचाल सुकुंभ लसेस ॥१३॥
चऊड गऊड सुकंकएलाट, सुबेट सुभोट सुदव्विड राट ।
सुदेस विदेसहं आचइ राम, विवेक विचक्खए पूजइ पाम ॥१४॥
सुवक्कल पीएपओहरि एारि, रएज्झए ऐउर पाइ विधारि ।
सुविब्भम अंति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥
सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ एिम्मल रंगिहि बाल ।
चउक्क विउप्परि धम्मविचंद बधाअउ अक्खहि वारु सुमंद ॥१६॥

आर्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिओ, सम्मदिट्ठि साथ आइ परि आरिउ ।
जिएधम्मभवएखंभो विस अंक अंकरो जओ जअइ ॥१०॥

स्रग्विणीछंद—

जल पतिट्ठ बिबाइ उद्धारकं सिस्स सत्थाण दाणाभरो माणकं ।

धम्मणी राणधारा ण भव्वाणकं चारूसस्स णउ द्धारणिप्पादकं ।।१८।।

छद्दहा अग्गली भावणाभावए, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालए ।

चारू चारित्तहिं भूसिम्रो विग्गहो, धम्मचंदो जम्रो जित्त इंदिग्गहो ।।१९।।

पद्मछंद—

सुरणर खगचरखचर चारू चच्चि ग्रकम जिणवर ।

चरण कमलहि ग्रधरण सरण गोयम जइ जइवर ।

पोसि ग्रवित्तर धम्म सोसि ग्रक्कमपबलतर ।

उद्धारी कयसमि बग्गभव्व चातक जलधर ।

वम्मह सप्प दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।

जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलसंघ मंगलकरण ।।२०।।

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्तः ।।

३६३२ नित्यपाठसंग्रह……। पत्र सं० ७ । म्रा० ८३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ८२० । म्र भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

बड़ा दर्शन—	संस्कृत	—	
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन	
भूतकाल चौबीसी—	"	×	
पंचमंगलपाठ—	"	रूपचंद	(२ मगल है)
म्रभिषेक विधि—	संस्कृत	×	

३६३३. निर्वाणकाण्डगाथा……। पत्र सं० ५ । म्रा० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९५ । म्र भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३७२ । क भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८८) म्रौर है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतियां (वे० सं० १३६, २५६, २५६/२) और हैं।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । ब भण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका...... । पत्र सं० २४ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ख भण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं।

३६४१. निर्वाणभक्ति........ । पत्र सं० २४ । ग्रा० ११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति........ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६¾×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र........ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ८×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० 　 । ज भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र...... । पत्र सं० ३ से ५ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र सं० ८ । ग्रा० ६¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७०४ भादवा बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । ब भण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर में प्रतिलिपि की थी।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । ग्रा० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । ब भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। द्वयक्षरी स्तोत्र है। प्रदर्शन योग्य है।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८३० । ट भण्डार ।

३६४८. नेमिस्तवन—ऋषि शिव। पत्र सं० २। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १२०८। अ भण्डार।

विशेष— बीस तीर्थङ्कर स्तवन भी है।

३६४६. नेमिस्तवन—जितसागरगणी। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१५। अ भण्डार।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है।

३६५०. पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद। पत्र सं० १। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। छ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

आरम्भ—

कल्यान नायक नमौ, कल्प कुरुह कुलकंद।
कल्मष दुर कल्यान कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥
मंगल नायक वंदिकै, मंगल पंच प्रकार।
वर मंगल मुझ दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम–अन्त छंद—

यह मंगल माला सब जनविधि है,
सिव साला गल में धरनी।
बाला अध तरुन सब जग की,
मुख समूह की है भरनी ॥
मन वच तन श्रधाम करै गुन,
तिनके चहुंगति दुख हरनी ॥
तातैं भविजन पढि कढि जगते,
पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दोहा—

व्योम अंगुल न नापिये, गनिये मघवा धार।
उडगन मित भू पैंडन्यौ, त्यौ गुन वरने सार ॥११७॥
तीनि तीनि वसु चंद्र, संवतसर के अंक।
जेष्ठ शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढो निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

पाटनेशी

३६५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि। पत्र सं० ४। आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ फागुण। पूर्ण। वे० सं० ३५। अ भण्डार।

३६५२. पञ्चमंगलपाठ—रूपचंद। पत्र सं० ६। आ० १२$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४४ कार्त्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५०२।

विशेष—अन्त में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं। पं० खुस्यालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६५७, ७७१, ६६०) और हैं।

३६५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६३७। वे० सं० ४१४। क भण्डार।

३६५४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २३। ले० काल ×। वे० सं० ३६४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति और है।

३६५५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८८६ आसोज सुदी १५। वे० सं० ६१८। च भण्डार।

विशेष—पत्र ४ चौथा नही है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३६) और है।

३६५६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है।

३६५७. पंचस्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ५३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१८। अ भण्डार।

विशेष—पाचों ही स्तोत्र टीका सहित हैं।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	"
४. भूपालचतुर्विंशति	आशाधर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८. पंचस्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४००। अ भण्डार।

३६५९. पंचस्तोत्रटीका........। पत्र सं० ५०। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २००३। ट भण्डार।

विशेष—भक्तामर, विषापहार, एकीभाव, कल्याणमंदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव। पत्र सं० १५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम– अस्यायां पार्श्वदेवविरचितायां पद्मावत्यष्टकवृत्तौ यत् किमप्यबंधयति तत्सर्व सर्वाभिः क्षंतव्यं देवताभिरपि। वर्षाणां द्वादशभिः शतैर्गतैस्तुत्तरैरियं वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता शुक्लपंचम्यां अस्याक्षरगणनातः पंचशतानि जातानिद्वाविंशदक्षराणि वासदनुष्टछंदसा प्रायः।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्र……। पत्र सं० १५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२। ज भण्डार।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी हैं।

३६६२. पद्मावती की ढाल……। पत्र सं० २। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८०। अ भण्डार।

३६६३. पद्मावतीदण्डक……। पत्र सं० १। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५१। अ भण्डार।

३६६४. पद्मावतीसहस्रनाम……। पत्र सं० १२। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९०२। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं।

३६६५. पद्मावतीस्तोत्र……। पत्र सं० ६। आ० ६½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०३२, १८६८) और हैं।

३६६६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९३३। वे० सं० २६४। ख भण्डार।

३६६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ब भण्डार।

३६६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ४२६। क भण्डार।

३६६९. परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास। पत्र सं० १। आ० १२½×६½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२११। अ भण्डार।

३६७०. परमात्मराजस्तवन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३। म भण्डार।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ३। प्रा० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यग्नौ, विशुद्धय इहाशु भवंति पूर्णाः।
सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्त्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१॥
यद्ध्यानवज्रहननान्महतां प्रयाति, कर्म्माद्रिबोधि विषमाः शतचूर्णतां च।
अंतातिगावरगुणाः प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥२॥
यस्यावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनंतसुखाब्धिमाशु।
संतः श्रयन्ति परमं भुवनार्च्य वंद्य, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥३॥
यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान्।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥४॥
यद्भावनादिकरणाद्भुवनाशनाच, प्रणश्यंति कर्म्मरिपवोभवकोटि जाताः।
अभ्यन्तरेऽत्रविविधाः सकलाद्धयः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥
सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्म्मदुर्मलचयाद्विमला भवंति
दक्षा जिनेन्द्रगणभृत्सुपदं लभंते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥
यं ध्यान्तरेतु विमलं विमलाविबुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसमं परमार्थरूपं।
अर्हत्पदं त्रिजगता शरणं श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥७॥
यद्ध्यानशुक्लपविनाखिलकर्म्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदाः स्तवचंदनार्हाः।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजनाः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥८॥
यस्याप्तये सुगणिनो विधिनाचरंति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान्।
आचारसारजनितान् परमार्थबुद्धया, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥९॥
यं ज्ञातुमात्मसुविदो यतिपाठकाश्च, सर्वांगपूर्वजलधेर्लघु यांति पारं।
अन्याश्चसंतिविधिवदं परतत्त्वबीजं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१०॥
ये साधयंति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरुताबनपर्वताद्रौ।
श्रीसाधवः शिवगतेः करमं तिरस्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्ज्जितः।
कर्मवानपि कुकर्म्मदूरगो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवांतक, एक रूप इह योप्यनेकधा ।

व्यक्त एव यमिनां न रागिणां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्म्मलः ॥१३॥

यत्तत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिमेव्यं ।

कर्म्मघ्नं ज्ञानदेहं भवभयमथन ज्येष्ठमानदमूल ॥

अंतातीतं गुणाप्त रहितविधिगण सिद्धसादृश्यरूपं ।

तद्वंदे स्वात्मतत्वं शिवमुखगतयं स्तौमि युक्त्याभजेह ॥१४॥

पठति नित्यं परमात्मराजमहास्तवं ये विबुधाः किलं मे ।

तेषां चिदात्माविरतोगद्वरो ध्यानी गुणी स्यात्परमात्मरूपः ॥१५॥

इत्थं यो वारवारं गुणगणरचनैर्वंदितः संस्तुतोऽस्मिन्

सारे ग्रन्थे चिदात्मा समगुणजलधिः सोस्तुमे व्यक्तरूपः ।

ज्येष्ठः स्वध्यानदाताखिलविधिवपुषा हानय चित्तशुद्धये

सन्मत्यैवो।धकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्य्यशाली च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्त्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानंदपंचविंशति······। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३ । ञ भण्डार ।

३६६३. परमानंदस्तोत्र······। पत्र सं० ३ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । च भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २११) और है ।

३६७६. परमानंदस्तोत्र······। पत्र सं० ३ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३६७७. परमार्थस्तोत्र······। पत्र सं० ४ । आ० ११¾×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ख भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र मे कुछ लिखने मे रह गया है ।

३६७८. पाठसंग्रह ……। पत्र सं० ३६ । आ० ४½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्रपञ्जर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, णमोकारकल्प, न्हावणकल्प

३६७९. पाठसंग्रह …… । पत्र सं० १० । आ० १२×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसंग्रह—संग्रहकर्ता–जैतराम बाफना । पत्र सं० ७० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१. पात्रकेशरीस्तोत्र …। पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्र'त प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२. पार्थिवेश्वरचिन्तामणि ……। पत्र सं० ७ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८३. पार्थिवेश्वर…… । पत्र सं० ३ । आ० ७¾×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र…… । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

३६८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन……। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र……। पत्र सं० ३ । आ० १०¾×१½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३९८९. पार्श्वनाथस्तोत्र……। पत्र सं० १२। आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५३। अ भण्डार।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र हैं। अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३९९०. पार्श्वनाथस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० १२$\frac{3}{4}$×७$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

३९९१. पार्श्वनाथस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० १०$\frac{3}{4}$×१ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९६३। अ भण्डार।

३९९२. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका……। पत्र सं० २। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४२। अ भण्डार।

३९९३. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका……। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९८७। अ भण्डार।

३९९४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय। पत्र सं० १। आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५५। अ भण्डार।

३९९५. पार्श्वनाथाष्टक……। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है।

३९९६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह। पत्र सं० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९८७। पूर्ण। वे० सं० ७७०। अ भण्डार।

३९९७. प्रश्नोत्तरस्तोत्र……। पत्र सं० ७। आ० ८×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६। अ भण्डार।

३९९८. प्रातःस्मरणमंत्र……। पत्र सं० १। आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८९। अ भण्डार।

३९९९. भक्तामरपञ्जिका……। पत्र सं० ८। आ० १३×४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७८१। पूर्ण। वे० सं० ३२८। अ भण्डार।

विशेष—श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर में प्रतिलिपि की थी।

४०००. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १७२० । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

४००२. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । आ० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्ठों की जगह हैं । २×१½ इंच चौड़े पत्र पर णमोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सं० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११८६, १३६६) और है

४००५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६७ पौष सुदी ८ । वे० सं० २५१ । आ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है । मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर मे लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १२८, २८८, १८५६) और है ।

४००६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । घ भण्डार ।

४००७. प्रति सं० ८ । पत्र स० ६ से ११ । ले० काल सं० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १२ प्रतियां (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७३८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतिया (वे० सं० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९) और है ।

४००९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सं० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १७० । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० २१५) और है ।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७७ पौष सुदी १ । वे० सं० २६३ । भ्र

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६६ ३३६, ५२५) और हैं ।

४०१३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३ से ३६ । ले० काल सं० १६३२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट भण्डार ।

विशेष—इस प्रति में ५२ श्लोक हैं । पत्र १, २, ४, ६, ७ ६, १६ यह पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४) और हैं ।

४०१४. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र सं० ३० । ग्रा० ११३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । भ्र भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी । प्रति कथा सहित है ।

४०१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १७२४ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २८७ । भ्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४३) और है ।

४०१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

४०१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७५४ पौष बुदी ८ । वे० सं० ५५७ । ङ भण्डार ।

४०१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी २ । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० स० १५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने पं० कालूराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० सं० २८ । ब्य भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षित्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महाराजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बूंदीराज्ये इदंपुस्तकं लिखाइतं। साह श्री स्पीपा ततपुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री धणराज भाई मनराज गोत्रे षटवोड जाती बघेरवाल इदं पुस्तकं पुन्निश्व दीयते। लिखतं जोसी नराइण।

४०२२. प्रति सं० ६। पत्र स० ३६। ले० काल सं० १७६१ फागुण। वे० सं० ३०३। ब्य भण्डार।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १०। म्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६। ब्म भण्डार।

४०२४ प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६४०। वे० सं० १६२५। ट भण्डार।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका……। पत्र सं० १२। म्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। ट भण्डार।

४०२६. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० १८४४। ब्म भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये है।

४०२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८७२ पौष बुदी १। वे० सं० २१०६। ब्म भण्डार।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६८) और है।

४०२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० सं० ५६६। क भण्डार।

४०२९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६।

विशेष—३६वे काव्य तक है।

४०३०. भक्तामरस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ११। म्रा० १२½×८ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१८ चैत सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६१२। ट भण्डार।

विशेष—अक्षर मोटे है। संस्कृत तथा हिन्दी मे टीका दी हुई है। संगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। ब्म भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०८२) और है।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित……। पत्र सं० २७। म्रा० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८५। ब्म भण्डार।

विशेष—श्री [illegible] ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५१) और है।

४०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० १२१ । ख भण्डार ।

विशेष—गोविंदगढ मे पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । ञ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी हैं ।

४०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० सदैराम के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३५. भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६४ । आ० १२३×५ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५४१ ।

विशेष—क भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५४२, ५४३) और हैं ।

४०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १९६० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

४०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ६५४ । च भण्डार ।

४०३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १९०४ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

४०३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । झ भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२५ । अ भण्डार ।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८८४ माघ सुदी २ । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

४०४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । ङ भण्डार ।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगाराम । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] पद्य, आगे २ [illegible] [illegible] इससे आगे आदि [illegible] सहित है।

अन्त में लिखा है— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] २ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] भागचन्दजी जती को यह पुस्तक [illegible] दिया सं० १८७२ [illegible] [illegible] में [illegible] में [illegible]।

४०४४. भक्तामरस्तोत्रभाषा……। पत्र सं० ६ से १०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १२६४। अ भण्डार।

४०४५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८२८ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० २३१। अ भण्डार।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये संभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४०४६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० [illegible]। [illegible] भण्डार।

४०४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८९१। वे० सं० १५७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०४८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८०१ पौष बुदी १३। वे० सं० २६७। [illegible] भण्डार।

४०४९. भक्तामरस्तोत्रभाषा……। पत्र सं० ३। आ० १०½×७¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५२। च भण्डार।

४०५०. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि। पत्र सं० ८। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३। पूर्ण। वे० सं० ४१। [illegible] भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। [illegible] भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है।

४०५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २६८। [illegible] भण्डार।

४०५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५७२। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७३) है।

४०५३. भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर। पत्र सं० १४। आ० [illegible]×[illegible] इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७८ मादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६। [illegible] भण्डार।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० आशाधर ने टीका लिखी थी। पं० हीरानन्द के शिष्य [illegible] के पठनार्थ मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई गई।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिशशल्पेन्दु (१७७८), मिति भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथौ मौजमाबादनगरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी कस्य शासनकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येण विनयवता श्रीलखचन्द्र शास्त्वशयेन स्वपठनार्थं लिखितेयं भूपाल चतुर्विंशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विंशति जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०) और है ।

४०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १५३२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचैत्यालय लिख्यते श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये·········।

४०५५. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है । इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है ।

य: विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत । ललितचंद्रान् । उपशमइवोपक्षेपतेयमुपशम: साक्षा-मूर्तिमान् स: कथंभूत: सज्जकोरचन्द्र: संत: पंडिता: एव चकोरा: तेषां प्रमोदवे द्वितीयश्चन्द्र: यस्यशुचि चरितं चरिदनो: शुचि च तच्चरितं च तच्चरण शीलं शुचि चरित चरिष्णु: तस्य वाचो वाच्य: जगल्लोकाधिन्वन्ति कथंभूतावाच: अमृतगर्भा अमृतंगर्भे यामां तास्तथोक्ता: शास्त्रसंदर्भगर्भा: शास्त्राणां संदर्भ: विस्तारा: शास्त्रसंदर्भास्तेगर्भे यासां तास्तासा ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है ।

४०५६. भूपालचौबीसीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १९३० चैत्र सुदी ४ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६२) और है ।

४०५७. मृत्युमहोत्सव······· । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । झ भण्डार ।

४०५८. महर्षिस्तवन·······। पत्र सं० ३१ से ७४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

४०५६. महर्षिस्तवन........| पत्र सं० २ | आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १०६३ | अ भण्डार |

विशेष—अन्त में पूजा भी दी हुई है।

४०६०. प्रति सं० २ | पत्र सं० २ | ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४ | वे० सं० ६११ | अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र........| पत्र सं० ४ | आ० ८×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल सं० १९०६ फागुन बुदी १३ | पूर्ण | वे० सं० ३११ | अ भण्डार।

४०६२. प्रति सं० २ | पत्र सं० ८ | ले० काल × | वे० सं० ३१५ | अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४०६३. महामहर्षिस्तवनटीका........| पत्र सं० २ | आ० ११३⁄४×४½ इंच। भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १४८ | छ भण्डार।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र ....| पत्र सं० १० | आ० ८३⁄४×६३⁄४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २९५ | ख भण्डार।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र........| पत्र सं० ६ से ९ | आ० ९×३३⁄४ इंच। भाषा–संस्कृत | विषय–वैदिक साहित्य स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १७८२ |

४०६६ महावीराष्टक—भागचन्द | पत्र सं० ४ | आ० ११३⁄४×६ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५७३ | क भण्डार।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं।

४०६७. महिम्नस्तोत्र........| पत्र सं० ७ | आ० ९×६ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५६ | भ्क भण्डार |

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति | पत्र सं० १ | आ० १२×६ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल सं० १८२२ पौष बुदी ९ | पूर्ण | वे० सं० ५८६ | क भण्डार।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र........| पत्र सं० २ से १४ | आ० ११×७ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० २०९४ | ट भण्डार |

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं। इससे आगे महिम्नस्तोत्र हैं।

४०७०. राधिकानाममाला·········। पत्र सं० १। आ० १०½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६६। ट भण्डार।

४०७१. रामचन्द्रस्तवन·········। पत्र सं० ११। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम— श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य हैं।

४०७२. रामबतीसी—अगनकवि। पत्र सं० ६। आ० ६½×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १५१०। ट भण्डार।

विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे। नरायणा में जट्टू व्यास ने प्रतिलिपि की थी।

४०७३. रामस्तवन·········। पत्र सं० ११। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २११२। ट भण्डार।

विशेष—११ से आगे पत्र नहीं हैं। पत्र नीचे की ओर से फटे हुए है।

४०७४. रामस्तोत्र·········। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६५८। क भण्डार।

विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४६। अ भण्डार।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव। पत्र सं० २। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११३। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०३६) और है।

४०७७. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४४) और है।

४०७८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १८२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

४०७९. लक्ष्मीस्तोत्र·········। पत्र सं० ४। आ० ६×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२१। अ भण्डार।

विशेष—ड भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०१७) और है।

४०८०. लघुस्तोत्र ··· । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र ········ । पत्र सं० १ । आ० ८½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. वर्द्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वर्द्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४½×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६३३ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण की राजा श्रेणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा हैं ।

४०८५. वर्द्धमानस्तोत्र········ । पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ········ । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र········ । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

४०८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

४०८९. विद्यमानबीसतीर्थंकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ ।

४०९०. विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । आ० १२½×६ । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य गुमानीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरणजी की पुस्तक से बसई (बस्सी) नगर में शान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६७९ । क भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १९११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

४०६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से १६ । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ८८६ । अ भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद नगर मे पं० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६. विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ३१ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १९३० फागुण सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष— सी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

४०६७. विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८५ । ट भण्डार ।

४०६८. वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ९ । आ० ६½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । छ भण्डार ।

४०६९. वीरछत्तीसी........। पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । अ भण्डार ।

४१००. वीरस्तवन........। पत्र सं० १ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० १२४८ । अ भण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—महमत । पत्र सं० १ । आ० ८×३½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

विशेष—'भूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे है ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं० १ । आ० ६×९ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ........। पत्र सं० ६ । ग्रा० ४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । क भण्डार ।

४१०४. शान्तिघोषणास्तुति.........। पत्र सं० २ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५. शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन.........। पत्र सं० १ । ग्रा० १०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरै ।
रोग सोग संताप दूरं जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ।।

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—

नाना विचित्रं भवदुःखराशिं, नाना प्रकारं मोहाग्निपाशं ।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।१।।
संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।२।।
कामं च क्रोधं मायाविलोभं, चतुःकषायं इह जीव बंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।३।।
मोहादयाहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवहिंसा मनसा च वाचा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।४।।
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्नं परिपालनीयं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।५।।

जातस्य तरणं युक्तस्य वचनं, ही शान्तिजीवं बहुजन्मदुःखं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥६॥
परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिकक्षा अजमृत्यबंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥७॥
पुत्राणि मित्राणि कलिमदंदं, इहबंदमध्ये बहुजीवबंधा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥८॥

जयति पठति नित्यं श्री शान्तिनाथादिशाति
स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।
कृतमुनिभद्रं सर्वकार्येषु नित्यं
.... ॥६॥

इतिश्रीशान्तिनाथस्तोत्र संपूर्ण । शुभम् ॥

४१०८. शान्तिनाथस्तोत्र……। पत्र सं० २ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

४१०६. शान्तिपाठ……। पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान……। पत्र सं० ७ । आ० ११½×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३१ । अ भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनसुखजी । पत्र सं० १ । आ० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

४११२. श्रीस्तोत्र……। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४११३. सप्तनयविचारस्तवम……। पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

विशेष—३७ पद्य हैं ।

४११४. समवशरणस्तोत्र……। पत्र सं० ८। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २६६। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

प्रारम्भ— वृषभाद्यानभिवंद्यान् वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान्।

भक्त्या नतोत्तमांगः स्तोष्ये तत्समवशरणाणि ॥२॥

४११५. समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि। पत्र सं० २ से ६। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७। अ भण्डार।

४११६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ७७८। अ भण्डार।

४११७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी ५। वे० सं० ३०५। अ भण्डार।

विशेष—पं० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४११८. संभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनंदि। पत्र सं० २। आ० ८½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६०। क भण्डार।

४११६. समुदायस्तोत्र……। पत्र सं० ५३। आ० १३×८½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वे० सं० ११५। घ भण्डार।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन। पत्र सं० ११। आ० १०½×४¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

४१२१. सर्वतोभद्रमंत्र……। पत्र सं० २। आ० ६×३½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १४२२। अ भण्डार।

४१२२. सरस्वतीस्तवन—लघुकवि। पत्र सं० ३ से ५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

अन्तिमपुष्पिका— इति सारस्वतलघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम्।

४१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ११२५। अ भण्डार।

४१२४. सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति। पत्र सं० १। आ० ८३×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० १५५०। अ भण्डार।

४१२५. सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर। पत्र सं० २६। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७४। ट भण्डार।

विशेष—बीच के पत्र नहीं है।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र……। पत्र सं० ३। आ० ८×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

४१२७. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० ४३६। अ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। भारतीस्तोत्र भी नाम है।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)……। पत्र सं० २। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६। अ भण्डार।

४१२९. सहस्रनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं० ४। आ० ११३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७१४ आश्विन बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानाकुश पाठ भी है। ४३ श्लोक है। आनन्दराम ने स्वय जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। 'पोथी जोधराज गोदीका की पढिबा की छै' पत्र ८ मु० सागानेर।

४१३०. सारचतुर्विंशति……। पत्र सं० ११२। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९० पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २८८। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठो मे सकलकीर्त्ति कृत श्रावकाचार है।

४१३१. सायंसन्ध्यापाठ……। पत्र सं० ७। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२४। पूर्ण। वे० सं० २७८। ख भण्डार।

४१३२. सिद्धवंदना……। पत्र सं० ८। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ९०। ग भण्डार।

विशेष—श्रीमाणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी।

४१३३. सिद्धस्तवन……। पत्र सं० ८। आ० ८३×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५२। ट भण्डार।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र सं० ८ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं । मुनि विशालकीर्त्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७. प्रति सं० ४ पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

४१३८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४०६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३८, १०३) और है ।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४७) और है ।

४१४२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका········ । पत्र सं० ५ । मा० १३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३६ । मा० १२½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १९३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—जयमल । पत्र सं० ८ । मा० ११×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४७ । क भण्डार ।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८५१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८५२) और है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र······। पत्र सं० १३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०४ । क भण्डार ।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र······। पत्र स० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । अ भण्डार ।

४१४६. वसुधारास्तोत्र······। पत्र सं० १० । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४६ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्त में लिखा है– अथ घंटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण । पत्र सं० १० । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वे० सं० १८२७ । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती कर्वट में पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति आमेर वालो ने सर्वसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र······। पत्र सं० ७४ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ज भण्डार ।

४१५२. स्तुति······। पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ— त्राता त्राता महात्राता भर्त्ता भर्त्ता जगत्प्रभु

वीरो वीरो महावीरोस्त्वं देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३ स्तुतिसंग्रह······। पत्र सं० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

४१५४. स्तुतिसंग्रह······। पत्र सं० २ से १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन, बीसतीर्थङ्करस्तवन आदि हैं ।

४१५५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ६। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा–प्राकृत, संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५३। अ भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	प्राकृत
२. भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४. बृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५. अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नहीं है। सभी श्वेताम्बर स्तोत्र है।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १०। आ० १२×७३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०४। अ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	×।
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×।
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४. पार्श्वनाथपूजा —	×।
५. लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रभदेव

४१५७. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २३। आ० ८१/२×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३८५। अ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह हैं– १. एकीभाव, २. विषापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र।

४१५८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ४६। आ० ८१/२×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत, संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७६ कार्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १३१२। अ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है। निम्न संग्रह हैं—

१. निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिंदी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	

४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६. जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र.

८. पार्श्वनाथस्तोत्र

९. वीतरागस्तोत्र—	पद्मनंदि	संस्कृत	
१०. वर्द्धमानस्तोत्र	×	"	अपूर्ण

११. चौंसठयोगिनीस्तोत्र, १२ शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५. पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७. माता के सोलहस्वप्न, १८. परमानन्दस्तवन।

सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी।

४१५९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २६ । आ० ८×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६०। अ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

१. जिनदर्शनस्तुति, २. ऋषिमंडलस्तोत्र (गौतम गणधर), ३. लघुशान्तिकमन्त्र

४. उपसर्गहरस्तोत्र, ५. निरञ्जनस्तोत्र।

४१६०. स्तोत्रपाठसंग्रह……। पत्र सं० २२१। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत, प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४०। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० १७, १८, १९ नही हैं। नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २७९। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९७। अ भण्डार।

विशेष—२४८, २४९वां पत्र नहीं है। साधारण पूजापाठ तथा स्तुति संग्रह है।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १५३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०९७। अ भण्डार।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १८। आ० ७½×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५३। अ भण्डार।

४१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ३५४। अ भण्डार।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ११। आ० ८½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६०। अ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह ...... । पत्र सं० ८२ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है । कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है ।

४१६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३३ । क भण्डार ।

४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह ......। पत्र सं० ५७ । आ० १३×६ इंच । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—पाठों का संग्रह है ।

४१६९. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष —निम्न संग्रह है ।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	,,	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	,,
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	,,
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	,,
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	,,
भूपालचतुर्विंशतिका	भूपालकवि	,,
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	,,
समवशरण स्तोत्र	विष्णुसेन	,,

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
महर्षि स्तवन	×	संस्कृत
ज्ञानांकुशस्तोत्र	×	"
चित्रबंधस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	"
लघु सामायिक	×	"
चतुर्विंशतिस्तवन	×	"
यमकाष्टक	भ० अमरकीर्ति	"
यमकबंध	×	"
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
वर्द्धमानस्तोत्र	×	"
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	×	"
महावीराष्टक	भागचन्द	"
लघुसामायिक	×	"

४१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२८ । क भण्डार ।

विशेष—अधिकांश उक्त पाठो का ही संग्रह है ।

४१७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८२९ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्नपाठ और है ।

वीरनाथस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	×	"

४१७२. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० ११७ । आ० १२¾×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
भक्तिपाठसंग्रह	×	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"

४१७३. स्तोत्रसंग्रह ...... । पत्र सं० १० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
द्वयक्षरस्तवन	×	"
स्वयंभूस्तोत्र	×	"
चन्द्रप्रभस्तोत्र	×	"

४१७४. स्तोत्रसंग्रह ...... । पत्र सं० ८ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	"

४१७५. स्तोत्रसंग्रह ...... । पत्र सं० २२ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकीभाव	वादिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	"
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	"
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित	×	"
हनुमानस्तोत्र	×	"
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"

४१७६. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १४। आ० ७×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४४ माह सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरों की जयमाल, ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	,,	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	,,	२४

४१७८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ८१। आ० ७½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८११। क भण्डार।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २७। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८९८। क भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विषापहार, एवं भूपालचतुर्विंशतिका।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ३ से ५६। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी, संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८९७। क भण्डार।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २३ से १४१। आ० ८×५ इंच। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८९६ क भण्डार।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
कलशविधि	×	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	×	,,	
शान्तिपाठ	×	,,	
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यवंदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

४१८७. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ५१ । आ० ११×७½ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है ।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	पं० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदंडक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	पूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
आलोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	पूर्ण
संबोधपंचासिका	×	"	"

४१८३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ५१। आ० १०½×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ८९४। ङ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र, योगिनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थङ्करस्तोत्र, सामायिकपाठ आदि है।

४१८४. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २५। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८९३। ङ भण्डार।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१८५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २६। आ० ८½×६ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८९२। ङ भण्डार।

४१८६. स्तोत्र—आचार्य जसवंत। पत्र सं० १। आ० ९½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८९१। ङ भण्डार।

४१८७. स्तोत्रपूजासंग्रह……। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८९०। ङ भण्डार।

४१८८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १३। आ० १०×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८९। ङ भण्डार।

४१८९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ७ से ४७। आ० ७×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८८। ङ भण्डार।

४१९०. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ६ से १६। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२९। च भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"

प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० २ से ४८। आ० ८×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३०। च भण्डार।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १४। आ० ८३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

१.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
२.	कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्द्राचार्य	"
३	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ७ से १७। आ० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३२। च भण्डार।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० २४। आ० १२×७३ इंच। भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६३। ट भण्डार।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ५ से ३५। आ० ६×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८७५। अपूर्ण। वे० सं० १८७२। ट भण्डार।

४१६६ स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १५ से ३४। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

सामायिक बड़ा	×	संस्कृत	अपूर्ण
सामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बड़ा	×	"	"
ऋषिमंडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
बृहद्नवकार	×	अपभ्रंश	"
वीतरागस्तोत्र	पद्मनंदि	संस्कृत	"
जिनपंजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	×	"	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	"
षडादर्शन	×	संस्कृत	"
आराधना	×	प्राकृत	"

४१६७. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ४। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, भूपालचौबीसी, विषापहार, नेमिनाथ भूधरकृत हिन्दी में है।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ७। आ० ४½×३¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत
तीर्थावलीस्तोत्र	×	"

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनचैत्यों की स्तुति है।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपल्लीयवरेण्य गच्छः देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो जियादसौ कमलप्रभाख्यः॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १४। आ० ४½×३¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत
नेमिस्तोत्र	×	"
पद्मावतीस्तोत्र	×	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र सं० १३ । आ० ११x७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा वर्द्धमानस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह ....। पत्र सं० १२१ । आ० ६½x५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४१ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र सं० ३२ । आ० ४¾x६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल सं० १९०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६½x५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । ख भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह ....। पत्र सं० १४ । आ० ९x६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५. स्तोत्रत्रय ....। पत्र सं० २१ । आ० १०x४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । ख भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयंभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२¾x५¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं ।

४२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

४२०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । व्य भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं ।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४३ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ८३२, ८३६) और हैं ।

४२११. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६१५ पौष बुदी १३ । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—तनुसुखलाल पांड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई ।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ३२ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८४ । अ भण्डार ।



पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाथानीचोढाल्या—खेम । पत्र सं २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालों मे प्रार्थना की गयी है ।

४२१४. अनाथीमुनि सज्झाय······ । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७१ । अ भण्डार ।

४२१५. अर्हंनकचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरंग)······· । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४५ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ— वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवंदी जगदीस ।
अरहंनक मुनिवर चरीय भणि सुचरीय जगीस ॥१॥

चौपई— सु जगीसचरी मनमाहे, कहिसि संबंध उछाहे ।
अरहंनकि जिमव्रत लीधउ, जिम ते तारी वलि कीधउ ॥२॥

निज मात······एणइ उपदेसइ, वलिव्रत आदरीय विसेसइ ।
पहुतउ ते देव विमानि, सुणिज्यो भवियण तिम कानि ॥३॥

दोहा— नगरा नगरी जाणीयइ, अलकापुरि अवतार ।
वसइ तिहां विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

चौपई— सुविचार सुभद्रा घरणी·····························।
तसु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रधान ॥५॥

अन्तिम— च्यार सरण चित्त चीतवइ जी, परिहरि च्यारि कषाय ।
दोष सवइ मन उपरइ जी, शल्य रहित निरमाय ॥६६॥

असनपान खादम खमी जी सादिम सेवे निहार ।
इंग भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥

सिला संथारउ आदरया जी, सूर किरण तनि ताप ।
सहइ परीसह साहसी जी, दहइ भवना पाप ॥५७॥

समतारस माहि झीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान ।
काल करी तिणी पामीयउ जी, सुंदर देव विमान ॥५८॥

सुरग तणा सुख भोगवी जी, परमाणंद उलास ।
तिहां थी चवि वलि पामेस्यइ जी, अनुक्रमि सिवपुर वास ॥५६॥

अरहंनक जिमते धरइ जी, अंत समय मुभझाण ।
जनम सफल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥

श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुणिंद ।
जयवंता जग जाणीयइ जी, दरसण परमाणंद ॥६१॥

श्री गुण सेखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नयरंग ।
तासु सीस भावइ भणइ जी, विमलविमय मतिरंग ॥६२॥

ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि ।
ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे आसु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणिशिष्यहर्षकीर्त्तिगणिशिष्य पद्मरंगमुनिना लेखि । श्री गुरुवचनगरे ।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट भण्डार ।

विशेष—दो गीत है दोनों ही के कर्त्ता कमलकीर्त्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । र० काल सं० १६३६ । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८. आदिनाथ सज्झाय........। पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० ११६६ । छ भण्डार ।

४२१९. आदीश्वरविज्ञप्ति······ । पत्र सं० १ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

अन्तिम पद्य—

पनरवासट्ठि जिनसूर अविचल पद पायो ।

बीनतडी कुलट पूणीयां मामुमस वहि दयाम दिहाडै मनि वैराने इम भणीया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री किशनलाल । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । क भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० ८३/४×६१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । क भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । आ० ८३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल सं० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । आ० १२×८१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चंपाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में रुग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव से रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अलीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४. चेलना सज्झाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० ६१/२×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल सं० १८९२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी······। पत्र सं० १ । आ० ११३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६. चैत्यवंदना ······। पत्र सं० ३ । आ० ६×८३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—विमलचंद । पत्र सं० ६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । क भण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय······। पत्र सं० १ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १७। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४१। अ भण्डार।

विशेष—रतनचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४२३०. चौबीसीस्तुति……। पत्र सं० १५। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १६००। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। छ भण्डार।

४२३१. चौबीसतीर्थङ्करवर्णन……। पत्र सं० ११। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५८३। ट भण्डार।

४२३२. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणकरण कासलीवाल। पत्र सं० ८। आ० ६×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५७। च भण्डार।

४२३३. जखड़ी—रामकृष्ण। पत्र सं० ५। आ० १०३×६३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६८। क भण्डार।

४२३४. जम्बूकुमार सज्झाय……। पत्र सं० १। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३६। अ भण्डार।

४२३५. जयपुर के मंदिरों की वंदना—स्वरूपचंद। पत्र सं० १०। आ० ६×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १६१०। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वे० सं० २७८। झ भण्डार।

४२३६. जिणभक्ति—हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० १२×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४३। अ भण्डार।

४२३७. जिनपच्चीसी व अन्य संग्रह……। पत्र सं० ४। आ० ८३×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४। क भण्डार।

४२३८. ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर। पत्र सं० १। आ० १०×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १८८५। अ भण्डार।

४२३९. झखड़ी श्रीमन्दिरजीकी……। पत्र सं० ४। आ० ७३×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। क भण्डार।

४२४०. झांझरियानुचोढाल्या……। पत्र सं० २। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ- सीता रा मनि अंकर ढाल—

रमती चरखे सीस नमावी, प्रणमी सतगुरु पाया रे ।
झांझरिया ऋषि ना गुण गाता, उलट अंग सवाया रे ।।

अविगण वंदो मुनि झांझरिया, संसार समुद्र जे तरियो रे ।
सबल साहस परिसा मन सुधे, शील रतन करि भरियो रे ।।२।।

पइठलपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।
तस सुत मदन भरम बालुडो, किरत जास कहाणी रे ।।

मीजी ढाल अपूर्ण है । झांझरिया मुनि का वर्णन है ।

४२४१. णमोकारपचीसी—ऋषि ठाकुरसी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि । पत्र सं० १ । आ० १०३/४×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३ दर्शनपाठ—बुधजन । पत्र सं० ७ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८८ । क भण्डार ।

४२४४. दर्शनपाठस्तुति…… । पत्र सं० ८ । आ० ८×६१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९२७ । ट भण्डार ।

४२४५. देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रह नेमा नामे हुवा लखण सरव संजोग ।
आठ सहस लखण धरो गोमकार नम्र जोग ।।१।।

सहत अठारा साध जी अजाया चालीस हजार ।
मोटार मुनिवर विचरज्या रा भार ।।२।।

....।

बसुदेव राजा डाकरा देवाकीरा अंगजात ।।३।।

कन्हम छ देव का तणा ला राजा के उराहार ।
पाछी सुख श्री नेम का आवक संयमदार ।।४।।

सावणी सुध आवरी देस भक्तनी नाम ।
वेमेरआवरण स्वामी जी करावो जीव जीव ।।५।।

मध्यभाग— देव की तणाइ नंदण बांदवारे उभी श्री नेम जिणेसवार ।
मन्वणा साधा न देख नर कारवालागा इम मरदीतार ।।

साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहाल रे ।
कसलो''''टाल्ल काच वालागीर छुटी छे दुद तणीए धार रे ।।२।।

झमझम वाग सोहावडो उलस्यो र फल में फुली छे जेहना कायरे ।
बलाया माहा तो माव रही रे देख तो जोवन तीरपत न थायरे ।।३।।

दीवकी तो सावान छ दिणा करी र पाछा आइ छ माहीलो माहारे ।
सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतणी ए वातरे ।।४।।

सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु थारा बालरे ।
आंख्या माहो आसुं पडेरे जाणे मो त्यारे टुटा मालरे ।।५।।

अन्तिम— मरजी तांव छोडो सगला नगर मझारो,
मुहमांगा दीजे घणारे मणि माणक भंडार ।

मणि माणक बहु दीधा देवकी मनरा इछा काइ न राखी ।।
हूणकरण ए ढाल ज भाषा तीज चोथ इसही ए साखी ए ।।६।।

इति श्री देवकी की ढाल स० ।।०।। रूपमजी ।।

इसवत चुनीलाल छावडा चेतराम ठाकरका बेटा छोटाका छे बांच पढे ज्यासू जथा जोग बाचज्यो । मिती देशाख बुदी १४ सं० १८८५ ।

देवकी की ढाल— रतनचन्द्रकृत और है । प्रति गल गई है । कई अंश नष्ट होगये है ; पढने मे नही आता है ।

अन्तिम— गुण गाया जी मारवाड मझार कर जोडि रतनचंद भणे ।।१०।।

४२४६. **द्वीपायनढाल—गुणसागरसूरि** । पत्र सं० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. **नेमिनाथ के नवमङ्गल—विनोदीलाल** । पत्र सं० १ । आ० १६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–स्तुति । र० काल सं० १७७४ । ले० काल सं० १८५२ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

विशेष—चीमू में प्रतिलिपि हुई थी । जन्मपत्री की तरह गोल लिपटा हुआ है ।

४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपचीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९. नागश्री सज्झाय—विनयचंद । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल १रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपण बांधो आप भोगवै कोण गुरु कुण चेला ।
संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें अजुही नादो न वेरारे ॥१५॥ आ०॥
महा बिदेह मुकते जासी मोटी गर्भ बसेरा रे ।
विनयचंद जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥
इति नागश्री सज्झाय कुचामणे लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तुति । र० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । म्ह भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द । पत्र सं० १ । आ० १२¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी……। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४. नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर अवसार ।
आलइ जन्म महारिख ओरे, कांइ करपारै मन मांहि विचार ॥१॥
मति राचो रै रंमणी ने रंग क लेवोरे जीण वाणी ।
तुम रमज्यो रै संजम न संगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥
अरिहंत देव अराधाइयोजी, रै गुर मयणा भी साथ ।
धर्म केवलाणो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाद्धक ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।
संजम सकित बाहिरो, जिण भाख्यो रे तुस खंडण तुलिक ।।४।।

तहत करीन सरदहो रे, जे भाखो जलनाथ ।
पाचेइ आसव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ।।५।।

जीव सहूजी जीवेवा वांछिरे, मरण न वांछे कोइ ।
अपस राखा लेखवा, तस थावर रे हण जो मत कोइ ।।६।।

चोरी लीजे पर तणी रे, तिण तो लागे पाप ।
धन कंचण किम् चोरीय, जिण बांधइ रे भव भवना संताप क ।।७।।

अजस अकीरत ण भव रे, पेरे भव दुख अनेक ।
कुड कहता पामीइ, काइ प्राणी रे मन माहि विवेक ।।८।।

महिला संग धुइ हर, नव लख सम जुत ।
कुण सुख कारण ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ।।९।।

पुत्र कलत्र धर हाट भरि, ममता काजे फोक ।
जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरे गया बहूना लोक ।।१०।।

मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।
सवार्थया सहू को सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ।।११।।

अंजुल जल नीपरे रे, खिण रे तुटइ आउ ।
जाइ ते बेला नही रे वाहुडि जरा वालरे यौवन ने धाड ।।१२।।

व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लग धर्म संभाल ।
धारा हर धण बरसते, कोइ समरथि रे बाधैगोपाल क ।।१३।।

अलप दीवस को पाहुणा रे, सहू कोइण संसार ।
एक दिन उठो जाइबउ, कवण जाणइ रे किण हो अवतारक ।।१५।।

कोध मान माया तजो रे, लोभ मेधरज्यो लीगारें ।
समतारस भवपुरीय वली दोहिलो रे नर अवतारक ।।१६।।

आरंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
सिद्ध वधु से सहु को वरो, इम बोलै सखज देवसुरक ।।१७।।

।। इति वीर ।।

बाल वूमचारही जिण बाइसमा ।।
समदविजइजी रा नंद हो, वैरागी माहरौ मन लागो हो नेम जिणंद सू
जादव कुल केरा चंद हो ।। बाल० ।।१।।
देव घणा छइ हो पुण जीदोवता (देवता)
तेतौ न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ।। बाल० ।।२।।
कैइक दोस करइ नर नारनइ मांमइ तेलसिंदूर हर हो ।
थाके इक बन बासै बासे बास, कक बनवासो करइ ।
(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ।।३।।
तु नर मोह्यां रे नर माया तणो, तु जग दीनदयाल हो ।
नोजोवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ।।४।।
राजल के नारिपत्ते उद्धरी पहुतीउ मुकति मझार ।
हीरानंद संवेग साहिबा, जी वी नव म्हारी बीनतेडा अवधारि हो ।।५।।
।। इति नेमि गीत ।।

४२५५. नेमिराजुलसज्झाय........। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १८५१ चैत्र ....। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६. पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७. पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग में को तेरा संचे ।।या०।।
जैसे पंछी बीरछ बसेरा, बीछरे होय सवेरा ।।१।।
कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती में गाडा ।
अंत समै चलण की बेला, ज्यों गाडा राहो खाडारे ।।२।।
ऊंचा २ महल बणाये, जीव कहे इहा रैणा ।
चल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर देणा ।।३।।
मात पिता सु पतनी रे भारी, तीण धन जोबन सांपा ।
उड गया हँस काया का मंडण, कांडो प्रेत पराया ।।४।।

करी कमाइ इण भो आया, उलटी पूजी खोइ ।
मेरी २ करके जनम गमाया, चलता संक न होइ ।।५।।

पाप की पोट घणी सिर लीनी, हे मूरख भोरा ।
हलकी पोट करी तु चाहे, तो होय कुटुम्बसुं न्यारा ।।६।।

मात पिता सुत साजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।
मेरा २ पडा पुकारै चलता, नही कछु लारो ।।७।।

जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया ।
मोह बस पदारथ बीराणी, हीरा जनम गमाया ।।८।।

आंख्या देखत केते चल गए जगमैं, आलह आपुही चलणा ।
औसर बीता बहु पछतावे, माखी जु हाथ मसलणा ।।९।।

आज करु धरम काल करु, याही व नीयत धारे ।
काल अचांणे घाटी पकडी, जब क्या कारज सारे ।।१०।।

ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न बारू वारो ।
हीमत होय तो ढील न कीजे, कूद पडो निरधारो ।।११।।

सीह मुखे जीम मीरगलो आयो, फेर नइ छूटण हारो ।
इण दीसदंते मरण मुखे जीव, पाप करी निरधारो ।।१२।।

सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना ।
रीष सीवलाल कहे भो प्राणी, आतम कारज करणा ।।१३।।

।।इति।।

४२५८. पदसंग्रह········। पत्र सं० ५६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-भजन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२७। क भण्डार।

४२५९. पदसंग्रह········। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १२७३। अ भण्डार।

विशेष—त्रिभुवन साहब सांवला········।

इसी भण्डार में २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) और हैं।

४२६०. पदसंग्रह········। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ४०५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५) तक और हैं।

४२६१. पदसंग्रह········। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ६२५। च भण्डार।

४२६२. पदसंग्रह……। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ३३। ग्न भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं।

नोट—वे० सं० ३१८वें मे जयपुर की राजवंशावलि भी है।

४२६३. पदसंग्रह……। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० १७५६। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसंग्रह (वे० सं० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम आदि कवियों के पद हैं।

४२६४. पदसंग्रह……। पत्र सं० ३। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१. मोहि तारी सामि भव सिंधु तै।

२. राजुल कहै तुमें वेग सिधावे।

३. सिद्धचक्र वंदो रे जयकारी।

४. चरम जिणेसर जिहो साहिबा

चरम चरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह……। पत्र सं० १२ से २५। आ० १२×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००८। ट भण्डार।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, झांझूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियों के पद हैं।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द। पत्र सं० १८। आ० ६×६३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५२८। ट भण्डार।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोंका संग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द। पत्र सं० १। आ० ११३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४३। अ भण्डार।

४२६८. पद—केशरगुलाब। पत्र सं० १। आ० ७×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४१। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ–

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन सांवादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ॥

४२६९. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । आ० २४×३½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५७ । ट भण्डार ।

४२७०. पदसंग्रह—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–हिन्दी विषय–पद । र० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदो का संग्रह है ।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७३. पदसंग्रह—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४४ । आ० ६×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । विभिन्न राग रागनियो मे पद दिये हुये है । प्रथम पत्र पर लिखा है– श्री देवसागरजी सं० १८६३ का वैशाख सुदी १२ । मुकाम बसवै नैणचंद ।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । क भण्डार ।

४२७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० २६ से ६२ । आ० ११¾×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । ङ भण्डार ।

४२७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० २५ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

विशेष—थोड़े पदों का संग्रह है ।

४२७८. पद—मलूकचंद । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा ।

समझो स्युंत राज ॥

४२७९. पदसंग्रह—मंगलचंद । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचंद । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद है ।

४२८४. पदसंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह........ । पत्र सं० ८८ । आ० १२३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३९ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुरुशतक	जिनदास	"	१०
जिनवरमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुणपच्चीसी	"	"	—
गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूदरदास	हिन्दी	१४
वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना	"	"	–
पदसंग्रह	माणिकचन्द	"	४
तेरहपंथपच्चीसी	"	"	११
हुंडावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौबीस दंडक	दौलतराम	"	१२
दशबोलपच्चीसी	द्यानतराय	"	१७

४२८७. पार्श्वजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र सं० १ । म्रा० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष । पत्र सं० ३ । म्रा० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४७ । अ भण्डार ।

विशेष—२रे पत्र से–

प्रारम्भ— सुख संपति दायक सुरनर नायक परतिख पास जिणंदा है ।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपम दिपनि जाग दिणंदा है ।।

अन्तिम— तिहां सिधादावास तिहा रे वासा दे सेवक विलवंदा है ।
घघर निसाणी पास वखाणी सुण जिनहर्ष गावंदा है ।।

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, मान, माया, लोभ की सज्झाय दी हैं ।

४२८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २१३३ । अ भण्डार ।

४२९०. पार्श्वनाथचौपई—पं० लाखो । पत्र सं० १७ । म्रा० १२½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १७३४ कार्त्तिक सुदी । ले० काल सं० १७९३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १११८ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति–

संवत् सतरासे चौतीस, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।
नौरंग तप दिल्ली सुलितान, सबै नृपति वहै सिरि आण ।।२६६।।
नागर चाल देश सुभ ठाम, नगर वरणहटो उत्तम धाम ।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ।।२६७।।

कर्मक्षय कारण सुमहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत।
पंडित लालो लाख सभाव, मेवो धर्म लखो सुभथान ॥२६८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई संपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पांडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शासन में दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी।

४२६१. पार्श्वनाथ जीरोछन्दमत्तरी……। पत्र सं० २। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १७८१ बैशाख बुदी ६। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० १८६५। अ भण्डार।

४२६२. पार्श्वनाथस्तवन……। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र……। पत्र सं० २। आ० ८½×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—बिहारीदास। पत्र सं० ४। आ० ८×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१३। च भण्डार।

४२६५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६२। ब भण्डार।

४२६६. बन्दनाजखड़ी—बुधजन। पत्र सं० ४। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६७। अ भण्डार।

४२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५२४। क भण्डार।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद……। पत्र सं० २२। आ० ५½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्फुट। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५। झ भण्डार।

४२६६. बाहुबली सज्झाय—विमलकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० ६½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२४५।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सज्झाय और है।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १७६। आ० १२×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४५। क भण्डार।

विशेष—निम्न भक्तियां हैं।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, योगभक्ति, वीरभक्ति, निर्वाणभक्ति और नंदीश्वरभक्ति।

४३०१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। वे० सं० ५४७। क भण्डार।

४३०२. भक्तिपाठ……। पत्र सं० ९०। आ० ११¾×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। क भण्डार।

४३०३ भजनसंग्रह—नयन कवि। पत्र सं० ४१। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २४०। छ भण्डार।

४३०४. मरुदेवी की सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० १। आ० ८¾×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८७। अ भण्डार।

४३०५. महावीरजी का चौढाल्या—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० ४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८७। अ भण्डार।

४३०६. मुनिसुव्रतविनती—देवाब्रह्म। पत्र सं० १। आ० १०¾×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८९७। अ भण्डार।

४३०७. राजारानी सज्झाय……। पत्र सं० १। आ० ६¼×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६६। अ भण्डार।

४३०८. रांडपुरास्तवन……। पत्र सं० १। आ० ६×५½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६३। अ भण्डार।

विशेष—रांडपुरा ग्राम में रचित आदिनाथ की स्तुति है।

४३०९. विजयकुमार सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १८६१। ले० काल सं० १८७२। पूर्ण। वे० सं० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई। पत्र ४ से आगे स्थूलभद्र सज्झाय हिन्दी में और है। जिसका र० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है।

४३१०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २१८६। अ भण्डार।

४३११. विनतीसंग्रह……। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० २०१३। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३१२. विनतीसंग्रह—ब्रह्मदेव। पत्र सं० ३८। आ० ७३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११३१। अ भण्डार।

विशेष—सासु बहू का झगड़ा भी है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६३, १०४३) और हैं।

४३१३. प्रति सं० २। पत्र सं० २२। ले० काल ×। वे० सं० १७३। ख भण्डार।

४३१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६७८। ङ भण्डार।

४३१५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८४८। वे० सं० १६३२। ट भण्डार।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति······। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६७। क भण्डार।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० १। आ० ६×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३४। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम—

पूज्य श्री श्री दौलतराय जी बहुगुण प्रगवाणी।
रिखलाल जी करि जोडि वीनवै कर सिर धरवाणी ॥
सहर माधोपुर संवत् पंचावन कातीग सुदी जाणी।
श्री सीतल जिन गुण गाया अति उलास आणी ॥ सीतल० ॥१२॥
॥ इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि। पत्र सं० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४१। अ भण्डार।

४३१९. सतियोंकी सज्झाय—ऋषि रायचन्दजी। पत्र सं० २। आ० १०×४३ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २२४५। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न है—

इतीयक सतियारो गुण कह्या ये गुण सांभलो।
उत्तम पराणी रायमल जी कहइ···········॥१४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है।

४३२०. सज्झाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द। पत्र सं० १। आ० १०×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८१। अ भण्डार।

४३२१. सर्वार्थसिद्धिसज्झाय······। पत्र सं० १। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—पर्यू षण स्तुति भी है।

४३२२. सरस्वतीअष्टक······। पत्र सं० ३। आ० ६×७१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। क भण्डार।

४३२३. साधुवंदना—माणिकचन्द। पत्र सं० १। आ० १०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५४। ट भण्डार।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय की साधुवंदना है। कुल २७ पद्य हैं।

४३२४. साधुवंदना—पुण्यसागर। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–पुरानी हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३८। अ भण्डार।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४७०। आ० १२१/२×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय–स्तुति। र० काल सं० १९१८ कार्त्तिक सुदी २। ले० काल सं० १९३९ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७८५। क भण्डार।

४३२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५०५। ले० काल सं० १९४८ बैशाख सुदी ४। वे० सं० ७८६। क भण्डार।

४३२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५७१। ले० काल ×। वे० सं० ८११। क भण्डार।

४३२८. सीताढाल······। पत्र सं० १। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६७। अ भण्डार।

विशेष—फतेहमल कृत चेतन ढाल भी है।

४३२९. सोलहसतीसज्झाय······। पत्र सं० १। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१८। अ भण्डार।

४३३०. स्थूलभद्रसज्झाय······। पत्र सं० १। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८२। अ भण्डार।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अंकुरोपणविधि—इन्द्रनंदि। पत्र सं० १५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यंत्र है।

४३३२. अंकुरोपणविधि—पं० आशाधर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल १३वी शताब्दि। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है।

४३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। २रा पत्र नही है। संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

४३३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ३१६। ज भण्डार।

४३३५. अंकुरोपणविधि……। पत्र सं० २ से २७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल……। पत्र सं० २६। आ० १२×७¾ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १। च भण्डार।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास। पत्र सं० २६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६४। पूर्ण। वे० सं० १८५६। ट भण्डार।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत। पत्र सं० २१४। आ० १४×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७०। ले० काल सं० १८७२। पूर्ण। वे० सं० ५०१। च भण्डार।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख। पत्र सं० ४८। आ० १३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९३० फाल्गुन सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०५। अ भण्डार।

४३४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ७४। ले० काल ×। वे० सं० ४१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) और है।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १९३३ । वे० सं० ५०३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०२) और है।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३९ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २०८ में ही) और हैं।

४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १९९ । भ्र भण्डार ।

विशेष—आषाढ सुदी ५ सं० १९६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चांदवाड़ ने चढाया।

४३४४. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । आ० ११×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९३० माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय–

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सौं मो प्रति राखै प्रीति ।
चोईसौं महाराज को पाठ रच्यौं जिन रीति ॥
प्रेरकता प्रतितास की रच्यो पाठ सुभनीत ।
ग्राम नग्र एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीपद्य—

विंशति इक शत शतक पै त्रिशतसंमत आनि ।
माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५. अक्षयनिधिपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६. अक्षयनिधिपूजा……। पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष जयमाल हिन्दी में है।

४३४७. अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । आ० ११½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४ । ङ भण्डार ।

विशेष—श्री देव श्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी।

४३४८. अक्षयविधिविधान……। पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९९७२) और है।

४३४६. अढाई (सार्द्ध द्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६१। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५०। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४४) और है।

४३५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १५१। ले० काल सं० १८२४ ज्येष्ठ सुदी १२। वे० सं० ७८७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७८८) और है।

४३५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १८६२ माघ सुदी ३। वे० सं० ८४०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५, ४१) और हैं।

४३५२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी १। वे० सं० १११। छ भण्डार।

४३५३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ४२। ज भण्डार।

४३५४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। वे० सं० १२६। झ भण्डार।

विशेष—विजयराम पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० ११३। आ० १०½×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ बैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० २। ख भण्डार।

४३५६. अढाईद्वीपपूजा……। पत्र सं० १२३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५०५। अ भण्डार।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३४) और है।

४३५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८८०। वे० सं० २१४। ख भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी जीवरा ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी।

४३५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी ४। वे० सं० १२३। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति [वे० सं० १२२] और है।

४३५९. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम। पत्र सं० १६३। आ० १२½×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० चैत सुदी ६। ले० काल सं० १६३६ बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८। क भण्डार।

विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की।

४३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ५०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां [वे० सं० ५०४, ५०५] और है ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल × । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र सं० १६ । आ० ८३×७ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४ । ख भण्डार ।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गंगवाल ने बेगस्यों के मन्दिर में चढाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य मे है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं० १८२० की [वे० सं० ३६०] और है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा........ । पत्र सं० १३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० १८ । आ० १०३×७ इंच । भाषा-हिन्द । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति सं०२ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ४२१ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा .... । पत्र सं० २० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । ख भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०४२ । ट भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । आ० ७×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा .... । पत्र सं० १ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है।

४३७२. अनन्तनाथपूजा ……। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४ । म भण्डार ।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा……। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५२०, ६६५) और हैं।

४३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २३० । ज भण्डार ।

४३७६. अनन्तव्रतपूजा …… । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्त्ति । पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम । पत्र सं० ३ । आ० ८×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि……। पत्र सं० १८ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५८ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १ । ग भण्डार ।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य……। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र सं० १८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १८४५ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्यश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का- अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखितं पिरागदास मोहा का जाति बाकलीवाल प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्त्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पंडित खुश्यालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापितं ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३६) और है।

४३८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० सं० ७ । ख भण्डार ।

४३८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२ । ङ भण्डार ।

४३८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० २०७ । ञ भण्डार ।

४३८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं। श्री शाकमडगपुर चूहड़वंश के हर्ष नामक दुर्गा वणिक ने ग्रन्थ रचना कराई थी।

४३८७. अभिषेकपाठ........। पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

४३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

विशेष—विधि विधान सहित है।

४३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७३२ । च भण्डार ।

४३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६२२ । ट भण्डार ।

४३९१. अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है जिसे भाजूराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है।

४३९२. अभिषेकविधि........ । पत्र सं० ८ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

४३९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७०) और है।

४३९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । ट भण्डार ।

४३९५. अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । आ० ८¾×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भगवान के अभिषेक की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३२ । अ भण्डार ।

४३९६. अरिष्टाध्याय……। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–सल्लेखना विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ञ भण्डार।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं– ग्रन्थका नाम रिट्ठाइ है। जिसका संस्कृत रूपान्तर अरिष्टाध्याय है। आदि अन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

पणमेंत सुरासुरमउलिरयणवरकिरणकंतविछुरियं।
वीरजिणपायजुयलं णमिऊण भणेमि रिट्ठाइं॥१॥

संसारम्मि भमंतो जीवो बहुभेय भिण्ण जोणिसु।
पुण्णेण कहंवि पावइ सुहमणु मत्तं ण संदेहो॥२॥

अन्त— पुणु विज्जवेज्जहणुणं वारउ एव वीस सामिय्यं।
सुणीव सुमंतेणं रइय भणियं मुणि ठौरे वरिं देहिं॥२०१॥

सूई भूमीलें फलए समरे हाहि विराम परिहाणो।
कहिजइ भूमीए समंवरे हातयं वच्छा॥२०२॥

अट्ठाट्ठारह खिणे जे लद्धीह लच्छरेहाउं।
पढमोहिरे ग्रंकं गविजए याहि णं तच्छ॥२०३॥

इति अरिष्टाध्यायशास्त्रं समाप्तम्। ब्रह्मवस्ता लेखितं॥श्री॥ छ॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४१) और है।

४३९७. अष्टाह्निकाजयमाल……। पत्र सं० ४। आ० ६¾×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३१।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है।

४३९८. अष्टाह्निकाजयमाल……। पत्र सं० ४। आ० १३×४½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११) और हैं।

४३९९. अष्टाह्निकापूजा……। पत्र सं० ४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२६। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है।

४४००. अष्टाह्निकापूजा……। पत्र सं० ११। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १५३३। पूर्ण। वे० सं० ३३। क भण्डार।

विशेष—संवत् १६६३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्त्ति को भेंट की गई थी। जयमाला प्राकृत में है।

४४०१. अष्टाह्निकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा। र० काल सं० १८५१। ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १०। वे० सं० ५६६। अ भण्डार।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकोऽभूज्जगवादिकीर्त्ति श्रीमूलसंघे वरशारदाख्ये।
गच्छेहि तत्पट्टसुराजिराजि देवेन्द्रकीर्त्ति समभूत्तत्श्च ॥१३७॥
तत्पट्टपूर्वाचलभानुकल्पः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धमुख्यः।
महेन्द्रकीर्त्तिः प्रबभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः गुरुरस्यमेऽभूत ॥१३८॥
योऽभूत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः भुवि सगुणभरश्चारुचारित्रधारी।
श्रीमद्भट्टारकेंद्रो विलसदवगमो भव्यसंघे प्रवंशः।
तस्य श्रीकारशिष्यागमजलधिपट्टः श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति।
रेना पुष्यांचकार प्रलघुमतिविदा वोधतापार्जशब्दैः ॥१३९॥

मिति अषाढमासे शुक्लपक्षेदशम्या तिथौ संवत १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं० कल्याणदासस्य शिष्य खुस्यालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृतं जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दोय आया। बडा वृषभसेनजी लघु बाहुबलि मालपुरासुं प्रकाशमे आया। सांगानेर सुं भट्टारकजी की नसियां मे दिन घड़ी च्यार चढ्या जयपुर मे दिन सवा पहर पाछै मंदिरां दर्शन संगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मंदिर १० कीया पाछे मोहनवाड़ी नंदलालजी की कीर्त्तिस्तंभ की नसिया संगही विरधीचंदजी आपकी हवेली मे रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदगिरि यात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८८८ की (वे० सं० ५४२) और है।

४४०२. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय। पत्र सं० ३। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०३। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों का कुछ भाग जल गया है।

४४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा........। पत्र सं० ४४ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० १० । क भण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन........। पत्र सं० २२ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६ । क भण्डार ।

४४०७. आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० ११८४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८. आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५०० । अ भण्डार ।

४४१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

४४११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०५ आसोज सुदी २ । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा........। पत्र सं० ३५ से ४७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वै० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा........। पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५२० । च भण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा........। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वै० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५४८ । अ भण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ५१६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५१७) और है ।

४४१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी है ।

४४१८. आदिनाथपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० १२३/४×५३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४५ । अ भण्डार ।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक……। पत्र सं० १ । आ० १०३/४×७१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२३ । अ भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है ।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक……। पत्र सं० २ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आदिनाथ तीर्थङ्कर की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । अ भण्डार ।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है ।

४४२१. आराधनाविधान……। पत्र सं० १७ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । व्य भण्डार ।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण आदि विधान दिये हुये है ।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ९८ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । अ भण्डार ।

विशेष—'विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण विरचितायां' ऐसा लिखा है ।

४४२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८५० द्वि० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ४८७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

४४२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ८८ । क भण्डार ।

४४२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—व्य भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३५, ४३०) और हैं ।

४४२६. इन्द्रध्वजमंडलपूजा……। पत्र सं० ६७ । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–मेलों एवं उत्सवों आदि के विधान में की जाने वाली पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने बधीचंदजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । मण्डल की सूची भी दी हुई है ।

४४२७. उपवासग्रहणविधि........ । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणनन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुणनंदि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकानां ग्रन्थ संख्यस्या ।।ग्रन्थाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७२) और है ।

४४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनों ओर सुन्दर बेल बूंटे हैं । श्री आदिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों ओर स्वर्ण के बेल बूंटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । झ भण्डार ।

४४३४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं० १८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर में प्रतिलिपि की थी।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० कार्त्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति मंत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० २६० । म भण्डार ।

४४४१. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । च भण्डार ।

विशेष—कांजीबारस का व्रत भादापुरी १२ को किया जाता है।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश में है।

४४४३. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा…… । पत्र सं० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । म भण्डार ।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ८ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०) और है।

४४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । क भण्डार ।

४४४६. कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १० । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४१३ । अ भण्डार ।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचंद्र। पत्र सं० ३०। आ० १०३/४×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६४ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ११। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३०) और है।

४४४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६७२ आसोज। वे० सं० २१३। अ भण्डार।

४४५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी १०। वे० सं० २२५। अ भण्डार।

विशेष—आ० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है।

४४५१. कर्मदहनपूजा……। पत्र सं० ११। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५२५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२४ भादवा सुदी १३ है।

४४५२. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८। वे० सं० १०। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

४४५३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७०८ श्रावण सुदी २। वे० सं० १०१। ङ भण्डार।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १००, १०१) और हैं।

४४५४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० ६३। च भण्डार।

४४५५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० १२५। छ भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है। इसी भण्डार में और इसी वेष्टन में १ प्रति और है।

४४५६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० २२। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं ७०६। अ भण्डार।

४४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ११। घ भण्डार।

४४५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ३। वे० सं० ५३२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५३१, ५३३) और हैं।

४४५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० १०३ । ङ भण्डार ।

४४६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३९) और है ।

४४६१. कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० का। सं० १९१७ । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । ख भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर मे मटंब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखितं पं० पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाट भट्टारक जी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्त्तिजी महाराज पाट विराज्या बैशाख सुदी ३ नैं त्याकी दिक्षा मे आया जोबनेरसुं पं० हीरालालजी पन्नालाल जयचंद उतरचा दोलतरामजी नोढा ओसवाल की होली मे पंडितराज नोगावां का उतरचा एक जायगां ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान·······। पत्र सं० ६ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९ । अ भण्डार ।

४४६३. कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १० । आ० ९३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

४४६४. कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्दर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि······ । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर। पत्र सं० ६। मा० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १०६। क भण्डार।

विशेष—पं० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ३४। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं १६२६ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५८१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमंडलाचार्यधर्मचंद्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्शिष्यणि बाई लाली इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्तं।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा.......। पत्र सं० ७। आ० १०¾×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४११। अ भण्डार।

४४६९. कलिकुण्डपूजा.......। पत्र सं० ३। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८३। अ भण्डार।

४४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०८। क भण्डार।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २५६। ज भण्डार। और भी पूजायें हैं।

४४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २२४। झ भण्डार।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०३। अ भण्डार।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजायें और हैं।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन। पत्र सं० २ से २८। आ० १०¾×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८७४ भादवा बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १३३। (क) क भण्डार।

४४७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ सुदी ४। वे० सं० १२४। छ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए पं० मनसुखजी ने गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी १३ । वे० सं० ११८ । अ भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा………। पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार भैरव की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री चंपालालजी टोंग्या खंडेलवाल ने पं० श्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८२२, १२२८) और हैं ।

४४७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४४८०. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

४४८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३. कंजिकाव्रतोद्यापन………। पत्र सं० १७ से २१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

४४८४. गजपथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति (नागौर पट्ट) । पत्र सं० ८ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

मूलसंघे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवत् ।
कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ॥१६॥

नागौरिपट्टे पि अनंतकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्त्तिः ।
तत्पट्टविद्यादिसुभूषणाख्यः तत्पट्टहेमादिसुकीर्त्तिमाख्यः ॥२०॥

हेमकीर्त्तिमुनेः पट्टे क्षेमेन्द्रादियशाःप्रभुः ।
तस्याज्ञया विरचितं गजपंथसुपूजनं ॥२१॥

विदुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।
प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धयर्थं चैकाह्निरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिदं पूजनं च विश्वभूषणावघुषं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्त्तिविरचितं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६. गणधरजयमाला……। पत्र सं० १ । आ० ८×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०० । अ भण्डार ।

४४८७ गणधरवलयपूजा……। पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२ । क भण्डार ।

४४८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल × । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

४४८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११९, १२२) और हैं ।

४४९०. गणधरवलयपूजा……। पत्र सं० २२ । आ० ११×४ इंच । भाषा-विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । व्य भण्डार ।

४४९१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९१२ । अ भण्डार ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९३. गिरनारक्षेत्रपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

४४९४. चतुर्दशीव्रतपूजा……। पत्र सं० १३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । क भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनंदि । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

४४९६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा........। पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है ।

४४९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १९०२ वैशाख बुदी १० । वे० सं० १३९ । ज भण्डार ।

४४९८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा........। पत्र सं० ४६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । झ भण्डार ।

विशेष—बलजी बज मुशरफ ने चढाई थी ।

४४९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १९०६ । वे० सं० ३३१ । ञ भण्डार ।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा........ । पत्र सं० ४४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९७ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं २ जयमाला हिन्दी में भी है ।

४५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १९०१ । वे० सं० १५६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १५५) और है ।

४५०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ भण्डार ।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह । पत्र सं० ४३ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । अ भण्डार ।

विशेष—झाझूराम ने प्रतिलिपि की थी । कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

४५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९०२ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

४५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १९४० फागुण बुदी १३ । वे० सं० ४६ । ख भण्डार ।

४५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० २३ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१, २२) और है ।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा……। पत्र सं० २०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ८८। आ० ११×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८१९ कार्तिक बुदी ३। ले० काल सं० १९१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७१९। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७२०, ८२७) और हैं।

४५०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १४५। क भण्डार।

४५१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल ×। वे० सं० ४७। ख भण्डार।

४५११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १९५६ कार्तिक सुदी १०। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५। घ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४५१३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १९२७ सावन सुदी ३। वे० सं० १६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और हैं।

४५१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वे० सं० ५४४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं।

४५१५. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २०२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २०४ मे ३ प्रतियां, २०५) और हैं।

४५१६. प्रति सं० ९। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १९४२ चैत्र सुदी १५। वे० सं० २६१। ज भण्डार।

४५१७. प्रति सं० १०। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। वे० सं० १८९। झ भण्डार।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने सं० १९०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) और है।

४५१८. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११५। ले० काल सं० १९४९ सावण सुदी २। वे० सं० ४४५। ञ भण्डार।

४५१९. प्रति सं० १२। पत्र सं० १४७। ले० काल सं० १९३७। वे० सं० १७०६। ट भण्डार।

विशेष—छोटेलाल भांवसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ६०। ग्रा० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१५८, २०८५) और हैं।

४५२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५०। ले० काल सं० १८७१ ग्रासोज सुदी ६। वे० सं० २४। ग भण्डार।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५) और है।

४५२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५१। ले० काल सं० १९९६। वे० सं० १७। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, २४) और हैं।

४५२३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७। ले० काल ×। वे० स० १५७। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १५८, १५६, ७८७) और हैं।

४५२४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १९२६। वे० सं० ५४६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५४६, ५४७, ५४८) और है।

४५२५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८६१। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० २१७, २१८, २२०/३) और है।

४५२६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० २०७। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०८) और हैं।

४५२७. प्रति सं० ८। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १८६१ श्रावण बुदी ४। वे० सं० १८। झ भण्डार।

विशेष—जैतराम रांवका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रावका ने विजेराम पांड्या के मन्दिर मे चढाई थी। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८, १८१) और हैं।

४५२८. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १८५२ ग्रासाढ सुदी १५। वे० सं० ६४। ञ भण्डार।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३२१) और है।

४५२९. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ६०। ग्रा० ११½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८० भादवा सुदी १०। ले० काल सं० १९१८ ग्रासोज बुदी १२। वे० सं० १४४। क भण्डार।

विशेष—अन्त में कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचंद जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहां से अमरावती गये।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल। पत्र सं० ५१। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२१। अ भण्डार।

४५३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० १४३। क भण्डार।

विशेष—पूजा के अन्त में कवि का परिचय भी है।

४५३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। वे० सं० २०३। छ भण्डार।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ५४। आ० ११½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५४ मंगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १९०१ कार्त्तिक सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ५५०। च भण्डार।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४५३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५। छ भण्डार।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द। पत्र सं० ६७। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ५५५। च भण्डार।

४५३६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८४। ले० काल सं० १९२८ बैशाख सुदी ५। वे० सं० ५५६। च भण्डार।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा........। पत्र सं० ७७। आ० ११×५¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१६ चैत्र सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

४५३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४। क भण्डार।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० ९×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८। ग भण्डार।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द। पत्र सं० ८। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। अ भण्डार।

विशेष—'चतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुआ है। जयमाल हिन्दी में है।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० ८½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१। क भण्डार।

४५४२. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.........। पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा । र० का काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं– पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान ।

४५४३. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.............। पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २११३) और है ।

४५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट भण्डार ।

४५४५. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.........। पत्र सं० ६ । आ० ११½×५¼ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५७ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नहीं है ।

४५४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४२७ । अ भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५४७. चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । अ भण्डार ।

४५४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६३ । वे० स० ४३० । अ भण्डार ।

विशेष—आमेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

४५४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा........ । पत्र सं० ५ । आ० ७×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२७ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६०२ । अ भण्डार ।

४५५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण । पत्र सं० १७० । आ० १२½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ४४५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है ।

४५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

४४५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म। पत्र सं० ८४। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ×। ले० काल सं० १६३७ बैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १२३। ख भण्डार।

४४५३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र। पत्र सं० ६६। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ×। ले० काल सं० १७१४ फाल्गुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २०४। ज भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिथौ शुक्रवासरे। वडसौलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्म्मनाथ चैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्राः तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्राः तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन कारगे चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखितं।

४४५४. चिंतामणिपूजा (बृहत्)—विद्याभूषण सूरि। पत्र सं० ११। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५१। क भण्डार।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं।

४४५५. चिंतामणिपार्श्वनाथपूजा (बृहद्)—शुभचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७४। अ भण्डार।

४४५६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८२। ले० काल सं० १६६१ पौष बुदी ११। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

४४५७. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा......। पत्र सं० ३। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११८४। अ भण्डार।

४४५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २८। ग भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं। चिन्तामणिस्तोत्र, कलिकुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा।

४४५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ६६। च भण्डार।

४४६०. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा......। पत्र सं० ११। आ० ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८३। च भण्डार।

४५६१. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८४०) और है।

४५६२. चौदहपूजा……। पत्र सं० ११। आ० १०×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९९। ज भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर अनंतनाथ तक पूजायें है।

४५६३. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं० ३५। आ० ११३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–६४ प्रकार की ऋद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। र० काल सं० १९१० सावन सुदी ७। ले० काल सं० १९५१। पूर्ण। वे० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम वृहद्गुर्वावलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) और हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९१०। वे० सं० ६७०। क भण्डार।

४५६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १९५२। वे० सं० २९। ग भण्डार।

४५६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १९२९ फागुण सुदी १२। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

४५६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० १९३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९४) और है।

४५६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं ७३४। च भण्डार।

४५६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १९२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १४३, २१६/३) और है।

४५७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६२/२ २९५) और हैं।

४५७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ४९। ले० काल ×। वे० सं० ५३४। ञ भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १९१३। ट भण्डार।

४५७३. छीतिनिवारणविधि……। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास । पत्र सं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान जिनपूजा सहित है । पं० चोखचन्द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० ९८ । च भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भांवासा भिनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा ...... । पत्र सं० १० । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–अन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७. जयमाल—रायचन्द । पत्र सं० १ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८५५ फागुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८. जलहरतेलाविधान...... । पत्र सं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है । इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है ।

४५७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १९२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान........। पत्र सं० २ । आ० ११×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९३ । अ भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०९६ । अ भण्डार ।

४५८२. जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) ...... । पत्र सं० २ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के मन्त्र भी दिये हैं ।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१ । क भण्डार ।

४५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८३ । वे० सं० १७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४५८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा.........। पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है ।

४५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२१ । वे सं० २६३ । ख भण्डार ।

४५८७. जिनगुणसंपत्तिपूजा.........। पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

४५८८ जिनपुरन्दरव्रतपूजा.........। पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । ङ भण्डार ।

४५८९. जिनपूजाफलप्राप्तिकथा ....। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४५९०. जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मूर्त्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानो की विधि । र० काल सं० १२८५ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १४९५ माघ बुदी ८ (शक सं० १३६०) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४९५ शाके १३६० वर्षे माघ वदि ८ गुरुवासरे......... ... .(अपूर्ण)

४५९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६३३ वर्षे.........।

४५९२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २७ । घ भण्डार ।

विशेष—मथुरा मे औरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारणे प्रसिद्धं ।
सिंहासनो श्रीमलभस्य क्षेटे सुदक्षिणाशा विषये विलीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गाः ।
दुर्वादिवागुन्मथनैकसज्ज विद्यागुनंदीश्वरसूरिमुख्यः ॥
तदन्वये योऽमरकोत्तिनाम्ना भट्टारको वा[illegible] ।
तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगायां ॥
पुर्यां शुभायां पट्टपशत्रुवत्यां सुवर्णकारणाव्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ । ञ भण्डार ।

विशेष—बंगाल में अकबरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में आचार्य कुन्दकुन्द के बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनंदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय में खंडेलवाल वंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज, बलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि में से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोद्यापन में पं० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नंद्यात् खंडिल्लवंशोत्थः केल्हणोन्यासविस्तरः ।
लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रगमं पुस्तकं ॥२०॥

४५६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भादवा बुदी २ । वे० सं० ४२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भौमे अद्येह राजपुरनगरवास्तव्यं आभ्यंतरनागरज्ञाती पंचोली त्यागराभाट्टसुत नरसिंहेन लिखितं ।

क भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) च भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १२०, १०५) तथा ञ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६. जिनयज्ञविधान……। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७. जिनस्नपन (अभिषेक पाठ)……। पत्र सं० १४ । आ० ६½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसंहिता……। पत्र सं० ४६ । आ० ११×८½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

४५६६. जिनसंहिता—भद्रबाहु। पत्र सं० १३०। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९६। क भण्डार।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि। पत्र सं० ८४। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १९७। क भण्डार।

विशेष— ५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं।

४६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १८५३। वे० सं० १९८। क भण्डार।

४६०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १११। ले० काल ×। वे० सं० ५९। ख भण्डार।

४६०३ जिनसंहिता·········। पत्र सं० १०९। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८५६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १९५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है। यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरसेन, जिनसेन पूज्यपाद तथा गुणभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है। ९९ पृष्ठों के अतिरिक्त १० पत्रो में ग्रन्थ मे सम्बन्धित ४३ यन्त्र दे रखे हैं।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० १२६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ बैशाख बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ४३८। अ भण्डार।

विशेष—लिछमणलाल से पं० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पचेवर वालों ने किला खण्डार मे प्रतिलिपि करवाई थी।

अन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतेसिंहजी बुलाया रैणवाललूं बेदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायौ उत्सव करायो। श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर में माल लियो दरोगा चत्रभुजजी वाली वगरू का गोत पाटणी रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय सूं हुवो।

४६०५. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल ×। वे० सं० १९४। क भण्डार।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र सं० ९५। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९१६ आसोज सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८७१३। क भण्डार।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया। पत्र सं० २९। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९३६ माह सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा……। पत्र सं० १८ । आ० १३×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ भण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । च भण्डार ।

४६१०. जिनाभिषेकनिर्णय ……। पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ ……। पत्र सं० २ से ३५ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । च भण्डार ।

४६१२. जैनविवाहपद्धति……। पत्र सं० ३४ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज भण्डार ।

४६१४. ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६ । ले० काल सं० १८६३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । च भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा……। पत्र सं० ७ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२३) और हैं ।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा……। पत्र सं० १२ । आ० ११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । क भण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा……। पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वान खुशाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । वारठो सुरेन्द्रकीर्तिजी को रच्यो ।

४६१९. णमोकारपैंतीसपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-णमोकार मन्त्र पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६६। अ भण्डार।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७८) और है।

४६२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १७९५ प्र० आसोज बुदी १। वे० सं० ३६४। अ भण्डार।

४६२१. णमोकारपैंतीसीव्रतविधान—आ० श्री कनककीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वे० सं० २३६। क भण्डार।

विशेष—डूंगरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४। अ भण्डार।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र। पत्र सं० १। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति वे० सं० २६१। और है।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा........। पत्र सं० २। आ० ११½×५। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६२। क भण्डार।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा........। पत्र सं० ३८। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-भूत, भविष्यत् तथा वर्त्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७४। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा..............। पत्र सं० ५। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०६। ट भण्डार।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ६७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८९४ कार्तिक बुदी १४। ले० काल सं० १९२८ भाद्रवा सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २७५। क भण्डार।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा........। पत्र सं० ५७। आ० ११×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८२। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वे० सं० २७३। क भण्डार।

४६२९. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा ······। पत्र सं० २० । आ० ११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५। छ भण्डार।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० ४१०। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८२८। ले० काल सं० १९७३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७॥-) लगे थे।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७६, ५७७) और हैं।

४६३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५०। ले० काल ×। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द। पत्र सं० ८५१। आ० १३×८¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२०३। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है।

४६३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०८८। ले० काल ×। वे० सं० २७०। क भण्डार।

४६३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९८७। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० २२९। छ भण्डार।

विशेष—दो वेष्टनों में है।

४६३५. तीसचौबीसीनाम········। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। च भण्डार।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ११६। आ० १०¾×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८०। च भण्डार।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी।

४६३७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १९०१ आषाढ सुदी २। वे० सं० ५७। झ भण्डार।

४६३८. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा········। पत्र सं० ६। आ० ८×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८०८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

विशेष—अढाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७९) और है।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र। पत्र स० १५४। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१ सावन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७३। छ भण्डार।

४६४०. तेरहद्वीपपूजा—अ० विश्वभूषण। पत्र सं० १०२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७ भादवा सुदी २। वे० सं० १२७। क भण्डार।

विशेष—विजैरामजी पांड्या ने बलदेव ब्राह्मण से लिखवाई थी।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २४। आ० ११½×६¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। वे० सं० ४३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) और है।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २०८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२४। पूर्ण। वे० सं० ५३५। अ भण्डार।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत। पत्र स० २३२। आ० १२½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७७ कार्त्तिक सुदी १२। ले० काल सं० १९९२ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० १७१। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५८१। च भण्डार।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २९४। आ० ११×७¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९४६ कार्त्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३४३। ज भण्डार।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान……। पत्र सं० ८६। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६१। अ भण्डार।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र। पत्र सं० १३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-तीनो काल में होने वाले तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७५। अ भण्डार।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा……। पत्र सं० ९। आ० १०×६¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० का० ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

४६४९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १७०४ पौष सुदी ६। वे० सं० २७९। क भण्डार।

विशेष—बसवा में आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६६१ भादवा सुदी ३ । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती भ्रजिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन सुदी १३ । वे० सं० ४११ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५) और है ।

४६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा……। पत्र सं० १६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा……। पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा……। पत्र सं० ६ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३½×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा……। पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा……। पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा……। पत्र सं० ५ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा……। पत्र सं० १४५। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१९। पूर्ण। वे० सं० ७९। ख भण्डार।

४६६२. दशलक्षणजयमाल—पं० रइधू। आ० १०×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–धर्म के दश भेदों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है।

४६६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७९५। वे० सं० ३०१। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०२) और है।

४६६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २९७। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९६) और है।

४६६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ८३। ग भण्डार।

विशेष—जोशी खुशालीराम ने टोंक में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८२, ८३/१) और है।

४६६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २९४। ङ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २९२) और है।

४६६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० १२६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५०) और है।

४६६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ९। ले० काल सं० १७८२ फागुण सुदी १२। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

४६६९. प्रति सं० ८। पत्र सं० ९। ले० काल सं० १८९८। वे० सं० ७३। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १९८, २०२) और है।

४६७०. प्रति सं० ९। पत्र स० ४। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १७०। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६८, २८५) और हैं।

४६७१. प्रति सं० १०। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७८६। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७८७, १७८८, १७९४) और हैं।

४६७२. दशलक्षणजयमाल—पं० भाव शर्मा। पत्र सं० ८। आ० १२×५½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ भादवा सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है।

४६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पौष बुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०१) और है ।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१२ । वे० सं० १८१ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है ।

४६७८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४) और हैं ।

४६७९. दशलक्षणजयमाल······ । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

४६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ७२९ । अ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २९७, २९८) और है ।

४६८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । वे० सं० १५३ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५२, १५४) और हैं ।

४६८४. दशलक्षणजयमाल········ । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११५ । अ भण्डार ।

४६८५. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७३६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८४ । ख भण्डार ।

विशेष—नागौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६८६. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । च भण्डार ।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव । पत्र सं० ६ । आ० १३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८२ । अ भण्डार ।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

४६८९. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२०४) और हैं ।

४६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ४ । वे० सं० ३०३ । क भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २९८) और है ।

४६९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७८५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७९१) और हैं ।

४६९२. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० ३७ । आ० ११×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० १० । आ० ८३×६३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है ।

४६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी २ । वे० सं० ३०० । क भण्डार ।

४६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । ज भण्डार ।

४६९६. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० ३५ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५८९) और है ।

४६९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

४६९८. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना द्यानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६९९. दशलक्षणमंडलपूजा……। पत्र सं० ६३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । क भण्डार ।

४७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । क भण्डार ।

४७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९३७ भादवा सुदी १० । वे० सं० ३०० । क भण्डार ।

४७०२. दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७९६ । अ भण्डार ।

४७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८२९ । वे० सं० ४९८ । अ भण्डार ।

४७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७९ आसोज सुदी ५ । वे० सं० १४९ । ख भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५. दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र सं० १९ – २५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

४७०६. दशलक्षणव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र सं० १४ । आ० १२३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । झ भण्डार ।

४७०८. दशलक्षणव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ४३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७० । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४७०६. दशलक्षणविधानपूजा……। पत्र सं० ३०। ग्रा० १२½×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और है।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र। पत्र सं० ५। ग्रा० १०¼×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। च भण्डार।

४७११. देवपूजा……। पत्र सं० ११। ग्रा० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५३। अ भण्डार।

४७१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६। घ भण्डार।

४७१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०५। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०६) और है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १६१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६२, १६३) और है।

४७१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी ८। वे० सं० १३३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६६, १७८) और हैं।

४७१६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६५० आषाढ बुदी १२। वे० सं० २१४२। ट भण्डार।

विशेष—छीतरमल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

४७१७. देवपूजाटीका……। पत्र सं० ८। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १११। छ भण्डार।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० १७। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ५११। अ भण्डार।

४७१९. देवसिद्धपूजा……। पत्र सं० १५। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५१। च भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

४७२०. द्वादशव्रतपूजा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० ७। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८४। अ भण्डार।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० ७३×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन...... । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १९३० आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशांगपूजा........ । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी वेष्टन में २ प्रतियां और हैं ।

४७२९. द्वादशांगपूजा ...... । पत्र सं० ६ । आ० १२×७३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२७) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फागुण सुदी १० । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४७३४. धर्मचक्रपूजा········। पत्र सं० १० । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । अ भण्डार ।

४७३५. ध्वजारोपण········। पत्र सं० ११ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजाविधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपणमंत्र············। पत्र सं० ४ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । अ भण्डार ।

४७३७. ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । च भण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपणविधि·······। पत्र सं० १३ । आ० १०¾×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०   । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४८८) और हैं ।

४७३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९१९ । वे० सं० ३१८ । ज भण्डार ।

४७४०. ध्वजारोहणविधि ···········। पत्र सं० ८ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९२७ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । ख भण्डार ।

४७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ – ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८२२ । ट भण्डार ।

४७४२. नन्दीश्वरजयमाल········। पत्र सं० २ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ । ट भण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल·······। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । ट भण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १० । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११० । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० सं० १११ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । च भण्डार ।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा…… । पत्र सं० ६ । आ० ११×५¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७४१ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है ।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १०½×५¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४) और हैं ।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा…… । पत्र सं० ४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ६×७ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—मकरीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ११ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

४७५७. नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पन्नालाल। पत्र सं० २६। मा० ११३/४×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास। पत्र स० १११। मा० ११×८१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६६०। ले० काल सं० १६६२। पूर्ण। वे० सं० ३५०। क भण्डार।

विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) रु० खर्च हुये थे।

४७५६. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण। पत्र सं० २०। मा० १२३/४×५३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। ख भण्डार।

४७६०. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्त्ति। पत्र सं० १३। मा० ८१/२×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५७ आसाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१७। ट भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नही है। तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७६१. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ५। मा० ११३/४×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४७६२. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ३०। मा० ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ३५१। क भण्डार।

विशेष—स्योजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७६३. नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द। पत्र सं० ४६। मा० ८३/४×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १७८। झ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल पापड़ीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाड़िया से प्रतिलिपि कराई थी।

४७६४ नन्दसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० १० मा० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वे० सं० ५६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०३) और है।

४७६५. नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु। पत्र सं० ८ मा० १०३/४×५३/४ इञ्च। भाषा- संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२। ज भण्डार।

४७६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २३। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थङ्कर की पूजा करनी चाहिए, यह लिखा है।

४७६७. नवग्रहपूजा·········। पत्र सं० ७ । प्रा० ११½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और हैं।

४७६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२७) और हैं।

४७६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० । २०३ ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १८५, १६३, २८०) और हैं।

४७७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१. नवग्रहपूजा·············। पत्र सं० २६ । प्रा० ६×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१३) और हैं।

४७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन·········। पत्र सं० १० । प्रा० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पृष्ठ नहीं है।

४७७४. नित्यक्रिया·········। पत्र सं० ६८ । प्रा० ८½×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ६४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं हैं।

४७७५. नित्यनियमपूजा·········। पत्र सं० २६ । प्रा० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७०, ३७१) और हैं।

४७७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ३६० से ३६३) और हैं।

४७७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

४७७८. नित्यनियमपूजा.......। पत्र सं० १५ । आ० १०×७ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७०८, १११४) और हैं ।

४७७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १९४० कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६९) और हैं ।

४७८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२१/२, २२२/२) और हैं ।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४९ । आ० ६३/४×६३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२१ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९२३ । पूर्ण । वे० सं० ४०१ । अ भण्डार ।

४७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १९२८ सावन सुदी १० । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७६) और है ।

४७८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९२१ माघ सुदी २ । वे० सं० ३७१ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७०) और है ।

४७८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९५५ ज्येष्ठ सुदी ७ । वे० सं० २१४ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जीर्ण हैं ।

४७८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । झ भण्डार ।

विशेष—इसका पुट्ठा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

४७८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९३३ । वे० सं० १८९९ । ट भण्डार ।

४७८७. नित्यनियमपूजाभाषा....... । पत्र सं० १६ । आ० ८३/४×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९९५ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

४७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । ग भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शुक्रवार की सहेली (संगीत सहेली) सं० १९५९ में स्थापित हुई थी । उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है ।

४७८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६१६ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० २६२ । ङ भण्डार ।

४७९१. प्रति सं० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई ।

४७९२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह·········। पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७९३. नित्यपूजासंग्रह·········। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह·········। पत्र सं० ५ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

४७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४७९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६६५, २०६३) और हैं ।

४७९७. नित्यपूजासंग्रह·········। पत्र सं० २-३० । आ० ७¾×२½ इंच । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८३, १८४) और है ।

४७९८. नित्यपूजासंग्रह·········। पत्र सं० ३६ । आ० १०½×७ इंच । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । ङ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नही है कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३२२) और है ।

४७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । छ भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा............। पत्र सं० १५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय- पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) और हैं।

४८०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५) और है।

४८०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ६०३ । च भण्डार ।

४८०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवचने प्रकाशक............ संग्रहीतविद्वज्जबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अष्टोल्लास समाप्त ।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा............। पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

४८०७. निर्वाणकांडपूजा ...... । पत्र सं० ५ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९९८ सावण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द पंसारी ने ईश्वरलाल चादवाड़ मे कराई थी ।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द । पत्र सं० १६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९१९ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

४८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९२७ । वे० सं० ३७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७७, ३७८) और है ।

४८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १९३५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ६०४ । च भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज सुहाड़िया के मन्दिर में चढायी । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०५, ६०७) और हैं।

४८११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९४३ । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—सुन्दरलाल पांडे चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २५५ । ज भण्डार ।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा........| पत्र सं० ११ | आ० ११×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८७१। ले० काल सं० १९९९। पूर्ण। वे० सं० १३०५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०९९) और हैं।

४८१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७। वे० सं० २१९। ञ भण्डार। [गुटका साइज]

४८१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २। वे० सं० १८७। ञ भण्डार।

४८१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। च भण्डार।

विशेष— दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७. निर्वाणपूजा.........| पत्र सं० १। आ० १२×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१८। अ भण्डार।

४८१८. निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल। पत्र सं० ३३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २। ले० काल सं० १८८८ चैत्र बुदी ३। वे० सं० ८२। ञ भण्डार।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। अ भण्डार।

४८२०. नेमिनाथपूजा.........| पत्र सं० १। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३१४। अ भण्डार।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम। पत्र सं० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४२। अ भण्डार।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक.......। पत्र सं० १। आ० ९½×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२४। अ भण्डार।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

४८२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८७९। वे० सं० १०३७। अ भण्डार।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल। पत्र सं० १२९। आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५९। अ भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—अरुणमणि। पत्र सं० ३६। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। ख भण्डार।

४८२७. पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्त्ति। पत्र सं० २२। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल १६११। पूर्ण। वे० सं० ५४। ञ भण्डार।

४८२८. पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभसिंह। पत्र सं० १८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८६। अ भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्त्ति। पत्र सं० ७-२६। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८५। अ भण्डार।

४८३०. पञ्चकल्याणकपूजा—सुधासागर। पत्र सं० १६। आ० ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४०६। क भण्डार।

४८३१. पञ्चकल्याणकपूजा......। पत्र सं० १६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०८ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १००७। अ भण्डार।

४८३२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ३०१। ख भण्डार।

४८३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३८४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३८५) और है।

४८३४ प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १२५ ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १३७, १८०) और है।

४८३५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० १६३। च भण्डार।

४८३६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८२१। वे० सं० २३६। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) और है।

४८३७. पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मित्तल। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र० काल सं० १६१० भादवा सुदी १३। ले० काल सं० १६५२। पूर्ण। वे० स० ७३०। अ भण्डार।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७१, ६७२) और हैं।

४८३८. पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द। पत्र सं० १०४। आ० १२×५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ५३७। अ भण्डार।

४८३९. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ५० । ग भण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ माह बुदी ११ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च भण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २९८ । ज भण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १९२८ । वे० सं० ५३९ । ब भण्डार ।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११½×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९१० भादवा सुदी १३ । ले० काल सं० १९१९ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा........ । पत्र सं० २५ । आ० ९×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । ख भण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० १०० । ख भण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

४८५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१४) और है ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा……। पत्र सं० ७ । आ० ८३/४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । भ्र भण्डार ।

४८५५. पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । आ० १०×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के शिष्य पांडे डूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन……। पत्र सं० ६१ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×६१/२ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

४८६३ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × ले० काल सं० १७६१ कार्त्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद में जयसिंहपुरा मे पं० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५९ । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरू ग्राम में जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८७३ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५) और है ।

४८६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । ड भण्डार ।

४८६८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा......। पत्र सं० १५ । आ० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० १६२ । ड भण्डार ।

४८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८९२ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०८९) और है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८९२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९८७ । वे० सं० ३८९ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३९०) और है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९२६ । वे० सं० ५१ । म भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९१३ । वे० सं० १८७९ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा......। पत्र सं० ३६ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९१ । ड भण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१९ । म भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३. पञ्चबालयतिपूजा·······| पत्र सं० ६ | आ० ९×७ इंच। भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण | वे० सं० २२२ | छ भण्डार।

४८८४. पञ्चमङ्गलपूजा··········| पत्र सं० २५ | आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा | र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण | वे० सं० २२४ | ञ भण्डार।

४८८५. पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति | पत्र सं० ४ | आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा। र० काल सं० १८२८ भादवा सुदी ९। ले० काल ×। पूर्ण | वे० सं० ७४ | अ भण्डार।

४८८६. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ | ले० काल × | वे० सं० ३९७ | क भण्डार।

४८८७. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ५ | ले० काल सं० १८८३ श्रावण सुदी ७ | वे० सं० १९८ | ख भण्डार।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९९) और है।

४८८८. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ३ | ले० काल × | वे० सं० ११७ | छ भण्डार।

४८८९. प्रति सं० ५ | पत्र सं० ५ | ले० काल सं० १८९२ श्रावण बुदी ५ | वे० सं० १७० | ज भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय मे गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४८९०. पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति | पत्र सं० ५ | आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१० | अ भण्डार।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४। पूर्ण | वे० सं० ३९८ | क भण्डार।

विशेष—शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४८९२. प्रति सं० २ | पत्र सं० ८ | ले० काल सं० १९१५ आसोज बुदी ५ | वे० सं० २०० | ख भण्डार।

४८९३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। आ० १०½×५½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१२ कार्तिक बुदी ७ | पूर्ण | वे० सं० ११७ | छ भण्डार।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा·······| पत्र सं० १० | आ० ८½×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय–पूजा | र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५३। ख भण्डार।

विशेष—गाजी नारायन शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

४८९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६०५ आसोज बुदी १२ । वे० सं० ६४ । क भण्डार ।

४८९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३८८ । भण्डार ।

४८९७. पञ्चमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

४८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४९००. पञ्चमेरुपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १६६१ कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४९०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

४९०२. पञ्चमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८½X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५१८) और है ।

४९०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४९०४. पञ्चमेरुपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क भण्डार ।

४९०५. पञ्चमेरुपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

४९०६. पञ्चमेरुपूजा······ । पत्र सं० २ । आ० ११X५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय- पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

४९०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४८७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) और है ।

४९०८. पञ्चमेरुस्थापनपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ९ । आ० १०½X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८६१ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । च भण्डार ।

४९०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ७४ । च भण्डार ।

४५१०. पद्मावतीपूजा.............। पत्र सं० ५ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ११८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है ।

४५११. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है । अन्त मे २ यन्त्र भी दिये हुये हैं । महायंत्र लिखने की विधि भी दी हुई है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०५) और है ।

४५१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । ञ भण्डार ।

४५१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

४५१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । ज भण्डार ।

४५१५. पद्मावतीमंडलपूजा.......। पत्र स० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७६ । अ भण्डार ।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है ।

४५१६. पद्मावतिशान्तिक.......। पत्र सं० १७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति मन्त्रम सहित है ।

४५१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा........। पत्र सं० १४ । आ० १०×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४५१८. पल्यविधानपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१९. पल्यविधानपूजा—रत्ननन्दि । पत्र स० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । च भण्डार ।

४५२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १७६० वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ११२ । ञ भण्डार ।

विशेष—बस्सी नगर (बूंदी मध्य) में आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी ।

४९२२. पल्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

४९२३. पल्यविधानपूजा........। आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९७५ । ख भण्डार ।

४९२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण । वे० सं० १०५४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४९२५. पल्यव्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ९ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८२, ९०७) और हैं ।

४९२६. पक्षोपवासविधि........। पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । ख भण्डार ।

४९२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र सं० २ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९० । ख भण्डार ।

४९२८. पार्श्वनाथपूजा........। पत्र सं० ४ । आ० ७×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६२ । ख भण्डार ।

४९२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

४९३०. पुण्याहवाचन........। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शान्ति विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५५६, ११९३, ३८०१) और हैं ।

४९३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १२३ । ख भण्डार ।

४९३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९०९ जेष्ठ सुदी ३ । वे० सं० २७ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४९३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९६४ पौष सुदी १० । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

४६३४. पुरंदरव्रतोद्यापन.......। पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६११ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । घ भण्डार ।

४६३५. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० रतनचन्द । पत्र सं० ५ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १६८१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । च भण्डार ।

विशेष—यह रचना सागवाडपुर में श्रावकों की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द ने सं० १६८१ मे लिखी थी।

४६३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में और है ।

४६३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३८७ । ञ भण्डार ।

४६३८. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । अ भण्डार ।

४६३९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा.......। पत्र सं० ८ । आ० १०×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२२ । च भण्डार ।

४६४०. पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन—पं० गंगादास । पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ४८० । अ भण्डार ।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द के शिष्य थे । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

४६४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८८२ आसोज बुदी १४ । वे० सं० ७८ । झ भण्डार ।

४६४२. पूजाक्रिया.......। पत्र सं० २ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा करने की विधि का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६४३. पूजापाठसंग्रह.......। पत्र सं० २ से ४० । आ० ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७८) और है ।

४६४४. पूजापाठसंग्रह.......। पत्र सं० ३८ । आ० ७×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से है । अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहां दिया जारहा है ।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ५६० । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

१. पुष्पदन्त जिनपूजा — संस्कृत
२. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा ”
३. चन्द्रप्रभपूजा ”
४. शान्तिनाथपूजा ”
५. मुनिसुव्रतनाथपूजा ”
६. दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि प्राकृत ले० काल सं० १९३७
७. ऋषभदेवस्तोत्र ” ”

४६४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८९९ द्वि० चैत्र बुदी २ । वे० सं० ४५३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७२९, ७३३, १३७०, २०९७) और हैं ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । छ भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० सं० ४८० । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्षोडशकारणपूजा	—	”
ज्येष्ठजिनवरव्रतोद्यापनपूजा	—	”
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	”
अक्षयनिधिपूजा	—	”
[illegible]	—	”

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	भ० रत्नचन्द	"
णमोकारपञ्चविंशतिकापूजा	—	"
सारस्वतमंत्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७६, ४७६) और हैं।

४६५०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है।

४६५१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) और है।

४६५२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३६ । अ भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६५३. पूजापाठसंग्रह........। पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है। सामान्य पूजा पाठोंकी इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८८२, ६६४, १०००) और हैं।

४६५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४६१, ४६२) और हैं।

४६५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह·········। पत्र सं० ४०। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३५। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा	—	"
विद्यमानबीसतीर्थङ्करों की पूजा	—	र० काल सं० १६४१
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ७५६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और हैं।

४६५८ प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजा पाठ है—

चौबीसदण्डक	—	दौलतराम
विनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थङ्कर जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	द्यानतराम

४६५६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २। वे० सं० २२०। ज भण्डार।

४६६०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६ से २२२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७०। झ भण्डार।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद। पत्र सं० । आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की वंदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगंधदशमीपूजा	"	"

४६६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३. पूजामहात्म्यविधि……। पत्र सं० ३ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । च भण्डार ।

४६६४. पूजावराविधि……। पत्र सं० ६ । आ० ८½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधि । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १४८७ । अ भण्डार ।

४६६५. पूजापाठ……। पत्र सं० १४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । ख भण्डार ।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४६६६. पूजाविधि…… ……। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय- विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८६ । अ भण्डार ।

४६६७. पूजाविधि……। पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४६६८. पूजाष्टक—आशानन्द । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२११ । अ भण्डार ।

४६६९. पूजाष्टक—लोहट । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०६ । अ भण्डार ।

४६७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । अ भण्डार ।

४६७१. पूजाष्टक……। पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१३ । अ भण्डार ।

४६७२. पूजाष्टक……। पत्र सं० ११ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७८ । ट भण्डार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१२। अ भण्डार।

४६७४. पूजासंग्रह……। पत्र सं० ३३१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३। पूर्ण। वे० सं० ४६० से ४७४। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१. कांजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२. श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३. रोहिणीव्रतपूजा	मंडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५. लब्धिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६. ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६९
७. रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	"	३०	४६७
९. रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१०. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११. शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२. गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३. त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४. पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५. त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं।

४६७५. प्रति सं० २। पत्र सं० १४३। ले० काल सं० १६५८। वे० सं० ४७५। क भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा
चिंतामणिव्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकल्याणकपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	"
गणधरवलयपूजा	—	"
सुगंधदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्ठिकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्त्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	"
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	"

४६७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १६५६। वे० सं० ४८३। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"
प्रतिमासांतचतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी।

नाम	कर्त्ता	भाषा
लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणविधान	×	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८) और है जिनमे सामान्य पूजायें हैं।

४६७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १११। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, आनन्द स्तवन एवं गणधरवलय जयमाल। प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है।

४६७८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ४६४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६०, ४६४) और हैं।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ख भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकार पूजा का संग्रह है ।

४६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५५ से ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८ से ११५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८०० आषाढ सुदी १ । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	१–१६
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१६–२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४–२५
लघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५–२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६–३३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	"	३३–३६

आचार्य विश्वकीर्त्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	"	३६–४५

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६६, ४७०) और हैं जिनमें नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह........। पत्र सं० ३४ । आ० १०½×५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडशकारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५. पूजासंग्रह........। पत्र सं० २ से ४५ । आ० ७¾×५¾ इंच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २२८) और है ।

४६८६. पूजासंग्रह........। पत्र सं० ४६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० २४० । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१. भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	"		सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३. बीसतीर्थङ्करपूजा	—	"		×	अपूर्ण
४. नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	"	×	सं० १८८६	पूर्ण
७. ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	"			
८. नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१०. रत्नत्रयपूजा	—	"			
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	"	र० काल १८००	ले० काल १८२७	
१२. रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	"		" " १८२६	
१३. बारहव्रतो का ब्योरा	—	हिन्दी			
१४. पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत			
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"		ले० काल १८२०	
१६. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	"		ले० काल १८९२	
१७. पंचाधिकार	—	"			
१८. पुरन्दरपूजा	—				
१९. अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	"			
२०. परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	"			
२१. पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	"			
२२. रोहिणीव्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	"			
२३. जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	"			
२४. सौख्यवाक्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	"			

२५. कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६. सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	ले० काल सं० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल सं० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणपूजा	—	"	
३२ षोडशकारणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
३३. दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	अपूर्ण
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० काल १८५०
३५ लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६. अंकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७. रामोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	"	
३८. मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९. शान्तिचक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१. सुखसंपत्तिपूजा	—	"	
४२. क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	
४४. चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	ले० काल १८३०
४५ णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७ त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९. मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०. पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

३१. नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
३२. रत्नत्रयपूजा	—	"	ले० काल १८१७
३३. दशलक्षणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	

टब्बा टीका सहित है।

५६८७. पूजासंग्रह……। पत्र सं० १११। आ० ११३/४×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	र० काल सं० १८६८
सम्मेदशिखरपूजा	×	"	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	"	र० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	र० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	"	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नांदीमंगलपूजा	×	"	
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्ति	"	

५६८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

५६८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चकल्याणकमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १-३
पञ्चकल्याणकपूजा	×	संस्कृत	" ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	" १३-२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	संस्कृत	" २७-४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	" १-११
नन्दीश्वरव्रतविधान	"	"	" १२-२६

५६९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

४९९१. पूजा एवं कथा संग्रह—खुशालचन्द । पत्र सं० ५० । आ० ८×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, दशलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणकथा, मेरुपंक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४९९२. पूजासंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० ५१ । आ० ९¾×५¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४९९३. पूजासंग्रह………… । पत्र सं० ६ । आ० ८½×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७३४, ९७१, १३१६, १३७७) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४९९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४९९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ङ भण्डार ।

४९९६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १९५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा द्यानतराय कृत । अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४९९७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३) और हैं जो सभी अपूर्ण हैं ।

४९९८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० ६३७ । च भण्डार ।

४९९९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०००. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३४ ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजायें हैं ।

५००१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९३५ । छ भण्डार ।

५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द । पत्र सं० २० । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं ।

५००३. पूजासार………। पत्र सं० ८६ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । अ भण्डार ।

५००४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३०) और है ।

५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । अ भण्डार ।

विशेष—दीवान ताराचन्द ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५००६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०० भादवा बुदी १० । वे० सं० ४८४ । क भण्डार ।

५००७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २८५ । ञ भण्डार ।

५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द । पत्र सं० १२ । आ० १२३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी ।

५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा………। पत्र सं० १३ । आ० १०×७१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

५०१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २३३ । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल मोहा का ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । दीवान अमरचन्दजी संगही ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

५०११. प्रतिष्ठादर्श—भ० श्री राजकीर्त्ति । पत्र सं० २१ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा (विधान) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ क भण्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन। पत्र सं० १४। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ५०२। क भण्डार।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन)। पत्र सं० १३१। आ० ११३×८३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९४६ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४८५। क भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है।

५०१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १९४९। वे० सं० ४८७। क भण्डार।

विशेष—३९ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं।

५०१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५५। ले० काल सं० १९४९। वे० सं० ४८६। क भण्डार।

विशेष—बालाबक्स व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्त में एक अतिरिक्त पत्र पर अङ्कस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है। उसमे अङ्क लिखे हुये हैं।

५०१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७१। ञ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुंदकुंदाचार्य पट्टोदयभूधरदिवामणि श्रीवसुबिन्द्वाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः। प्रतिष्ठासारः पूर्णमगमत्‌।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर। पत्र सं० ११९। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १२। ञ भण्डार।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ·······। पत्र सं० १। आ० ३३ गज लंबा १० इंच चौड़ा। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४०। अ भण्डार।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है। कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं। यह कपड़े की १० इंच चौड़ी पट्टी पर लिपटता हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सिद्धिः ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ संवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहट्टकपथे श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ॥

५०१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८९१ चैत्र बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पत्र में प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र सं० २९ । आ० ११३⁄४×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८९ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वसुविन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुंकुण नामके देश सहद्याचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४९०) और है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि.............। पत्र सं० १७६ से १९९ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ९९ । आ० १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४९१ । क भण्डार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार.............। पत्र सं० ८५ । आ० १२३⁄४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ आषाढ सुदी १० । वे० सं० २८९ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४. प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० २१ । आ० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

५०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९९० । वे० सं० ४५९ । क भण्डार ।

५०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १९७७ । वे० सं० ४९२ । क भण्डार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७३९ बैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । श भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार.............। पत्र सं० ७६ । आ० १०३⁄४×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ । ख भण्डार ।

५०२९. प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह.............। पत्र सं० २१ । आ० १३×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण । वे० सं० ४९३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा……। पत्र सं० १। आ० ६¾×६¾ इंच। भाषा संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७। ङ भण्डार।

५०३१. बाल्यकालवर्णन………। पत्र सं० ४ से २१। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधि विधान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—बालक के गर्भमें आने के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है।

५०३२. बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा। पत्र सं० ५८। आ० १२¾×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

५०३३. बीसतीर्थङ्करपूजा……। पत्र सं० ५३। आ० १३×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३२२। ङ भण्डार।

५०३४. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७१। ऋ भण्डार।

५०३५. भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल × ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३६। क भण्डार।

५०३६. भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण। पत्र सं० १३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २५२। च भण्डार।

विशेष— १०, ११, १२वां पत्र नहीं है।

५०३७. प्रति सं० २। पत्र स० ८। ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी १। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरवंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५०३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८६१ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

५०३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६११ आसोज सुदी १२। वे० सं० ५० । ऋ भण्डार।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है।

५०४०. भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्त्ति। पत्र सं० ७। आ० १०½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल सं० १६६६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३७। क भण्डार।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य संवत्सरेहि
विशदनभसिमासे सप्तमी मंदवारे ।
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या केशवार्मतमेन ॥

५०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । छ भण्डार ।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा……। पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

५०४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५१ । च भण्डार ।

५०४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । ञ भण्डार ।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह— द्यानतराय । पत्र सं० २६ से ३६ । आ० १२३⁄४×७३⁄४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह…… ……। पत्र सं० २४ से ३१ । आ० १२३⁄४×७३⁄४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४७. भावजिनपूजा……। पत्र सं० १ । आ० ११३⁄४×५३⁄४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

५०४८. भावनापच्चीसीव्रतोद्यापन…………। पत्र सं० ३ । आ० १२३⁄४×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

५०४९. मंडलों के चित्र…………। पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले० काल × । वे० सं० ११८ । ख भण्डार ।

विशेष—चित्र सं० ५२ है । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

१. श्रुतस्कंध	(कोष्ठ २)	७. ऋषिमंडल	(„ ५६)
२. क्षेपनक्रिया	(कोष्ठ ५३)	८. सप्तऋषिमंडल	(„ ७)
३. बृहद्सिद्धचक्र	(„ ८६)	९. सोलहकारण	(„ २५६)
४. जिनगुणसंपत्ति	(„ १०१)	१०. चौबीसीमहाराज	(„ १२०)
५. सिद्धकूट	(„ १०१)	११. शांतिचक्र	(„ २४)
६. चितामणिपार्श्वनाथ	(„ ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र	(„ ४८)

१३. बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६१)
१४. पांचमाह की चौदस („ २५)
१५. अनन्तका मंडल („ १६६)
१६. मेघमालाव्रत („ १५०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)
१८. लब्धिविधान („ ८१)
१९. रत्नत्रय („ २९)
२०. पञ्चकल्याणक („ १२०)
२१. पञ्चपरमेष्ठी („ १६१)
२२. रविवारव्रत („ ८१)
२३. मुक्तावली („ ८१)
२४. कर्मदहन („ १४८)
२५. कांजीबारस („ ६४)
२६. कर्मचूर („ ६४)
२७ ज्येष्ठजिनवर („ ४६)
२८. बारहमाह की पञ्चमी („ ६५)
२९. बारमाह की पञ्चमी („ २५)
३०. फलफांदल [पञ्चमेरु] („ २५)
३१. पांचवासों का मंडल („ २५)
३२. अंकुरारोपण (कोष्ठ)
३३. गणधरवलय („ ४८)
३४. नवग्रह („ ९)
३५. सुगन्धदशमी („ ६०)
३६. सारस्वतयंत्रमंडल („ २८)
३७. शास्त्रजी का मंडल („ १२)
३८. अक्षयनिधिमंडल („ १५०)
३९. अठाई का मंडल („ ५२)
४०, अंकुरारोपण („ —)
४१. कलिकुंडपार्श्वनाथ („ ८)
४२. विमानशुद्धिशांतिक („ १०८)
४३. वासठकुमार („ ५२)
४४. धर्मचक्र („ १५७)
४५. लघुशान्तिक („ —)
४६. विमानशुद्धिशांतिक („ ८१)
४७. छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर („ २४)
४८. श्रुतज्ञान („ १५८)
४९. दशलक्षण („ १००)

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३८ क । ख भण्डार ।

५०५१. मंडपविधि……। पत्र सं० ४ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

५०५२. मंडपविधि……। पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । ङ भण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा……। पत्र सं० ५६ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५०२४. महावीरनिर्वाणपूजा ······ । पत्र स० ३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० ६१० । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत मे और है ।

५०२५. महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा ········· । पत्र स० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२१६) और है ।

५०२६ महावीरपूजा—वृन्दावन । पत्र स० १ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

५०२७. मांगीतुङ्गीगिरिमंडलपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० १३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल स० १७५६ । ले० काल स० १६४० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १४२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पत्रो मे विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसघे विलकुद्विभाति श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीद्रचन्द्र ।
महद्बलात्कारगणाविगच्छ लब्धप्रतिष्ठा किलपद्मनाम ।।१।।
जातोऽसौ किलधर्म्मकीर्त्तिरमल वादीभ सार्द्दूलवत
साहित्यागमतर्कपाठ्नपटुश्चारित्रभारोद्वह ।
तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगणि शीलाबरवेष्टित
तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यकला केवली
श्रीमज्जगद्भूषणवेदभूषनैयायिकाचारविचारदक्ष ।
कवीन्द्रचन्द्रोरिव कालिदास-पट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ।।३।।
तत्पट्टे प्रकटो जात विश्वभूषण योगिन ।
तैनेद रचितो यत्र भव्यात्मासुख हेतवे ।।४।।
षटवह्नि रिषिश्चन्द्रवत्सरे माघमासके
एकादश्यामगमत्पूर्णमेवात्मलिकपुरे ।।५।।

५०२८ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६६ । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—मांगी तु गी की कमलाकार मण्डल रचना की है । पत्रो का कुछ हिस्सा चूहोने काट रखा है ।

५०५९. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन ...... । पत्र सं० २ । आ० १२½×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा ......। पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ । च भण्डार ।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा.......... । पत्र सं० १६ । आ० ११½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान ......। पत्र सं० २४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६२५ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । छ भण्डार ।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुखसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

५०६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

५०६५. मेघमालाविधि ...... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा ...... । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

५०६७. रत्नत्रयउद्यापनपूजा ... । पत्र सं० २६ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति और है ।

५०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५०६९. रत्नत्रयजयमाल ... । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७१) और है ।

५०७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९१२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५६) और है ।

५०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

५०७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० २०० । म्ह भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०१) और है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाल ······ । पत्र सं० ६ । आ० १०X७ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है । पत्र ५ से अनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाथ पूजा दी हुई है ।

५०७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां इसी वेष्टन मे और हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाल ······ । पत्र सं० ६ । आ० १०३/४X४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७४१) और है ।

५०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ७८४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० २०३ । म्ह भण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र सं० ५ । आ० १२X७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

५०८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० ६२९, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) और हैं ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९ । ले० काल X । वे० सं० ८५ । घ भण्डार ।

५०८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९२८ कार्त्तिक बुदी १० । वे० सं० ६४४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६४४, ६४६) और हैं ।

५०८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल ………| पत्र सं० ३ | आ० ११३/४×४ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | वे० सं० ६३६ | क भण्डार |

५०८५. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० सं० ६६७ | च भण्डार |

५०८६. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ५ | ले० काल सं० १६०७ द्वि० आसोज बुदी १ | वे० सं० १८५ | झ भण्डार |

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर | पत्र सं० ४ | आ० ८३/४×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १११० | अ भण्डार |

५०८८. रत्नत्रयपूजा—केशवसेन | पत्र सं० १२ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २६६ | च भण्डार |

५०८९. प्रति सं० २ | पत्र सं० ८ | ले० काल × | वे० सं० ४७६ | अ भण्डार |

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि | पत्र सं० १३ | आ० १०३/४×५३/४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३०० | च भण्डार |

५०९१. प्रति सं० २ | पत्र सं० १३ | ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ | वे० सं० ३०५ | च भण्डार |

५०९२. रत्नत्रयपूजा……… | पत्र सं० १५ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × पूर्ण | वे० स० ४७८ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं |

५०९३. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ | ले० काल सं० १९८१ | वे० सं० ३०१ | ख भण्डार |

५०९४. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १४ | ले० काल × | वे० सं० ८६ | घ भण्डार |

५०९५. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ८ | ले० काल सं० १९१६ | सं० वे० ६४७ | ङ भण्डार |

विशेष—छोटूलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी |

५०९६. प्रति सं० ५ | पत्र सं० १८ | ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३ | वे० सं० ३०१ | च भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं |

५०९७. प्रति सं० ६ | पत्र सं० ८ | ले० काल × | वे० सं० ६० | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं |

५०९८. प्रति सं० ७ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १२७५ | ट भण्डार |

५०९९. रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय | पत्र सं० २ से ५ | आ० १०३/४×५३/४ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल सं० १९६७ पौष बुदी १ | अपूर्ण | वे० सं० ६३३ | क भण्डार |

५१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । अ भण्डार ।

५१०१. रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी (पुरानी) विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ० १२½×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिम— सिहि रिसिकित्ति मुहसीसे,
रिसह दास बुहवास भणीसे ।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संखेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा………। पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । अ भण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क भण्डार ।

५१०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १९९४ पौष बुदी २ । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४८) और है ।

५१०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) और है ।

५१०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९७८ । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । ज भण्डार ।

५१०९. रत्नत्रयमंडलविधान………। पत्र सं० ३५ । आ० १०×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७ । क्ष भण्डार ।

५११०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्त्ति । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

५१११. रत्नत्रयविधान………। पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३६ । आ० १३×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । ङ भण्डार ।

५११४. रत्नत्रयव्रतोद्यापन.............। पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५. रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रारम्भ— श्री वृषभदेवसत्यः श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।
तत्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥

सारद गुरु चरणे नमी नमु निरञ्जन हंस ।
रत्नावलि तप विधि कहुं तिम वाधि सुख वंश ॥२॥

चुपई—　　जंबूद्वीप भरत उदार, बहुं बड़ी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक आर्य सुखंड, पञ्चम्लेच्छधर्मोति प्रखंड ॥

चंद्रपुरी नयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम शोभिधाम ।
उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, झल्लर ढोल पटहवाल नाद ॥

अन्तिम—　　अनुक्रमि सुरगति देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज ।
मुक्ति काम नृप हुउं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

दूहा—　　रत्नावलि विधि आचरं, भावि सुं नरनारि ।
तिम मन वंछित फल लहू, आयु भव विस्तारि ॥१६॥

मनह मनोरथ संपजि होई, नारी वेद विछेद ।
पाप पङ्क हवि कुष्ठादि, रत्नावलि बहु भेद ।

जे कलियुगणि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान तिसकथा श्री पाश्र्व चन्दोदय सम्बन्ध समाप्त ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्णदास पूरनमल्लजी तत्शिष्य ब्र० वर्द्धमान लिखित ।।

५११६. रविव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । अ भण्डार ।

५११७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १८०८ । वे० सं० १०६० । अ भण्डार ।

५११८ रेवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १२½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम–   सरससमेषेटभ्रितत्वचन्द्रे फागुन्यमासे किल कृष्णपक्षे ।
                                  नवरंगग्रामे परिपूर्णतास्युः भव्या जनानां प्रददातु सिद्धिः ।।

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम आहूठ कोटि पूजा भी है ।

५११६. रैदव्रत—गंगाराम । पत्र सं० ४ । आ० १३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४३६ । अ भण्डार ।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी भण्डार में २ प्रतियां वे० सं० ७३६, १०६४) और हैं ।

५१२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १३ । वे० सं० १३४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०२, २६२) और हैं ।

५१२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) और है ।

५१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

५१२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३२४ । ख भण्डार ।

५१२७. लघुअभिषेकविधान········। पत्र सं० ३। आ० १२½×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-भगवान के अभिषेक की पूजा व विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १७७। ज भण्डार।

५१२८. लघुकल्याण········। पत्र सं० ८। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३७। क भण्डार।

५१२९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १८२९। ट भण्डार।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा········। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३९ आसोज बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १८५७। ट भण्डार।

५१३१. लघुशांतिकपूजाविधान········। पत्र सं० १५। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ माघ बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ७३। अ भण्डार।

५१३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८९०। अपूर्ण। वे० सं० ८८३। अ भण्डार।

५१३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९७१। वे० सं० ६९०। क भण्डार।

विशेष—राजूलाल भौंसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५१३४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० ११९। छ भण्डार।

५१३५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० १४२। ज भण्डार।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि। पत्र सं० ९। आ० १०½×७ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ फागुण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १५८। ज भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है।

५१३७. लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा। पत्र सं० २२। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल सं० १५६०। ले० काल सं० १८१५ कात्तिक बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २३२। अ भण्डार।

५१३८. लघुस्नपन········। पत्र सं० ५। आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३। ग भण्डार।

५१३९. लब्धिविधानपूजा—हर्षकीर्ति। पत्र सं० २। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०१। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११४९) और है।

५१४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ६६४। क भण्डार।

५१४१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल। वे० सं० ७७। म भण्डार।

५१४२. लब्धिविधानपूजा…… । पत्र सं० ६। म्रा० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४७६। म भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६४, २०२०) और हैं।

५१४३. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १६८। ख भण्डार।

५१४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ८७। घ भण्डार।

५१४५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६२०। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

५१४६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० ३१८। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३१६, ३२०) और हैं।

५१४७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

५१४८. प्रति सं० ७। पत्र सं० २ से ८। ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ३१७। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६७) और है।

५१४९. प्रति सं० ८। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६१२। वे० सं० २१४। म भण्डार।

५१५०. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८८७ माह सुदी १। वे० सं० ५३। ञ भण्डार।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है।

५१५१. लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा…… ……। पत्र सं० ६। म्रा० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ७४। ग भण्डार।

विशेष—मन्नालाल कासलीवाल मे प्रतिलिपि करके चौधरियो के मन्दिर में चढाई।

५१५२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७६। म भण्डार।

५१५३. लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द। पत्र सं० २१। म्रा० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० ११५३। ले० काल सं० १९६२। पूर्ण। वे० सं० ७४४। म भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ७४३, ७४४/१) और हैं।

५१५४. लब्धिविधानपूजा…… । पत्र सं० ३५। म्रा० १२×५½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७०। च भण्डार।

५१५५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा ....। पत्र सं० ८ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१७ । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६६१) और है ।

५१५६. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल सं० १९२९ । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

५१५७. वास्तुपूजा..........। पत्र सं० ५ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-गृह प्रवेश पूजा एवं विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । ग्र भण्डार ।

५१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९३१ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—उछवलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९१६ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २० । ज भण्डार ।

५१६०. विद्यमानबीसतीर्थंकरपूजा—नरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । ग्र भण्डार ।

५१६१. विद्यमानबीसतीर्थंकरपूजा—जौहरीलाल बिलाला । पत्र सं० ४२ । आ० १२×७½ इंच । भाषा-हिन्दी , विषय-पूजा । र० काल सं० १९४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । ग्र भण्डार ।

५१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ६७५ । क भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ६७८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसो भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७९) और है ।

५१६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ९ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ग्र भण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी में भीग गये हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—पोथी के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा............। पत्र सं० १२ । आ० १२३×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६२) और है।

५१६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ज भण्डार ।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है।

५१६९. विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र सं० २५ । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । क भण्डार ।

५१७०. विवाहविधि......। पत्र सं० ८ । आ० ९×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३६ । अ भण्डार ।

५१७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ख भण्डार ।

५१७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

५१७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ ले० काल सं० १७९८ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५१७४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३४९ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २४६) और है।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

५१७६. विहार प्रकरण......। पत्र सं० ७ । आ० ८×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । अ भण्डार ।

५१७७. व्रतनिर्णय—मोहन । पत्र सं० ३४ । आ० १३×६, इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल सं० १९३२ । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । ख भण्डार ।

विशेष—अजयदुर्ग में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। अजमेर में प्रतिलिपि हुई।

५१७८ व्रतनाम...। पत्र सं० १० । आ० १३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रतो के नाम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रो पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

५१७९ व्रतपूजासंग्रह.........। पत्र सं० ३९८ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	ले० काल सं० १८०० पौष बुदी ४
विशेष—देवगिरि में पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई।			
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	ले० काल १८०० पौष बुदी १
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " पौष बुदी ६
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
षोडशकारण	—	"	
दशलक्षणपूजाजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	ले० काल सं० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	"	र० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
णमोकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	"	
रविव्रतपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

५१८०. व्रतविधान............ । पत्र सं० ४ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ४२४, ६६२, २०३७) और हैं।

५१८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० स० ६८० । क भण्डार ।

५१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

५१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १७८ । छ भण्डार ।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करो के पंचकल्याणक की तिथिया भी दी हुई है।

५१८४. व्रतविधानरासो—दौलतरामसंघी । पत्र सं० ३२ । आ० ११×४¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १८३२ प्र० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

५१८५. व्रतविवरण............ । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२४६) और है।

५१८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० १८२३ । ट भण्डार ।

५१८७. व्रतविवरण...... । पत्र सं० ११ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३६ । ट भण्डार ।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६४ । ट भण्डार ।

५१८९ व्रतोद्यापनसग्रह......... । पत्र सं० ४५६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० ४५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमंडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"

पंचमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमंडलपूजा	गुणनन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
अनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [बृहद]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [बृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
णमोकारपैंतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिनगुणसम्पत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

मेघमालाव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	”
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	”
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	”
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	”
जिनसहस्रनामस्तवन	आशाधर	”
द्वादशव्रतमंडलोद्यापन	—	”
लब्धिविधानपूजा	—	”

५१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३६ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । ख भण्डार ।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	”
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	”
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्दसूरि	”
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	”
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	”
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	”
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	”
कर्मदहनपूजा	—	”
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	”

५१६१. बृहस्पतिविधान ······ । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८७ । अ भण्डार ।

५१६२. बृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१६६. चतुर्विशतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०३⁄४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

> श्रीमत्काष्ठासंघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवंशे ।
> गच्छे नंदोतटाख्ये यमदिविह मुने तु सुकर्मामुनीन्द्र ।।
> ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
> सोमपुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालानां शिवाय ।।

चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८. षोडशकारणजयमाला ...... । पत्र सं० १८ । आ० ११३⁄४×५१⁄२ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी १३ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । ग भण्डार ।

५२०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०२ मगसिर बुदी ११ । वे० सं० २०८ । ञ भण्डार ।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रइधू । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८६) और है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाल……। पत्र सं० १३ । आ० १३×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

५२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन……। पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ञ भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर मे पं० सवाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाल……। पत्र सं० १० । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

५२१०. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ७१७ । क भण्डार ।

५२११. षोडशकारणजयमाल……। पत्र स० ५२ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६६५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रइधू । पत्र सं० ३३ । आ० १०×७ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १६६४ माघ बुदी ७ । ले० काल सं० १८२३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है ।

५२१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

५२१५. षोडशकारणपूजा…… । पत्र सं० २ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२५) और है ।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२१ । क भण्डार ।

५२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२४ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावण सुदी ११ । वे० सं० ४२५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) और है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । ङ भण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा (बृहद्)········ । पत्र स० २६ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । ख भण्डार ।

५२२२. षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्त्ति । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७११ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५०७ । ख भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं २१ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । ख भण्डार ।

५२२४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । ख भण्डार ।

५२२५. शारदुत्सवदीपिका (मंडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्रीवीरं शिरसा नत्वा वीरनंदिमहागुरु' ।
सिंहनंदिरहं वक्ष्ये शारदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथास्य भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमनोहरे ।
एकविंशेति विख्याता मिथिलानामत: पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ—

एवं महाप्रभावं च दृष्ट्वा लब्धास्तथा जनाः ।
कर्तु' प्रभावनांगं च ततोऽमैव प्रवर्त्तते ॥२३॥

तथाद्यापिगुरोरत्वं प्रसिद्ध'मयतीयते ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वा कृतेतं च भव्यजनविमोचकैः ॥२४॥

जातो नागपुरे मुनिर्वरतरः श्रीमूलसंघोवरः ।
सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद प्रमलः श्रीवीरनंद्याह्वयः ।।
तच्छिष्यो वर सिंघनंदिमुनियस्तेनेयमाविष्कृता ।
लोकोद्बोधनहेतवे मुनिवरः कुर्वंतु भो सज्जनाः ।।२५।।
इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ताः ।।१।।

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है ।

५२२६. प्रति स० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९२२ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५२२७. शांतिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) ·· ······ । पत्र स० ३२ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

विशेष— प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्व-पूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र से यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनमः । परमेष्ठिने नमः । श्री गुरुवेनमः ।। सं० १६३२ वर्ष फागुण सुदी १० गुरौ श्री मूलसंघे भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्म्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१२, ५५४) और हैं ।

५२२८. शांतिकविधान (बृहद्)···· ·······। पत्र सं० ७४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९२६ भादवा बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । च भण्डार ।

५२३०. शांतिकविधि—अर्हद्देव । पत्र सं० ५१ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–संस्कृत । विषय विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८९८ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२३१. शान्तिविधि············। पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । क भण्डार ।

५२३२. शान्तिपाठ (बृहद्)............। पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा............। पत्र सं० ४ । आ० १०३/४×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । क भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७. शांतिमंडलपूजा.......। पत्र सं० ३८ । आ० १०३/४×५३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ.......। पत्र सं० १ । आ० १०१/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त मे पढा जाने वाला पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची.......। पत्र सं० ३ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×६१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाल.......। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

५२४३. शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि······। पत्र सं० १। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८८४। अ भण्डार।

५२४४. शासनदेवतार्चनविधान······। पत्र सं० २१ से २५। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०७। क भण्डार।

५२४५. शिखरविलासपूजा······। पत्र सं० ७३। आ० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६८९। क भण्डार।

५२४६. शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२१। पूर्ण। वे० सं० २६३। ख भण्डार।

५२४७. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ बुदी १४। वे० स० १२५। छ भण्डार।

५२४८. शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा······। पत्र सं० ७। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १८ ...। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८४। च भण्डार।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— अब्दे रंध्र यमलं वसु चन्द्र।

५२४९. शुक्लपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा······। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१७। अ भण्डार।

५२५०. श्रुतज्ञानपूजा······। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ७२३। क भण्डार।

५२५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६८७। च भण्डार।

५२५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा······। पत्र सं० १०। आ० ११×८½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। ज भण्डार।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा······। पत्र सं० ११। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२४। क भण्डार।

५२५५. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन······। पत्र सं० ८। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२२। पूर्ण। वे० सं० ३००। ख भण्डार।

५२५६. श्रुतपूजा······। पत्र सं० ४। आ० १०½×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १०७८। अ भण्डार।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर। पत्र सं० २ से १३। प्रा० ११३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७०५। क भण्डार।

५२५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३४६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५०) और है।

५२५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८४। ज भण्डार।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। प्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १८४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२२। अ भण्डार।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था।

५२६१. श्रुतस्कंधपूजा............। पत्र सं० ५। प्रा० ८३/४×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०२। क भण्डार।

५२६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० २६२। ख भण्डार।

५२६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८८। ज भण्डार।

५२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ४६०। ञ भण्डार।

५२६५. श्रुतस्कंधपूजाकथा............। पत्र सं० २८। प्रा० १२३/४×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा तथा कथा। र० काल ×। ले० काल वीर सं० २४३४। पूर्ण। वे० सं० ७२८। क भण्डार।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी गाधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि० गुडगावां।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

५२६६. सकलीकरणविधि............। पत्र सं० ३। प्रा० ११×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०, ५७१, ६६१) और हैं।

५२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० स० ७२३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है।

५२६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ३६८। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति के श्रावकों के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

५२६६. सकलीकरण............ | पत्र सं० २१ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-विधि विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५७१ | अ भण्डार |

५२७०. प्रति सं० २ | पत्र सं० ३ | ले० काल × | वे० सं० ७५७ | ङ भण्डार |

५२७१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ३ | ले० काल × | वे० सं० १२२ | छ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है।

५२७२. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० सं० १६४ | ज भण्डार |

५२७३. प्रति सं० ५ | पत्र सं० ३ | ले० काल × | वे० सं० ४२४ | व्य भण्डार |

विशेष—हांसिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०३) और है।

५२७४. संथाराविधि............ | पत्र सं० १ | आ० १०×४½ इंच | भाषा-प्राकृत, संस्कृत | विषय विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १२१६ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५१) और है।

५२७५. सप्तपदी.......... | पत्र सं० २ से १६ | आ० ७½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-विधान | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १६६६ | अ भण्डार |

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा............ | पत्र सं० ३ | आ० १०½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ६६६ | अ भण्डार |

५२७७. प्रति सं० २ | पत्र सं० १२ | ले० काल × | वे० सं० ७६२ | ङ भण्डार |

५२७८. सप्तर्षिपूजा—जिणदास | पत्र सं० ७ | आ० ८×४½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २२२ | छ भण्डार |

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन | पत्र सं० ६ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १२७ | छ भण्डार |

५२८०. प्रति सं० २ | पत्र सं० ८ | ले० काल सं० १८२० कार्तिक सुदी २ | वे० सं० ४०१ | व्य भण्डार |

५२८१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० सं० २११० | ट भण्डार |

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण | पत्र सं० १६ | आ० १०½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल × | ले० काल सं० १६१७ | पूर्ण | वे० सं० ३०१ | ख भण्डार |

५२८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

५२८४. सप्तर्षिपूजा............। पत्र सं० १३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६१ । अ भण्डार ।

५२८५. समवशरणपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । अ भण्डार ।

विशेष—खुस्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६. समवशरणपूजा (बृहद्)—रूपचन्द । पत्र सं० ६४ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— प्रतीतेहयनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षेच मासे ॥

५२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र सं० २८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ३८४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक–

श्यावास्तुत्यार्चा गुणवीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमानः ।
श्रीसोमकीर्त्तिविकासमानः रत्नेषरत्नाकरवार्ककीर्तिः ॥

जयपुर मे सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ लालूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०५) और है ।

५२९०. समवशरणपूजा............। पत्र सं० ७ । आ० ११×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

५२९१. सम्मेदशिखरपूजा—गंगादास । पत्र सं० १० । आ० ११¾×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २०११ । अ भण्डार ।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०६) और है ।

५२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

५२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८३ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० ४३६ । अ भण्डार ।

५२९४. सम्मेदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं० १२ । आ० १२×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ । अ भण्डार ।

५२९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । र० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १९१२ । वे० सं० ११६ । घ भण्डार ।

५२९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९५२ आसोज बुदी १० । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

५२९७. सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२३) और है ।

५२९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९५८ माघ सुदी १४ । वे० सं० ७०१ । च भण्डार ।

५२९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७६३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६४) और है ।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५३०१. सम्मेदशिखरपूजा—भागचन्द । पत्र सं० १० । आ० १३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२६ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये है ।

५३०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

विशेष—सिद्धक्षेत्रों की स्तुति भी है ।

५३०३. सम्मेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से आगे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है ।

५३०४. सम्मेदशिखरपूजा ...... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४३/४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३१ । अ भण्डार ।

५३०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२२) और है ।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । ञ भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा .... । पत्र सं० ५ । आ० ६×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६३ । अ भण्डार ।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा......... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११. सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बक्शी । पत्र सं० ८ से १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । क भण्डार ।

५३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८०४ । क भण्डार ।

५३१४. सरस्वतीपूजा—पं० बुधजनजी । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा......... । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा......... । पत्र सं० १११ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४३१७. सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्त्ति । पत्र सं० ६६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५२) और है ।

४३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

४३१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

४३२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । म भण्डार ।

४३२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति ने जिहानावाद मे प्रतिलिपि कराई थी ।

४३२२. सहस्रगुणितपूजा······। पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४३२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४ । ञ भण्डार ।

४३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६६ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८३ । च भण्डार ।

४३२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ से ६६ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३८४, ३८६) और हैं ।

४३२६. सहस्रनामपूजा············। पत्र सं० १३६ से १५८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

४३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख । पत्र सं० २२ । आ० १२३×८३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

४३२८. सहस्रनामपूजा············। पत्र सं० १८ । आ० ११×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । च भण्डार ।

४३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा············। पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । अ भण्डार ।

४३३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ८३/४×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (बृहद्) —स्वरूपचन्द । पत्र सं० ५३ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—अन्त में मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे सुगनचन्द गंगवाल ने चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

५३३३. सिद्धक्षेत्रपूजा·········। पत्र सं० १३ । आ० १३×८३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा·········। पत्र सं० १२६ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है ।

५३३६. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति । पत्र सं० १४३ । आ० १०१/२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५१) और है ।

५३३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

५३३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द अजमेरा ने संशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१८) और ।

५३४०. सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३० से ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

५३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

५३४२. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)…………। पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा…………। पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । च भण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण बुदी १४ । वे० सं० २१ । ज भण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—संतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९८१ । पूर्ण । वे० सं० ७४९ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़ ने प्रतिलिपि की थी ।

५३४७. सिद्धचक्रपूजा…………। पत्र सं० ११३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

विशेष—औरङ्गजेब के शासनकाल में संग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९१ । क भण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र सं० २ । आ० ११३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ७९४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९५) और है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८२३ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल चढाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा…………। पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६२४) और है ।

५३५३. सिद्धपूजा .... । पत्र सं० ४४ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । ख भण्डार ।

५३५४. सीमंधरस्वामीपूजा .... । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५८ । क भण्डार ।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६. सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७. सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन .... । पत्र सं० १३ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतियां (वे० सं० ११११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और है ।

५३५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । क भण्डार ।

५३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७ । वे० सं० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१. सुपार्श्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२. सूतकनिर्णय .... । पत्र सं० २१ । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । ञ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

५३६४. सूतकवर्णन .... । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । अ भण्डार ।

५३६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४५ । वे० सं० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०१२) और है ।

५३६६. सोनागिरपूजा—आशा । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३८ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० गंगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी।

५३६७. सोनागिरपूजा............। पत्र सं० ८। आ० ८३/४×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८५। क भण्डार।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० २। आ० ८×५३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२६। अ भण्डार।

५३६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १९३७। वे० सं० २५। क भण्डार।

५३७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ग भण्डार।

५३७१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०२। ज भण्डार।

विषय—इसके अतिरिक्त पञ्चमेरु भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजायें और हैं।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है।

५३७२. सोलहकारणपूजा..........। पत्र सं० १४। आ० ८×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५२। ङ भण्डार।

५३७३. सोलहकारणमंडलविधान—टेकचन्द। पत्र सं० ४८। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८७। क भण्डार।

५३७४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ७२४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२५) और है।

५३७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। छ भण्डार।

५३७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ज भण्डार।

५३७७. सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० १२। आ० ११×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल सं० १८२०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८६। अ भण्डार।

५३७८. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८६५ चैत्र बुदी ६। वे० सं० ४२७। च भण्डार।

५३७९. स्नपनविधान............। पत्र सं० ८। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२२। अ भण्डार।

५३८०. स्नपनविधि (बृहद्)........। पत्र सं० २२। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५७०। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठों में त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी, जयपुर)

४३८१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६ । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३. पञ्चमेरुपूजा	×	"	"
४. अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	
५. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	"
६. दशलक्षणउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिसुव्रतछन्द	ब्र० [illegible]	संस्कृत हिन्दी	"

पृष्ठ १२०–१२४

मुनिसुव्रत छन्द लिख्यते—

पुण्यापुण्यनिरूपकं गुणनिधिं सुव्रतं सुव्रतं
स्याद्वादामृततर्पिताखिलजनं दुःखाग्निधाराधरं ।
कोपारण्यघनंजयं घनकरं प्रध्वस्तकर्मारिणं
वंदे तद्गुणलब्धये हरिसुतं सोमात्मजं सौख्यदं ॥१॥

जलधिसमगभीरं प्राप्तजन्माब्धितीरः
प्रबलमदनवीरः पंचधामुक्तचीरः
हतविषयविकारः सततत्वप्रचारः
स जयति गुणधारः सुव्रतो विघ्नहारः ॥२॥

आर्या—

त्रिभुवनजनहितकर्त्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।
कन्दर्पदर्पहर्ता सुव्रतदेवो जयति गुणधर्ता ॥१॥
यो बलमौलिसंगतमुकुटमहारत्नरक्तनखनिकरं ।
प्रतिपालितवरचरणं केवलबोधे मंडितसुभगं ॥२॥
तं मुनिसुव्रतनाथं नत्वा कथयामि नम्य छन्दोहं ।
श्रृण्वन्तु सकलभव्याः जिनधर्मपराः मौनसंयुक्ताः ॥३॥

अडिल्लछंद—

प्रथम कल्याण कहुं मनमोहन, मगध सुदेश वसे अति सोहन ।
राजगेह नयरि वर सुन्दर, सुमित्र भूप तिहां जिसो पुरंदर ॥१॥
चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस रागी सोमा सुविशाला ।
पश्चिमरयणी अलिकुलबाला, स्वप्न सोल देखे गुणमाला ॥२॥
इन्द्रादे सें अति सु विचक्षण, छप्पन कुमारि सेवे शुभलक्षण ।
रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर, एम छमास गया सुभ सुखकर ॥३॥
हरिवर्म्मा भूपति भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो आखण्डल ।
श्रावणवदि बीजे गुणधारी, जननी गर्भ रह्यो सुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात—

धरंति अनंगे परं गर्भभार न रेखात्रयं भगमापन्नमार ।
तदा आगता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रासुराणामया न युक्ता सुभद्रा ॥१॥
पुरं त्रिःपरित्याखिलंदेवसंघा गृह प्राप्त सोमित्र कंते गता या ।
स्थित गर्भवासे जिनं निष्कलंकं प्रणम्यावरातं भताहिस्यमाव ॥२॥
कुमार्यो हि सेवां प्रकुर्वन्ति गाढ किमप्योज्ज्वलद्दीपसुहृत्यवाढं ।
वरं पत्रपूर्गं ददामासुचूर्णं प्रकीर्णं सितछत्रकं कुंभं सुपूर्णं ॥३॥
सुरघीश्वमासैर्नवंसत्पवित्र लसद्रत्नवृष्टि सुभ पुण्यपात्रं ।
जिनं गर्भवासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तौमि सौमात्मजं सौख्यगेहं ॥४॥

अडिल्लछन्द—

श्रीजिनवर अवतरयो महि त्रिभुवन चिह्न हवां सुख़ता महि ।
घंटा सिहं संख परहारव, सुरवति सहसा करें जय जयरवं ॥१॥
वैसाख वदी दशमी-जिन जायो, सुरनरवृन्द वेगें तब आयो ।
ऐरावण आरूढ पुरंदर, सचीसहित सोहें गुणमंदिर ॥२॥

मोतीदामछन्द—

तब ऐरावत सजकरी, चढ्यो शतमुख आणंद भरी ।
जस कोटी सतावीस छे अमरी, करें गीत नृत्य वलींदें भमरी ॥३॥
गज कानें सोहें सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहु भरी ।
आलण्डलअंकुशवेसंभरी, उछवमंगल गया जिन नयरी ॥
राजगलें मलया इन्द्रसहू, वाजें वाजित्र सुरंग बहू ।
शक्रें कह्यु जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तब घर मझे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयणे, इन्द्राणी बोलें वर वयणें ।
माया मेलि सुतहि एक कीयो, जिनवर युगतें जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है। सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दों के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमंतछन्द, दूहा, वंभाण छन्दों को और प्रयोग हुआ है। अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जहं जिन कछप लांछन ।
बीस सहस्र वर वर्ष आयु सज्जन मन रञ्जन ॥
हरवंशी कुलदीपक, भव दारिद्र विहंडन ।
मनवांछितदातार, नयरवालोडम् मडन ॥
श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टारक ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहें, मुनिसुव्रतमंगलकरण ॥

इति मुनिसुव्रत छंद सम्पूर्णोऽयं ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

संवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजीनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य ब्रह्मश्रीरत्नसागर पठनार्थं। पुण्यार्थं पुस्तकं लिखापितं श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
९. मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५–२८
१०. पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	"	
१२. [illegible]	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	पं० राघव की प्रेरणा से
१३. अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक दी गई
१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
१६. नित्यपूजा	×	"	

विशेष—पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुवा है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी सं० १८२१ ता वर्षे साके १६६६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलीइ देवलोक थया छेजी

५३८२. गुटका सं० २। पत्र सं० ६३। आ० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८२०। ले० काल सं० १८३५। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—इस गुटके में बख्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है। यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्णं। लिखतं बखतराम साह। सं० १८३५।

५३८३ गुटका सं० ३। पत्र सं० ७५। आ० ४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय–×। ले० काल सं० १६०४। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लखा था।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
१. रसायनविधि	×	हिन्दी	१–३
२. परमज्योति	बनारसीदास	"	४–१२
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३–४३
४. अन्तरायवर्णन	×	हिन्दी	४३–४४
५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५–४६
६. पूजा	पद्मनन्दि	"	५०–५४

७. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	५५–५६
८. पूजा व जयमाल	×	"	५६–७५

५३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्लेश्यावर्णन, जैनरक्षामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इंच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा–हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१–६७
२. पद– होजी म्हारो कंथ चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	"	६७
३. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	६८–११६

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा–सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. पद– जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दौलतराम	"	
३. आलोचनापाठ	जौहरीलाल	"	
४. समवसरणपूजा	बुधजन	"	

५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	२-३५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८. लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	"	६
९. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	५-६
१०. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा	×	"	१५३ तक

५३६१. गुटका सं० ११। पत्र सं० २२२। आ० $१०\frac{१}{२}$×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १७४६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	३-१४
२. कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति		१५-१८

अथ बेलि लिख्यते—

दोहा—

कर्मचूर व्रत जे कर, जीनवाणीं तंतसार।

नरनारि भव भंजन धरे, उतर चौरासी मु पार।।

कीधी कुणे कुण प्रारंभ्यो सकलकीर्त्ति नाम,

कर्म सेइय कीधो गुणी कोसंबी वसि गाम।।

नमणी गुरु निरगंथ ने, सारद दसगुण पुरे।

कहो बरत बेलि उदयु करमसेण कर्मचुरे।।

ज्ञानावर्ण दर्स्न साता वेदनी मोह मंदराई।

अन्हें जीतनै चेति होसी, कहालु कर वखण सुहाई।।

नाम कर्म पांचमोग कुल्लुगे आयु भेदो।

गोत्र नीच गति पोहो चाहै, अन्तराई भय भेदो।।

चितामणि सुचित अविलागी, कर्मसेण गुणगाई।।१।।

दोहा— एक कर्म को वेदना, मुंजे है सब लोइ ।
नरनारी करि उधरे, चरण गुणसंस्थान संजोई ॥१॥

अन्तिमपाठ— कवित्त—

सकलकीत्ति मुनि आप सुनत मिटै संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ॥
जूनी पोथी भई अक्षर दीसै नहीं फेर उतारी बंध छंद कवित्त बेली बनाई क गाईये ॥
चंप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार अड़सठि जेहि कर्मचूर बरत कह्यो है वणाई ध्याइयै ॥
संवत् १७४६ सोमवार ७ करकोतु कर्मचूर व्रत बैठगो अमर पद चुरी सीर सीधातंम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

३. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	ले० काल १७३६ १७-१६
४. चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	अपूर्ण २०
५. अंजना को रास	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ— पहेलो रे अर्हंत पाय नमैं ।
हूं? भव दुख भंजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसो ।
पाप ना प्रभव असि सौ अंत तौ रास भणै इति अंजना
तै तौ संयम साधि न गई स्वर लोक तौ सती न सरोमणि वंदीये ॥१॥
वसं विधाधर उपनी माय, नामै तीन बनंधि संपजे ।
भाव करंता हौ भवदुख जाय, सतो न सरोमणि वंदये ॥२॥
ब्राह्मी नै सुंदरी बंदये, राजा हो रसभ तणे घर ह्रंय ।
बाल पणै तप वन गई काम ना भौमन वंछीय जे हतौ ॥ सती न ·······३ ॥
मेघ सेनापति नै वरनारि अंजना सो मदालसा ।
त्यारे न कोमै सीयाल सवार तो····॥ सती न ·······४ ॥
पंचसे किसन कुमारिका, ईनि बाल कुवारी लाघो रे पावै ।
जाबव जग बाली करि, द्वारिका बहुल सुनि तप जाय ।
हूरी तणी अंजना बंछीय जिनै राव औंडी मन मैं धरयो वैराग तो ॥ सती न ···५॥

अन्तिमपाठ—

वंस विद्याधरे डानि मात, नामे नवनिधि पावसो ।

भाव करंता हो भव दुख जायतो, साती न सरोमणि वंदीये ।। ५८ ।।

इम गावै धर्मभूषण रास, रत्नमाल गुंथो रचि रास ।

सर्व पंचमिलि मंगल थयो, कहै ता रास ऊपजै रस विलास ।।

ढाल भवन केरी इम भरणे, कंठ बिना राग किम होई ।

बुधि बिना ज्ञान नविसोई, गुरु बिना मारग कीम पानी सी ।

दीपक बिना मंदर अंधकार, देवभक्ति भाव बिना सब ह्वार तो ।।५६।।

रस बिना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मति वधै देव गुरु पसाव ।

खिमा विन सील करै कुल हारिण, निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कलक आनि कुल जाय, कुमति विनास निर्मल भावमूं ।

ते समभो सबही नरनारि, अर्हंत बिना दुर्लभ सरावक अवतार ।

जुहि समता भावसूं स्योपुरवास, एह कथी सब मगल करी।।

इति श्री अंजनारास सती सुंदरी हनुमंत प्रसादात् संपूरण ।।

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्त्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्त्ति तस्योपदेश गुणकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित कुस्यालि लिखामि वोराव नगरे सुथाने श्रीमहावीरचैत्यालये अमुक श्रावके सर्व वघेरवाल ज्ञात बुधिति समपात रहा श्रीवृषभनाथ यात्रा निमित्त गवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज वदी ३ दीतबार संवत् १८२० शालिवाहने १६७६ शुभंमस्तु ।

६. न्हवणविधि	×	संस्कृत	ले० काल १८२० आसोज वदी ३
७. छियालीसगुण	×	हिन्दी	
८.	×	,, पृष्ठ ३६वें पर चौबीसवे तीर्थङ्करोके चित्र	
६. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	३६-४०

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० मे पं० खुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी ।

१०. भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ वोराव (बौराज) में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के ३ चित्र हैं ।

११. हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	८३-१०६
१२. बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्त्ति	"	११०
१३. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५. अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६. रविव्रतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामणिलग्न	×	संस्कृत ले० काल १८२१	१२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्रह्मारायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
		र० काल १६२८ ले० काल १८११	
१९. श्रुतपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१५३-१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५७-१६६
२२ पूजासंग्रह	×	"	१६७-१७२
२३. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५. पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर सुन्दर बेलें है।

५२९२. गुटका सं० १२। पत्र सं० १०६। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. यज्ञ की सामग्री का ब्यौरा	×	हिन्दी	१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराम ने ताकी सामा आई संवत् १७९७ माह सुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी में से उतारी। पोथी जीरण होगई तब उतरी। सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है।

२. यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२

विशेष—मौजे सिमरिया में माह सुदी १५ सं० १७९७ में यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मोरेना के पं० टेकचन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

३. कर्मविपाक × संस्कृत ३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है। तीन अध्याय है।

४. आदीश्वर का समवशरण × हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी १२-१४

आदीश्वर को समोशरण–आदिभाग—

गुर गनधनि मन ध्याऊं, चित चरन सरन ल्याउ।
मति मांगि लेउ ग्रैसी, सुनि मांनि लैहु जैसी ॥१॥
आदीश्वर गुण गाऊं, वरु माथ सगु (र) पाउं।
चारित्र जिनेस लीया, भरथ को राजु दीया ॥२॥
तजि राज होइ भिखारी, जिन मौन व्रत धारी।
तव आपनी कमाई, भई उदय अंतराई ॥३॥
मुनि भीख काज जावइ, नहि भानु हाथ आवइ।
लेइ कन्या सरूपा, कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग—

रिषि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ।
कर जोडिइ मुख भासइ, प्रभु चरन मरन राखइ ॥७१॥

दोहरा—

समोसरण जिनराय को, गावहि जे नरनारि।
मनवांछित फल भोगवहि, फिरि पहुंचहि भवपार ॥७२॥
सोलसह सडसठि बरष, कातिक सुदी बलराज।
सालकोट सुभ थानवर जयउ मिश्र जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोसरण समाप्त ॥

५. द्वितीय समोसरण ब्रह्मगुलाल हिन्दी १४-१६

आदिभाग—

प्रथम सुमरि जिनराज अनन्त सुख निधान मंगल सिव संत
जिनवाणी सुमिरत मनु बढै, ज्यो गुनठान छिपक छितु चढै ॥१॥
गुरुपद सेवहु ब्रह्म गुलाल, देवसास्त्र गुर मंगल माल।
इनहि सुमरि बरन्यो सुखसार, समवसरन जैसे बिसतार ॥२॥
दीठ बुधि मन भायो करै, सुरिख पद ग्रान पायो डरै।
सुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन को करौ बखान ॥३॥

सुभ आसन दिढ अंग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।

समोसरण रचना अति बनी, परम धरम महिमा अति तणी ।।४।।

अन्तिमभाग— चल्यौ नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।

समोसरणय पूरण भयौ, सुनत पढत पातिग गलि गयौ ।।६५।।

दोहरा— सोरह सैं अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।

गुलालब्रह्म भनि गीत मति, जसोनंदि पद सिक्ष ।।६६।।

गूरदेस हथिकंतपुर, राजा वक्रम साहि ।

गुलालब्रह्म जिन धर्म्मु जय, उपमा दीजै काहि ।।६७।।

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ।।

६. नेमिश्री को मंगल	जगतभूषण के शिष्य विश्वभूषण	हिन्दी	१६-१७ रचना सं० १६६८ श्रावण सुदी ८

आदिभाग— प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ ।

सरस्वती करहुं प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ।।

सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति बनी ।

रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ।।

बहु कनीय मंदिर चैत्य कीयौ, देखि सुरनर हरषीयौ ।

समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ।।

प्रिया जा सिव देवि जानो, रूप अमरी ऊदसा ।

राति सुंदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ।।१।।

अन्तिम भाग— संवत् सोलह से अठानूवा जाणीयौ ।

सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ।।

गाऊं सिकंदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।

भ.वग कीया सुजान धर्म्म सौ नेहुरे ।।

धरै धर्म्म सौं नेहु अति ही देही सबकौ दान जू ।

स्यादवाद बानी ताहि मानै करै पंडित मान जू ।।

जगतभूषण भट्टारक जैं विश्वभूषण मुनिवर।
नर नारी मंगलचार गावै पढत पातिग निम्तै ॥

इति नेमिनाथ जू को मंगल समाप्त ॥

७. पार्श्वनाथचरित्र विश्वभूषण हिन्दी १७-१६

आदिभाग रागुनट— पारस जिनदेव को सुनहु चरित्र मनु लाई ॥ टेक ॥

मनउ सारदा माइ, भजौ मनधर चितुलाई।
पारस कथा संबंध, कहौ भाषा सुखदाई ॥

जंबू दखिन भरथ मै, नगर पोदना माझ।
राजा श्री अरिविंद जू, भुगतै सुख अवाझ ॥ पारस जिन० ॥

विप्र तहां एकु वसै, पुत्र द्वौ राज सुचारा।
कमठु बडौ विपरीत, विसन सेवै जु अपारा ॥

लघु भैया मरभूति सौ, वसुधरि दई ता नाम।
रति क्रीडा सेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम ॥ पारस जिन० ॥

कोपु कीयौ मरभूति, कह्यो मंत्री सो राच्यो।
सीख दई नहीं गह्यो काम रस अंतर साच्यौ ॥

कमठ विषै रस कारनै, अमर भूति बांधौ जाई।
सो मरि वन हाथी भयौ, हथिनि भई त्रिय आइ ॥ पारस जिन० ॥

अन्तिमपाठ— अवधि हेत करि बात सही देवनि तव जानी।
पदमावति धरणेन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी ॥

सब उपसर्ग निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनंद।
सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद ॥ पारस जिन० ॥

मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई।
उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई ॥

वसै महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत।
पार्श्वकथा निह्चै सुनौ, हो मोछि प्राप्ति फल लेत ॥
पारस जिनदेव को, सुनहु चरितु मन लाइ ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी को चरित्र संपूर्ण ॥

८. वीरजिरांवगीत	भगौतीदास	हिन्दी	१६–२०
६. सम्यक्ज्ञानी धमाल	"	"	२०–२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१–२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२–२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३. "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५. "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी र० काल १६१६	२५–७५
		ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी अपूर्ण	७७–१०६

५३६३. गुटका सं० १३। पत्र सं० ३७। प्रा० ७½×१० इञ्च। ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी ७। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

१. कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२. लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४. भक्तामरस्तोत्र	प्रा० मानतुंग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७. दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	"

१३. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	"
१४. अभिषेकविधि	×	"	"
१५. निर्वाणकांडभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	"
१६. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	"
१७. अनन्तपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी बज के पुत्र मनसुख के पढने के लिए लिखी गई थी ।

५३६४. गुटका नं० १४ । पत्र सं० १३ । आ० ४×८¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादनो के नाम हैं ।

५३६५. गुटका नं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ५×३½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६० । पूर्ण

विशेष—पाठ अशुद्ध हैं—

१. कह्ज्योजी नेमजीसूं जाय म्हेतो थाही संग चालां	×	हिन्दी	१
२. हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	"	१-२
३. ध्यावांला हो प्रभु भावसोंजी	×	"	२-८
४. प्रभु थांकीजी मूरत मनड़े मोहियो	ब्रह्मकपूर	"	८-९
५. गरज गरज गहै नवरसै देखौ भाई	×	"	९
६. मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	"	१०
७. तुम सी रमा विचारी तजि	×	"	११
८. कह्ज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हे तो	×	"	१२
९. मुझे तारोजी भाई साइयां	×	"	१३
१०. संबोधपंचासिकाभाषा	बुधजन	"	१३-२०
११. कह्ज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हेतो थांकही संगचाला	राजचन्द	"	२१-२३
१२. मान लीज्यो म्हारी आज रिषभ जिनजो	×	"	२३
१३. तजिकै गये पीया हमकै तुमसी रमा विचारी	×	"	२३-२४
१४. म्हे दरशवाला हो प्रभु भावसूं	×	"	२४
१५. साधु दिगंबर नगन उरं पद अंबर भूषणधारी	×	"	२५

१६. म्हे निशिदिन ध्यावांला	बुधजन	,,	२६
१७. दर्शनपाठ	×	,,	२६–२७
१८. कवित्त	×	,,	२८–२६
१६. बारहभावना	नवल	,,	३३–३५
२०. विनती	×	,,	३६–३७
२१. बारहभावना	दलजी	,,	३८–३६

५३६६. गुटका सं० १६। पत्र सं० २२६। आ० ५३×५ इञ्च। ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १। पूर्ण। दशा सामान्य।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है।

विषयसूची—

१. बृहद्कल्याण	×	हिन्दी	३–१२
२. मुक्तावलिव्रत की तिथियां	×	,,	१२
३. झाड़ा देने का मन्त्र	×	,,	१२–१६
४. राजा प्रजाको वशमें करनेका मन्त्र	×	,,	१७–१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	,,	२३–२४
६. दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५–२६
७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	,,	३०–३१
८. गृहप्रवेशविचार	×	,,	३२
६. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३–३५
१०. दीपावतारमन्त्र	×	,,	३६
११. काले बिच्छुके डङ्क उतारने का मंत्र	×	हिन्दी	३८

नोट—यहां से फिर संख्या प्रारम्भ होती है।

१२. स्वाध्याय	×	संस्कृत	१–३
१३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	,,	१ ३
१४. प्रतिक्रमणपाठ	×	,,	१६–३७
१५. भक्तिपाठ (सात)	×	,,	३७–७२

१६. बृहत्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७३–८६
१७ बलात्कारगण गुर्वावलि	×	"	८६–९३
१८. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	९४–१०७
१९. श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७–११८
२०. श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८–१२३
२१. आलोचना	×	प्राकृत	१२३–१३२
२२. लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२–१४९
२३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	१४९–१५५
२४. वंदेतान की जयमाला	×	संस्कृत	१५५–१५६
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१५६–१६७
२६. संबोधपंचासिका	×	"	१६८–१७२
२७. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२–१७६
२८. भूपालचौबीसी	भूपालकवि	"	१७७–१८०
२९. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१८०–१८४
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१८५–१८८
३१ दशलक्षणजयमाल	पं० रइधू	अपभ्रंश	१८९–१९५
३२. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९६–२०३
३३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	२०३–२०४
३४. मन्त्रादिसंग्रह	×	"	२०५–२२६

प्रशस्ति—संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा १ तिथौ मङ्गलवारे आचार्य श्री चारुकीर्त्ति पं० गंगाराम पठनार्थ वाचनार्थ ।

५३६७. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४०७ । आ० ७×५ इञ्च ।

१. प्रधानसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित	१–३
२. भयहरस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत		४
३. बंधस्थिति	×	"	मूलाचार से उद्धृत	५–६
४. स्वरविचार	×	"		७

५. संदृष्टि	×	संस्कृत	६–११
६. मन्त्र	×	"	१४
७. उपवास के दशभेद	×	"	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९. मढाई का ब्यौरा	×	"	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१–२४
		गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि से संगृहीत पाठ हैं।	
१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	संस्कृत	२४–२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	"	२६–२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	"	२९–३१
		प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत	
१५. छातीमुख की औषधि का नुमखा	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहण)	×	अपभ्रंश	३२–३५
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	३५–३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६–३७
१९. अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत मन्त्र आदि भी हैं	३८–४०
२०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तियां	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	४२–४९
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	४९–५२
२३. यतिभावनाष्टक	आ० कुंदकुंद	"	५२
२४. भावनाद्वात्रिंशतिका	आ० अमितगति	"	५३–५४
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५५–५८
२६. संबोधपंचासिका	×	अपभ्रंश	५९–६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१–६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७–८८
२९. भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९–१०७

३०. स्वयंभूस्तोत्र	ग्रा० समन्तभद्र	संस्कृत	१०८–११८
३१. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	११८
३२. दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	,,	११६
३३. सुप्रभातस्तवन	×	,,	११६–१२१
३४. दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५. बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२२–२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	,,	१२४–२५
३७. नाममाला	धनञ्जय	,,	१२५–१३७
३८. वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	,,	१३८
३९. करुणाष्टकस्तोत्र	,,	,,	१३६
४०. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	,,	१३६–१४१
४१. समयसारगाथा	ग्रा० कुन्दकुन्द	,,	१४१
४२. ग्रर्हद्भक्तिविधान	×	,,	१४१–१४३
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	,,	१४४–१५६
४४. रत्नत्रयपूजा	×	,,	१५६–१६२
४५. जिनस्नपन	×	,,	१६२–१६८
४६. कलिकुण्डपूजा	×	,,	१६८–१७१
४७. षोडशकारणपूजा	×	,,	१७२–१७३
४८. दशलक्षणपूजा	×	,,	१७३–१७५
४९. सिद्धस्तुति	×	,,	१७५–१७६
५०. सिद्धपूजा	×	,,	१७६–१८०
५१. शुभमालिका	श्रीधर	,,	१८२–१६२
५२. सारसमुच्चय	कुलभद्र	,,	१६२–२०६
५३. जातिवर्णन	×	,, ५८ पद्य ७७ जाति	२०७–२०८
५४. फुटकरवर्णन	×	,,	२०६
५५. षोडशकारणपूजा	×	,,	२१०

५६. औषधियों के नुसखे	×	हिन्दी	२११
५७. संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	२१२
५८. दीक्षापटल	×	"	२१३
५९. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
६१. सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
६२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-२२४
६३ सुभाषितसंग्रह	×	"	२२५-२२८
६४. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५. योगसार	योगचन्द	संस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७. श्रावकप्रतिक्रमण	×	संस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९. रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७०. कल्याणमाला	पं० आशाधर	"	२५९-२६०
७१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२. समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
७३. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	२८६-३०३
७४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-३०६
७५. परमेष्ठियों के गुण व अतिशय	×	प्राकृत	३०७
७६. स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७७. प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८. देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
८०. सुभाषित	×	"	३३०-३३१
८१. जिनगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

८२. क्रियाकलाप	×	"	३३२–३३४
८३. संभवनाथपद्धडी	×	अपभ्रंश	३३४–३३५
८४. स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	प्राकृत	३३५–३३६
८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	३३६–३४१
८६. चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दि	"	३४२–३४३
८७. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	"	३४४
८८. मृत्युमहोत्सव	×	"	३४५
८९. अनन्तगंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	"	३४६–३४८
९०. आयुर्वेद के नुसखे	×	"	३४९
९१. पाठसंग्रह	×	"	३५०–३५४
९२. आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगशत वैद्यक मे संगृहीत	३५७–३८८
९३. अन्य पाठ	×	"	३८८–४०७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके मे और है।

१. कल्याण बडा   २. मुनिश्वरोंकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास)   ३. दशप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथितं)
४. सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू मे)   ५. गृहबिबलक्षण   ६. दोपावतारमन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८। पत्र सं० ५५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८०४ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। दशा–सामान्य।

१. जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१–३
२. सतसई	विहारीलाल	" ले० काल १७७४ फागुण बुदी १	१–४८
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन	गङ्गादास	" " १८०४ सावण बुदी १२	४९–५५

दोहा— अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन।
राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥
दंपति रति नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह।
जा दिन जाय अनंद सौ, जीतव को फल ऐह ॥२॥

सुंदर पिय मन भावती, भाग भरी सुकुमारि ।
सोइ नारि सनेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्यां हाथां रे वरह ए, पात्यां मैड कारन भारि ॥४॥
तरमै हूं परसे नहो, नौढा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हाले ग्रास ॥५॥

ग्रन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।
औसरि चुक्यौ मेहरा, कांई वरनि करेह ॥९८॥
मुदरी लै छलस्यौ कह्यं, ग्रौ हौं फिर ना पंद ।
काम सरे दुख वीसरे, वैरी हुवो वैद ॥९९॥
मानवती निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।
नदी किनारै रूखड़ो, जब तब होइ विनास ॥१००॥
सिव सुखदायक प्रानपति, जरो ग्रांन को भोग ।
नासे देसो रूखड़ो, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
गंता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मिती सावरण वदि १२ बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखतं माणिकचन्द बज बांचै जीहेने जिसा माफिक बंच्या ।

५३९९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ३६ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई-नवरू कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १९९५ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महोदधि है ।

५४ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । म्रा० ६×५ इञ्च । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१—२४
२. सिद्ध भक्ति म्रादि संग्रह	×	प्राकृत	२५—७०
३. समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४. सामायिकपाठ	×	प्राकृत	७३—८१
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८२—८६
६. पार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	"	८७—१००
७. चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"	१०१-१४६
८ पञ्चस्तोत्र	×	"	१४७—१७०
६, जिनवरस्तोत्र	×	"	१७० -२००
१०. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	२०१—२५०
११. सकलीकरणविधान	×	"	२५१—३००
१२. जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी पद्य पद्य सं० ४८	३०१—८

म्रादिभाग—

जिनवर चुवीसइ जणि भानू पाय नमी कहु भवहं विचार ।

भाविइं सुगत ये संत ।।१।।

मलञ्जय राजा पणि भणीइ, भाग भूमि म्राइ पणि सुणीइ ।

श्रीधर ईशानि देव ।।२।।

सुचिराज सातयइ भवि जाणु, म्रच्युतेन्द्र सोलम वखाणु ।

वज्रनाभि चन्द्रेश ।।३।।

तप करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भव म्रग्यारम वृषभह स्वामी ।

मुगतइं श्या जगनाह ।।४।।

विमलबाहना राजा धरि जांयु, पंचामुत्तरि म्रहमिन्द्र सुभाणु ।

इशं भवजिन परमपद पाम्यु ।।५।।

विमल वाहन राजा धरि जांयु, पंचामुत्तरि म्रहमिन्द्र वखाणु ।

म्रजित म्रमर पद पाम्यु ।।६।।

विमल वाहन राजा धरि सुणीइ, प्रथमग्रीवि महमिंद्र सुभणींइ ।

संभव जिन अवतार ।।७।।

अन्तिमभाग— आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ।।४५।।

नमिनाथ भवदश तम्हें जाणु, पार्श्वनाथ भव दशइ बखाणु ।

महावीर भव तेत्रीसइ ।।४६।।

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर त्रिह धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ।।४७।।

जिन चुवीस भवांतर सारो, भणता सुणता पुण्य अपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम बोलइ ।।४८।।

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ।।

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८—३१०
१४. नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११—१३
१५. पद—जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४—१५
१६. पद-जीया प्रभु न सुमरयो रे	×	,,	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—भजन । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. नेमि गुण गाऊं वांछित पाऊं	महीचन्द सूरि	हिन्दी	१
	बाघ नगर में सं० १८८२ में पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।		
२. पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१—६
३. रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	,,	६
४. सुख कारण सुमरो	×	,,	७
५. कर जोर रे जीवा विनजी	पं० फतेहचन्द	,,	८
६. चरण शरण अब आइयो	,,	,,	८
७. ख्याल छिरयो ममाविको रे जीवा	,,	,,	९

८. आदम जाल बरााय	फतेहचन्द	हिन्दी	र० काल स० १८४०	६
९. दर्शन दुहेलो जी	”	”		१०
१०. उग्रसेन घर बारणैं जी	”	”		११
११. बारीजी जिनंदजी वारी	”	”		१२
१२. जामन मरण का	”	”		१३
१३. तुम जाय मनावो	”	”		१३
१४. अब ल्यूं नेमि जिनंदा	”	”		१४
१५. राज ऋषभ चरण नित वंदिये	”	”		१५
१६. कर्म भरमाये	”	”		१६
१७. प्रभुजी थांके सरणै आया	”	”		१७
१८. पार उतारो जिनजी	”	”		१७
१९. थांकी सांवरी मूरति छवि प्यारी	”	”		१८
२०. तुम जाय मनावो	”	”	अपूर्ण	१८
२१. जिन चरणां चितलाओ	”	”		१९
२२. म्हारो मन लाग्योजी	”	”		१९
२३. बाल जीव जरे	नेमीचन्द	”		२०
२४. मो मनरा प्यारा	सुखदेव	”		२१
२५. आठ भवांरो बाहलो	खेमचन्द	”		२२
२६. समदविजयजीरो जादुराय	”	”		२३
२७. नाभिजो के नन्दन	मनसाराम	”		२३
२८. त्रिभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	”		२४
२९. नाभिराय मोरां देवी	विजयकीर्ति	”		२६
३०. वारि २ हो बोमांजी	जीवणराम	”		२६
३१. श्री ऋषभेसुर प्रणमूं पाय	सदासागर	”		२७
३२. परम महा उत्कृष्ट आदि सुर	अजैराम	”		२७
३३. वै गुरु मेरे उर बसो	भूधरदास	”		२९
३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्त्ति	”		३०

३५. श्रीजिनराय की प्रतिमा वंदी जाय	त्रिलोककीर्त्ति	हिन्दी		३१
३६. होजी थांकी सांवली सूरत	पं० फतेहचन्द	"		३२
३७. कबही मिलसी हो मुनिवर	×	"		३३
३८. नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	"	र० काल सं० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसे बीनऊं	अजयराज	"		३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"		३५
४१. सांमुजारो वासी प्यारो	नयविमल	"		३६
४२. मन्दिर श्रावालां	×	"		३६
४३. ध्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"		३७
४४. ज्यारे सोभै राजि	निर्मल	"		३८
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"		३९
४६. समकित धारी सहलडीजी	पुरुषोत्तम	"		४०
४७. प्रवगति मुक्ति नहीं छै रे	रामचन्द्र	"		४१
४८. बधावा	"	"		४२
४९. श्रीमंदरजी सुणज्यो मोरी बीनती	गुणचन्द्र	"		४३
५०. करकसारी बीनती	भगोसाह	"		४४-४५

सूझा नगर में सं० १८२६ में रचना हुई थी।

५१. उपदेशबावनी	×	हिन्दी		४५-६१
५२. जैनबद्री देशकी पत्री	मजलसराय	"	सं० १८२१	६२-६६
५३. ८५ प्रकार के मूर्खों के भेद	×	"		६७-६९
५४. रागमाला	×	"	३६ रागनियों के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	"	राग भैरु	७०
५६. धनि २ हो प्रवि दर्शन काजे	"	"		७१
५७. देखो जिनराज देव सेव	"	"		७२
५८. महावीर जिन मुक्ति पधारे	"	"		७२
५९. हमरैतो प्रभु सुरति	"	"		७३

६०. श्रीरिषभजी को ध्यान धरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी		७३
६१. प्रात प्रथम ही जपो	”	”		७४
६२. जागे श्री नेमिकुमार	”	”	राग रामकली	७४
६३. प्रभु के दर्शन को मैं आयो	”	”		७५
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे	”	”		७५
६५. भूल कंदरी नेमि पढ़ावे	”	”		७५
६६. निंदा तू जागत क्यों नहि रे	”	”		७६
६७. उतो मेरे प्राणको पियारो	”	”		७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	”	”		७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	”	”		७६
७०. मुनि हो अरज तेरे पांय परो	”	”		७७
७१. मेरी कौन गति होसी	”	”		७७
७२. देखोरी नेम कैसी रिद्धि पाई	”	”		७८
७३. आजि बधाई राजा नाभि के	”	”		७८
७४. वीतराग नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्त्ति	”		७९
७५. या चेतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	”		७९
७६. इस नगरी मे किस बिध रहना	बनारसीदास	”		७९
७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	”		८०
७८. ऋषभअजित संभव हरणा	भ० विजयकीर्त्ति	”		८०
७९. उठो तेरो मुख देखूं	ब्रह्मटोडर	”		८०
८० देखोरी आदीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	खुशालचंद	”		८१
८१. जै जै जै जै जिनराज	लालचन्द	”		८१
८२. प्रभुजी तिहारो कृपा	हरीसिंह	”		८१
८३. धमकि २ घुम तागड दि दा ना	रामभगत	”		८२
८४. विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	”		८२
८५. छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	”		८२

८६. देखि प्रभु दरस कीएा	फतेहचन्द	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८. प्राजि उदै घर संपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनंद	शोभाचन्द	"	८४
९०. मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्त्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सूं प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३. शीतल गंगादिक जल	विजयकीर्त्ति	"	८५
९४. तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५. सब स्वारथ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन भटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकूं	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	द्यानतराय	"	८६
९९. सहस राम रस पीजयें	रामदास	"	८६
१००. मुनि मेरी मनसा मालणी	×	"	८६
१०१. बां साधु संसार मे	×	"	८७
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव प्रदेव की मुद्रा लखि लीजै	×	"	८७
१०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचंद	"	८८
१०५. काया वाडी काठकी सीचत सूके आप	मुनिपद्मतिलक	"	८८
१०६. ऐसे क्यों प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७. ऐसे यों प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८. ऐसे यों प्रभु पाइये सुनि पंडित प्राणी	×	"	९०
१०९. मेटो बिथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११०. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११. रे मन विषयां भूलिबो	भानुकीर्त्ति	"	९१

११२. सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	हिन्दी	६१
११३. अब लै जैनधर्म की सरणों	×	"	६१
११४. बैठे वज्रदन्त भूपाल	द्यानतराय	"	६१
११५. इह सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	६२
११६. उठि संबारे कीजिये दरसण	×	"	६२
११७. कौन कुबाण परी रे मना तेरी	×	"	६२
११८. राम भरथ सौं कहे सुभाय	द्यानतराय	"	६३
११९. कहे भरतजी सुणि हो राम	"	"	६३
१२०. मूरति कैसे राजै	जगतराम	"	६३
१२१. देखो सखि कौन है नेम कुमार	विजयकीर्त्ति	"	६३
१२२. जिनवरजीसूं प्रीति करी री	"	"	६४
१२३. भोर ही आये प्रभु दर्शन को	हरखचन्द	"	६४
१२४. जिनेसुरदेव आये करण तुम सेव	जगतराम	"	६४
१२५. ज्यौं बने त्यौं तारि मोकूं	गुलाबकृष्ण	"	६४
१२६. हमारी बारि श्री नेमिकुमार	×	"	६४
१२७. आछे रङ्ग राचे भली भई	×	"	६५
१२८. एरी चलो प्रभुको दर्श करा	जगतराम	"	६५
१२९. नैना मेरे दर्शन है सुभाय	×	"	६५
१३०. लागी साभी प्रीति तू साभे	×	"	६५
१३१. तैं तो मेरी सुधि हूं न लई	×	"	६५
१३२. मानों मैं तो शिव सिधि लाई	×	"	६६
१३३. जानीये तो जानी तेरे मनकी कहानी	विजयकीर्त्ति	"	६६
१३४. नयन लगे मेरे नयन लगे	×	"	६६
१३५. मुझपै महरि करो महाराज	विजयकीर्त्ति	"	६६
१३६. चेतन चेत निज घट मांहि	"	"	६७
१३७. पिय बिन पल छिन वरस बिहात	"	"	६७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	भानुकीर्त्ति	हिन्दी	६७
१३९. तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	,,	६७
१४०. अथिर नरभव जागिरे	विजयकीर्त्ति	,,	६८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	,,	,,	६८
१४२. भलेभल आसकली मुझ आज	,,	,,	६८
१४३. कहां लो दास तेरी पूज करे	,,	,,	६८
१४४. आज ऋषभ घरि जावे	,,	,,	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊं	,,	,,	६९
१४६. जागो जागोजी जागो	,,	,,	६९
१४७. प्रात ममै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	,,	६९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विलमायो	अनन्तकीर्त्ति	,,	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	,,	,,
१५०. सरण तिहारी आयां प्रभु मैं	अखयराम	,,	,,
१५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात संभारो	विजयकीर्त्ति	,,	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	,,	,,
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	बनारसीदास	,,	,,
१५४. हूं सरणागत तोरी रे	×	,,	,,
१५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	,,	१०२
१५६. जीवडा तू जागिने प्यारा समकित महलमें	हरीसिंह	,,	,,
१५७. घोर घटाकरि आयोरी अलघर	जयकीर्त्ति	,,	,,
१५८. कौन दिखावु' आयी रे बनघर	×	,,	,,
१५९. सुमति जिनंद गुणमाला	गुणचन्द	,,	१०३
१६०. जिन बादल चढि आयो हो जगमें	,,	,,	,,
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	,,	,,
१६२. जिन २ देखी होत पुरानी	जगमल	,,	,,
१६३. [illegible] बरसत आज करी	[illegible]	,,	१०४

१६४. क्या सोचत अति भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५. समकित उत्तम भाई जगतमे	"	"	"
१६६. रे मेरे घटज्ञान धनागम छायो	"	"	१०५
१६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानझरी	"	"	"
१६९ उत [illegible] री जिन दर्शन को नेम	देवसेन	"	"
१७० मेरे अब गुरु है प्रभु ते बकसो	हर्षकीर्त्ति	"	१०६
१७१. बलिहारी खुदा के बन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२. मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३. देखोरी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४. कहारी कहूं कछु कहत न आवै	द्यानतराय	"	१०७
१७५. रे मन करि सदा संतोष	बनारसीदास	"	"
१७६. मेरी २ करता जनम गयो रे	रूपचन्द	"	"
१७७ देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्त्ति	"	"
१७८ साधो लीज्यो सुमति अकेली	बनारसीदास	"	१०८
१७९. तनिक जिया जाग	विजयकीर्त्ति	"	"
१८०. तन धन जोबन मान जगत मे	×	"	"
१८१ देख्यो बन में ठाडो वीर	भूधरदास	"	१०९
१८२. चेतन नेकु न तोहि संभार	बनारसीदास	"	"
१८३. लगि रह्योरे अरे	बखतराम	"	"
१८४. लागि रह्यो जीव परभाव मे	×	"	"
१८५. हम लागे आतमराम सो	द्यानतराय	"	११०
१८६. निरन्तर ध्याऊ नेमि जिनंद	विजयकीर्त्ति	"	"
१८७. कित गयोरे पंथी बोल तो	भूधरदास	"	"
१८८. हम बैठे अपनी मौन से	बनारसीदास	"	"
१८९. दुविधा कब जैहेगी	×	"	१११

१९०. जगत मे सो देवन का देव	बनारसीदास	हिन्दी		१११
१९१. मन लागो श्री नवकारसू	गुलाबचन्द	”		”
१९२. चेतन अब खोजिये	”	”	राग सबरङ्ग	११२
१९३. आवे जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	”		”
१९४. करो नाभि कंवरजी की आरती	लालचन्द	”		”
१९५. री भाको वेद रटन ब्रह्मा रटत	नन्ददास	”		११३
१९६. तैं नरभव पाय कहा किमो	रूपचन्द	”		”
१९७. अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	”		”
१९८. वलि जइये नेमि जिनदकी	भाऊ	”		”
१९९. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	”		११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	”		”

सं० १८२१ में विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी।

२०१ उमाहा लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नंद चरण रज वदौं	किसनदास	”	”
२०३. लाग्या आतमराम सो नेह	द्यानतराय	”	”
२०४. धनि मेरी आजकी घरी	×	”	११५
२०५ मेरो मन बस कीना जिनराज	चन्द	”	”
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	”	”
२०७. आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	”	”
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	”	११६
२०९. कलियुग मे ऐसे ही दिन जावे	हर्षकीर्ति	”	”
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	”	”
२११. नेमि कंवर वर वींद विराजे	×	”	११७
२१२ तेइ बड़भागी तेइ बड़भागी	सुंदरभूषण	”	”
२१३. अरे मन के के बर समझायो	×	”	”
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	बिहारीदास	”	”

२१५. नेमिजिनंद वर्नन की	सकलकीर्ति	हिन्दी	११८
२१६. अब छाक्यो दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान	×	”	”
२१७. रे मन जायगो कित ठौर	×	”	”
२१८. निश्चय होणहार सो होय	×	”	”
२१९. समझ नर जीवन थोरो	रूपचन्द	”	”
२२०. लग गई लगन हमारी	जगतराम	”	११९
२२१. अरे तो को कैसे २ कह समझावें	चैन विजय	”	”
२२२. माधुरी जैनवाणी	जगतराम	”	”
२२३. हम आये हैं जिनराज तोरे बन्दन कौ	द्यानतराय	”	”
२२४. मन अटक्यो रे। अटक्यो	धर्मपाल	”	”
२२५. जैन धर्म नहीं कीना वैस्न देही पायी	ब्रह्मजिनदास	”	१२०
२२६. इन नैनों दा यही सुभाव	”	”	”
२२७. नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	”	”
२२८. सब परि करम है परधान	रूपचन्द	”	”
२२९. सब परि बल चेत ज्ञान	हर्षकीर्ति	”	”
२३०. रे मन जायगो कित ठौर	जगतराम	”	१२१
२३१. सुनि मम नेमजी के वेन	द्यानतराय	”	”
२३२. तनक ताहि है री ताहि आपनो दरस	जगतराम	”	”
२३३. चलत प्राण क्यों रोयेरी काया	×	”	”
२३४. बाजत रंग मृदग रसाला	जयकीर्ति	”	”
२३५. अब तुम जागो चेतनराया	गुणचन्द	”	१२२
२३६. कैसा ध्यान धरया है	जगतराम	”	”
२३७. करि रे आतम हित करि लं	द्यानतराय	”	”
२३८. साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	”	”
२३९. देव मोरा हो ऋषभजी	समयसुन्दर	”	१२३
२४०. बंदी चेरी हो पिया मैं	द्यानतराय	”	”

२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२ जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	"	"
२४३ तुम ज्ञान विभो फूली बसत	द्यानतराय	"	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	"	"
२४५ लागि लौ नाभिनदन स्यौ	भूधरदास	"	"
२४६ हम ग्रातम को पहिचाना है	द्यानतराय	"	"
२४७ कौन सयानअन कीन्हारे जीव	जगतराम	"	"
२४८ निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९ हा जी प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५० जिनवाणी दरयाव मन मेरा ताहि म भून	गुणचन्द्र	"	"
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
२५२ गर्दूय ऊपर असवार चलन	"	"	"
२५३ आरसी दखत मोहि आरसी लाग	समयसुन्दर	"	१२६
२५४. काम गढ फोज चढी है	×	"	"
२५५. दरवाज खडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६ चलि रे हिन चलि चलि	द्यानतराय	"	"
२५७ चितामणि स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	"
२५८. मुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	"	१२७
२५९ चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६० जिन गुण गावो री	×	"	"
२६१ वीतराग तेरी माहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२ प्रभु सुमरन की या विरियां	"	"	१२८
२६३. किये आराधना तेरी	नवल	"	"
२६४. बडो धम आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५. मैध्या अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	१२९
२६६. तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या विचारी,	नवल	"	"

२६७. भैया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसूं काम है, थीराम		"	१२६
२६८. नेम ब्याहनकूं आया नेम सेहरा बंधाया	विनोदीलाल	"	१३०
२६९. धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन	×	"	१३१
२७०. चेतन नाड़ी भूलिये	नवल	"	"
२७१. त्यारो श्री महावीर मांकूं दीन जानिर	सवाईराम	"	"
२७२. मेरो मन बस कीन्हो महावीर (चादनपुरके)	हर्षकीर्ति	"	"
२७३ राखो सीता चलहु गेह	द्यानतराय	"	"
२७४. कहे सीताजी सुनि रामचन्द्र	"	"	१३२
२७५. नहिं छाडा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्ति	"	"
२७६. देवगुरु पहिचान बंदे	×	"	"
२७७. नेमि जिनंद गिरनेरया	जीवराम	"	१३३
२७८. क्य परदेसी को पतियारो	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१३३
२७९. चेतन मान ले माढी तिया	द्यानतराय	"	"
२८०. सावरी सूरत मेरे मन वसी है माई	नवल	"	"
२८१ आयो रे बुढापो बैरी	भूधरदास	"	"
२८२. साहिवा या जीवनडो म्हारो	जिनहर्ष	"	१३४
२८३. पञ्च महाव्रतधारा	किशनसिंह	"	"
२८४. तेरी बलिहारी हो जिनराज	×	"	"
२८५. दख्या दुनिया बिच वे कोई अजब तमाशा,	भूधरदास	"	१३५
२८६. अटके नैना नहीं बहैदा	नवल	"	"
२८७. चलो जिनदिये एरी सखी	द्यानतराय	"	"
२८८ जगतनन्दन जग नायक आदी-पति	×	"	"
२८९ आछिन गदिय मानु नेमजी प्यारो अखिया	राजाराम	"	१३६
२९०. हाजो इक ध्यान संतजी का धरना	हमराज	"	"
२९१ भला हो माडे साइ हो	×	"	"
२९२. तू ब्रह्म भूलो, तू ब्रह्म भूलो अज्ञानी रे प्राणी	बनारसीदास	"	"

२६३. होजी हो सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी		१३६
२६४. मुनि कनक कीर्ति की जकड़ी	मोतीराम	"		१३७

रचना काल सं० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर में पं० रामचन्द्र ने लिपि की।

२६५. छींक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६ सांवरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	पं० खेमचंद	हिन्दी		१३८
२६७. चांदखेड़ी में प्रभुजी राजिया	"	"		"
२६८. ज्यों जानत प्रभु जोग धरयो है	चन्द्रभान	"		"
२६९. आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	"	र० काल १८५६	१३९-४०
३००. पार्श्वनाथ की आरती	"	"		१४०
३०१. नगरों की बसापत का संवत्वार विवरण	"	"		१४१

संवत् ११११ नागौर मंडाणो आखा तीज रै दिन।

" ६०९ दिल्ली बसाई अनंगपाल तुंवर वैसाख सुदी १२ भौम।

" १६१२ अकबर पातशाह आगरो बसायो।

" ७३१ राजा भोज उंजणी बसाई।

" १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई।

" १५१५ राजा जोधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११।

" १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई।

" १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह बसाई।

" १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई।

" १०७७ राजा भोज रै बेटै वीर नारायण सेवाणो बसायो।

" १५६६ रावल वीदै महेवो बसायो।

" १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर बसायो सां (वन) सुदी १२ रवौ।

" ११०० पवार नाहरराव मंडोवर बसायो।

" १६११ राव मालदे माल कोट करायो।

" १५१८ राव जोधावत मेड़तो बसायो।

" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावे।

संवत् १३०० जालौर सीमडारे बसाई ।

„ १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो ।

„ १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो ।

„ ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई वैसाख सुदी ३ ।

„ २०२ (१२०२) ? राव अजैपाल पवार अजमेर बसाई ।

„ ११४८ सिधराव जैसिंह देहौ पाटण मैं ।

„ १४५२ देवडो सिरोही बसाई ।

„ १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।

„ १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो ।

„ ११८१ फलोधी पारसनाथजी ।

„ १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी ।

„ १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम आयो ।

„ १६६६ राव किसनसिंह किशनगढ बसायो ।

„ १६१६ मालपुरो बसायो ।

„ १४५५ रैणपुरो देहूरो थांपना ।

„ ६०२ चीतोड चित्रंगद मोडीये बसाई ।

„ १२४५ विमल मंत्रीस्वर हूवो विमल बसाई ।

„ १६०६ पातसिह अकबर चीतोड़ लोधी जे० सुदी १२ ।

„ १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिहजी नु म्हाराजा रो खिताब दीयो ।

„ १६३४ पातसाह अक्कबर कछोविदा लीधो ।

३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	१४३–४६
३०३. जैन मत का संकल्प	×	संस्कृत	अपूर्ण
३०४. शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

सं० १८५८ असाढ वदी १४

सर्वज्ञजिनं प्रणमामि हितं, सुभथान पलाडा थी लिखितं ।

सुमुनी महीचन्दजि को विदयं, नवमैंद हुकम सुणां सवयं ॥१॥

किरपा कुरिण मोहन जीवणयं, अपरंपुर मारोठ थानकयं ।
सरबोपम लायक थान छजै, गुरु देव सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
तीर्थङ्कर ईस सुभक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।
चतुसंघ सुभार धुरंधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥
व्रत द्वादस पालसी सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुधरा ।
बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सुश्रेयांस दानपति जु तिसा ।
निज वंस जु व्योम दिवाकरयं, गुण सौख्य कलानिधि बोधमयं ॥५॥
सु इत्यादिक वोपम योगि बहु, लिखियो जु कहां लग वोय सहूं ।
दयुहा गोठि जु श्रावग पंच लसे, बुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसे ॥६॥
तिह योगि लिखे ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख संपति भोग मुदा ।
.... ॥७॥
इह थानक आनन्द देव जपै, उत बाहुत क्षेम जिनेन्द्र कुपै ।
अपरंच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परसंन तितै ॥८॥
सहु बात जु लाय धर्मकरं, ध्रम देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥
यशवंत विनैवंत दातृ गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।
इत है व्यवहार सदा तुम को, उपरांति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
लिखियो लघु को विधमान यहु, सुख पत्र जु वाहुडतो लिखि हू ।
वसु[८] बाण[५] वसु[८] पुनि चन्द्र[१] कियं, बदि मास असाढ चतुर्दशियं ॥११॥
इह त्रोटक छंद सुचाल मही, लिखबी पतरी हित रीति वही ।
....॥१२॥
तुम भेजि हुं वैक संकर नै, समचार कह्या मुख तै सुइनै ।
इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवांन सबै सुखतै ॥१३॥

॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पंचायती सुं ॥

१०५. शृङ्गार रस के फुटकर कवित्त × हिन्दी १५३-१५४

५४०३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १८२ । आ० ८×५½ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है।

५४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ८१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय- पूजा । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. चतुर्विंशति तीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	१-६५
२. जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषण	हिन्दी	६६-६९
३. समस्त व्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्त्ति	"	७०-७३
४. आदिनाथाष्टक	×	"	७३-७५
५. मणिरत्नाकर जयमाल	×	"	७५-७७
६. आदीश्वर आरती	×	"	८१

५४०५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५५ आसोज सुदी १३ ।

१. दशलक्षणपूजा	×	संस्कृत	१-५
२. लघुस्वयंभू स्तोत्र	×	"	१६-१८
३. शास्त्रपूजा	×	"	१९-२४
४. षोडशकारणपूजा	×	"	२४-२७
५. जिनसहस्रनाम (लघु)	×	"	२७-३२
६ सोलकारणरास	मुनि सकलकीर्त्ति	हिन्दी	३३-३८
७. देवपूजा	×	संस्कृत	५०-६६
८. सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९. पञ्चमेरुपूजा	×	"	७४-७५
१०. अष्टाह्निकाभक्ति	×	"	७६-८९
११. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	९०-१०५
१२. रत्नत्रयपूजा	पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन	"	११६-१३७
१३. क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	"	१३८-१४५
१४. [illegible]तीर्थवर्णन	×	हिन्दी	१४६

१५. बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६. शास्त्रजयमाल	×	प्राकृत	१५५-५९

५४०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१- ५
२. भूपालस्तोत्र	भूपाल	"	५-६
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	६-१३
४. सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५. भक्तिपाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६. स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राच	"	७१-८७
७. वन्देतान की जयमाला	×	"	८८-८६
८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८६-१०७
९. श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१०. गुर्वावलि	×	"	१२४-३३
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३९
१२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३६-१४३

सवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने प्रचेह श्री घनौघेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयनन्दिपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तत्पट्टे भ० श्रीअभयचन्द्र ब्रह्म श्री अभयसागर सहायेनेदं क्रियाकलापपुस्तकं लिखितं श्रीमद्घनौघेन्द्रगच्छः हुंबड़जातीयः लघुशाखायां सकुलप्रसूत परिक्षरविदासस्य भार्या बाई कीकी तयोः संभवा सुता मलाइनाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५४०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—पं० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१. शारदा पूजा	×	संस्कृत	१-२
२. स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३. मंगल पाठ	×	संस्कृत	८–९
४. नामावली	×	"	९–११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२–१३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३–१४
७. भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४–१५
८. पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	१५–२०
९. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	२१–२५
१०. षोडशकारणपूजा	×	"	२५–२७
११. दशलक्षणपूजा	×	"	२७–२९
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२९–३०
१३. अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१–३३
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	३४–४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	४७–५३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२–५५
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६–६०
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१–७१
१९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२–८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८–९१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	९२–९७
२२. तत्वार्थसूत्र (१–५ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९–१००
२३. भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१००–१६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१०७–१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२–१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४–११[illegible]
२७. बाईसपरिषह	×	"	१२०–१२५
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२५–२६

२९. श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६–२८
३०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८–३२
३१. चितामणीपार्श्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२–३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६–३९
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०–४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३–४६
३५. ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७–१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । आ० ८¾×७ इञ्च । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । आ० ६¾×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १२ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमे नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष—इसमें पं० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनसुख सोनी ने अलवर मे साह दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । आ० ५×६½ इञ्च । विषय–भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

१. ज्योतिषसार	कृपाराम	हिन्दी	१–३०

र० काल सं० १७९२ कार्तिक सुदी १० ।

आदिभाग- दोहा—

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गणपति पाय ।
सो गणपति बुधि दीजिये, जन अपनो चितलाय ।।
अरु परसो चरनन कमल, युगल राधिका स्याम ।
धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि आठो जाम ।।
हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता आन ।
जगत आरसी मैं नमो, दूजो प्रतिबिम्ब जान ।।
सोभति ओढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर ।
मनो लस घन मांझ ससि, दामिनी चारु ओर ।।
परसे अति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम ।
नमस्कार कर जोरि कै, भाषत किरपाराम ।।

साहिजहापुर सहर में, कायथ राजाराम ।
तुलाराम तिहि बंस मे, ता सुत किरपाराम ।।६।।

लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पंडितन पास ।
ताके सबै श्लोक कैं, दोहा करे प्रकास ।।७।।

औ अवहु जे सुनौ, लयो जु अरथ निकारि ।
ताको बहुविधि हेत सौं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ।।८।।

संवत् सतरह से बरस, और बाणवै जानि ।
कातिक सुदी दसमी गुरु, रच्यौ ग्रन्थ पहचानि ।।९।।

सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु अरथ निकारि ।
नाम धरयो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ।।१०।।

ज्योतिष सार जु ग्रन्थ कौं, कलप ब्रछ मनु लेखि ।
ताको नव साखा लसत, जुदो जुदो फल देखि ।।११।।

अन्तिम—

अथ वरस फल लिखते—

संवत् महै होन करि, जनम वर (ष) लो मित्त ।
रहै सेष सो गत बरष, मावरदा मैं चित्त ॥६०॥
भये बरष गत अङ्क अर, लिख घर बाहू ईस ।
प्रथम येक मन्दर है, ईह वहौ इकतीस ॥६१॥
अरतीस पहलै धूरवा, अंक को दिन अपनै मन जानि ।
दूजे घर फल तीसरो, चौथे म अखिर ज ठांन ॥६२॥
भये बरष गत अंक को, गुन धरवावो चित्त ।
गुणाकार के अंक मैं, भाग सात हरि मित ॥६३॥
भाग हरै ले सात को, लब्ध अंक सो जानि ।
जो मिल्ने य पल मैं बहुरि, फल लै घटी बखानि ॥६४॥
घांटका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अंक ।
तामे भाग जु सत को, हरि ये मित न सं॰ ॥६५॥
भाग रहै जो सेष सो, बचै अक पहिचानि ।
तिन मैं फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
उतनै बाते अंस रवि, बरस लिख्यो पहचानि ॥६७॥
बरस लम्यौ जा अंत मैं, सोइ देत चित धारि ।
बादिन इतनी घड़ी जु, पल बीते लगुन बीचारि ॥६८॥
लगन लिखै ते गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।
ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥

इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१. पाशाकेवली	×	हिन्दी	३१-३८
२. मुहूर्त्त	×	„	३९-४१

५४१५. गुटका सं० ३५। पत्र सं० १८। आ० ६३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-×। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. नेमिनाथजी के दश भव	×	हिन्दी पद्य	१-५
२. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	" र० काल १७४१,	५-७
३. दर्शन पाठ	×	संस्कृत	८
४. पार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	९-१०
५. दर्शन पाठ	×	"	११
६. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	१२-१८

५४१६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १०९। आ० ८॥×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल १७८२ माह बुदी ८। पूर्ण। अशुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटका जीर्ण है। लिपि विकृत एवं बिलकुल अशुद्ध है।

१. ढोला मारूणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं० ४१५,	१-२४
२. बदरीनाथजी के छन्द	×	"	२८-३०
		ले० काल १७८२ माह बुदी ८	
३. दान लीला	×	हिन्दी	३०-३१
४. प्रह्लाद चरित्र	×	"	३१-३४
५. मोहम्मद राजा की कथा	×	"	३५-४२
		११५ पद्य। पौराणिक कथा के आधार पर।	
६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी	४२-४४
		सं० १७८२ माह बुदी १३।	
७. भ्रमर गीत	×	" १२१ पद्य,	४४-५३
८. ध्रुलीला	×	"	५३-५५
९. गज मोक्ष कथा	×	"	५५-५६
१०. ध्रुलीला	×	" पद्य सं० २४	५६-६०

११. बारहखड़ी × हिन्दी ६०-६२
१२. बिरहमञ्जरी × " ६२-६८
१३. हरि बोला चित्रावली × " पद्य सं० २६ ६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन × " ७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच × संस्कृत ७५-७७
१६. हरिरस × हिन्दी ७८-८५

विशेष—गुटका साजहानाबाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था। लेखक रामजी मीणा था।

५४१७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च।

१. नमस्कार मंत्र सटीक × हिन्दी ३
२. मानबावनी मानकवि " ५३ पद्य हैं ४-२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति × " ३२
४. आयुर्वेद के नुसखे × " ३५
५. स्तुति कनककीर्ति " ३७

लिपि सं० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा × संस्कृत ४१

कुशला सौगाणी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के ओल्ये से लिखी।

७. तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि संस्कृत ६ अध्याय तक ६१
८. नेमीश्वररास ब्रह्मरायमल्ल हिन्दी र० सं० १६१५ १७२
९. जोगीरासो जिनदास " लिपि सं० १७१० १७६
१०. पद × " "
११. आदित्यवार कथा भाऊ कवि " २०४
१२. दानशीलतपभावना × " २०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छप्पय गुणकीर्ति " र० सं० १७७७ असाढ वदी १४

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, सेव सुर नर गुरु करता।
जय जय ग्यान पवित्र, भासु सेवहि अघ हरता ॥

सरसुति तनइ पसाइ, ज्ञान मनवांछित पूरइ ।
सारद लागौ पाइ, जेमि दुख दालिद्र भरइ ॥
गुरु निरग्रन्थ प्रणम्य कर, जिन चउवीसो मन धरउ ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभ वसाइ रु वेला तरउ ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द, नंद मरुदेवि जानउ ।
काइ धनुष शत पञ्च, वृषभ लाछन जु बखानउ ॥
हेम वर्ष कहि कायु, आयु लक्ष जु चौरासी ।
पूरव गनती एह, जन्म अयोध्या वासी ॥
भरथहि राजु नु सौपि कर, अस्टापद सीधउ तदा ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभवित लोक वन्दहु सदा ॥१॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघ विख्यातगच्छ सरसुतिय बखानउ ।
तिहि महि जिन चउवीम, ऐह सिक्षा मन जानउ ॥
पराय छइ प्रसादु, उत्तंग मूलचन्द्र प्रभुजानी ।
साहिजिहां पतिसाहि, राजु दिलीपति आनी ॥
सतरहसइरु सतोतरा, वदि असाढ चउदसि करना ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सु सकल संघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विसततीर्थंकर छपैया सम्पूर्ण ॥

११. सीलरास	गुणकीर्ति	हिन्दी	रचना सं० १७१३	२४०

५४१८. गुटका सं० ३८—पत्रसंख्या—२२१ । —आ० १०×७॥ दशा—जीर्ण ।

विशेष—३४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे हैं ।

१. प्रभावती कल्प	×	हिन्दी	कई रोगों का एक नुसखा है ।
२. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है ।

३. शील सुदर्शन रासो	×	हिन्दी	३७–४२

४. पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जो प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किावतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५. शकुनावली	×	संस्कृत	५६
६. पाशाकेवली (दोष परीक्षा) जन्म कुण्डली विचार	×	हिन्दी	६६

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का यंत्र है।

८. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	७३
९. वैद्यमनोत्सव (भाषा)	नयन सुख	हिन्दी	७४–८१
१०. राम विनोद (आयुर्वेद)	×	"	८२–९८
११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)	×	"	९९–११२

लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली

१२. शीघ्रबोध	काशीनाथ	संस्कृत	
१३. पूजा संग्रह	×	"	१९४
१४. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी	१९७
१५. तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	संस्कृत	२०७
१६. कल्याणमंदिर (भाषा)	बनारसीदास	हिन्दी	२१०
१७. रविवारव्रत कथा	×	"	२२६
१८. व्रतों का ब्योरा	×	"	"

अन्त में ६४ योगिनी आदि के यंत्र हैं।

५४१९. गुटका सं० ३९—पत्र सं० ९४। आ० ६×६ इञ्च। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

४४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं० १०३ । आ० ८॥×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा पृष्ठ ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुवा है ।

४४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२५७ । आ०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—संवत् १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रच० सं० १६६३ आसो.सु. १३	१–५१
२. माणिक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी	संस्कृत प्राकृत सुभाषित	५२–१११
ग्रंथप्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर			
३. देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	संस्कृत	लिपि संवत् १८६६	

कृपारामसौगाणी ने करौली राजा के पठनार्थ हाडौती गांव मे प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ ।

४. अनादिनिधनस्तोत्र	×	"	लिपि सं० १८६६	११५–११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत		११६–११७
६. सामायिकपाठ	अमितगति	"		११७–११८
७. पंडितमरण	×	"		११६
८. चौवीसतीर्थङ्करभक्ति	×	"		११६–२०

लेखन सं० १६७० बैसाख सुदी ३

९. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी		१२०
१०. दर्शनपाठ	×	संस्कृत		१२३
११. पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी		१२३–१२८
१२. कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"		१२८–३०
१३. विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	"		१२०–३२

रचना काल १७१५ ।

१४. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी		१३२–३५
१५. वज्रनाभि चक्रवर्त्तिकी भावना	भूधरदास	"		१३५–३६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३–३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७–३८
१८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८–४५
१९. सामायिक बड़ा	×	"	१४५–५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२–५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३–५४
२२. बाईस परिषह	भूधरदास	"	१५४–५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७ ५८
२४. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८ -६०
२५. बीसतीर्थंकर की जकड़ी	×	"	१६०–६१
२६. नेमिनाथ मंगल	लाल	हिन्दी	१६१ -१६७
			र० सं० १७४४ सावण सु० ६
२७. दान बावनी	द्यानतराय	"	१६७–७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैय्या भगवतीदास	"	१७१–१८३
			र० १७३६ जेठ बदी ७
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४–८६
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ंग	"	१८६–९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९२–९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४–९६
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६–९८
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८–२००
३५. भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	"	२००–२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२–२०५
३७. सिद्धचक्र पूजा	×	"	२०५–[illegible]
३८. [illegible] पूजा	×	"	[illegible]

३९. सोलहकारणपूजा	×	"	२०७–२०८
४०. दशलक्षणपूजा	×	"	२०८–२०९
४१. रत्नत्रयपूजा	×	"	२०९–१४
४२. कलिकुण्डलपूजा	×	"	२१४–२२५
४३. चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा	×	"	२२५–२६
४४. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	×	" अपूर्ण	२२६–२७
४६. चौबीस तीर्थङ्कर स्तवन	देवनन्दि	"	२२८–३७
४७. नवग्रहगर्भित पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	२३७–४०
४८. कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२४०–४१
		लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५	
४९. परमानन्दस्तोत्र	×	"	२४१–४३
५०. लघुजिनसहस्रनाम	×	"	२४३–४६
		लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५	
५१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	"	२४६–५१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	"	२५२–५४
५३. बहत्तरकला पुरुष	×	हिन्दी गद्य	२५७
५४. चौसठ कला स्त्री	×	"	"

५४२२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ३२९ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमे भूधरदासजी का चर्चा समाधान है।

५४२३. गुटका सं० ४३—पत्र सं० ५८ । आ० ६३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्ला १३ । पूर्ण एवं शुद्ध ।

विशेष—व घेरवालान्वये साह श्री जगरूप के पठनार्थ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है। सामायिक पाठ आदि का संग्रह है।

५४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ८३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है।

५५२५. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १४०। आ० ६½×५ इञ्च। पूर्ण।

१. देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१-७
२. कमलाष्टक	×	"	८-१०
३. गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४. सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१८
६. षोडशकारणपूजा	×	"	१९-२२
७. दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९. पंचमेरुपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४५
१०. अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५-५७
११. ऋषिमंडलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७-६५
१२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३. महाभिषेक पाठ	×	"	७४-९६
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	९७-१२१
१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६. क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७. गणधरवलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८. आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२९-३१
१९. गीत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२०. लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१. पद्मावतीछंद	भ० महीचन्द्र	"	१३५-१४०

५५२६. गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६। आ० ७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण एवं अशुद्ध।

विशेष—[illegible]

५४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र स० १४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. सूर्य के दस नाम	×	संस्कृत	१
२. बन्दी मोक्ष स्तोत्र	×	,,	१–२
३. निर्वाणविधि	×	,,	२–३
४. मार्कण्डेयपुराण	×	,,	४–५१
५. कालीसहस्रनाम	×	,,	५८–१३२
६. नृसिंहपूजा	×	,,	१३३–३५
७. देवीसूक्त	×	,,	१३६–६५
८. मंत्र-संहिता	×	संस्कृत	१६६–२३३
९. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,	२३३–३६
१०. हरगौरी संवाद	×	,	२३६–७३
११. नारायण कवच एवं अष्टक	×	,,	२७३–७९
१२. चामुण्डोपनिषद्	×	,,	२७९–२८१
१३. पीठ पूजा	×	,,	२८२–८७
१४. योगिनी कवच	×	,,	२८८–३१०
१५. आनंदलहरी स्तोत्र	शंकराचार्य	,,	३११–२४

५४२८ गुटका नं०४८ । पत्र सं०—२२२ । आ०—६॥×५॥ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. जिनयज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१–१४१
२ प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	,,	१४१–४५

दोहा— ॐ नम सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमत सन्मतिदेव, नि कर्माणम् जगद्गुरुम् ।
भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽहं प्रशस्ति ता गुणोत्तम ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्व-प्रकाशिनी ।
सद्गिराराधिता चापि वर्द्धा सत्यकरी ॥ २ ॥

गणिनो गौतमादींश्च सभाराणंवतारकान् ।
जन-प्रणीत-[illegible]प्रकाद् ॥ ३ ॥

मूलसंघे बलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदस्थाने वंद्ये वृंदारकादिभिः ॥ ४ ॥
नंदिसंघोभवत्तत्र नंदितामरनायकः ।
कुंदकुंदार्यसंज्ञोऽसौ कुलरत्नाकरे महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जातः सर्वसिद्धान्तपारगः ।
हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्त्वज्ञो नानाग्रंथविशारदः ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनिः ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तवाक्यजयोत्सवः ।
प्रभाचंद्रो जगद्वंद्यो परवादिभयंकरः ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शास्त्रमुख्यकः ।
पद्मनंदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायकः ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजितांह्रिर्विदुत्तमः ।
श्रुतचंद्रो महासाधुः साधुलोककृतार्चकः ॥ १० ।
प्रामाणिकः प्रमाणेऽभूदागमाध्यात्मवित्सुधीः ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवितः ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्त्वार्थवादः पति निकायपतिः ।
हतपंचेषुरस्तारिर्जिनचंद्रो विचक्षणः ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमांकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानके ।
तत्रास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः ।
धनधान्यसमाकीर्णप्रासादैर्देवनिर्मितैः ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्त्वसुखंकरः ।
मनोगतमहाभोगाः दाता दातृसमन्वितः ॥ १५ ॥
तोमरान्वयकुलप्रसूर्णो धर्मयुक्तः क्रियापरः ।
तत्रास्त्यनगरं श्रीमि विध्नपुरिभिरावृतम् ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसपूर्णैं वापिकूपादिभिर्महत् ।
श्रीमद्वनहट्टानामहट्टव्यापारभूषितं ॥ १७ ॥
अर्हत्चैत्यालये रेजे जगदानंदकारके ।
विचित्रमठमंदोहे वणिज्जनमुमंदिरो ॥ १८ ॥
अजन्याधिपतिस्तस्य प्रजापालो लसद्गुण ।
कान्त्याचंद्रो विभात्येष तेजसापद्मबांधव ॥ १९ ॥
शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारक ।
पचागमत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविशारद ॥ २० ॥
शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदावर ।
रामसिंहो विभुर्धीमान् भृत्यवैन्द्रो महायशी ॥ २१ ॥
प्रासाद्वाणकवरस्तत्र जैनधर्मपरायण ।
पात्रदानादर श्रेष्ठो हरिचन्द्रागुणाग्रणी ॥२२॥
श्रावकाचारसपन्ना दत्ताहारादिदामका ।
शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरिप्रियवादिनी ॥२३॥
पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्ताहत्सुभक्तिव ।
परापकरणाम्वातो जिनार्चनक्रियोद्यत ॥२४॥
श्रीवकाचारतत्त्वज्ञो कारुण्यवारिध ।
देल्हा साधु व्रताचारी राजदत्तप्रतिष्ठव ॥२५॥
तस्य भाया महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ।
प्रियंवद हिताचारावाली सौजन्यधारिणी ॥२६॥
तया क्रमेण सजातौ पुत्रौ लावण्यमन्दुरौ ।
अगण्यपुण्यसस्थानौ रामलक्ष्मणकाविव ॥२७॥
विनयशोत्सवानन्दकारिणौ व्रतधारिणौ ।
अर्हत्तीर्थमहायात्रासपर्कप्रविधायिनौ ॥२८॥
रामसिंहमहाभूपप्रधानपुरुषौ शुभौ ।
समुद्धृतजिनागारौ धर्मानामुमहोत्तमौ ॥२९॥

तच्चापरोऽभवद्वीरो नाम्ना सत्यचन्द्रमाः ।
लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
तत्कामिनी महाशीलधारिणी शिवकारिणी ।
चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिणी ॥३१॥
कुमुद्वयविशुद्धासीत् सद्धर्भक्तिभूषणा ।
धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ भक्तिका ॥३२॥
पुत्रावाम्नान्तयोः स्वीयरूपनिर्जितमन्मथौ ।
लक्षणाक्षूणसद्गात्रौ योषिन्मानसवल्लभौ ॥३३॥
अर्हद्देवगुरुसिद्धान्तगुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥३४॥
सुधागडिण्डीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
प्रतापवान्धर्मधरो हि श्रीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु ॥३५॥
भूपेन्द्रकार्याथकरो दयाढ्यो पूज्यो पूर्णेन्दुसकाशमुखोवरिष्ठ ।
श्रेष्ठी विवेकाहितमानसाऽसौ सुधीर्नन्दतु भूतलेऽस्मिन् ॥३६॥
हस्तद्वयं यस्य जिनार्चनं चैव वगवाम्बुजपकजे च ।
हृदक्षरं वाहृत्सखय वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोय ॥३७॥
तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधायिनी ।
सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥
चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
जैनश्रीः सुधावाक्यकोकोशाभोजसन्मुखी ॥३९॥
दुर्लभदे सहूर्णात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
दानमानोन्नसवान्लच्चर्द्धितोशेषचेतस ॥४०॥
श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसंघभक्तः ।
प्रद्योतिताशेषपुराणलोको साधू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥
आहारशास्त्रौषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधुः ।
कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्गोद्धुसाक्षुर्जकलात्पुरिष्मा ॥४२॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परप्रशस्य श्रीशास्त्रदानंहुतशास्त्रभाव ।
स्वर्गापवर्गेकविभूतिपात्र समस्तशास्त्रार्थविधानदक्ष ॥४३॥
दानेषु सार शुचिशास्त्रदान मेधा त्रिलोक्या जिनपुंगवोऽस्य ।
धुदीति धृत्वा परमंगलार्थं श्लीलिखान्साधूत्तमा प्रतिष्ठा ॥४४॥
पि लेखत्वा शुभाधान प्रतिष्ठासारमुत्तम ।
स्या ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥
अम्याश्रवाणसूपाके राज्येतीतैति सुन्दरे ।
विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमणे ॥४६॥
ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।
प्रतिष्ठासार एवासौ समाप्तिमगमत्परा ॥४७॥
अर्हत्क्रमाम्भोजनशावरागी सद्भूषणाकुक्कुटसर्पगाव ।
पद्मावती शासनदेवता सा नाथू सुसाधु चिरमेव पातात् ॥४८॥
व्युधातिता परं येन प्रमाणपुरुषापरो ।
रव श्रीमत्सडिल्लवशोत्थ नाथू साधु सनन्दतु ॥४९॥

॥ इति प्रशस्त्यावली ॥

३. कर्णपिशाचिनीमन्त्र	×	संस्कृत	१४५
४. भडाराशांतिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६. पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७. समाधिमरण	×	संस्कृत	१६०-६४
८ कलशविधि	×	"	१७३-६५
९. भैरवाष्टक	×	"	१६६
१०. भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१६८-२१४
११. णमोकारपचासिका पूजा	×	"	२१८

५६२१. गुटका सं० ५६—पत्र सं०—५८। आ०—५×४ इञ्च। लेखन काल स०—१८२४ पूर्ण। दशा—सामान्य।

१. संयोगबत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१–२५
२. फुटकर रचनाएं	×	"	२६–५८

४४३० गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । आ० ८×५ इञ्च । ले० काल १८६८ मगसर सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गंगाराम वैद्य ने सिरोज में ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी	१–५
२. चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६–२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७–३१

नेमीश्वर राजुल को झगडो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोडी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाणो ।
सब विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को संग न जाणू ।।
सूक्ष तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कु वर कू योग विचार काहा मन आनू ।। १ ।।

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हो अब भोग तन ओर घटें हैं ।
पाप बढे अटकर्म थके परमारथ की सब पेट फटे हैं ।।
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कु वर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म्म कटे हैं ।। २ ।।

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरबार भये अनगार त्रिलोक गोसाई ।
धूप अनूप बनावन धार सुघाट सहो तुम कांई के तोई ।।
भूख-पियास अनेक परिसह पावत हो कछु सिद्धन आई ।
राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कु वार सुनु मन लाई ।। १७ ।।

नेमीश्वरोवाच

काहे को बहुत करो तुम स्थापनय बेक सुनो उपदेस हमारो ।
योगहि भोग किये अब झूठा काम न बेक सरे जु तुम्हारो ।।

मानव जन्म बड़ो जगमाल के काज विना मनु कूप में डारो ।

नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि नेजी काज सवारो ।। १८ ।।

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म्म क्रिया सुभ त्रेपन साध कि संगत वेग सुनाइ ।

भोग तजि मन सुध करि जिन नेम तणी जव संगत पाइ ।।

भेद अनेक करी दृढ़ता जिन माग की सब बात सुनाई ।

लोच करी मन भाव धरी करी राजुल नार भई तव बाई ।। ३१ ।।

कलश—

आदि रचन्हा विवेक सबल युक्ती समभायो ।

नेमिनाथ दृढ चित्त ववहु राजुल कु समाभायो ।।

राजमति प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो ।

ब्रह्म ज्ञानसागर कहे वाद नेमि राजुल कीयो ।। ३२ ।।

।। इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम् ।।

४. अष्टाह्निकाव्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३२-३३
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	३५
६. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७. वर्धमानस्तोत्र	×	"	३६
८. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	३७
९. निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३८
१०. भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	३९
११. गुरुविनती	भूधरदास	"	४०
१२. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	"	४१-४२
१३. प्रभाती भजरूरभंवर भवे	×	"	४२
१४. मो गरीब कूं साहब तारोजी	गुलाबकिशन	"	"
१५. अब तेरो मुख देखूं	टोडर	"	४४
१६. प्रात हुवो सुमर देव	भूधरदास	"	४५

१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. करूं अराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल भमारा केई भमै	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	"	४८-५२
२२. सांवरिया तेरे बार बार वारि जाऊं	जगतराम	"	५२
२३. तेरे दरबार स्वामी इन्द्र दो खड़े है	×	"	५३
२४. जिनजी थांकी सूरत मनड़ो मोह्यो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५. पार्श्वनाथ तोत्र	द्यानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	"	र० सं० १७५१, ५४
२७. अहो जगतगुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८. चितामणि स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुद	"	५७-६०
३०. कलियुग की बिनती	ब्रह्मदेव	"	६१-६३
३१. शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२. पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	"	६५-६८

५५५१. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। आ० ८×६ इंच। विषय-संग्रह। ले० काल १७९६ फागुण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर में लिपि की गई थी।

१. भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	संस्कृत	१-९०
२ भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	" सं० १८००	९१-१०६

५५५२. गुटका सं० ५१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८×६ इंच। ले० काल १७९३ माघ सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकोश भाषा है।

५५५३ गुटका सं० ५२। पत्र सं० १२४+६५+२९। आ० ८×७ इंच।

विशेष—तीन अपूर्ण गुटकों का मिश्रण है।

१. पडिक्कमणसूत्र	×	प्राकृत
२. पच्चक्खाण	×	"
३. वन्दे तू सूत्र	×	"
४. थंभणपार्श्वनाथस्तवन (बृहत्)	मुनिअभयदेव	पुरानी हिन्दी
५. अजितशांतिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७. भयहरस्तोत्र	×	"
८. सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९. गुरुपारतंत्र एवं स्मरण	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
१२. शांतिस्तवन	देवसूरि	"
१३. सप्तर्षिजिनस्तवन	×	प्राकृत

लिपि संवत् १७५० आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी।

१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत	
१५. नवतत्त्वविचार	×	"	
१६. अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	पुरानी हिन्दी	
१७. सीमंधरस्वामीस्तवन	×	"	
१८. शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गणि	राजस्थानी	
१९. थंभणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	"	
२०. "	×	"	
२१. शांतिनाथस्तवन	समयसुन्दर	"	
२२. चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी	
२३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	"	रचना० सं० १५६२
२४. फलवधी पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी	

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. ”	”	”
२७. गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
२८. ”	जोधराज	”
२९. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचंद	”
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. ”	समयसुन्दर	”
३२. बीसविरहमानजकड़ी	”	”
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	”
३४. गौतमस्वामीरास	×	”
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	”
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	”
	जोधराज ने खींवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा।	
३७. साधुवंदना	आनंद सूरि	”
३८. दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौढालिया	कनकसोम	हिन्दी
	र० काल १६३८। लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५।	
४०. आद्रकुमार धमाल	”	”
	रचना संवत् १६४४। अमरसर में रचना हुई थी।	
४१. मेघकुमार चौढालिया	”	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	”
	लिपि संवत् १७५० कार्तिक सुदी १३ अवरंगाबाद।	
४३. कर्मछत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
४४. बारहभावना	जयसोमगणि	”
४५. पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	”
४६. शत्रुंजयरास	”	”

४७. नेमिजिनस्तवन	जोधराज मुनि	हिन्दी	
४८. भक्तीपाश्वनाथस्तवन	”	”	
४९. पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५०. पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१. संगीतबन्धपार्श्वजिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२. जिनस्तुति	×	”	लिपि सं० १७५०
५३. नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	”	
५४. नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	”	
५५ ”	गुणप्रभसूरि	”	
५६. गौतमस्वामिसज्झाय	समयसुन्दर	”	
५७. ”	×	”	
५८. जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरमणि	”	
५९. जिनकुशलसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	”	
			र० संवत् १४८१
६०. जिनकुशलसूरिस्तवन	×	”	
६१. नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	”	र० सं० १६८९
६२. नेमिराजुल गीत	भुवनकीर्ति	”	
६३. ”	जिनहर्षसूरि	”	
६४. ”	×	”	
६५. थूलिभद्र गीत	×	”	
६६. नमिराजर्षि सज्झाय	समयसुन्दर	”	
६७. सज्झाय	”	”	
६८. अरहनासज्झाय	”	”	
६९. मेघकुमारसज्झाय	”	”	
७०. अनाथीमुनिसज्झाय	”	”	
७१. सीताजीरी सज्झाय	×	हिन्दी	

७२. चेलना री सज्झाय	×	हिन्दी	
७३. जीवकाया ”	भुवनकीर्ति	”	
७४. ” ”	राजसमुद्र	”	
७५. आतमशिक्षा ”	”	”	
७६. ” ”	पद्मकुमार	”	
७७. ” ”	सालम	”	
७८. ” ”	प्रसन्नचन्द्र	”	
७९. स्वार्थबीसी	मुनिश्रीसार	”	
८०. शत्रुंजयरास	राजसमुद्र	”	
८१. सोलह सतियों के नाम	”	”	
८२. बलदेव महामुनि सज्झाय	समयसुन्दर	”	
८३. श्रेणिकराजासज्झाय	”	हिन्दी	
८४. बाहुबलि ”	”	”	
८५. शालिभद्र महामुनि ”	×	”	
८६. बंभणवाडी स्तवन	कमलकलश	”	
८७. शत्रुंजयस्तवन	राजसमुद्र	”	
८८. राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	”	
८९. गौतमपृच्छा	”	”	
९०. नेमिराजमति का चौमासिया	×	”	
९१. स्थूलिभद्र सज्झाय	×	”	
९२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	”	
९३. पुण्यछत्तीसी	”	”	
९४. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	”	”	र० सं० १७२१
९५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	”	
९६. बलदेवमहामुनिसज्झाय	×	”	
९७. शीलबत्तीसी	×	”	

१८. मौनएकादशी स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७५१ ।

५४३४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २११ । आ० ८¾×४¾ इञ्च । लेखनकाल १७७५ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. राजाचन्द्रगुप्त की चौपई	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
पद—		
३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द्र	"
४. आज नाभि के द्वार भीर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवामें जाय सो ही सफल घरी	दलाराम	"
६. चरन कमल उठि प्रात देख मैं	"	"
७. सोही सन्त शिरोमनि जिनवर गुन गावे	"	"
८. मंगल आरती कीजै भोर	"	"
९. आरती कीजै श्री नेमकंवरकी	"	"
१० वंदौं दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जान	भूधरदास	" "
११. त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाजा बजिया गहरा जहां जम्या हो ऋषभ कुमार	"	"
१३. नेम कंवरजी ये सजि आया	सांईदास	"
१४. भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकड़ी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. अहो जगतगुरु जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६. देख्या दुनिया के बीच वे कोई अजब तमाशा	"	"
१७. विनती—वंदों श्री अरहंतदेव सारद नित्य सुमरण हिरदै धरूं	"	"

राजमती वीनवै नेमजी अजी तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (विनती)	विश्वभूषण	हिन्दी	
१९. नेमीश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	"	र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"	
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	
२३. पांच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	"	लेखन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"	
२५. मुनिश्वरों की जयमाल	×	"	
२६. आरती	द्यानतराय	"	
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	"	
२८. विनति-(वंदहु श्री जिनराय मनवच काय करोजी)	कनककीर्ति	"	
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"	
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीड़ा रैनू कांई सोवै रैन चित्त)	×	"	
३१. अकड़ी (रिषभ जिनेश्वर वंदस्यौ)	देवेन्द्रकीर्ति	"	
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"	
३३. बुहरि (नेमि मवीना नाथ वां परि वारी म्हाराजाज)	×	"	
३४. मोरड़ो (म्हारो रै मन मोरड़ा तूतो उडि गिरनारि जाइ रै)	×	"	
३५. बटोइ (तु तोजिन भजि विलम न लाय बटोई मारग भूली रै)	×	हिन्दी	
३६. पंचम गति की बेलि	हर्षकीर्ति	"	र० सं० १६८३

३७. करम हिण्डोलणा	×	हिन्दी	
३८. पद–(ज्ञान सरोवर मांहि भूले रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्त्ति	"	
३९. पद–(चौबीसों तीर्थंकर करो सौंष वंदन)	नेमिचंद	"	
४०. करमां की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथू	"	
४१. भारती (करौं नाभि कंवरजी की भारती)	लालचंद	"	
४२. आरती	द्यानतराय	"	
४३. पद–(जोवड़ा पूजो श्री पारस जिनेन्द्र रे)	"	"	
४४. गीत (डोरी थे लगावौ हो नेमजी का नाम स्यो)	पांड़े नाथूराम	"	
४५. सुहरि–(यो ससार अनादि को सोही बाग बण्यो री लो)	नेमिचन्द	"	
४६. सुहरि–(नेमि कुंवर व्याहन चढयो राजुल करे ह सिंगार)	"	"	
४७. जोगीरासो	पांडे जिनदास	"	
४८. कलियुग की कथा	केशव	"	
४९. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	४४ पद्य । ले० सं० १७७६
५०. अष्टान्हिका व्रत कथा	"	"	"
५१. मुनिश्वरों की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	
५३. तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
५४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
५५. हम बैठे अपने मौन से	"	"	
५६. कोई अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान बतावे	"	"	

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी	
५८. स्फुट दोहे	”	”	
५९. गुणवेलि (चन्दन बाला गीत)	”	”	
६०. श्रीपालस्तवन	”	”	
६१. तीन मियां की जकड़ी	धनराज	”	
६२. सुखघड़ी	”	”	
६३. कक्का बीनती (बारहखड़ी)	”	”	
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	”	
६५. अठारह नाता का ब्यौरा	×	”	
६६. आदित्यवार कथा	×	”	१८५४ जेठ
६७. धर्मरासो	×	”	
६८. पद–देखो माई आजि रिषभ घरि आवे	×	”	
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	”	
७०. गुरुओं की स्तुति	—	संस्कृत	
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी	
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	”	
७३. पद–उठो तेरो मुख देखूं नाभिजी के नन्द	टोडर	”	
७४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	”	
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	”	
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	”	
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	”	
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	”	
७९. दोहासंग्रह	माणिकदास	”	
८०. धार्मिक चर्चा	×	”	
८१. दूरि गयो कत चेती	जगराम	”	
८२. देखो माइ आज रिषभ घर आवै	×	”	

८३. चरणकमल को ध्यान मेरे	×	हिन्दी
८४. जिनजी थांकीजी मूरत मनडो मोहियो	×	"
८५. नाही सुकति पंथ कट पारी नारी	"	"
८६. समकित नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"
८७. नेमजी थे कांई हठ मारयो महाराज	हर्षकीर्ति	"
८८. देखरी कहूं नेमि कुमार	"	"
८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	"
९०. चितामणी स्वामी सांचा साहब मेरा	"	"
९१. सुखघड़ी कब आवेगी	हर्षकीर्ति	"
९२. चेतन तू तिहूं काल अकेला	"	"
९३. पंच मंगल	रूपचन्द	"
९४. प्रभुजी थांका दरसण सूं सुख पावां	ब्रह्म कपूरचन्द	"
९५. लघु मंगल	रूपचन्द	"
९६. सम्मेद शिखर चली रैं जीवड़ा	×	"
९७. हम आये हैं जिनराज तुम्हारे वन्दन को	द्यानतराय	"
९८. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	"
९९. तू भ्रम भूलि न रे प्राणी सज्ञानी	×	"
१००. हूजिये दयाल प्रभु हूजिये दयाल	×	"
१०१. मेरा मन की बात कासु कहिये	सबलसिंह	"
१०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	×	"
१०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	×	"
१०४. प्रभुजी त्यारियां प्रभु आप जाणिलै त्यारियां	×	"
१०५. ज्यों जाणै ज्यों त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	"
१०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास	"
१०७. सुमरन ही में त्यारे प्रभुजी तुम सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	"

१०८. पार्श्वनाथ के दर्शन — वृन्दावन — हिन्दी — र० सं० १७६८

१०९. प्रभुजी मैं तुम चरणशरण गह्यो — बालचन्द — ”

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशांतिक पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजाएं एवं विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्रंश में चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहु चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ।।ढाल।।
जह पठावहि तिहुवरण इदं ।। रे मन० ।।
यहु संसार असार मुरगे भिरणु करु जिय धम्मु दयालं ।
परगय तच्चु मुरणहि परमेट्ठिहि सुमरीहु अप्पु गुरणालं ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ अजीउ दुविहु पुरणु आसव बन्धु मुरगहि चउभेयं ।
संवरु निज्जरु मोक्खु वियाणहि पुण्णपाप सुविसेयं ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे ।
बसु गुरण जुत्त कलङ्क विवज्जिय भासिये केवलणाणे ।। रे मन० ।। ३ ।।
जे संसारि भमहि जिय संकुल लख जोणि चउरासी ।
थावर वियलिंदिय सयलिंदिय. ते पुग्गल सहवासी ।। रे मन० ।। ४ ।।
पंच अजीव पठयमु तहि पुग्गलु, धम्मु अधम्मु आगासं ।
कालु अकाउ पंच कायासौ, ऐक्कह दव्व पयासं ।। रे मन० ।। ५ ।।
आसउ दुविहु दव्वभावहं, पुणु पंच पयार जिगुत्तं ।
मिच्छा विरय पमाय कसायहं जोवहु जीव प्रयुत्तं ।। रे मन० ।। ६ ।।
चारि पयार बन्धु पयडिय ठिदि तह अणुभाव पएसं ।
जोगा पयडि पएसठिदयाणु भाव कसाय विसेसं ।। रे मन० ।। ७ ।।
सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणो ।
सुह परिणामु धरहु हो अविचहु, जिम सुह होय नियाणे ।। रे मन० ।। ८ ।।

संवर करहि जीव जग सुन्दर आसव दार निरोहं।
अरुह सिध सबु आपु वियाणहु, सोहं सोहं सोहं ॥ रे मन० ॥ ९ ॥
णिजर जरह विणासहु कारणु, जिय जिणवयण संभाले।
बारह विह तव दसविह संजमु, पंच महाव्रय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥
अठविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमप्पयकुत्थि वासो।
णिवसु मुकुत्थि रज्जु तहिपुरि, ईच्छिहु ईच्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥
जोणि असरण कहु क्या करणा, पडितु मनह विचारइ।
जिणवर सासणु तब्बु पयासणु, सो हिय बुइ थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४३६. गुटका सं० ५५। पत्र सं० २४०। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ० १६८८।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है।

५४३७. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १५०। आ० ६½×४½ इञ्च। पूर्ण एवं जीर्ण। अधिकांश पाठ अशुद्ध है। लिपि विकृत है।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है।

१. कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	३–५
२. ग्यारह अंग एवं चौदह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६–१२
३. श्वेताम्बरो के ८४ वाद	×	"	१२–१३
४ संहनन नाम	×	"	१३
५. सघोत्पत्ति कथन	×	"	१४

ॐ नमः श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्व बौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥
संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण संशयमिथ्यात्वं श्वेतपटमतं स्थापितं ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थङ्करकाले क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमतं मिथ्यात्व स्थापितं ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिथ्यात्वं ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वनाथगणि शिष्येण मस्करीपूर्णेनाज्ञानमिथ्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥
संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतकवेदिना वज्रनंदिना पञ्चगणकमक्षकेण द्राविडसंघः स्थापितः।
संवत् २०५ वर्षे श्वेतपटाद् श्रीकलशाद् आयलाक संघोत्पत्तिर्जाता। ७ ॥

चतु: संघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसंघमण्डितेन अर्हद्बलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय धारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसंघ:, सिंहसंघ:, सेनसंघ:, देवसंघ: इति चत्वार: संघा: स्थापिता: । तेभ्यो बलात्कारगणादयो गणा: सरस्वत्यादयो गच्छाश्च जातानि तेषां प्राक्कम्यादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

संवत् २५३ वर्षे विनयसेनस्य शिष्येण सन्यासभंगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसंघ स्थापितं ॥ ९ ॥

संवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि:पिच्छत्वं स्थापितं ॥ १० ॥

संवत् १८०० वर्षे प्रतीते वीरचन्द्रमुने: सकाशात् भिल्लसंघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पंचमकालावसाने सर्वेषामेवां ॥

गृहस्थानां शिष्याणां विनाशो भविष्यत्येक जिनमतं कियत्कालं स्थास्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६. गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५–२०
७. जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१–२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४–२७
९. स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२–३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८–५३
१२. चउबीस ठाणा चर्चा	×	"	५४–८९
१३. अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०–१५०

५४२८. गुटका सं० ५७—पत्र सं० ४–१२१ । आ० ६×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. त्रिकालदेववंदना	×	संस्कृत	५–१२
२. सिद्धभक्ति	×	"	१२–१४
३. नंदीश्वराविभक्ति	×	प्राकृत	१४–१६
४. चौबीस अतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६–१९
५. श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९–२१
६. दर्शन भक्ति	×	"	२१–२२
७. ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८. चारित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२–२४
९. अनगार भक्ति	×	"	२४–२६

१०. योग भक्ति	×	,,	२६–२८
११. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२८–३०
१२. वृहत्स्वयंभू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	३०–४१
१३. गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	,,	४१–४४
१४. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	×	,,	४४–४६
१५. स्तोत्र सग्रह	×	,,	४६–५०
१६. भावना बतीसी	×	,,	५१–५२
१७. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५३–६०
१८. संबोधपचासिका	×	,,	६१–६८
१९. द्रव्यसंग्रह	नेमिचंद्र	,,	६८–७१
२०. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	७१–७५
२१. ढाढसी गाथा	×	,,	७५–८३
२२. परमानंद स्तोत्र	×	,,	८३–८४
२३. अणत्थमिति संधि	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	८५–८६
२४. चूनडीरास	विनयचन्द्र	,,	९०–९४
२५. समाधिमरण	×	अपभ्रंश	९४–९९
२६. निर्भरपंचमी विधान	यतिविनयचन्द्र	,,	९९–१०५
२७. मुण्यदोहा	×	,,	१०५–११०
२८. द्वादशानुप्रेक्षा	×	,,	११०–११२
२९. ,,	अल्हण	,,	११२–११४
३० योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानचंद	,,	११४–११९

५४३९. गुटका सं० ५८। पत्र सं० १३–५१। आ० ६×६। अपूर्ण।

विशेष—गुटका प्राचीन है।

१. जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अपभ्रंश	अपूर्ण	१३–२०

अन्तिम भाग—

कत्तिय किन्ह चउद्दसि रत्तिहिं, गउ सम्मइ जिणु पंचम छत्तिहि।
इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फलु भवियह मंगलो।

अवरवि ओणरत्ति करेसइ, सो मरहमरुउ लहेसइ।
सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तिरमेसइ ॥
पुणु सोहम्म सग्गी जाएसइ, सहु कीलेसइ णिरु सुकुमालिहि।
मणुवसुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ।
इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भासिउ।
जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, तं बुहारण मठु खमहु णिरुत्तउ।
एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।
जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ।

घत्ता—

सिरि णरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, वड्ढमाण तित्थकरु।
जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥
इय सिरि वड्ढमाणकहापुराणे सिधादिभवभावावण्णणो जिणराइविहाणफलसंपत्ती ॥
सिरि णरसेण विरइए सुभव्वासण्णणाणिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो।

॥ इति जिणरात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२. रोहिणिविधान मुणिगुणभद्र अपभ्रंश

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुअपायहो हरिपविसायहो णिज्जिय कायहो पयजुलु।
सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु
परमेट्ठि पच पणविवि महंत, भवजलहि पोय विहडिय कयंत।
सारभ सारस ससि जोह्न जेम, णिम्मल वणिज्ज केणकेम।
जिहि गोयमए विणिव वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स।
तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावगव्व।
इय जंबूदीव हो भरह खेत्ति, कुरु जंगल ए सिवि गए अणेत्ति।
हथिणाउरु पुरजण पवरिद्धु, जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु।
तहि वीयसोउ णयसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ।
तहो णंदणु कुलणंदण असोउ, अंमिल्लवि अउ अइ पूरि सोउ।

अह अंग विसइ जण कुलह विसए चंपाउरि पवउ गुणाइ विसए।
मट्टइ सामिणी उणाइवंतु, सिरिमइ पियलंकिउ रिउ कयन्तु।
सुय अट्ठ तासु अरि जणिय तासु, रोहिणी कण्णाणं कामपासु।
कत्तिय अट्ठाहिव सोपवास, गयपुर वहि जिण वसु पुज्जवास।
जिणु अचिवि मुणि वंदिवि असेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस।
मह मज्झिणि सण्णहो णिवह देइ गोहिणी जालणया अंकलइ।
अवलोइवि सुव जुव्वण समेय, परिणयण चिंत हयमणि अमेय।
णियमति मंतु णिच्छिवि अभेउ, णिय बुद्धि वियारिवि विहियसेउ।

घत्ता—

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिवद्ध मंच चउ पासहि।
कणयमयमु खंचिय रयण करचिय, मंडिय मडव पासहि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणइ जिणवणि सावहप्पमु विग्गलइणं करनलु आवमानु।
वग्धा घायहो जह सरणुणत्थि, मय सावहो जीवहो सहणसत्थि।
अणु हवइ सुहासुह एक्कुजीउ, तणु भिण्णु लेइ मरणाउ भीउ।
ससार सहुकम्मु पूरकर समुद्दु, अंगुजि धाउ विहलु कुमुद्दु।
आसवइ कम्मु जो एहि विम, तहो विलयं संवरु होइ कम।
समं भाविं सहियइ कम्मुआउ, परिभमिउ लोहु जीविउ सपाउ।
दुल्लहु जिण धम्मु समुत्ति मग्गु, णवि संगहियउ कम्मेण लगाउ।
इउ मुणिवि सरिवि जिण सिक्ख दिक्ख, हुउ गणहरू राउ असोउ भिक्ख।
संगहिय उपाध्यायउ अममलणाणु, केवलु गउ मोक्खहु सुह विहाणु।
रहि तणउ चरिवि पवण्णसम्मि अच्चु, एम्हि विहि वी सिणु भगी।
धीयउ विसगि संपत्त अज्ज, वउधरी दिक्खिय सुबहु सज्ज।
हुव केवमोक्ख गयहणि विकम्म, अणु हवहि णिरंतर मुत्ति सम्म।
वउधरिय लक्खणसी धरि सुलच्छि, सं पहुसिरि नाम इन्दी वसच्छि।
रोहिवउ विहिउ ताइएउ, रोहिणि कहविरइय तासु हेउ।

घत्ता—

सिरि गुणभद्दमुणीसरेण विहिय कहा बुधी भरेण ।

सिरि मलयकित्ति पयल जुयलरणविवि, सावयनमो यह मणुक्खविवि ।

णंदउ सिरि जिणसंघ, णंदउ तहूभू मि बालुणि विग्घं ।

णंदउ लक्खणु लक्खं, दितु सया कप्पतरु वजइ भिक्खं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधानं समाप्तं ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२६
४. दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	"	३०-३३
५. चंदनषष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिनं प्रणम्य चंद्राभ कर्मौघध्वान्तभास्करं ।

विधान चंदनषष्ठ्यत्र भव्यानां कथमिहां ॥ १ ॥

द्वीपे जम्बूद्रुमं केस्मिन् क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ज्जितो बहुधाबुधैः ॥ २ ॥

अन्तिम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।

कृत्वा चंदनषष्ठीयं कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्यः कुरुते विधानममलं स्वर्गापवर्गप्रदां ।

योन्य कार्यते करोति अविनं व्याख्याय संबोधनं ॥

भूत्वासौ नरदेवयोर्ध्वरसुखं सच्छत्रसेनाश्रता ।

यास्यंतो जिननायकेन महते प्राप्नोति जैनं श्रीयां ॥ ७८ ॥

॥ इति चंदनषष्ठी समाप्तं ॥

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८

आरम्भ— आदि देवं प्रणम्योक्तं मुक्तात्मानं विशुद्धिदं ।

अथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथां मुक्तावलिविधिः ॥ १ ॥

७. सुगंधदसमी कथा — रामकीर्ति के शिष्य विमल कीर्ति — अपभ्रंश — ३८–४१

आदि भाग

पणवेप्पिणु सम्मइ जिणेसरहो जा पुव्वसूरि आगम भणिया ।
णिसुणिज्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगंधदसमी हितशणिया ।।

अन्तिम पाठ

दसमिहि सुअंध विहाणुकरेविणु तइय कप्प उप्पण्ण मरेविणु ।
चउदह आहरणेहि पसाहिय सागी मुहइ भुंजइ अविरोहिय ।।
पुहवी मण्डणु पुरु सुरु दुल्लहु, राउ पयाउं दयाजण वल्लहु ।
मानस सुंदरि गत्ति उपण्णी मयणावलि नामि संपुण्णी ।।
दिणि दिणि कुमरि वियावहु भत्ती भव्वलोय माणस मोहती ।
सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणवरु सामिउ पज्जइ अणु दिणु ।।
दाणु चउविह दिति ण त्यक्कइ तह व छल्ल का वण्ण ण सकइ ।
धम्मवंत पेखि णरणाहिं पोमाइयइ धम्म असगहि ।
रायं सापरिणाविय जामहि, पुत्त कलत्तहि वढ्ढियतामहि ।।
रामकित्ति गुरुविणउ करेविणु विणु विमलकीत्ति महिपालि पढविणु ।
पच्छइ पुणु तवचरणु करेविणु मइ अणुक्कमेण सोमक्खलहेमइ ।।

घत्ता

जो करइ करावइ एहविहि वक्खाणिय विभवियह दावेइ ।
सो जिणणाह भासियहु सग्गु मोक्खु फल पावइ ।। ८ ।।

इति सुगंधदशमीकथा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा — × — अपभ्रंश — ४१–४२

आरम्भ

जज जय अरुह जिणेसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधरण ।
अयसय गणभासुर सहयमहीसर थुति गिराधर समकरण ।। ६ ।।

अन्तिम घत्ता

बलवत्तरिंगणि रयणकित्ति मुणि सिस्स बुहिवं दिज्जइ ।
भावकित्ति जुत अनंतकित्तिगुरु पुप्फुंजलि विहि किज्जइ ।। ११ ।।

पुष्पांजलि कथा समाप्ता

९. अनंतविधान कथा	×	अपभ्रंश	४६–५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१८३ । आ०-७॥×६ । दशा सामान्यजीर्ण ।

१. नित्यवंदना सामायिक	×	संस्कृत प्राकृत	१–१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	"	१५
४. चारित्रभक्ति	×	"	१९
५. आचार्यभक्ति	×	"	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	"	२३
७. योगभक्ति	×	"	"
८. नंदीश्वरभक्ति	×	"	२६
९. स्वयंभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	"	४३
१०. गुर्वावलि	×	"	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत संस्कृ	५७
१२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३. सुप्रभाताष्टक	यतिनेमिचंद	"	पत्र सं० ८
१४. सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	"	" २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनंदि	"	" २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	"	"	" २५
१७. भूपालस्तवन	भूपाल कवि	"	" २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	" २६
१९. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	"	" ४०
२०. पार्श्वनाथस्तवन	देवचंद्र सूरि	"	" ४४
२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	संस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×	"	
२३. करुणाष्टक	पद्मनंदी	"	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	
२६. भावना चौतीसी	भ० पद्मनंदि	"	१२-१५

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमस्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभावं ।
आनंदकंदमुदयास्तदशानभिज्ञं स्वायंभुवं भवतु धाम सतां शिवाय ।। १ ।।
श्रीगौतमप्रभृतयोपि विभोर्महिम्नः प्रायः क्षमानयनयः स्तवनं विधातुं ।
अथं विचार्य जडतस्तदमुष्मलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यति मे किमन्यत् ।। २ ।।

अन्तिम

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकाशिचेतः कुमदः प्रमोदात् ।
श्रीभावनापद्धतिःमात्मशुद्ध्यै श्रीपद्मनंदी स्वयं चकार ।। ३४ ।।

इति श्री भट्टारक पद्मनंदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

२७. भक्तामरस्तोत्र	आचार्य मानतुंग	संस्कृत
२८. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	"

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमगणवद्यगुणैकपात्रं ।
आस्वादिताक्षयसुखाब्जलसत्परागं, पश्यंति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ।। १ ।।
उधत्तपस्तपराशोजितपापपकं चैतन्यविन्दमचलं विमलं विशंकं ।
देवेन्द्रवृन्दसहितं करुणालतागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। २ ।।
जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिमस्तशोकं धर्मोपदेशविधिवेधितभव्यलोकं ।
आचारबन्धुरमति जनतानुरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ३ ।।
कदर्प्प सर्प्प मदनासनवैनतेयं, या पाप हारिजगदुत्तमनामधेयं ।
संसारसिंधु परिमथन मंदरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ४ ।।
निर्म्माणकमुकमलारसिकं विदंभ, वर्द्धिष्णु सद्व्रतधर्मामृतपूर्णकुंभं ।
बलाद्विमोहतरुखण्डनखण्डनागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ५ ।।
आणंदकंद सरीकृतधर्मपंथं, ध्यानिदग्धनिखिलोद्धतकर्म्मकथं ।
अस्ताजवाजि गणघात विधाय जोगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ६ ।।

स्वच्छोज्ज्वलव्यणिविरणिज्जितमेकन.दं, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विपादं ।
निःसीमसंजमसुधारसतत्तडागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ७ ॥
सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मांगल्यकारणमनंतगुणं वितन्द्रं ।
इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,
पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।
यः कोमलेन वचसा विनमाविधीते,
स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्रं समाप्तेति ॥

२९. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	र० सं० १०८६
३०. हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	,, स्वयंभू रामायण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धडी	×	,,	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धडिका	×	,,	१३१
३३. ज्ञानांकुश	×	संस्कृत	१३२
३४. इष्टोपदेश	पूज्यपाद	,,	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	,,	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित आशाधर	,, ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पंचमेरु की पूजा	×	,,	२७-३१
३. लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२-३३
४. आरती	×	,,	३४-३५
५. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

५४४३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था में है । मधुमालती की कथा है ।

५४४४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. तीर्थोदकविधान	×	संस्कृत	१-११
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२-२२
३. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	२२-३६
४. जिनयज्ञकल्प	"	"	३७-१२५

५४५५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । आ०-८×६॥ लेखनकाल—१६६१ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. सहस्रनाम	पं० आशाधर	संस्कृत	अपूर्ण । ८६-८७
२. रत्नत्रयपूजा	पद्मनंदि	अपभ्रंश	" ८७-९३
३. नंदीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	" ९३-९७
४. अठ्ठीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"	९८-१०६
५. सारस्वतयंत्र पूजा	×	"	१०७
६. बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	"	१०७-१११
७. गणधरवलयपूजा	×	"	१११-११५
८. नंदीश्वरजयमाल	×	प्राकृत	११६
९. बृहत्षोडशकारणपूजा	×	संस्कृत	११६-१२८
१०. ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषण	"	१२८-३६
११. शांतिचक्रपूजा	×	"	१३७-३८
१२. पञ्चमेरुपूजा (पुष्पाञ्जलि)	×	अपभ्रंश	१३९-४१
१३. पणकरहा जयमाल	×	"	१४२
१४. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	१४३-४७

१५ मुनीश्वरों की जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. णमोकार पाग्ती जयमाल	×	"	१४९
१७ चौबीस जिनद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८ दशलक्षण जयमाल	रइधू	"	१५३-१५५
१९ भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२० कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	१५७-१५८
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२ अकलंकाष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३ भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४ स्वयम्भूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५ लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनंदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत	ले० स० १६७८, १६५-७०
२८ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिंशिका	×	"	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७४-७८
३२ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७९-८८
		ले० स० १६६१ वैशाख सुदी ५ ।	
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८८-९०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	१९१
३५. यतिभावनाष्टक	×	"	"
३६. करुणाष्टक	पद्मनंदि	"	१९२
३७. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	१९४
३८. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	"
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१९५
४०. मुनिसुव्रतनाथस्तुति	×	अपभ्रंश	[illegible] १९५

क्रम	ग्रन्थ	कर्ता	भाषा	विशेष	पत्र
४१.	सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत		१९६–९७
४२.	जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत	अपूर्ण	१९९–२००
४३.	धर्मचुहेला जैनी का (त्रेपनक्रिया)	×	हिन्दी		२०२–३७

विशेष—लिपि संवत् १६६६। ब्रा० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढकोट ग्राम में हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की।

क्रम	ग्रन्थ	कर्ता	भाषा	विशेष	पत्र
४४.	नेमिजिनंद व्याहलो	खेतसी	हिन्दी		२३७–४२
४५.	गणधरवलययन्त्रमण्डल (कोठे)	×	,,		२४२
४६.	कर्मदहन का मण्डल	×	,,		२४३
४७.	दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी		२४३–६४
४८.	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	,,		२६४–७४
४९.	रोहिणीव्रत पूजा	×	,,		२७५
५०.	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत		२७५–८६
५१.	जिनगुणउद्यापन	×	हिन्दी	अपूर्ण	२८६–९८
५२	पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	हिन्दी	अपूर्ण	३०७
५३.	नेमीसुर कवित्त (नेमीसुर राजमतीवेलि)	कवि ठक्कुरसी (कविदेल्ह का पुत्र)	,,		३०७–०९
५४.	विज्जुच्चर की जयमाल	×	,,		३०९–११
५५.	हणवतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश		३११–१४
५६.	निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत		३१४
५७	कृपणछन्द	ठक्कुरसी	हिन्दी		३१४–१७
५८.	मानलघुबावनी	मनासाह	,,		३१८–२१
५९.	मान की बडी बावनी	,,	,,		३२२–२८
६०.	नेमीश्वर को रास	भाउकवि	,,		३२९–३३
६१.	,,	ब्रह्मरायमल्ल	,,	र० सं० १६१५,	३३३–४१
६२.	नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	,,		३४१–३४३
६३.	श्रीपालरासो	ब्रह्मरायमल्ल	,,	र. सं. १६३०	३४३–५५

६४. सुदर्शनरासो	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी र सं. १६२६	३५६–६६

संवत् १६६१ में महाराजाधिराज माधोसिंहजी के शासन काल में मालपुरा में धीलाला भांवसा ने प्रात्म पठनार्थ लिखवाया।

६५. जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७–६८
६६. सोलहकारणरास	ब्र० सकलकीर्ति	"	३६८–६९
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६९–८३

रचना संवत् १६२८। गढ हरसौर में रचना की गई थी।

६८. सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३–९५
६९. बीसविरहमाणपूजा	×	"	३९५–९७
७०. पंचकल्याणकपूजा	×	"	अपूर्ण ३९८–४११

५४४७. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ३७। आ० ७×५ इञ्च। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१–२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६–२७

५४४८. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ७०। आ० ८३×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

१. नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८–२१

हिन्दी अर्थ सहित। अपूर्ण

३. जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्ण
४. चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	"	र. सं. १७०८। अपूर्ण
५. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्ण
६. स्तुति	"	"	अपूर्ण

५४४९. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ८८–११२। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण। ले० काल सं० १७८० चैत्र बुदी ११।

विशेष—प्रारम्भ में वैद्य मनोत्सव एवं बाद में आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

५४५०. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ११८। आ० ५×६ इंच। हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है।

५४५१. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ६४ । आ० ८¾×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके में उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत है तथा पाण्डे रूपचन्दजी कृत है ।

५४५२ गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ३५-२२२ । आ० ८¾×६ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. स्वरोदय	×	हिन्दी	३५-४१
२. सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३. राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	"	४३-५७
४. देवसिद्धपूजा	×	"	५८-६३
५. दशलक्षणपूजा	×	"	६४-६५
६. रत्नत्रयपूजा	×	"	६५-७३
७. सोलहकारणपूजा	×	"	७३-७५
८. पार्श्वनाथपूजा	×	"	७५-७६
९. कलिकुण्डपूजा	×	"	७६-७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८-८२
११. न्हवनविधि	×	"	८२-८५
१२. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	८५
१३. तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५-८७
१४. शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८९-२२२

५४५३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० २०४ । आ० ९½×६½ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-१११
		रचना संवत् १६९३ लिपि सं० १७७६ ।	
२. बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३. [illegible]	×	" अपूर्ण पत्र सं०	६६-७०

५४५४. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १५२। आ० ७×६ इंच। अपूर्ण। दशा-जीर्ण क्षीर्ण।

१. रासु भाभावरी	रूपचन्द	अपभ्रंश	१

प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यत वाउ जीउ राजे।

धणकणणायर पूरियउ कणयप्पहु धणउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है।

२. पद्धडी (कौमुदीमध्यात्)	सहणपाल	अपभ्रंश	२–७

प्रारम्भ—

हाहउं धम्मभुउ हिंडिउ संसारि असारइ।

कोइपए सुणउ, गुणदिट्ठु संक विणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमंति कहइ सिवाय मुणि, साहणमेयहु किज्जइ।

परिहरि विगेहु सिरि सतियल संधि सुमइं साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धडी छन्द लिखितं ॥

३. कल्याणकविधि	मुनि विनयचन्द	अपभ्रंश	७–१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु

पणविवि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणगुणमिहउं।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयमतु एक्कु वि कल्लाणउ विहिहिणिव्वियहि अहुवइ गसणउ।

अहवासय सहसवणविहि, विणयचंदि मुणि कहिउ समत्यहु ॥

सिद्धि सुहंकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द्र कृतं कल्याणकविधिः समाप्ता ॥

४. चूनडी (विणयं वंदिवि पंच गुरु)	यति विनयचन्द	अपभ्रंश	१३–१७

५. मयणपमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७–२४
६. सम्माधि	×	"	२४–२७
७. मणुवसंधि	×	"	२७–३१
८. णाणपिंड	×	"	३१–४५
विशेष—२० कडवक हैं।			
९. श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५–५९
१०. दशलाक्षणीकरास	×	"	५९–६०
११. श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभू	"	६१–६७
(हरिवंश मध्यात् विदुर वैराग्य कथानके)			
१२. पद्धड़ी	यशःकीर्त्ति	"	६७–७०
(यशःकीर्त्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३. रिट्ठणेमिचरिउ (९७-९८ संधि)	स्वयम्भू	" (त्रिभुवनाश्रित)	७७–८६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	"	८६–८९
१५. चतुर्गति की पद्धड़ी	×	"	८९–९१
१६. सम्यकत्वकौमुदी (भाग १)	सहणपाल	"	९१–९४
१७. भावना उणतीसी	×	"	९४–९९
१८. गौतमपृच्छा	×	प्राकृत	१००–०२
१९. आदिपुराण (कुछ भाग)	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१०२–३१
२०. यशोधरचरित्र (कुछ भाग)	"	"	१३२–४६

५४४५. गुटका सं० ७९। पत्र सं० २३ से १२३। आ० ६×९ इञ्च। अपूर्ण।

१. फुटकर पद्य	×	हिन्दी	२३–३१
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	३२–४३
३. करुणाष्टक	×	"	४४
४. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	४५
५. विनती	भूधरदास	"	४७
६. ते गुरु मेरे उर बसो	"	" ले० काल सं० [illegible]	४८

७. जकड़ी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९. हम आये हैं जिनराज तोरे वंदन को	द्यानतराय	" ले० काल सं० १७९६	"
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"	५३–६०

विशेष—ले० काल सं० १७९६। दयाचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी। पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी।

११. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१–६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३–६४
१३. मनां रे प्रभु चरण ल बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४. हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमासा है [कवित्त]	केशवदास	"	६६–६८
१६. कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"	६९–७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी	७५
१८. पद–थारा देश में हो लाल गढ़ बड़ो गिरनार	×	"	७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"	७८–८२

र० काल सं० १७९० ले० काल सं० १८००

२०. पंचबधावा	×	हिन्दी	८४
२१. मोक्षपैढी	×	"	८६
२२. भजन संग्रह	×	"	९२
२३. दानकीबीनती	अतीदास	संस्कृत	९३

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४।

२४. शकुनावली	×	हिन्दी लिपिकाल १७९७	९९–१०१
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"	१२३

५४५६ गुटका सं० ७५—पत्र संख्या—११६। आ०–४३/४×४१/२ इंच। ले० काल सं० १८४८। दशा सामान्य। अपूर्ण।

१. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२. कल्याणमंदिरभाषा	बनारसीदास	"

३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
४. श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
५. साधुवंदना	बनारसीदास	"	
६. बीसतीर्थङ्करों की जकडी	हर्षकीर्ति	"	
७. बारहभावना	×	"	
८. दर्शनाष्टक	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्णन है।
९. पद—शरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	"	"

४४५७ गुटका स० ७६। पत्र संख्या—१८०। आ०—५॥×४॥ लेखन सं० १७८३। जीर्ण।

१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	"	
३. नंदीश्वरपूजा	×	"	पंडित नगराज ने हिरणोदा में प्रतिलिपि की।
४. श्रीसीमंधरजी की जकड़ी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुढ़ा में की गई।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
८. चितामणिजी की जयमाल	मनरथ	"	जोवनेरमें नगराजने प्रतिलिपि की थी।
९. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	"	

४४५८ गुटका सं० ७७। पत्र सं० १२५। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। ले० सं० काल १८१६ माह सुदी १२।

१. देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-३५
२. नंदीश्वरपूजा	×	"	३३-४४
३. सोलहकारण पूजा	×	"	४४-५०
४. दशलक्षणपूजा	×	"	५०-५५

५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६–६१
६. पार्श्वनाथपूजा	×	”	६२–६७
७. शांतिपाठ	×	”	६७–६९
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	”	७०–११४

५५५६. गुटका सं० ७८। पत्र संख्या १९०। आ० ६×४ इंच। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०–२७
२. चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	”	२८–३१
३. चिंतामणिस्तोत्र	×	”	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	”	३७–३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९–४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१–४३
७. चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	”	४३–४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	४८–५३
९. पद्मावतीस्तोत्र	×	”	५४–६१
१०. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	”	६१–८९
११. गणधरवलय पूजा	×	”	८९–११४
१२. अष्टाह्निका कथा	यशःकीर्ति	”	१०४–११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्त्ति	”	११२–११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	”	”	११८–१२७
१५. षोडषकारण कथा	”	”	१२७–१३६
१६. रत्नत्रय कथा	”	”	१३६–१४१
१७. जिनचरित्र कथा	”	”	१४१–१४७
१८. आकाशपंचमी कथा	”	”	१४७–१५१
१९. रोहिणीव्रत कथा	”	”	अपूर्ण १५१–[illegible]

२०. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	संस्कृत	१५८–१६१
२१. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	१६२–६३
२२. शांतिक होम विधि	×	"	१७४–७६
२३. चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६–८९

५४६०. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३३ । म्रा० ७×४½ इंच । अपूर्ण ।

१. राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	१–२८
२. एकीश्लोक रामायण	×	"	२९
३. एकीश्लोक भागवत	×	"	"
४. गणेशद्वादशनाम	×	"	३०–३१
५. नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२–३३

५४६१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० १८–४४ । म्रा० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत तथा हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष— पञ्चमंगल, बाईस परिषह, देवापूजा एवं तत्वार्थसूत्र का संग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २–२६ । म्रा० ५½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

५४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ३० । म्रा० ६×४ इंच । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (पं० माशाधर)का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र सं० १८–५१ । म्रा० ७×४½ इंच ।

१. स्वस्त्ययनविधि	×	संस्कृत	१८–२०
२. सिद्धपूजा	×	"	२१–२३
३. षोडशकारणपूजा	×	"	२४–२५
४. दशलक्षणपूजा	×	"	२६–२७
५. रत्नत्रयपूजा	×	"	२८–३७
६. [illegible]ष्टक	×	"	३८–३९

७. चिंतामणिपूजा	×	संस्कृत	३६-४१
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-५१

५४६५. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा–सामान्य।

विशेष—पत्र ३-४ नहीं हैं । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ५ से २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ से ८७ सवैयों का संग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह अज्ञात है ।

५४६७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१-३
२. जिनपिंजरस्तोत्र	×	"	४-५
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४. चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७-१५
६. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५-१८
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	२४-२६
९. शीतलाष्टक	×	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२-३३

५४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा केवली है ।

५४६९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×५½ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारंभ में पूजाओं का संग्रह है तथा अन्त में अचलकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ५० से १२० । आ० ८×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थङ्कर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७ से २२ । आ० ६×६ इंच । विषय–स्तोत्र । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. संबोध पंचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी	७–८
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	,,	९–१४
३. कल्याण मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	,,	१५–२२

५४७२. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० १३०–२०३ । आ० ८×८ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी	१३०–८५
२. जिनपञ्जरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,	१८८
४. स्तवन (अरिहन्त संत का)	×	हिन्दी	१८९–९३
५. चेतनचरित्र	×	,,	१९३–२०३

५४७३. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० २५–१०८ । आ० ५×३ इंच । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नही है ।

१. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी		२५
२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत		५४
३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,		६२
४. सासू बहू का झगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी		६५
५. पिया चले गिरवर कूं	×	,,		६७
६. नाभि नरेन्द्र के नंदन कूं जग बंदन	×	,,		६८
७. सीताजी की विनती	×	,,		७१
८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत		७२–९४
९. पद– अरज करां छा जिनराजजी राग सारंग	×	हिन्दी	अपूर्ण	९६
१०. ,, की परि करोजी गुमान थे के दिनका महमान, बुधजन		,,		९७
११. ,, लगनि मोरी लगी ऐसी	×	,,		९९
१२. ,, शुभ गति पावन याही चित धारोजी	नवल	,,		९९
१३. ,, आऊंगी संगि नेम कंवार	×	,,		१००
१४. ,, टुक नजर महर की करना	भूधरदास	,,		१०२

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६. देखो करमां सूं फुन्द रही अजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसूं मोहे मिलावोरी (रागहोरी)	द्यानतराय	"	"
१८. दुरमति दूरि खड़ी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२०. जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्ण १०८

५४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण ।

विशेष—पत्र संख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकांतरा आदि के मंत्र हैं । सं० १८२१ में श्री हरलाल ने पाबटा में प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४×३ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	१४५-१४६
६. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	१४७-१४८
७. जिनपंजरस्तोत्र	कमलप्रभसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१-१५६
९. अकलंकाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५९
१०. पूजापाठ	×	"	१६०-१६७

५४७६. गुटका सं ६६ । पत्र सं० ११० । आ० ३×३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवंदना	×	"	
६. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	हिन्दी	२०-२४
७. श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८. विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२६-३१
९. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	×	"	३३-३७
१०. पंचमंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५६
१२. पद-मेरी रे लगावो जिनजी का नावसूं	×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७०
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. अकड़ी	रूपचंद	"	७३-७५
१६. "	भूधरदास	"	७६-८३
१७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे मानी जिनजी को नाम सब भलो	×	"	८४-८५
१८. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८६
१९. अष्टाकर्णमंत्र	×	"	६०-६६
२० तीर्थङ्करादि परिचय	×	"	६७-१६२
२१. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१६३-६५
२२. पारसनाथजी की नियाणी	×	हिन्दी	१६६-७७
२३. स्तुति	कनककीर्ति	"	१८०-८२
२४ पद-(वंदूं श्रीजिनराय मनवच काय करानी)	×	"	

५४६७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७५ । आ० ३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष-गुटकाजीर्ण शीर्ण हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

१ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	,,		
३. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	,,		
४. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,		
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,		
६. वर्द्धमानस्तोत्र	×	,,		
७. स्तोत्र संग्रह	×	,,		३६–५२

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० ११–११५ । आ० $2\frac{1}{2}\times2\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष–नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४–१०५ । आ० ४×३ इञ्च ।

१. कक्कावतीसी	×	हिन्दी		४–१३
२. त्रिकालचौबीसी	×	,,		१४–१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	,,		१७–२०
४. तीसचौबीसी	×	,,		२१–२३
५. पहेलियां	भाऊ	,,		२४–६३
६. तीनचौबीसीरास	×	,,		६४–६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	,,		६७–७३
८. चौपास बीनती	×	,,		७४–७८
९. भजन	×	,,		७९–८०
१०. नवकार बडी बीनती	ब्रह्मदेव	,,	सं० १८४१	८१–८२
११. प्रद्युम्न पचीसी	बिनोदीलाल	,,		८३–१०१
१२. नेमीश्वर का ब्याहला	लालचन्द	,,	अपूर्ण	१०१–१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० २–८० । आ० १०×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपचीसी	नवलराम	हिन्दी	१
२. मांगिकपूजा	रामचंद्र	,,	२–३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४–३

४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	५–६
५. जिनपूजाविधान (देवपूजा)	×	हिन्दी	७–१५
६. [illegible]	द्यानतराय	"	१६–१८
७. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१३–१५
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५– २१
९. सोलहकारणपूजा	×	"	२२ २४
१०. दशलक्षणपूजा	×	"	२५–३२
११. रत्नत्रयपूजा	×	"	३३–३६
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	३७
१३. नंदीश्वरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	३७–३६
१४. शास्त्रपूजा	×	"	४०
१५. सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	४१
१६. तीर्थङ्करपरिचय	×	"	४२
१७. नरक-स्वर्ग के यंत्र पृथ्वी आदि का वर्णन	×	"	४३–५०
१८. जैनशतक	भूधरदास	"	५१–५६
१९. एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६०–६१
२०. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१–६३
२१. दर्शनस्तुति	×	"	६३–६४
२२. साधुवंदना	बनारसीदास	"	६४–६५
२३. पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५–६६
२४. जोगीरासो	जिनदास	"	६६–७०
२५. चर्चायें	×	"	७०–८०

५४८१. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० २–२१ । आ० ८३⁄४×८३⁄४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–चर्चा । अपूर्ण । दशा–सामान्य । चौबीस ठाणा का पाठ है ।

५४८२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० २ २३ । आ० ५×४ इंच । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । दशा–सामान्य । निम्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

१. भूल क्यों गया जी म्हानें	×	हिन्दी	२
२. जिन छवि पर जाऊं मैं वारी	राम	"	२
३. अंखिया लगी तैडे	×	"	२
४. हगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६. जिनजी का ध्यान में मन लगि रह्यो	×	"	३
७. प्रभु मिल्या दीवानी विछोवा कैसे किया सइयां	×	"	४
८. नहीं ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९. आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०. जिनराज भजो सोहो जीस्यो	नवलराम	"	५
११. शुभ पंथ लगो ज्यो होय भला	"	"	५
१२. छांडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	६
१३. सबन में दया है धर्म को मूल	"	"	६
१४. दुख काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५ मारग लाग्यां	नवलराम	"	६
१६. जिन चरणां चित लगाय मन	"	"	७
१७. हे मां जा मिलिये श्री नेमकंवार	"	"	७
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सूं नेह	"	"	८
१९. थां ही संग नेह लग्यो है	"	"	९
२०. थां पर वारी हो जिनराय	"	"	९
२१. मो मन थां ही संग लाग्यो	"	"	९
२२. धनि घड़ी ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	९
२३. वीर री पीर मोरी कासों कहिये	"	"	९
२४. जिनराय ध्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५. सखी आज आवो पति को समझावो	"	"	१०
२६. प्रभुजी म्हारी विनती [illegible] हो राज	"	"	११
		"	११

२७. हूँ विध खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	”	”	१२
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो	”	”	१३
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो जै	”	”	१३
३१. दरसन करत अघ सब नसे	”	”	१३
३२. रे मन लोभिया रे	”	”	१४
३३. भरत नृप वैराग चित कीनो	”	”	१५
३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरण आयो	”	”	”
३५. गावो हे श्री जिन विकलप छारि	”	”	”
३६. प्रभुजी म्हारो अरज सुनो चितलाय	”	”	१६
३७. ये सिक्षा चित लाई	”	”	१६-१७
३८. मैं पूजा फल बात सुनो	”	”	१८
३९. जिन सुमरन की वार	”	”	”
४०. सामायिक स्तुति वंदन करि के	”	”	१९
४१. जिनन्दजी की छवि छवि नैन लाय	संतदास	”	”
४२. चेतो क्यों न ज्ञानी जिया	”	”	२०
४३. एक अरज सुनी साहब मोरी	द्यानतराय	”	”
४४. मो से अपना कर दयार रिखभ दीन तेरा	बुधजन	”	२०
४५. अपना रंग में रंग दयोजी साहब	×	”	”
४६. मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	”	२१
४७. भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	”	”
४८. घड़ी २ पल २ छिन २	दौलतराम	”	”
४९. घट घट अटवर	×	”	२२
५०. चारन अपनी जोय सुहानी छोरे	×	”	”
५१. सुनि जीया रे चिरकाल रे सोयो	×	”	”
५२. कब कलिया है भाई	भूधरदास	”	”

५३. भाई सोही सुगुरु बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हौं मन जिनजी न क्या नहीं रटै	"	"	"
५५. की परि इतनी मगरूरी करी	"	"	अपूर्ण

५४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३–२० । आ० ६×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५४८४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०–१४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १७२८ कार्तिक सुदी १५ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०–३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३–४७
३ स्नपनविधि	×	संस्कृत	४८–६०
४ क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०–६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४–६५
६. वन्देतान की जयमाल	×	"	६५–६६
७ पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	७०–७३
९ पूजा धमाल	×	संस्कृत	७४
१० चिंतामणि की जयमाल	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६–७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३. पद्मावतीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नावली व्रतो की तिथियो के नाम	"	हिन्दी	८६–८७
१५. काल मंडल की	"	"	८८–८६
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	८६–१०२
१७. [illegible]	×	"	१०[illegible]–१[illegible]
१८. [illegible] का ब्यौरा	×	हिन्दी	[illegible]

५४८५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । आ० ६×५ इंच ।

१. षट्ऋतुवर्णन बारह मासा — जगराज — हिन्दी — अपूर्ण — २४–४३

२. कवित्त संग्रह — × — " — ४३–६१

विभिन्न कवियो के नायक नायिका सबन्धी कवित्त हैं।

३ उपदेश पचीसी — × — हिन्दी — अपूर्ण — ६२–६३

४. कवित्त — मुन्नलाल — " — ६६–६७

५४८६. गुटका स० १०६। पत्र स० २४। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। जीर्ण।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है

५४८७. गुटका स० १०७। पत्र सं० २०–६४। आ० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

१. कृष्णरुक्मणिवेलि हिन्दी गद्य टीका सहित — पृथ्वीराज — हिन्दी — २०–५८

लेखन काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४। र० काल स० १६३७। अपूर्ण।

अन्तिम पाठ—

रमता जगदीश्वरतणी रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है।
सरसति रुकमिणी तणि सहचरि कहि या मुपैतियज कहै ॥ १० ॥

टीका—रहसि एका तइ रुकमणी साथइ श्रीकृष्णजी तइ रमता क्रीडाता जे रस ते दृष्टि दीठा सरीखा कह्यौ। पर त वचन माही कूडउ नेमत मानउ साच मानिज्यौ। रुक्मणी सरस्वतीनी सहचरी। सरस्वती तिणइ मुख-बात कही मुभनइ आपणउ जाणी ॥ जाणा सवबात कही तहना मुख थकी सुणी तिमही ज कही ॥ १० ॥

रूप लक्षण गुण तणास रुकमणि जहिवा समरथाक कुण।
जाणिया जिका सातिसामैं जपिया गोविंद राणि तणा गुण ॥ ११ ॥

टीका—रुकमणि नउ रूप लक्षण गुण क हवा भणि समर्थ कुण समथ तर छइ अपितु को नहि परमइ। माहरि मतिइ अनुसार जिसा व्याख्या तिस्या ग्रन्थ माहि गू थ्या कह्या तिण कारण हू ताहरउ बालक छू मो परि कृपा करिज्यौ ॥ ११ ॥

वसु शिव नयन रस शशि वत्सर विजयदसमि रवि रिष वरसोत।
किसन रुकमणी वेलि कल्पतरु कीधी कमध ज कल्याण उत ॥ १२ ॥

टीका—अचल पर्वत सत्व रजु तम गुण ३ अग ६ शशिचन्द्रमा १ सवत् १६३७ वर अचल गुण रवि ससि सचि तात वीमउ जस ॥ करि श्री भरतार श्रवणे दिन रात कठ करि श्रीफल भगति अपार विवइ श्री लक्ष्मी नउ भरतरि रुकमणी कृष्णनइ श्री रुकमणी जस करी भावना कीधी ए वेली अहो भणतो श्रवणे सांभलिउ रात दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ।

वेद बीज जल वयण सुकवि जउ मंडीस धर ।
पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ॥
पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
मनसुजेणंति अंब फल पामिइ अबर ॥
विसतार कोष छुवि कुगी विमल धणी किसन कहणहार धन ।
अमृत बेलि पीथल अतइ रोपी कलियाण तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तींको बीज जल पाणी तिको कवियण तिये वयणे करि जडमाडीस दृढ़ परिणइं ॥ दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी बेलिइं मांकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विषे दीप प्रदीप। व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पांमइ। अंबर कहितां स्वर्ग नां सुख पांमे। विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य तिको पिण अमृत रूपणो बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई कविराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कह्या।

इति पृथ्वीराज कृत कृष्ण रुकमणी बेलि संपूर्ण। मुणि जग विमल वाचनार्थ। संवत् १७४८ वर्ष वैशाख मासे कोष्ण पक्षे तिथि १४ अगुवासरे लिखतं उणियरा नग्रं ॥ श्री ॥ रस्तु ॥ इति मंगलं ॥

२. कोकमंजरी	×	हिन्दी		५४
३. बिरहमंजरी	नंददास	"		५५–६१
४. बावनी	हेमराज	"	४६ पद्य हैं	६१–६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"		६७
६. पुष्पावलि	×	"		६६–८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदास	"		८८–११४

५४८८. गुटका सं० १०७ क। पत्र सं० २३५। आ० ५×४ इञ्च। विषय–पूजा एवं स्तोत्र।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१–४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४–६
३. गुर्वाष्टक	×	"	६–७
४. गुरुस्तवन	शांतिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	वादिराज	"	९

६. सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१०-१२
७. गुरुजयमाला	"	"	१३-१५
८. लघुस्नपनविधि	×	संस्कृत	१६-२३
९. सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४-३०
१०. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	"	३१-३५
११. षोडशकारणपूजा	×	"	३५-३९
१२. दशलक्षणपूजा	×	"	३९-४२
१३ नन्दीश्वरपूजा	×	"	४३-४५
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६-५९
१५. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	५९-६२
१६. सम्यक्दर्शनपूजा	×	"	६२-६४
१७ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	संस्कृत	६४-६६
१८. ज्ञानपूजा	×	"	६७-७१
१९. महर्षिस्तवन	×	"	७१-७३
२०. स्वस्त्ययनविधान	×	"	७३-७९
२१. चारित्रपूजा	×	"	७९-८१
२२. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१-९१
२३. वृहद्स्नपन विधि	×	संस्कृत	९१-११९
२४. ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	"	११९-२९
२५ अष्टाह्निकापूजा	×	"	१२९-५१
२६. विरदावली	×	"	१५२-६०
२७. दर्शनस्तुति	×	"	१६१-६२
२८. आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३-६९

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जिणवरवाणि णवेवि गुरु निर्ग्रन्थ प्रणमेवी ।

कहूं आराधना सुविचार संक्षेपे सारौ वीर ॥ १ ॥

हो क्षपक वयण अवधारि, हवि चाल्यो तुम अवपारि ।
हो सुभट कहुं तुम भेउ, धरी समकित पालन एहु ।। २ ।।
हवि जिनवरदेव आराहि, तूं सिध समरि मन मांहि ।
सुणि जीव दया धुरि धर्म्म, हवि छांडि अशुए कर्म्म ।। ३ ।।
मिथ्यात कु संका टालो, मणगुरु वचनि पालो ।
हवि ध्यान धरे मन धीर, त्यो संजम दोहलो वीर ।। ४ ।।
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।
तू क्रोध मान माया छांडि, आपुण सूं सिसि मांडि ।। ५ ।।
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
तुं मंत्र समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ।। ६ ।।
हवि सवे परिसह जिपि, अभंतर ध्याने दीपि ।
वैराग्य धरे मन माहि, मन मांकड़ गाढु साहि ।। ७ ।।
सुणि देह ओय सार, भवलचो वयण मां हार ।
हवि भोजन पाणि छांडि, मन लेई सुगति मांडि ।। ८ ।।
हवि खुणखण घुटि आयु, मनासि छांडो काय ।
इंद्रीय बस करि धीर, कुटंब मोह मेल्हे वीर ।। ९ ।।
हवि मन गन गांठु बांधे, तू मरण समाधि साधि ।
जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग सुगतिय अलोय ।। १० ।।

× × × ×

अन्तिम भाग

हवि इंद्रइ जाणि विचार, वाणु कहिइ किहिं सु अपार ।
लिया अणसरण दीक्षा आण, सन्यास छांडो प्राण ।। ५३ ।।
सन्यास तणां फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फलि सुख होइ ।
वलि श्रावक कोल हूं पामीइ, सही निर्वाण सुगती गामीइ ।। ५४ ।।
जे भणि सुणिय नरनारी, ते जाइ भवधि पारि ।
श्री विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो विचार, आराधना प्रतिबोधसार ।। ५५ ।।

इति श्री आराधना प्रतिबोध समाप्त

९. पंचमेरुपूजा (बृहत्)	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		१७०–१८०
१०. अनन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदास	हिन्दी		१८०–९९
११. गणधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत		१९९–२११
१२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	"	अपूर्ण	२११–३५

५४८९. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० १२० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी		१–२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२–२७
३. स्तवन	×	अपभ्रंश	अपूर्ण	२८
४. पद	मनराम	हिन्दी		२९

ले० काल १७३५ आसोज बुदी ९

चेतन इह घर नाही तेरो ।
घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरो ।। टेक ।।
तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को घेरो ।
करि है गौन आनगति कौं जब, कोई नही आवत नेरो ।। १ ।।
भ्रमत भ्रमत संसार गहन वन, कीयौ आनि वसेरौ ।
मिथ्या मोह उदै तैं समझ्यो, इह सदन है मेरो ।। २ ।।
सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै अनादि अधेरो ।
असंख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यौ जानऊ निज डेरो ।। ३ ।।
नाना विकलप त्यागि आपकौ, आप आप महि हेरौ ।
जौं मनराम अचेतन परसौं, सहजैं होइ निवेरौ ।

५. पद–मो पिय चिदानंद परवीन	मनराम	हिन्दी		३०
६. चेतन समझि देखि घरमांहि	"	"	अपूर्ण	३१
७. कै परमेसरी की अरचा विधि	"	"		३२
८. जयति आदिनाथ जिनदेव ध्यान गाऊं	×	"		३३
९. सम्यक्त्व पराविधि सिरिपास हो	"	"		३४–३५

१०. पंचमगति बेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावण अपूर्ण
११. पंच सबावा	×	"	"
१२. मेघकुमारगीत	पूनों	हिन्दी	४०–४५
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४. पद–अब मोहे कछून उपाय	रूपचंद	"	४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत	४७–४९
१६. शांतिपाठ	×	संस्कृत	५०–५२
१७. स्तवन	आशाधर	"	५२
१८. बारह भावना	कविआलु	हिन्दी	
१९. पंचमंगल	रूपचंद	"	
२०. जकड़ी	"	"	
२१. "	"	"	
२२. "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे।
तू तजि परपरचारे चेतसि सहज सुभाव रे॥
चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यौं मिलि क्या राच रहे।
अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुक्ख अणाइ सहे॥
अबसो गुण कीजै कर्म हूं छीज्जै सुगाहु न एक उपाव रे।
दंसण णाण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे॥ १॥
करमनि बसि पड़िया रे अणया मूढ़ विभाव रे।
मिथ्या मद मढ़िया रे मोह्या मोहि अणाइ रे॥
मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित मांचि रह्या।
पड परिहार अक्षय मविरयत ज्ञानावरणी आदि कह्या॥
दुहि चित कुलाल जकचारीण अट्ठाउवीसें चताईं रे।
रे जीयड़े करमनि बसि पड़िया अणया मूढ़ विभाव रे॥ २॥

तू मति सोवहि न चीता रे वैरिन मैं काहा वास रे ।
भवभव दुखदाय करैं तिनका करैं विसास रे ।।
तिनका करहि विसास रे जिवडे तू मूढ़ा नहि निमषु डरे ।
जम्मण मरण जरा दुखदायक तिनस्यौं तू नित नेह करें ।।
आपे ग्याता आपे द्रिष्टा कहि समझाऊं कास रे ।
रे जीउ तू मति सोवहि न चीता वैरिन मे काहावास रे ।।
ते जगमांहि जागे रे रहे अन्तरल्यवलाइ रे ।
केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे ।।
प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवडे मिथ्या रैणि विहाणी ।
स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूवा वाणी ।।
सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागौ पाय रे ।
कहै दरिगह जिन त्रिभुवन सेवै रहे अतर ल्यवलाइ रे ।। ४ ।।

२४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६
२५ निर्वाणकाण्ड गाथा	×	प्राकृत	
२६. पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० १५२ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल १८३६ सावण सुदी ६ । अपूर्ण । दशा–जीर्णशीर्ण ।

विशेष–लिपि विकृत एव अशुद्ध है ।

१. शनिश्चरदेव की कथा	×	हिन्दी		११४
२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"		१५–२४
३. नेमिनाथ का बारहमासा	×	"	अपूर्ण	२५–२६
४. जकड़ी	नेमिचन्द	"		२७
५. सवैया (सुख होत शरीरको दालिद भागि जाइ) ×		"		२८
६. कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उछाह मोहि लागै		"		२६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		३०–३१

८. स्तुति (आगम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९. बारहमासा	×	,,	३७-३९
१०. पद व भजन	×	,,	४०-४७
११. पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	,,	४८-४९
१२. आम नींबू का झगड़ा	×	,,	५०-५१
१३. पद-कोई समुद विजयसुत सार	×	,,	५२-५७
१४. गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	,,	५८-५९
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४-६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८. पद-मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्त्ति	,,	७१
२०. पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरसण पाय)	रामदास	,,	७२
२१. चलो जिनन्द वंदस्या	×	,,	७२-७३
२२. पद-प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गह्यो	×	,,	७४
२३. आमेर के राजाओं के नाम	×	,,	७५
२४. ,, ,,	×	,,	७६
२५. विनती-बोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	,,	७८-७९
२६. पद-चेतन मानि ले बात	×	,,	७९
२७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	,,	८०
२८. विनती-वंदू श्री अरहन्तदेव	हरिसिंह	,,	८१-८२
२९. पद-सेवक हूं महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द	,,	८२-८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	,,	८४-८६
३१. धरम का ढोल बजावे सूली	×	,,	८७
३२. अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	,,	८८
३३. लागो वीर लागो वीर प्रभुजी का ध्यानमें मन । पूरणदेव		,,	८८
३४. आसरा जिनराज तेरा	×	,,	८८

३५. तु जाली ज्यों तारोजी	×	हिन्दी	८६
३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	"	९०
३७. सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	"	९०-९१
३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	"	९१-९३
३९. श्रीनेमकुवार हमको क्यों न उतारो पार	×	"	९५
४०. आरती	×	"	९६-९७
४१. पद—विनती कराछां प्रभु मानो जी	किशनगुलाब	"	९८
४२. थे श्री प्रभू तुम ही उतारोगे पार	"	"	९९
४३. प्रभूजी मोह्या छै तन मन माण	×	"	९९
४४. वंदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	"	१००-१०१
४५. बाजा बजय्या प्यारा २	×	"	१०२
४६. सफल घडी हो प्रभुजी	खुशालचन्द	"	१०३
४७. पद	देवसिंह	"	१०४-१०५
४८. चरखा चलता नांही रे	भूधरदास	"	१०६
४९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७-१७
५०. चौबीस तीर्थंकर स्तुति	"	हिन्दी	११६-२१
५१. मेघकुमारवार्ता	"	"	१२१-२४
५२. ऋषिश्वर की कथा	"	"	१२५-४१
५३. कर्मयुद्ध की विनती	"	"	१४२-४३
५४. पद—अरज करूं छूं वीतराग	"	"	१४६-४७
५५. स्फुट पाठ	"	"	१४८-५३

५४६१. गुटका सं० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

१. नित्यपूजा	×	संस्कृत	१-२६
२. मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	"	२६-४९
३. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	५०-५८
४. पंचमंगल	रूपचन्द	"	५८-६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	६८–७५
६. पूजासंग्रह	×	”	७५–१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	”	१०२–१४३

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१–६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११–२६

विशेष—"पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै । मिती चैत सुदी ६ संवत् १९५४ का में मिन्नी मार्फत राव श्री राठोडजी कां सूं पंचांसू ।" यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६–२२ । आ० ६३×५ इंच । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८–२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहो डोकरी हे राम राम । बीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहां जाय छै । बीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई ।। १ ।। डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना बीरा थे बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार मांही दोय और ही छै ।। एक तो चांद अर एक सूरज ।। २ ।। डोकरो मेहे राजा हे राजा ।। ना बीरा थे तो राजा नाही । राजा तो संसार में दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ।। ३ ।। डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना बीरा थे चोर ना । चोर तो संसार में दाय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ।। ४ ।। डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा थे तो हलवा नाहीं ।। हलवा तो संसार में दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मांगिबा जाइ उका घर में छै परिण नट जाय सो हलवो ।। ५ ।। डोकरी तू म्हा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर मांही सूं काढ़े सो माता । दूसरी धाय माता ।। ६ ।। डोकरी मेहे तें हारया हे हरया । ना बीरा थे क्या ने हारयो । हारयो तो संसार में तीन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारयो । दूसरो बेटी आई सो हारयो तीसरी जैकी जोडी अल्पी होइ सो हारयो ।। ७ ।। डोकरी मेहे बापडा हे बापडा । ना बीरा थे बापडा नाही । बापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ की जायो बापडो । दूसरो सुपाली को जायो बापडो । तीसरो जे की माता अनमता ही मर गई सो बापडो । चौथा बामण बाण्या की बेटी विधवा हो जाय सो बापडी ।। ८ ।। डोकरी आपा जिका हे

मिला। बीरा मिलवा वाला तो संसार में च्यारि और ही छै। जैको बाप विरधा होसी सो वां मिलसी। अर जै को बेटो परदेश सूं आयो होसी सो वां मिलसी। दूसरो सांवरा भादवा को मेह बरस सी सो समन्दर सूं। तीसरो भाणेज को भात पैराबा जासी सो वो मिलसी। चौथा स्त्री पुरुष मिलसी। डोकरी जाण्या है जाण्या। भरिया कहे न उजलेउ भलसी आधा। पुरुषा भाई पारषा बोलार लाधा॥ १०॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण॥

५४६५. गुटका सं० ११४। पत्र सं० ६-७२। आ० ६½×५½ इञ्च।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है।

५४६६. गुटका सं० ११५। पत्र सं० १६८। आ० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एवं स्वयंभूस्तोत्र का संग्रह है।

५४६७. गुटका सं० ११६। पत्र सं० १६६। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं।

४. भुवनकीर्ति गीत	बूचराज	हिन्दी	१२-१४

आजि वधाउ सुराहु सहेली यहु मनु विघसइ जि महलीए।
गोहि अनन्त नित कोटिहि सारिहि सुहु गुरु सुहु गुरु वेदहि सुकरि रलीए॥
करि रली बन्दह सखी सुहु गुरु लवधि गोइम सम सरे।
जसु देखि दरसणु टलहि भवदुख होइ नित नवनिधि घरे॥
कपूर चन्दन अगर केसरि आणि भावन भाव ए।
श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहू सखी आज बधाव हो॥ १॥
तेरह विधि चारित्र प्रतिपालइ दिनकर विनकर जिम तपि सोहइ ए।
सर्वाङ्गि भासिउ धर्म सुरावे वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए।
मोहन्ति वाणी सदा भवि सुनु ग्रन्थ आगम भासए।
षट् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सततत्व पयासए॥
बावीस परिग्रह सहइ अंगिहं गरुव मति नित गुणनिधो।
श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि सु चारितु तसु तेरह विधे॥ २॥
मूल गुणहं अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभटु ताडियो ए।
रतिपति तिणु दंति हु महिइउ पुणु कोवकुए कोवकुकरि तिहि टालीयो ए॥

रलियो जिमि कंबैं करिहिं वगउ करि इम बोलइ ।
गुरु सियाल मेरह जिउम जंगमु पवरा अइ किम डोलए ।
जो पंच विषय विरतु चितिहिं कियउ जिउ कम्मह तणु ।
श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुणा ।। ३ ।।
दस लाक्षण धर्म नितु धारि कु संजमु संजमु भसणु वणिए ।
सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगंथु महा मुनीए ।।
निरगंथु गुरु मद अट्ठ परिहरि सवय जिव प्रतिपालए ।
मिथ्यात तम निर्द्धण दिन म जैणधर्म उजालए ।।
तेरसव्रतहं भवल चित्रहं कियउ सकयो जम ।
श्री भुवनकीर्ति चरण चरणमउ धरइ दशलक्षिण धर्म्मु ।। ४ ।।
सुर तरु संच कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।
महो भरि वरि ए पंच सवद वाजहि उछरंगि हिए ।।
गावहि ए कामणि मधुर सरे प्रति मधुर सरि गावति कामणि ।
जिणहं मन्दिर भवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढ़ावहि ।।
बुधराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ वयोसह गुरो ।
श्री भुवनकीर्ति आसीरवादहि संघु कलियो सुरतरो ।।

।। इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ।।

५. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५–१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६–१०६
७. पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहण गुण निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।
मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ।। १ ।।
जेसलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
पास जिणेसुर जग धणी कलियो सुरतरु कन्दोजी ।। २ ।। जे० ।।
मणि माणिक मोती जड्यउ कंचणमय रसालो जी ।
सिवधर सेहुर सोहतउ पुनिम ससिहर भालोजी ।। ३ ।। जे० ।।

निरमल तिलक सोहमणउ जिन मुख क्रमल रिसालोजी ।
कानों कुण्डल दीपतां झिक मिग झाक झमालोजी ॥ ४ ॥ जे० ॥
कंठि मनोहर कंठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी ।
बहिर बवहि भला करता झब झब कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥
मरकत मणि तनु दीपती मोहन सूरति सारोजी ।
सुख सोहग संपद मिलइ जिणवर नाम अपारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥
इन परि पास जिणेसरु भेटयउ कुल सिणगारोजी ।
जिणचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥

॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५४६८. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ३५० । ग्रा० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है । चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयो से संबंधित पाठहै ।

५४६६. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० १२६ । ग्रा० ६×४ इञ्च ।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२. श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	बखतराम	"	५–७
३. अरहंत चरनचित लाऊं	रामकिशन	"	६–१०
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	"	११–१२
५. चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	संस्कृत	१२-१३
६. कल्याणाष्टक	पद्मनंदि	"	२१
७. पद—आजि दिवसि धनि लेखे लेखवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८. पद–प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	"	५३
९. पद–सुफलघड़ीजी प्रभु	खुशालचन्द्र	"	७५
१०. निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	"	८६–६०

संवत् १७२१ में बुधवार मे पं० केसरीसिंह ने लिखा ।

११. पञ्चमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५–१८

रचना सं० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ बुदी ८ । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—पुरानी घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र है जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १११ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. रविव्रतकथा जयकीर्ति हिन्दी २–३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित्त ध्याऊं ।
सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊं ॥ १ ॥
व.णारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥
मुनिवादि सेठे लीयो रविव्रत सार ।
सांभलि कहूं बहुवा कीया व्रत नंदो अपार ॥ ३ ॥
नेह थी धन गयु सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनों व्रत कर सी ।
त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमणी वरसी ॥ २० ॥
नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रामरत्न सुभूषन ।
जयकीर्ति सूरी प्राय नमी कहाकांम मति सुवण ॥ २१ ॥

इति रविव्रत कथा संपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।
ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ८ पं० ब्रजराज ने लिपी की थी ।

२. धर्मसार चौपई पं० शिरोमणि हिन्दी १–९३

र० काल १७१२ । ले० काल १७२४ जयनिका पुरी में जीवणराज ने प्रतिलिपि की ।

३. विषापहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८५-८८
४. प्रसखुन अष्टक	×	संस्कृत	८९-९०
	दयाराम ने सूरत मे प्रतिलिपि की थी। स० १७९४। पूजा है।		
५. त्रिषष्ठिशलाकाछन्द	श्रीपाल	सस्कृत	९१-९३
६ पद—थेई थेई थेई नृत्यति भ्रमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	९७
७ पद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	"	९७
८ पार्श्वविनती	ब्रह्मनाथू	"	९८-९९
९ कवित्त	ब्रह्मगुलाल	"	१२५

गिरनार की यात्रा के समय सूरत म लिपि किया गया।

५५०२ गुटका स० १२१। पत्र स० ३३। भ्रा० ६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी।

विशेष–विभिन्न कवियों के पदा का सग्रह है।

५५०३ गुटका स० १२२। पत्र स० १३०। आ० ५१×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी सस्कृत।

विशष–तीन चोबीसी नाम दर्शनस्तोत्र (सस्कृत) कल्याणमदिरस्तोत्र भाषा (बनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतु गाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (सस्कृत) निर्वाणकाण्ड पचमगल देवपूजा सिद्धपूजा सोलहकारण पूजा पच्चीसो (नवल) पार्श्वनाथस्तोत्र सूरत का बारहखडी बाईस परीषह जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठा का सग्रह है।

५५०४ गुटका स० १०३। पत्र स० २९। आ० ६×६ इञ्च भाषा सस्कृत हिन्दी। दशा–जीर्णशीर्ण।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित	×	सस्कृत	२-१८
२ पल्यविधि	×	"	१८-२२
३ जैनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२२-२९

५५०५ गुटका स० १२४। पत्र स० ६६। आ० ७×६ इञ्च।

विशेष–पूजाओ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

५५०६ गुटका स० १२५। पत्र स० ५६। आ० १२×४ इञ्च। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

१ कर्म प्रकृति चर्चा	×	हिन्दी
२ चोबीसठाणा चर्चा	×	"

३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४. द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५. देशो (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अंगदेश। २. बंगदेश। ३. कलिंगदेश। ४. तिलंगदेश। ५. राष्ट्रदेश। ६. लाटदेश। ७. कर्णाटदेश। ८. मेदपाटदेश। ९. वैराटदेश। १०. गौडदेश। ११ चौडदेश। १२. द्राविडदेश। १३. महाराष्ट्रदेश। १४. सौराष्ट्रदेश। १५ काममोरदेश। १६. कीरदेश। १७. महाकीरदेश। १८. मगधदेश। १९. सुरसेनदेश। २०. कावेरदेश। २१.*कम्बोजदेश। २२ कमलदेश। २३. उत्करदेश। २४. करहाटदेश। २५. कुरुदेश। २६. कुरणदेश। २७. कच्छदेश। २८ कौसिकदेश। २९. सकदेश। ३०. भयानकदेश। ३१ कौसिकदेश। ३२.""" """) ३३. काशदेश। ३४. कापूनदेश। ३५ कच्छदेश। ३६. महाकच्छदेश। ३७. भोटदेश। ३८. महाभोटदेश। ३९. कीटिकदेश। ४०. केकिदेश। ४१ कोल्लगिरिदेश। ४२ कामकरदेश। ४३ कुण्कुणदेश। ४४. कुंतलदेश। ४५. कलकूटदेश। ४६. करकटदेश। ४७. केरलदेश। ४८. खसदेश। ४९ सर्प्परदेश। ५०. खेटदेश। ५१. विहारदेश। ५२. वैदिदेश। ५३ जालंधरदेश। ५४. टंकण टक्क। ५५. मोडियाणदेश। ५६. नहालदेश। ५७. तुरुष्कदेश। ५८ नायकदेश। ५९. कोमलदेश। ६० दशार्णदेश। ६१. दण्डकदेश। ६२. देशसभदेश। ६३. नेपालदेश। ६४. नर्तकदेश। ६५. पञ्चालदेश। ६६. पल्लवदेश। ६७. पुंड्रदेश। ६८. पाण्ड्यदेश। ६९ प्रत्ययदेश। ७० बंबुददेश। ७१. बन्धुदेश। ७२. गंभीरदेश। ७३. महिष्मकदेश। ७४. महोदयदेश। ७५. मुरण्डदेश। ७६. मुरलदेश। ७७. मरुस्थलदेश। ७८. मुद्गरदेश। ७९. मंगलदेश। ८०. मल्लवर्तदेश। ८१. पवनदेश। ८२. आरामदेश। ८३. राढकदेश। ८४. ब्रह्मोत्तरदेश। ८५. ब्रह्मावर्तदेश। ८६. ब्रह्मणदेश। ८७ बाहूकदेश। विदेहदेश। ८९. बनवासदेश। ९०. बनायुकदेश। ९१. वाल्हीकदेश। ९२. वल्लवदेश। ९३ अवन्तिदेश। ९४. वनिहदेश। ९५. सिंहलदेश। ९६. सुह्मदेश। ९७. सूपरदेश। ९८. सुहडदेश। ९९. अस्मकदेश। १००. हूणदेश। १०१. हुर्म्मकदेश। १०२. हुर्म्मजदेश। १०३. हंसदेश। १०४. हूहकदेश। १०५. हेरकदेश। १०६. भीलदेश। १०७. महाभीलदेश। १०८. वट्टीकदेश। १०९. मोप्यदेश। ११० गांधारदेश। १११. गुजरातदेश। ११२ पारसकुलदेश। ११३. अवावलदेश। ११४. कोसलदेश। ११५ शाकंभरिदेश। ११६. कनउजदेश। ११७. भादनदेश। ११८. उत्तीविसदेश। ११९. गौडावरदेश। १२०. गंगापारदेश। १२१. संभाणदेश। १२२. कनकगिरिदेश। १२३. नवसारिदेश। १२४. भोजिरिदेश।

६. क्रियावादियों के ३६३ भेद	×	हिन्दी

*विशेष— यह नाम गुटके में आधा छोड़ा हुआ है।

७ फुटकर कवित्त एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत	
८ द्वादशानुप्रेक्षा	×	संस्कृत	
९ सुक्तावलि	×	„ ले० काल १८३६ श्रावण बुदी १०	
१० स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि	×	हिन्दी	

५५०७ गुटका सं० १२६ पत्र सं० ४५। आ० १० × ४½ इञ्च भाषा हिन्दी संस्कृत। विषय-चर्चा

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है

५५०८ गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३३ आ० ७×५ इञ्च

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९ गुटका सं० १२७ क। पत्र सं० ५५। आ० ७½×६ इञ्च।

१ शीघ्रबोध	×	संस्कृत	१-१६
२ लघुचाणक्य	×	„	१७-३९
		विशेष—वैष्णवधम। ले० काल सं० १८०७	
३ ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	संस्कृत	४०-५१
४ सारणी	×	हिन्दी	५१-५५
		ग्रहों को देखकर वर्षा होने का योग	

५५१० गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३ ६० आ० ७½× इञ्च। भाषा संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११ गुटका सं० १२९। पत्र सं० ८-२४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पञ्चमङ्गलपाठ है।

५५१२. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ६८। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल १७५२ आषाढ बुदी १०।

१ चतुर्विंशतीतीर्थंकरपूजा	×	संस्कृत	१-५४
२ चौबीसदण्डक	दौलतराम	हिन्दी	५५-६७
३ पीठप्रक्षालन	×	संस्कृत	६८

५५१३ गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा संस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४ गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४-४१। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी।

१. पद्मासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	"	२३-२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द	"	२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	"	३४-४१

५५१५. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० १२१ । आ० ५½×४ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—छहढाला (द्यानतराय), पंचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायें एवं तत्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५५१६. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ५½×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—शांतिनाथस्तोत्र, स्कन्धपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११ ।

५५१७. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ११-१३४ । आ० ३½×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण

विशेष—पंचमङ्गल, तत्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५१८. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ४-१०८ । आ० ८½×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं ।

५५१९. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । आ० ६×४½ । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

१. मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त	धर्मदास, कपोत, विविध देव	हिन्दी	३ कवित्त हैं ।
२ वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	"	

वाजिद के कवित्तों के ९ अंग हैं । जिनमें ९० पद्य हैं । इनमें से विरह के अंग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं ।

वाजीद विपति वेहद कहो कहां मुख सौं । सर कमाल की प्रीत करी पीव मुख सौं ।

पहले अपनी ओर तीर को तान ही, परि हां पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

बिन बालम बेहाल रही क्यों जोव रे । बरत हृदय सी नई किना तोहि पीवरे ।

रुधिर मांस के साथ है क चाम है । परि हां अब जीव जाया पीव और क्यों देखना ॥२१॥

कहिये सुनिये राम और न चित रे । हरि ठाकुर को ध्यान सं धरिये नित रे ।

जीव बिलम्ब्यां पीव दुहाई राम की । परि हां सुख संपति वाजिद कहो क्यों काम की २६॥

५५२०. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० ६ । आ० ७×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—सुगन्धदशमी व्रतकथा भाषा ।

५५२१. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १९३५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३७ । आ० ३×३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३ गुटका सं० १४२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ असाढ सुदी १४ ।

विशेष—गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१. बारहखडी	द्यानतराय	हिन्दी	१-६
२. बारहखडी	किशन	"	१०-१२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । आ० ५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८९७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ६१ । आ० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६. गुटका सं० १४५ । पत्र स० ११ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुनशास्त्र । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्यमहादेवं गुरु शास्त्रविशारदं ।
भविष्यदर्थबोधाय वक्षते पचपक्षिणः ॥१॥
अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रयं प्रति ।
फलाफल नियुज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है । पट्टी पहाडे भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५२८. गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ३-५७ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—शीघ्रबोध है ।

५५२९. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र संग्रह है

५५३०. गुटका सं० १४९ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. बिहारीसतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२ वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
	७०८ पद्य हैं । ले० काल सं० १८४६ चैत सुदी १० ।		
३. कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका सं० १५० । पत्र सं० १३५ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८४५ । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—लिपि विकृत है । कक्का बत्तीसी, राम चीतरण का दूहा, फूल भीतरणी का दूहा, आदि पाठ है । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३२. गुटका सं० १५१ पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पदों तथा विनतियों का संग्रह है तथा जैन पचीसी (नवलराम) बारह भावना (दौलतराम) निर्वाणकाण्ड है ।

५५३३. गुटका सं० १५२ । पत्र सं० १०७ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है । पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है ।

५५३४. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×५½ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाएं एवं पञ्चमंगल पाठ है ।

५५३५. गुटका सं० १५४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इंच । ले० काल १८७६ ।

१. आवश्यक	×	संस्कृत	१-८
२. मंत्र आदि संग्रह	×	"	[illegible]

३. चतुश्लोकी गीता	×	"	२३–२४
४. भागवत महिमा	×	हिन्दी	२५–५१
		तीर्थों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र है।	
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	५२–८१

५५३६. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ८८। ६×६ इंच। भाषा–संस्कृत। पूर्ण।

१. जीनेन्द्र पूजा	×	संस्कृत	१–३
२. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	४–१३
३. सिद्धपूजा	×	"	१ २
४. पार्श्वनाथाष्टक	×	"	३–६
५. षोडशकारणपूजा	आचार्य केशव	"	१–१४
६. सोलहकारण जयमाल	×	अपभ्रंश	३६–५०
७. दशलक्षण जयमाल	×	"	५१–६३
८. द्वादशव्रतपूजा जयमाल	×	संस्कृत	६४–८०
९. णमोकार पैंतीसी	×	"	८१–८६

५५३७. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १७। आ० ५×३ इंच। ले० काल १७७१ ज्येष्ठ सुदी २। भाषा–हिन्दी। पद्य सं० ७१।

विशेष—यादव वंशावलि वर्णन है।

५५३८. गुटका सं० १५७। पत्र सं० ३२। आ० ६×५ इंच। ले० काल १८३२।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, अक्षर बावनी, (धानतराम) एवं पंचमंगल के पाठ हैं। पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं० १८३२ में प्रति लिपि की।

५५३९. गुटका सं० १५७ (क) पत्र सं० १४१। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५४०. गुटका सं० १५८। पत्र सं० १८। आ० ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। ले० काल १८१०। दशा–जीर्ण।

विशेष—सामान्य चर्चाओं पर पाठ है।

५५४१. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १५०। आ० ७×४। ले० काल–×। दशा–जीर्ण। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५४२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इन्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इन्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

५५४४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाओं का संग्रह है ।

५५४५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण मे से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रो में संस्कृत मे भगवत गीता माला दी हुई है ।

५५४७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । आ० ६½×५½ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	"	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० ३×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० श्रावण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. धर्मरासो	×	हिन्दी	१-१८

अथ धर्म्म रासो लिख्यते—

पहली बंदो जिणवर राइ, तिहि वंदा दुख दालिद्र जाइ ।
रोग कलेश न संचरै, पाप करम सब जाइ पुलाई ।।
तिहचै मुकित पद संचरै, ताको जिम धर्म्म होई सहाई ।। १ ।।

धर्म्म दुहेलो जैनको, छह दरसन जे ह्री परधान ।

श्रावग जन सुणिजे दे कान, भव्यजीव चित संभलो ॥

पढत वित्त सुख होई निधान, धर्म्म दुहेलो जैन को ॥ २ ॥

दूजा वदौं सारद माई, भूलो आखर आणो ठाइ ॥

कुमति कलेस न उपजे, महा सुमति वंदो अधिकाइ ॥

जिणधर्म्म रासो वर्णउ, तिहि पढत मन होइ उछाह ॥

धर्म दुहेलो जैन को ॥ ४ ॥

अन्तिम— ऊभो जीमण जीवै सही, आगम वान जिणेसुर कही ।

कर पात्रा आहार लै, ये अट्ठाईस मूलगुण जाणि ॥

धन जती जे पालही, ते अनुक्रम पहुचे निरवाणि ।

धर्म्म दुहेलो जैन का ॥१५२॥

मूढ देव गुरुशास्त्र बखाणि, अष्ट पद् अनायतन जाणि ।

आठ दोष शङ्का आदि दै, आठ मद सो तजे पचीस ॥

ते निश्चै सम्यक्त फलै, ऐसो विधि भासै जगदीश ।

धर्म्म दुहेलो जैन का ॥१५३॥

इति श्री धर्म्मरासो समाप्ता ॥१॥ स० १७९० श्रावण सुदा २ सागानायर मध्ये ।

४४५२. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ५ । आ० ६×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

४४५३. गुटका सं० १७१ । पत्र स० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मेदशिखर पूजा है ।

४४५४ गुटका सं० १७२ । पत्र स० १५-६० । आ० ३×३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७१८ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा, पद एवं विनतियो का सग्रह है ।

४४५५. गुटका सं० १७३ । पत्र स० १८५ । आ० ६×४ इंच । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नही है ।

५५५६. गुटका सं० १७२। पत्र सं० ४-१३। आ० ६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार रस। ले० काल सं० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

५५५७. गुटका सं० १७५। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

५५५८. गुटका सं० १७६। पत्र सं० ८। आ० ५×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

५५५९. गुटका सं० १७७। पत्र सं० २१। आ० ५'×३' इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है।

५५६०. गुटका सं० १७८। पत्र सं० १७। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। सं० १६८४ मंगसिर सुदी १२। तारानम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

५५६१. गुटका सं० १७६। पत्र सं० १४। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

५५६२. गुटका सं० १८०। पत्र सं० २१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवारकथा के पाठ का मुख्यत. संग्रह है।

५५६३. गुटका सं० १८१। पत्र सं० २१-४६।

१. चन्द्रकुंवरजी की वार्ता	×	हिन्दी	२१-२६
		पद्य सं० ११६। ले० काल सं० १७१६	
२. सुगुरुसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३. कक्काबत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	„ ले० काल सं० १७६५	३०-३४
४. अन्यपाठ	×	„	३४-४६

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५६४. गुटका सं० १८२। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा है।

५५६५. गुटका सं० १८३ । पत्र सं० २० । आ० १०×६ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा–जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं । तथा पत्र १०–२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी पद्य में है ।

५५६६. गुटका सं० १८४ । पत्र सं० २४ । आ० ६३/४×६ इंच । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है ।

५५६७. गुटका सं० १८५ । पत्र सं० ७–८८ । आ० १०×५.३ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८२३ वैशाख सुदी ८ ।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी		७–७६
२. अनाथीसाध चौढालिया	विमल विनयगणि	"	७३ पद्य है	७६–७८
३. अध्ययन गीत	×	हिन्दी		७८–८३
	दस अध्याय में अलग अलग गीत हैं । अन्त में चूलिका गीत है ।			
४. स्फुट पद	×	हिन्दी		८४–८८

५५६८. गुटका सं० १८६ । पत्र सं० ५२ । आ० ९×५ इंच भाषा–हिन्दी । विषय पद संग्रह ।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः खातनराम के पद हैं ।

५५६९. गुटका सं० १८७ । पत्र सं० ७७ । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. चौरासी गोत	×	हिन्दी	१–२
२. कछवाहा वंश के राजाओं के नाम	×	"	२–४
३. देहली राजाओं की वंशावली	×	"	५–१६
४. देहली के बादशाहों के परगनों के नाम	×	"	१७–१८
५. सीख सत्तरी	×	"	१९–२०
६. ३६ कारखानों के नाम	×	"	२१
७. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२२–४५

५५७०. गुटका सं० १८८ । पत्र सं० ११–७३ । आ० ६×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—गुटके में भक्तामरस्तोत्र कल्याणमन्दिरस्तोत्र हैं ।

१. पार्श्वनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन	मतिसागर के शिष्य जगरूप	हिन्दी	र० सं० १८००

आगे पत्र जुडे हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे हुये हैं।

५५७१. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ६–७८। आ० ५¾×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–इतिहास।

विशेष—अकबर बादशाह एवं बीरबल आदि की वार्ताएं हैं। बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं।

५५७२. गुटका सं० १६०। पत्र सं० १७। आ० ४×३ इञ्च। भाषा–हिन्दी।

विशेष—रूपचन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है।

५५७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। आ० ८¾×६ इंच। भाषा–हिन्दी।

विशेष—सुन्दरदास कृत सवैये एवं अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

५५७४ गुटका सं० १६२। पत्र सं० ४५। आ० ८¾×६ इंच। भाषा–प्राकृत संस्कृत। ले० काल १८००।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१–४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५–६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है।	
३. शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७–६
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	६–१३
५. अजितशांतिस्तवन	नन्दिषेण	"	१३–२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	२३–३०
७. कल्याणमंदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१–३६ हिन्दीगद्य टीकासहित है।	
८ शांतिपाठ	×	प्राकृत ४०–४५	"

५५७५. गुटका सं० १६३। पत्र सं० १७–३२। आ० ८¾×५¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले० काल १८६७।

विशेष–तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है।

५५७६. गुटका सं० १६४। पत्र सं० १३। आ० ६×६ इंच। भाषा- हिन्दी। विषय–कामशास्त्र। अपूर्ण। दशा–सामान्य। कोकसार है।

५५७७. गुटका सं० १६५। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा–संस्कृत।

विशेष–भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है। ४६ पद्य हैं।

५५७८. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष – नाटकसमयसार है ।

५५७६. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८६४ श्रावण सुदी १४ । बुधजन के पदों का संग्रह है ।

५५८०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×५½ इंच । अपूर्ण । पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८१. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २–५६ । आ० ८×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

विशेष–पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८२. गुटका सं० २०० । पत्र सं० ३४ । आ० ६½×८ इंच । पूर्ण । दशा–सामान्य

१. जिनदत्त चौपई — रल्हकवि — प्राचीन हिन्दी

रचना संवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल संवत् १७५२ । पालब निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थ

२. आदीश्वर रेखता — सहस्रकीर्ति — प्राचीन हिन्दी — अपूर्ण

र० काल सं० १६६७ । रचना स्थान-सालकोट । ले० काल-सं० १७४३ मगसिर सुदी ७ । महानंद ने प्रतिलिपि की थी । १२ पत्र से ४५ से आगे ६१ तक के पद्य हैं ।

३ पंचबधावो	×	राजस्थानी नेरगढ़ की	"
४ कवित्त	वृन्दावनदास	हिन्दी	
५ पद–रेमन रेमन जिनविन कछु न विचार	लक्ष्मीसागर	"	रागमल्हार
६ तूही तू ही मेरे साहिब	"	"	रागकाफी
७. तूतो तूही २ तूती बोल	"	"	×
८. कवित्त	ब्रह्म गुलाल एवं वृन्दावन	"	पत्र १६

ले० काल सं० १७५० फागण सुदी १४ । फकीरचन्द जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । कैलास का वासी गोत्र तेला ।

६ जेष्ठ पूर्णिमा कथा	×	हिन्दी	पूर्ण
१०. कवित्त	ब्रह्म गुलाल	"	
११. "	×	"	

१२. समुद्र विजय सुत सांवरे रंग भीने हो	×	,,	
		ले० काल १७७२ मोतीहटका चेहुरा दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।	
१३. पञ्चकल्याणकपूजा अष्टक	×	संस्कृत ले० काल सं० १७५९ ज्येष्ठ बु० १० ।	
१४. षट्रस कथा	×	संस्कृत	ले० काल सं० १७५२ ।

५५८३. गुटका सं० २०१ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचंद कृत राहुल पच्चीसी के पाठ और हैं ।

५५८४. गुटका सं० २०२ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५. गुटका सं० २०३ । पत्र सं० २०-२६, १८५ से २०३ । आ० ६×५½ इंच । भाषा संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यतः निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	,,	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	,,	१९२-१९६
४. गुरुओं की जयमाल	,,	हिन्दी	१९६-१९७
५. णमोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	,,	१९७-२२०

५५८६. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० १४० । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७११ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथु) का संग्रह है ।

५५८७ गुटका सं० २०५ । नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७ । आ० ८½×५½ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८. गुटका सं० २०६ । पत्र सं० ४७ । आ० ८½×७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र सं० २ नहीं है ।

१. सुंदर शृंगार	महाकविराय	हिन्दी	पद्य सं० ८११

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में आमेर निवासी मोतीराम कासा के जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२. स्यामबत्तीसी　　　　नन्ददास　　　　"

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की। मालीराम काला ने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण स्याम चरासु मठ मवनहि सुत प्रवांन।
कहत स्याम कलमल कछू रहत न रंच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

स्यो सनकादिक नारदस्मेद ब्रह्म सेस महेस जु पार न पायो।
सो सुख व्यास विरंचि बखानत निगम कुं सोधि अगम बतायो ॥
सैक भाम नहिं भाग जसोमति नन्दलला बृज आनि कहायो।
सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जु स्याम भले गुनगायो ॥३७॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम बत्तीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का। लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिती भादवा सुदी १४।

५५८९. गुटका सं० २८७। पत्र सं० २००। आ० ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनों का संग्रह है।

५५९०. गुटका सं० २८८। पत्र सं० १७। आ० ६३ ६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत जातकसार है।

५५९१. गुटका सं० २८९। पत्र सं० १६–२४। आ० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है। विषय-कृष्ण भक्ति है।

५५९२. गुटका सं० २९०। पत्र सं० २८। आ० ६३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चतुर्दश गुणस्थान चर्चा है।

५५९३. गुटका सं० २९१। पत्र सं० ४६–८७। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८१०।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है।

५५९४. गुटका सं० २९२। पत्र सं० ६–१३०। आ० ६×६ इंच।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद संग्रह है।

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इंच। भाषा–हिन्दी। ले० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपंचासिका (द्यानतराय) वृजलाल की बारह भावना, वैराग्य पच्चीसी (भगवतीदास) आलोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) आदित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६. गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ९×६ इंच।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ९×६ इंच। भाषा–हिन्दी।

१. कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	हिन्दी		५–७
२ सीताजी की विनती	×	"		७–८
३. हंस की ढाल तथा विनती ढाल	×	"		९–१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"		१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	"	र० सं० १६६०	१३–१८
६. विनतियां, ज्ञानपच्चीसी, बारह भावना राजुल पच्चीसी आदि	×	"		१९–४०
७. पांच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं	४१–४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	"		४५–६७
९. बधावा एवं विनती	×	"		६७–६९
१०. नव मंगल	विनोदीलाल	"		६९–७७
११. कक्का बत्तीसी	×	"		७७–८१
१२. बड़ा कक्का	गुलाबराय	"		८०–८१
१३. विनतियां	×	"		८१–१३२

५५६८. गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×९ इंच। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१. जिनवरजत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१–२
		भट्टारक पट्टावली दी गई है।	
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३–१५

३. मुक्तावलि गीत	सकलकीर्ति	हिन्दी	१५
४. चौबीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	”	२०
५. अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	”	२१
६. मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	”	२२
७. क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	संस्कृत	३७-३८
८. जिनसहस्रनाम	आशाधर	”	१०६-११६
९ भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	”	१५०

५५९९. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । आ० ८¾×६¾ इंच। भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

५६००. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । आ० ९×५¾ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है।

५६०१. गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—खड्गसेन कृत त्रिलोकदर्पणकथा है। ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । आ० ७½×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश संस्कृत ।

१. तिसठजिणचऊबीसी	महणसिंह	अपभ्रंश	१-७०
२. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	७०-८०

विशेष—गुटके के अधिकाश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१९० । आ० ८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्व कौमुदी (अपूर्ण), प्रीत्यंकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी गद्य टीका अपूर्ण है।

५६०४. गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । आ० ५×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६०५. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए हैं।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । आ० ७×५½ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । दशा—जीर्ण शीर्ण एवं अपूर्ण ।

विशेष—गुरावली (अपूर्ण), भक्तिपाठ, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं।

५६०८. गुटका सं० २०५ । पत्र सं० ११–१७७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी ।

१. बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेस ।
पोये ठौर कुठौर के लरमें होत विसेष ॥७१॥

इस पर ७१५ संख्या है । वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जहं मिली गंगसो आय ।
अन्तराल में देस सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥
लिखे दूहा भूषन बहुत अनवर के अनुसार ।
कहुं औरे कहुं और हू निकलेंगे सकुमार ॥२॥
सेवी जुगल किसोर के प्रानताथ जी नांव ।
सतसती तिनसों पढी बसि सिंगार बट ठांव ॥३॥
जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस ।
सेवत संत महंत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥
पुरोहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।
हम हैं ताके गोत में मोहन मो जजमान ॥५॥
मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।
सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नहीं जाहि ॥६॥
गहि पंक सुमनु तात तैं विधि को वस अजाय ।
राधा नाम कहुं सुनैं आनम कान बढाय ॥७॥
संवत् अठारहसौ बिते ता परि चौंतीस चारि ।
जम्माडैं पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृता बिहारी रचित सतसती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा । संवत् १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवासरे शुभमस्तु ।

२. कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास । पत्र सं० १३१-१७७ । भाषा–हिन्दी पद्य,

विशेष— ३९७ तक पद्य हैं । आगे के पत्र नहीं हैं ।

आरम्भ—　　　मोहन चरन पयोज में, है तुलसी को वास ।
　　　　　　ताहि सुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास ॥१॥

कवित्त—　　　आनन्द को कन्द वृषभान जाको मुखचन्द,
　　　　　　लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है ।
　　　　　　दूजौ तैसो रचिवै को चाहत विरंचि निति,
　　　　　　ससि को बनावै अजो मन कौन मोरै है ।
　　　　　　फेरत है सान आसमान पै चढाय फेरि,
　　　　　　पानि पै चढाय वे को वारिधि में बोरै हैं ।
　　　　　　राधिका के आनन के जोट न विलोके विधि,
　　　　　　टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है ॥

अथ दोष लक्षण दोहा—
　　　　　　रस आनन्द सरूप कौं दूषै ते हैं दोष ।
　　　　　　आत्मा कौं ज्यो अंधता और बधिरता रोष ॥३॥

अन्तिम भाग—
　　दोहा—　　साका सतरह सौ पुजी संवत् पैंतीस जान ।
　　　　　　अठारह सो जेठ बुदि ने ससि रवि दिन प्रात ॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी, विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्ण । स० १८५२ माघ कृष्णा १४ रविवासरे ।

५६०६. गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १०० । आ० ६३/४×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८२५ जेठ बुदा १५ । पूर्ण ।

१. सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	हिन्दी	१
२. समयसारनाटक	बनारसीदास	"	१-१००

५६१०. गुटका सं० २२७ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५३/४ । भाषा-हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । ले० काल सं० १८४७ असाढ बुदी ६ ।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित डूंगरसी की सो देखि लिखी—मि० असाढ़ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

५६११. गुटका सं० २२८। पत्र सं० ४६ से ६२। आ० ६×७ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। लै० काल १६२४। द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है।

५६१२. गुटका सं० २२६। पत्र सं० १८। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

१. पंचपाल पैंतीसी	×	हिन्दी	१–६
२. अंकपनाचार्यपूजा	×	”	७–१२
३ विष्णुकुमारपूजा	×	”	१३–१८

५६१३. गुटका सं० २३०। पत्र सं० ४२। आ० ७×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

५६१४. गुटका सं० २३१। पत्र सं० २२–४७। आ० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है।

५६१५. गुटका सं० २३२। पत्र सं० १४–१५७। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पच्चीसी, बारह भावना, सत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान बावनी (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्म्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है।

५६१६. गुटका सं० २३३। पत्र संख्या ४२। आ० १०×४½ भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६१७. गुटका सं० २३४। पत्र सं० २०३। आ० १०×७½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है।

५६१८. गुटका सं० २३५। पत्र सं० ११८। आ० १०×६½ इ०। भाषा–हिन्दी।

१. तत्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)		हिन्दी संस्कृत	१–६०
		६१ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।	
२ चौबीसठाणाचर्चा	×	हिन्दी	६१–११८

५६१९. गुटका सं० २३६। पत्र सं० १४०। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६२०. गुटका सं० २३८। पत्र सं० २५०। प्रा० ९×६½ इ०। भाषा-हिन्दी।। ले० काल सं० १७४८ आसोज बुदी ११।

१. कुण्डलिया	अगरदास एवं अन्य कविगरण	हिन्दी	लिपिकार बिजयराम	१-३३
२. पद	मुकन्ददास	"		३३-३४
		ले० काल १७७५ भादवा सुदी ५		
३. त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	हिन्दी		३४-२५०

५६२१. गुटका सं० २३६। पत्र सं० १६८। प्रा० १३½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-१४
२. कथाकोष	×	"	१४-८४
३. त्रिलोक वर्णन	×	"	८४-१६८

५६२२. गुटका सं० २४०। पत्र सं० ४८। प्रा० १२½×८ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद मे यन्त्र मंत्र सहित दिया हुआ है।

५६२३. गुटका सं० २४१। पत्र सं० ५-१७७। प्रा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८५७ वैशाख बुदी अमावस्या।

विशेष—लिखितं महात्मा शम्भूराम। ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है।

५६२४. गुटका सं० २४२। पत्र सं० १-२००, ४०० ४६५, ६०५ से ७६४। प्रा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है।

५६२५. गुटका सं० २४३। पत्र सं० २४०। प्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५६२६. गुटका सं० २४४। पत्र सं० २२। प्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत।

१. त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७६१	४
२. दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५-७
३. वत्सलोकीशंभूस्तोत्र	×	"		७-८
४. हरिहरनामावलिस्तोत्र	×	"		८-१०
५. द्वादशराशि फल	×	"		१०-१२

६. बृहस्पति विचार × ,, ले० काल १७६२ १२-१४

७. अन्यस्तोत्र × ,, १५-२१

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७३ । आ० ७×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ संग्रह है ।

५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करों के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र है ।

५६३३. गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० भाषा-संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४. गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—एकमाङ्गलिक स्तोत्र है ।

५६३५. गुटका सं० २५३ पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ले० काल सं० १९३३ ।

विशेष— भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्वाण विधि है ।

५६३७. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १६ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत छह ढालीसी पंचमंगल एवं पूजा आदि है ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—[illegible] कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५७ । पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० २५८ । पत्र सं० ६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—ऋषिमण्डलस्तोत्र है ।

५६४१. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८३० ।

विशेष—हिन्दी पद एवं नाथू कृत लहुरी है ।

५६४२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन पाठ हैं ।

५६४३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । र० काल १८६१ ।

विशेष—सोनागिरि पच्चीसी है ।

५६४४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० २६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शंकराचार्य विरचित अपराधसूदनस्तोत्र है ।

५६४६ गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सप्तश्लोकी गीता है ।

५६४७. गुटका सं० २६५ । पत्र सं० ४ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—वराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है ।

५६४८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत । ले० काल १८८७ पौष सुदी ६ ।

विशेष— पत्र १-७ तक महागणपति कवच है ।

५६४६. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है ।

५६५०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ३५ । आ० ५$\frac{1}{2}$×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८८५ पौष सुदी २ ।

विशेष—महात्मा संतराम ने प्रतिलिपि की थी । पद्मावती पूजा, चतुषष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (आशाधर) है ।

५६५१. गुटका सं० २६९ । पत्र सं० २७ । आ० ७½×५½ इ० । भाषा–संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६५२ गुटका सं० २७० । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १६३२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३ गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं ।

५६५४. गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । आ० ७×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८९ में भादवा सुदी २ को प्रकट हुआ था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६. गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । आ० १०×६½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । पूर्ण ।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से आगे खाली पड़ा है ।

५६५७. गुटका सं० २७५ । पत्र सं० ६३ । आ० ५½×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपचीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबोधपञ्चासिका (द्यानतराय) ।

५६५८ गुटका सं० २७६ । पत्र सं० १० । आ० ६½×६ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कक्का (हिन्दी) आदि पाठ है ।

५६५९ गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २–२३ । आ० ५½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द के पदों का संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० २७८ । पत्र सं० १–८० । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

५६६१. गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६–३४ । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३/४X४ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कथाओं का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० १२ । आ० ६X१ इ० । भाषा-X । पूर्ण ।

विशेष—बारहखड़ी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेरुपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-८४ । आ० ६१/२X५१/२ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— जैनपच्चीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (अचलकीर्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल (भगवतीदास), सहस्रनाम, साधुवंदना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ११ । आ० ७१/४X५ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—११ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । आ० ८X६१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—चर्चाशतक (द्यानतराय), श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनायें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ पत्र सं० ३-४६ । आ० ८X६१/२ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाचर्चा ये रचनायें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । आ० ८X६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७१/२X५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६X४ इ० । विषय-संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार । पूर्ण ।

विशेष—रसिकराय कृत स्नेहलीला के से [illegible] गोपी संवाद दिया है ।

प्रारम्भ— एक समय ब्रजवास की सुरति भई हरिराइ ।
निज जन अपनो जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले ।
नन्द जसोदा आदि दे ब्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥

ब्रज वासी वल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
तानै नीमष न बीसरू मोहे नन्दराय की आन ॥

अन्तिम— यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥

जो गाव सीष सुर मगन तुम वचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वांछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिया हुआ है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ५२ । आ० ६X५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	८–१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३–१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	"	"	१७–१६
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	१६–२३
५. अक्षयदशमीकथा	"	"	२३–२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"	२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य पूर्ण	३१–५१

विशेष—लालेरी ग्राम में दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य में मुनि मेघविजय ने प्रतिलिपि की थी। गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कलश भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० ४८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१६–३१
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी ११ दोहा है	३१–३७

३. [illegible]	गोवर्धन	संस्कृत	३७–४८

ले० काल सं० १७६१ संत हरिवंशदास ने लवाण में प्रतिलिपि की थी।

५६७५. गुटका सं० २९३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी। पत्र सं० ७६। आ० ५×६ इञ्च। ले० काल सं० १७३१। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मंत्रों का संग्रह है।

५६७६. गुटका सं० २९४। पत्र सं० ७७। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल १७८८ पौष सुदी ६। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष—पं० गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६७७. गुटका सं० २९५। पत्र सं० ३१–६२। आ० ४×५। इञ्च भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ५।

विशेष—पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है।

५६७८. गुटका सं० २९६। पत्र सं० ३–४१। आ० ३×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–स्तोत्र। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र है।

५६७९. गुटका सं० २९७। पत्र सं० २५। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं।

५६८०. गुटका सं० २९८। पत्र सं० ६२। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१. बारह मासा—पत्र १०–२१ तक। चूहर कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन सुन्दर है। कविता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य है।

२. बारह मासा—गोविन्द का–पत्र २१–३१ तक।

५६८१. गुटका सं० २९९। पत्र सं० ४१। आ० ७×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–शृङ्गार।

विशेष—कोकसार है।

५६८२. गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। आ० ६×५½ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–मन्त्रशास्त्र।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुसखे। पत्र ७ से आगे खाली है।

५६८३. गुटका सं० ३०१। पत्र सं० १८। आ० ४½×३ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–संग्रह। ले० काल १६१८। पूर्ण।

विशेष—लावणी मांगीतुंगी की– हर्षकीर्ति ने सं० १६०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा की थी।

५६८४. गुटका सं० ३०२। पत्र सं० ४२। आ० ४×३½ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–संग्रह। पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५६८५. गुटका सं० ३०३। पत्र सं० १०५। आ० ४½×४½ इ०। पूर्ण।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये हैं। कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं। आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है। उनका फल दिया हुआ है। जन्मपत्री सं० १८१७ की जगतराम के पौत्र माणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं।

५६८६. गुटका सं० ३०३ क। पत्र सं० १५। आ० ८×५½ इ०। भाषा–हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामकवच है। पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबंध रामचरित्र है। इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है। १–२० पद्य तक संख्या ठीक है। इसमे आगे ३५६ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है। इसके आगे २ पत्र खाली हैं।

५६८७. गुटका सं० ३०४। पत्र सं० १६। आ० ७½×५ इ०। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नहीं है। अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगतराम एवं विजयकीर्ति के पदो का संग्रह है।

५६८८. गुटका सं० ३०५। पत्र सं० १०। आ० ७×६ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। पूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा है।

५६८९. गुटका सं० ३०६। पत्र सं० ९। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा पाठ। पूर्ण। विशेष—शांतिपाठ है।

५६९०. गुटका सं० ३०७। पत्र सं० १४। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है।

५६९१. गुटका सं० ३०८। पत्र सं० १०। आ० ५×४½ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। पूर्ण

विशेष—भक्तामरऋद्धिमन्त्र सहित है।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । आ० ६३×७६ इञ्च । वे० सं० ८५७ । पूर्ण ।

१. भाषाभूषण	श्रीरजसिंह राठौड	हिन्दी		१–८
२. अठोत्तरा सनाथ विधि	×	,,	ले० काल सं० १७५६	१३

औरंगजेब के समय में पं० अभयसुन्दर ने ब्रह्मपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

३. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	११७

बादशाह शाहजहां के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५. बनारसी विलास	×	,,	१२६

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६६३. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२५ । आ० ८×५३ इञ्च । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २४ । आ० १०३×५३ इ० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८५९ ।

१. शांतिकनाम	×	हिन्दी	१
२. महाभिषेक सामग्री	×	,,	१–८
३ प्रतिष्ठा मे काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र	×	,,	६–२४

५६६५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ६३ । आ० ५३×८३ इ० । पूर्ण । वे० सं० ८६० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५६६६. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ८६१ ।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है ।

५६६७ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३३४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ८६२ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६६८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । आ० ६३×५ इ० । ले० काल सं० १८०५ असाढ सुदी ५ पूर्ण । वे० सं० ८६३ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६६६. गुटका सं० ८। पत्र सं० ३१७। ग्रा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६२ ग्रासोज सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८६४।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है। पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है।

५७००. गुटका सं० ६। पत्र सं० १४। ग्रा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ८६५।

विशेष—जगतराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र ग्रादि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१. गुटका सं० १। पत्र सं० २१२। ग्रा० ६×४½ इ०। ले० काल ×। ग्रपूर्ण।

१. होडाचक्र	×	संस्कृत	ग्रपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	"	"	६-३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६-६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६६
६. द्वादशव्रतोद्यापन	×	"		६६-८६
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८६-१०२
८. णवकारपैंतीसी	×	"		
९. ग्रादित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३-२१२
११. नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२. पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३. पञ्चमेरुपूजा	×	"		

५७०२. गुटका सं० २ । पत्र सं० १६६ । आ० ९×६½ इ० । ले० काल × । दशा–जीर्ण शीर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१–१०
२. कालचक्रवर्णन	×	हिन्दी	११–१४
३. विचारगाथा	×	प्राकृत	१५–१६
४. चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६–३१
५. चउवीसठाणाचर्चा	×	"	३२–७८
६. आस्रव त्रिभङ्गी	×	प्राकृत	७९–११२
७. भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	×	"	११३–१३३
८. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पण	×	संस्कृत	१३४–१५४
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५४–१६८

५७०३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २१५ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है । इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है ।

१. शत्रुञ्जयतीर्थरास	समयसुन्दर	हिन्दी		३३
२. बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	"	र० काल १६१६	३३–४०
३. दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"		४१–४९
४. शालिभद्र चौपई	जितसिंहसूरि	"	र० काल १६०८	४९–६४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"		६४–१०६
६. बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"		१०६–११७
७. महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"		११७–११९
८. आदीश्वरस्तवन	"	"		१२०
९. पार्श्वजिनस्तवन	"	"		१२०–१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	"	"		१२२–१४१

५७०४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७१ । आ० ५½×३ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है । लश्कर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७०५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । आ० ८½×६½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४–१६
२. आदिपुराणविनती	गङ्गादास	„		१७–४३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले वणिक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

३. पद– जिए जपि जिए जपि जिवड़ा	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी		४४-४५
४. अष्टकपूजा	विश्वभूषण	„	पूर्ण	५१
५. समकितविणवोधर्म	ब्र० जिनदास	„	„	५८

५७०७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । आ० ५½×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित संग्रह है । अन्त में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । आ० ५×२½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासों का ब्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । आ० ६×३½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५७१२. गुटका सं० १२। पत्र सं० २२३। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १६०५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१३. गुटका सं० १३। पत्र सं० १६३। आ० ५×५½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१४. गुटका सं० १४। पत्र सं० ४२। आ० ८½×५½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१–१८
२. खंडेला की चरचा	×	,,	,,	१६–२६
३. त्रेसठ शलाका पुरुषवर्णन	×	,,	,,	२६–४२

५७१५. गुटका सं० १५। पत्र सं० ७६। आ० ६×५ इ०। ले० काल० ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१६. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२०। आ० ६×५½ इ०। ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१०–१०६
२. पार्श्वनाथजीकी निसाणी	×	,,	११०–११४
३. शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	,,	११५–११६
४. गुरुदेवकीविनती	×	,,	११७–१२०

५७१७ गुटका सं० १७। पत्र सं० ११५। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

५७१८. गुटका सं० १८। पत्र सं० १६४। आ० ५¾×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१६. गुटका सं० १६। पत्र सं० २१३। आ० ५×३½ इ०। ले० काल × पूर्ण।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये है।

५७२०. गुटका सं० २०। पत्र सं० १३२। आ० ७×६ इ०। ले० काल सं० १८२२। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द, हिन्दी) पद (शुभचन्द्र एवं कनककीर्ति) खडेलवालो की उत्पति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६२ । आ० ५३/४×५१/४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पद- (वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	×	"	"	"
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की बलिहारी)	×	"	"	"
४. आदित्यवारकथा	×	"	"	६६-१२५
५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनंद)	×	"	"	१७८-१७६
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७. पञ्चेन्द्रिय वेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२-१६५
८. जैनबिद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४. गुटका स० १ । आ० ८×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पद- सांवरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. " मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	"
३. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५. कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८ देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
९. अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११. सोलहकारणपूजा	×	”
१२. दशलक्षणपूजा	×	”
१३. शान्तिपाठ	×	”
१४. पार्श्वनाथपूजा	×	”
१५. पंचमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्ण ”
१८. रत्नत्रयपूजा	×	”
१९. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	”
२१. गुरुओं की विनती	×	”
२२. जिनपच्चीसी	नवलराम	”
२३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद– जिन देख्या विन रह्यो न जाय	किशनसिंह	”
२६. ” कीजौ हो भैयन सो प्यार	द्यानतराय	”
२७. ” प्रभू यह अरज सुणो मेरी	नन्द कवि	”
२८. ” भयो सुख चरन देखत ही	”	”
२९. ” प्रभू मेरी सुनो विनती	”	”
३०. ” परयो संसार की धारा जिनको वार नहीं पारा	”	”
३१. ” कला दीदार प्रभू तेरा भया कर्मन सगुर हेरा	”	”
३२. स्तुति	बुधजन	”
३३. नेमिनाथ के दश भव	×	”
३४. पद– जैन मत परखो रे भाई	×	”
		”

५७२५. गुटका सं० २। पत्र सं० ८३-४०३। आ० ४३/४×३ इ०। अपूर्ण। वे० सं० १०१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण ८३-९३
२. देवसिद्धपूजा	×	"	९३-११५
३. सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश	११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश संस्कृत	१२३-१२९
५. रत्नत्रयपूजा	×	संस्कृत	१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६८-१८१
७. शान्तिपाठ	×	संस्कृत	१८१-१८६
८. पञ्चमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	१८७-२१२
९. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत अपूर्ण	२१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मंत्र एवं हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी	२६९-४०३

५७२६. गुटका सं० ३। पत्र सं० ८९। आ० १०×९ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १८७९ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १०५।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६. पंचमेरुपूजा	"	"
७. सिद्धक्षेत्रपूजा	"	"
८. दर्शनपाठ	×	"
९. पद- अरज हमारी सुन	×	"

१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	"	
११ भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी	

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित ।

५७२७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है । इसमें दौलतराम, द्यानतराय, जोधराज, नवल, बुधजन भैय्या भागवतीदास के नाम उल्लेखनीय हैं ।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५७२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । आ० ६½×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे. सं० १४० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है:—

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत		१–६
२. घन्टाकरणमन्त्र	×	"		६
३. बनारसीविलास	बनारसीदास	हिन्दी		७–१६६
४. कवित्त	"	"		१६७
५. परमार्थदोहा	रूपचन्द	"		१६८–१७४
६. नाममालाभाषा	बनारसीदास	"		१७५–१९०
७. अनेकार्थनाममाला	नन्दकवि	"		१९०–१९७
८. जिनपिंगलछंदकोश	×	"		१९७–२०६
९. जिनसतसई	×	"	अपूर्ण	२०७–२११
१०. पिंगलभाषा	रूपदीप	"		२११–२२१
११. देवपूजा	×	"		२२२–२६२
१२. जैनशतक	भूधरदास	"		२६२–२८३
१३ भक्तामरभाषा (पद्य)	×	"		२८४–३००

विशेष—श्री टेकमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५७२६. गुटका सं० २। पत्र सं० २३३। आ० ६×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१–१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०–१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१–१६२
४. पंचलब्धिविचार	×	"	१६३–१६४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१६४–१६६
६. दानकथा	"	"	१६७–२१५
७. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५–२१७
८. हंसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७–२१३
६ चिद्रूपभास	×	"	२२०–२१७
१० आदिनाथकल्याणककथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८–२३३

५७३०. गुटका सं० ३। पत्र सं० ६८। आ० ५½×४ इ०। ले० काल सं० १६२१ पूर्ण। वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१–३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित मू० क० सकलकीर्ति		हिन्दी	३६–६०
	भाषाकार–सुरेन्द्रकीर्ति र० काल १७४१		
३. पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१–६८

५७३१. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७०। आ० ७½×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७४३

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५–२५
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६–३२
३. जिनस्तवन	दौलतराम	"	३२–३३
४. छहढाला	"	"	३४–५३
५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	६०–६७
६. रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८–७०

५७३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४४ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६-३६ । आ० ६½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २-३३ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४८ ।

५७३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७-४८ । आ० ६½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है ।

५७३६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३२ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल० सं० १८०१ फागुण । पूर्ण । वे० सं० १४५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४० । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० ।

५७३८. गुटका स० ११ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ ।

५७३६ गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३४-८६ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

५७४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४८ । आ० ८×६ इ० । भाषा- हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १५२ ।

ङ भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

५७४१. गुटका सं० १ । पत्र सं० १०७ । आ० ८½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । म्रा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—चि० रामसुखजी डूंगरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मंढा नगर में प्रतिलिपि की थी । पूजाओं का संग्रह है ।

५७४३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । म्रा० ६½×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । म्रा० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७४५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । म्रा० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७४६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । म्रा० ६×४½ इ० । ले० काल सं० १६६.... माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२. सबोधपंचासिका	×	"
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । म्रा० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं ।

५७४८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । म्रा० ४½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७४६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ७८ । म्रा० ७½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

५७५०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ७½×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २० । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियो की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत, बधावा एव विनतियों का संग्रह है ।

५७५३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२. जैनशतक	भूधरदास	,,

५७५४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ से १३४ । आ० ६×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ७½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गङ्ग, विहारी आदि कवियो के पद्यों का संग्रह है ।

५७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें है ।

५७५९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७३ । आ० ६×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२. जम्बूस्वामी चौपई	ब्र० रायमल्ल	,,	पूर्ण
३. धर्मपरीक्षाभाषा	×	,,	अपूर्ण
४. समाधिमरणभाषा	×	,,	,,

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५१ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१. बसंतराजशकुनावली	×	संस्कृत हिन्दी	र० काल सं० १८२५ सावन सुदी ५ ।
२. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	×

५७६१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८–७४ । आ० ८×५½ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी ९ । अपूर्ण ।

१. ढोलामारुणी की वार्ता	×	हिन्दी
२. शनिश्चरकथा	×	"
३. चन्दकुंवर की वार्ता	×	"

५७६२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५½ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीर्ण

१. यशोधरकथा	खुशालचन्द काला	हिन्दी	र० काल १७७५
२. पद व स्तुति	×	"	"

विशेष—खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रनाम	×	संस्कृत
२. द्रव्यसंग्रह	×	प्राकृत

५७६७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १३८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजासंग्रह	×	संस्कृत

२. प्रद्युम्नरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
३. सुदर्शनरास	"	"
४. श्रीपालरास	"	"
५. आदित्यवारकथा	"	"

५७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. नाममाला	धनंजय	संस्कृत
२. अकलंकाष्टक	अकलंकदेव	"
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भट्टारक महीचन्द	"
४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"
५. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी

५७६९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २५० । आ० ७×४½ इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा ६ । पूर्ण ।

१. नित्यनियमपूजासंग्रह	×	हिन्दी	
२. चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३. कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	"	
४. पंचपरमेष्ठिपूजा	×	"	र० काल सं० १८६२ ले० का० सं० १८७१ स्यौजीराम भावसां ने प्रतिलिपि की थी ।
५. पंचकल्याणकपूजा	×	हिन्दी	
६. द्रव्यसंग्रह भाषा	द्यानतराय	"	

५७७०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १०० । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजापाठसंग्रह	×	संस्कृत
२ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी
३. लघुचाणक्यराजनीति	चाणक्य	"
४. वृद्ध " "	"	"

५. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत

५७७१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६०–११० । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५७७२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५½×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. ककाबत्तीसी	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४. शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४¾ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पाशाकेवली (अबजद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशबत्तीसी	हरिदास	"
३. स्यामबत्तीसी	×	"
४. पाशाकेवली	×	"

५७७४. गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बच्चूलाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"
३. पद–संग्रह	"	"

५७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २१० । आ० ५३/४×३३/४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ११८ । आ० ८३/४×६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण ।

विशेष—नानू गोधा ने गाजी के थाना में प्रतिलिपि की थी ।

१. गुलालपच्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चंद्रहंसकथा	हर्षकवि	„	र का सं. १७०८ ले. का. सं. १८९१
३. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	„	
४. आत्मसंबोधन	द्यानतराय	„	
५. पूजासंग्रह	×	„	
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८९१
७. आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	ले० का० सं० १८९१

५७८०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८२ । आ० ५३/४×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नखशिखवर्णन	×	हिन्दी
२. आयुर्वेदिकनुसखे	×	„

५७८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २०० । आ० ७१/२×४३/४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष संबन्धी साहित्य है ।

५७८२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । आ० ८×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है ।

५७८३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८० । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा व पद । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदों का संग्रह है ।

५७८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १९५६ फागुन बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । ग्रा० ८×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । ग्रा० ४×३ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । ग्रा० ६×४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदी ७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	"
३. सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य ले० काल सं० १७३१	"

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । ग्रा० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. बारहखडी	सूरत	हिन्दी
२. कक्कावत्तीसी	×	"
३. बारहखडी	रामचन्द्र	"
४. पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । ग्रा० ८३×६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । ग्रा० १०३×७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

३. एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४. सबोधपञ्चासिकाभाषा	द्यानतराय	"
५. निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत
६. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७ सिद्धपूजा	आशाधर	संस्कृत
८. लघुसामायिक भाषा	महाचन्द्र	"
९. सरस्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	"

५७६१ गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी १० अपूर्ण ।

विशेष—चिमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१. विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२. रथयात्रावर्णन	×	"
३. सांवलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथयात्रा सं० १९२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ आ० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७० । आ० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४४ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमल्ल) एवं अन्य सामान्य पाठ है ।

५७६५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । आ० ९×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोहरलाल) कृत है ।

५७६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर वख्तराम के पठनार्थ पं० आयाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	"

५७९७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७९८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७९९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओं का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ६×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एवं हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है । पुट्ठों के दोनों ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४६ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६० । आ० ३½×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७. गुटका सं० १। पत्र सं० १६२। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७५२ पौष। पूर्ण। वे० सं० ७४७।

विशेष—प्रारम्भ में आयुर्वेद के नुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५८०८. गुटका सं० २। संग्रहकर्त्ता पं० फतेहचन्द नागौर। पत्र सं० २४८। आ० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४८।

विशेष—ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

१. नित्यनियम के दोहे	×	हिन्दी	ले० काल सं० १८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	,, संस्कृत	ले० काल सं० १८५६
३. सुभषीत	×	हिन्दी	१०८ शिक्षायें हैं।
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	,,	
५. चैत्यवंदना	×	संस्कृत	
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी	
७. आदित्यवार की कथा	×	,,	
८. नवकार मंत्र चर्चा	×	,,	
९. कर्म प्रकृति का ब्यौरा	×	,,	
१०. लघुसामायिक	×	,,	
११. पाशाकेवली	×	,,	ले० काल० सं १८६६
१२. जैन बद्रीदेश की पत्री	×	,,	,,

५८०९. गुटका सं० ३। पत्र सं० ५७। आ० ६×४½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४९।

५८१०. गुटका सं० ४। पत्र सं० २०६। आ० ५×५¾ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पद भजन। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५०।

५८११. गुटका सं ५। पत्र सं १२५। आ० ६¾×५½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५१।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष–प्रारम्भ में आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३. गुटका सं० ७ । ग्रा० ६×६$\frac{3}{4}$ इ० भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ ।

५८१४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । ग्रा० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ७२ । ग्रा० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र सं ३५७ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

५८१७. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२८ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{4}$ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १४६–७१२ । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५८ ।

विशेष–निम्नपाठों का संग्रह है—

१. दर्शनपच्चीसी	×	हिन्दी
२. पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	"
४. पंचमेरुजयमाल	×	"
५. साधुवंदना	बनारसीदास	"
६. अखडी	भूधरदास	"
७. गुणमञ्जरी	×	"
८. लघुमंगल	रूपचन्द	"
६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

१०. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	"	र० सं० १७४५
११. बाईस परिषह	भूधरदास	"	
१२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"	र० सं० १७३६
१३. बारह भावना	"	"	
१४. एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	"	
१५. मंगल	विनोदीलाल	"	र० सं० १७४४
१६. पञ्चमंगल	रूपचन्द	"	
१७. भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	"	
१८. स्वर्गसुख वर्णन	×	"	
१९. कुदेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"	ले० सं० १८६१
२१. दशलक्षणपूजा	×	"	
२२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	
२५. देवागमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२६. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७. चौबीसठाणा	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१९. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ७५९ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चाणक्य राजनीति भी है ।

५८२०. गुटका सं० १४ । पत्र सं० × । आ० १०×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६० ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ३-१८४ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६१ ।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७–२३० । आ० ८½×७½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारसराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण	१–८१
२. बनारसीविलास	"	"		८२–१०३
४. तीर्थङ्करों के ६२ स्थान	×	"		१६४–२२०
४. खंडेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र ×		"		२२५–२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५–३१५ । आ० ६¾×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ४७ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा– हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३¾ इ० । भाषा– × । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय–पद संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७० । आ० ५×५ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं । मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

१. नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हिन्दी	६५ पत्र है ।
२ नेमीश्वर की बेलि	ठक्कुरसी	"	८८–६५
३. पंचेन्द्रियबेलि	"	"	६६–१०१
४. चौबीसतीर्थंकररास	×	"	१०१–१०३
५. विवेकजकडी	जिनदास	"	१२६–१३३
६. मेघकुमारगीत	पूनो	"	१४८–१५१
७. टंडाणागीत	कविबूचा	"	१५१–१५१
८. बारहअनुप्रेक्षा	अवधू	"	१५३–१६०
		ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी १२	
९. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०–१६३
१०. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हिन्दी	१६३–१६४

५८३० गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३२ ।

१. नेमिनाथमंगल	लालचन्द	हिन्दी र० काल १७४४	१–११
२. राजुलपच्चीसी	×	"	१२–२२

५८३१. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ४–५४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ ।

१. प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हिन्दी	४–२७
२. आदिनाथविनती	कनककीर्ति	"	३२
३. बीस तीर्थंकरों की जयमाल	हर्षकीर्ति	"	३२–२६

४. चन्द्रगुप्त के सोलहस्वप्न	×	हिन्दी		५२-५४

इनके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७४। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष-आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३. गुटका सं० ५। पत्र सं० १०-७५। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

१. आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	अपूर्ण	१०-१२
२. सप्तव्यसनकवित्त	×	"		
३. पार्श्वनाथस्तुति	बनारसीदास	"		
४. अठारहनाते का चौढाला	लोहट	"		

५८३४. गुटका सं० ६। पत्र सं० २-४२। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका सं० ७। पत्र सं० १२-६५। आ० १०½×५½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३५।

१. चाणक्यनीति	चाणक्य	संस्कृत	अपूर्ण	१३
२. साखी	कबीर	हिन्दी		१३-१६
३. ऋद्धिमन्त्र	×	संस्कृत		१६-२१
४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं व्रतों का चित्र सहित वर्णन		हिन्दी		६५

५८३६. गुटका सं० ८। पत्र सं० २-२६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७।

१. बलभद्रगीत	×	हिन्दी	अपूर्ण	२-६
२. जोगीरासा	पांडे जिनदास	"		७-११
३. कक्कावत्तीसी	×	"		११-१४
४. "	मनराम	"		१४-१८
५. पद- साधी छोडो कुमति अकेली	विनोदीलाल	"		१८
६. " रे जीव जगत सुपनों जान	छीहल	"		२०

७. ,, भरत भूप घरही में बरागी	कनककीर्त्ति	,,	२०–२१
८. चुहरी– हो सुम जीव अरज हमारी या	सभाचन्द	,,	२१–२२
९. परमारथ चुहडी	×	,,	२२–२३
१०. पद– भवि जीववदि से चन्द्रस्वामी	रूपचन्द	,,	२७
११. ,, जीव सिव देशक ले पधारो	सुन्दर	,,	२८
१२. ,, जीव मेरे जिणवर नाम भजो	×	,,	२९
१३. ,, योगी या तु आवणे इण देश	×	,,	२९
१४. ,, अरहंत गुण गायो भावौ मन भावौ	अजयराज	,,	२९–३१
१५. ,, गिर देखत दालिद्र भाज्या	×	,,	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३२–३५
१७. पद– घट पटादि नैननि गोचर जो नाटिक पुद्गल कैरो	मनराम	हिन्दी	३६
१८. ,, जिय तैं नरभव योंही खोयो	मनराम	,,	३२
१९. ,, अंखियां आज पवित्र भई	,,		
२०. ,, बनो बन्यो है आजि हेली नेमीसुर जिन देखीयो	जगतराम		४०
२१. ,, नमो नमो जै श्री अरिहंत	,,	,,	४१
२२. ,, माधुरी जिनबानी सुन हे माधुरी	,,	,,	४२–४४
२३. सिव देवी माता को आठवों	मुनि शुभचन्द्र	,,	४४–४६
२४. पद–	,,	,,	४६–४८
२५. ,,	,,	,,	४८–४९
२६. ,, हलदी चहोडी तैल चहोड्यो खपन कुमारि का	,,	,,	४९–५१
२७. ,, ले जदि साहणि ल्यायौ नोली घोडीया		,,	५१–५३
२८. अन्य पद		..	५३–५९

५८३७. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ६–१२१ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९८ ।

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४ । म्रा० ८३/४×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । वे० सं० २९९ ।

१. जिनपच्चीसी	नवल	हिन्दी	१–२
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	„	२–४

५८३९. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १०–६० । म्रा० ५३/४×४३/४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । वे० सं० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८४०. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ११५ । म्रा० ६३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । वे० सं० ३०१ ।

५८४१. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३० । म्रा० ६३/४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०२ ।

५८४२. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६–१७ । म्रा० ६३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० सं० × । अपूर्ण । वे० सं० ३०३ ।

५८४३. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०१ । म्रा० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७७ । म्रा० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १९०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इखनाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२६ । म्रा० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६

विशेष—रामचन्द (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३–२६ । म्रा० ४×२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२. बुधजनी का रासो	हिन्दी	१०–२१
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	„	२१–६६

५८४७. गुटका सं० १८। पत्र सं० १६०। आ० ८३×६ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं ३०८

विशेष—पत्र सं० १ से ३८ तक सामान्य पाठों का संग्रह है।

१. सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३९–८०
२. बिहारीसतसई टीका सहित	×	"	अपूर्ण	८१–८५
			७४ पद्यों की ही टीका है।	
३. बखत विलास	×	"		९६–१०३
४. बृहत्घंटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	"		१०४–१६०

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं हैं आगे के पत्र भी नहीं हैं।

इति श्री कछवाह कुलभवननरुकासी राउराजा बख्तावरसिंह आनन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते बखत बिलासे विभाव वर्णनो नाम तृतीय विलासः।

पत्र ८–५६ नायक नायिका वर्णन।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी, राउराजा बख्तावर सिंह आनन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते बखतविलासनायकवर्णनं नामाष्टको विलास:।

५८४८. गुटका सं० १९। पत्र सं० ५४। आ० ८×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०९।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है।

५८४९. गुटका सं० २०। पत्र सं० २१। आ० ९×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१०।

१. ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१–१०
२. अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा	×	"	१६
३. प्रतिष्ठानामावलि	×	"	२१

५८५०. गुटका स० २० (क)। पत्र सं० १०२। आ० ९×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३११।

५८५१. गुटका स० २१। पत्र सं० २८। आ० ८३×६३ इ०। ले० काल सं० १९३७ श्रावण बुदी ६। पूर्ण। वे० स० ३१३।

विशेष—मण्डलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है।

५८५२. गुटका सं० २२। पत्र सं० १६। आ० ११×३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१४।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	×	हिन्दी	६
२. सीताजी का बारहमासा	×	"	६-१२
३. मुनिराज का बारहमासा	×	"	१३-१६

५८५३. गुटका सं० २३। पत्र सं० २३। आ० ८३×६ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१५।

विशेष—गुटके में अष्टाह्निकाव्रतकथा दी हुई है।

५८५४. गुटका सं० २४। पत्र स० १५। आ० ८३×६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल सं० १९८३ पौष बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३१६।

विशेष—गुटके में ऋषिमंडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थंकर पूजादि पाठों का संग्रह है।

५८५५. गुटका सं० २५। पत्र सं० ३५। आ० ८×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१७।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

५८५६. गुटका सं० २६। पत्र सं० ५६। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल सं० १६२१ माघ बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ३१८।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

५८५७. गुटका सं० २७। पत्र सं० ५३। आ० ६×५ इ०। ले० काल सं० १९५४। पूर्ण। वे० स० ३१९।

विशेष— गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं।

१. धर्मचाह	×	हिन्दी	२
२. वंदनाजखडी	बिहारीदास	"	३-४
३. सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका सं० २८। पत्र सं० १६। आ० ८×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२०।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है।

५८५९. गुटका सं० २९। पत्र सं० १७९। आ० ९×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२१।

विशेष—बिहारीदास कृत सतसई है। दोहा सं० ७०७ है। हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८५। टीकाकार कवि कृष्णदास हैं। आदि अन्तभाग निम्न हैः—

प्रारम्भः— अथ बिहारी सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यते:—

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोइ।
जातन की झांई परै, स्याम हरित दुति होइ॥

टीका—यह मंगलाचरन है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्त्ता कवि करतु है। तहां राधा और हटे यांतै जा तन की झांई परै स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई—

कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि।
कृष्ण कहै सरसी रुहे नैंननि कौ नामु यहा सुद मंगल कारी॥
जातन की झलकै झलकै हरित द्युति स्याम को होत निहारी।
श्री वृषभान कुंमारि कृपा कैं सुराधा हरी भव बाधा हमारी॥ १॥

अन्तिम पाठ— माथुर विप्र ककोर कुल लह्यौ कृष्ण कवि नाउ।
सेवकु हौं सब कविनु कौ बसतु मधुपुरी गांउ॥ २४॥
राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरयौ कृपा के ढार।
भांति भांति विपदा हरी दीनी दरवि अपार॥ २५॥
एक दिना कवि सौ नृपति कही कही को जात।
दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात॥ २६॥
पहले हूं मेरे यह हिय मैं हुंतौ विचारु।
करौ नाइका भेद कौ ग्रंथ बुद्धि अनुसार॥ २७॥
जे कीनै पूरव कवितु सरस ग्रंथ सुखदाइ।
तिनहिं छांडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ॥ २८॥
जानिय हैं अपने हियें कियो न ग्रंथ प्रकास।
नृप की आइस पाइकै हिय में भये हुलास॥ २९॥
करे सात सै दोहरा सु कवि बिहारीदास।
सब कोऊ तिनको पढे गुनै सुनै सविलास॥ ३०॥
बडौ भरोसों जानि मै गह्यौ आसरो आइ।
यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित लगाइ॥ ३१॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।
करै सातसौ कवित में सीखे सकल प्रवीन ।। ३२ ।।
मै अंत ही दीछ्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ ।
भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि बनाइ ।। ३३ ।।
सत्रह सतसै आगरे असी बरस रविवार ।
कातिक बदि चोथि भये कवित सकल रससार ।। ३४ ।।

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतसै ग्रंथ लिख्यौ श्री राजा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कौं । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे अंजनगौई के प्रगनै पछोर के । मिती माह सुदी ७ बुद्धवार संवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

५८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्वार्थसूत्रभाषा	कनककीर्त्ति	हिन्दी ग०		अपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई	जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर	"	प० र० काल १६७८	"

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४ । अजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

स्फुट पाठ	×	"

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्द) के हैं ।

५८६३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय–पूजा । ले० काल सं० १८६६ श्रावण सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है । हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १७ । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ ।

विशेष—पावागिरि सोनागिर पूजा है ।

५८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ७ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा पाठ एवं ज्योतिषपाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. बृहत्षोडशकारण पूजा	×	संस्कृत	
२. चाणक्यनीति शास्त्र	चाणक्य	"	
३ शालिहोत्र	×	संस्कृत	अपूर्ण

५८६७ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ३० । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२९ ।

५८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ४४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८० । आ० ४×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये है पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है ।

५८७१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ७१ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

विशेष—विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरो की पूजा एवं अढाई द्वीप पूजा का संग्रह है । दोनों ही अपूर्ण हैं । जौहरी लाला ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । आ० ८½×७ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८७४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है ।

५८७५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । आ० ८½×३½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का संग्रह है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्श्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं ।

५८७७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय–कथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१–६
		र० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ६	
२ आदित्यव्रतकथा	”	हिन्दी	६१–१९
३. समवशरणस्थान	”	”	१९–२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	”	”	२६–३०
५ दशलक्षणव्रतकथा	”	”	३०–३४
६. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	”	”	३४–४०
७ रक्षाविधानकथा	”	संस्कृत	४१–४५
८. उमेश्वरस्तोत्र	”	”	४६–६६

५८७८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १६६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है ।

५८७९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ४१ । आ० ५×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१–१३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	संस्कृत	१४–२०
३. कक्काबत्तीसी	नन्दराम	,, ले० काल १८८८	३४–४२

५८८०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० २५४ । आ० ५×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १६३ । आ० ७½×४½ इ० । भाषा—हिन्द संस्कृत । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं ।

१. नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	×	प्राकृत	१–२
२. जीवविचार	आ० नेमिचन्द्र	,,	३–८
३. नवतत्त्वप्रकरण	×	,,	९–१४
४. चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५–६८
५. तेईस बोल विवरण	×	,,	६९–९५

विशेष— दाता की कसौटी दुरभिक्ष परे जान जाइ ।
सूर की कसौटी दोई अनी जुरे रन मे ।।
मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय ।
हीरा की कसौटी है जौहरी के घन मे ।।
कुल को कसौटी आदर सनमान जानि ।
सोने की कसौटी सराफन के जतन में ।।
कहै जिननाम जैसी वस्त तैसी कीमति सौं ।
साधु की कसौटी है दुष्टन के बीच में ।।

६. विनती	समयसुन्दर	हिन्दी	१०३–१०३

२. द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	"	११७-१४१
	र० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७९ फाल्गुन सुदी ९ ।		
३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	" ले० काल १८८१	१४६-१४७
५. कृपणपचीसी	विनोदीलाल	" " " १८८२	१४७-१५४
६. तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"	१५५-१६३

५८८२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । आ० ७½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है ।

५८८५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । आ० ६½×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई है ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२६ । आ० ६½×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सन्निपातनिदान नामक ग्रंथ है ।

५८६०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । आ० ४×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २२३ । आ० ४×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०८ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है:—

५८६३ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६३ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२४-६७
		ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ ।	
२. शालिभद्रसज्झाय	×	हिन्दी	६८–९९
३. जलालगाहाणी की वार्ता	×	"	१०१–१४७
		ले० काल १८५६ माह बुदी ३	

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलमूरिमध्ये ।

४. तंत्रसार	×	"	पद्य सं० ४८	१४८–१५२
५. चन्दकुंवर की वार्ता	×	"		१५२–१६४
६. बब्बरनिसांणी	जिनहर्ष	"		१६५–१६९
७. सुदयवछसालिगा री वार्ता	×	"	अपूर्ण	१७०–२६३

५८६४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ९७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले० काल × । वे० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमङ्गल बिनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८९५. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ६३। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५७।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है।

५८९६. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ४५। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५८।

५८९७. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ४६। आ० ५½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५९।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का संग्रह है।

५८९८. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ६४। आ० ४×३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र संग्रह ले० काल ×। वे० सं० ३६०।

५८९९. गुटका सं० ६९। पत्र सं० १५१। आ० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी		१-१४
२. महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	"		१४-१६
३. धर्मपरीक्षा भाषा	विशालकीर्ति	"	ले० काल १८६४	३०-१५१

विशेष—नागपुर में पं० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी।

५९००. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ५६। आ० ५½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८०२ पूर्ण। वे० सं० ३६२।

१. महादण्डक	×	हिन्दी	३-५३

ले० काल सं० १८०२ पौष बुदी १३।

विशेष—उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी। शिवपुरी में प्रतिलिपि की गई थी।

२. बोल	×	"	५४-५६

५९०१. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १२३। आ० ६½×४ इ० भाषा संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्रसंग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६३।

५६०२. गुटका स० ७२ । पत्र सं० १५७ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०३. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ९६ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१–४४
२. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	४५–९६

५६०४. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ५० । आ० ५३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३६६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १८३३ मे भारत के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० ६० । आ० ५१×५१ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १८–१३७ । आ० ७×३१ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० २७ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३६९ ।

१. ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य हैं	१–११
२. वज्रनाभिचक्रवर्ती की भावना	भूधरदास	”		१९–२१
३. सम्मेदगिरिपूजा	×	”	अपूर्ण	२२–२७

५६०८. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १२० । आ० ६×३१ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३७१ ।

विशेष—नाममाला तथा लब्धिसार आदि में से पाठ है ।

५६०९. गुटका सं० ७९। पत्र सं० ३०। आ० ६¾×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८१...। पूर्ण। वे० सं० ३७१।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है।

५६१०. गुटका सं० ८०। पत्र सं० ५४-१३९। आ० ६¾×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७२।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७९
२. मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३. गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५
	एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं।			
५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६. पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	९ "	१०६-१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८. सामायिक पाठ	अमितिगति	"		११०-११३
९. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११९
१०. आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११. गुटका सं० ८१। पत्र सं० २-५६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है।

५६१२. गुटका सं० ८२। पत्र सं० ९¾×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है। अन्त में १०९ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५९ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है।

५६१३. गुटका सं० ८३। पत्र सं० ८६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। जीर्ण। पूर्ण। वे० सं० ३७५।

१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं० ७६ है	१–१६
		महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।		
२. कालीनागदमन कथा	×	"		१६–२६
३. कृष्णप्रेमाष्टक	×	"		२६–२८

५६१४. गुटका सं० ८४। पत्र सं० १५२-२४१। आ० ६¾×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५. गुटका सं० ८५। पत्र सं० ३०२। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७७।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१. चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य है	२०–२२
२. बेलि	छीहल	"		२२–२५
३. टंडाणागीत	बूचा	"		२५–२८
४. चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	"		२८–३०
५. जिनलाडू	ब्रह्मरायमल्ल	"		३०–३१
६. नेमीश्वरचोमासा	सिंहनन्दि	"		३२–३३
७ पंथीगीत	छीहल	"		४१–४२
८ नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	"		४३–४७
६. गीत	कवि पल्ह	"		४७–४८
१० सीमंधरस्तवन	ठक्कुरसी	"		४६–५०
११. आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	"		४६–५०
१२. स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	"		५०–५१
१३. पुरन्दर चौपई	ब्र० मालदेव	"		५२–८७
		ले० काल सं० १६०७ फागुण बुदा ६।		
१४ मेघकुमार गीत	पूनो	"		१२–१५
१५. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"		२६–२६

१६. बलिभद्र गीत	अभयचन्द	"	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमल्ल	"	४०-८५
१८. निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	"	"	
		लें० काल १६४३ आसोज १३ ।	
१९. हनुमन्तराम	"	"	अपूर्ण

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८८२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रूपचन्द, बनारसीदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ है ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२. बारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत ४७ गाथायें हैं ।	२१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२०. गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नवलराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५९२२. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८४ ।

विशेष—सम्मेदगिरि पूजा है ।

५९२३. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० १२३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१-१०
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	११-१५
३. लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	"	३३-३४
४. चौरासी जाति की जयमाल	×	हिन्दी	३९-४०
५. सोलहकारणकथा	ब्रह्मज्ञानसागर	हिन्दी	७१-७४
६. रत्नत्रयकथा	"	"	७४-७६
७. आदित्यवारकथा	भाऊकवि	"	७६-८६
८. दोहाशतक	रूपचन्द	"	९४-९६
९. क्षेपनक्रिया	ब्रह्मगुलाल	"	९७-९९
१०. अष्टाह्निका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	१००-१०४
११. अन्यपाठ	×	"	१०५-१२३

५९२४. गुटका सं० ९४ । पत्र सं० ७-७१ । आ० ५×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८६ ।

विशेष-देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है ।

५९२५. गुटका सं० ९५ । पत्र सं० ३-९६ । आ० ९×५½ इ० । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८७ ।

१. भविष्यदत्तकथा	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	अपूर्ण	३-७०
		ले० काल सं० १७६० कार्त्तिक सुदी १२		
२. हनुमतकथा	"	"		७१-९६

५९२६. गुटका सं० ९६ । पत्र सं० ८९ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयंत्रसहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१–४३
२. पद्मावतीकवच	×	"	४३–५२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२–६३
४. पद्मावतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन विधि	×	"	६३–८६
५. पद्मावतीपटल	×	"	८६–८७
६. पद्मावतीदंडक	×	"	८७–८९

५६२७. गुटका सं० ९७। पत्र सं० ९-११३ आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० ३८६।

१. स्फुटवार्त्ता	×	हिन्दी	अपूर्ण	९–२२
२. हरिचन्दशतक	×	"		२३–६६
३. श्रीध्रुवचरित	×	"		६७–९३
४. मल्हारचरित	×	"	अपूर्ण	९३–११३

५६२८. गुटका सं० ९८। पत्र सं० ५३। आ० ५×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३९०।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६२९. गुटका सं० ९९। पत्र सं० ९-१२६। आ० ८½×५ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३९१।

५६३०. गुटका सं० १००। पत्र सं० ८८। आ० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३९२।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी	१४–३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"	३५
३. संकट चौपई कथा	×	"	३८–४३
४. कक्का बत्तीसी	×	"	४५–४७
५. निरंजन शतक	×	"	५१–८४

विशेष—लिपि विकृत है पढने में नहीं आती।

५९३१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २३। ग्रा० ६½×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० ३६३।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है। ४२ से १५० पद्य तक है।

५९३२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० ७८–१०१। ग्रा० ८×७ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६४।

१. चतुर्दशी कथा   डालूराम   हिन्दी र० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४। अपूर्ण।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग—

माता ऐंसो हठ मति करौ, संजम विना जीव न निसतरै।
कांकी माता काको बाप, ग्रातमराम अकेलो ग्राप॥ १७६॥

दोहा—
ग्राप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद।
ग्रातम ऐक विचारिये, भरमन कहु न छेद॥ १७७॥

मंगलाचार कंवर को कीयो, दिख्या लेण कवर जब गयो।
सुवामी ग्रागे जोड्या हाथ, दीख्य दोह मुनीमुर नाथ॥ १७८॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सारु कथा कही, राजघाटी मुलतान।
करम कटक मैं देहरौं बैठो पचै सु जांण॥ २२८॥

सतरासै पचावनै प्रथम जेठ सुदि जानि।
सोमवार दसमी मानी पूरण कथा वखानि॥ २२६॥

खंडेलवाल बौहरा गोत, ग्रांबावती मैं वास।
डालु कहै मति मौ हंसौ, हूं सबन कौ दास॥ २३०॥

महाराजा बीसनसिंहजी ग्राया, साह्या ग्राल की लार।
जो या कथा पढै सुणै, सो पुरिष मैं सार॥ १३१॥

चौदश की कथा संपूर्ण। मिती प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल   ×   हिन्दी

३. तारातंबोलकी कथा   ×   ” ले० काल सं० १७६३ ६३–६४ ६४–६६

४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	"		६७-६६
५. ज्ञानपच्चीसी	"	"		६८-१००
६. पद	×	"	अपूर्ण	१००-१०१

५६३३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५. गुटका सं० १ । पत्र सं० १४० । आ० ७३×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी		१-१६
		ले० काल सं० १८५२ जेठ बुदी ५ ।		
२. कवित्तसंग्रह	×	"		२०-४४
३. शनिश्चर की कथा	×	"	गद्य	४५-६७
४. कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	"		६८-६४
५. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	"		६५-६६
		ले० काल १८५६ पौष बुदी ५ ।		

विशेष—रणथम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४३ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ३-१५३ । आ० ६×५३ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४

(जिणवर ध्याइयवाबै, मनि चिंत्या फलु पाय)

२. गीत—(जिणवर ही स्वामी चरण नमाम, सरसति स्वामिणि वीनऊ हो)

१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	अपभ्रंश	७–२४
२. लघुकल्याणपाठ	×	हिन्दी	२४–२६
३. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	४६–६०
४. आराधनासार	"	"	८३–१००
५. द्वादशानुप्रेक्षा —	लक्ष्मीसेन	"	१००–१११
६. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११–११२
७. द्रव्यसंग्रह	आ० नेमिचन्द	प्राकृत	१४६–१५१

५६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १८६ । आ० ६×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४२ आषाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी		१–१०२
२. एकसोगुनहत्तरजीव वर्णन	×	"	१८४२	१०४
३. हनुमन्त चौपाई	ब्र० रायमल	"	१८२२ आषाढ सुदी ३	"

५६३६. गुटका स० ५ । पत्र सं० १४० । आ० ७३/४×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८४१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २२० । आ० ६×७३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं० देवीचन्दकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है । जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा में रहि हों । असे कहि गंगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छुटो काल के गाल में अब कहौ काल न आय ।

ओ नर अरहट मालतें भयो जनम तन पाय ।।

वार्त्ता—सांप की दाढ मैं तै छूटौ अर कही नयो जनम पायो । कूवे में तै बाहरि आय यो कही वहां सांप कितनेक वेर तो वाट देखी । न आयो जब आतुर भयो । तब यो कही में कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंडक सब खायो वै अब लग गंगादत्त को न खायो तब लग रख कछु खायो नहीं ।

५६४२. गुटका सं० ८। पत्र सं० १६६-४३०। आ० ९×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—बुलाकीदास कृत पाडवपुराण भाषा है।

५६४३ गुटका स० ९। पत्र स० १०१। आ० ७३/४×६१/२ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एव सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६४४ गुटका सं० १०। पत्र स० ११८। आ० ८१/२×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-संग्रह। ले० काल स० १८६० माह बुदी ५। पूर्ण।

१ सुदरविलास	सुन्दरदास	हिन्दी	१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खडेलवाल ने प्रतिलीपि की थी।

२ बारहखडी	दत्तलाल	"

विशेष—९ पद्य है।

५६४५. गुटका स० ११। पत्र स० ४२। आ० ८१/२×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल स० १९०८ चैत बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—बृंदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं। दसकत चीमनलाल कालख हाला का।

५६४६. गुटका स० १२। पत्र स० २०। आ० ८×६१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १९६० आसोज बुदी ९। पूर्ण।

विशेष—पचमेरु तथा रत्नत्रय एव पार्श्वनाथस्तुति है।

५६४७ गुटका सं० १३। पत्र सं० १५५। आ० ८×६१/२ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। अपूर्ण।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चोढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाण्ड्या जयपुर]

५६४८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २० । आ० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वे० सं० २७ ।

विशेष—आलोचनापाठ सामायिकपाठ छहढाला (दौलतराम) कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास) अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

५६४९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९ ।

विशेष—वीररस के कवित्तो का संग्रह है ।

५६५०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ९×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वे० सं० ३० ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६५१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×५' इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
२ लहुरी नमोकारका	विश्वभूषण	"	१९-२१
३ पद- आतम रूप सुहावना	द्यानतराय	"	२२
४ विनती	×	"	२३-२४
	विशेष—हषचन्द ने आगरे म स्वपठनार्थ लिखी था ।		
५ सुखघडी	हर्षकीर्त्ति	"	२४-२५
६ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	२५-४७
७ अध्यात्मदोहा	रूपचन्द	"	४७-५५
८ साधुवदना	बनारसीदास	"	५५-५८
९ मोक्षपैडी	"	"	५८-६१
१० कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६-९१

११. विनती एवं पदसंग्रह	×	हिन्दी	९१–१०१

५६५२. गुटका सं० ५। पत्र सं० ६–२९। आ० ४×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का झगड़ा आदि पाठों का संग्रह है।

५६५३. गुटका सं० ६। पत्र स० १६। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन।

५६५४. गुटका सं० ७। पत्र सं० ७। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १६४३ वैशाख सुदी १। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा है।

५६५५. गुटका स० ८। पत्र सं० १८४। आ० ७×५½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१–३५
२. छहढाला (अक्षरबावनी)	"	"	३५–३९
३. धर्मपच्चीसी	"	"	३९–४२
४. तत्त्वसारभाषा	"	"	४२–४९
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४९–१७५
६. जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१–१२

ले० काल सं० १७९८ फागुन सुदी १०

५६५६. गुटका सं० ९। पत्र सं० १३। आ० ६¾×४½ इ०। भाषा–प्राकृत हिन्दी। ले० काल सं० १९१८। पूर्ण। वे० सं० ४४।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६५७. गुटका सं० १०। पत्र सं० १०५। आ० ८×७ इ०। ले० काल ×।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१–१९
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०–२४

३. बारहअक्षरी	×	संस्कृत	२४–२७
४. समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	२७–२९

विशेष—पं० डालूराम ने अपने पढने के लिए लिखा था।

५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	२९–३१
६. योगीरासो	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२–३३
७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	"	५३–६३
८. षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४–१०४
९. षटलेश्या वर्णन	×	संस्कृत	१०४–१०५

५९५८. गुटका सं० ११। पत्र सं० ३५। (खुले हुये शास्त्राकार) आ० ७½×५ इ०। भाषा–हिन्दी ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५९५९. गुटका सं० १२। पत्र सं० ५०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १००।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

५९६०. गुटका सं० १३। पत्र सं० ४०। आ० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०१।

१. चन्दकथा	लक्ष्मण	हिन्दी	१–२१

विशेष—१७ पद्य से २९२ पद्य तक आभानेरी के राजा चन्द की कथा है।

२. फुटकर कवित्त	अगरदास	"	२२–४०

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है।

५९६१. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६९। आ० ७×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०२।

१. चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१–१९
२. नेमिनाथ फागु	पुण्यरत्न	"	२०–२५

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन गुण निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द।

पुण्यरत्न मुनिवर भणइ श्रीसंघ सुप्रधान नेमि जिणन्द ।। ६४ ।।

कुल ६४ पद्य हैं।

।। इति श्री नेमिनाथ फागु समाप्त ।।

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी		२६–५०
४. सुदर्शनरास	„	„		५१–८०
५. श्रीपालरास	„	„		११६
			ले० काल सं० १६५३ जेठ बुदी २	
६. शीलरास	„	„		११३
७. मेघकुमारगीत	पूनो	„		११५
८. पद– चेतन हो परम निधान	जिनदास	„		२३६
९. „ चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित न विचारि।	रूपचन्द	„		२३८
१०. „ चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि प्रछत तुम भरम भुलाने।	„	„		„
११. „ आदि अनादि गवायो जीव विधिवस बहु दुख पायो चेतन।	„	„		
१२. „	दास	„		२४०
१३. „ चेतन तेरो दालो वानो चेतन तेरी जाति।	रूपचन्द	„		
१४. „ जीव मिथ्यात उदै चिर भ्रम आयौ। वा रत्नत्रय परम धरम न भायौ॥	„	„		
१५. „ सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे	दरिगह	„		
१६. „ हा हा भूता मेरा पद मता जिनवर धरम न चेये।	„	„		
१७. „ जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा।	रूपचन्द	„		२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत		२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५	२५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	„	ले० काल १७३५	२५७
२१. चकडी	दयालदास	„		२६२

२२. पद— कायु बोले रे भव दुख बोलणी न भावे ।	हर्षकीर्ति	,,		३३२
२३. रविव्रत कथा	भानुकीर्ति	,,	र० काल १६८७	३३६

(आठ सात सोलह के अंक वर्ण रचै सु कथा विमल)

२४. पद - जो बनीया का जोरा माही श्री जिण कोप न ध्यावै रे ।	शिवसुन्दर	,,		३४१
२५. शीलबत्तीसी	अकूमल	,,		३४८
२६. टंडाणा गीत	बूचराज	,,		३६२
२७. भ्रमर गीत	मनसिंघ	,,	११ पद है	३६५

(बाडी फूली अति भली सुन भ्रमरा रे)

५६६२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २७५ । आ० ५×४३ इ० । ले० काल सं० १७२७ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१६३

र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १७६३

२. मेघकुमार गीत	पुनो	,,	१६३–१६६
३. तेरहकाठिया	बनारसीदास	,,	१८८
४. विवेकजकडी	जिनदास	,,	२०६
५. गुणाक्षरमाला	मनराम	,,	
६. मुनीश्वरों की जयमाल	जिनदास	,,	
७. बावनी	बनारसीदास	,,	२४३
८. नगर स्थापना का स्वरूप	×	,,	२५४
९. पंचमगति की वेलि	हर्षकीर्ति	,,	२६१

५६६३. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१२ । आ० ९×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । वे० सं० १०८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १४२ । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८ ।

१. भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	"	१४२

५९६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५९६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ९८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सोगाणी	हिन्दी	१-४३

प्रारम्भ—आदि मंत्र कूं सुमरिइं, जगतारण जगदीश ।
जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥
दूजा पूजूं सारदा, तीजा गुरु के पाय ।
लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करूं बणाय ॥ २ ॥
गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बांह ।
लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कहूं बणाय ॥ ३ ॥
मेरे श्री गुरुदेव का, आंबावती निवास ।
नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ॥ ४ ॥
लालचन्द पंडित तणे, नाती चेला नेह ।
फतेचद के सिष तिनै, मोकूं हुकम करेह ॥ ५ ॥
कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मतो पहचानि ।
कंवरपाल को नंद ते, स्योजीराम बखाणि ॥ ६ ॥
ठारासै के साल परि, बरष सात चालीस ।
माघ सुकल की पंचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम— लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही जु सार ।
जे मार्साले ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२. वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी प० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४	

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

३. राजनीति कवित्त   देवीदास   „   ×   १२२ पद्य हैं।

५९६७. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इ० । भाषा- हिन्दी । विषय- पद । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है । गुटका अशुद्ध लिखा गया है ।

५९६८. गुटका सं० २० । पत्र सं० २०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय–संग्रह । ले० काल० सं० १७८३ । पूर्ण । वे० सं० ११४ ।

विशेष—आदिनाथ की वीनती, श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरो की जयमाल, वडा कक्का, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

५९६९. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ११५ । ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमन चौपई है ।

५९७०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २६-५३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११ ।

५९७१. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ८१ । आ० ६×५½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५९७२. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २०१ । आ० ६×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) षट्भक्ति पाठ एव पूजाओ का संग्रह है ।

५९७३. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ६-८ । आ० ६×५ इ० । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ ।

५९७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ ।

५९७५. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५२ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की अकडी, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें है ।

५९७६. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १३३ । आ० ६×७ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ । पूर्ण । वे० सं० १५३ ।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

५६७७. गुटका सं० २६। पत्र सं० ११६। प्रा० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है।

५६७८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० २०। प्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं।

५६७९. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४०। प्रा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं० १६२।

विशेष—रविव्रत कथा है।

५६८०. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ४४। प्रा० ४½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं० १७७६।

विशेष—बीच २ मे से पत्र खाली हैं। बुलाखीदास खत्री की बरात जो सं० १६८४ मिती मंगसिर सुदी ३ को आगरे से अहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त पद, गणेशछंद, लहरियाजी की पूजा आदि है।

५६८१. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। प्रा० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६३।

१. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का बारहमासा	"	"
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ— तुम नीकस भवन सुहावे, जब कमरी भई वरागी।

प्रभुजी हमनै भी ले चालो साथ, तुम बिन नही रहै दिन रात।

अन्तिम— भापा दोनु ही मुकती मिलाना, तहां फेर न होय आवागवना।

राजुल अटल सुघडी नीहाइ, तिहां राणी नहीं छै कोई,

सोये राजुल मंगल गावत, मन वंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मंगल संपूर्ण।

५६८२. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १६०। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३३।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा है।

५६८३ गुटका सं० ३५। पत्र सं० ४०। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं।

५६८४. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७७६ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३५।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है।

५६८५. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २१३। ग्रा० ५×७ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदों का संग्रह है।

५६८६. गुटका सं० ३८। पत्र सं० ५६। ग्रा० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६८७. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ५०। ग्रा० ७×४ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४३।

१. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत	१–१४
२. जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	"	१५–१६
३ अजितशान्तिजिनस्तोत्र	×	"	२०–२५
४. श्रीवंतजयस्तोत्र	×	"	२६–३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा आदि पाठ है।

५६८८. गुटका सं० ४०। पत्र सं० २५। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४४

विशेष—सामायिक पाठ है।

५६८६ गुटका सं० ४१। पत्र सं० ५०। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४६।

विशेष-हिन्दी पाठ संग्रह है।

५९६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिनपच्चीसी हैं।

५९६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४८।

५९६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इ० भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५९६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा- हिन्दी। विषय—सुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५९६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१—३४
२. इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४—५२
३. सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३—७१
४. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२—९२
५. बरवा	×	"	९२—१०३
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४—१११
७. द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२—१३३
८ अनित्यपंचाशिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४—१४७
९. जकडी	रूपचन्द	"	१४८—१५४
१०. "	दरिगह	"	१५५—५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७—१६३
१२. पद	"	"	१६४-१६९
१३. आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०—१७७

५९६५. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० २५४।

५९९६. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १०० । श्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७०५ पूर्ण । वे० सं० २५५ ।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५९९७. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ४-११६ । श्रा० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९९८. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १८ । श्रा० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ ।

विशेष—पदों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९९९. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ४७ । श्रा० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६०००. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ९८ । श्रा० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० सं० १७२५ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६० ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं ।

६००१. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २२८ । श्रा० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५२ । पूर्ण । वे० सं० २६१ ।

१. समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१-९१

विशेष—विहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

२ सीताचरित्र	रामचन्द्र (बालक)	हिन्दी	१-१३७
३. पद	कवि संतीदास	"	
४. ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	"	
५. षट्पंचासिका	×	"	

६००२. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५८ । श्रा० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२७ जेठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २६२ ।

१. स्वरोदय	हिन्दी	१-२७

विशेष—उमा महेश संवाद में से है ।

२. पंचाध्यायी	"		२८–५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५। पत्र सं० ७–१२६। आ० ५३×३३ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७२।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द्र	हिन्दी	१४–२०
२. पद	विनोदीलाल	"	
३. पद	जगतराम	"	
(नेमि रंगीलो छबीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)			
४. सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	"	
५. पद– प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन वांछित सीझे काम।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी	देवीदास	"	
(सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)		"	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो	×	"	३१ पद्य हैं।
८. चेतावनी गीत	नाथू	"	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	संस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	"	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	पं० शालि	"	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	
१३. षट्मत चरचा	×	"	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	४९ पद्य हैं।
१५. विनती	"	"	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्झाय	"	"	३७ पद्य हैं।
१७. भूलना	गंगादास	"	१२ पद्य हैं।
१८. ज्ञानपैडी	मनोहरदास	"	
१९. [illegible]	×	"	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र आदि हैं।

६००४. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १२० । आ० ४½×४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २७३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६००५. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० ३–८८ । आ० ६½×४¾ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ चैत बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, शांतिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एवं देवा पूजा आदि है

६००६. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ ।

१. तीसचौबीसी	×	हिन्दी	
२. तीसचौबीसी चौपई	स्याम	,,	र० काल १७४९ चैत सुदी ५ ले० काल सं० १७४९ कातिक बुदी ५

अन्तिम—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम ।
जेसराज सुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥
सतरासै उनचास में, पूरन ग्रन्थ सुभाय ।
चैत्र उजाली पंचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥
एक वार जे सरदहै, अथवा करिसि पाठ ।
नरक नीच गति कै विषै, गाढे जडे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चोइसो जी की चौपई ॥

६००७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ ।

विशेष—तीनचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पंचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की गाथा आदि है।

६००८. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४ । आ० ६×८ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९४३, पूर्ण । वे० सं० २९३ ।

१. समन्तभद्रकथा	जोधराज	हिन्दी	र० काल १७२२ वैशाख सुदी ७

२. श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	×	हिन्दी
३. सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकूं सुख देत।
भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनों के हेत ॥

६००६. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ११-५८। ग्रा० ८३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६१६। अपूर्ण। वे० सं० २६६।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं।

६०१०. गुटका सं० ६२। पत्र सं० १६। ग्रा० ८३/४×६ इ०। ले० काल×। पूर्ण। वे० सं० २६७।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

६०११. गुटका सं० ६३। पत्र सं० १६। ग्रा० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०८।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ३६। ग्रा० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२५।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओं को वंशावली, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलवालों के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (८) आमेर राजाओ का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहों पर कवित्त आदि हैं।

६०१३ गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१४. गुटका सं० ६६। पत्र सं० १३-३२। ग्रा० ७×४ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२७।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१५. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के नुसखों का संग्रह है ।

६०१६. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० २६ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० ।

विशेष—पदों एवं कविताओं का संग्रह है ।

६०१७. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

६०१८. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ४० । आ० ६½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६०१९. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ९८ । आ० ४½×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

६०२०. गुटका सं० ७२ । स्फुट पत्र । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियां, इष्टछत्तीसी एवं जोधराज पच्चीसी का संग्रह है ।

६०२१. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० २८ । आ० ८½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गणाविधान, अकलङ्काष्टक तथा सम्यक्त्वपच्चीसी का संग्रह है ।

६०२२. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—विनतियां, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है । पाठों की संख्या १९ है ।

६०२३. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

विशेष—नरक दुःख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ भवों का वर्णन है ।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखों का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं विनतियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वंशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की बालावबोध टीका है । टीका हिन्दी गद्य मे है ।

६०२७. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चिंतामरिणस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है ।

६०२६. गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

१. सप्तसूत्रभेद × संस्कृत

२. मूढता मनांकुश इत्यादि	×	"
३. गेपनक्रिया	×	"
४. समयसार	प्रा० कुन्दकुन्द	प्राकृत
५. आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६. पोसहरास	ज्ञानभूषण	"
७ धर्मतरुगीत	जिनदास	"
८. चहुगतिचौपई	×	"
९. संसारग्रटवी	×	"
१०. चेतनगीत	जिनदास	"

सं० १६२६ में ग्रंबावती मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०३२. **गुटका सं० ५** । पत्र सं० ७५ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १६८२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

सं० १६८२ में नागौर में बाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है।

६०३३. **गुटका सं० ६** । पत्र सं० २२ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × वे० सं० ६ ।

१. नेमीश्वर का बारहमासा	खेतसिंह	हिन्दी	८
२ आदीश्वर के दशभव	गुणचंद	"	
३. औरहीर	×	"	

६०३४. **गुटका सं० ७** । पत्र सं० १७७ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ, सुभाषित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) है।

६०३५ **गुटका सं० ८** । पत्र सं० १४६ । ग्रा० ६×५½ इ० । भाषा–संस्कृत, ग्रपभ्रंश । ले० काल × । पूर्ण ।

१. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमाल	सोम	ग्रपभ्रंश
२. ऋषिमंडलपूजा	मुनि गुणनंदि	संस्कृत

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २०। आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक सुख वर्णन, चारों गतियों की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक-पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी	ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्त्ति	×	"	
	(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)		
३. पंचगुरु की जयमाल	ब्र० रायमल्ल	"	ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	"	
५. हितोपदेश टीका	×	"	
६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी	
७. अकड़ी	×	"	
८. पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"	

६०३६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ हैं:—

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (सं०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपंक्तिपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनाथस्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी
२. गुणस्थानकगीत	ब्र० श्री वर्द्धन	"

अन्तिम- पणति श्री बर्द्धन यहा एह वाजो भवियण सुख करइ

३. सम्यक्त्व जयमाल, × अपभ्रंश

४. परमार्थगीत रूपचन्द हिन्दी

५. पद- अहो मेरे जीय तू कत भरमायो, तू

चेतन यह जड परम है यामैं कहा लुभायो। मनराम ,,

६. मेघकुमारगीत पूनो ,,

७. मनोरथमाला अचलकीर्त्ति ,,

अचला तिहि तणा गुण गाइस्यों,

८. सहेलीगीत सुन्दर हिन्दी

सहेल्यो हे यो संसार असार मो चित में या उपनी जी सहेल्यो है

ज्यो रांचै सो गवार तन धन जोबन थिर नहीं।

९. पद- मोहन हिन्दी

जा दिन हँस चलै घर छोडि, कोई न साथ लडा है गोडि ।।

जण जण कै मुख ऐसी वाणी, बडो वेग मिलो अन पाणी ।।

अण विडह्यूं उनगै सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर।

चारि जणा जङ्गल ले जाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि।

जबता बूड विडा में वास, यो मन मेरा भया उदास।

काया माया झूठी जानि, मोहन होऊ भजन परमाणि ।।६।।

१०. पद- हर्षकीर्त्ति हिन्दी

नहिं छोडौं हो जिनराज नाम, मोहि और मिथ्यात से क्या बनै काम।

११. ,, मनोहर हिन्दी

सेव तौ जिन साहिब की कीजे नरभव लाहो लीजे

१२. पद- जिणदास हिन्दी

१३. ,, स्यामदास ,,

१४. मोहविवेकयुद्ध बनारसीदास ,,

१५. द्वादशानुप्रेक्षा सूरत ,,

१६. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	
१७. बिनती	रूपचन्द	"	

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करैं तुम सेवा।

१८. पंचेन्द्रियबेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	र० काल सं० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	"	" " १८८३
२०. परमार्थ हिंडोलना	रूपचन्द	"	
२१. पंथीगीत	छीहल	"	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	"	
२३. पद–अब मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	"	
२४. पदसंग्रह	बनारसीदास	"	

६०४१. गुटका सं० १४। पत्र सं० १०१–२३७। आ० १०×७ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है।

६०४२. गुटका सं० १५। पत्र सं० ४३। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पद संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४३. गुटका सं० १६। पत्र सं० ५२। आ० ७×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–सामान्य पाठ संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४४. गुटका सं० १७। पत्र सं० १६६। आ० १३×३ इ०। ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदा। पूर्ण।

१. छियालीस ठाणा	ब्र० रायमल्ल	संस्कृत	१६

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पंचकल्याणकों की तिथि आदि विवरण है।

२. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२८
३. जीवसमास	×	प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ	५६

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी।

४. सुप्पय दोहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	"	६२
६. रत्नकरण्डश्रावकाचार	समंतभद्र	संस्कृत	६४

६०४५. गुटका सं० १८। पत्र सं० १५०। आ० ७×२३ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३७ । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५०१ ।

१. मनोहरमंजरी	मनोहर मिश्र	हिन्दी	१–२६

प्रारम्भ—   अथ मनोहर मंजरी, अथ नव जौवना लक्षनं ।
याके योवनु अंकुरयो, अंग अंग छबि ओर ।
सुनि सुजान नव यौवना, कहत भेद द्वै ठोर ।।

अन्तिमः—   लहलहाति अति रसमसी, बहु सुबासु अपाठ (?)
निरखि मनोहर मंजरी, रसिक भृङ्ग मंडरात ।।
सुनि सुजानि अभिमान तजि मन विचारि गुन दोष ।
कहा विरह कित प्रेम रसु, तही होत दुख मोख ।।
चंद अत द्वै दीप के, अंक बीच आकास ।
करी मनोहर मंजरी, मकर चांदनी व्यास ।।
माथुर का हो मधुपुरी, बसत महोलो पोरि ।
करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि ।।

इति श्री सकललोककृतमणिमरीचिमंजरीनिकरनीराजितपदद्वंदवृन्दावनविहारकारिलाकटाक्षटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य है । सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं । नायिका भेद वर्णन है ।

२. फुटकर दोहा	×	हिन्दी	३०–३६

विशेष— ७० दोहे हैं ।

३. आयुर्वेदिक नुसखे	×	"	३७

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वे० सं० १५०२ ।

१. नाममंजरी	नंददास	हिन्दी पद्य सं० २६१	२–२८
२. अनेकार्थमंजरी	"	"	२८–४०

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३. कवित्त	×	"	४१–४३
४. भोजरासो	उदयभानु	"	४३–४८

प्रारम्भ—　　श्री गणेशाय नमः । दोहरा ।

कुंजर कर कुंजर करन कुंजर प्रानंद देव ।
सिधि समपन सत्त सुव सुरवर कीजिय सेव ॥ १ ॥
जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस अरचंग ।
मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवंग ॥ २ ॥
सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरैं नहि आन ।
जहां तहां सुवन सुन जिये तहां नृपति भोज बखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी की रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मिती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त	टोडर	हिन्दी	कवित्त हैं	४९–४

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१. मायाब्रह्म का विचार	×	हिन्दी गद्य	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

"माया काहे तै कहिये ब्रंभस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तैं कहिये पिंड ब्रह्मांड का आदि आकार है तातैं आकास कहीये । सुनी (शून्य) काहे तै कहीये–जड है तातै सुनी कहिये । सकती काहे तैं कहिये सकल संसार को जीति रही है तातैं सकती कहिये ।"

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हंस का ग्यान ग्रंथ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकराचारीज बीरच्यते । मिती असाढ सुदी १० सं० १७२६. का मुकाम मुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्यै उतारी पोथी सा..........म ठोल्या साह नेवसी का बेटा ....कर महाराज श्री रुघनाथस्यंघजी ।

२ गोरखपदावली	गोरखनाथ	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रै बैरागी जोगी जोगणि संग न छाडै जी।

मान सरोवर मनस झुलती आवै गगन मड मंड मारैजी ॥

३. सतसई   बिहारीलाल   हिन्दी   अपूर्ण   ३–६५

लि० काल सं० १७२५ माघ सुदी २ ।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नही हैं। कुल ७१० दोहे हैं।

४. वैद्यमनोत्सव   नयनसुख   "   अपूर्ण ६७–११८

६०४६. गुटका सं० ४। पत्र सं० २५। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। ले० काल सं० १८३६ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १५०४।

विशेष—चाणक्य नीति का वर्णन है। श्रीचन्दजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६०५०. गुटका सं० ५। पत्र सं० ४०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० स० १५०५।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अनूठे कवित्त है।

६०५१. गुटका सं० ६। पत्र सं० ८६। आ० ६×४ इ०। भाषा हिन्दी। र० काल सं० १६८८। ले० काल सं० १७६८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५०६।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है। श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६०५२. गुटका सं० ७। पत्र सं० ४५। आ० ६×७½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८। अपूर्ण। वे० सं० १५०७।

१. कवित्त   अगर (अग्रदास)   हिन्दी   अपूर्ण   १–१०

विशेष—कुल ६३ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नही हैं। इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय।
पाछै बछरा खाय कहत गुरु सीख न मानै।
ग्यान पुरान मसान छिनक मैं धरम भुलानै ॥
करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै।
नीच न समझै मीच परत विषया के काजै।
अगर जीव आदि तै यह बंध्यौस करैं उपाय।
आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१०॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा लोहट हिन्दी १७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम— अनुप्रेक्षा द्वादशा सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिती वैशाख बुदी ८ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपच्चीसी भारमल हिन्दी २१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य— करम प्रा तोर पंच महावरत धरू जपूं चौवीस जिणंदा ।

अरहंत ध्यान लैव बहूं साह लोयण वंदा ॥

प्रकृति पच्यासी आणि कै करम पचीसी जान ।

सुदर भारैमल················स्योपुर थान ॥ कर्म प्रति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पच्चीसी संपूर्ण ॥

५. पद–(बांसुरी दीजिये व्रज नारि) सूरदास " २६

६. पद–हम तो व्रज को बसिवो ही तज्यो " " २७-२८

व्रज में बसि वैरिणि तू बंसुरी

७. श्याम बत्तीसी श्याम " ३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है:—

अन्तिम— कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कलु रहत न रञ्चक नाम ॥

८. पद–बिन माली जो लगावै बाग मनराम हिन्दी ४०

९. दोहा–कबीर औगुन एक ही गुण है कबीर " "

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त × " ४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन × " अपूर्ण ४१-४५

६०५३. गुटका सं० ८। पत्र सं० ८६। आ० ६×८ इ०। ले० काल सं० १७७६ श्रावण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५०८।

१. कृष्णरुक्मरिण वेलि	पृथ्वीराज राठौर	राजस्थानी डिंगल	१-८५
		र० काल० सं० १६३७।	

विशेष—ग्रंथ हिन्दी गद्य टीका सहित है। पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है।

२. विष्णु पंजर रक्षा	×	संस्कृत	८६
३. भजन (गढ बंका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४. पद-(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	"	८६
५. " (धुनिमुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	"	"
६. " (सुन्दर सावरी आवे चल्यो सखी)	नंददास	"	"
७. " (बालगोपाल छैगन मेरे)	परमानन्द	"	"
८ " (बन ते आवत गावत गोरी)	×	"	"

६०५४. गुटका सं० ६। पत्र सं० ८५। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०६।

विशेष—केवल कृष्णरुक्मणी वेलि पृथ्वीराज राठौर कृत है। प्रति हिन्दी टीका सहित है। टीकाकार अज्ञात है। गुटका सं० ८ मे आई हुई टीका से भिन्न है। टीका काल नहीं दिया है।

६०५५. गुटका सं० १०। पत्र सं०१७०-२०२। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं० १५११।

१. कवित्त		राजस्थानी डिंगल	१७१-७३

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त है। विरहिनी का वर्णन है। इसमें एक कवित्त छीहल का भी है।

२. श्रीरुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	राजस्थानी पद्य	१७३-१८५

विशेष—इति श्री रुक्मणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत सपूर्ण ।। संवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्यां बुधवासरे श्री मुकन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन काह साह सूराजी तत्पुत्र सजन साह श्री छाजूजी वाचनाय। लिखत व्यास जद्दूना नाम्ना।

३ कवित्त	×	हिन्दी	१८६-२०२

विशेष—भूधरदास, सुन्दरदास, विहारी तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है। ४७ कवित्त है।

६०५६. गुटका सं० ११। पत्र सं० ४६। आ० १०×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१४।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्ण	१-४८
		ले० काल सं० १७६१ जेठ सुदी १४		
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका सं० १२। पत्र सं० २-२६। आ० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी	६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह।

जनमोहन जो गाव ही सो पावे नर देह ॥११९॥

जो गावे सीखे सुने भाव भक्ति करि हेत।

रसिकराय पूरण कृपा मन वांछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संवाद है।

६०५८. गुटका सं० १३। पत्र सं० ७६। आ० ८×६½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० ×। पूर्ण। वे० सं० १५२२।

१. रागमाला	श्याम मिश्र	हिन्दी	१-१२

र० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १०। ले० काम सं० १७४६ सावन सुदी १५।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमखां का वर्णन है। ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है।

अन्तिम—संवत् सौरह से वरण ऊपर बीते दोय।

फागुन बदी समी दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत संपूर्ण। संवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोमवार पोथी लेरवड अगर्नें हिंडोंण का में साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी ये लिखी लिखतं मौजीराम।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)	महाकविराइसुन्दर	हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर शब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३. नखशिखवर्णन केशवदास हिन्दी १४-२८

लेo काल संo १७४६ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त— गिरधर, मोहन सेवग आदि के हिन्दी

६०५६. गुटका संo १४। पत्र संo ३६। आ० ५×५ इ०। भाषा-हिन्दी। लेo काल ×। पूर्ण। वे० संo १५२३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६०. गुटका संo १५। पत्र संo १६८। आo ८×६ इo। भाषा-हिन्दी। विषय-पद एवं पूजा। लेo काल संo १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेo संo १५२४।

१. पदसंग्रह हिन्दी १-५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एव रामदास के पद हैं। राग रागनियों के नाम भी दिये हुये है

२. चौबीसतीर्थङ्करपूजा रामचन्द्र हिन्दी ५८-१६८

६०६१. गुटका संo १६। पत्र संo १७१। आo ७×६ इo। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेo काल संo १६४७। अपूर्ण। वेo संo १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. विरदावली × संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानबावनी मतिशेखर हिन्दी ६८-१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई धन्ना चउपई है जिसका रचनाकाल संo १५७४ है।

३ त्रिभुवन की विनती गङ्गादास

विशेष—इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका संo १७। पत्र संo ३२-७०। आo ५×६ इo। भाषा-हिन्दी। लेo काल संo १८४७। अपूर्ण। वेo संo १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा　　टीकम　　हिन्दी　　र० काल सं० १७१२

विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा　　द्वारकादास　　"

विशेष—पचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा　　सुन्दर　　राजस्थानी

विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ६½×६½ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई　　ब्र० रायमल्ल　　हिन्दी　　अपूर्ण　　५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र　　परिमल्ल　　"　　१०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास)　　×　　"　　२८३-२६८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ६×६½ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है:—

कपडा की रौस जाणै हैवर की हौस जाणै ।
न्याय भी नवेरि जाणै राज रीत माणिवौ ॥
राग तो छतीस जाणै लखिण बतीस जाणै ।
चूँप चतुराई जाणै महल में मांणिवौ ॥
बात जाणै संवाद जाणै खूबी खसबोई जाणै ।
लगपग साधि जाणै अर्थ को आणिवौ ।
कहत बणारसीदास एक जिन नांव विना ।
.... कूडी सब आणिवौ ॥

६०६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १६४ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५३२ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४८ आ० १०×७ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६०६८. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८०८ । अपूर्ण । वे० सं० १५३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, आदिनाथ की वीनती, ब्रह्म जिनदास एवं कनककीर्त्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा मेघकुमारचौपई ।

६०६९. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । आ० ६×४½ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८८० । अपूर्ण । वे० सं० १५३५ ।

विशेष—जैन नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७०. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—विषापहार भाषा (अचलकीर्त्ति) भूपालचौवीसी भाषा, भक्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ६० । आ० ६×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५–१२० । भाषा–संस्कृत । ले० काल १८६५ । अपूर्ण । वे० सं० १५३८ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६०७३ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । सं० १७५३ अषाढ़ सुदी ३ मु० मौ० नन्दपुर गंगाजी का तट । दुर्गादास चांदबाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १६ । म्रा० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७५. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १५५ । म्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४१ ।

१. भविष्यदत्त चौपाई	ब्र०रायमल्ल	हिन्दी	१-७६
		र० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ ।	

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ मषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

२. वीरजिणन्द की संघावली	पूनो	हिन्दी	७७-७६

विशेष—मेघकुमार गीत है ।

३. अठारह नाते की कथा	लोहट	"	८०-८३
४. रविवार कथा	खुशालचन्द	"	र० काल सं० १७७५

विशेष—लिखतं फतेराम ईसरदास बज वासी सांगानेर का ।

५. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	"	
६. चौबीसतीर्थंकरों की बंदना	नेमीचन्द	"	६७
७. फुटकर सवैया	×	"	११३
८. षट्लेश्या वेलि	हर्षकीर्ति	" र० काल सं० १६८३	११६
६. जिन स्तुति	जोधराज गोदीका	"	११८
१०. प्रीत्यंकर चौपई	मु० नेमीचन्द	"	११६-१३४
		र० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११	

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६५ । म्रा० ८½×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६०७७. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ११६ । म्रा० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण वे० सं० १५४४ ।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है ।

६०७८. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२४ । म्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५६ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७९. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १३८ । म्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४६ ।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है ।

६०८०. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । म्रा० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४७ ।

६०८१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । म्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४६ ।

विशेष-नित्यपूजा पाठ संग्रह है ।

६०८२. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ६४ । म्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८४२ पूर्ण । वे० सं० १५४८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पदसंग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी	
२. स्तुति	हरीसिंह	„	
३. पार्श्वनाथ की गुणमाला	लोहट	„	
४. पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	„	
५. आरती	शुभचन्द	„	

विशेष—अन्तिम-आरती करता आरति भाजे,शुभचन्द ज्ञान मगन मैं साजे ।।८ ।

६. पद- (मै तो थारी आज महिमा जानी)	मेला	„	
७. शारदाष्टक	बनारसीदास	„	ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर में कालीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८. पद- मोह नींद में छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी
९. „ उठि तेरो मुख देखूं नाभि जू के नंदा	टोडर	„
१०. चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	„
११. विनती	अजैराज	„

६०८३. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

१. आरती संग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतियां हैं)
२. आरती—जिह विधि आरती करो प्रभु तेरी	मानसिंह	,,	
३. आरती—इहविधि आरती करों प्रभु तेरी	दीपचन्द	,,	
४. आरती—करो आरती आतम देवा	बिहारीदास	,,	३
५. पद संग्रह	द्यानतराय	,,	१७
६. पद— संसार अथिर भाई	मानसिंह	,,	४०
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	,,	५३
८. पद-संग्रह	भूधरदास	,,	६७
९. पद—जाग पियारो अब क्या सोवै	कबीर	,,	७७
१०. पद—क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	,,	७७
११. सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	,,	८०
१२. आरती सिद्धों की	खुशालचन्द	,,	८१
१३. गुरुअष्टक	द्यानतराय	,,	८३
१४. साधु की आरती	हेमराज	,,	८५
१५. वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	,,	,,
१६. पार्श्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्त्ति	,,	,,

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारी सकलकीर्त्तिमुनि काज मुदा ।।

१७. नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासंग्रह	लालचन्द	,,	१३८
१९. पद—उठ तेरो मुख देखूं नाभिजी के नंदा	टोडर	,,	१४५
२०. पद—देखो माई आज रिषभ घरि आवै	साहकीरत	,,	,,
२१. पद—संग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनंद	,,	१४६
२२ न्हवण मंगल	बंसी	,,	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	,,	१४९

२४. न्हवण आरती　　　　थिरुपाल　　　　हिन्दी　　　　१५०

अन्तिम— केशवनंदन करहिंजु सेव, थिरुपाल भणे जिण चरण सेव ॥

२५. आरती सरस्वती　　　　ब्र० जिनदास　　　　"　　　　१५३

६०८४. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ७-६८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० सं० १५५१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०८५. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २२३ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४२ । अपूर्ण । वे० सं० १५५२ ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १३६ । आ० ५×४½ इ० । ले० काल १७२३ चैत सुदी ९ । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न हैं:—

१. चतुर्विंशति स्तुति　　　　×　　　　प्राकृत　　　　६

२. लब्धिविधान चौपई　　　　भीषम कवि　　　　हिन्दी　　　　३०

र० काल सं० १६१७ फागुण सुदी १३ । ले० काल सं० १७३२ वैशाख बुदी ३ ।

विशेष—संवत सोलसौ सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ ।

उजलपाषि तेरस तिथि जाणि, तादिन कथा चढी परवाणि ॥१६६॥

बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनि धर्म तसु गोधा जाति ।

वह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥१६७॥

×　　×　　×　　×　　×

कडा बन्ध चौपई जाणि पूरा हुआ दोइसे प्रमाणि ।

जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥

इति श्री लब्धि विधान चौपई संपूर्ण । लिखितं चोखा निवासितं साह श्री भोगीदास पठनार्थं । सं० १७३२ वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।

३. जिनकुशल की स्तुति　　　　साधुकीर्ति　　　　हिन्दी

४ नेमिजी की लहुरि　　　　विश्वभूषण　　　　"

५. नेमीश्वर राजुल की लहुरि (बारहमासा) खेतसिंह साह हिन्दी

६. ज्ञानपंचमीवृहद् स्तवन समयसुन्दर "

७. आदीश्वरगीत रंगविजय "

८. कुशलगुरुस्तवन जिनरंगसूरि "

९ " समयसुन्दर "

१०. चौबीसीस्तवन जयसागर "

११. जिनस्तवन कनककीर्ति "

१२. भोगीदास की जन्म कुण्डली × " जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २१ । आ० ५½×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३० अपूर्ण । वे० सं० १५५४ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है । मलारना में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४-७६ । आ० ७×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. श्वेताम्बर मत के ८४ बोल जगरूप हिन्दी र० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८९९ आसोज सुदी ३ ।

२. व्रतविधानरासो दौलतराम पाटनी हिन्दी र० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ५-१०३ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । अपूर्ण । वे० सं० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न है ।

१. सुदामा की बारहखडी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की × संस्कृत १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सवासुख ।

६०९०. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ३० । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६०६१. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ६×५½ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०६२. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५६ ।

विशेष—अनुभूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है ।

६०६३. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ६५ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १५६२ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत विनती संग्रह तथा लोहट कृत अठारह नाते का चौढालिया है ।

६०६४. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६५. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १७० । ग्रा० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६३ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं ।

१. कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी	१०५-१०७

विशेष—३ कवित्त हैं ।

२. रागमाला के दोहे	जैतश्री	"	११३-११८
३. बारहमासा	जसराज	" १२ दोहे हैं	११८-१२१

६०६६. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १७८ । ग्रा० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ३०४ । ग्रा० ६½×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७८३ माह बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १५६७ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. अष्टाह्निकारासो	विनयकीर्ति	हिन्दी	१५८

२ रोहिणी विधिकथा —— बंसीदास हिन्दी १५६-६०

र० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २ ।

विशेष— सोरह सै पच्यानऊ ठई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई

फातिहाबाद नगर सुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ।।

मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्त्ति गोयम सममान ।

ता शिष बंशीदास सुजान, मानै जिनवर की आन ।।८६।।

अक्षर पद तुक तनै जु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ।।

क्षमौ शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मो सुभाइ ।।८७।।

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ।।

३, सोलहकारणरासो	सकलकीर्त्ति	हिन्दी	१७२
४. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	संस्कृत	१७५-१८६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	”	२५१

६०९८. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० २२-३० । आ० ६½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०९९. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. अश्वलक्षण	पं० नकुल	संस्कृत	अपूर्ण	१०-२६

विशेष—श्लोकों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोध्यायः ।।

२. फुटकर दोहे	कबीर	हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १४ । आ० ७½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७० ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६१०१. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल० सं० १८४७ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५७१ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं ।
२. प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३. कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ८२ । आ० ५×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०३. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६-६६ । आ० ७×४½ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १५७३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०४. गुटका सं० ६० । पत्र स० १८० । आ० ७×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ६७ । आ० ६×४ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१४ भादवा सुदी ६ । पूर्ण ।० सं० १५७५ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. बारहखडी	×	हिन्दी	३६
२. विनती–पार्श्व जिनेश्वर वंदिये रे साहिब मुकति तणू दातार रे	कुशलविजय	"	४०
३. पद–किये आराधना तेरी हिये आनन्द व्यापत है	नवलराम	"	"
४. पद–हेली देहली कित जाय छै नेम कंवार	टीलाराम	"	"

५. पद—नेमकंवार री वाटडी हो राणी राजुल जोवै खडी हो खडी	खुशालचंद	हिन्दी		४१
६. पद—पल नहीं लगदी माय मैं पल नहिं लगदी पीया मो मन भावै नेम पिया	बखतराम	"		४३
७. पद-जिनजी को दरसण नित करां हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"		"
८. पद—तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो	बखतराम	"		४४
९. विनती	अजैराज	"		४८
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	अपूर्ण	४९
११. पद-भोग दुखदाई तजभवि	जगतराम	"		५०
१२. पद	नवलराम	हिन्दी		५१
१३. " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"		५२
१४. रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ	"		५७-५८
१५. वसंतपूजा	अजैराज	"		५९-६१

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं :—

आंबेरि सहर सुहावणू रति बसंत कूं पाय।

अजैराज करि जोरि कै गावै हो मन बच काय ॥

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५¾ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८१ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद एवं भूधरदास कृत गुरुओं की स्तुति है ।

६१०८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ८¾×४¾ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५८० ।

६१०६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १७३ । ग्रा० ६३/४×४१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० १५८१ ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है ।

६११०. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३२ । ग्रा० ६१/४×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८२ ।

विशेष—पंचमेरु पूजा, अष्टाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं ।

६१११. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० १८५ । ग्रा० ८१/२×७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६११२. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ११५ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८८ ।

विशेष—पूजा पाठो का संग्रह है ।

६११३. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १५१ । ग्रा० ४१/२×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १५८८ ।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है ।

६११४. गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७-५० । ग्रा० ७१/२×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११५. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १८ । ग्रा० ५×५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६० ।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा है ।

६११६. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० ३८ । ग्रा० ४३/४×३१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० १५६१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीपाल स्तुति आदि है ।

६११७. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० २ ५० । ग्रा० ६१/२×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६५ ।

६११८. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—मनोहर एवं पूनो कवि के पद हैं ।

६११६. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५½ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एवं बाईस परीषह वर्णन है ।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्म, भूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-विनती संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६१२८. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० १५ । ग्रा० ८¾×६ इ० । भाषा- हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं १६११ ।

विशेष— देवाब्रह्म कृत पदों का संग्रह है ।

६१२६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ४० । ग्रा० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १६५६ ।

विशेष—उदयराम एवं बखतराम के पद तथा मेत्रीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३०. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ७०-१२८ । ग्रा० ६×५½ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८६४ अपूर्ण । वे० सं० १६५७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २८ । ग्रा० ६½×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है

६१३२. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० १६ । ग्रा० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५९ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३. गुटका सं० ९० । पत्र सं० २६ । ग्रा० ९½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९१८ । पूर्ण । वे० स० १६६० ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४. गुटका सं० ९१ । पत्र स० ७२ । ग्रा० ९½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ पूर्ण । वे० सं० १६६१ ।

विशेष— प्रारम्भ के १९ पत्रों पर १ से ५० तक पहाडे हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २० । ग्रा० ५×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमंजूषा (मंत्र तंत्र) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० ३७ । ग्रा० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६३ ।

विशेष—संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८–११। म्रा० ६×५ इ०। भाषा गुजराती। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत रुक्मणि विवाह वर्णन है।

६१३८. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। म्रा० ४×३ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (म्राइं रथ की बजत बधाई जी सब जनमन म्रानन्द दाई) है। चारों रथों का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुम्रा था।

६१३९. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। म्रा० ८×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ६०। म्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६९।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६१४१. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ५८। म्रा० ७×७ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६६। पत्र सं० २–१२। म्रा० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, म्रायुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनों की ७२ जातियां जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति म्रादि है। गुमानीराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में लिखा गया।

६१४३. गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। म्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से म्रागे पत्र खाली है।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र सं० ८–२५। म्रा० ६×४$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×७ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ ।

विशेष— बारहखडी (सूरत), नरक दोहा (भूधर), तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सवैया हैं ।

६१४६. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७५ ।

विशेष—विषापहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषह वर्णन है ।

६१४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×५ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिषह, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४६. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ३६ । आ० ७×३ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षण पूजा है ।

६१५०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । आ० ७×५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष—सम्मेदशिखरमहात्म्य, निर्वाणकांड (सेवग) फुटकर पद एव नेमिनाथ के दश भव है ।

६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० २-४ । आ० ७×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८० ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है ।

६१५२. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×६½ इ० भाषा–हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ हैं:—

१. हरजी के दोहा   ×   हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक है आगे नही है ।

हरजी रसना सो कहै, ऐसो रस न ग्रोर ।
तिसना तु पीवत नहीं, फिर पीहै किहि ठौर ।। ९६३ ।।

हरजी हरजी जो कहै रसना बारंबार।

पिसं तजि मन हूं क्यों न ह्वै जमन नाहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

२. पुरुष-स्त्री संवाद	रामचन्द	हिन्दी	१२ पद्य हैं।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	×	"	४ कवित्त है।
४. दिल्ली राज्य का ब्यौरा	×	"	

विशेष—चौहान राज्य तक वर्णन दिया है।

५. ग्राधाशीशी के मंत्र व यन्त्र हैं।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । ग्रा० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष —निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं।

६१५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । ग्रा० ६×४ । भाषा हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनंद है सेवो भवि प्रानी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं।

६१५५.गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । ग्रा० ५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रों का संग्रह है। गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है।

६१५६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यंत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृंगार के दोहे हैं।

६१५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । ग्रा० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-अश्व परीक्षा । ले० काल × ।१८०४ असाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालों की है खुशालचन्द ने पाटटा में प्रतिलिपि की थी। गुटका सजिल्द है।

६१५८. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० ३२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११५ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

६१५६. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० ७७ . आ० ८×६ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०२ ।

विशेष—गुटका सजिल्द है । खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, विभिन्न कवियो के पद, तथा दीवाण अभयचन्दजी के पुत्र आनन्दीलाल की सं० १६१६ की जन्म पत्री तथा आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

६१६०. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०३ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७०५ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१६२. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४१ अपूर्ण । वे० सं० १७११ ।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य में है दोनों ही अपूर्ण है ।

६१६३. गुटका सं० १२० । पत्र सं० ३२–१२८ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१२ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. नवपदपूजा	देवचन्द	हिन्दी	अपूर्ण	३२–४३
२. अष्टप्रकारीपूजा	"	"		४४–५०

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल इनकी प्रत्येक की अलग अलग पूजा है ।

३. सत्तरभेदी पूजा	साधुकीर्ति	"	र० सं० १६७८	५०–६५
४. पदसंग्रह	×	"		

६१६४. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ६–१२२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१३ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुणजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	”	५२
४. देवशास्त्रगुरुपूजा	”	”	६८
५. गणधरवलयपूजा	”	”	१०७–११२
६. आरती पंचपरमेष्ठी	पं० चिमना	हिन्दी	११४

अन्त में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारकों का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८–१२६। आ० ५½×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३। पत्र सं० ६–४६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १२४। पत्र सं० २५–७०। आ० ४×५½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२५। पत्र सं० २–४५। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ३६–१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६–२४६। आ० ८×४½ इ०। भाषा–गुजराती। लिपि–हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १९०५। अपूर्ण। वे० सं० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१. गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३१-६२। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७२०।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१७२. गुटका सं० १२६। पत्र सं० १२। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० १७२१।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है।

६१७३. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ५-१६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७२२।

रसकौतुकराजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य है।

अन्तिम—   कंता प्रेम समुद्र हैं गाहक चतुर सुजान।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्री रसकौतुकराजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम नाम संपूर्ण।

६१७४. गुटका सं० १३१। पत्र सं० ६-४१। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८६१ अपूर्ण। वे० सं० १७२३।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है।

६१७५. गुटका सं० १३२। पत्र सं० ३-११०। आ० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १७२४।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० रायमल्ल) घंटाकरण मंत्र, विनती, वंशावलि, (भगवान महावीर से लेकर सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ हैं।

६१७६. गुटका सं० १३३। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० १७१५।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है।

६१७७. गुटका सं० १३४। पत्र सं० १६। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० १७२६।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है।

६१७८. गुटका सं० १३५। पत्र सं० ४६। आ० ७×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८१८। अपूर्ण। वे० सं० १७२८।

१. पद– राखी हो बृजराज लाज मेरी | सूरदास | हिन्दी
२. ,, माहिडो बिसरि गई लोह् कोउ काह्लन | मलूकदास | ,,
३. पद–राजा एक पंडित पोली तुहारी | सूरदास | हिन्दी
४. पद–मेरो मुखनीको मक तेरो मुख थारी ० | चंद | ,,
५. पद अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी० | कबीर | ,,
६. पद-बादि गये दिन साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना | ,, | ,,
७ पद–आ दिन मन पंछी उडि जी है | ,, | ,,

फुटकर मंत्र, औषधियों के नुसखे आदि हैं।

६१७६. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ५-१६। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १७५५।

विशेष —वखतराम, देवाब्रह्म, चैनसुख आदि के पदों का संग्रह है। १० पत्र से आगे खाली हैं।

६१८०. गुटका सं० १३७। पत्र सं० ८८। आ० ६½×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५६।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एवं विलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, नानचन्द, गरीबदास, भूधर एव किसनगुलाब के पदों का संग्रह है।

६१८१. गुटका सं० १३८। पत्र सं० १२१। आ० ६¾×५¾ इ०। वे० सं० २०४३।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं:—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३. क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	,,
४ हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५. क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	,,
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	,, र० काल सं० १८४८

६१८२. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ३-४६। आ० १०½×७ इ०। भाषा–हिन्दी प०। ले० काल सं० १६३५। अपूर्ण वे० सं० २०४०।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालंकार भी है। भैरूलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४–४१ । आ० १०½×७ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १९०९ द्वि० भादवा बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द्र सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३–१०६ । आ० १०½×६½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८५३ असाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र० सं० १६४९) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ८–६३ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १९–१७१ । आ० ७¾×६½ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीआदिनाथचैत्यालयेगुवामी शुभस्थाने भ० श्रीसकलकीर्ति, भ० भुवनकीर्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्ति, भ० शुभचन्द्र, आ० गुरुउदेशात् आ० श्रीरत्नकीर्ति आ० यशःकीर्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वे० सं० २०४९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	र० काल सं० १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	×	"	
३. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति	"	
४. दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्ति	"	
६. सकुटचौदसव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७. आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	र० काल सं० १७०९
८. निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७७१

९. त्रिकालचतुर्दशीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	
१०. सुगन्धदशमीकथा	हेमराज	"	
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	
१२. बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"	

६१८८. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० २११ । आ० ९×६½ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५० ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	९०
५. मेरुपूजा	"	"	
६. चौरासी ज्ञातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी जातिमाला और है ।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तऋषिपूजा	ब्र० देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरलोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर व्याहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२. पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१९१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२११
१५. आदित्यवारकथा	पं० मञ्जुदास [धर्मचन्द्र का शिष्य]	"	२१९

६१८९. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० ११–८८ । आ० ८½×४½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७०१ । अपूर्ण । वे० सं० २०५१ ।

विशेष—बनारसीविलास एवं जयमाला आदि के पाठों का संग्रह है ।

६१६० गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३०-६३ ग्रा० ४×४¾ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८६।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६१६१. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ३५। ग्रा० ८×१० इ०। ले० काल सं० १८४३। पूर्ण। वे० सं० २१८७।

१. पञ्चकल्याणक	हरिचन्द	हिन्दी	१-२०
			र० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७
२. त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	

विशेष—नीमेडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३. पट्टावलि	×	हिन्दी	३५

६१६२. गुटका सं० १४६। पत्र सं० २१। ग्रा० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २१६१।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है। चांदनगांव के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३. गुटका सं० १५०। पत्र सं० २४६। ग्रा० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल १७१७। पूर्ण। वे० सं० २१६२।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का ब्यौरा है।

६१६४ गुटका सं० १५१। पत्र सं० ६२। ग्रा० ६×६ इ०। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६५।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं।

६१६५ गुटका सं० १५२। पत्र सं० ४०। ग्रा० ७½×५½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १५३। पत्र सं० २७-२२१। ग्रा० ६¾×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६७।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १५४। पत्र सं० २७-१४७। ग्रा० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१९८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० १२। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१९९।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१९९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७–१५२। आ० ७३×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख संवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८–३९। आ० ७३×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २–३०। आ० ७×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७३×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २२०४।

विशेष—कछवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का ब्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३. बारहमासा, आखीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६×४३ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है।

६२०५. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० ३५ । आ० ७×६ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०६ ।

विशेष—श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है । हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है ।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं । इसके बीस मंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के १६ खानों का यंत्र हैं । इसके १२० यंत्र हैं ।

६२०६. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० १६–४६ । आ० ६३/४×७१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल सं० १६५५ । अपूर्ण । वे० सं० २२०८ ।

विशेष—सेवग, जगतराम, नवल, बलदेव, माणक, धनराज, बनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं ।

६२०७. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० ११ । आ० ५३/४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है ।

६२०८. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० ७७ । आ० ६१/२×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०६ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२०९. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ५२ । आ० ६३/४×४३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१० ।

विशेष— नवल, जगतराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनसुख, धर्मपाल, भगतराम, भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियो में पद हैं । पुस्तक गोमतीलालजी ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२१०. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २४ । आ० ६३/४×४३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२११ ।

१. अठारह नाते का चौढालिया	लोहट	हिन्दी	१–७
२. मुहूर्त्तमुक्तावलीभाषा	ठाकुरासी	"	१–२३

६२११. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४३/४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सम्यग्ज्ञान । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१२ ।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध में जीत का यन्त्र, सीधा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं।

६२१२. गुटका सं० १६८। पत्र सं० १२–३६। आ० ७३/४×५३/४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१३।

विशेष—वृन्द सतसई है।

६२१३. गुटका सं० १६६। पत्र सं० ४०। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१४।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

६२१४. गुटका सं० १७०। पत्र सं० ६६। आ० ८×५३/४ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१५।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एवं रत्नकोश हैं।

६२१५. गुटका सं० १७१। पत्र सं० ३–८१। आ० ५१/२×५१/२ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१६।

विशेष—जगतराम के पदों का संग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६. गुटका सं० १७२। पत्र सं० ५१। आ० ५×४१/२ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीस्नात्रविधि……। पत्र सं० १। आ० १०×५३/४ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–विधि विधान। र० काल ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे० सं० २६१। अ भण्डार।

६२१८. अम्बाष्टमीपूजन……। पत्र सं० ७। आ० ११३/४×६ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११५७। अ भण्डार।

६२१९. तुलसीविवाह……। पत्र सं० ५। आ० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–विधिविधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २२२२। अ भण्डार।

६२२०. पदमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण)……। पत्र सं० २। आ० ६३/४×५३/४ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–नापने तथा तोलने की विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३७। अ भण्डार।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि……। पत्र सं० २०। आ० ८३/४×६३/४ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७२। अ भण्डार।

६२२२. प्रायश्चितचूलिकाटीका—नन्दिगुरु। पत्र सं० २५। आ० ८×५ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–आचारशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२८। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२६) और है।

६२२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वे० सं० ६५। घ भण्डार।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित विनिश्चयवृत्ति' दिया है।

६२२४. भक्तिरत्नाकर—वनमाली भट्ट। पत्र सं० १६। आ० १११/२×५ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २२६१। अ भण्डार।

६२२५. भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु। पत्र सं० १७। आ० ११३/४×४३/४ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९६) और है।

६२२६. विधि विधान……। पत्र सं० ७२–१५३। आ० १२×५१/२ इ०। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८३। अ भण्डार।

६२२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० ६६१। क भण्डार।

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले। पत्र सं० ८५। आ० १२१/२×८ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७५। क भण्डार।

६२२९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १८२६ भाद्रपद शुक्ला १२। वे० सं० ७७७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७७६) और है।

६२३०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १९२८ मावश सुदी ३। वे० सं० २००। छ भण्डार।

६२३१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३९। ले० काल ×। वे० सं० २७८। ञ भण्डार।

६२३२. समुच्चयचौबीसतीर्थङ्करपूजा……। पत्र सं० २। आ० ११३/४×५३/४ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०। अ भण्डार।



ग्रन्थानुक्रमणिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अकबर बीरबल वार्ता	—	(हि०)	६८१
अकलङ्कचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०
अकलङ्कचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०
अकलङ्कदेव कथा	—	(सं०)	२१३
अकलङ्कनाटक	मक्खनलाल	(हि०)	३१६
अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	(सं०)	५७५
			६३७, ६४६, ७१२
अकलङ्काष्टक	—	(सं०)	३७६
अकलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	३७६
अकलङ्काष्टक	—	(हि०)	७६०
अकंपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६
अचलमंदवार्त्ता	—	(हि०)	३२४
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	—	(प्रा०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	भगवतीदास	(हि०)	६६४
			७२०
अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४,७४६
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४
अकृत्रिमचैत्यालयपूँजा	—	(सं०)	५१५
अकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(सं०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३
अकृत्रिमजिनालयपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४५३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
अक्षयदशमीविधान	—	(सं०)	५३८
अक्षयनिधिपूजा	—	(सं०)	४५४
			५०६, ५३६, ७६३
अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा	—	(सं०)	२११
अक्षयनिधिमडल [मंडलचित्र]	—		५२५
अक्षयनिधिविधान	—	(सं०)	४५४
अक्षयनिधिविधानकथा	—	(सं०)	२४४
अक्षयनिधिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
अक्षयविधानकथा	—	(सं०)	२४६
अक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	१५, ६७६
अजितपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(सं०)	१४२
अजितनाथपुराण	विजयसिंह	(अप०)	१४२
अजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेण	(प्रा०)	३७६
			६८१
अजितशांतिस्तवन	—	(प्रा० सं०)	३८१
अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	३७६
अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अजितशांतिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	४१३
अजीर्णमञ्जरी	काशीराम	(सं०)	२९६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अजीर्णमञ्जरी	—	(सं०)	२६६
अठाई का मंडल [चित्र]	—		५२५
अठाई का ब्यौरा	—	(सं०)	५४३
अट्ठाईस मूलगुण वर्णन	—	(सं०)	४८
अठारह नाते की कथा	ऋषि लालचन्द	(हि०)	२१३
अठारह नाते की कथा	लोहट	(हि०)	६२३,७७५
अठारह नाते का चौढाला	लोहट	(हि०)	७२३
			७८०, ७६८
अठारह नाते का चौढाल्या	—	(हि०)	७४५
अठारह नाते का ब्यौरा	—	(हि०)	६२३
अठावीसमूलगुणरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
अठोत्तरासनाथविधि	—	(हि०)	६६८
अढाई [सार्द्धद्वय] द्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४५५
अढाईद्वीप पूजा	डालूराम	(हि०)	४५५
अढाईद्वीप पूजा	—	(हि०)	७३०
अढाईद्वीपवर्णन	—	(सं०)	३१६
अणथमितिसंधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	(अप०)	२४३
			६२८, ६४२
अणत का मंडल [चित्र]			५२५
अतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३
अद्भुतसागर	—	(हि०)	२९६
अध्ययन गीत	—	(हि०)	६८०
अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	कवि राजमल्ल	(सं०)	१२६
अध्यात्मतरङ्गिणी	सोमदेव	(सं०)	९९
अध्यात्मदोहा	रूपचन्द	(हि०)	७४६
अध्यात्मपत्र	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	९९
अध्यात्मबत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	९९
अध्यात्मबारहखड़ी	कवि सूरत	(हि०)	९९
अनगारधर्मामृत	पं० आशाधर	(सं०)	४८
अनन्तगंठीवर्णन [मन्त्र सहित]	—	(सं०)	५७६
अनन्तचतुर्दशीकथा	—	(सं०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीकथा	मुनीन्द्रकीर्त्ति	(प्रा०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२१४
अनन्तचतुर्दशीपूजा	भ० मेरुचन्द	(सं०)	६०७
अनन्तचतुर्दशीपूजा	शान्तिदास	(सं०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	५५७,७६३
अनन्तचतुर्दशीपूजा	श्री भूषण	(हि०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं० हि०)	४५६
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६५
अनन्त के छप्पय	धर्मचन्द्र	(हि०)	७५७
अनन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४५६
अनन्तजिनपूजा	—	(हि०)	७५६
अनन्तनाथपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४२
अनन्तनाथपूजा	श्री भूषण	(सं०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	सेवग	(हि०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	—	(सं०)	४५६
अनन्तनाथपूजा	ब्र० शान्तिदास	(हि०)	६६०, ७६५
अनन्तनाथपूजा	—	(हि०)	४५७
अनन्तपूजा	—	(सं०)	५१६
अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य	—	(सं०)	४५७
अनन्तविधानकथा	—	(अप०)	६३३
अनन्तव्रतकथा	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अनन्तव्रतकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
अनन्तव्रतकथा	—	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
अनन्तव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२१४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तव्रतपूजा	श्री भूषण	(सं०)	५१५
अनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	४५७
			५३६, ६६३, ७२८
अनन्तव्रतपूजा	ब्र० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७
अनन्तव्रतपूजा	साह सेवगराम	(हि०)	४५७
अनन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८
			५११, ५८६, ७२८
अनन्तव्रतपूजाविधि	—	(सं०)	४५७
अनन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२१४
अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०
अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	(सं०)	४५७
			५१३, ५३६, ५४०
अनागारभक्ति	—	(सं०)	६२७
अनाथी ऋषि स्वाध्याय	—	(हि० गुज०)	३७६
अनाथानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५
अनाथीसाधु चौढालिया	विमलविनयगणि	(हि०)	६८०
अनाथीमुनि सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अनाथीमुनि सज्झाय	—	(हि०)	४३५
अनादिनिधनस्तोत्र	—	(सं०)	३७६, ६०४
अनिटकारिका	—	(सं०)	२५७
अनिटकारिकावचूरि	—	(सं०)	२५७
अनित्यपचीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८१
अनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५
अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८
अनुभवविलास	—	(हि०)	५११
अनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	४८
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	महीक्षपणकवि	(सं०)	२७१
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(सं०)	२७१
अनेकार्थनाममाला	नन्दकवि	(हि०)	७०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१ ७६६
अनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(सं०)	२७१
अनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनेकार्थसंग्रह [महीपकोश]	—	(सं०)	२७१
अन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
अन्तरिक्षपार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	५६०
अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	५७३
अन्यस्फुट पाठ संग्रह	—	(हि०)	६२७
अपराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६२
अबजदकेवली	—	(सं०)	२७६
अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(सं०)	३१६
अभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(सं०	२७१
अभिधानचिंतामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(सं०)	२७२
अभिधानसार	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२७२
अभिषेक पाठ	—	(सं०)	४५८
			५६५, ७६१
अभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४५८
अभिषेकविधि	—	(सं०)	३६८
			४५८, ५७०
अभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	२७२
अमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(सं०)	२७२
अमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
अमरुशतक	—	(सं०)	१६०
अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(सं०)	५८
अमृतसागर	म० सवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२२१
अरहना सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अरहन्तस्तवन	—	(सं०)	३०८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अरिष्टकर्त्ता	—	(सं०)	२७६
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	४५६
अरिहन्त केवलीपाशा	—	(सं०)	२७६
अर्थदीपिका	जिनभद्रगणि	(प्रा०)	१
अर्थप्रकाश	लङ्कानाथ	(सं०)	२९६
अर्थप्रकाशिका	सदासुख कासलीवाल	(हि० ग०)	१
अर्थसार टिप्पण	—	(सं०)	१७
अर्हत्प्रवचन	—	(सं०)	१
अर्हत्प्रवचन व्याख्या	—	(सं०)	२
अर्हनकचोढालियागीत	विमलविनय[विनयरंग]	(हि०)	४३५
अर्हद्भक्तिविधान	—	(सं०)	५७४, ६५८
अलङ्कारटीका	—	(सं०)	३०८
अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय वंशीधर	(हि०)	३०८
अलङ्कारवृत्ति	जिनवर्द्धन सूरि	(सं०)	३०८
अलङ्कारशास्त्र	—	(सं०)	३०८
अवंति पार्श्वनाथजिनस्तवन	हर्षसूरि	(हि०)	३७६
अव्ययप्रकरण	—	(सं०)	२५७
अव्ययार्थ	—	(सं०)	२५७
अशनसमितिस्वरूप	—	(प्रा०)	५७२
अशोकरोहिणीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६
अशोकरोहिणीव्रतकथा	—	(हि० ग०)	२१६
अश्वलक्षण	पं० नकुल	(हि०)	७८१
अश्वपरीक्षा	—	(सं०)	७८६
अषाढएकादशीमहात्म्य	—	(सं०)	२१५
अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	(सं०)	४६०
अष्टक [पूजा]	—	(हि०)	४६०, ७०१
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	१
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	९९
अष्टपाहुडभाषा	जयचन्द छाबडा	(हि० ग०)	९९
अष्टप्रकारीपूजा	देवचन्द	(हि०)	७६०
अष्टशती [देवागम स्तोत्र टीका]	अकलङ्कदेव	(सं०)	१२६
अष्टसहस्री	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१२६
अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१५
अष्टांगोपाख्यान	पं० मेधावी	(सं०)	२१५
अष्टादशसहस्रशीलभेद	—	(सं०)	६६१
अष्टाह्निकाकथा	यशःकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अष्टाह्निकाकथा	शुभचन्द	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकाकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
अष्टाह्निकाकथा	नथमल	(हि०)	२१५
अष्टाह्निका कौमुदी	—	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	६८६
अष्टाह्निका जयमाल	—	(सं०)	४५६
अष्टाह्निका जयमाल	—	(प्रा०)	४५६
अष्टाह्निकापूजा	—	(सं०)	४५६, ५७०, ६९६, ६५८, ७८४
अष्टाह्निकापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४६०, ७०५
अष्टाह्निकापूजा	—	(हि०)	४६१
अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६०
अष्टाह्निकाभक्ति	—	(सं०)	५६४
अष्टाह्निकाव्रतकथा	विनयकीर्त्ति	(हि०)	६१४, ७५०, ७६४
अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(सं०)	२१५
अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह	गुणचन्दसूरि	(सं०)	२१६
अष्टाह्निकाव्रतकथा	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६२२
अष्टाह्निकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(हि०)	२४७, ७२७
अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	(सं०)	४६१
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा	भ० शुभचन्द	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३९
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(हि०)	४६१
अंकुरारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४५३ ५१७
अंकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४५३
अंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	४५३
अंकुरारोपणमंडलचित्र			५२५
अञ्जनचोरकथा	—	(हि०)	२१५
अञ्जना को रास	धर्मभूषण	(हि०)	५६३
अञ्जनारास	शांतिकुशल	(हि०)	३६०
आ			
आकाशपञ्चमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
आकाशपञ्चमीकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
आकाशपञ्चमीकथा	—	(सं०)	२१६
आकाशपञ्चमीकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४५
आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
आकाशपञ्चमीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६
आगमपरीक्षा	—	(सं०)	३५५
आगमविलास	द्यानतराय	(हि०)	४९
आगामी त्रेसठशलाका पुरुष वर्णन	—	(हि०)	१४२
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	४९
आचारसार	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४९
आचारांगसूत्र	—	(प्रा०)	२
आचार्यभक्ति	—	(सं०)	६३३
आचार्यभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
आचार्यों का ब्यौरा	—	(हि०)	३७०
आठकोडिमुनिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६१
आतमशिक्षा	पद्मकुमार	(हि०)	६१९
आतमशिक्षा	प्रसन्नचन्द	(हि०)	६१९
आतमशिक्षा	राजसमुद्र	(हि०)	६१९
आतमशिक्षा	मालम	(हि०)	६१९
आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	—	(प्रा०)	२
आत्मध्यान	बनारसीदास	(हि०)	१००
आत्मनिन्दास्तवन	रत्नाकर	(सं०)	३८०
आत्मप्रबोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
आत्मसंबोध जयमाल	—	(हि०)	७५५
आत्मसंबोधन	द्यानतराय	(हि०)	७१४
आत्मसंबोधनकाव्य	—	(सं०)	१००
आत्मसंबोधनकाव्य	—	(अप०)	१००
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१००
आत्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
आत्मानुशासनभाषा	पं० टोडरमल	(हि० ग०)	१०२
आत्मावलोकन	दीपचन्द कासलीवाल	(,,)	१००
आत्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(सं०)	२९६
आदिजिनवरस्तुति	कमलकीर्त्ति	(हि०)	४३६
आदित्यवारकथा	—	(सं०)	६९९
आदित्यवारकथा	गंगाराम	(हि०)	७६५
आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०)	२४४ ६०१, ६८३, ६८५, ७२३, ७४०, ७४५, ७५६, ७६२
आदित्यवारकथा	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१२
आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	(हि०)	६०७
आदित्यवारकथाभाषा टीका	मूलकर्त्ता- सकलकीर्त्ति भाषाकार- सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं० हि०)	७०७
आदित्यवारकथा	—	(हि०)	६२३ ६७९, ७१३, ७१४, ७१८, ७४१
आदित्यवारपूजा	—	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आदित्यव्रतपूजा	—	(सं०)	४६१
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
आदित्यव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
आदित्यव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	४६१
आदित्यव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
आदिनाथकल्याणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७०७
आदिनाथ गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि०)	४३६
आदिनाथपूजा	मनहरदेव	(हि०)	५११
आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४६१ ६५०
आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	(हि०)	७६५
आदिनाथपूजा	सेवगराम	(हि०)	६७४
आदिनाथपूजा	—	(हि०)	४६२
आदिनाथ की विनती	—	(हि०)	७७४ ७५२
आदिनाथ विनती	कनककीर्त्ति	(हि०)	७२२
आदिनाथसज्झाय	—	(हि०)	४३६
आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	(हि०)	७३८
आदिनाथस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
आदिनाथाष्टक	—	(हि०)	५६४
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१४२ ६४६
आदिपुराण	पुष्पदन्त	(अप०)	१४३ ६४२
आदिपुराण	दौलतराम	(हि० ग०)	१४४
आदिपुराण टिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०)	१४३
आदिपुराण विनती	गङ्गादास	(हि०)	७०१
आदीश्वर आरती	—	(हि०)	५६४
आदीश्वरगीत	रङ्गविजय	(हि०)	७७६
आदीश्वर के १० भव	गुणचन्द	(हि०)	७६२
आदीश्वरपूजाष्टक	—	(हि०)	४६२
आदीश्वरफाग	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६०
आदीश्वररेखता	सहस्रकीर्त्ति	(हि०)	६८२
आदीश्वर का समवसरण	—	(हि०)	५६६
आदीश्वरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
आदीश्वरविज्ञप्ति	—	(हि०)	४३७
आद्रकुमारधमाल	कनकसोम	(हि०)	६१७
आध्यात्मिकगाथा	भ० लक्ष्मीचन्द	(अप०)	१०३
आनन्दलहरीस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६०८
आनन्दस्तवन	—	(सं०)	५१४
आप्तपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
आप्तमीमांसा	समन्तभद्राचार्य	(सं०)	१३०
आप्तमीमांसाभाषा	जयचन्द छावड़ा	(हि०)	१३०
आप्तमीमांसालङ्कृति	विद्यानन्दि	(सं०)	१३०
आमनीबू का झगड़ा	—	(हि०)	६६३
आमेर के राजाओंका राज्यकाल विवरण	—	(हि०)	७५६
आमेर के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	७५६
आयुर्वेदिक ग्रन्थ	—	(सं०)	२९७, ७६३
आयुर्वेदिक नुसखे	—	(सं०)	२९७, ५७६
आयुर्वेदिक नुसखे	—	(हि०)	६०१ ६६७, ६७७, ६६०, ६६६, ६६७, ७०१, ७०२, ७१४, ७१८, ७१६, ७२३, ७३०, ७३६, ७६०, ७६१, ७६६, ७६७, ७६६
आयुर्वेद नुसखो का संग्रह	—	(हि०)	२९६
आयुर्वेदमहोदधि	सुखदेव	(सं०)	२९७
आरती	—	(सं०)	६३५
आरती	द्यानतराय	(हि०)	६२१, ६२२
आरती	दीपचन्द	(हि०)	७७७
आरती	मानसिंह	(हि०)	७७७
आरती	लालचन्द	(हि०)	६२२
आरती	बिहारीदास	(हि०)	७७७
आरती	शुभचन्द	(हि०)	७७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आरती पञ्चपरमेष्ठी	पं० चिमना	(हि०)	७६१
आरती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६
आरती संग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६
आरती संग्रह	द्यानतराय	(हि०)	७७७
आरती सिद्धों की	खुशालचन्द	(हि०)	७७७
आराधना	—	(प्रा०)	४३२
आराधना	—	(हि०)	३८०
आराधना कथा कोश	—	(सं०)	२१६
आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६५८
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्त्ति	(हि०)	६८५
आराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०)	७८२
आराधना विधान	—	(सं०)	४६२
आराधनासार	देवसेन	(प्रा०)	४६
			५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४
आराधनासार	जिनदास	(हि०)	७५७
आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(सं०)	२१६
आराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६
आराधनासारभाषा	—	(हि०)	५०
आराधनासार वचनिका	बा० दुलीचन्द	(हि० ग०)	५०
आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	(सं०)	५०
आरामशोभाकथा	—	(सं०)	२१७
आलापपद्धति	देवसेन	(सं०)	१३०
आलोचना	—	(प्रा०)	५७२
आलोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०)	५६१
आलोचनापाठ	—	(हि०)	४२६
			६८५, ७६३, ७४६
आस्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	२
आस्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०)	७००
आस्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०)	२
आस्रव वर्णन	—	(हि०)	२
आषाढभूति चौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
आहार के ४६ दोषवर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०)	५०

इ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०)	२
इन्द्रजाल	—	(हि०)	३४७
इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६२
इन्द्रध्वजमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६२
इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०)	६६१
इष्टछत्तीसी	—	(हि०)	७६० ७६३
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(सं०)	३८०
इष्टोपदेशटीका	पं० आशाधर	(सं०)	३८०
इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०)	७५५
इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य)	३८०

ई

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ईश्वरवाद	—	(सं०)	१३१

उ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
उच्चग्रहफल	बलदत्त	(सं०)	२७६
उणादिसूत्रसंग्रह	उज्वलदत्त	(सं०)	२५७
उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४५ ४१५
उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०)	१४५
उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य)	१४५
उत्तरपुराणभाषा	संघी पन्नालाल	(हि० गद्य)	१४६
उत्तराध्ययन	—	(प्रा०)	२
उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०)	३
उदयसत्ताबंधप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	३
उद्धवगोपीसंवाद	रसिकरास	(हि०)	६१४
उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध	—	(सं०)	१६०
उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०)	३२४
उपदेशपच्चीसी	—	(हि०)	६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
उपदेशरत्नमाला	सकलभूषण	(सं०)	५०
उपदेशरत्नमाला	धर्मदासगणि	(प्रा०)	७५८
उपदेशरत्नमालागाथा	—	(प्रा०)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	देवीसिंह छाबडा	(हि० पद्य)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५१
उपदेशशतक	द्यानतराय	(हि०)	३२५ ७४७
उपदेशसज्झाय	देवादिल	(हि०)	३८१
उपदेशसज्झाय	रंगविजय	(हि०)	३८१
उपदेशसज्झाय	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३८०
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	भंडारी नेमिचन्द	(प्रा०)	५१
उपदेशसिद्धांतरत्नमालाभाषा	भागचन्द	(हि०)	५१
उपवासग्रहणविधि	—	(प्रा०)	४६३
उपवास के दश भेद	—	(सं०)	५७३
उपवासविधान	—	(हि०)	५७३
उपवासो का ब्यौरा	—	(हि०)	७०१
उपसर्गहरस्तोत्र	पूर्णचन्द्राचार्य	(सं०)	३८१
उपसर्गहरस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
उपसर्गार्थविवरण	बुधाचार्य	(सं०)	५२
उपांगललितव्रतकथा	—	(सं०)	२१७
उपाधिव्याकरण	—	(सं०)	२५७
उपासकाचार	—	(सं०)	५२
उपासकाचारदोहा	आ० लक्ष्मीचन्द्र	(अप०)	५२
उपासकाध्ययन	—	(सं०)	५२
उमेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	७३१
ऋ			
ऋणसम्बन्धकथा	अभयचन्द्रगणि	(प्रा०)	२१८
ऋतुसंहार	कालिदास	(सं०)	१६१
ऋद्धिमन्त्र	—	(सं०)	७२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ऋद्धिशतक	स्वरूपचन्द बिलाला	(हि०)	५२ ५११
ऋषभदेवस्तुति	जिनसेन	(सं०)	३८१
ऋषभदेवस्तुति	पद्मनन्दि	(प्रा०)	३८१ ५०६
ऋषभनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६०
ऋषभस्तुति	—	(सं०)	३८२
ऋषिमण्डल [चित्र]			५२४
ऋषिमण्डलपूजा	आ० गुणनन्दि	(सं०)	४६३ ५३७, ५३६, ७६२
ऋषिमण्डलपूजा	मुनि ज्ञानभूषण	(सं०)	४६३ ६३६
ऋषिमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६४ ७६१
ऋषिमण्डलपूजा	दौलत आसेरी	(हि०)	४६४
ऋषिमण्डलपूजा	—	(हि०)	७२७
ऋषिमण्डलपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७२६
ऋषिमण्डलमन्त्र	—	(सं०)	५६३
ऋषिमण्डलस्तवन	—	(सं०)	६४५, ६८३
ऋषिमण्डलस्तवनपूजा	—	(सं०)	६५८
ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	(सं०)	३८२ ४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२
ऋषिमण्डलस्तोत्र	—	(सं०)	३८२ ६६२
ए			
एकसौगुनहत्तर जीववर्णन	—	(हि०)	७४४
एकाक्षरकोश	क्षपणक	(सं०)	२७४
एकाक्षरनाममाला	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	वररुचि	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर]	—	(सं०)	३८२
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	(सं०)	२२४ ३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२, ५७५, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२, ६६४, ७२०, ७३७, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४०१
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	(हि०)	३८३
			४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३
एकश्लोकरामायण	—	(सं०)	६४६
एकश्लोकभागवत	—	(सं०)	६४६
औ			
औषधियों के नुसखे	—	(हि०)	४७५
क			
कक्का	गुलाबचन्द	(हि०)	६४३
कक्काबत्तीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६
कक्काबत्तीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२
कक्काबत्तीसी	मनराम	(हि०)	७२३
कक्काबत्तीसी	—	(हि०)	६५१
			६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१
कक्का विनती [बारहखड़ी]	धनराज	(हि०)	६२३
कच्छावतार [चित्र]			६०३
कछवाहा वंशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०
कछवाहा वंश के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	७६७
कठियार कानडरीचौपई	मानसागर	(हि०)	२१८
कथाकोश	हरिषेणाचार्य	(सं०)	२१६
कथाकोश [आराधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२१६
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२१६
कथाकोश	—	(सं०)	२१६
कथाकोश	—	(हि०)	२१६
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(सं०)	२२०
कथासंग्रह	—	(सं०)	२२०
कथासंग्रह	—	(सं० हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
कथासंग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(हि०)	७३७
कपडामाला का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
कमलाष्टक	—	(सं०)	६०७
कयवन्नाचौपई	जिनचन्द्रसूरि	(हि० रा०)	२२१
करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६१
करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
करणकौतूहल	—	(सं०)	२७६
करलक्खण	—	(प्रा०)	२७६
करुणाष्टक	पद्मनन्दि	(सं०)	६३३
			६३७, ६६८
करुणाष्टक	—	(हि०)	६४२
कर्णपिशाचिनीयन्त्र	—	(सं०)	६१२
कर्पूरचक्र	—	(सं०)	२७६
कर्पूरप्रकरण	—	(सं०)	३२५
कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(सं०)	३१६
कर्मप्र[illegible]सत्तरी	—	(प्रा०)	३
कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५
कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६२
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४६४, ५१६
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०६, ४६४, ५४०
कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६
कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(सं०)	५१०
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४६५
			५३७, ६४५
कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	४६५
			५१७, ५४०, ७६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	(हि०)	४६५
कर्मदहन [मण्डल चित्र]			५२५
कर्मदहन का मण्डल	—	(हि०)	६३८
कर्मदहनव्रतमन्त्र	—	(सं०)	३४७
कर्म नोकर्म वर्णन	—	(प्रा०)	६२६
कर्मपच्चीसी	भारमल	(हि०)	७६६
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	५, ७२०
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	६७०
कर्मप्रकृतिटीका	सुमतिकीर्त्ति	(सं०)	५
कर्मप्रकृति का व्यौरा	—	(हि०)	७१८
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	७०१
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि०)	५
			३६०, ६७७, ७४६
कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	(हि०)	६१७
कर्मयुद्ध की विनती	—	(हि०)	६६४
कर्मविपाक	—	(सं०)	२२१, ५६६
कर्मविपाकटीका	सकलकीर्त्ति	(सं०)	५
कर्मविपाकफल	—	(हि०)	२८०
कर्मराशिफल [कर्मविपाक]	—	(सं०)	२८०
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रसूरि	(प्रा०)	५
कर्महिण्डोलना	—	(हि०)	६२२
कर्मों की १४८ प्रकृतियां	—	(हि०)	७६०
कलशविधान	मोहन	(सं०)	४६६
कलशविधान	—	(सं०)	४६६
कलशविधि	—	(सं०)	४२८, ६१२
कलशविधि	विश्वभूषण	(हि०)	४६६
कलशाभिषेक	पं० आशाधर	(सं०)	४६७
कलशारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४६६
कलशारोपणविधि	—	(सं०)	४६६
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	भ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	४६७
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	(सं०)	६५८
कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५१७
कलिकुण्डपार्श्वनाथ [मंडलचित्र]			५२५
कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६
कलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	४६७
			४७५, ५१८, ५७४, ६०३, ६४०
कलिकुण्डपूजा और जयमाल	—	(प्रा०)	७६३
कलिकुण्डस्तवन	—	(सं०	६०७
कलिकुण्डस्तवन	—	(प्रा०)	६५५
कलिकुण्डस्तोत्र	—	(सं०)	४७५
कलियुग की कथा	केशव	(हि०)	६२२
कलियुग की कथा	द्वारकादास	(हि०)	७७३
कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	६१५
			६८५, ७८८
कल्किअवतार [चित्र]			६०३
कल्पद्रुमपूजा	—	(सं०)	६१५
कल्पसिद्धान्तसंग्रह	—	(प्रा०)	६
कल्पसूत्र	भद्रबाहु	(प्रा०)	६
कल्पसूत्र	भिक्खू अज्झयणं	(प्रा०)	६
कल्पसूत्रमहिमा	—	(हि०)	३८३
कल्पसूत्रटीका	समयसुन्दरोपाध्याय	(सं०)	७
कल्पसूत्रवृत्ति	—	(प्रा०)	७
कल्पस्थान [कल्पव्याख्या]	—	(सं०)	२६७
कल्याणक	समन्तभद्र	(प्रा०)	३८३
कल्याण [बडा]	—		५७६
कल्याणमञ्जरी	विनयसागर	(सं०)	३८४
कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	४०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(सं०)	३८४
			४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५
			५९५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०
			६८१, ६९३, ७०१, ७३१, ७६३
कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(सं० हि०)	६८१
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	३८५
			४२६, ५६६, ५९६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८,
			६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८९
			७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७९८
कल्याणमाला	पं० आशाधर	(सं०)	५७५, ३८५
कल्याणविधि	मुनि विनयचन्द्र	(प्रा०)	६४१
कल्याणाष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	५७४
कवलचन्द्रायणव्रतकथा	—	(सं०)	२२१, २४६
कविकर्पटी	—	(सं०)	३०९
कवित्त	अग्रदास	(हि०)	७६८
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२, ७८६
कवित्त	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२
कवित्त	छीहल	(हि०)	७७०
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५९
कवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
कवित्त	वृन्दावनदास	(हि०)	६८२
कवित्त	सन्तराम	(हि०)	६९२
कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कवित्त	सुन्दरदास	(हि०)	६४३
कवित्त	सेवग	(हि०)	७७२
कवित्त	—	(राज० डिंगल)	७७०
कवित्त	—	(हि०)	६८१
			७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१
कवित्त युगलखोर का	शिवलाल	(हि०)	७८२
कवित्तसंग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कविवल्लभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
कक्षपुट	सिद्धनागार्जुन	(सं०)	२९७
कातन्त्रटीका	—	(सं०)	२५७
कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(सं०)	२५८
कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	(सं०)	२५८
कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि	चारित्रसिंह	(सं०)	२५७
कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(सं०)	२५९
कादम्बरीटीका	—	(सं०)	१६१
कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कामशास्त्र	—	(हि०)	७३७
कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कारकप्रक्रिया	—	(सं०)	२५९
कारकविवेचन	—	(सं०)	२५९
कारकसमासप्रकरण	—	(सं०)	२५९
कारखानों के नाम	—	(हि०)	७५९
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्त्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	शुभचन्द्र	(सं०)	१०४
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	—	(सं०)	१०४
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि० गद्य)	१०४
कालचक्रवर्णन	—	(हि०)	७७०
कालीनागदमनकथा	—	(हि०)	७३८
कालीसहस्रनाम	—	(सं०)	६०८
काले बिच्छूके डङ्क उतारनेका मंत्र	—	(सं० हि०)	५७१
काव्यप्रकाशटीका	—	(सं०)	१६१
कासिम रसिकविलास	—	(हि०)	७७१
किरातार्जुनीय	महाकवि भारवि	(सं०)	१६१
कुगुरुलक्षण	—	(हि०)	५५
कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७
कुण्डलिया	अगरदास	(हि०)	६६०
कुदेवस्वरूपवर्णन	—	(हि०	७२०
कुमारसम्भव	कालिदास	(सं०)	१६२
कुमारसम्भवटीका	कनकसागर	(सं०)	१६२
कुवलयानन्द	अप्पय दीक्षित	(सं०)	३०८
कुवलयानन्द	—	(सं०)	३०८
कुवलयानन्दकारिका	—	(सं०)	३०६
कुशलस्तवन	जिनरङ्गसूरि	(हि०)	७७६
कुशलस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६
कुशलानुबंधि अज्झयणं	—	(प्रा०)	१०४
कुशीलखण्डन	जयलाल	(हि०)	५२
कुदन्तपाठ	—	(सं०)	२५६
कृपणछन्द	ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
कृपणछन्द	चन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६८६
कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	७३३
कृष्णप्रेमाष्टक	—	(हि०)	७३८
कृष्णबालविलास	श्री किशनलाल	(हि०)	४३७
कृष्णरास	—	(हि०)	७३८
कृष्णरुक्मणिवेलि	पृथ्वीराज राठौर	(राज० डिंगल)	७७०
कृष्णरुक्मणिवेलिटीका	—		७७०
कृष्णरुक्मणिवेलि हिन्दीटीका सहित	—	(हि०)	६५६
कृष्णरुक्मणिमङ्गल	पद्म भगत	(हि०)	२२१
कृष्णावतारचित्र	—		६०३
केवलज्ञान का ब्योरा		(हि०)	५३
केवलज्ञानीसज्झाय	विनयचन्द्र	(हि०)	३८५
कोकमञ्जरी	—	(हि०)	६५७
कोकशास्त्र	—	(सं०)	३५३
कोकसार	आनन्द	(हि०)	३५३
कोकसार	—	(हि०)	३५३, ६६६
कोकिलापञ्चमीकथा	ब्र० हर्ष	(हि०)	२२८
कौतुकरत्नमञ्जूषा	—	(हि०)	७८६
कौतुकलीलावती	—	(सं०)	२८०
कौमुदीकथा	आ० धर्मकीर्त्ति	(सं०)	२२२
कञ्जिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	४६८
कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
			४६८, ५१७
काञ्जीवारस (मण्डल चित्र)	—		५२५
काञ्जीव्रतोद्यापनमण्डलपूजा	—	(सं०)	५१३
क्रियाकलाप	—	(सं०)	५७६
क्रियाकलापटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	५३, ४३४
क्रियाकलापटीका	—	(सं०)	५३
क्रियाकलापवृत्ति	—	(प्रा०)	५३
क्रियाकोशभाषा	किशनसिंह	(हि०)	५३, ६१५
क्रियाकोशभाषा	—	(हि०)	५३
क्रियावादियों के ३६ भेद	—	(हि०)	६७१
क्रोधमानमायालोभ की सज्झाय	—	(हि०)	४४८
क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	(सं०)	१६२
क्षपणासारटीका	—	(सं०)	७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षपणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	७
क्षपणासारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	७
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
क्षमाबत्तीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि०)	५४
क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	(सं०)	५६४
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(सं०)	५१५
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द	(सं०)	७६३
क्षेत्रपाल की आरती	—	(हि०)	६०७
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द	(हि०)	६२३
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३
क्षेत्रपाल नामावली	—	(सं०)	३८६
क्षेत्रपालपूजा	मल्लिभद्र	(सं०)	६८६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	४६७
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०)	४६८
			५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७१३
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द	(हि०)	७७७
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०)	३४७
			५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७
क्षेत्रपालाष्टक	—	(सं०)	६५५
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(सं०)	२८०
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(सं०)	५४
क्षेत्रसमासप्रकरण	—	(प्रा०)	५४

ख

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
खड्गप्रशस्तिकाव्य	—	(सं०)	१६३
खण्डेलवालगोत्र	—	(हि०)	७५६
खण्डेलवालों के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०
खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
खण्डेलवालोकी उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
खण्डेला की वरचा	—	(हि०)	७०२
खण्डेला की वंशावलि	—	(हि०)	७५६
ख्याल गाडीवन्दका	—	(हि०)	२२२

ग

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गजपंथामण्डलपूजा	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६८
गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	(सं०)	१६३
गढाराशांतिकविधि	—	(सं०)	६१२
गणधरचरणारविंदपूजा	—	(सं०)	४६६
गणधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
गणधरवलयपूजा	शुभचन्द	(सं०)	६६०
गणधरवलयपूजा	आशाधर	(सं०)	७६१
गणधरवलयपूजा	—	(सं०)	४६६
			५१४, ६३६, ६४५, ७६१
गणधरवलय [मण्डलचित्र]	—		५२५
गणधरवलयमन्त्र	—	(सं०)	६०७
गणधरवलयमन्त्रमंडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
गणपाठ	वादिराज जगन्नाथ	(सं०)	२५६
गणसार	—	(सं०)	५४
गणितनाममाला	—	(सं०)	३६८
गणितशास्त्र	—	(सं०)	३६८
गणितसार	हेमराज	(हि०)	३६८
गणेशछन्द	—	(हि०)	७५३
गणेशद्वादशनाम	—	(सं०)	६४६
गर्गमनोरमा	—	(सं०)	२८०
गर्गसंहिता	गर्गऋषि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गर्भकल्याणकक्रियामें भक्तियां	—	(हि०)	५७३
गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	(सं०)	१३१, ७३७
गिरनारक्षेत्रपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४०६
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१३
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५१८
गिरिनारयात्रावर्णन	—	(हि०)	७६६
गीत	कवि पल्ह	(हि०)	७३८
गीत	धर्मकीर्त्ति	(हि०)	७४३
गीत	पांडे नाथूराम	(हि०)	६२२
गीत	विद्याभूषण	(हि०)	६०७
गीत	—	(हि०)	७४३
गीतगोविंद	जयदेव	(सं०)	१६३
गीतप्रबन्ध	—	(सं०)	३८६
गीतमहात्म्य	—	(सं०)	६७७
गीतवीतराग	अभिनवचारुकीर्त्ति	(सं०)	३८६
गुणबेलि [चन्दनवाला गीत]	—	(हि०)	६२३
गुणवेलि	—	(हि०)	६४८
गुणमञ्जरी	—	(हि०)	७१६
गुणस्तवन	—	(सं०)	३२७
गुणस्थानगीत	श्रीवर्द्धन	(हि०)	७६३
गुणस्थानक्रमारोहसूत्र	रत्नशेखर	(सं०)	८
गुणस्थानचर्चा	—	(प्रा०)	८, ६२८
गुणस्थानचर्चा	चन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	८
गुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	७५१
गुणस्थानचर्चा	—	(सं०)	८
गुणस्थानप्रकरण	—	(सं०)	८
गुणस्थानभेद	—	(सं०)	८
गुणस्थानमार्गणा	—	(हि०)	८
गुणस्थानमार्गणा रचना	—	(सं०)	८
गुणस्थानवर्णन	—	(सं०)	६
गुणस्थानवर्णन	—	(हि०)	६
गुणस्थानव्याख्या	—	(सं०)	५७३
गुणाक्षरमाला	मनराम	(हि०)	७५०
गुरावली	—	(सं०)	६२८, ६८६
गुरुअष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७७७
गुरुछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६
गुरुजयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८, ६८५, ७६१
गुरुदेव की विनती	—	(हि०)	७०२
गुरुनामावलिछन्द	—	(हि०)	३८६
गुरुपारतन्त्र एवं समस्मरण	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
गुरुपूजा	जिनदास	(हि०)	५३७
गुरुपूजाष्टक	—	(सं०)	६४६
गुरुसहस्रनाम	—	(सं०)	३८७
गुरुस्तवन	शांतिदास	(सं०)	६५७
गुरुस्तुति	—	(सं०)	६०७
गुरुस्तुति	भूधरदास	(हि०)	१५, ४३७, ४४७, ६१८, ६४२, ६६३, ७८४
गुरुओं की विनती	—	(हि०)	७०४
गुरुओं की स्तुति	—	(सं०)	६२३
गुर्वाष्टक	वादिराज	(सं०)	६५७
गुर्वावलि	—	(सं०)	५६५, ६३३
गुर्वावलीपूजा	—	(सं०)	५१६
गुर्वावलीवर्णन	—	(हि०)	३७१
गोकुलगावकीलीला	—	(हि०)	३६८
गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकांड] टीका	कनकनन्दि	(सं०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकांड] टीका	ज्ञानभूषण	(सं०)	१२
गोम्मटसार [कर्मकांड] टीका	—	(सं०)	१३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	१३
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा	हेमराज	(हि०)	१३
गोम्मटसार [जीवकांड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	६
गोम्मटसार [जीवकांड] (तत्वप्रदीपिका)		(सं०)	१२
गोम्मटसार [जीवकांड] भाषा	टोडरमल	(हि०)	१०
गोम्मटसारटीका	धर्मचन्द्र	(सं०)	६
गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	(सं०)	१०
गोम्मटसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	१०
गोम्मटसारपीठिकाभाषा	टोडरमल	(हि०)	११
गोम्मटसारवृत्ति	केशववर्णी	(सं०)	१०
गोम्मटसारवृत्ति	—	(सं०)	१०
गोम्मटसार संदृष्टि	पं० टोडरमल	(हि०)	१२
गोम्मटसारस्तोत्र	—	(सं०)	३८७
गोरखपदावली	गोरखनाथ	(हि०)	७६७
गोरखसंवाद	—	(हि०)	७६४
गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	(सं०)	७३३
गौडीपार्श्वनाथस्तवन	जोधराज	(राज०)	६१७
गौडीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७ ६१६
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(प्रा०)	१४
गौतमकुलक	—	(प्रा०)	१४
गौतमपृच्छा	—	(प्रा०)	६४३
गौतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
गौतमरासा	—	(हि०)	७५४
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(सं०)	१६३
गौतमस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(सं०)	१६३
गौतमस्वामीरास	—	(हि०)	६१७
गौतमस्वामीसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
गौतमस्वामी सज्झाय	—	(हि०)	६१८
गंधकुटीपूजा	—	(सं०)	५१७
ग्यारह अंग एवं चौदह पूर्व का वर्णन	—	(हि०)	६२६
गृहप्रवेश विचार	—	(सं०)	५७१
गृहबिंबलक्षण	—	(सं०)	५७६
ग्रहदशावर्णन	—	(सं०)	२८०
ग्रहफल	—	(हि०)	६६४
ग्रहफल	—	(सं०)	२८७
ग्रहों की ऊंचाई एवं आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६

घ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
घटकर्परकाव्य	घटकर्पर	(सं०)	१६४
घघरनिसाणी	जिनहर्ष	(सं०)	१८७, ७३४
घण्टाकर्णकल्प	—	(सं०)	३४७
घण्टाकर्णमन्त्र	—	(सं०)	३४७
घण्टाकर्णमन्त्र	—	(हि०)	६५०, ७६२
घण्टाकर्णवृद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८

च

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चउबीसीठाणाचर्चा	—	(हि०)	७००
चउसरणप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
चक्रवर्ति की बारहभावना	—	(हि०)	१०५
चक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
			३८७, ४३२, ४२८, ६४७
चतुर्गति की पद्धडी	—	(अप०)	६४२
चतुर्दशगुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	६८४
चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	६७२
चतुर्दशमार्गणाचर्चा	—	(हि०)	६७१
चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
चतुर्दशांगबाह्यविवरण	—	(सं०)	१४
चतुर्दशीकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्दशीकथा	डालूराम	(हि०)	७४२
चतुर्दशीविधानकथा	—	(सं०)	२२२
चतुर्दशीव्रतपूजा	—	(सं०)	४६६
चतुर्विधध्यान	—	(सं०)	१०५
चतुर्विंशति	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०१
चतुर्विंशतिगुणस्थानपीठिका	—	(सं०)	१८
चतुर्विंशतिजयमाल	यति माघनंदि	(सं०)	४६६
चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	७२६
चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि०)	६१६
चतुर्विंशतिजिनस्तुति	जिनलाभसूरि	(सं०)	३८७
चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	(सं०)	५७८
चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल	—	(प्रा०)	३८७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	४७०, ६४५
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	नेमीचन्द पाटनी	(हि०)	४७२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	बख्तावरलाल	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४७१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सुगनचन्द	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सेवाराम साह	(हि०)	४७०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	४७३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	हेमविमलसूरि	(हि०)	४३७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	कमलविजयगणि	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	चन्द	(हि०)	७२०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	समन्तभद्र	(सं०)	६४७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	—	(सं०)	३८८ ६२८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	माघनन्दि	(सं०)	३८८ ५७६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५६४
चतुर्विंशतिपूजा	—	(हि०)	४७१
चतुर्विंशतियज्ञविधान	—	(हि०)	३४८
चतुर्विंशतिविनती	चन्दकवि	(हि०)	६८५
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३१
चतुर्विंशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८
चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०१
चतुर्विंशतिस्तवन	—	(सं०)	३८७ ४२६
चतुर्विंशतिस्तुति	—	(प्रा०)	७७८
चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०)	७७६
चतुर्विंशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि०)	४२६
चतुश्लोकीगीता	—	(सं०)	६७६
चतुःषष्ठीस्तोत्र	—	(सं०)	६६२
चतुष्पदीस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चन्दकथा	लक्ष्मण	(हि०)	५४८
चन्दकुंवर की वार्ता	—	(हि०)	७३४
चन्दनबालारास	—	(हि०)	३६१
चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि०)	२२३
चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	(हि०)	२२३
चन्दनमलयागिरीकथा	—	(हि०)	७४८
चन्दनषष्ठिकथा	ब्र० श्रुतसागर	(सं०)	२२४, ५१४
चन्दनषष्ठिकथा	—	(सं०)	२२४
चन्दनषष्ठिकथा	प० हरिचन्द	(अप०)	२४३
चन्दनषष्ठीपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
चन्दनषष्ठीविधानकथा	—	(अप०)	२४६
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	आ० छत्रसेन	(सं०)	६३१
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२२४ २४४, २४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	(सं०)	५०६
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७३
चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	—	(सं०)	४७४
चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४
चन्दनाचरित्र	मोहनविजय	(गु०)	७६१
चन्द्रकीर्तिछन्द	—	(हि०)	३८६
चन्द्रकुंवर की वार्त्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३
चन्द्रकुंवरकी वार्त्ता	—	(हि०)	७११
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८, ७२३, ७३८
चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्नोंका फल	—	(हि०)	६२१
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६
चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(सं०)	१६४
चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनन्दि	(सं०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४
चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(अप०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	यशःकीर्त्ति	(अप०)	१६५
चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	१६६
चन्द्रप्रभचरित्रपंजिका	—	(सं०)	१६५
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४७४
चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४
चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६
चन्द्रप्रभपूजा	—	(सं०)	५०६
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१
चन्द्रवरदाई की वार्त्ता	—	(हि०)	६७६
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३
चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	(हि०)	२२४, ६३६
चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४
चन्द्रावलोक	—	(सं०)	३०६
चन्द्रोन्मीलन	—	(सं०)	२५६
चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४
चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११, ६६३, ७५६
चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७
चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५
चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५
चरचावर्णन	—	(हि०)	१५
चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४, ६६४, ७६४
चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५, ६०६, ६४६, ७३३
चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६
चर्चासागर	—	(हि०)	१६
चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६
चर्चासार	—	(हि०)	१६
चर्चासंग्रह	—	(सं० हि०)	१५
चर्चासंग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०
चहुंगति चौपई	—	(हि०)	७६२
चाणक्यनीति	चाणक्य	(सं०)	३२६, ७२३, ७६८
चाणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७
चाणक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(सं०)	३२७
चांदनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५४८
चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३८८
चामुण्डोपनिषद्	—	(सं०)	६०८
चारभावना	—	(सं०)	५५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चारमाहकी पञ्चमी [मंडलचित्र]	—		५२५
चारमित्रो की कथा	अजयराज	(हि०)	२२५
चारित्रपूजा	—	(सं०)	६५८
चारित्रभक्ति	—	(सं०)	६२७, ६३३
चारित्रभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
चारित्रशुद्धिविधान	श्रीभूषण	(सं०)	४७४
चारित्रशुद्धिविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५
चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	(सं०)	४७५
चारित्रसार	श्रीमच्चामुण्डराय	(सं०)	५५
चारित्रसार	—	(सं०)	५६
चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	(हि०)	५६
चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	(हि०)	१६७
चारुदत्तचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१६६
चारुदत्तचरित्र	भारामल्ल	(हि०)	१६८
चारों गतियोंकी आयु आदिका वर्णन		(हि०)	७६३
चिकित्सासार	—	(हि०)	२६८
चिकित्सांजनम	उपाध्याय विद्यापति	(सं०)	२६८
चित्र तीर्थङ्कर	—		५६४
चित्रबन्धस्तोत्र	—	(सं०)	३८६ ४२६
चित्रसेनकथा	—	(सं०)	२२५
चिद्रूपभास	—	(हि०)	७०७
चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८
चिंतामणिजयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६५५
चिंतामणिजयमाल	मनरथ	(हि०)	६४४
चिन्तामणिपार्श्वनाथ [मण्डलचित्र]			५२४
चिन्तामणिपार्श्वनाथजयमाल	सोम	(अप०)	७६२
चिन्तामणिपार्श्वनाथजयमालस्तवन	—	(सं०)	३८८
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५, ६०६, ६४५, ७४५
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४२३
चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजास्तोत्र	—	(सं०)	५६७
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६४५
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचन्द	(राज०)	६१७
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४५१
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	५६३, ६१४, ६५०
चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्र [मंत्र सहित]		(सं०)	३८८
चिन्तामणिपूजा [बृहद्]	विद्याभूषणसूरि	(सं०)	४७५
चिन्तामणिपूजा	—	(सं०)	६४७
चिन्तामणियन्त्र	—	(सं०)	३४८
चिन्तामणिमन्त्र	—	(सं०)	५६४
चिन्तामणिस्तवन	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७६१
चिन्तामणिस्तोत्र	—	(सं०)	३४८, ४७५, ६४५
चिद्विलास	दीपचन्द कासलीवाल	(हि०)	१०५
चूनडी	विनयचन्द्र	(अप०)	६४१
चूनडीरास	विनयचन्द्र	(अप०)	६२८
चूर्णाधिकार	—	(सं०)	२६७
चेतनकर्मचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६०५, ६८६
चेतनगीत	जिनदास	(हि०)	७६२
चेतनगीत	मुनि सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
चेतनचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६१३, ६४८, ७४०
चेतनढाल	फतेहमल	(हि०)	४५२
चेतननारीसज्झाय	—	(हि०)	६१६
चेतावनीगीत	नाथू	(हि०)	७५७
चेलनासज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	४३७
चैत्यपरिपाटी	—	(हि०)	४३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०
चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	(सं०)	६६८
चैत्यवंदना	—	(सं०)	३८६
			३६२, ६५०, ७१८
चैत्यवंदना	—	(हि०)	४२६, ४३७
चौआराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५
चौतीस अतिशयभक्ति	—	(सं०)	६२७
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२
चौदहगुणस्थानचर्चा	अखयराज	(हि०)	१६
चौदहपूजा	—	(सं०)	४७६
चौदहमार्गणा	—	(हि०)	१६
चौदहविद्या तथा कारखाने जातके नाम	—	(हि०)	७५६
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्दसूरि	(हि०)	६१६
चौबीसजिनंदजयमाल	—	(प्रा०)	६३७
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द	(हि०)	४३७
चौबीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१८, ७६५
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६
			७२०, ६६६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(सं०)	१८
चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७
चौबीसतीर्थङ्करपरिचय	—	(हि०)	५६४
			६२१, ७००, ७५१
चौबीसतीर्थङ्करपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६
			७१२, ७२७, ७७२
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७
चौबीसतीर्थङ्करभक्ति	—	(सं०)	६०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
चौबीसतीर्थङ्कररास	—	(हि०)	७२२
चौबीसतीर्थङ्करवर्णन	—	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	देवनन्दि	(सं०)	६०६
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	लूणकरणकासलीवाल	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(प्रा०)	६२५
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६४
चौबीसतीर्थङ्करों के चिह्न	—	(सं०)	६२३
चौबीसतीर्थङ्करोंके पञ्चकल्याणक की तिथियां	—	(हि०)	५३८
चौबीसतीर्थङ्करों की वंदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
			४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०
चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसीमहाराज [मंडलचित्र]	—		५२४
चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द	(हि०)	६४६
चौबीसीस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसीस्तुति	—	(हि०)	४३७, ७७३
चौरासीआसादना	—	(हि०)	५७
चौरासीगीत	—	(हि०)	६८०
चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौरासीजातिकी जयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३७०
चौरासीजातिछन्द	—	(हि०)	३७०
चौरासी जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौरासीजाति भेद	—	(हि०)	७४८
चौरासीजातिवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौरासीन्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौरासीन्यातमाला	ब्र० जिनदास	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चौरासीबोल	कवरपाल	(हि०)	७०१
चौरासीलाखउत्तरगुण	—	(हि०)	५७
चौसठऋद्धिपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४७६
चौसठकला	—	(हि०)	६०६
चौसठयोगिनीयन्त्र	—	(सं०)	६०३
चौसठयोगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८, ४२४
चौसठशिवकुमारकाजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	५१४

छ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
छठा आरा का विस्तार	—	(हि०)	३७०
छत्तीस कारखानोंके नाम	—	(हि०)	६८०
छहढाला	किशन	(हि०)	६७४
छहढाला	द्यानतराय	(हि०)	६५२
			५७३, ६७४, ७४७
छहढाला	दौलतराम	हि०	५७
			७०७, ७४६
छहढाला	बुधजन	(हि०)	५७
छातीसुखकी औषधि का नुसखा	—	(हि०)	५७३
छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर [मंडलचित्र]	—		५२५
छियालीसगुण	—	हि०	५६४
छियालीसठाणा	ब्र० रायमल्ल	सं०	७६५
छियालीसठाणाचर्चा	—	(सं०	१६
छेदपिण्ड	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	५७
छोटादर्शन	बुधजन	(हि०)	३९८
छोतीनिवारणविधि	—	(हि०)	४७६
छंदकीयकवित्त	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	३५५
छंदकोश	—	(सं०)	३१०
छंदकोश	रत्नशेखरसूरि	(सं०)	३०९
छंदशतक	वृन्दावनदास	(हि०)	३२७
छंदशिरोमणि	सोमनाथ	(हि०)	३५५
छंदसंग्रह	—	(हि०)	३८९
छंदानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	३०९
छंदशतक	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३०९

ज

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जकडी	दरिगह	(हि०)	७५५, ६६१
जकडी	द्यानतराय	(हि०)	६४३
			६५०, ७१६
जकडी	देवेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२१
जकडी	नेमिचन्द	(हि०)	६६२
जकडी	रामकृष्ण	(हि०)	४२८
जकडी	रूपचन्द	(हि०)	६५०
			६६१, ७५२, ७५५
जकडी	—	(हि०)	७६३
जगन्नाथनारायणस्तवन	—	(हि०)	६०१
जगन्नाथाष्टक	शङ्कराचार्य	(सं०)	३८६
जन्मकुंडली [महाराजा सवाई जगतसिंह]	—	सं०	७७९
जन्मकुंडलीविचार	—	(हि०)	६०३
जन्मपत्री दीवाण आनन्दीलाल	—	(हि०)	७६०
जम्बूकुमारसज्भाय	—	(हि०)	४३८
जम्बूद्वीपपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४७७
			५०९, ५३७
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१९
जम्बूद्वीपफल	—	(सं०)	१९
जम्बूद्वीप सम्बन्धी पञ्चमेरुवर्णन	—	(हि०)	७६९
जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	१६८
जम्बूस्वामीचरित्र	पं० राजमल्ल	(सं०)	१६९
जम्बूस्वामीचरित्र	विजयकीर्त्ति	(हि०)	१६९
जम्बूस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१६९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१९९
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६
जम्बूस्वामीचौपई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५
जयतिहुवरगस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०
जयपुरके मंदिरोंकी वंदना	स्वरूपचन्द	(हि०)	४३८, ५३८
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३
जयमाल	रायचन्द	(हि०)	४७७
जलगालणरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(सं०)	४७७
जलयात्रा	ब्र० जिनदास	(सं०)	६८३
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७
जलयात्राविधान	पं० आशाधर	(सं०)	४७७
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७८
जलालगाहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७९३
जातकवर्णन	—	(सं०)	५७४
जाप्य इष्ट अनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(सं०)	५५५
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७७८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८
जिनगुणउद्यापन	—	(हि०)	६३८
जिनगुणपचीसी	सेवगराम	(हि०)	४४७
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३९०
जिनगुणसंपत्ति [मंडलचित्र]	—		५२४
जिनगुणसंपत्तिकथा	—	(सं०)	२२५, २४६
जिनगुणसंपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	(सं०)	५३७
जिनगुणसंपत्तिपूजा	रत्नचन्द	(सं०)	४७७, ५११
जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५३६
जिनगुणस्तवन	—	(सं०)	५७५
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिनचन्द्र	(सं०)	५५७
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	४३३
जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
जिनचरित्रकथा	—	(सं०)	१९९
जिनचैत्यवंदना	—	(सं०)	३९०
जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५९४
जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	५७८
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१९९
जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जिनदत्त चौपई	रल्ह कवि	(हि०)	६८२
जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जिनदर्शनस्तुति	—	(सं०)	४२४
जिनदर्शनाष्टक	—	(सं०)	३९०
जिनपचीसी	नवलराम	(हि०)	६५१, ६६३, ७०४, ७२५, ७५५
जिनपचीसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनपिंगलछंदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनपुरन्दरव्रतपूजा	—	(सं०)	४७८
जिनपूजापुरन्दरकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्त्ति	(अप०)	२४६
जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(सं०)	४७८
जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(सं०)	३९०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०)	३६० ४२४, ४३१, ४३३, ६४७, ६४८, ६६३
जिनपञ्जरस्तोत्रभाषा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
जिनभक्तिपद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	४३८, ६२१
जिनमुखावलोकनकथा	—	(सं०)	२४६
जिनयज्ञकल्प [प्रतिष्ठासार]	पं० आशाधर	(सं०)	४७८ ६०८, ६३६, ६६७, ७६१
जिनयज्ञविधान	—	(सं०)	४७६, ६५५
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	(हि०)	४४७
जिनराजमहिमास्तोत्र	—	(हि०)	५७६
जिनरात्रिविधानकथा	—	(सं०)	२४२
जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	(अप०)	६२८
जिनरात्रिविधानकथा	—	(अप०)	२४६, ६३१
जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
जिनलाडू	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७३८
जिनवरकी विनती	देवापांडे	(हि०)	६८५
जिनवर वर्णन	पद्मनन्दि	(प्रा०)	३६०
जिनवरव्रतजयमाल	ब्र० गुलाल	(हि०)	३६०
जिनवरस्तुति	—	(हि०)	७६७
जिनवरस्तोत्र	—	(सं०)	३६०, ५७८
जिनवाणीस्तवन	जगतराम	(हि०)	३६०
जिनशतकटीका	नरसिंह	(सं०)	३६१
जिनशतकटीका	शम्बुसाधु	(सं०)	३६०
जिनशतकालङ्कार	समन्तभद्र	(सं०)	३६१
जिनशासनभक्ति	—	(प्रा०)	६३८
जिनसतसई	—	(हि०)	७०६
जिनसहस्रनाम	पं० आशाधर	(सं०)	३६१ ५४०, ५६६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६४७, ६५५, ६५८, ६८३, ६८६, ६६२, ७१२, ७१५, ७२०, ७५२, ७४० ।
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०)	३६३ ४२५, ५७३, ७०७, ७४७
जिनसहस्रनाम	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	३६३
जिनसहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	३६३
जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	(हि०)	६६०, ७४६
जिनसहस्रनामभाषा	नाथूराम	(हि०)	३६३
जिनसहस्रनामटीका	अमरकीर्त्ति	(सं०)	३६३
जिनसहस्रनामटीका	श्रुतसागर	(सं०)	३६३
जिनसहस्रनामटीका	—	(सं०)	३६३
जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	४८०
जिनसहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५१०
जिनसहस्रनामपूजा	चैनसुख लुहाड़िया	(हि०)	४८०
जिनसहस्रनामपूजा	स्वरूपचन्द बिलाला	(हि०)	४८०
जिनस्नपन [अभिषेकपाठ]	—	(सं०)	४७६, ५७४
जिनसहस्रनामपूजा	—	(हि०)	४८१
जिनस्तवन	कनककीर्त्ति	(हि०)	७७६
जिनस्तवन	दौलतराम	(हि०)	७०७
जिनस्तवनद्वात्रिंशिका	—	(सं०)	३६१
जिनस्तुति	शोभनमुनि	(सं०)	३६१
जिनस्तुति	जोधराज गोदीका	(हि०)	४७६
जिनस्तुति	रूपचन्द	(हि०)	७०२
जिनसंहिता	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७६३
जिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
जिनान्तर	वीरचन्द्र	(हि०)	६२७
जिनाभिषेकनिर्णय	—	(हि०)	४८१
जिनेन्द्रपुराण	भ० जिनेन्द्रभूषण	(सं०)	१४६
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	—	(हि०)	४२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनेन्द्रस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
जिनोपदेशोपकारस्मरस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३६३
जीवकायासज्झाय	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१६
जीवकायासज्झाय	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
जीवजीतसंहार	जैतराम	(हि०)	२२५
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१७०
जीवन्धरचरित्र	नथमल बिलाला	(हि०)	१७०
जीवन्धरचरित्र	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७१
जीवन्धरचरित्र	—	(हि०)	१७१
जीवविचार	मानदेवसूरि	(प्रा०)	६१६
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२
जीव वेलड़ी	देवीदास	(हि०)	७५७
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६
जीवस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	१६
जीवाजीवविचार	—	(सं०)	१६
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(सं०)	३४८
जैनपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	६७०, ६७५, ६६४
जैनबद्री मूडबद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	१७०
जैनबद्री देशकी पत्रिका	मजलसराय	(हि०)	७०३, ७१८
जैनमतका संकल्प	—	(हि०)	५६२
जैनरक्षास्तोत्र	—	(सं०)	६४७
जैनविवाहपद्धति	—	(सं०)	४८१
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
			४२१, ६५२, ६७०, ६८६, ६६८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२, ७५४
जैनसदाचार मार्त्तण्डनामक पत्रका प्रत्युत्तर	बा० दुलीचन्द	(हि०)	२०
जैनागारप्रक्रिया	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५७
जैनेन्द्रमहावृत्ति	अभयनन्दि	(सं०)	२६०
जैनेन्द्रव्याकरण	देवनन्दि	(सं०)	२५६
जोगीरासो	पांडे जिनदास	(हि०)	१०५, ६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०३, ७२३, ७४५, ७६१
जोधराजपच्चीसी	—	(हि०)	७६०
ज्येष्ठजिनवर [मंडलचित्र]	—		५२५
ज्येष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०६
ज्येष्ठजिनवरकथा	—	(सं०)	२२५
ज्येष्ठजिनवरकथा	जसकीर्त्ति	(हि०)	२२५
ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	७६५
ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१६
ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(सं०)	४८१
ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७
ज्येष्ठजिनवरलाहान	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४, ७३१
ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा	—	(सं०)	४८१
ज्येष्ठपूर्णिमाकथा	—	(हि०)	६८२
ज्योतिषचर्चा	—	(सं०)	५६७
ज्योतिष	—	(सं०)	७१४
ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	(सं०)	६७२
ज्योतिषशास्त्र	—	(सं०)	६६५
ज्योतिषसार	कृपाराम	(हि०)	५६८
ज्वरचिकित्सा	—	(सं०)	२६८
ज्वरतिमिरभास्कर	चामुण्डराय	(सं०)	२६८
ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
			४२८, ४३३, ५६१, ६०८, ६४६, ६४७, ६४६
ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	(हि०)	५८
			७१४, ७३६
ज्ञानदर्पण	साह दीपचन्द	(हि०)	१०५
ज्ञानदीपक	—	(हि०)	१३०, ६६०
ज्ञानदीपकवृत्ति	—	(हि०)	१३१
ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	हि०)	६१४
			६३४, ६५०, ६८५, ६८६, ७४३, ७७५
ज्ञानपच्चीसीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	४३८
ज्ञानपदवी	मनोहरदास	(हि०)	७१८
ज्ञानपञ्चविंशतिका व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४८१
			५३६
ज्ञानपञ्चमीवृहद्स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६
ज्ञानपिण्डकी विंशतिपद्धडिका	—	(अप०)	६३५
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	६५८
ज्ञानपैडी	मनोहरदास	(हि०)	७५७
ज्ञानबावनी	मतिशेखर	(हि०)	७७२
ज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	३१६
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	पारसदास निगोत्या	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	बखतावरमल	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भगवतीदास	(हि०)	३१७
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भागचंद	(हि०)	३१७
ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	(हि०)	७५६
ज्ञानस्वरोदय	—	(हि०)	७५६
ज्ञानानन्द	रायमल्ल	(हि०)	५८
ज्ञानबावनी	बनारसीदास	(हि०)	१०५
ज्ञानसागर	मुनि पद्मसिंह	(प्रा०)	१०५
ज्ञानांकुश	—	(सं०)	६३५
ज्ञानांकुशपाठ	भद्रबाहु	(सं०)	४२०
ज्ञानांकुशस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
ज्ञानार्णव	शुभचन्द्राचार्य	(सं०)	१०६
ज्ञानार्णवटीका [गद्य]	श्रुतसागर	(सं०)	१०७
ज्ञानार्णवटीका	नयाविलास	(सं०)	१०८
ज्ञानार्णवभाषा	जयचंद छाबड़ा	(हि०)	१०८
ज्ञानार्णवभाषाटीका	लब्धि विमलगणि	(हि०)	१०८
ज्ञानोपदेश के पद्य	—	(हि०)	६६२
ज्ञानोपदेशबत्तीसी	—	(हि०)	६६२

झ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
झखडी श्री मन्दिरजी की	—	(हि०)	४३८
झाडा देनेका मन्त्र	—	(हि०)	५७१
झाझरियानु चोढाल्या	—	(हि०)	४३८
झूलना	गंगाराम	(हि०)	७५७

ट–ठ–ड–ढ–ण

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
टंडाणागीत	बूचराज	(हि०)	७५०
ठाणांग सूत्र	—	(सं०)	२०
डोकरी अर राजा भोजराज की वार्ता		(हि०)	६६५
ढाढसी गाथा	—	(प्रा०)	६२८
ढाढसी गाथा	ढाढसी मुनि	(प्रा०)	७०७
ढालगण	—	(हि०)	३२७
ढाल मङ्गलमकी	—	(हि०)	६५५
ढोला मारूणी की बात	—	(हि०)	२२६, ६००
ढोला मारूणी की वार्त्ता	—	(हि०)	७११
ढोला मारूवणी चौपाई	कुशल लाभ	(हि०) राज०	२२५
णवकार पंचविंशति पूजा	—	(सं०)	५१०
णमोकारकल्प	—	(सं०)	३४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
णमोकारछंद	ब्र० ज्ञानसागर	(हिं०)	६८३
णमोकारपच्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हिं०)	४३६
णमोकारपाणडीजयमाल	—	(अप०)	६३७
णमोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	(सं०)	५१७, ४८२, ६७६
णमोकारपैंतीसी	—	(प्रा०)	३४८
णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	(सं०)	४८२, ५१७, ५३६
मोकारपंचासिकापूजा	—	(सं०)	५४०
णमोकारमंत्र कथा	—	(हिं०)	२२६
णमोकारस्तवन	—	(हिं०)	३६४
णमोकारादि पाठ	—	(प्रा०)	३६४
णाणपिण्ड	—	(अप०)	६४२
णेमिणाहचरिउ	लक्ष्मणदेव	(अप०)	१७१
णेमिणाहचरिउ	दामोदर	(अप०)	१७१

त

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(सं०)	३६४
तत्वकौस्तुभ	पन्नालाल संघी	(हिं०)	१०
तत्वज्ञानतरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(सं०)	५८
तत्वदीपिका	—	(हिं०)	२०
तत्वधर्मामृत	—	(सं०)	३२८
तत्वबोध	—	(सं०)	१०८
तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(सं०)	२०२
तत्वसार	देवसेन	(प्रा०)	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७
तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हिं०)	७४७
तत्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हिं०)	२१
तत्वार्थदर्पण		(सं०)	११
तत्वार्थबोध	—	(सं०)	२१
तत्वार्थबोध	—	(हिं०)	२१
तत्वार्थबोध	बुधजन	(हिं०)	२१
तत्वार्थबोधिनीटीका	—	(सं०)	२१
तत्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द	(सं०)	२१
तत्वार्थराजवार्तिक	भट्टाकलंकदेव	(सं०)	२२
तत्वार्थराजवार्तिकभाषा	—	(हिं०)	२२
तत्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	(सं०)	२२
तत्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	२२
तत्वार्थसारदीपक	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२३
तत्वार्थसारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हिं०)	२३
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(सं०)	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५९४, ५९५, ५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१, ६८६, ६९४, ६२६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७, ७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७९, ७८७, ७८८, ७८९,
तत्वार्थसूत्रटीका	श्रुतसागर	(सं०)	२८
तत्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हिं०)	३०, ७२९
तत्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जैसवाल	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्रटीका	पं० राजमल्ल	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्रटीका	जयचंद छाबड़ा	(हिं०)	२९
तत्वार्थसूत्रटीका	पांडे जयवंत	(हिं०)	२९
तत्वार्थसूत्रटीका	—	(हिं०)	६८९
तत्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद	(सं०)	४८२
तत्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हिं०)	२८
तत्वार्थसूत्र भाषा	—	(हिं०)	३०
तत्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०प०)	३१
तत्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गणि	(सं०)	२८
तत्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
तद्धित प्रक्रिया	—	(सं०)	२६०
तपलक्षण कथा	खुशालचंद	(हि०)	५११
तमाखू की जयमाल	आणंदमुनि	(हि०)	४३८
तर्कदीपिका	—	(सं०)	१३१
तर्कप्रकरण	—	(सं०)	१३१
तर्कप्रमाण	—	(सं०)	१३२
तर्कभाषा	केशव मिश्र	(सं०)	१३२
तर्कभाषा प्रकाशिका	बालचन्द्र	(सं०)	१३२
तर्करहस्य दीपिका	गुणरत्न सूरि	(सं०)	१३२
तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट	(सं०)	१३२
तर्कसंग्रहटीका	—	(सं०)	१३३
तारातंबोल की कथा	—	(हि०)	७४२
तार्किकशिरोमणि	रघुनाथ	(सं०)	१३३
तीनचौबीसी	—	(हि०)	६६३
तीनचौबीसीनाम	—	(हि०)	५९६, ६७०, ६९३, ७०३, ७५८
तीनचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८२
तीनचौबीसीपूजा	नेमीचन्द	(हि०)	४८२
तीनचोबीसीपूजा	—	(हि०)	४८२
तीनचौबीसीरास	—	(हि०)	६५१
तीनचौबीसी समुच्चय पूजा	—	(सं०)	४८२
तीन मियां की जकडी	धनराज	(हि०)	६२३
तीनलोककथन	—	(हि०)	३१९
तीनलोक चार्ट	—	(हि०)	३१९
तीनलोकपूजा [त्रिलोक सार पूजा, त्रिलोक पूजा]	नेमीचन्द	(हि०)	४८३
तीनलोकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	४८३
तीनलोकवर्णन	—	(हि० ग०)	३१९
तीर्थमालास्तवन	तेजराम	(हि०)	६१७
तीर्थमालास्तवन	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
तीर्थावलीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
तीर्थोदकविधान	—	(सं०)	६३६
तीर्थंकरजकडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६२२, ६४४
तीर्थंकरपरिचय	—	(हि०)	३७०, ६५०, ६५२
तीर्थंकरस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
तीर्थंकरो का अंतराल	—	(हि०)	२७०
तीर्थंकरो के ६२ स्थान	—	(हि०)	७२०
तीसचौबीसी	—	(हि०)	६५१, ७५८
तीसचौबीसीचौपई	श्याम	(हि०)	७५८
तीसचौबीसीनाम	—	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५३७
तीसचौबसीपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा	—	(हि०)	४८३
तीसचौबीसीस्तवन	—	(सं०)	३९४
तेईसबोलविवरण	—	(हि०)	७३२
तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि०)	४२९, ६०४, ७५०
तेरहद्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४८३
तेरहद्वीपपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	—	(सं०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	लालजीत	(हि०)	४८४
तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	४८४
तेरहद्वीपपूजाविधान	—	(सं०)	४८४
तेरहपंथपच्चीसी	माणिकचन्द	(हि०)	४४८
तेरहपन्थबीसपन्थभेद	—	(हि०)	७३३
तंत्रसार	—	(हि०)	७३४
त्रयोविंशतिका	—	(सं०)	१०९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिकाण्डशेषसूची [अमरकोश]	अमरसिंह	(सं०)	२७४
त्रिकाण्डशेषाभिधान	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७५
त्रिकालचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	६११
त्रिकालचौबीसी	—	(हि०)	६५१
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	अभ्रदेव	(सं०)	२२६, २४२
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	गुणनन्दि	(सं०)	२२६
त्रिकालचौबीसीनाम	—	(स०)	४२४
त्रिकालचौबीसीपूजा	त्रिभुवनचंद्र	(सं०)	४८४,
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८४, ५१७
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	५०९
त्रिकालदेववंदना	—	(हि०)	६२७
त्रिकालपूजा	—	(सं०)	४८५
त्रिचतुर्विंशतिविधान	—	(स०)	२४६
त्रिपंचाशतक्रिया	—	(हि०)	५१७
त्रिपंचाशतव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
त्रिभुवन की विनती	गंगादास	(हि०)	७७२
त्रिभुवन की विनती	—	(हि०)	७७४
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	११
त्रिभंगीसारटीका	विवेकानन्दि	(सं०)	१२
त्रिलोकक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिलोकचित्र	—	(हि०)	३२०
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(सं०)	७१२
त्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२०
त्रिलोकवर्णनकथा	खड्गसेन	(हि०)	६८६, ६९०, ३२१
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२२
त्रिलोकवर्णन	—	(प्रा०)	३२२
त्रिलोकवर्णन [चित्र]	—		३२३
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२३
त्रिलोकवर्णन	—	(हि०)	६९०, ७००, ७०२
त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिलोकसारकथा	—	(हि०)	२२७
त्रिलोकसारचौपई	स्वरूपचंद	(हि०)	५११
त्रिलोकसारपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८५
त्रिलोकसारपूजा	—	(सं०)	४८५, ५१३
त्रिलोकसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिलोकसारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०)	३२२
त्रिलोकसारवृत्ति	—	(सं०)	३२२
त्रिलोकसारसदृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द	(हि०)	६८१
त्रिलोकस्थजिनालयपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिलोकस्वरूप व्याख्या	उदयलाल गंगवाल	(हि०)	३२२
त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(सं०)	५८
त्रिशती	शार्ङ्गधर	(सं०)	२९८
त्रिषष्टिशलाकाछंद	श्रीपाल	(सं०)	६७०
त्रिषष्टिशलाका पुरुषवर्णन	—	(सं०)	१४६
त्रिषष्ठिस्मृति	आशाधर	(सं०)	१४६
त्रिसतजिणचऊबीसी	महणसिंह	(अप०)	६८६
त्रेपनक्रिया	—	(सं०)	५९, ७९२
त्रेपनक्रिया	ब्र० गुलाल	(हि०)	७४०
त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	(हि०)	५९
त्रेपनक्रियापूजा	—	(सं०)	४८५
त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र]	—		५२४
त्रेपनक्रियाव्रतपूजा	—	(सं०)	४८५
त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	६३८, ७९१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रैपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
त्रेषठशलाकापुरुषचित्र	—	(प्रा०)	१७१
त्रेषठशलाकापुरुषवर्णन	—	(हि०)	७०२
त्रैलोक्य तीज कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमल्ल	(सं०)	६६०
त्रैलोक्यसारटीका	सहस्रकीर्त्ति	(प्रा०)	३२३
त्रैलोक्यसारपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८५
त्रैलोक्यसारमहापूजा	—	(सं०)	४८६
थ			
थूलभद्रजीकारासो	—	(हि०)	७२५
थंभणपार्श्वनाथस्तवन	मुनि अभयदेव	(हि०)	६१६
थंभणपार्श्वनाथस्तवन	—	(राज)	६१६
द			
दक्षिणामूर्त्तिस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६०
दण्डकपाठ	—	(सं०)	५६
दत्तात्रय	—	(सं०)	२२७
दर्शनकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२७
दर्शनकथाकोश	—	(सं०)	२२७
दर्शनपच्चीसी	—	(हि०)	७१६
दर्शनपाठ	—	(सं०)	५६६
			६००, ६०४, ६५०, ६६३, ६७७ ६६३, ७०३, ७६३
दर्शनपाठ	बुधजन	(हि०)	४३६
दर्शनपाठ	—	(हि०)	६००
			६६२, ६६३, ७०५
दर्शनपाठस्तुति	—	(हि०)	४३६
दर्शनपाहुडभाषा	—	(हि०)	१०६
दर्शनप्रतिमास्वरूप	—	(हि०)	५६
* दर्शनभक्ति	—	(सं०)	६२७
दर्शनसार	देवसेन	(प्रा०)	१३३
दर्शनसारभाषा	नथमल	(हि०)	१३३
दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	(हि०)	१३३
दर्शनसारभाषा	—	(हि०)	१३३
दर्शनस्तुति	—	(सं०)	६५८, ६७०
दर्शनस्तुति	—	(हि०)	६५२
दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	(सं०)	५७४
दर्शनस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
दर्शनस्तोत्र	पद्मनन्दि	(प्रा०)	५०६
दर्शनस्तोत्र	—	(प्रा०)	५७४
दर्शनाष्टक	—	(हि०)	६४४
दलालीनीसज्झाय	—	(हि०)	३६४
दश प्रकारके ब्राह्मण	—	(सं०)	५७१
दशप्रकार विप्र	—	(सं०)	५७६
दशबोल	—	(हि०)	३२८
दशबोलपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	४४८
दशभक्ति	—	(हि०)	५६
दशमूर्खोंकी कथा	—	(हि०)	२२७
दशलक्षणउद्यापन पाठ	—	(सं०)	५५७
दशलक्षणकथा	लोकसेन	(सं०)	२२७
दशलक्षणकथा	—	(सं०)	२२७
दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६३१
दशलक्षणकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	(सं०)	७६५
दशलक्षणजयमाल	पं० भावशर्मा	(प्रा०)	४२६, ५१७
दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा०)	४८७
दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा० सं०)	४८७
दशलक्षणजयमाल	पं० रइधू	(अप०)	२४३
			४८६, ५१८, ५३७, ५७२, ६३७, ६७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५
दशलक्षणजयमाल	—	(हि०)	४८८
दशलक्षणधर्मवर्णन	पं० सदासुखकासलीवाल	(हि०)	५६
दशलक्षणधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०
दशलक्षणपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८८
दशलक्षणपूजा	—	(सं०)	४८८
			५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०, ६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४
दशलक्षणपूजा	—	(अप० सं०)	७०५
दशलक्षणपूजा	अभ्रदेव	(सं०)	४८८
दशलक्षणपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
दशलक्षणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
			५१६, ७०५
दशलक्षणपूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१
दशलक्षणपूजा	—	(हि०)	४८६
			७२०, ७८८
दशलक्षणपूजाजयमाल	—	(सं०)	५६६
दशलक्षण [मंडलचित्र]	—		५२५
दशलक्षणमण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६
दशलक्षणविधानकथा	लोकसेन	(सं०)	२४२, २४६
दशलक्षणविधानपूजा	—	(हि०)	४६०
दशलक्षणव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२७
दशलक्षणव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७६४
दशलक्षणव्रतकथा	—	(हि०)	२४७
दशलक्षणव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	४८६
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८६
			५४०, ६३८
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	६११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षणीरास	—	(अप०)	६४२
दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(सं०)	३२
दशश्लोकीशम्भुस्तोत्र	—	(सं०)	६६०
दशसूत्राष्टक	—	(सं०)	६७०
दशारास	ब्र० चन्द	(सं०)	६८३
दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२३८
दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(सं०)	६०
दानबावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दानलीला	—	(हि०)	६००
दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दानशीलतपभावना	—	(सं०)	६०
दानशीलतपभावना	धर्मसी	(हि०)	६०
दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दानशीलतपभावना का चौढाल्या	समयसुन्दरगणि	(हि०)	२२८
दिल्ली की बादशाहतका ब्यौरा	—	(हि०)	७६६
दिल्लीके बादशाहों पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दिल्ली नगरकी बसापत तथा बादशाहत का ब्यौरा	—	(हि०)	७८४
दिल्ली राजका ब्यौरा	—	(हि०)	७८६
दीक्षापटल	—	(सं०)	५७२
दीपमालिका निर्णय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दीपावतारमन्त्र	—	(सं०)	५७१, ५७६
दुधारसविधानकथा	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	२४४
दुर्घटकाव्य	—	(सं०)	१७१
दुर्लभानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	६३७
देवकीढाल	रतनचन्द	(हि०)	४४०
देवकीढाल	लूणकरण कासलीवाल	(हि०)	४३६
देवतास्तुति	पद्मनन्दि	(हि०)	३६४
देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(सं०)	४६०
देवपूजा	—	(सं०)	४१५
			५६४, ६०५, ७२५, ७३१
देवपूजा	—	(हि० सं०)	५६६, ७०४
देवपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६
देवपूजा	—	(हि०)	६४६
			६७०, ७०६, ७३५, ७५८
देवपूजाटीका	—	(सं०)	४६०
देवपूजाभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	४६०
देवपूजाष्टक	—	(सं०)	६५७
देवराज बच्छराज चौपई	सोमदेवसूरि	(हि०)	२२८
देवलोकनकथा	—	(सं०)	२२८
देवशास्त्रगुरुपूजा	आशाधर	(सं०)	६३६, ७६१
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(सं०)	६०७
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(हि०)	५६२
देवसिद्धपूजा	—	(सं०)	४२८
			४६०, ६४०, ६४४, ७३०
देवसिद्धपूजा	—	(हि०)	७०५
देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	(सं०)	३६४
			३६५, ४२५, ५७५, ६०४, ७२०
देवागमस्तोत्रभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	३६५
देवागमस्तोत्रभाषा	—	(हि० पद्य)	३६६
देवागमस्तोत्रवृत्ति	आशुभा [शिष्य विजयसेनसूरि]	(सं०)	३६६
देवीसूक्त	—	(सं०)	६०८
देशों [भारत] के नाम	—	(हि०)	१७१
देहलीके बादशाहोंकी नामावली एवं परिचय	—	(हि०)	७४३
देहलीके बादशाहोंके परगनोंके नाम	—	(हि०)	६८०
देहलीके बादशाहोंका ब्यौरा	—	(हि०)	३७२
देहलीके राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	६८०
दोहा	कबीर	(हि०)	७६६
दोहापाहुड	रामसिंह	(अप०)	६०
दोहाशतक	रूपचन्द	(हि०)	६७३, ७४०
दोहासंग्रह	नानिगराम	(हि०)	६२३
दोहासंग्रह	—	(हि०)	७४३
द्यानतविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८
द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२
			५७५, ६२८, ७४४, ७११
द्रव्यसंग्रहटीका	—	(सं०)	३५, ६६४
द्रव्यसंग्रहगाथा भाषा सहित		(प्रा० हि०)	७५५, ६८६
द्रव्यसंग्रहबालावबोध टीका	वंशीधर	(हि०)	७६१
द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि० पद्य)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि० गद्य)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि० गद्य)	३७
द्रव्यसंग्रहभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७१२
द्रव्यसंग्रहभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३६
द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	(हि०)	७११
द्रव्यसंग्रहभाषा	—	(हि०)	३५
द्रव्यसंग्रहभाषा	पर्वत धर्मार्थी	(गुज०)	३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	ब्रह्मदेव	(सं०)	३४
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(सं०)	३४
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	३७
दृष्टांतशतक	—	(सं०)	३२८
द्वादशभावनाटीका	—	(हिं०)	१०६
द्वादशभावनादृष्टांत	—	(गुज०)	१०६
द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	(हिं०)	७४३
द्वादशमासा [बारहमासा]	कवि राजसुन्दर	(हिं०)	७७१
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
द्वादशराशिफल	—	(सं०)	६६०
द्वादशव्रतकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२२८, २४६, ४६०
द्वादशव्रतकथा	चन्द्रसागर	(हिं०)	२२८
द्वादशव्रतकथा	—	(सं०)	२२८
द्वादशव्रतपूजाजयमाल	—	(सं०)	६७६
द्वादशव्रतमण्डलोद्यापन	—	(सं०)	५४०
द्वादशव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६१, ६६६
द्वादशव्रतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(सं०)	४६१
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६१
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	४६१
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(सं०)	१०६, ६७२
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७४४
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	अल्हरण	(अप०)	६२८
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(अप०)	६२८
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हिं०)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	कवि छत्र	(हिं० पद्य)	१०६
द्वादशानुप्रेक्षा	डोहट	(हिं०)	७६६
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हिं०)	७६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हिं०)	१०६, ६५२, ७४८, ७६५
द्वादशांगपूजा	—	(सं०)	४६१
द्वादशांगपूजा	डालूराम	(हिं०)	४६१
द्व्याश्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७१
द्विजवचनचपेटा	—	(सं०)	१३३
द्वितीयसमोसरण	ब्र० गुलाल	(हिं०)	५६६
द्विपंचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५१७
द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(सं०)	१७१
द्विसंधानकाव्यटीका [पदकौमुदी]	नेमिचन्द्र	(सं०)	१७२
द्विसंधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(सं०)	१७२
द्विसंधानकाव्यटीका	—	(सं०)	१७२
द्वीपसमुद्रों के नाम	—	(हिं०)	६७१
द्वीपायनढाल	गुणसागरसूरि	(हिं०)	४४०
ध			
धनदत्त सेठ की कथा	—	(हिं०)	२२६
धन्नाकथानक	—	(सं०)	२२६
धन्नाचौपई	—	(हिं०)	७७२
धन्नाशालिभद्रचौपई	—	(हिं०)	२२६
धन्नाशालिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हिं०)	३६२
धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१७३
धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७४
धन्यकुमारचरित्र	खुशालचन्द	(हिं०)	१७३, ७२६
धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	४६१, ५६५
धर्मचक्रपूजा	साधु रणमल्ल	(सं०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मचक्रपूजा	—	(सं०)	४९२, ५१०, ५३७
धर्मचन्द्रप्रबंध	धर्मचन्द्र	(प्रा०)	३९६
धर्मचाह	—	(हि०)	७२७
धर्मचाहना	—	(हि०)	६१
धर्मतरुगीत	जिनदास	(हि०)	७६२
धर्मदशावतार नाटक	—	(सं०)	३१७
धर्म दुहेला जैनी का [त्रेपन क्रिया]		(हि०)	६३८
धर्मपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	७४७
धर्मपरीक्षा	अमितिगति	(सं०)	३५५
धर्मपरीक्षा	विशालकीर्त्ति	(हि०)	७३५
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी		३५७, ७१६
धर्मपरीक्षाभाषा	दशरथ निगोत्या	(हि० ग०)	३५६
धर्मपरीक्षाभाषा	—	(हि०)	३५८, ७१०
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३५७
धर्मपंचविंशतिका	ब्र० जिनदास	(हि०)	६१
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नालाल संघी	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	(सं०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर	—	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	—	(सं०)	६०
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	चम्पाराम	(हि०)	६१
धर्मप्रश्नोत्तरी	—	(हि०)	६१
धर्मबुद्धिचौपई	लालचन्द	(हि०)	२२६
धर्मबुद्धि पाप बुद्धि कथा	—	(सं०)	२२६
धर्मबुद्धि मंत्री कथा	वृन्दावन	(हि०)	२२६
धर्मरत्नाकर	पं० मंगल	(सं०)	६२
धर्मरसायन	पद्मनंदि	(प्रा०)	६२
धर्मरसायन	—	(सं०)	६२
धर्मरास [श्रावकाचार]	—	(हि०)	७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मरासा	—	(हि०)	३६२
धर्मरासो	—	(हि०)	६२३, ६७७
धर्मलक्षण	—	(सं०)	६२
धर्मविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८, ७१०
धर्मशर्माभ्युदय	महाकवि हरिश्चन्द्र	(सं०)	१७४
धर्मशर्माभ्युदयटीका	यशःकीर्त्ति	(सं०)	१७४
धर्मशास्त्रप्रदीप	—	(सं०)	६३
धर्मसरोवर	जोधराज गोदीका	(हि०)	६३
धर्मसार [चौपई]	पं० शिरोमणिदास	(हि०)	६३, ६६६
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं० मेधावी	(सं०)	६२
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(सं०)	६३
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(हि०)	६३
धर्माधर्मस्वरूप	—	(हि०)	७०७
धर्मामृतसूक्तिसंग्रह	आशाधर	(सं०)	६४
धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार	सिंहनन्दि	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	अमोघवर्ष	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	६४
धर्मोपदेशश्रावकाचार	—	(सं०)	६४
धर्मोपदेशसंग्रह	सेवारामसाह	(हि०)	६४
धवल	—	(प्रा०)	३७
धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६०
धातुपाठ	—	(सं०)	२६०
धातुप्रत्यय	—	(सं०)	२६१
धातुरूपावलि	—	(सं०)	२६१
धू लीला	—	(हि०)	६००
ध्रूवचरित्र	—	(हि०)	७४१
ध्वजारोपणपूजा	—	(सं०)	५१३
ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४९२
ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४९२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(सं०)	४६२
ध्वजारोपणविधि	—	(सं०)	४६२
ध्वजारोहणविधि	—	(सं०)	४६२

न

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१४
नगर स्थापना का स्वरूप	—	(हि०)	७५०
नगरों की बसापत का संवत्वार विवरण	मुनि कनककीर्त्ति	(हि०)	५६१
ननद भौजाई का झगड़ा	—	(हि०)	७४७
नन्दिताढ्यछंद	—	(प्रा०)	३१०
नन्दिषेण महामुनि सज्झाय	—	(हि०)	६१६
नन्दीश्वरउद्यापन	—	(सं०)	५३७
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	२२६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(सं०)	४६२
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	(अप०)	५१६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अप०)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(सं०)	४६३, ६०१, ६५२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(प्रा०)	६५५
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(सं०)	५७६
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	७६१
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं०)	४६३, ५१५, ६०७, ६४४, ६५८, ६६६, ७०४
नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	४६३, ७०५
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं० प्रा०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा	—	(अप०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरपूजा जयमाल	—	(सं०)	७५६
नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	६३६
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	—	(सं०)	४६३, ५१४, ७६३
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दीश्वरभक्ति	—	(सं०)	६३३
नन्दीश्वरभक्ति	पन्नालाल	(हि०)	४६४, ४५०
नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	(सं०)	२२६, ५१४
नन्दीश्वरविधानकथा	—	(सं०)	२२६, २४६
नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५१८
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्त्ति	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिषेण	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२७
नान्दीसूत्र	—	(प्रा०)	३७
नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
नमस्कारमन्त्रकल्पविधिसहित	सिंहनन्दि	(सं०)	३४६
नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(सं० हि०)	६०१
नमस्कारस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
नमिऊणस्तोत्र	—	(प्रा०)	६८१
नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३४
नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नयचक्रभाषा	हेमराज	(हि०)	१३४
नयचक्रभाषा	—	(हि०)	१३४
नरकदु:खवर्णन [दोहा]	भूधरदास	(हि०)	६५
			७६०, ७८८
नरकवर्णन	—	(हि०)	६५
नरकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी आदिका वर्णन	—	(हि०)	६५२
नरपतिजयचर्चा	नरपति	(सं०)	२८५
नल दमयन्ती नाटक	—	(सं०)	३१७
नलोदयकाव्य	कालिदास	(सं०)	१७५
नलोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं०)	१७४
नवकारकल्प	—	(सं०)	३४६
नवकारपैंतीसी	—	(सं०)	६६६
नवकारपैंतीसीपूजा	—	(सं०)	५३७
नवकार बड़ी विनती	ब्रह्मदेव	(हि०)	६५१
नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	६१८
नवकारमन्त्र	—	(सं०)	४३१
नवकारमन्त्र	—	(प्रा०)	६३६
नवकारमन्त्रचर्चा	—	(हि०)	७१८
नवकाररास	अचलकीर्त्ति	(हि०)	६४७
नवकाररास	—	(हि०)	३६२
नवकाररासो	—	(हि०)	७४५
नवकारश्रावकाचार	—	(प्रा०)	६५
नवकारसज्झाय	गुणप्रभसूरि	(हि०)	६१८
नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	(हि०)	६१८
नवग्रह [मण्डलचित्र]	—		५२५
नवग्रहगर्भितपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६
नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	—	(प्रा०)	७३२
नवग्रहपूजा	—	(सं०)	४६५
नवग्रहपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
नवग्रहपूजाविधान	भद्रबाहु	(सं०)	४६४
नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	(सं०)	६४६
नवग्रहस्तोत्र	—	(सं०	४३०
नवग्रहस्थापनाविधि	—	(सं०)	६१२
नवतत्वगाथा	—	(प्रा०)	३७
नवतत्वप्रकरण	—	(प्रा०)	७३२
नवतत्वप्रकरण	लक्ष्मीवल्लभ	(हि०)	३७
नवतत्ववचनिका	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३८
नवतत्ववर्णन	—	(हि०)	३८
नवतत्वविचार	—	(हि०)	६१६
नवतत्वविचार	—	(हि०)	३८
नवपदपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	७६०
नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	६८५, ७३४
नवरत्नकवित्त	—	(सं०)	३२६
नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७८३
नवरत्नकवित्त	—	(हि०)	७१७
नवरत्नकाव्य	—	(सं०)	१७५
नष्टोदिष्ट	—	(सं०)	६५
नहनसीपाराविधि	—	(हि०)	२६८
नागकुमारचरित्र	धर्मधर	(सं०)	१७६
नागकुमारचरित्र	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१७५
नागकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७६
नागकुमारचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१७६
नागकुमारचरित्र	—	(हि०)	१७६
नागकुमारचरितटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१७६
नागमंता	—	(हि० राज०)	२२६
नागनीला	—	(हि०)	६६५
नागश्रीकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१
नागश्रीकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागश्रीसज्झाय	विनयचन्द	(हि०)	४४१
नाटकसमयसार	बनारसीदास	(हि०)	६४०
			६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६
नाडीपरीक्षा	—	(सं०)	२९८
			६०२, ६६७
नांदीमङ्गलपूजा	—	(सं०)	५१८
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५
			२७६, ५७४, ६८६, ६९९, ७०१, ७११, ७१२, ७३६
नाममाला	बनारसीदास	(हि०)	२७६
			६०६, ७९५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६९७ ७६६
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(सं०)	२८५
नारायणकवच एवं अष्टक	—	(सं०)	६०८
नारीरासो	—	(हि०)	७५७
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७९७
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७९०
निघंटु	—	(सं०)	२९९
निजस्मृति	जयतिलक	(सं०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५
नित्य एवं भाद्रपदपूजा	—	(सं०)	६४४
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५, ४९५
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४९५
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	४९५
			५१६, ६७९
नित्यनियमपूजा	—	(सं० हि०)	४९६
			५६७, ६८९
नित्यनियमपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	४९६
नित्यनियमपूजासंग्रह	—	(हि०)	७१२
नित्यनैमित्तिकपूजापाठ संग्रह	—	(सं०)	५९६
नित्यपाठसंग्रह	—	(सं० हि०)	३९८
नित्यपूजा	—	(सं०)	५६०
			६६४, ६६४, ६९७
नित्यपूजा	—	(हि०)	४९८
नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४९८
नित्यपूजापाठ	—	(सं० हि०)	६९३
			७०२, ७१५
नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(प्रा० सं०)	६९४
नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	६९३
नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	७००
			७७५, ७७६
नित्यपूजासंग्रह	—	(प्रा० अप०)	४९७
नित्यपूजासंग्रह	—	(सं०)	४९७, ७९३
नित्यवंदनासामायिक	—	(सं० प्रा०)	६३३
निमित्तज्ञान [भद्रबाहु संहिता]	भद्रबाहु	(सं०)	२८५
नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
नियमसारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(सं०)	३८
निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
निरञ्जनस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
निर्झरपञ्चमीविधानकथा	विनयचन्द्र	(अप०)	२४५, ६२८
निर्दोषसप्तमीकथा	—	(अप०)	२४५
निर्दोषसप्तमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७९४
निर्दोषसप्तमीव्रतकथा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	६७९, ७३६
निर्माल्यदोषवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	६५
निर्वाणकल्याणकपूजा	—	(सं०)	४९८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
निर्वाणकाण्डगाथा	—	(प्रा०)	३६८
४२६, ४३१, ५२६, ६२१, ६२८, ६३५, ६३८, ६६२, ६७०, ६६४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६			
निर्वाणकाण्डटीका	—	(प्रा० सं०)	३६६
निर्वाणकाण्डपूजा	—	(सं०	४६८
निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	(सं०)	३६६
४२३, ४२६, ४४१ ५६२, ५७०, ५६६, ६००, ६०५, ६१४, ६६५, ६४३, ६५०, ६५१, ६६२, ६७५, ७०४, ७२०, ७४७			
निर्वाणकाण्डभाषा	सेवग	(हि०)	७८८
निर्वाणक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१८
निर्वाणक्षेत्रमण्डलपूजा	—	(हि०)	४६२
निर्वाणपूजा	—	(सं०	४६६
निर्वाणपूजापाठ	मनरङ्गलाल	(हि०)	४६६
निर्वाणप्रकरण	—	(हि०)	६५
निर्वाणभक्ति	—	(सं०)	३६६, ६३३
निर्वाणभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	३६६
निर्वाणभूमिमङ्गल	विश्वभूषण	(हि०)	६६८
निर्वाणमोदकनिर्णय	नेमिदास	(हि०)	६५
निर्वाणविधि	—	(सं०)	६०८
निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र	—	(सं०)	३६६
निर्वाणस्तोत्र	—	(सं०)	३६६
निःशल्याष्टमीकथा	—	(सं०)	२३१
निःशल्याष्टमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
निःशल्याष्टमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७२५
निशिभोजनकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१
निशिभोजनकथा	—	(हि०)	२३१
निषेकाध्यायवृत्ति	—	(सं०)	२८५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नीतिवाक्यामृत	सोमदेवसूरि	(सं०)	३३०
नीतिविनोद	—	(हि०)	३३०
नीतिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३२६
नीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०)	७१७
नीतिसार	इन्द्रनन्दि	(सं०)	३२६
नीतिसार	चाणक्य	(सं०)	६८४
नीतिसार	—	(सं०)	३२६
नीलकण्ठताजिक	नीलकंठ	(सं०)	२८५
नीलसूक्त	—	(सं०)	३३०
नेमिगीत	पासचंद	(हि०)	४४१
नेमिगीत	भूधरदास	(हि०)	४३२
नेमिजिनदव्याहलो	खेतसी	(हि०)	६३८
नेमिजिनस्तवन	मुनि जोयराज	(हि०)	६१८
नेमिजीका चरित्र	आणन्द	(हि०)	१७६
नेमिजीकी लहुरी	विश्वभूषण	(हि०)	७७६
नेमिदूतकाव्य	महाकवि विक्रम	(सं०)	१७६
नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	जगन्नाथ	(सं०)	३६६
नेमिनाथएकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	४२६
नेमिनाथका बारहमासा	विनोदीलाल लालचन्द	— (हि०)	७५३
नेमिनाथका बारहमासा	—	(हि०)	६६२
नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(हि०)	६७४
नेमिनाथ के दशभव	—	(हि०)	१७७
६००, ७०४, ७८८			
नेमिनाथ के नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	४४०
नेमिनाथ के बारह भव	—	(हि०)	७६०
नेमिजीकामङ्गल	जगतभूषण	(हि०)	५६७
नेमिनाथचरित्र	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७७
नेमिनाथछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१४७
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(सं०)	७६३
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६६
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६
नेमिनाथपूजाष्टक	शंभूराम	(सं०)	४६६
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७२५
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	७५७
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि०)	६३८
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	३६६
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१४७
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं०)	१७७
नेमिनिर्वाणपञ्जिका	—	(सं०)	१७७
नेमिब्याहलो	—	(हि०)	२३१
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१६
नेमिराजमती की घोडी	—	(हि०)	४४१
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७
नेमिराजमतिरास	रत्नमुनि	(हि०)	६१७
नेमिराजलब्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८
नेमिराजर्षिसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिराजुलगीत	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१८
नेमिराजुलपच्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिराजुलसज्झाय	—	(हि०)	४४३
नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमतिवेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमीश्वरको रास	भाऊकवि	(हि०)	६३८
नेमीश्वरचोमासा	सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह साह	(हि०)	७७६
नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१, ६२१, ६३८
नैमित्तिक प्रयोग	—	(सं०)	६३३
नैषधचरित्र	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	१७७
नौशेरवां बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(सं०)	१३४
न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(सं०)	१३४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
न्यायदीपिका	यति धर्मभूषण	(सं०)	१३५
न्यायदीपिकाभाषा	संघी पन्नालाल	(हि०)	१३५
न्यायदीपिकाभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	१३५
न्यायमाला	परमहंस परिव्राजकाचार्य	(सं०)	१३५
न्यायशास्त्र	—	(सं०)	१३५
न्यायसार	माधवदेव	(सं०)	१३५
न्यायसार	—	(सं०)	१३५
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	भ० चूडामणि	(सं०)	१३६
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं०)	१३५
न्यायसूत्र	—	(सं०)	१३६
नृसिंहपूजा	—	(हि०)	६०८
नृसिंहावतारचित्र	—		६०३
न्हवणआरती	थिरूपाल	(हि०)	७७७
न्हवणमङ्गल	वसी	(हि०)	७७७
न्हवण विधि	—	(सं०)	५६४, ६४०
प			
पञ्चकरणवार्त्तिक	सुरेश्वराचार्य	(सं०)	२६१
पञ्चकल्याणकपाठ	हरचन्द	(हि०)	४००
पञ्चकल्याणकपाठ	हरिचन्द	(हि०)	७६६
पञ्चकल्याणकपाठ	—	(सं०)	६६६
पञ्चकल्याणकपूजा	अरुणमणि	(सं०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	गुणकीर्त्ति	(सं०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	वादीभसिंह	(सं०)	५७०
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५००, ५१६, ५३७
पञ्चकल्याणकपूजा	सुयशकीर्त्ति	(सं०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४९९
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५००, ५१४, ५१८, ५१६, ६३६, ६६६
पञ्चकल्याणकपूजा	छोटेलाल मित्तल	(हि०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	पन्नालाल	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	भैरवदास	(हि०)	५०१
पञ्चकल्याणकपूजा	रूपचन्द	(हि०)	५००
पञ्चकल्याणकपूजा	शिवजीलाल	(हि०)	४९९
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(हि०)	४२६, ५०१, ७१२
पञ्चकल्याणकपूजाष्टक	—	(सं०)	६८३
पञ्चकल्याणक [मण्डलचित्र]	—		५२५
पञ्चकल्याणकस्तुति	—	(प्रा०)	६१८
पञ्चकल्याणकोद्यापनपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	६६०
पञ्चकुमारपूजा	—	(हि०)	५०२, ७५६
पञ्चक्षेत्रपालपूजा	गङ्गादास	(सं०)	५०२
पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	(सं०)	७६५
पञ्चकल्याण	—	(प्रा०)	६१६
पञ्चगुरुकल्याणपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५०२
पञ्चगुरुकी जयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
पञ्चतत्त्वधारणा	—	(सं०)	१०६
पञ्चतन्त्र	पं० विष्णुशर्मा	(सं०)	३३०
पञ्चतन्त्रभाषा	—	(हि०)	३३०
पञ्चदश [१५] यन्त्रकी विधि	—	(सं०)	३४६
पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामी	(सं०)	५७६, ७३६
पञ्चनमस्कारस्तोत्र	विद्यानन्दि	(सं०)	४०१
पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन	—	(सं०)	५०२
पञ्चपरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	९६, ४२६, ७८८
पञ्चपरमेष्ठीगुणमाल	—	(हि०)	७४५
पञ्चपरमेष्ठीगुणवर्णन	डालूराम	(हि०)	९६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	—	(हि०)	७०७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५०२, ५१८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	५०३, ५१४, ५६६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५०३
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०३, ५१८
पञ्चपमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३, ५१८, ५१९, ६५२, ७१२
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(सं०)	४२२
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	४४३
पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०२
पञ्चपरावर्तन	—	(सं०)	३८
पञ्चपालपैंतीसी	—	(हि०)	६८९
पञ्चप्ररूपणा	—	(सं०)	२९९
पञ्चबधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१
पंचबधावा	—	(राज०)	६८२
पंचबालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४
पंचमगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६२१, ६६१, ६६८, ७५०, ७६५
पंचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५४०
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५०४
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३९
पंचमीउद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७
पंचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५
पंचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५०४
पंचमीव्रतपूजा	—	(सं० हि०)	५१७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पंचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(सं०)	५०४, ५३९
पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(सं०)	६३८
पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०४
पंचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
पंचमेरुउद्यापन	भ० रत्नचन्द	(सं०)	५०५
पंचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३९
पंचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१६
पंचमेरुपूजा	भ० महीचन्द	(सं०)	६०७
पंचमेरुपूजा	—	(सं०)	५३९, ५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४
पंचमेरुपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पंचमेरुपूजा	—	(अप०)	६३६
पंचमेरुपूजा	डालूराम	(हि०)	५०५
पंचमेरुपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०५
पंचमेरुपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५, ५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५९
पंचमेरुपूजा	सुखानन्द	(हि०)	५०५
पचमेरुपूजा	—	(हि०)	५०५, ५१६, ७४५
पंचमङ्गलपाठ, पंचमंकल्याणकमङ्गल, पंचमङ्गल	— रूपचन्द	(हि०)	३९८, ४२८, ४०१ ४०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६९१, ६९३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पंचयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१९
पंचरत्नपरीक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पंचलब्धिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पंचसंग्रह	आ० नेमिचन्द	(प्रा०)	३८
पंचसंग्रहटीका	अमितगति	(सं०)	३९
पंचसंग्रहटीका	—	(सं०)	४०
पचसंग्रहवृत्ति	अभयचन्द	(सं०)	३९
पंचसंधि	—	(सं०)	२६१
पंचस्तोत्र	—	(सं०)	५७८
पंचस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०१
पंचस्तोत्रसंग्रह	—	(सं०)	४०१
पंचाख्यान	विष्णुशर्मा	(सं०)	२३२
पंचाङ्ग	चण्डू		२८५
पंचांगप्रबोध	—	(सं०)	२८५
पंचाङ्गसाधन	गणेश [केशवपुत्र] —	(सं०)	२८५
पंचाधिकार	—	(सं०)	३७३, ५१६
पंचाध्यायी	—	(हि०)	७५६
पंचासिका	त्रिभुवनचन्द	(हि०)	६७३
पंचास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४०
पंचास्तिकायटीका	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	४१
पंचास्तिकायभाषा	बुधजन	(हि०)	४१
पंचास्तिकायभाषा	पं० हीरानन्द	(हि०)	४१
पंचास्तिकायभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	४१
पंचास्तिकायभाषा	—	(हि०)	७१९, ७२०
पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	(हि०)	७३८
पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७०३, ७२२, ७६५
पंचेन्द्रियरास	—	(हि०)	६६३
पंडितमरण	—	(सं०)	६०४
पंथीगीत	छीहल	(हि०)	८३८, ७६५
पंद्रहतिथी	—	(हि०)	११०
पक्की स्याही बनानेकी विधि	—	(हि०)	७४१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पक्षीशास्त्र	—	(सं०)	६७४
पट्टीपहाड़ोंकी पुस्तक	—	(हि०)	३६८
पट्टरीति	विष्णुभट्ट	(सं०)	१३६
पट्टावलि	—	(हि०)	३७३, ७९६
पडिकम्मणसूत्र	—	(प्रा०)	६१६
पणाकरहाजयमाल	—	(अप०)	६३६
पत्रपरीक्षा	पात्रकेशरी	(सं०)	१३६
पत्रपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
पथ्यापथ्यविचार	—	(सं०)	१३६
पद	अभैराम	(हि०)	५८५
पद	अखयराम	(हि०)	५८४
पद	अजयराज	(हि०)	५८१, ६६७, ७२४, ५८०
पद	अनन्तकीर्त्ति	(हि०)	५८५
पद	अमृतचन्द्र	(हि०)	५८६,
पद	उदयराम	(हि०)	७८६, ७९८
पद	कनककीर्त्ति	(हि०)	५६१, ६६४, ७०२, ७२४, ७७४
पद	ब्र० कपूरचन्द्र	(हि०)	५७०, ६१५, ६२४
पद	कबीर	(हि०)	७७७, ७९३
पद	कर्मचन्द	(हि०)	५८७
पद	किशनगुलाब	(हि०)	६६४, ७९३
पद	किशनदास	(हि०)	६४९
पद	किशनसिंह	(हि०)	५८०, ७०४
पद	कुमुदचन्द्र	(हि०)	७५७, ६७०
पद	केशरगुलाब	(हि०)	४४५
पद	खुशालचन्द	(हि०)	५८२, ६२४, ६६४, ६६४, ६६८, ७०३, ७८३, ७९८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	खेमचन्द	(हि०)	५८०
			५८३, ५९१, ६४९
पद	गरीबदास	(हि०)	७९३
पद	गुणचन्द्र	(हि०)	५८१
			५८५, ५८७, ५८८
पद	गुनपूरण	(हि०)	७९८
पद	गुमानीराम	(हि०)	६९९
पद	गुलाबकृष्ण	(हि०)	५८४, ६१४
पद	घनश्याम	(हि०)	६२३
पद	चतुर्भुज	(हि०)	७७०
पद	चन्द	(हि०)	५८७, ७९३
पद	चन्द्रभान	(हि०)	५९१
पद	चैनविजय	(हि०)	५८८, ७९८
पद	चैनसुख	(हि०)	७९३
पद	छीहल	(हि०)	७२३
पद	जगतराम	(हि०)	५८१
			५८२, ५८४, ५८५, ५८८, ५८९, ६१५, ६६७, ६९९, ७२४, ७५७, ७९८, ७९९
पद	जगराम	(हि०)	४४५, ७८५
पद	जनमल	(हि०)	५८५
पद	जयकीर्त्ति	(हि०)	५८५, ५८८
पद	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	४४६
पद	जादूराम	(हि०)	४४५
पद	जानिमोहम्मद	(हि०)	५८६
पद	जिनदास	(हि०)	५८१
			५८८, ६१५, ६६८, ७४९, ७६४, ७७४, ७९३,
पद	जिनहर्ष	(हि०)	५९०
पद	जीवणदास	(हि०)	४४५
पद	जीवणराम	(हि०)	५८०
पद	जीवराम	(हि०)	५९०, ७६१
पद	जोधराज	(हि०)	४६४
			६९९, ७०६, ७८९, ७९८
पद	टोडर	(हि०)	५८२
			६१४, ६२३, ७७६, ७७७
पद	त्रिलोककीर्त्ति	(हि०)	५८०, ५८१
पद	ब्र० दयाल	(हि०)	५८७
पद	दयालदास	(हि०)	७४९
पद	दरिगह	(हि०)	७४९
पद	दलजी	(हि०)	७४९
पद	दास	(हि०)	७४९
पद	दिलाराम	(हि०)	७९३
पद	दीपचन्द	(हि०)	५८३
पद	दुलीचन्द	(हि०)	६६३
पद	देवसेन	(हि०)	५८६
पद	देवाब्रह्म	(हि०)	७८५
			७८६, ७९३
पद	देवीदास	(हि०)	६४९
पद	देवीसिंह	(हि०)	६६४
पद	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	५८७
पद	दौलतराम	(हि०)	६५४
			७०६, ७८२, ७९३
पद	द्यानतराय	(हि०)	५८३
			५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ६२२, ६२४, ६४३, ६४९, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६
पद	धर्मपाल	(हि०)	५८८, ७९८
पद	धनराज	(हि०)	७९८
पद	नथ विमल	(हि०)	५८१
पद	नन्ददास	(हि०)	५८७
			७७०, ७०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	नयनसुख	(हि०)	५८३
पद	नरपाल	(हि०)	५८८
पद	नवल	(हि०)	५७१
			५८२, ५८९, ५९०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५, ७०६, ७८२, ७८३, ७९८
पद	ब्र० नाथू	(हि०)	६२२
पद	निर्मल	(हि०)	५८१
पद	नेमिचन्द	(हि०)	५८०
			६२२, ६३३
पद	न्यामत	(हि०)	७९८
पद	पद्मतिलक	(हि०)	५८३
पद	पद्मनन्दि	(हि०)	६४३
पद	परमानन्द	(हि०)	७७०
पद	पारसदास	(हि०)	६५४
पद	पुरुषोतम	(हि०)	५८१
पद	पूनो	(हि०)	७८५
पद	पूरणदेव	(हि०)	६६३
पद	फतेहचन्द	(हि०)	५७९
			५८०, ५८१, ५८२
पद	बखतराम	(हि०)	५८३
			५८६, ६६८, ७८२, ७८६, ७९३
पद	बनारसीदास	(हि०)	५८२
			५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६२१, ६२३, ६९७, ७९८
पद	बलदेव	(हि०)	७९८
पद	बालचन्द	(हि०)	६२५
पद	बुधजन	(हि०)	५७०
			५७१, ६५३, ६५४, ७०६, ७८५, ७९८
पद	भगतराम	(हि०)	७९८
पद	भगवतीदास	(हि०)	७०६
पद	भगोसाह	(हि०)	५८१
पद	भाउ	(हि०)	५८७
पद	भागचन्द	(हि०)	५७०
पद	भानुकीर्त्ति	(हि०)	५८३
			५८५, ६१५
पद	भूधरदास	(हि०)	५८०
			५८६, ५८९, ५९०, ६१४, ६१५, ६४८, ६५४, ६६४, ६९४, ७८५, ७९३, ७९८
पद	मङ्गलसराय	(हि०)	५८१
पद	मनराम	(हि०)	६६०
			७२४, ७४९, ७६४. ७६९, ७७६
पद	मनसाराम	(हि०)	५८०
			६६३, ६६४
पद	मनोहर	(हि०)	७६३
			७६४, ७८५
पद	मलूकचन्द	(हि०)	४४६
पद	मलूकदास	(हि०)	७९३
पद	महीचन्द	(हि०)	५७९
पद	महेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२०, ७८९
पद	माणिकचन्द	(हि०)	४४७
			४४८, ७९८
पद	मुकन्ददास	(हि०)	६९०
पद	मेला	(हि०)	७७१
पद	मेलीराम	(हि०)	७७६
पद	मोतीराम	(हि०)	५९१
पद	मोहन	(हि०)	७६४
पद	राजचन्द्र	(हि०)	५७७
पद	राजसिंह	(हि०)	५८७
पद	राजाराम	(हि०)	५९०
पद	राम	(हि०)	६९३
पद	रामकिशन	(हि०)	६६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१
			६६८, ६९९
पद	रामदास	(हि०)	५८३
			५८८, ६९७
पद	रामभगत	(हि०)	५८२
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४९
			७५५, ७६३, ७६५, ७८३
पद	रेखराज	(हि०)	७९८
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५
पद	लालचन्द	(हि०)	५८२
			५८३, ५८७, ६९९, ७९३
पद	विजयकीर्त्ति	(हि०)	५८०
			५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६९७
पद	विनोदीलाल	(हि०)	५९०
			७२३, ७५७, ७८३, ७९८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५६१, ६२१
पद	विसनदास	(हि०)	५८७
पद	बिहारीदास	(हि०)	५८७
पद	वृन्दावन	(हि०)	६४३
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०
पद	शुभचन्द्र	(हि०)	७०९, ७२४
पद	शोभाचन्द	(हि०)	५८३
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८१
पद	श्रीराम	(हि०)	५९०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	सकलकीर्त्ति	(हि०)	५८८
पद	सन्तदास	(हि०	६५४, ७५६
पद	सबलसिंह	(हि०)	६२४
पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७६
			५८८, ५८९, ७७७
पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
पद	सवाईराम	(हि०)	५९०
पद	सांईदास	(हि०)	६२०
पद	साहकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पद	साहिबराम	(हि०)	७९८
पद	सुखदेव	(हि०)	५८०
पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
पद	सूरदास	(हि०)	७६९, ७९३
पद	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२२
पद	सेवग	(हि०)	७९३, ७९८
पद	हठमलदास	(हि०)	६२४
पद	हरखचन्द	(हि०)	५८३
			५८४, ५८५, ७९३
पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	५८६
			५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०
			७६३, ७६४
पद	हरिश्चन्द्र	(हि०)	६४९
पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
			५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६९९, ७७२, ७७६
			७९३, ७९९
पद	हरीदास	(हि०)	७७०
पद	मुनि हीराचन्द	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	हेमराज	(हि०)	५९०
पद	—	(हि०)	४४६
			५७०, ५७६, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३
			७०४, ७०५, ७२४, ७३१, ७५३, ७५४, ७७०, ७७७
पद्धडी	यशःकीर्त्ति	(अप०)	६४२
पद्धडी	सहणपाल	(अप०)	६४१
पद्मकोष	गोवर्धन	(सं०)	६१६
पद्मचरितसार	—	(हि०)	१७७
पद्मपुराण	भ० धर्मकीर्त्ति	(सं०)	१४६
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (रामपुराण)	भ० सोमसेन	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)	—	(स०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	१४६
पद्मनंदिपंचविंशतिका	पद्मनंदि	(स०)	६६
पद्मनंदिपंचविंसतिकाटीका	—	(सं०)	६७
पद्मनदिपंचविंशतिका	जगतराय	(हि०)	६७
पद्मनन्दिपच्चीसीभाषा	मन्नालाल खिंदूका	(हि०)	६८
पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	—	(हि०)	६८
पद्मनंदिश्रावकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	६८
पद्मावत्याष्टकवृत्ति	पार्श्वदेव	(स०)	४०२
पद्मावती की ढाल	—	(हि०)	४०२
पद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३४६
पद्मावतीकवच	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
पद्मावतीछंद	महीचंद	(सं०)	६०७
पद्मावती दण्डक	—	(सं०)	४०२, ७४१
पद्मावतीपटल	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीपूजा	—	(सं०)	४०२
			४७५, ५०६, ५१७, ६५५, ६१२
पद्मावतीमण्डलपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
पद्मावतीशातिक	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीसहस्रनाम	—	(सं०)	४०२
			५०६, ५१६, ६३६, ७११, ७४१
पद्मावतीसहस्रनामत्रपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीस्तवनमंत्रसहित	—	(सं०)	४२३
पद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०२
			४२३, ४३०, ४३२, ४३३, ५०६, ५३६, ५६६, ६४५
			६४६, ६४७, ६७६, ७३५, ७५७, ७७६
पद्मावतीस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६८५
पद्मावतीस्तोत्रबीजएवंसाधनविधि	—	(सं०)	७४१
पदविनती	—	(हि०)	७१५
पद्यसंग्रह	बिहारी	(हि०)	७१०
पद्यसंग्रह	गंग	(हि०)	७१०
पदसंग्रह	आनन्दघन	(हि०)	७१०, ७७७
पदसंग्रह	भ० कपूरचंद	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	खेमराज	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	(हि०)	६१५
पदसंग्रह	चैनविजय	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	चैनसुख	(हि०)	४४६
पदसंग्रह	जगतराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	जिनदास	(हि०)	७७२
पदसंग्रह	जोधा	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	झांझूराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	दलाराम	(हि०)	६२०
पदसंग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	४४६
			६३५, ७४० ७८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसंग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६
पदसंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७
पदसंग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२९
पदसंग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२९
पदसंग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४
पदसंग्रह	बखतराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	बनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५
पदसंग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५, ४४६, ६८२
पदसंग्रह	भगतराम	(हि०)	७३९
पदसंग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६
पदसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५, ६२०, ७७६, ७७७, ७८९
पदसंग्रह	मंगलचन्द	(हि०)	४४७
पदसंग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८९
पदसंग्रह	लाल	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७
पदसंग्रह	शुभचंद	(हि०)	७७७
पदसंग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०
पदसंग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४
पदसंग्रह	सेवक	(हि०)	४४७
पदसंग्रह	हरखचंद	(हि०)	६९३
पदसंग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२
पदसंग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७
पदसंग्रह	—	(हि०)	४४४, ४४५, ६७९, ६८०, ६९१, ७०१, ७०८, ७०९, ७१०, ७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४९, ७५९, ७६०, ७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७९, ७८१, ७९०
पदस्तुति	—	(हि०)	७११
परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	४०२, ५६०, ६९४, ७७४
परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५१६
परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०९
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०, ५७५, ६३७, ६९३, ७०७, ७४७
परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(सं०)	११०
परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(सं०)	१११
परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
परमात्मप्रकाशबालावबोधनीटीका	खानचंद	(हि०)	१११
परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान ओसवाल	(हि०)	११६
परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
परमानन्दपंचविंशति	—	(सं०)	४०४
परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	४०२, ४३७
परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	(सं०)	४०३
परमानन्दस्तवन	—	(सं०)	४२४, ४२५
परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचंद्र	(सं०)	७२४
परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(सं०)	५७४
परमानन्दस्तोत्र	—	(सं०)	४०४, ४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७
परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	(हि०)	५६२
परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२९
परमार्थगीत व दोहा	रूपचंद	(हि०)	७०६, ७६४
परमारथलुहरी	—	(हि०)	७२४
परमार्थस्तोत्र	—	(सं०)	४०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
परमार्थहिण्डोलना	रूपचंद	(हि०)	७६५
परमेष्ठियोंकेगुणवप्रतिशय	—	(प्रा०)	५७५
पर्यूषणाकल्प	—	(सं०)	११७
पर्यूषणास्तुति	—	(हि०)	४५२
परसरामकथा	—	(सं०)	२३३
परिभाषासूत्र	—	(सं०)	२६१
परिभाषेन्दुशेखर	नागोजीभट्ट	(सं०)	२६१
परिशिष्टपर्व	—	(सं०)	१७८
परीक्षामुख	माणिक्यनंदि	(सं०)	१३६
परीक्षामुखभाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	१३७
परीषहवर्णन	—	(हि०)	६८
पल्यमंडलविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	५३८
पल्यविचार	—	(सं०)	२८६
पल्यविचार	—	(हि०)	२८६
पल्यविधानकथा	—	(सं०)	२४३, २४६
पल्यविधानकथा	खुशालचंद	(हि०)	२३३
पल्यविधानपूजा	अनन्तकीर्त्ति	(सं०)	५०७
पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	५०६, ५०६, ५१६
पल्यविधानपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	५०६
पल्यविधानपूजा	—	(सं०)	५०७
पल्यविधानरास	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	३६३
पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३३
पल्यविधि	—	(सं०)	६३०
पल्यव्रतोद्यापन	शुभचन्द्र	(सं०)	५०७
पल्योपमोपवासविधि	—	(सं०)	५०७
पवनदूतकाव्य	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	१७८
पहेलियां	मारू	(हि०)	६५१
पांचपरवीकथा	ब्रह्मवेणु	(हि०)	६८५
पांचपरवीव्रतकीकथा	वेणीदास	(हि०)	६२१
पांचबोल	—	(गुजराती)	३३०
पांचमाहकीचौदस (मण्डलचित्र)	—		५२५
पांचवासांकामंडलचित्र			५२५
पाटनपुरसज्झाय	श्यामसुन्दर	(हि०)	४४६
पाठसंग्रह	—	(सं०)	४०५, ५७६
पाठसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	५७३
पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	५७३
पाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	४०५
पाठसंग्रह	संग्रहकर्त्ता जैतरामबाफना	(हि०)	४०५
पाण्डवपुराण	यशःकीर्त्ति	(सं०)	१५०
पाण्डवपुराण	श्रीभूषण	(सं०)	१५०
पाण्डवपुराण	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१५०
पाण्डवपुराणभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१५०
पाण्डवपुराणभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	१५०, ७४५
पाण्डवचरित्र	लालवर्द्धन	(हि०)	१७८
पाणिनीयव्याकरण	पाणिनि	(सं०)	२६१
पात्रकेशरीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
पात्रदानकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३३
पार्थिवेश्वर	—	(सं०)	४०५
पार्थिवेश्वरचिंतामणि	—	(सं०)	४०५
पार्श्वछंद	ब्र० लेखराज	(हि०)	३८९
पार्श्वजिनगीत	छाजू (समयसुन्दर के शिष्य) —	(हि०)	४४८
पार्श्वजिनपूजा	साह लोहट	(हि०)	५०७
पार्श्वजिनस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
पार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
पार्श्वनाथएवंवर्द्धमानस्तवन	—	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथकीआरती	मुनि कनककीर्त्ति	(हि०)	५९१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथकीगुणमाल	लोहट	(हि०)	७७६
पारसनाथकीनिसाणी	—	(हि०)	६५०
पार्श्वनाथकीनिशानी	जिनहर्ष	(हि०)	४४८, ५७६
पार्श्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७०२
पार्श्वनाथकेदर्शन	वृन्दावन	(हि०)	६२५
पार्श्वनाथचरित्र	रइधू	(अप०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	वादिराजसूरि	(सं०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८
पार्श्वजिनचैत्यालयचित्र			६०३
पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६४२
पार्श्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६
पार्श्वनाथपद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण]	भूधरदास	(हि०)	१७६, ७४४, ७६१
पार्श्वनाथपूजा	—	(सं०)	४२३, ५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(सं०)	५१३
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६३
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७, ५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८
पार्श्वनाथपूजामंत्रसहित	—	(सं०)	५७५
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि रामसिंह	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथस्तवन	देवचंद्रसूरि	(सं०)	६३३
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	ब्र० नाथू	(हि०)	६७०, ६८३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	(हि०)	६६७
पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४४६, ६४५
पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	६१४, ७०२, ७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	५६६, ७४४
पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(सं०)	४१३
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	५६६
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	४०५, ४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८ ६४५, ६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६, ४०६, ५६६, ६१५
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६, ४४६, ५६६, ७३३
पार्श्वनाथस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	४०६, ६७६
पार्श्वनाथाष्टक	सकलकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पाराविधि	—	(हि०)	२६६
पाराशरी	—	(सं०)	२८६
पराशरीसज्जनरंजनीटीका	—	(सं०)	२८६
पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पाशाकेवली	गर्गमुनि	(सं०)	२८६ ६४७
पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(सं०)	२८६
पाशाकेवली	—	(सं०)	२८६, ७०१
पाशाकेवली	अबजद	(हि०)	७१३
पाशाकेवली	—	(हि०)	२८७, ५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पिंगलछंदशास्त्र	माखन कवि	(हि०)	३१०
पिंगलछंदशास्त्र (छंद रत्नावली)—	हरिरामदास	(हि०)	३११
पिंगलप्रदीप	भट्ट लक्ष्मीनाथ	(सं०)	३११
पिंगलभाषा	रूपदीप	(हि०)	७०६
पिंगलशास्त्र	नागराज	(सं०)	३११
पिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३११
पीठपूजा	—	(सं०)	६०८
पीठप्रक्षालन	—	(सं०)	६७२
पुच्छीसेण	—	(प्रा०)	६६
पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पुण्यतत्वचर्चा	—	(सं०)	४१
पुण्यास्रवकथाकोश	मुमुक्षु रामचंद	(सं०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचंद	(हि०)	२३४
पुण्यास्रवकथाकोश	दौलतराम	(हि०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोश	—	(हि०)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोशसूची	—	(हि०)	२३४
पुण्याहवाचन	—	(सं०)	५०७, ६१६
पुरन्दरचौपई	मालदेव	(हि०)	७३८
पुरन्दरपूजा	—	(सं०)	५१६
पुरन्दरविधानकथा	—	(सं०)	२४३
पुरन्दरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०८
पुरश्चरणविधि	—	(सं०)	२८७
पुराणसार	श्रीचन्द्रमुनि	(सं०)	१५१
पुराणसारसंग्रह	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५१
पुरुषस्त्रीसंवाद	—	(हि०)	७८६
पुरुषार्थानुशासन	गोविन्दभट्ट	(सं०)	६६
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	६८
पुरुषार्थसिद्ध्युपायवचनिका	भूधर मिश्र	(हि०)	६६
पुरुषार्थसिद्ध्युपायभाषा	टोडरमल	(हि०)	६६
पुष्कराद्धंपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६७
पुष्पदन्तजिनपूजा	—	(सं०)	५०६
पुष्पाञ्जलिकथा	—	(अप०)	६३३
पुष्पाञ्जलिजयमाल	—	(अप०)	७४४
पुष्पाञ्जलिविधानकथा	पं० हरिश्चन्द्र	(अप०)	२४५
पुष्पाञ्जलिविधानकथा	—	(सं०)	२४३
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	जिनदास	(सं०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	श्रुतकीर्त्ति	(सं०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५, ७६४
पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२३४, २४५, ७३१
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन [पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा]	गङ्गादास	(सं०)	५०८, ५१६
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० रतनचन्द	(सं०)	५०८
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०८
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	—	(सं०)	५०८, ५३६
पुष्पाञ्जलिव्रतविधानकथा	—	(सं०)	२३४
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५५०
पूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५६०
पूजा एवं कथासंग्रह	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
पूजाक्रिया	—	(हि०)	५०८
पूजासामग्री की सूची	—	(हि०)	६१२
पूजा व जयमाल	—	(सं०)	५६१
पूजा धमाल	—	(सं०)	६५५
पूजापाठ	—	(हि०)	५१२
पूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	५०८, ६४६, ६८२, ६६७, ६६६, ७१३, ७१५, ७१८, ७१६, ७८०, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०, ५११, ७४३, ७४४
पाठस्तोत्र	—	(सं० हि०)	७१०, ७८४
पूजाप्रकरण	उमास्वामी	(सं०)	५१२
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(सं०)	६९९
पूजामहात्म्यविधि	—	(सं०)	५१२
पूजावणविधि	—	(सं०)	५१२
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२
पूजाष्टक	विश्वभूषण	(सं०)	५१३
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५
पूजासंग्रह	—	(सं०	६०३, ६९४, ६९८, ७११, ७१२, ७२५
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०
पूजासंग्रह	लालचन्द	(हि०)	७७७
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५, ६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२९, ७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३९, ७४८।
पूजासार	—	(सं०)	५२०
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(सं० हि०)	६९६, ७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३ ७१४, ७१६, ७२५, ७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८।
पूर्वमीमांसार्थप्रकरणसंग्रह	लोगाक्षिभास्कर	(सं०)	१३७
पैंसठबोल	—	(हि०)	३३१
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रक्रियाकौमुदी	—	(सं०)	२६१
पृच्छावली	—	(हि०)	६५७
प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०
प्रतिक्रमण	—	(सं०)	६९, ४२६, ५७१
प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६९
प्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	४२५, ५७३
प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६९
प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६९
प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६९
प्रतिमाउत्थापककूं उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०
प्रतिमासांतचतुर्दशी [प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा]	अक्षयराम	(सं०)	५१९
प्रतिमासांतचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	७६१
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१४, ५२०, ५४०
प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	सं०)	५२०
प्रतिष्ठाकुंकुमपत्रिका	—	(सं०)	३७३
प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्त्ति	(सं०)	५२०
प्रतिष्ठादीपक	पं० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५२१
प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(सं०)	५२१
प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनंदि	(सं०)	५२१, ५२२
प्रतिष्ठापाठ	—	(सं०)	५२२, ६९९, ७५९
प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५२२
प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६
प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३
प्रतिष्ठाविधि	—	(सं०)	५२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	—		६९८
प्रतिष्ठासार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीलाल	(हि०)	५२२
प्रतिष्ठासारोद्धार	—	(सं०)	५२२
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह	—	(सं०)	५२२
प्रद्युम्नकुमाररास [प्रद्युम्नरास]	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	५६५, ६३६, ७१२, ७३७
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०	१८०
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्त्ति	(सं०)	१८१
प्रद्युम्नचरित्र	—	(सं०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(अप०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	मन्नालाल	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	—	(हि०)	१८२
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि०)	७२२
प्रद्युम्नरास	—	(हि०)	७४६
प्रबोधचन्द्रिका	बैजलभूपति	(सं०)	३१७
प्रबोधसार	यशःकीर्त्ति	(सं०)	३३१
प्रभावतीकल्प	—	(हि०)	६०२
प्रमाणनयतत्वालोकालंकारटीका [रत्नाकरावतारिका]	रत्नप्रभसूरि	(सं०)	१३७
प्रमाणनिर्णय	—	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षा	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१३७
प्रमाणपरीक्षाभाषा	भागचन्द	(हि०)	१३७
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	(सं०)	५७५
प्रमाणमीमांसा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३८
प्रमाणमीमांसा	—	(सं०)	१३८
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसेन	(सं०)	१३७
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	आ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	१३८
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	(सं०)	१३८
प्रवचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११६
प्रवचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं०)	११७
प्रवचनसारटीका	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारटीका	—	(हि०)	११३
प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति	—	(सं०)	११३
प्रवचनसारभाषा	जोधराज गोदीका	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	वृन्दावनदास	(हि०)	११४
प्रवचनसारभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	११३
प्रवचनसारभाषा	—	(हि०)	११४, ७६१
प्रस्ताविकश्लोक	—	(सं०)	३३२
प्रश्नचूडामणि	—	(सं०)	२८७
प्रश्नमनोरमा	गर्ग	(सं०)	२८७
प्रश्नमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नविद्या	—	(सं०)	२८७
प्रश्नविनोद	—	(सं०)	२८७
प्रश्नसार	हयग्रीव	(सं०)	२८८
प्रश्नसार	—	(सं०)	२८८
प्रश्नसुगनावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि	—	(सं०)	२८८
प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	(हि०)	७८२
प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला	ब्र० ज्ञानसागर	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमाला	—	(सं०)	२८८
प्रश्नोत्तरमालिका [प्रश्नोत्तररत्नमाला]	अमोघवर्ष	(सं०)	३३२, ५७३
प्रश्नोत्तररत्नमाला	तुलसीदास	(गुज०)	३३२
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(सं०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	७०
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(हि०)	७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(सं०)	४०६
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	७१
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३
प्रशस्ति	ब्र० दामोदर	(सं०)	६०८
प्रशस्ति	—	(सं०)	१७७
प्रशस्तिकाशिका	बालकृष्ण	(सं०)	७३
प्रह्लाद चरित्र	—	(हि०)	६००
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११
प्राकृतछन्दकोश	अल्हु	(प्रा०)	३११
प्राकृतपिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३१२
प्राकृतव्याकरण	चण्डकवि	(सं०)	२६२
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	२६२
प्राणप्रतिष्ठा	—	(सं०)	५२३
प्राणायामशास्त्र	—	(सं०)	११४
प्राणीडागीत	—	(हि०)	७६७
प्रातःक्रिया	—	(सं०)	७४
प्रातःस्मरणमन्त्र	—	(सं०)	४०६
प्राभृतसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११०
प्रायश्चितग्रन्थ	—	(सं०	७४
प्रायश्चितविधि	अकलङ्कचरित्र	(सं०)	७४
प्रायश्चितविधि	भ० एकसंधि	(सं०)	७४
प्रायश्चितविधि	—	(सं०)	७४
प्रायश्चितशास्त्र	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४
प्रायश्चितशास्त्र	—	(गुज०)	७४
प्रायश्चितसमुच्चटीका	नंदिगुरु	(सं०)	७५
प्रीतिङ्करचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१८२
प्रीतिङ्करचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३
प्रीत्यङ्करचौपई	नेमिचन्द	(हि०)	७७५
प्रीत्यङ्करचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रोषधदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रोषधोपवासव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२१
फ			
फलफांदले [पञ्चमेरु] मण्डलचित्र	—		५२५
फलवधीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(सं०)	६१६
फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८, ७६६, ७७३
फुटकरज्योतिषपद्य	—	(सं०)	५७३
फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५, ६६६, ७८१
फुटकरपद्य	—	(हि०)	
फुटकरपद्य एवं कवित्त	—	(हि०)	६४३
फुटकरपाठ	—	(सं०)	५७३
फुटकरवर्णन	—	(सं०)	५७४
फुटकरसवैया	—	(हि०)	७७५
फूलभीतणी का दूहा	—	(हि०)	६७५
ब			
बंकचूलरास	जयकीर्त्ति	(हि०)	३६२
बंभणवाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
बखतविलास	—	(हि०)	७२६
बडाकक्का	गुलाबराय	(हि०)	६८५
बडाकक्का	—	(हि०)	६९३, ७५२
बडावर्णन	—	(सं०)	३१८, ४३२
बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	सोमदत्त	(सं०)	६३६
बदरीनाथ के छंद	—	(हि०)	६००
बधावा	—	(हि०)	७१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बधावा व विनती	—	(हि०)	६८५
बन्दना जकड़ी	बुधजन	(हि०)	४४६
बन्दना जकड़ी	बिहारीदास	(हि०)	४४६, ७२७
बन्दे.तु सूत्र	—	(प्रा०)	६१६
बन्दोमोक्षस्तोत्र	—	(सं०)	६०८
बधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	(हि०)	४१
बंधस्थिति	—	(सं०)	५७२
बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	६४०
			६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५, ७६७
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि०)	७५२, ७५६
बरहावतारचित्र	—		६०३
बलदेव महामुनि सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बलभद्रगीत	—	(हि०)	७२३
बलात्कारगणगुर्वावलि	—	(सं०)	३७४
			५७२, ५७४
बलिभद्रगीत	अभयचन्द	(हि०)	७३६
बसंतराजशकुनावली	—	(सं० हि०)	७११
बसंतपूजा	अजैराज	(हि०)	६८३
बहत्तरकलापुरुष	—	(हि०)	६०६
बाईसप्रभक्ष्यवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	७५
बाईसपरिषहवर्णन	भूधरदास	(हि०)	७५
			६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८
बाईसपरिषह	—	(हि०)	७५
			५६६, ६४६
बारहग्रक्षरी	—	(सं०)	७४७
बाहरअनुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	७३६
बाहरअनुप्रेक्षा	अवधू	(हि०)	७२२
बारहअनुप्रेक्षा	—	(हि०)	७७७
बारहखड़ी	दत्तलाल	(हि०)	७४५
बारहखड़ी	पाश्वदास	(हि०)	३३२
बारहखड़ी	रामचन्द्र	(हि०)	७१५
बारहखडी	सूरत	(हि०)	३२२
			६७०, ७१५, ७८८
बारहखडी	—	(हि०,	३३२
			४४६, ६०१, ६६४, ७८२
बारहभावना	रइधू	(हि०)	११४
बारहभावना	आलु	(हि०)	६६१
बारहभावना	ज.सोमगणि	(हि०)	६१७
बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	७००
बारहभावना	नवल	(हि०)	११
			११५, ४२६
बारहभावना	भगवतीदास	(हि०)	७२०
बारहभावना	भूधरदास	(हि०)	११५
बारहभावना	दौलतराम	(हि०)	५६१, ६७५
बारहभावना	—	(हि०)	११५
			३८३, ६४४, ६८५. ६८६, ७८८
बारहमासकी चौदस [मण्डलचित्र]	—		५२५
बारहमासा	गोविन्द	(हि०)	६६६
बारहमासा	चूहरकवि	(हि०)	६६६
बारहमासा	जसराज	(हि०)	७८०
बारहमासा	—	(हि०)	६६३
			७४७, ७६७
बारहमाहकी पञ्चमी [मडलचित्र]	—		५२५
बारहव्रतो का ब्यौरा	—	(हि०)	५१६
बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	(हि०)	६६५
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५३७
बालपद्मपुराण	पं० पन्नालाल बाकलीवाल	(हि०)	१५१
बाल्यकालवर्णन	—	(हि०)	५२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मरुदेवीकी सज्झाय	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५२
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१
महर्षिस्तवन	—	(सं०)	६५८, ४१३, ४२६
महर्षिस्तवन	—	(हि०)	४१२
महागणपतिकवच	—	(सं०)	६६२
महादण्डक	—	(हि०)	७३५
महापुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५३
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(सं०)	१५२
महापुराण	महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७६
महाभिषेकपाठ	—	(सं०)	६०७
महाभिषेकसामग्री	—	(हि०)	६६८
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(सं०)	४१३
महामहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
महाविद्या [मन्त्रोंका संग्रह]	—	(सं०)	३५१
महाविद्याविडम्बन	—	(सं०)	१३८
महावीरजीका चौढाल्या	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
महावीरछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(सं०)	५२६
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(सं०)	५२६
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	३६८
महावीरपूजा	वृन्दावन	(हि०,	५२६
महावीरस्तवन	जिनचन्द्र	(हि०)	७००
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(सं०)	७५७
महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
महावीराष्टक	भागचन्द	(सं०)	४१३
महाशान्तिकविधान	पं० धर्मदेव	(सं०)	६२५
महिम्नस्तवन	जयकीर्त्ति	(सं०)	४२५
महिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(सं०)	१८६
महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(सं०)	१८६
महीपालचरित्रभाषा	नथमल	(हि०)	१८६
मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५२६
माणिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	संग्रहकर्त्ता— भ० ज्ञानसागर	(सं० प्रा० हि०)	६०४
माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४
माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द	(सं० हि०)	५६०
माधवनिदान	माधव	(सं०)	३००
माधवानलकथा	आनन्द	(सं०)	२३५
मानतुंगमानवति चौपई	मोहनविजय	(सं०)	२३५
मानकी बड़ी बावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
मानबावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६५१
मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
मानलघुबावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
मानविनोद	मानसिंह	(सं०)	३००
मानुषोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७
मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
मार्कण्डेयपुराण	—	(सं०)	१५३, ६०७
मार्गणा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
मार्गणावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
मार्गणाविधान	—	(हि०)	७६०
मार्गणासमास	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मालीरासो।	जिनदास	(हि०)	५७६
मिच्छादुक्कड़	ब्र० जिनदास	(हि०)	६८६
मित्रविलास	घासी	(हि०)	३३४
मिथ्यात्वखंडन	बख्तराम	(हि०)	७८, ६६०
मिथ्यात्वखंडन	—	(हि०)	७६
मुकुटसप्तमीकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२४४
मुकुटसप्तमीकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४, ७३१
मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिकथा	—	(सं०)	६३१
मुक्तावलिकथा	भारामल	(हि०)	७६४
मुक्तावलिगीत	सकलकीर्त्ति	(हि०)	६८६
मुक्तावलि	[मण्डलचित्र]	—	५२५
मुक्तावलिपूजा	वर्णी सुखसागर	(सं०)	५२७
मुक्तावलिपूजा	—	(सं०)	५३६, ६६६
मुक्तावलिविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३६
मुक्तावलिव्रतकथा	सोमप्रभ	(सं०)	२३६
मुक्तावलिविधानकथा	—	(अप०)	२३६
मुक्तावलिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४५
मुक्तावलिव्रतकथा	—	(हि०)	६७३
मुक्तावलि व्रतकी तिथियां	—	(हि०)	५३१
मुक्तावलिव्रतपूजा	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिव्रतविधान	—	(सं०)	५२७
मुक्तावलिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७
मुक्तीहरगीत	—	(हि०)	७६५
मुखावलोकनकथा	—	(सं०)	२४३
मुनिराजका बारहमासा	—	(हि०)	७८७
मुनिसुव्रतछन्द	भ० प्रभाचन्द	(सं० हि०)	५५७
मुनिसुव्रतनाथपूजा	—	(सं०)	५०६
मुनिसुव्रतनाथस्तुति	—	(अप०)	६३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मुनिसुव्रतपुराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५३
मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	(हि०)	१५३
मुनिसुव्रत विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	४५०
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(सं०)	४२८, ५७६, ५७८, ६४६, ७१२
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(प्रा०)	६३७
मुनीश्वरोंकी जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	५७१, ६२२, ७५०
मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(हि०)	६२१
मुष्टिज्ञान	ज्योतिषाचार्य देवचन्द	(हि०)	३००
मुहूर्त्तचिन्तामणि	—	(हि०)	२८६
मुहूर्त्तदीपक	महादेव	(सं०)	२६०
मुहूर्त्त मुक्तावली	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मुहूर्त्तमुक्तावली	शङ्कराचार्य	(हि०)	७६८
मुहूर्त्तमुक्तावली	—	(सं० हि०)	२६०
मुहूर्त्तसंग्रह	—	(सं०)	२६०
मूढताज्ञानांकुश	—	(सं०)	७६२
मूर्खकेलक्षण	—	(सं०)	३१८
मूलसंघकीपट्टावलि	—	(सं०)	७३७
मूलाचारटीका	आ० वसुनन्दि	(प्रा० सं०)	७६
मूलाचारप्रदीप	सकलकीर्ति	(सं०)	७६
मूलाचारभाषा	ऋषभदास	(हि०)	८०
मूलाचारभाषा	—	(हि०)	८०
मृगापुत्र चौढाला	—	(हि०)	२३५
मृत्युमहोत्सव	—	(सं०)	११५, ५७६
मृत्युमहोत्सवभाषा	सदासुख कासलीवाल—	(हि०)	११५
मृत्युमहोत्सवभाषा	—	(हि०)	४१२, ६६१, ७२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७३८
			७४९, ७५०, ७६४
मेघकुमारचौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४
मेघकुमारवार्त्ता	—	(हि०)	६६४
मेघकुमारसज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
मेघदूत	कालिदास	(सं०)	१८७
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मेघमाला	—	(सं०)	२९०
मेघमालाविधि	—	(सं०)	५२७
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४
मेघमालाव्रतकथा	—	(सं०)	२३६, २४२
मेघमालाव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२३६, २४४
मेघमालाव्रत	[मण्डल चित्र]—		५२५
मेघमालाव्रतोद्यापनकथा	—	(सं०)	५२७
मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७
			५३९
मेदिनीकोश	—	(सं०)	२७६
मेरुपूजा	सोमसेन	(सं०)	७९५
मेरुपंक्ति तपकी कथा	खुशालचन्द	(हि०)	५१९
मोक्षपैडी	बनारसीदास	(हि०)	८०
			६४३, ७४६
मोक्षमार्गप्रकाशक	पं० टोडरमल	(राज०)	८०
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(सं०)	६६४
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	कपोत	(हि०)	६७३
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	धर्मदास	(हि०)	६७३
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	विचित्रदेव	(हि०)	६७३
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००
मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मौनएकादशीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२८
मौनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मौनिव्रतकथा	गुणभद्र	(सं०)	२३६
मौनिव्रतकथा	—	(सं०)	२३७
मौनिव्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(सं० ग०)	२४४
मौनिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१७

य

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	७०१, ७९९
यन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५२
			६९७, ७९८
यक्षिणीकल्प	—	(सं०)	३५१
यज्ञकीसामग्रीका ब्यौरा	—	(हि०)	५६५
यज्ञमहिमा	—	(हि०)	५६५
यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
यतिभावनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५७३
यतिभावनाष्टक	—	(सं०)	६३७
यतिआहार के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
यत्याचार	आ० वसुनन्दि	(सं०)	८०
यमक	—	(सं०)	४२६
(यमकाष्टक)			
यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(सं०)	४१३, ४२६
यमपालमातंगकी कथा	—	(सं०)	२३७
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(सं०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(सं०)	१८७
यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(सं०)	१९८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
यशोधरकथा [यशोधरचरित्र]	खुशालचन्द	(हि०)	१६१, ७११
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	(सं०)	१६२
यशोधरचरित्र	कायस्थपद्मनाभ	(सं०)	१८६
यशोधरचरित्र	पूरणदेव	(सं०)	१६०
यशोधरचरित्र	वादिराजसूरि	(सं०)	१६१
यशोधरचरित्र	वासवसेन	(सं०)	१६१
यशोधरचरित्र	श्रुतसागर	(सं०)	१६२
यशोधरचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१८८
यशोधरचरित्र	पुष्पदन्त	(अप०)	१८८, ६४२
यशोधरचरित्र	गारवदास	(हि० प०)	१६१
यशोधरचरित्र	पन्नालाल	(हि०)	१६
यशोधरचरित्र	—	(हि०)	१६२
यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१६२
यात्रावर्णन	—	(हि०)	३७४
यादववंशावलि	—	(हि०)	६७६
युक्त्यनुशासन	आ० समन्तभद्र	(सं०)	१३६
युक्त्यानुशासनटीका	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
यूनानी नुसखे	—	(सं०)	६६१
योगचिंतामणि	मनूसिंह	(सं०)	३०१
योगचिंतामणि	उपाध्याय हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३०१
योगचिंतामणि	—	(सं०)	३०१
योगचिंतामणिबीजक	—	(सं०)	३०१
योगफल	—	(सं०)	२६०
योगबिन्दुप्रकरण	आ० हरिभद्रसूरि	(सं०)	११६
योगभक्ति	—	(सं०)	६३३, ६२८
योगभक्ति	—	(प्रा०)	११६
योगभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
योगशत	वररुचि	(सं०)	३०२
योगशतक	—	(सं०)	३०२
योगशतक	—	(हि०)	३०२
योगशतटीका	—	(सं०)	३०२
योगशास्त्र	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	११६
योगशास्त्र	—	(सं०)	११६
योगसार	योगचन्द	(सं०)	५७५
योगसार	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११६, ७५५
योगसारभाषा	नन्दराम	(हि०)	११६
योगसारभाषा	बुधजन	(हि०)	११७
योगसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०ग०)	११६
योगसारभाषा	—	(हि०प०)	११७
योगसारसंग्रह	—	(सं०)	११७
योगिनीकवच	—	(सं०)	६०८
योगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
योगीचर्चा	महात्मा ज्ञानचन्द	(प्रा०)	६२८
योगीरासो	योगीन्द्रदेव	(प्रा०)	६०३, ७१२, ७४८
योगीन्द्रपूजा	—	(सं०)	६७६

र

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रङ्ग बनाने की विधि	—	(हि०)	६२३
रक्षाबंधनकथा	—	(सं०)	२३७
रक्षाबंधनकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
रक्षाबंधनकथा	नाथूराम	(हि०)	२४३
रक्षाविधानकथा	—	(सं०)	२४३, ७३१
रघुनाथविलास	रघुनाथ	(हि०)	३१२
रघुवंशटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१६३
रघुवंशटीका	गुणविनयगणि	(सं०)	१६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रघुवंशटीका	समयसुन्दर	(सं०)	१६४
रघुवंशटीका	सुमतिविजयगणि	(सं०)	१६४
रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६३
रतिरहस्य	—	(हि०)	७६६
रत्नकरंडश्रावकाचार	समन्तभद्र	(सं०)	८१, ६६१, ७६५
रत्नकरंडश्रावकाचार	पं० सदासुख कासलीवाल	(हि० गद्य)	८२
रत्नकरंडश्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३
रत्नकरंडश्रावकाचार	संघी पन्नालाल	(हि०)	८३
रत्नकरंडश्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	८२
रत्नकोष	—	(सं०)	३३४, ७२६
रत्नकोष	—	(हि०)	३३५
रत्नत्रयउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	(सं०)	७८१
रत्नत्रयगुणकथा	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७
रत्नत्रयजयमाल	—	(सं०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	(हि०)	५१६
रत्नत्रयजयमाल	—	(अप०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२६
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८
रत्नत्रयपाठविधि	—	(सं०)	५६०
रत्नत्रयपूजा	पं० आशाधर	(सं०)	५२६
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(सं०)	५२६
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५२६, ५७५, ६३६
रत्नत्रयपूजा	पं० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५६४
रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५१६, ५२६, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६, ६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६१
रत्नत्रयपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
रत्नत्रयपूजा	ऋषभदास	(हि०)	५३०
रत्नत्रयपूजाजयमाल	ऋषभदास	(अप०)	५३७
रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८, ५०३, ५२१
रत्नत्रयपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१६, ५३०, ६४१, ७४५
रत्नत्रयपूजाविधान	—	(सं०)	६०७
रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयविधान	—	(सं०)	५३०
रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	२२०, २४२
रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३७
रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	५३०
रत्नत्रयविधान	टेकचन्द	(हि०)	५३१
रत्नत्रयविधि	आशाधर	(सं०)	२४२
रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५, ६६५
रत्नत्रयव्रत विधि एवं कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५३१
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३१, ५३१, ५५०
रत्नदीपक	गणपति	(सं०)	२६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रत्नदीपक	—	(सं०)	२९०
रत्नदीपक	रामकवि	(हि०)	३५८
रत्नमाला	आ० शिवकोटि	(सं०)	८३
रत्नमंजूसा	—	(सं०)	३१२
रत्नमजूषिका	—	(सं०)	३१२
रत्नावलिव्रतकथा	गुणनन्दि	(हि०)	२४६
रत्नावलिव्रतकथा	जोशी रामदास	(सं०)	२३७
रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	(हि०)	५३१
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३९
रत्नावलिव्रतोंकी तिथियों के नाम	—	हि०)	६५५
रथयात्रावर्णन	—	(हि०)	७१६
रमलज्ञान	—	(हि० ग०)	२९१
रमलशास्त्र	पं० चिंतामणि	(सं०)	२९०
रमलशास्त्र	—	(हि०)	२९०
रयणशास्त्र	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	८४
रविवारकथा	खुशालचन्द	(हि०)	७७५
रविवारपूजा	—	(सं०)	५३७
रविवारव्रतमण्डल [चित्र]	—		५२५
रविव्रतकथा	श्रुतसागर	(हि०)	२३७
रविव्रतकथा	जयकीर्त्ति	(हि०)	६६९
रविव्रतकथा [रविवारकथा]	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	२३७, ७०७
रविव्रतकथा	भाऊकवि	(हि० प०)	२३७, ५६५
रविव्रतकथा	भानुकीर्त्ति	(हि०)	७५०
रविव्रतकथा	—	(हि०)	२४७, ६०३, ७५२
रविव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३२
रसकौतुक राजसभारंजन	गंगादास	(हि०)	५७६
रसकौतुकराजसभारञ्जन	—	(हि०)	७९२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रसप्रकरण	—	(सं०)	३०२
रसप्रकरण	—	(हि०)	३०२
रसमञ्जरी	शालिनाथ	(सं०)	३०२
रसमंजरी	शार्ङ्गधर	(सं०)	३०२
रसमंजरी	भानुदत्त मिश्र	(हि०)	३५९
रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(सं०)	३५९
रससागर	—	(हि०)	६८९
रसायनविधि	—	(हि०)	५६०
रसालकुंवरकी चौपई	नरवरु कवि	(हि०)	५७७
रसिकप्रिया	इन्द्रजीत	(हि०)	६७९, ७४३
रसिकप्रिया	केशव	(हि०)	७७१, ७९९
रागचौतणकादूहा	—	(हि०)	६७५
रागमाला	—	(सं०)	३१८
रागमाला	श्याममिश्र	(हि०)	७७१
रागमाला के दो	जैनश्री	(हि०)	७८०
रागमाला के दोहे	—	(हि०)	७७७
रागरागनियों के नाम	—	(हि०)	३१८
राग आसावरी	रूपचन्द	(अप०)	६४१
रागो के नाम	—	(हि०)	७७३
राजनीति कवित्त	देवीदास	(हि०)	७५२
राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०)	६४०, ६४६
राजनीतिशास्त्र	जसुराम	(हि०)	३३६
राजनीतिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि०)	३३६
राजप्रशस्ति	—	(सं०)	३७४
राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई	ब्र० गुलाल	(हि०)	६२०
राजादिफल	—	(सं०)	२९१
राजा प्रजाको वशमें करने का मन्त्र	—	(हि०)	५७१
राजारानीसज्झाय	—	(हि०)	४५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६००, ६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३
राजुलमङ्गल	—	(हि०)	७५३
राजुलकी सज्झाय	जिनदास	(हि०)	७५७
राठौडरतन महेश दशोत्तरी	—	(हि०)	२३८
राडपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०
राडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
रात्रिभोजनकथा	—	(सं०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२२८
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३९
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४
राधाजन्मोत्सव	—	(हि०)	८४
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०)	६२७
रामकृष्णकाव्य	दैवज्ञ पं० सूर्य	(सं०)	१६४
रामचन्द्रचरित्र	बधीचन्द	(हि०)	६६१
रामचन्द्रस्तवन	—	(सं०)	४१४
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४
रामचरित्र [कवित्तबंध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७
रामबत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२
रामविनोद	रामविनोद	(हि०)	६४०
रामविनोद	—	(हि०)	६०१
रामस्तवन	—	(सं०)	४१४
रामस्तोत्र	—	(सं०)	४१४
रामस्तोत्रकवच	—	(सं०)	६०१
रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०)	५६२
रामावतार [चित्र]	—		६०३
रायपसेणीसूत्र	—	(प्रा०)	४३
राशिफल	—	(सं०)	७६३
रासायनिकशास्त्र	—	(हि०)	३३०
राहुफल	—	(हि०)	२९१
रक्तविभागप्रकरण	—	(सं०)	८४
रिट्ठणेमिचरिउ	स्वयम्भू	(अप०)	६४२
रुक्मणिकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
रुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	(हि०)	७७०
रुक्मणिविधानकथा	छत्रसेन	(सं०)	२४४, २४६
रुक्मणिविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रुक्मिणीविवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
रुग्विनिश्चय	—	(सं०)	७३३
रुचिकरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	७३३
रुद्रज्ञान	—	(सं०)	२९१
रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(सं०)	२७६
रूपमाला	—	(सं०)	२६२
रूपसेनचरित्र	—	(सं०)	२३९
रूपस्थध्यानवर्णन	—	(सं०)	११७
रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ]	—		७८३
रेखाचित्र	—		७६३
रेवानदीपूजा [आहूठकोटिपूजा]	विश्वभूषण	(सं०)	५३२
रैदव्रत	गंगाराम	(सं०)	५३२
रैदव्रतकथा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२३९
रैदव्रतकथा	—	(सं०)	२३९
रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	२४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्दि	(अप०)	२४३
रोहिणीविधान	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६२९
रोहिणीविधानकथा	—	(सं०)	२४०
रोहिणीविधानकथा	देवनन्दि	(अप०)	२४३
रोहिणीविधानकथा	बंसीदास	(हि०)	७८१
रोहिणीव्रतकथा	आ० भानुकीर्त्ति	(सं०)	२३९
रोहिणीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
रोहिणीव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
रोहिणीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	२३९
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	७९४
रोहिणीव्रतपूजा	केशवसेन कृष्णसेन	(सं०)	५१२, ५१६
रोहिणीव्रतपूजामंडल [चित्र सहित]	-	(सं०)	५३२, ७२६
रोहिणीव्रतमण्डलविधान			
रोहिणीव्रतपूजा	—	(हि०)	६३८
रोहिणीव्रतमण्डल [चित्र]	—		५२५
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३, ५३२, ५४०
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि०)	५४०
ल			
लंघनपथ्यनिर्णय	—	(सं०)	३०३
लक्ष्मणोत्सव	श्रीलक्ष्मण	(सं०)	३०३
लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	६३७
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४१४, ४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५९६, ६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१९
लक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	५:४, ४२४, ६४०, ६४५, ६५०
लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	५६२
लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीराम सोगानी	(हि०)	७५१
लग्नचन्द्रिकाभाषा	—	(सं०)	२९१
लग्नशास्त्र	वर्द्धमानसूरि	(सं०)	२९१
लघुअनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	५३३
लघुअभिषेकविधान	—	(सं०)	५३३
लघुकल्याण	—	(सं०)	५१४, ५३३
लघुकल्याणपाठ	—	(हि०)	७४४
लघुचाणक्यराजनीति	चाणिक्य	(सं०)	३३६, ७१२, ७२०
लघुजातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२९१
लघुजिनसहस्रनाम	—	(सं०)	६०६
लघुतत्वार्थसूत्र	—	(सं०)	७४०, ७८२
लघुनाममाला	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	२७६
लघुन्यासवृत्ति	—	(सं०)	२६२
लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७१७
लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	५७२
लघुमङ्गल	रूपचन्द	(हि०)	६२४
लघुमङ्गल	—	(हि०)	७१९
लघुवाचणी	—	(सं०)	६७२
लघुरविव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२४४
लघुरूपसर्गवृत्ति	—	(सं०)	२६३
लघुशांतिकविधान	—	(सं०)	५३२
लघुशांतिकमन्त्र	—	(सं०)	४२४
लघुशांतिक [मण्डलचित्र]	—		५२५
लघुशांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४१४, ४२३
लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान]	अभयनन्दि	(सं०)	५३३
लघुसहस्रनाम	—	(सं०)	३९२, ६१७, ६६०
लघुसामायिक [पाठ]	—	(सं०)	८४, ३९२, ४०५, ४२६, ५२९
लघुसामायिक	—	(सं० हि०)	८४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लघुसामायिक	—	(हि०)	७१८
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द	(हि०)	७१६
लघुसारस्वत	अनुभूति स्वरूपाचार्य	(सं०)	२६३
लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(सं०)	२६३
लघुसिद्धान्तकौस्तुभ	—	(सं०)	२६३
लघुस्तोत्र	—	(सं०)	४१५
लघुस्नपन	—	(सं०)	५३३
लघुस्नपनटीका	भावशर्मा	(सं०)	५३३
लघुस्नपनविधि	—	(सं०)	६५८
लघुस्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	४१५
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	(सं०)	५३७, ५६४
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(सं०)	२६३
लब्धिविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२३६
लब्धिविधानकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	(हि०)	७७८
लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	(सं०)	५१७
लब्धिविधानपूजा	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३३३
लब्धिविधानपूजा	—	(सं०)	५१३, ५३४, ५४०
लब्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द	(हि०)	५३४
लब्धिविधानपूजा	—	(हि०)	५३४
लब्धिविधानमण्डल [चित्र]	—		५२५
लब्धिविधानउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५३५
लब्धिविधानोद्यापन	—	(सं०)	५४०
लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५३४
लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४३, ७३६
लब्धिसारटीका	—	(सं०)	४३
लब्धिसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	४३
लब्धिसारक्षपणासारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०गद्य)	४३
लब्धिसारक्षपणासारसंदृष्टि	पं० टोडरमल	(हि०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लहरियाजी की पूजा	—	(हि०)	७५२
लहुरी	नाथू	(हि०)	६६३
लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०)	७२४
लाटीसंहिता	राजमल	(सं०)	८४
लावणी मांगीतुंगीकी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६७
लिंगपाहुड	आ० कुंदकुंद	(प्रा०)	११७
लिंगपुराण	—	(सं०)	१५३
लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(सं०)	२७७
लिंगानुशासन	—	(सं०)	२७६
लीलावती	भास्कराचार्य	(सं०)	३६६
लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०)	३६६
लुहरी	नेमिचन्द	(हि०)	६२२
लुहरी	सभाचन्द	(हि०)	७२४
लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा	—	(सं०)	२४०
लोकवर्णन	—	(हि०)	६२७, ७६३

व

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०)	३५६
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०)	३५६
वज्रदन्तचक्रवर्त्ति का बारहमासा	—	(हि०)	७२७
वज्रनाभिचक्रवर्त्ति की भावना	भूधरदास	(हि०)	८५, ४४६, ६०४, ७३६
वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०)	४१५, ४३२
वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०)	८५
वन्देतानकीजयमाल	—	(सं०)	५७२, ६१५, ६५५
वरांगचरित्र	भर्तृहरि	(सं०)	१६५
वरांगचरित्र	पं० वर्द्धमानदेव	(सं०)	१६५
वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(अप०)	१६६
वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मनन्दि	(सं०)	१६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित्र	पं० केशरीसिंह	(हि०)	१५४, १६६
वर्धमानद्वात्रिंशिका	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	४१५
वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५३
वर्द्धमानविद्याकल्प	सिंहतिलक	(सं०)	३५१
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	४१५, ४२४, ४२६
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(सं०)	६१५, ६५१
वर्षबोध	—	(सं०)	२६१
वसुनन्दि श्रावकाचार	आ० वसुनन्दि	(प्रा०)	८५
वसुनन्दिश्रावकाचार	पन्नालाल	(हि०)	८५
वसुधारा पाठ	—	(सं०)	४१५
वसुधारास्तोत्र	—	(सं०)	४१५, ४२३
वाग्भट्टालङ्कार	वाग्भट्ट	(सं०)	३१२
वाग्भट्टालङ्कारटीका	वादिराज	(सं०)	३१३
वाग्भट्टालङ्कारटीका	—	(सं०)	३१३
वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	(हि०)	६१३
वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	(हि०)	७७७
वारिषेणमुनिकथा	जोधराज गोदीका	(हि०)	२४०
वार्त्तासंग्रह	—	(हि०)	८६
वासुपूज्यपुराण	—	(हि०)	११५
वास्तुपूजा	—	(सं०)	५३५
वास्तुपूजाविधि	—	(सं०)	५१८
वास्तुविन्यास	—	(सं०)	३५४
विक्रमचरित्र	वाचनाचार्य अभयसोम	(हि०)	१६६
विक्रमचौबोली चौपई	अभयचन्द्रसूरि	(हि०)	२४०
विक्रमादित्यराजाकी कथा	—	(हि०)	७१३
विचारगाथा	—	(प्रा०)	७००
विजयकुमारसज्झाय	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०
विजयकीर्त्तिछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८६
विजययन्त्रविधान	—	(सं०)	३५२
विज्जुच्चरकी जयमाल	—	(हि०)	६३८
विज्ञप्तिपत्र	हंसराज	(हि०)	३७५
विदग्धमुखमंडन	धर्मदास	(सं०)	१६६
विदग्धमुखमंडनटीका	विनयरत्न	(सं०)	१६७
विद्वज्जनबोधक	—	(सं०)	८६, ४८१
विद्वज्जनबोधकभाषा	संघी पन्नालाल	(हि०)	८६
विद्वज्जनबोधकटीका	—	(हि०)	८६
विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३५, ६५५
विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा	जौहरीलाल बिलाला	(हि०)	५३५
विद्यमानबीसतीर्थङ्करोंकी पूजा	—	(हि०)	५११
विद्यमानबीसतीर्थङ्करस्तवन	मुनि दीप	(हि०)	६१५
विद्यानुशासन	—	(सं०)	३५२
विनतिया	—	(हि०)	६८५
विनती	अजैराज	(हि०)	७७६, ७८२
विनती	कनककीर्त्ति	(हि०)	६२१
विनती	कुशलविजय	(हि०)	७८२
विनती	ब्र० जिनदास	(हि०)	४२४, ७५७
विनती	बनारसीदास	(हि०)	६१५, ६४२, ६६३, ६६४
विनती	रूपचन्द	(हि०)	७६५
विनती	समयसुन्दर	(हि०)	७३२
विनती	—	(हि०)	७४६
विनती गुरुओंकी	भूधरदास	(हि०)	५११
विनती चौपडकी	मान	(हि०)	७८१
विनतीपाठस्तुति	जितचन्द्र	(हि०)	७००
विनतीसंग्रह	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१
विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	६६५, ७८०
विनतीसंग्रह	—	(हि०)	४५०, ७१०, ७४७
विनोदसतसई	—	(हि०)	६८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४१
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५५
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३५
विमानशुद्धिपूजा	—	(सं०)	५३६
विमानशुद्धिशान्तिक [मण्डलचित्र]	—		५२५
विरदावली	—	(सं०)	६५८, ७७२, ७६५
विरहमानतीर्थङ्करजकड़ी	—	(हि०)	७५६
विरहमानपूजा	—	(सं०)	६०५
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(सं०)	६५७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०
विवाहप्रकरण	—	(सं०)	५३६
विवाहपद्धति	—	(सं०)	५३६
विवाहविधि	—	(सं०)	५३६
विवाहशोधन	—	(सं०)	२६१
विवेकजकड़ी	—	(सं०)	२६१
विवेकजकड़ी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०
विवेकविलास	—	(हि०)	८६
विषहरनविधि	संतोषकवि	(हि०)	३०३
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(सं०)	४०२, ४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२, ५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४१६
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्त्ति	(हि०)	४१६, ६०४, ६५०, ६७० ५६४, ७७४
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०, ७१६, ७४७
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२४०
विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(सं०)	२४०
विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूलाल	(हि०)	५३६
विष्णुपञ्जररक्षा	—	(सं०)	७७०
विष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७४
विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(सं०)	४३
विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विश्वलोचनकोशकी शब्दानुक्रमणिका	—	(सं०)	२७७
विहारकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६७
वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	४२४, ४३१, ५७४, ६३४, ७३७
वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(सं०)	१३६, ४१६
वीतरागस्तोत्र	—	(सं०)	७५८
वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रइधू	(अप०)	६४२
वीरछत्तीसी	—	(सं०)	४१६
वीरजिणंदगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
वीरजिणदको संधावलि			
मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
वीरद्वात्रिंशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	१३६
वीरनाथस्तवन	—	(सं०)	४२६
वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
बुजलालकी बारहभावना	—	(हि०)	६८५
वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(सं०)	३१४
वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(सं०)	३१४
वृत्तरत्नाकर	—	(सं०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वृत्तरत्नाकरछन्दटीका	समयसुन्दरगणि	(सं०)	३१४
वृत्तरत्नाकरटीका	सुल्हणकवि	(सं०)	३१४
वृन्दसतई	वृन्दकवि	(हि०)	३३६
			६७५, ७४५, ७५१, ७८२, ७९९
वृहद्कलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	६३६
वृहद्कल्याण	—	(हि०)	५७१
वृहद्गुरावलीशांतिमण्डलपूजा [चौसठऋद्धिपूजा]	स्वरूपचन्द	(हि०)	५४१
वृहद्घंटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	(हि०)	७२६
वृहद्चाणिक्यनीतिशास्त्रभाषा	मिश्ररामराय	(हि०)	३३६
वृहद्चाणिक्यराजनीति	चाणक्य	(सं०)	७१२
वृहज्जातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२९१
वृहद्नवकार	—	(सं०)	४३१
वृहद्प्रतिक्रमण	—	(सं०)	८६, ८७
वृहद्प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८६
वृहद्षोडशकारणपूजा	—	(सं०)	५०९, ७३०
वृहद्शांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४२३
वृहद्स्नपनविधि	—	(सं०)	६५८
वृहद्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	५७२
			६२८, ६९१
वृहस्पतिविचार	—	(सं०)	६९१
वृहस्पतिविधान	—	(सं०)	५४०
वृहद्सिद्धचक्र [मण्डलचित्र]	—		५२४
वैदरभी विवाह	पेमराज	(हि०)	२४०
वैद्यकसार	—	(सं०)	३०४
वैद्यकसारोद्धार	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	३०५
वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	(सं०)	३०३, ७१५
वैद्यजीवनग्रन्थ	—	(सं०)	३०३
वैद्यजीवनटीका	रुद्रभट्ट	(सं०)	३०४
वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	(हि०)	३०४
			६०३, ६३९, ६८९, ६९५, ७६८, ७९४
वैद्यवल्लभ	—	(सं०)	३०४, ७३८
वैद्यविनोद	भट्टशङ्कर	(सं०)	३०५
वैद्यविनोद	—	(हि०)	३०५
वैद्यसार	—	(सं०)	७३८
वैद्यामृत	माणिक्यभट्ट	(सं०)	३०५
वैय्याकरणभूषण	कौंडनभट्ट	(सं०)	२६३
वैय्याकरणभूषण	—	(सं०)	२६३
वैराग्यगीत [उदरगीत]	छीहल	(हि०)	६३७
वैराग्यगीत	महमत	(हि०)	४१६
वैराग्यपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८५
वैराग्यशतक	भर्तृहरि	(सं०)	११७
व्याकरण	—	(सं०)	२६४
व्याकरणटीका	—	(सं०)	२६४
व्याकरणभाषाटीका	—	(सं०)	२६४
व्रतकथाकोश	पं० दामोदर	(सं०)	२४१
व्रतकथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२४२
व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	(सं०)	२४१
व्रतकथाकोश	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२४२
व्रतकथाकोश	—	(सं०)	२४४
व्रतकथाकोश	—	(सं०अप०)	२४२
व्रतकथाकोश	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
व्रतकथाकोश	—	(हि०)	२४४
व्रतकथासंग्रह	—	(सं०)	२४६
व्रतकथासंग्रह	—	(अप०)	२४५
व्रतकथासंग्रह	ब्र० महतिसागर	(हि०)	२४६
व्रतकथासंग्रह	—	(हि०)	२४७
व्रतजयमाला	सुमतिसागर	(हि०)	७९५
व्रतनाम	—	(हि०)	५३६
व्रतनामावली	—	(सं०)	८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिर्णय	मोहन	(सं०)	५३६
व्रतनामसंग्रह	—	(सं०)	५३७
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८
व्रतविधानरासो	दौलतराम संघी	(हि०)	६३८, ७७६
व्रतविवरण	—	(सं०)	५३८
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८
व्रतसार	आ० शिवकोटि	(सं०)	५३८
व्रतसार	—	(सं०)	८७
व्रतसंख्या	—	(हि०)	८७
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(सं०)	८७
व्रतोद्यापनसंग्रह	—	(सं०)	५३८
व्रतोपवासवर्णन	—	(सं०)	८७
व्रतोपवासवर्णन	—	(हि०)	८७
व्रतों के चित्र	—		७२३
व्रतोंकी तिथियोंका ब्यौरा	—	(हि०)	६५५
व्रतों के नाम	—	(हि०)	८७
व्रतोंका ब्यौरा	—	(हि०)	६०३

ष

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षट्आवश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द	(हि०)	८७
षट्आवश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७
षट्ऋतुवर्णनबारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६
षट्नमंकथन	—	(सं०)	३५२
षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छक्कमोवएसमाला]	महाकवि अमरकीर्त्ति	(अप०)	८८
षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पांडे लालचन्द्र	(हि०)	८८
षट्पंचासिका	वराहमिहिर	(सं०)	२९२
षट्पञ्चासिका	—	(हि०)	६५६
षट्पञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(सं०)	२९२
षट्पाठ	—	(सं०)	४१७
षट्पाठ	बुधजन	(हि०)	४१६
षट्पाहुड [प्राभृत]	आ० कुन्दकुंद	(प्रा०)	११७, ७४८
षट्पाहुडटीका	श्रुतसागर	(सं०)	११६
षट्पाहुडटीका	—	(सं०)	११८
षट्मतचरचा	—	(सं०)	७५३
षट्रसकथा	—	(सं०)	६८३
षट्लेश्यावर्णन	—	(सं०)	७४८
षट्लेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
षट्लेश्यावेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७३५
षट्लेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
षट्संहननवर्णन	मकरन्द	(हि०)	८८
षड्दर्शनवार्त्ता	—	(सं०)	१३९
षट्दर्शनविचार	—	(सं०)	१३९
षड्दर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(सं०)	१३९
षड्दर्शनसमुच्चयटीका	—	(सं०)	१४०
षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	गुणरत्नसूरि	(सं०)	१३९
षट्भक्तिपाठ	—	(सं०)	७५१
षड्भक्तिवर्णन	—	(सं०)	८८
षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	५१६, ५४१
षष्ठिशतक टिप्पण	भक्तिलाल	(सं०)	३३६
षष्ठ्याधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	(सं०)	४४
षोडशकारणउद्यापन	—	(सं०)	५४१
षोडशकारणकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० सं०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	रइधू	(अप०)	५१७, ५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(अप०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(हि०ग०)	५४२
षोडशकारणपूजा [षोडशकारणव्रतोद्यापन]	केशवसेन	(सं०)	५३९, ५४२, ६७६
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षोडषकारणपूजा [षोडषकारणव्रतोद्यापनपूजा]	सुमतिसागर	(सं०)	५१७, ५४३, ५५७
षोडषकारणपूजा	—	(सं०)	५१५, ५३७, ५४२, ५४३, ५६६, ५७८, ५९४, ५८६, ६०७, ६४६, ६५८, ७६३
षोडशकारणपूजा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६
षोडशकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	७०५
षोडशकारणभावना	—	(प्रा०)	८६
षोडशकारणभावना	पं० सदासुख	(हि०ग०)	८८
षोडषकारणभावना	—	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनाजयमाल	नथमल	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति	पं० शिवजीलाल	(हि०)	८८
षोडशकारणविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२२०, २४२, २४५, २३७
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	५१८
षोडशकारणव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४८
षोडशकारणव्रतकथा	—	(गुज०)	२४७
षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा	राजकीर्त्ति	(सं०)	५४३

श

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शम्बुप्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दरगणि	(सं०)	१६७
शकुनविचार	—	(सं०)	२९२
शकुनशास्त्र	—	(हि०)	६०७
शकुनावली	गर्ग	(सं०)	२९२
शकुनावली	—	(सं०)	२९२, ६०३
शकुनावली	अबजद	(हि०)	२९२
शकुनावली	—	(हि०)	२९३, ६४३
शतअष्टोत्तरी	—	(हि०)	६८९
शतक	—	(सं०)	२७७
शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	५१३, ५४३
शत्रुञ्जयतीर्थरास [शत्रुञ्जयरास]	समयसुन्दर	(सं०)	६१७, ७००
शत्रुञ्जयभास	राजसमुद्र	(हि०)	६१९
शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	६१९
शनिश्चरदेवकी कथा	खुशालचन्द	(हि०)	६८३
शनिश्चरदेवरीकथा [शनिश्चरकथा]	—	(हि०)	६८२, ६६८, ७११, ७१३, ७१८, ७२३, ७४७, ७८८
शनिश्चरदृष्टिविचार	—	(सं०)	२९३
शनिस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद	श्री महेश्वर	(सं०)	२७७
शब्दरत्न	—	(सं०)	२७७
शब्दरूपावलि	—	(सं०)	२६४
शब्दरूपिणी	आ० वररुचि	(सं०)	२६४
शब्दशोभा	कवि नीलकण्ठ	(सं०)	२६४
शब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
शम्भुभवदीपिका [मण्डलविधानपूजा]	सिंहनन्दि	(सं०)	५४२
शहरमारोठ की पत्री	मुनि महीचन्द	(हि०)	५९२
शाकटायनव्याकरण	शाकटायन	(सं०)	२६५
शान्तिघनाम	—	(हि०)	६६८
शान्तिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	(प्रा०)	६८१
शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	(प्रा०)	४२३
शान्तिकविधान	—	(हि०)	५४४
शान्तिकविधान (वृहद्)	—	(सं०)	५४४
शान्तिकविधि	अर्हद्देव	(सं०)	५४४
शान्तिकहोमविधि	—	(सं०)	६४६
शान्तिघोषणास्तुति	—	(सं०)	४१७
शांतिचक्रपूजा	—	(सं०)	५१७
शांतिचक्रमण्डल (चित्र)			५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभसूरि	(सं०)	१६८
शांतिनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६८
शांतिनाथपुराण	महाकवि असग	(सं०)	१५५
शांतिनाथपुराण	खुशालचन्द	(हि०)	१५५
शांतिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५४५
शांतिनाथपूजा	—	(सं०)	५०६
शांतिनाथस्तवन	—	(सं०)	४१७
शांतिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	७०२
शांतिनाथस्तवन	ऋषि लालचंद	(हि०)	४१३
शांतिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र	(सं०)	६१४
शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वामी	(सं०)	७२२
शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(सं०)	४१७, ७१५
शांतिनाथस्तोत्र	—	(सं०)	३८३, ४०२, ४१८, ६४६, ६७३, ७४५
शांतिपाठ	—	(सं०)	४१८, ४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५, ७३३, ७५८
शांतिपाठ (बृहद्)	—	(सं०)	५४५
शांतिपाठ	द्यानतराय	(हि०)	५१६
शांतिपाठ	—	(हि०)	६४५
शांतिपाठ	—	(हि०)	५०६
शांतिमंडलपूजा	—	(सं०)	५०६
शांतिरत्नसूची	—	(सं०)	५४५
शांतिविधि	—	(सं०)	५४०
शांतिविधान	—	(सं०)	४१८
आचार्यशांतिसागरपूजा	भगवानदास	(हि०)	४६१, ७८६
शांतिस्तवन	देवसूरि	(सं०)	४१६
शांतिहोमविधान	आशाधर	(सं०)	५४५
शारदाष्टक	—	(सं०)	४२४
शारदाष्टक	बनारसीदास	(हि०)	७७६
शारदाष्टक	—	(हि०)	५७०
शारदीनाममाला	—	(सं०)	२७७
शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	(सं०)	३०५
शार्ङ्गधरसंहिताटीका	नाढमल्ल	(सं०	३०६
शालिभद्रचौपई	जिनसिंहसूरि	(हि०)	७००
शालिभद्रमहामुनिसज्झाय	—	(हि०)	६१६
शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि०)	१६८, ७२६
शालिभद्रधन्नाजीचौपई	जिनसिंहसूरि	(हि०)	२५३
शालिभद्रमहामुनिसज्झाय	—	(हि०)	६१६
शालिभद्रसज्झाय	—	(हि०)	७३४
शालिहोत्र	—	(सं०)	७३०
शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	पं० नकुल	(सं०-हि०)	३०६
शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	—	(सं०)	३०६
शास्त्रगुरुजयमाल	—	(प्रा०)	५४५
शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूषण	(सं०)	४५५
शास्त्रजयमाल	—	(प्रा०)	५६५
शास्त्रपूजा	—	(सं०)	५३६, ५६४, ५६५, ६५२
शास्त्रपूजा	—	(हि०)	५१६
शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने की विधि	—	(सं०)	५४६
शास्त्रलोकामंडल [चित्र]	—		५२५
शासनदेवतार्चनविधान	—	(सं०)	५४६
शिक्षाचतुष्क	नवलराम	(हि०)	६६८
शिखरविलास	रामचन्द्र	(हि०)	६६३
शिखरविलासपूजा	—	(हि०)	५४६
शिखरविलासभाषा	धनराज	(हि०)	७६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शिलालेखसंग्रह	—	(सं०)	३७५
शिलोञ्छकोश	कवि सारस्वत	(सं०)	२७७
शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा	शंकरभट्ट	(सं०)	२४७
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(सं०)	१८९
शिशुपालवधटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१८९
शिशुबोध	काशीनाथ	(सं०)	२६५, २९३, ६०३, ६७२, ६७५
शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५४६, ७६५
शीतलनाथस्तवन	ऋषिलालचंद	(हि०)	४५१
शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१६
शीतलाष्टक	—	(सं०)	६४७
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	२४७
शीलनववाड	—	(हि०)	८९
शीलबत्तीसी	अकूमल	(हि०)	७५०
शीलबत्तीसी	—	(हि०)	६१९
शीलरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०	७४९
शीलरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६५, ६१७
शीलविधानकथा	—	(सं०)	२४९
शीलव्रतकेभेद	—	(हि०)	६१५
शीलसुदर्शनरासो	—	(हि०)	६०३
शीलोपदेशमाला	मेरुसुन्दरगणि	(गुज०)	२४७
शुकसप्तति	—	(सं०)	२४७
शुक्लपंचमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४०
शुक्लपंचमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६
शुक्लपंचमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४६
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१८
शुभमालिका	श्रीधर	(सं०)	५७४
शुभमुहूर्त्त	—	(हि०)	५९९
शुभसीख	—	(हि.ग.)	३३६, ७१८
शुभाशुभयोग	—	(सं०)	२९३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रृंगारकवित्त	—	(हि०)	६९६
श्रृंगारनिर्णय	कालिदास	(सं०)	३५९
श्रृंगारतिलक	रुद्रभट्ट	(सं०)	३५९
श्रृंगाररसकेकवित्त	—	(हि०)	७७०
श्रृंगाररस के फुटकरछंद	—	(हि०)	५९३
श्रृंगारसवैया	—	(हि०)	७९७
श्यामबत्तीसी	नन्ददास	(हि०)	६८४
श्यामबत्तीसी	श्याम	(हि०)	७६९
श्रवणभूषण	नरहरिभट्ट	(सं०)	१८८
श्राद्धइंद्रस्मरणसूत्र	—	(प्रा०)	८६
श्रावकउत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७५
श्रावककीकरणी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	५९७
श्रावकक्रिया	—	(हि०)	७५७
श्रावकधर्मवर्णन	—	[illegible]	८९
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(सं०)	८९, ५७५
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८९
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(सं० प्रा०)	४७२
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७५४
श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा० हि०)	७९८
श्रावकप्रतिक्रमण	पन्नालालचौधरी	(हि०)	८९
श्रावकप्रायश्चित्त	वीरसेन	(सं०)	८९
श्रावकाचार	उमास्वामि	(सं०)	९०
श्रावकाचार	अमितगति	(सं०)	९०
श्रावकाचार	आशाधर	(सं०)	६३५
श्रावकाचार	गुणभूषणाचार्य	(सं०)	९०
श्रावकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	९०
श्रावकाचार	पूज्यपाद	(सं०)	९०
श्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	(सं०)	९१
श्रावकाचार	—	(सं०)	९१
श्रावकाचार	—	(प्रा०)	९१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रावकाचारदोहा	रामसिंह	(अप०)	६४२, ७४८
श्रावकाचारभाषा	पं० भागचन्द	(हि.ग.)	६१
श्रावकाचार	—	(हि०)	६१
श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	—	(हि०)	७५६
श्रावकों की चौरासी जातियां	—	(हि०)	३७५
श्रावकों की बहत्तर जातियां	—	(सं०हि०)	३७५
श्रावणीद्वादशीउपाख्यान	—	(सं०)	२४७
श्रावणीद्वादशीकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२४२, २४५
श्रावणीद्वादशीकथा	—	(सं०)	२४८
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुखजी	(सं०)	४१८
श्रीपालकथा	—	(हि०)	२४८
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२००
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०१
श्रीपालचरित्र	—	(सं०)	२००
श्रीपालचरित्र	—	(अप०)	२०१
श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	(हि.प.)	२२, ७७३
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०२
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०३
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	६१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि०)	३६५
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६३८
			६८४, ७१२, ७१७, ७४१
श्रीपालविनती	—	(हि०)	६५१
श्रीपालस्तवन	—	(हि०)	६२३
श्रीपालस्तुति	—	(सं०)	४२३
			७४५, ७५२, ७८४,
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०)	६३६
श्रीपालजीकीस्तुति	भगवतीदास	(हि०)	६४३
श्रीपालस्तुति	—	(हि०)	६०६
			६४४, ६५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रीवतजयस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रीस्तोत्र	—	(सं०)	४१८
श्रुतज्ञानपूजा	—	(सं०)	७२७, ५४६
श्रुतज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७
श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(सं०)	५२५
श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	६२
श्रुतव्रतोद्योतनपूजा	—	(हि०)	५१३
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
श्रुतभक्ति	—	(सं०)	६३३
श्रुतभक्ति	—	(सं०)	४२५
श्रुतभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४६
श्रुतपंचमीकथा	स्वयंभू	(अप०)	६४२
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	५३७
श्रुतपूजा	—	(सं०)	५४६
			५६५, ६६६
श्रुतबोध	कालिदास	(सं०)	३१५, ६६४
श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(सं०)	३१५
श्रुतबोध	वररुचि	(सं०)	३१५
श्रुतबोधटीका	—	(सं०)	३१५
श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३१५
श्रुतस्कंध	ब्र० हेमचन्द	(प्रा०)	१७६
			५७२, ७०६, ७३७
श्रुतस्कंधपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजा	—	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजा [ज्ञानपंचविंशतिपूजा]	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजाकथा	—	(हि०)	५४७
श्रुतस्कंधमंडल [चित्र]	—		५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रुतस्कंधविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२४५
श्रुतस्कन्धव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८
श्रुतावतार	पं० श्रीधर	(सं०)	३७६, ५७२
श्रुताष्टक	—	(सं०)	६५७
श्रेणिकचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	—	(प्रा०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्त्ति	(हि०)	२०४
श्रेणिकचौपई	डूंगा वैद	(हि०)	२४८
श्रेणिकराजासज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१९
श्रेयांसस्तवन	विजयमानसूरि	(हि०)	४५१
श्लोकवार्त्तिक	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	४४
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	जगरूप	(हि०)	७७९
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	—	(हि०)	५८२
श्वेताम्बरों के ८४ बाद	—	(हि०)	६२६

स

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सकटचौथव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	७९४
सकटचौपईकथा	—	(हि०)	७४१
संक्रांतिफल	—	(सं०)	२६३, २६४
संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया	—	(सं०)	१४०
संगीतबंधपार्श्वजिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
संग्रहणीबालाबोध	शिवनिधानगणि	(प्रा०हि०)	४५
संग्रहणीसूत्र	—	(प्रा०)	४५
संग्रहसूक्ति	—	(सं०)	५७५
संघपणटपत्र	—	(प्रा०)	३२३
संघोत्पत्तिकथन	—	(हि०)	६२६
संघपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	३७६
संज्ञाप्रक्रिया	—	(सं०)	२६५, २६७
संतानविधि	—	(हि०)	३०६
संथाराविधि	—	(सं०)	५४८
संदृष्टि	—	(सं०)	५७३
सबन्धविवक्षा	—	(सं०)	२६५
सबोधअक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	११९
सबोधपचासिका	गौतमस्वामी	(प्रा०)	११९, १२८
सबोधपचासिका	—	(प्रा०)	५७२, ६२८, ७०६, ७५५
संबोधपंचासिका	रइधू	(अप०)	१२८
संबोधपचासिका	—	(अप०)	५७३
संबोधपंचासिका	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६४८, ६८५, ६६३, ७१३, ७१६, ७२५
संबोधपंचासिका	—	(हि०)	४३०
संबोधशतक	द्यानतराय	(हि०)	१२८
संबोधसतरी	—	(प्रा०)	१२८
संबोधसत्ताणु	वीरचन्द	(हि०)	३३९
संभवजिनस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि	(सं०)	४११
सभवजिणणाहचरिउ	तेजपाल	(अप०)	२०४
सभवनाथपद्धडी	—	(अप०)	५७६
सयोगपंचमीकथा	धर्मचन्द्र	(हि०)	२५३
संयोगबत्तीसी	मानकवि	(हि०)	६१३
संवत्सरवर्णन	—	(हि०)	३७६
संवत्सरीविचार	—	(हि० ग०)	२६४
समारअटवी	—	(हि०)	७६२
संसारस्वरूपवर्णन	—	(हि०)	६३
संस्कृतमंजरी	—	(सं०)	२६५
संहनननाम	—	(हि०)	६२६
सकलीकरण	—	(सं०)	५४८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१४, ५७८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१५, ५४७, ६३९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेण	(सं०)	३३७, ५७३
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(सं०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	—	(सं०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द	(हि०)	३३७
सज्जनचित्तवल्लभ	हरगूलाल	(हि०)	३३७
सज्झाय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्दर	(हि०)	४५१
सज्झाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
सतसई	बिहारीलाल	(हि०)	५७६, ७६८
सतियों की सज्झाय	ऋषिछजमलजी	(हि०)	४५१
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७३५, ७६०
सत्तात्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५
सत्ताद्वार	—	(सं०)	४५
सद्भाषितावली	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३३८
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८
सन्निपातकलिका	—	(सं०)	३०७
सन्निपातनिदान	—	(सं०)	३०६
सन्निपातनिदानचिकित्सा	बाहडदास	(सं०)	३०६
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि	(सं०)	३३८
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवाकर	(सं०)	१४०
सप्तर्षिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६
सप्तर्षिपूजा	जिणदास	(सं०)	५४८
सप्तर्षिपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	७६६
सप्तर्षिपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०	५४८
सप्तर्षिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५४८
सप्तर्षिपूजा	—	(सं०)	५४६
सप्तर्षिमंडल [चित्र]	—	(सं०)	५२४
सप्तनयविचारस्तवन	—	(सं०)	४१८
सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	(सं०)	१४०
सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(सं०)	१४०
सप्तपदार्थी	—	(सं०)	१४०
सप्तपदी	—	(सं०)	५४८
सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द	(हि०)	७३१
सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२४६
सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(सं०)	५१७, ५४८
सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८
सप्तविधि	—	(हि०)	३०७
सप्तव्यसनकथा	आ० सोमकीर्त्ति	(सं०)	२५०
सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०
सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०
सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२१
सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(सं०)	७१५
सप्तश्लोकीगीता	—	(सं०)	६२, ३६८, ६६२
सप्तसूत्रभेद	—	(सं०)	७६१
सभातरंग	—	(सं०)	३३८
सभाशृंगार	—	(सं०)	३३६
सभाशृंगार	—	(सं० हि०)	३३८
सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३३८
समकितढाल	आसकरण	(हि०)	६२
समकितविणयोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१
समंतभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८
समंतभद्रस्तुति	समंतभद्र	(सं०)	७७८
समयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६, ५७४, ७०३, ७६२
समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	१२०
समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समयसारकलशाभाषा	—	(हि०)	१२५
समयसारटीका	—	(सं०)	१२२, ६६५
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	१२३, ६०४, ६३६, ६८०, ६८३, ६८८, ६८६, ६६८, ७०२, ७१६, ७२०, ७३१, ७५३, ७५६, ७७८, ७८७, ७६२
समयसारभाषा	जयचन्दछाबडा	(हि० ग०)	१२४
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१२५
समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	५७५, ७६४
समयसारवृत्ति	—	(प्रा०)	१२२
समरसार	रामवाजपेय	(सं०)	२६४
समवशरणपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	५४६
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	(सं०)	५३७
समवशरणपूजा [वृहद्]	रूपचन्द	(सं०)	५७६
समवशरणपूजा	—	(सं०)	५४६, ७६७
समवशरणस्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(सं०)	४१६
समवशरणस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१५
समवशरणस्तोत्र	—	(सं०)	४१६
समस्तव्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	५६४
समाधि	—	(अप०)	६४२
समाधितन्त्र	पूज्यपाद	(सं०)	१२५
समाधितंत्र	—	(सं०)	१२५
समाधितन्त्रभाषा	नाथूरामदोसी	(हि०)	१२६
समाधितन्त्रभाषा	पर्वतधर्मार्थी	(हि०)	१२६
समाधितन्त्रभाषा	माणकचन्द	(हि०)	१२५
समाधितन्त्रभाषा	—	(हि०ग०)	१२५
समाधिमरण	—	(सं०)	६१२
समाधिमरण	—	(प्रा०)	१२६
समाधिमरण	—	(अप०)	६२८
समाधिमरणभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	१२७
समाधिमरणभाषा	सूरचन्द	(हि०)	१२७
समाधिमरण	—	(हि०)	१५, १२७, ७१०, ७४८
समाधिमरणपाठ	द्यानतराय	(हि०)	१२६, ३६४
समाधिमरण स्वरूपभाषा	—	(हि०)	१२७
समाधिशतक	पूज्यपाद	(सं०)	१२७
समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१२०
समाधिशतकटीका	—	(सं०)	१२८
समुदायस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१६
समुद्घातभेद	—	(सं०)	६२
सम्मेदगिरिपूजा	—	(हि०)	७३६, ७४०
सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	(सं०)	५४६, ७२०
सम्मेदशिखरपूजा	पं० जवाहरलाल	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	भागचन्द	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	रामचन्द	(हि०)	५५०
सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	५११, ५१८, ६७८
सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड	—	(हि०)	५२६
सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(सं०)	६२
सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुखलाल	(हि०)	६२
सम्मेदशिखरमहात्म्य	लालचन्द	(हि० प०)	६२, २५१
सम्मेदशिखरमहात्म्य	—	(हि०)	७८८
सम्मेदशिखरविलास	केशरीसिंह	(हि०)	६२
सम्मेदशिखरविलास	देवाब्रह्म	(हि० प०)	६३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	खेता	(सं०)	५५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	गुणाकरसूरि	(सं०)	२५१
सम्यक्त्वकौमुदीभाग १	सहणपाल	(अप०)	६४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५५५
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा	(हि०प०)	३४०,४४७
सुगुरुस्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सदयवच्छसावलिंगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४
दयवच्छसालिंगारीवार्त्ता	—	(हि०)	७३४
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२०८
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानंदि	(सं०)	२०९
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०८
सुदर्शनचरित्र	—	(सं०)	२०९
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०९
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६ ६३९, ७१२, ७४९
सुदर्शनसेठकीढाल [कथा]	—	(हि०)	२५४
सुदामाकीबारहखडी	—	(हि०)	७७९
सुदृष्टितरंगिणीभाषा	टेकचन्द	(हि०)	६७
सुदृष्टितरंगिणीभाषा	—	(हि०)	६७
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४५
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५
सुपार्श्वनाथपूजा	रामचन्द	(हि०)	५५५
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६२८
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६३७
सुप्पय दोहा	—	(हि०)	७६५
सुप्रभातस्तवन	—	(सं०)	५७४
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(सं०)	६३३
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(सं०)	६३३
सुभाषित	—	(सं०)	५७५
सुभाषित	—	(हि०)	७०१
सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुभाषितपाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६९८
सुभाषितमुक्तावली	—	(सं०)	३४१
सुभाषितरत्नसंदोह	अमितिगति	(सं०)	३४१
सुभाषितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४१
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०)	३४१, ५७५
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	३४२
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०हि०)	३४२
सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(सं०)	३४१
सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३४३
सुभाषितावली	—	(सं०)	३४३, ७०९
सुभाषितावलीभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	३४४
सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
सुभौमचरित्र	भ० रतनचन्द	(सं०)	२०९
सुभौमचक्रवर्त्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सूक्तावली	—	(सं०)	३४५, ६७२
सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४४, ६३५
सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
सूतकनिर्णय	—	(सं०)	५५५
सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(सं०)	५३१
सूतकवर्णन	—	(सं०)	५५५
सूतकविधि	—	(सं०)	५७६
सूत्रकृतांग	—	(प्रा०)	४७
सूर्यकवच	—	(सं०)	६४०
सूर्यकेद्वादशनाम	—	(सं०)	६०८
सूर्यग्रहनविधि	—	(सं०)	२९५
सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्र० जयसागर	(सं०)	५५७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सूर्यस्तोत्र	—	(सं०)	६४६, ६६२
सौनागिरिपच्चीसी	भागीरथ	(हि०)	६८
सोनागिरिपच्चीसी	—	(हि०)	६६२
सोनागिरिपूजा	आशा	(सं०)	५५५
सोनागिरिपूजा	—	(हि०)	५५६
			६७४, ७३०
सोमउत्पत्ति	—	(सं०)	२६५
सोमशर्मावारिषेणकथा	—	(प्रा०)	२५५
सोलहकारणकथा	रत्नपाल	(सं०)	६६५
सोलहकारणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
सोलहकारण जयमाल	—	(अप०)	६७६
सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५
सोलहकारणपूजा	—	(सं०)	६०६
			६४४, ६५२, ६६४, ७०४,
			७३१, ७८४
सोलहकारणपूजा	—	(अप०)	७०५
सोलहकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५११
			५१६, ५५६
सोलहकारणपूजा	—	(हि०)	५५६ ६७०
सोलहकारणभावनावर्णन	सदासुख	(हि०)	६८
सोलहकारणभावना	—	(हि०)	७८८
सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण वर्णन	सदासुखकासलीवाल	(हि०)	६८
सोलहकारणमंडलविधान	टेकचंद	(हि०)	५५६
सोलहकारणमंडल [चित्र]	—		५२४
सोलहकारणव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५१७
सोलहकारणरास	भ० सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६४
			६३६, ७८१
सोलहतिथिवर्णन	—	(हि०)	५६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सोलहसतियोंकेनाम	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
सोलहसतीसज्झाय	—	(हि०)	४५२
सौंदर्यलहरी स्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सौंदर्यलहरीस्तोत्र	भट्टारक जगद्भूषण	(सं०)	४२२
सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	(सं०)	५१६, ५५६
सौख्यव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सौभाग्यपंचमीकथा	सुन्दरविजयगणि	(सं०)	२५५
स्कन्दपुराण	—	(सं०)	६७०
स्तवन	—	(अप०)	६६०
स्तवनअरिहंत	—	(हि०)	६४८
स्तवन	आशाधर	(सं०)	६६१
स्तुति	—	(सं०)	४४२
स्तुति	कनककीर्त्ति	(हि०)	६०१ ६५०
स्तुति	टीकमचन्द	(हि०)	६३६
स्तुति	नवल	(हि०)	६६२
स्तुति	बुधजन	(हि०)	७०४
स्तुति	हरीसिंह	(हि०)	७७६
स्तुति	—	(हि०)	६६३
			६७३, ७५८
स्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	४७५
स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	(प्रा०)	५७६
स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०हि०)	६२८ ६५१
			६६८, ७०३, ७१४, ७१५
			७३६, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७
स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०हि०)	७२१
			७३८, ७४५, ७४८, ७७४
स्तोत्रपूजापाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८,
			७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखंडन	—	(हि०)	६४०
स्त्रीलक्षण	—	(सं०)	३५६
स्त्रीशृंगारवर्णन	—	(सं०)	५७६
स्थापनानिर्णय	—	(सं०)	६८
स्थूलभद्रकाचौमासावर्णन	—	(हि०)	३७७
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्झाय	—	(हि०)	४५२, ६१६
स्नपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,
स्नपनविधि [वृहद्]	—	(सं०)	५५६
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१
स्फुटकवित्तएवंपद्यसंग्रह	—	(सं०हि०)	६७२
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३
स्फुटपद्यएवं मंत्रमादि	—	(हि०)	६७०
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६
स्फुटवार्त्ता	—	(हि०)	७४१
स्फुटश्लोकसंग्रह	—	(सं०)	३४५
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५
स्वप्नाध्याय	—	(सं०)	२६५
स्वप्नावली	देवनन्दि	(सं०)	२६५, ६३३
स्वप्नावली	—	(सं०)	२६५
स्याद्वादचूलिका	—	(हि०ग०)	१४१
स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१४१
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	४२१
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,
			६३३ ६६५, ६८६,
			७२०, ७३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्वयंभूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	४३४
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(सं०)	७१५
स्वरविचार		(सं०)	५७२
स्वरोदय	—	(सं०)	१२८
स्वरोदय	रनजीतदास (चरनदास)	(हि०)	१४५
स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
			७०१, ७६३
स्वर्गसुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	(सं०)	४२८
स्वस्त्ययनविधान	—	(सं०)	५७४
			६५८, ६४६
स्वाध्याय	—	(सं०)	५७१
स्वाध्यायपाठ	—	(सं०प्रा०)	५६४
स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा०सं०)	६८ ६३३
स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	५५०
स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि०प०)	१२८
स्वार्थबीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६

ह

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
हंसकीढालतथाविनतीढाल	—	(हि०)	६८५
हंसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
हठयोगदीपिका	—	(सं०)	१२८
हणवंतकुमारजयमाल	—	(अप०)	६३८
हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	(सं०)	२१०
हनुमच्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
(हनुमन्तकथा)			५६५, ५६६, ७१७,
(हनुमतकथा)			७३४, ७३६,

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
(हनुमतरास)			७४०, ७४४,
(हनुमंत चौपई)			७५२, ७९२
हनुमान स्तोत्र	—	(हि०)	४३२
हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	६३५
हमीरचौपई	—	(हि०)	३७८
हमीररासो	महेशकवि	(हि०)	३६७, ७८३
हयग्रीवावतारचित्र	—		६०३
हरगौरीसंवाद	—	(सं०)	६०८
हरजीके दोहे	हरजी	(हि०)	७८८
हरडैकल्प	—	(हि०)	३०७
हरिचन्दशतक	—	(हि०)	७४१
हरिनाममाला	शंकराचार्य	(सं०)	३६८
हरिबोलाचित्रावली	—	(हि०)	६०१
हरिरस	—	(हि०)	६०१
हरिवंशपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१५६
हरिवंशपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५५
हरिवंशपुराण	श्री भूषण	(सं०)	१५७
हरिवंशपुराण	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५७
हरिवंशपुराण	धवल	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराण	यशः कीर्त्ति	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	१५७
हरिवंशपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि०प०)	१५८
हरिवंशपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०ग०)	१५७
हरिवंशपुराणभाषा	—	(हि०)	१५८, १५९
हरिवंशवर्णन	—	(हि०)	२५५
हरिहरनामावलिवर्णन	—	(सं०)	१९०
हवनविधि	—	(सं०)	७३१
हारावलि	महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२११
हिण्डोलना	शिवचंदमुनि	(सं०)	६८३
हितोपदेश	देवीचन्द्र	(सं०)	७४४
हितोपदेश	विष्णुशर्मा	(सं०)	३४५
हितोपदेशभाषा	—	(हि०)	३४६, ७६३
हुण्डावसर्पिणीकालदोष	माणकचन्द	(हि०)	६८, ४४८
हेमझारी	विश्वभूषण	(हि०)	७९३
हेमनीवृहद्वृत्ति	—	(सं०)	२७०
हेमव्याकरण [हेमव्याकरणवृत्ति]	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७०
होडाचक्र	—	(सं०)	६९९
होराज्ञान	—	(सं०)	२९५
होलीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	२५६
होलिकाकथा	—	(सं०)	२५५
होलिकाचौपई	डूंगर कवि	(हि०प०)	२५५
होलीकथा	छीतर ठोलिया	(हि०)	२४६, २५५, ६८५
होलीरेणुकाचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	२११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(सं०)	२५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि०ग०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३
सम्यक्त्वजयमाल	—	(प्रा०)	७६४
सम्यक्त्वपच्चीसी	—	(हि०)	७६०
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	पं० टोडरमल	(हि०)	७
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(सं०)	६५८
सम्यग्दृष्टिकीभावनावर्णन	—	(हि०)	७८५
सरस्वतीअष्टक	—	(हि०)	४५२
सरस्वतीकल्प	—	(सं०)	३५२
सरस्वतीचूर्णकानुसखा	—	(हि०)	७५७
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(सं०)	६५८
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(सं०)	५१५, ५६५
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	५५१, ७१६
सरस्वतीपूजा	—	(सं०)	५५१
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्दबख्शी	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	संघी पन्नालाल	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	पं० बुधजन	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(सं०)	४१६
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(सं०)	६५७
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(सं०)	६४७, ७६१
सरस्वतीस्तोत्र	बृहस्पति	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२०, ५७५
सरस्वतीस्तोत्रमाला [शारदास्तवन]		(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	५४७
सर्वतोभद्रपूजा	—	(सं०)	५५१
सर्वतोभद्रमंत्र	—	(सं०)	४१६
सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(सं०)	३०७
सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(सं०)	२७८
सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(सं०)	४५
सर्वार्थसिद्धिभाषा	जयचन्दछाबड़ा	(हि०)	४६
सर्वार्थसिद्धिसज्झाय	—	(हि०)	४५२
सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
सवैयाएवंपद	सुन्दरदास	(हि०)	६८१
सहस्रकूटजिनालयपूजा	—	(सं०)	५५१
सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्त्ति	(सं०)	५५२
सहस्रगुणितपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५५२, ७४७
सहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	चैनसुख	(हि०)	५५२
सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५२
सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	(सं०)	५६६, ६३६, ७०५
सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	६१४, ७५३, ७६३
सहस्रनाम [बड़ा]	—	(सं०)	४३१
सहस्रनाम [लघु]	आ० समंतभद्र	(सं०)	४२०
सहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	४३१
सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
साखी	कबीर	(हि०)	७२३
सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सागारधर्मामृत	आशाधर	(सं०)	६३
सातव्यसनस्वाध्याय	—	(हि०)	६४
साधुकीआरती	हेमराज	(हि०)	७७७
साधुदिनचर्या	—	(प्रा०)	६४
साधुवंदना	आनन्दसूरि	(हि०)	६१७
साधुवदना	पुण्यसागर	(पुरानी हि०)	४५२
साधुवंदना	बनारसीदास	(हि०)	६४४, ६५२, ७१६, ७४६
साधुवंदना	माणिकचन्द	(हि०)	४५२
साधुवंदना	—	(हि०)	६६४
सामायिकपाठ	अमितगति	(सं०)	६०४, ७३७
सामायिकपाठ	—	(सं०)	६५, ४२५, ४२६, ४२६, ४३०, ५६५, ५६७, ६०६, ६३७, ६४६, ६८६, ७६३
सामायिकपाठ	बहुमुनि	(प्रा०)	६४
सामायिकपाठ	—	(प्रा०)	६४, ५७८
सामायिकपाठ	—	(सं० प्रा०)	५७८
सामायिकपाठ	महाचन्द	(हि०)	४२६
सामायिकपाठ	—	(हि०)	६७१, ७८६, ७५४, ७५५
सामायिकपाठभाषा	जयचन्दछाबड़ा	(हि०)	६६, ५६७
सामायिकपाठभाषा	तिलोकचन्द	(हि०)	६६
सामायिकपाठभाषा	बुधमहाचन्द	(हि०)	६५
सामायिकपाठभाषा	—	(हि० ग०)	६६
सामायिकबड़ा	—	(सं०)	४३१, ६०५
सामायिकलघु	—	(सं०)	४३१, ४६६, ६०५, ६०७
सामायिकपाठवृत्तिसहित	—	(सं०)	७०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सामुद्रिकपाठ	—	(हि०)	७५६
सामुद्रिकलक्षण	—	(सं०)	२६४
सामुद्रिकविचार	—	(हि०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	श्री निधिसमुद्र	(सं०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	—	(सं०)	२६४, २६५
सामुद्रिकशास्त्र	—	(प्रा०)	२६४
सामुद्रिकशास्त्र	—	(हि०)	२६५, ६०३, ६२७, ७०२
सायंसध्यापाठ	—	(सं०)	४२०
सारचतुर्विंशति	—	(सं०)	४२०
सारचौबीसीभाषा	पारसदासनिगोत्या	(हि०)	४५३
सारणी	—	(अप०)	२६५
सारणी	—	(हि०)	६७२
सारसंग्रह	वरदराज	(सं०)	१४०
सारसंग्रह	—	(सं०)	३०७
सारसमुच्चय	कुलभद्र	(सं०)	६७, ५७४
सारस्वतयंत्रमंडल [चित्र]	—		५२५
सारस्वत दशाध्यायी	—	(सं०)	२६६
सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्त्तिसूरि		२६६
सारस्वतपञ्चसंधि	—	(सं०)	२६५
सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	(सं०)	२६५, ७८०
सारस्वतप्रक्रियाटीका	महीभट्ट	(सं०)	२६७
सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५१०
सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५५२, ६३६
सारस्वती धातुपाठ	—	(सं०)	२६५
सारावली	—	(सं०)	२६५
सालोतरराम	—	(हि०)	३०७
सावयधम्म दोहा	मुनि रामसिंह	(अप०)	६७
सांवलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	—	(हि०)	७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सासुबहूकाझगडा	ब्रह्मदेव	(हि०)	५५१, ६४८
सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५१६
सिद्धकूटमंडल [चित्र)	—		५२४
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४६७ ५५३
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५
सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा	—	(सं०)	५५३
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	(सं०)	५१०, ५१४, ५५३
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद]	भानुकीर्त्ति	(सं०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद]	शुभचन्द्र	(सं०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद]	—	(सं०)	५५४
सिद्धचक्रपूजा	—	(सं०)	५१४, ५५४, ६३८, ६५८, ७३५
सिद्धचक्रपूजा [वृहद]	संतलाल	(हि०)	५५३
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३
सिद्धपूजा	आशाधर	(सं०	५५४, ७१६
सिद्धपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	५३७
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(सं०)	५५४
सिद्धपूजा	—	(सं०)	४१५, ५५४, ५७४, ५६४, ६०५, ६०७, ६४६, ६५१, ६७०, ६७६, ६७८, ७०४, ७३१, ७४५, ७६३
सिद्धपूजा	—	(सं० हि०)	५६६
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५५५
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७१
सिद्धवंदना	—	(सं०)	४२०
सिद्धभक्ति	—	(सं०)	६२७
सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७८
सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	
सिद्धस्तवन	—	(सं०)	४२०
सिद्धस्तुति	—	(सं०)	५७४
सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभसूरि	(सं०)	२६७
सिद्धान्त अर्थसार	पं० रइधू	(अप०)	४६
सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(सं०)	२६७
सिद्धान्तकौमुदी	—	(सं०)	२६७
सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(सं०)	२६८
सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(सं०)	२६८
सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशकर	(सं०)	२६९
सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(सं०)	२६९
सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(सं०)	२६९
सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२३
सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८
सिद्धान्तबिन्दु	श्रीमधुसूदन सरस्वती	(सं०)	२७०
सिद्धान्तमंजरी	—	(सं०)	१३८
सिद्धान्तमंजूषिका	नागेशभट्ट	(सं०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावली	पंचानन भट्टाचार्य	(सं०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावली	—	(सं०)	२७०
सिद्धान्तमुक्तावलिटीका	महादेवभट्ट	(सं०)	१४०
सिद्धान्तलेश संग्रह	—	(हि०)	४६
सिद्धान्तसारदीपक	सकलकीर्त्ति	(सं०)	४६
सिद्धान्तसारदीपक	—	(सं०)	४७
सिद्धान्तसारभाषा	नथमलविलाला	(हि०)	४७
सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६
सिद्धान्तसार संग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(सं०)	४७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	(सं०)	४०४, ४२१, ४२२, ४२५, ४२६, ४३१, ४३२, ४७२, ४७४, ४७८, ५६५, ५६७, ६०५, ६४०, ६३३, ६३७, ७०१
सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	४२१
सिद्धियोग	—	(सं०)	३०७
सिद्धोंकास्वरूप	—	(हि०)	९७
सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४०
सिन्दूरप्रकरणभाषा	बनारसीदास	(हि०)	२२४, ३४०, ५६१, ५६५, ७१०, ७४२, ७४६, ७५५, ७९२
सिन्दूरप्रकरणभाषा	सुन्दरदास	(हि०)	३४०
सिरिपालचरिय	पं० नरसेन	(अप०)	२०५
सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमंकरमुनि	(सं०)	२५३
सिंहासनद्वात्रिंशिका	—	(सं०)	२५३
सिंहासनबत्तीसी	—	(सं०)	२५३
सीखसतरी	—	(हि०)	६८०
सीताचरित्र	कविरामचन्द (बालक)	(हि०प०)	२०६, ७२५, ७५५
सीताचरित्र	—	(हि०)	५९६
सीताढाल	—	(हि०)	४५२
सीताजीका बारहमासा	—	(हि०)	७२७
सीताजीकीविनती	—	(हि०)	६४८, ६८५
सीताजीकीसज्झाय	—	(हि०)	६१८
सीमन्धरकीजकडी	—	(हि०)	६४४
सीमन्धरस्तवन	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८
सीमन्धरस्वामीपूजा	—	(सं०)	५५५
सीमन्धरस्वामीस्तवन	—	(हि०)	६१६
सीलरास	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०२
सुकुमालचरिउ	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०६
सुकुमालचरिउ	श्रीधर	(अप०)	२०६
सुकुमालचरित्रभाषा	पं० नाथूलालदोसी	(हि०ग)	२०७
सुकुमालचरित्र	हरचंद गंगवाल	(हि०प०)	२०७
सुकुमालचरित्र	—	(हि०)	२०७
सुकुमालमुनिकथा	—	(हि०ग०)	२५३
सुकुमालस्वामीरास	ब्र० जिनदास	(हि०गुज)	३६६
सुखघडी	धनराज	(हि०)	६८३
सुखघडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७८६
सुखनिधान	कवि जगन्नाथ	(सं०)	२०७
सुखसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५१७
सुखसंपत्तिविधानकथा	—	(सं०)	२४६
सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	(अप०)	२४५
सुखसंपत्तिव्रतपूजा	अभयराम	(सं०)	५५५
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१४
सुगन्धदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
सुगन्धदशमीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४
सुगन्धदशमीकथा	—	(सं०)	२५४
सुगन्धदशमीकथा	—	(अप०)	६३२
सुगन्धदशमीव्रतकथा [सुगन्धदशमीकथा]	हेमराज	(हि०)	२५४, ७६५
सुगन्धदशमीपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११
सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]	—		५२५
सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(सं०)	२४२
सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(अप०)	४
सुगन्धदशमीव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	शृंगारसंबंधकथा	२१८
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवणस्तोत्र	७५४
अल्हू—	प्राकृतछंदकोष	३११
इन्द्रनंदि—	छेदपिण्ड	५७
	प्रायश्चितविधि	७४
कार्त्तिकेय—	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३
कुंदकुंदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६
	पंचास्तिकाय	४०
	प्रवचनसार	११२
	नियमसार	३८
	बोधप्राभृत	११५
	यतिभावनाष्टक	५७३
	रयणसार	८४
	लिंगपाहुड	११७
	षट्पाहुड	११७, ७४८
	समयसार	११६, ५७४, ७३७, ७६२
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	५४
	संबोधपंचासिका	११६, १२८
जिनभद्रगणि	अर्थदिपिका	१
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१
	जीवविचार	६१६
देवसेन—	आराधनासार	४६, ५७२, ५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४
	तत्वसार	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७
	दर्शनसार	१३३
	नयचक्र	१३४
	भावसंग्रह	७७
देवेन्द्रसूरि—	कर्मस्तवसूत्र	५
धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	३२६
धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
नन्दिषेण—	अजितशांतिस्तवन	३७६
भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला	५१
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभंगी	२
	कर्मप्रकृति	३
	गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
	गोम्मटसारजीवकाण्ड	६, १६, ७२०
	चतुर्विंशतिस्थानक	१८
	जीवविचार	७३२
	त्रिभंगीसार	३१
	द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५, ६२८, ७४४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	त्रिलोकसार	३२०
	त्रिलोकसारसंदृष्टि	३२२
	पंचसंग्रह	३८
	भावत्रिभंगी	४२
	लब्धिसार	४३
	विशेषसत्तात्रिभंगी	४३
	सत्तात्रिभंगी	४५
पद्मनंदि—	ऋषभदेवस्तुति	३८१
	जिनवरदर्शन	३६०
	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	३१६
मुनिपद्मसिंह—	ज्ञानसार	१०५
भद्रबाहु—	कल्पसूत्र	६, ७
भावशर्मा—	दशलक्षणजयमाल	४८६, ५१७
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्तरी	८५
मुनीन्द्रकीर्त्ति—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४
रत्नशेखरसूरि—	प्राकृतछंदकोश	३११
लक्ष्मीचन्द्रदेव—	स्तोत्र	५७६
लक्ष्मीसेन—	द्वादशानुप्रेक्षा	७४४
वसुनन्दि—	वसुनन्दिश्रावकाचार	८५
विद्यासिद्धि—	शांतिकरस्तोत्र	६८१
शिवार्य—	भगवतीआराधना	७६
श्रीराम—	प्राकृतरूपमाला	२६२
श्रुतमुनि—	भावसंग्रह	७८
समंतभद्र—	कल्याणक	३८३
सिद्धसेनसूरि—	इक्कीसठाणाचर्चा	२
सुन्दरसूर्य—	शांतिकरस्तोत्र	४२३
कविहाल—	कामसूत्र	३५३
ब्र० हेमचन्द्र—	श्रुतस्कंध	३७६, ५७२, ७०७, ७३७

अपभ्रंश भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अमरकीर्त्ति—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
ऋषभदास—	रत्नत्रयपूजाजयमाला	५३७
कनककीर्त्ति—	नन्दीश्वरजयमाला	५१६
मुनिकनकामर—	करकण्डुचरित्र	१६१
मुनिगुणभद्र—	दशलक्षणकथा	६३१
	रोहिणीविधान	६२६
जयमित्रहल—	वर्द्धमानकथा	१६६
जल्हण—	द्वादशानुप्रेक्षा	६२८
ज्ञानचन्द्र—	योगचर्चा	६२८
तेजपाल—	संभवजिणणाहचरिउ	२०४
देवनंदि—	रोहिणीचरित्र	२४३
	रोहिणीविधानकथा	२४३
धवल—	हरिवंशपुराण	१५७
नरसेन—	जिनरात्रिविधानकथा	६२८
	सिरिपालचरिय	२०५
पुष्पदन्त—	आदिपुराण	१४३, ६४२
	महापुराण	१५३
	यशोधरचरित्र	१८८
महणसिंह—	त्रिशतजिणचउवीसी	६८६
यशःकीर्त्ति—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	पद्धडी	६४२
	पाण्डवपुराण	१५०
	हरिवंशपुराण	१५७
योगीन्द्रदेव—	परमात्मप्रकाश	११०, ५७५, ६६३, ७०७ ७४७
	योगसार	११६, ७४८, ७५५
रइधू—	दशलक्षणजयमाल	२४३, ४८६, ५१८, ५३७ ५७२, ६३७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	वीरचरित्र	६४२
	षोडशकारण जयमाल	५१७, ५४२
	संबोधपंचासिका	१२८
	सिद्धान्तार्थसार	४६
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (श्रावकाचार)	६७, ६४१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द—	रागमासावरी	६४१
लक्ष्मण—	णेमिणाहचरिउ	१७१
लक्ष्मीचन्द—	आध्यात्मिकगाथा	१०३
	उपासकाचार दोहा	५२
	चूनडी	६२८, ६४१
	कल्याणकविधि	६४१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८
	निर्झरपंचमीविधानकथा	२४५, ६२८
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२
विमलकीर्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पद्धडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयंभू—	रिट्ठणेमिचरिउ	१५७, ६४२
	श्रुतपंचमीकथा	१४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीधर—	सुकुमालचरिउ	२०६
हरिश्चन्द—	अणत्थमितिसंधि	२४१, ६२८, ६४३

संस्कृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलंकदेव—	अकलंकाष्टक	५७५, ६३७, ६४१, ७१२
	तत्त्वार्थराजवार्तिक	३२
	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
	प्रायश्चितसंग्रह	७४
अक्षयराम—	णमोकारपैंतीसी पूजा	८२, ५१७
	प्रतिमासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुखसंपत्तिव्रत पूजा	५५५
	सौख्यकाव्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१६८
अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	४६४
	पल्यविधान पूजा	५०७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	१३८
अन्नंभट्ट—	तर्कसंग्रह	१३२
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	६२५, २६६, ७८०
	लघुसारस्वत	२६३
अपराजितसूरि	भगवतीआराधनाटिका	७६
अप्पयदीक्षित—	कुवलयानंद	३०८
अभयचन्द्रगणि—	पंचसंग्रहवृत्ति	३६
अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७६३
अभयनंदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनन्दि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्षण पूजा	४८६
	लघुश्रेयविधि	५३३
अभयसोम—	विक्रमचरित्र	१६६
पं० अभ्रदेव—	त्रिकालचौबीसीकथा	२२६,
	(रोटतीजकथा)	२४२
	दशलक्षण पूजा	४८८
	द्वादशव्रतकथा	२२८, २४६
	द्वादशव्रत पूजा	४६०
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४
	लब्धिविधानकथा	२३६
	लब्धिविधान पूजा	५१७
	श्रवणद्वादशीकथा	२४५
	श्रुतस्कंधविधानकथा	२४५
	षोडशकारणकथा	२४०,
		२४५, २४७
अमरकीर्त्ति—	जिनसहस्रनामटीका	३६३
	महावीरस्तोत्र	७५२
	यमकाष्टकस्तोत्र	४१३, ४२६
अमरसिंह—	अमरकोश	२७२
	त्रिकाण्डशेषसूची	२७४
अमितिगति—	धर्मपरीक्षा	३५६
	पंचसंग्रह टीका	३६
	भावनाद्वात्रिंशतिका	५७३
	(सामायिक पाठ)	७३७
	श्रावकाचार	६०
	सुभाषितरत्नसन्दोह	३४१
अमोघवर्ष—	धर्मोपदेशश्रावकाचार	६४
	प्रश्नोत्तररत्नमाला	५७३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अमोलकचन्द—	रथयात्राप्रभाव	३७४
अमृतचन्द्र—	तत्वार्थसार	२२
	पंचास्तिकायटीका	४१
	परमात्मप्रकाश टीका	११०
	प्रवचनसार टीका	११२
	पुरुषार्थसिद्धयुपाय	६८
	समयसारकलशा	१२०
	समयसार टीका	१२१
		७५५, ७६४
अरुणमणि—	अजितपुराण	१४२
	पंचकल्याणक पूजा	५००
अर्हद्देव—	शान्तिकविधि	५४४
अशग—	शांतिनाथपुराण	१५५
आत्रेयऋषि—	आत्रेयवैद्यक	२६६
आनन्द—	माधवानलकथा	२३५
आशा—	सोनागिर पूजा	५५५
आशाधर—	अकुरारोपणविधि	४५३,
		५१७
	अनगारधर्मामृत	४८
	आराधनासारवृत्ति	६४
	इष्टोपदेशटीका	३८०
	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	३८५
	कल्याणमाला	५७५
	कलशाभिषेक	४६७
	कलशारोपणविधि	४६६
	गणधरवलयपूजा	७६१
	जलयात्राविधान	४७७
	जिनयज्ञकल्प	
	(प्रतिष्ठापाठ)	५२१
		४७८, ६०८, ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३९१, ५४०, ५६९, ५९६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६५५, ६८३, ६८६, ६९२, ७१२, ७१५, ७२०, ७४०, ७५२
	धर्मामृतसूक्तिसंग्रह	६३
	ध्वजारोपणविधि	४९२
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७९१
	भूपालचतुर्विंशतिका टीका	४११
	रत्नत्रयपूजा	५२९
	श्रावकाचार (सागारधर्मामृत)	६३५
	शांतिहोमविधान	५४५
	सरस्वतीस्तुति	६४७, ६५८, ७९१
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६
	स्तवन	६६१
इन्द्रनंदि—	अंकुरारोपणविधि	४५३
	देवपूजा	४९०
	नीतसार	३२९
उज्ज्वलदत्त (संग्रहकर्त्ता)—	उणादिसूत्रसंग्रह	२५७
उमास्वामि—	तत्वार्थसूत्र	२३, ४२५, ४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६९, ५७१, ५७३, ५९५, ५९६, ६०१, ६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०, ६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०४, ७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८
	पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	पूजाप्रकरण	५१२
	श्रावकाचार	९०
भ० एकसंधि—	प्रायश्चितविधि	७४
कनककीर्त्ति—	णमोकारपैंतीसीव्रत विधान	४८२, ५१७
कनककुशल—	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३९६
कनकनंदि—	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
कनकसागर—	कुमारसंभवटीका	१६२
कमलप्रभाचार्य—	जिनपंजरस्तोत्र	३९०, ४३०, ६४९
कमलविजयगणि—	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तोत्र	३८८
कालिदास—	कुमारसंभव	१६२
	ऋतुसंहार	१६१
	मेघदूत	१८७
	रघुवंश	१९३
	श्रुतरत्नाकर	३१४
	श्रुतबोध	६४४
	शाकुन्तल	३१६
कालिदास—	नलोदयकाव्य	१७५
	शृंगारतिलक	३५९
काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचंद्रिका	२८३
	शीघ्रबोध	२९२, ६०३
काशीराज—	अजीर्णमंजरी	२९६
कुमुदचन्द्र—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	३८४, ४२५, ४२७, ४३०, ४३१,

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		५६५, ५७२, ५७५, ५६५, ६१६, ६३३, ६३७, ६७०, ७२४, ७५७
कुलभद्र—	सारसमुच्चय	६७, ५७४
भट्टकेदार—	वृत्तरत्नाकर	३१४
केशव—	जातकपद्धति	२८१
	ज्योतिषमणिमाला	२८२
केशवमिश्र—	तर्कभाषा	१३२
केशववर्णी—	गोम्मटसारवृत्ति	१०
	आदित्यव्रतपूजा	४६१
केशवसेन—	रत्नत्रयपूजा	५२६
	रोहिणीव्रतपूजा	५१३, ५३२, ७२६
	षोडशकारणपूजा	५४२, ६७६
कैय्यट—	भाष्यप्रदीप	२६२
कौहनभट्ट—	वैय्याकरणभूषण	२६३
ब्र० कृष्णदास	मुनिसुव्रतपुराण	१५३
	विमलनाथपुराण	१५४
कृष्णशर्मा—	भावदीपिका	१३८
क्षपणक—	एकाक्षरकोश	२७४
क्षेमंकरमुनि—	सिंहासनद्वात्रिंशिका	२५३
क्षमेन्द्रकीर्त्ति—	गजपंथामंडलपूजा	४६८
खेता—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५१
गंगादास—	पंचक्षेत्रपालपूजा	५०२
	पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	५०८, ५१६
	दव्रत	५३२
	सम्मेदशिखरपूजा	५४९, ७२७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गणपति—	रत्नदीपक	२६०
गणिरत्नसूरि—	षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	१३६
गणेश—	ग्रहलाघव	२८०
	पंचांगसाधन	२८५
गर्गऋषि—	गर्गसंहिता	२८०
	पाशाकेवली	२८६, ६४७
	प्रश्नमनोरमा	२८७
	शकुनावली	२६२
गुणकीर्त्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
गुणचन्द्र—	अनन्तव्रतोद्यापन	५१३, ५३६, ५४०
	अष्टाह्निकाव्रतकथा संग्रह	२१६
गुणचन्द्रदेव—	अमृतधर्मरसकाव्य	४८
गुणनंदि—	ऋषिमंडलपूजाविधान	४६३, ५३६, ७६२
	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	१६९
	त्रिकालचौबीसीकथा	६२२
	संभवजिनस्तोत्र	४१६
गुणभद्र—	शान्तिनाथस्तोत्र	६१४, ७२२
गुणभद्राचार्य—	अनन्तनाथपुराण	१४२
	आत्मानुशासन	१००
	उत्तरपुराण	१४४
	जिनदत्तचरित्र	१६६
	धन्यकुमारचरित्र	१७२
	मौनिव्रतकथा	२३६
	वर्द्धमानस्तोत्र	४१५
गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	६०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२
गुणविनयगणि—	रघुवंशटीका	१६४
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	
गोपालदास—	रूपमंजरीनाममाला	२७६
गोपालभट्ट—	रसमंजरीटीका	३५६
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६६
गौतमस्वामी—	ऋषिमंडलपूजा	६०७
	ऋषिमंडलस्तोत्र	३८२
		४२४, ६४६, ७३२
घटकर्पर—	घटकर्परकाव्य	१६४
चंड कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२
चन्द्रकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितीर्थंकराष्टक	५६४
	विमानशुद्धि	५३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६
चन्द्रकीर्त्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६, ६४०, ६४६, ६८३, ७१२, ७१७, ७२३, ७८७
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६, ७१२, ७२०
चामुण्डराय—		५५
	ज्वरतिमिरभास्कर	२९८
	भावनासारसंग्रह	५५, ७७, ६१५
चारुकीर्त्ति—	गीतवीतराग	३८६
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-चूरि	२५७
चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२९०
चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३६
चोखचन्द—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
छत्रसेन—	चंदनषष्ठीव्रतकथा	६३१
जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
जगद्भूषण—	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	४२२
जगन्नाथ—	गणपाठ	२५६
	नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३९६
	सुखनिधान	२०७
जतीदास—	दानकोबीनती	६४३
जयतिलक—	निजस्मृत	३८
जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३५
भ० जिणचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
जिनचन्द्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७, ५०१, ५३७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	ज्येष्ठजिनवरलाहान	७६५
	नेमिनाथपुराण	१४७
	पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४
	सप्तर्षिपूजा	५४८
	हरिवंशपुराण	१५६
	सोलहकारणपूजा	७६५
	जलयात्राविधि	६८३
पं० जिनदास—	होलीरेणुकाचरित्र	२११
	अकृत्रिमजिनचैत्यालय पूजा	४५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनप्रभसूरि—	सिद्धहेमतंत्रवृत्ति	२६७
जिनदेवसूरि—	मदनपराजय	३१७
जिनलाभसूरि—	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	३८७
जिनवर्द्धनसूरि—	अलंकारवृत्ति	३०८
जिनसेनाचार्य—	आदिपुराण	१४२, ६४६
	ऋषभदेवस्तुति	३८१
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३९२
		४२५, ५७३, ६४७
		७०७, ७४७
जिनसेनाचार्य—	हरिवंशपुराण	१५५
जिनसुन्दरसूरि—	होलीकथा	२५६
भ० जिनेन्द्रभूषण—	जिनेन्द्रपुराण	१४६
ब्र० ज्ञानकीर्त्ति—	यशोधरचरित्र	१९२
ज्ञानभास्कर—	पाशाकेवली	२८६
ज्ञानभूषण—	आत्मसंबोधनकाव्य	१००
	ऋषिमंडलपूजा	४६३, ६२६
	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	१२
	तत्वज्ञानतरंगिणी	५८
	पंचकल्याणकोद्यापनपूजा	६६०
	भक्तामरपूजा	५२
	श्रुतपूजा	५३७
	सरस्वतीपूजा	५१५
		५४५, ५५१
	सरस्वती स्तुति	६५७
दैवज्ञ ढुंढिराज—	जातकाभरण	२८२
त्रिभुवनचंद्र—	त्रिकालचौबीसी	४८४
दयाचंद्र—	तत्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा	
		४८२
दलपतराय वंशीधर—	अलंकाररत्नाकार	३०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
दामोदर—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	प्रशस्ति	६०८
	व्रतकथाकोश	२४१
देवचन्द्रसूरि—	पार्श्वनाथस्तवन	६३३
दीक्षितदेवदत्त—	सम्मेदशिखरमहात्म्य	९२
देवनन्दि—	गर्भषडारचक्र	१३१, ७३७
	जैनेन्द्रव्याकरण	२५९
	चौबीसतीर्थंकरस्तवन	६०६
	सिद्धिप्रियस्तोत्र	४२१
		४२५, ४२७, ४२६, ४३१,
		५७२, ५९५, ५७८, ५९७,
		६०५, ६०६, ६३३,
		६३७, ६४४
देवसूरि—	शांतिस्तवन	६१६
देवसेन—	आलापपद्धति	१३०
देवेन्द्रकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	४७४
	त्रेपनक्रियोद्यापन	६३८, ७९६
	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४९१
	पंचमीव्रतपूजा	५०४
	पंचमेरुपूजा	५१६
	प्रतिमासांतचतुर्दशीपूजा	७६१
	रविव्रतकथा	२३७, ५३५
	रैव्रतकथा	२३९
	व्रतकथाकोश	२४२
	सप्तऋषिपूजा	७९५
दौर्गसिंह—	कातन्त्ररूपमालाटीका	२५८
धनञ्जय—	द्विसंधानकाव्य	१७९
	नाममाला	२७५, ५७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६८६, ६९९, ७११, ७१२, ७१३
	विषापहारस्तोत्र	४१५, ४२५, ४२७, ५६५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४९
धर्मकलशसूरि—	सन्देहसमुच्चय	१३८
धर्मकीर्ति —	कौमुदीकथा	२२२
	पद्मपुराण	१४९
	सहस्रगुणितपूजा	५५२
भ० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१९
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३
	गोम्मटसारटीका	१०
	संयोगपंचमीकथा	२५३
	सहस्रनामपूजा	७४७
धर्मचन्द्रगणि—	अभिधानरत्नाकर	२७२
धर्मदास —	विदग्धमुखमंडन	१९६
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५२
	न्यायदीपिका	१३५
	शीतलनाथपूजा	५४६
नंदिगुरु—	प्रायश्चित समुच्चय चूलिका टीका	७५, ७८०
नन्दिषेण—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन	४९४
प० नकुल—	अश्वलक्षण	७८१
	शालिहोत्र	३०६
प० नयविलास—	ज्ञानार्णवटीका	१०८
नरपति—	नरपतिजयचर्या	२८५
नरसिंहभट्ट—	जिनशतटीका	३९१
नरहरिभट्ट—	श्रवणभूषण	१९९
नरेन्द्रकीर्ति—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	५३५, ६५५, ७९३
	पद्मावती पूजा	६५५
नरेन्द्रसेन—	प्रमाणप्रमेयकलिका	१३७, ५७५
	प्रतिष्ठादीपक	५२१
	रत्नत्रय पूजा	५६४
	सिद्धान्तसारसंग्रह	४७
नागचन्द्रसूरि—	विषापहारस्तोत्रटीका	४१६
नागराज—	पिंगलशास्त्र	३११
नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमंजूषिका	२७०
नागोजीभट्ट—	परिभाषेन्दुशेखर	२६१
नाढमल्ल—	शार्ङ्गधरसंहिताटीका	३०६
नारचन्द्र—	कथारत्नसागर	२२०
	ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण	२८३
	नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८४
कविनीलकंठ—	नीलकंठताजिक	२८५
	शब्दशोभा	२६४
मुनिनेत्रसिंह—	सप्तनयावबोध	१४०
नेमिचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१०२
	सुप्रभाताष्टक	६३३
ब्र० नेमिदत्त—	औषधदानकथा	२१८
	अष्टकपूजा	५६०
	कथाकोश (आराधना-कथा कोश)	२१९
	नाग श्री कथा	२३१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धन्यकुमार चरित्र	१७३
	धर्मोपदेशश्रावकाचार	६४
	निशिभोजनकथा	२३१
	पात्रदानकथा	२३३
	प्रीतिकरचरित्र	१८२
	श्रीपालचरित्र	२००
	सुदर्शनचरित्र	२०८
पंचाननभट्टाचार्य—	सिद्धान्तमुक्तावली	१७०
पद्मनंदि I—	पद्मनन्दिपंचविंशतिका	६६
	पद्मनन्दिश्रावकाचार	६८, ९०
पद्मनंदि II—	अनन्तव्रतकथा	२१४
	करुणाष्टक	५७४
		६३३ ६३७, ६८८
	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४९१
	दानपंचाशत	९०
	धर्मरसायन	९१
	पार्श्वनाथस्तोत्र	५९९
		७४४
	पूजा	५६०
	नंदीश्वरपंक्तिपूजा	६३६
	भावनाचौतीसी	
	(भावनापद्धति)	५७५, ६३४
	रत्नत्रयपूजा	५२६
		५७५, ६३६
	लक्ष्मीस्तोत्र	६३७
	वीतरागस्तोत्र	४२४,
		४३१, ५७४, ६३४, ७३१
	सरस्वतीपूजा	५५१, ७११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सिद्धपूजा	५३७
	स्तोत्र	५७५
पद्मनाभ—	भाष्वती	२८९
पद्मनाभकायस्थ—	यशोधरचरित्र	१८९
पद्मप्रभदेव—	पार्श्वनाथस्तोत्र	४०५
		६१४, ७०२, ७४५
	लक्ष्मीस्तोत्र	४१४, ४२३
		४२६, ४३२, ५६६, ५७२,
		५७४, ५९६, ६४४, ६८८
		६६३, ६६५, ७०३, ७१६
पद्मप्रभसूरि—	भुवनदीपक	२८९
परमहंसपरिव्राजकाचार्य—	मुहूर्त्तमुक्तावली	२८६
	मेघदूतटीका	१८७
पाणिनी—	पाणिनीव्याकरण	२६१
पात्रकेशरी—	पत्रपरीक्षा	१३६
पार्श्वदेव—	पद्मावत्यष्टकवृत्ति	४०२
पुरुषोत्तमदेव—	अभिधानकोश	२७१
	त्रिकाण्डशेषाभिधान	२७५
	हारावलि	२११
पूज्यपाद—	इष्टोपदेश (स्वयम्भूस्तोत्र)	
		६३५, ६३७
	परमानंदस्तोत्र	५७४
	श्रावकाचार	९०
	समाधितंत्र	१२५
	समाधिशतक	१२७
	सर्वार्थसिद्धि	४५
पूर्णदेव—	यशोधरचरित्र	१९०
पूर्णचन्द्र—	उपसर्गहरस्तोत्र	३८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८
	भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्धमहामत्र)	३४६
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१
	आराधनासारप्रबंध	२१६
	आदिपुराणटिप्पण	१४३
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५
	क्रियाकलापटीका	५३
	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	२१
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५
	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१३८
	रत्नकरण्डश्रावकाचार-टीका	८२
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१९२
	समाधिशतकटीका	१२७
	स्वयंभूस्तोत्रटीका	४३४
भ० प्रभाचंद्र—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	४६७
	मुनिसुव्रतछंद	५५७
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
[illegible]मुनि—	सामायिकपाठ	६४
[illegible]लचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२
[illegible]देव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४
	परमात्मप्रकाशटीका	१११
[illegible]सेन—	क्षमावणीपूजा	५६४
	रत्नत्रयकामहार्घ व क्षमावणी	७८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भक्तिलाभ—	षष्ठिशतकटिप्पण	१३६
भट्टशंकर—	वैद्यविनोद	३०५
भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
भट्टोत्पल—	लघुजातक	२९१
	बृहज्जातक	२९१
	षटपचाशिकावृत्ति	२९२
भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४९४
	भद्रबाहुसंहिता (निमित्तज्ञान)	२८५, ४८०, ८००
भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	वरांगचरित्र	१९५
	वैराग्यशतक	३१७
	भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
भागचंद—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
भानुकीर्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३९
	सिद्धचक्रपूजा	५५१
भानुजीदीक्षित—	अमरकोषटीका	२७४
भानुदत्तमिश्र—	रसमंजरी	३५९
तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती-तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
भारवी—	किरातार्जुनीय	१६१
भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	५३३
भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११, ४२५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पं० मंगल (संग्रह कर्त्ता)—	धर्मरत्नाकर	६२
मणिभद्र—	क्षेत्रपालपूजा	६८६
मदनकीर्ति—	अनंतव्रतविधान	२१४
	षोडशकारणविधान	५१४
मदनपाल—	मदनविनोद	३००
भावमिश्र—	भावप्रकाश	२४६
मधुसूदनसरस्वती—	सिद्धान्तबिन्दु	२७०
मनुसिंह—	योगचिन्तामणि	३०१
मनोहरश्याम—	श्रुतबोधटीका	३१५
मल्लिनाथसूरि—	रघुवंशटीका	१६३
	शिशुपालवधटीका	१६६
मल्लिभूषण—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
मल्लिषेणसूरि—	नागकुमारचरित्र	१७५
	भैरवपद्मावतीकल्प	३४६
	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७, ५७३
	स्याद्वदमंजरी	१४१
महादेव—	मुहूर्त्तदीपक	२९०
	सिद्धान्तमुक्तावलि	१४०
महासेनाचार्य—	प्रद्युम्नचरित्र	१८०
महीक्षपणकवि—	अनेकार्थध्वनिमंजरा	२७१
भ० महीचन्द्—	त्रिलोकतिलकस्तोत्र	६८२, ७१२
	पंचमेरूपूजा	६०७
	पद्मावतीछंद	५६०, ६०७
महीधर—	मंत्रमहोदधि	३५१, ५७७
	स्वर्णाकर्षणविधान	४२८
महीभट्टी—	सारस्वतप्रक्रियाटीका	२६७
महेश्वर—	विश्वप्रकाश	२७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शब्द व धातुभेदप्रभेद	२७७
माघ—	शिशुपालवध	१८६
माघनंदि—	चतुर्विंशतितीर्थंकर जयमाल	३८८, ४६६, ५७६
माणिक्यनंदि—	परीक्षामुख	१३६
माणिक्यभट्ट—	वैद्यामृत	३०५
माणिक्यसूरि—	नलोदयकाव्य	१७४
माधवचन्द्रत्रैविद्यदेव—	त्रिलोकसारवृत्ति	३२२
	क्षपणासारवृत्ति	७
माधवदेव—	न्यायसार	१३५
मानतुंगाचार्य—	भक्तामरस्तोत्र	४०७, ४२५, ४२६, ४३१, ५६६, ५६६, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६३९, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६८१, ६८५, ६९१, ७०३, ७०५, ७०६, ७०७, ७४१
मुनिभद्र—	शांतिनाथस्तोत्र	४१७, ७१५
पं० मेधावी—	अष्टांगोपाख्यान	२१५
	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	६२
भ० मेरूचंद—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	६०७
मोहन—	कलशविधान	४६६
यशःकीर्त्ति—	अष्टाह्निकाकथा	६४५
	धर्मशर्माभ्युदयटीका	१७४
	प्रबोधसार	३३१
यशोनन्दि—	धर्मचक्रपूजा	४६१, ५१५
	पंचपरमेष्ठीपूजाविधि	५०२, ५०६, ५१८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
यशोविजय—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	६५८
योगदेव —	तत्त्वार्थवृत्ति	२२
रघुनाथ —	तार्किकशिरोमणि	१३३
	रघुनाथविलास	३१२
साधुरणमल्ल—	धर्मचक्रपूजा	४९२
रत्नशेखरसूरि—	छंदकोश	३०९
रत्नकीर्त्ति—	रत्नत्रयविधानकथा	२४२
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०
रत्नचन्द—	जिनगुणसंपत्तिपूजा	४७७, ५१०
	पंचमेरुपूजा	५०५
	पुष्पांजलिव्रतपूजा	५०८
	सुभौमचरित्र (भौमचरित्र)	१८५, २०९
रत्ननंदि—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४९२
	पल्यविधानपूजा	५०६, ५०९, ५१३
	भद्रबाहुचरित्र	१८३
	महीपालचरित्र	१८६
रत्नपाल—	सोलहकारणकथा	६६५
रत्नभूषण—	सिद्धपूजा	५५४
रत्नशेखर—	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८
	समवसरणपूजा	५३७
रत्नप्रभसूरि—	प्रमाणनयतत्त्वावलोकालंकार टीका	१३७
रत्नाकर—	आत्मनिंदास्तवन	३८०
रविषेणाचार्य—	पद्मपुराण	१४८
राजकीर्त्ति—	प्रतिष्ठादर्श	५२०
	षोडशकारणव्रतोद्यापन पूजा	५४३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
राजमल्ल—	अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	१२९
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	लाटीसंहिता	८४
राजशेखर—	कर्पूरमंजरी	३१६
राजसिंह—	पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	४०६
राजसेन—	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६६, ७३७
राजहंसोपाध्याय—	षष्ट्याधिकशतकटीका	४४
मुमुक्षुरामचन्द्र—	पुण्याश्रवकथाकोष	२३३
रामचंद्राश्रम—	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
रामवाजपेय—	समरसार	२९४
रायमल्ल—	त्रैलोक्यमोहनकवच	६६०
रुद्रभट्ट—	वैद्यजीवनटीका	३०४
	शृङ्गारतिलक	३५९
रोमकाचार्य—	जन्मप्रदीप	२८१
लंकानाथ—	अर्थप्रकाश	२९६
लक्ष्मण (अमरसिंहात्मज)—	लक्ष्मणोत्सव	३०३
लक्ष्मीनाथ—	पिंगलप्रदीप	३११
लक्ष्मीसेन—	अभिषेकविधि	४५८
	कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	४६४, ५१७
	चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा एवं स्तोत्र	४२३
	चिन्तामणिस्तवन	७६१
	सप्तर्षिपूजा	५४८
लघुकवि—	सरस्वतीस्तवन	४१९
ललितकीर्त्ति—	अक्षयदशमीकथा	६६५
	अनंतव्रतकथा	६४५, ६६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	आकाशपंचमीकथा	६४५
	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	४६८
	चौसठशिवकुमारका	
	कांजी की पूजा	५१४
	जिनचरित्रकथा	६४५
	दशलक्षणीकथा	६६५
	पल्यविधानपूजा	५०६
	पुष्पांजलिव्रतकथा	६६५
		७६४
	रत्नत्रयव्रतकथा	६४५, ६६५
	रोहिणीव्रतकथा	६४५
	षोडशकारणकथा	६४५
	समवसरणपूजा	५४६
	सुगंधदशमीकथा	६४५
लोकसेन—	दशलक्षणकथा	२२७, २४२
लोकेशकर—	सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका	२६६
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	७१५
लोगाक्षिभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरण संग्रह	१३७
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	३०३
वनमालीभट्ट—	भक्तिरत्नाकर	८००
वरदराज—	लघुसिद्धान्तकौमुदी	२६३
	सारसंग्रह	१४०
वररुचि—	एकाक्षरीकोश	२७०
	योगशत	३०२
	शब्दरूपिणी	२६४
	श्रुतबोध	३१५
	सर्वार्थसाधनी	२७८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
वराहमिहर—	षट्पंचासिका	२९२
भ० वर्द्धमानदेव—	वरांगचरित्र	१९४
वर्द्धमानसूरि—	लग्नशास्त्र	२९१
बल्लाल—	भोजप्रबन्ध	१८५
वसुनन्दि—	देवागमस्तोत्रटीका	३६५
	प्रतिष्ठापाठ	५२१
	प्रतिष्ठासारसंग्रह	५२२
	मूलाचारटीका	७९
वाग्भट्ट—	नेमिनिर्वाण	१७७
	वाग्भट्टालंकार	३१२
वादिचन्द्रसूरि—	कर्मदहनपूजा	५६०
	ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	पवनदूतकाव्य	१७८
वादिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२, ४२५, ४२७, ५७२, ५७४, ५९५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२, ६५७, ७२१
	गुर्वाष्टक	६५७
	पार्श्वनाथचरित्र	१७८
	यशोधरचरित्र	१९०
वादीभसिंह—	क्षत्रचूडामणि	१९२
	पंचकल्याणकपूजा	५००
वामदेव—	त्रिलोकदीपक	३२०
	भावसंग्रह	७८
	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	३२३
वासवसेन—	यशोधरचरित्र	१९०
वाहड़दास—	सन्निपातनिदान	३०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	५०६
आ० विद्यानन्दि—	अष्टसहस्री	१२१, १३०
	आप्तपरीक्षा	१२६
	पत्रपरीक्षा	१३६
	पंचनमस्कारस्तोत्र	४०१
	प्रमाणपरीक्षा	१३७
	प्रमाणमीमांसा	१३८
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६
	श्लोकवार्त्तिक	४४
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२६८
विद्याभूषणसूरि—	चिंतामणिपूजा (बृहद्)	४७५
विनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४
विनयचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२
	भूपालचतुर्विंशतिका स्तोत्रटीका	४१२
विनयरत्न—	विदग्धमुखमंडनटीका	१६७
विमलकीर्त्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१
	सुखसंपत्तिविधानकथा	२४५
विवेकनंदि—	त्रिभंगीसारटीका	३२
विश्वकीर्त्ति—	भक्तामरस्तोत्रोद्यापनपूजा	५२३
विश्वभूषण—	अढाईद्वीपपूजा	४४५
	आठकोडमुनिपूजा	४६१
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२
	कलशविधि	४६६
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	तेरहद्वीपपूजा	४८४
	पद	५६१
	पूजाष्टक	५१३
	मांगीतुंगीगिरिमंडल पूजा	५२६
	रेवानदीपूजा	५३२
	शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	सप्तर्षिपूजा	५४८
	सिद्धकूटपूजा	५१६
विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
	षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	५१६
	षण्णवतिक्षेत्रपूजा	५४१
	समवसरणस्तोत्र	४१६
विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विष्णुशर्मा—	पंचतन्त्र	३३०
	पंचाख्यान	२३२
	हितोपदेश	३४५
विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
वीरनन्दि—	आचारसार	४२
	चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित	८६
वुधाचार्य—	उत्तसर्गार्थविवरण	५२
वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
वैजलभूपति—	प्रबोधचंद्रिका	३१७
बृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
शंकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
शंकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन विधिकथा	२४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
शंकराचार्य—	आनन्दलहरी	६०८
	अपराधसूदनस्तोत्र	६६२
	गोविन्दाष्टक	७३३
	जगन्नाथाष्टक	३८६
	दक्षरणामूर्त्तिस्तोत्र	६६०
	हरिनाममाला	३६७
शंभूसाधु—	जिनशतटीका	३६०
शंभूराम—	नेमिनाथपूजाष्टक	४६६
शाकटायन—	शाकटायनव्याकरण	२६५
शान्तिदास—	अनंतचतुर्दशीपूजा	४५६
	गुरूस्तवन	६५७
शार्ङ्गधर—	रसमंजरी	३०२
	शार्ङ्गधरसंहिता	३०५
पं० शाली—	नेमिनाथस्तोत्र	३९६, ७५७
शालिनाथ—	रसमञ्जरी	३०२
आ० शिवकोटि—	रत्नमाला	८३
शिवजीलाल—	अभिधानसार	२७२
	पंचकल्याणकपूजा	४८६
	रत्नत्रयगुणकथा	२३७
	षोडशकारणभावनावृत्ति	८८
शिववर्मा—	कातन्त्रव्याकरण	२५६
शिवादित्य—	सप्तपदार्थी	१४०
शुभचन्द्राचार्य—	ज्ञानार्णव	१०६
शुभचन्द्र—II	अष्टाह्निकाकथा	२१५
	करकण्डुचरित्र	१६१
	कर्मदहनपूजा	४६५, ५३७, ६४५
	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	१०४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	गणधरवलयपूजा	६६०
	चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	४७३
	चन्दनाचरित्र	१६४
	चतुर्विंशतिजिनाष्टक	५७८
	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
	चारित्रशुद्धिविधान	४७५
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजा	६४५
	जीवन्धरचरित्र	१७०
	तत्ववर्णन	२०
	तीसचोवीसीपूजा	५२७
	तेरहद्वीपपूजा	४८३
	पंचकल्याणपूजा	५०२
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०२
	पल्यव्रतोद्यापन	५०७, ५३८
	पाण्डवपुराण	१५०
	पुष्पाजलिव्रतपूजा	५०८
	श्रेणिकचरित्र	२०३
	सज्जनचित्तवल्लभ	३३८
	सार्द्धद्वयद्वीपपूजा (अढाईद्वीपपूजा)	४५५
	सुभाषितार्णव	३४१
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
शोभनमुनि—	जिनस्तुति	३६१
श्रीचन्द्रमुनि—	पुराणसार	१५१
श्रीधर—	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
	शुभमालिका	५७४
	श्रुतावतार	३८८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४
श्रीनिधिसमुद्र—		
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१
	ज्योतिषपटलमाला	६७२
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५
	चारित्रशुद्धिविधान	४७४
	पाण्डवपुराण	१५०
	भक्तामरउद्यापनपूजा	५२३, ५४०
	हरिवंशपुराण	१५७
श्रुतकीर्त्ति—	पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४
श्रुतसागर—	अनंतव्रतकथा	२१४
	अशोकरोहिणीकथा	२१६
	आकाशपंचमीव्रतकथा	२१६
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४, ५१४, ५१७
	जिनसहस्रनामटीका	३६३
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७
	पल्यविधानव्रतोपाख्यान कथा	२३३
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	मेघमालाव्रतकथा	५१४
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७
	यशोधरचरित्र	१६२
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७
	रविव्रतकथा	२३७
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	व्रतकथाकोष	२४१
	षट्पाहुडटीका	११६
	श्रुतस्कंधपूजा	५४७
	षोडशकारणपूजा	५१०
	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
	सुगन्धदशमीकथा	५१४
सकलकीर्त्ति—	अष्टांगसम्यग्दर्शन	२१५
	ऋषभनाथचरित्र	१६०
	कर्मविपाकटीका	५
	तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	धन्यकुमारचरित्र	१७२
	परमात्मराजस्तोत्र	४०३
	पुराणसारसंग्रह	१५१
	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१, ६१
	पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	मल्लिनाथपुराण	१५२
	मूलाचारप्रदीप	७६
	यशोधरचरित्र	१२८
	वर्द्धमानपुराण	१५३
	व्रतकथाकोश	२४२
	शांतिनाथचरित्र	१६८
	श्रीपालचरित्र	२०१
	सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	सिद्धान्तसारदीपक	४६
	सुदर्शनचरित्र	२०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
मुनिसकलकीर्ति—	नंदीश्वरपूजा	७६१
सकलचन्द्र—	चैत्यवंदना	६६८
	दर्शनस्तोत्र	५७४
सकलभूषण—	उपदेशरत्नमाला	५०
	गोम्मटसारटीका	१०
सदानंदगणि—	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	२६६
आचार्यसमंतभद्र—	आप्तमीमांसा	६४७
	जिनशतकालंकार	३६१
	देवागमस्तोत्र	३६४, ४२५, ४७५, ७२०
	युक्त्यनुशासन	१३० १३६, ६४७
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८१, ६६१, ७६५
	बृहद्स्वयंभूस्तोत्र	५७२, ६२८
	समंतभद्रस्तुति	५७८
	सहस्रनामलघु	४२०
	स्वयंभूस्तोत्र	४२५, ४३३, ५७४, ५६५, ६३३, ७२०
समयसुन्दरगणि—	रघुवंशटीका	१६४
	वृत्तरत्नाकरछंदटीका	३१४
	शांबुप्रद्युम्नप्रबंध	१६७
समयसुन्दरोपाध्याय—	कल्पसूत्रटीका	७
सहसकीर्ति—	त्रैलोक्यसारटीका	३२३
कविसारस्वत—	शिलोच्छकोश	२७०
सिंहतिलक—	वर्द्धमानविद्याकल्प	३५१
सिंहनन्दि—	धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार	६४
	नमस्कारमंत्रकल्पविधि सहित	३५१
सिद्धनागार्जुन—	कक्षपुट	२६७
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२
सिद्धसेनदिवाकर—	वर्द्धमानद्वात्रिंशिका	४१५
	सन्मतितर्क	१४०
सुखदेव—	आयुर्वेदमहोदधि	२६७
वर्णीसुखसागर—	मुक्तावलीपूजा	५२७
सुधासागर—	पंचकल्याणकपूजा	५००, ५१६, ५३७
	परमसप्तस्थानकपूजा	५१६
सुन्दरविजयगणि—	सौभाग्यपंचमीकथा	२५१
सुमतिकीर्त्ति—	कर्मप्रकृतिटीका	३
सुमतिब्रह्म—	चारित्रशुद्धिविधान	४७५
सुमतिविजयगणि—	रघुवंशटीका	१६४
सुमतिसागर—	त्रैलोक्यसारपूजा	४८५
	दशलक्षणव्रतपूजा	४८६, ५४०
	षोडशकारणपूजा	५१७, ५५७
सुरेन्द्रकीर्त्ति—	अनन्तजिनपूजा	४५६
	अष्टाह्निकापूजाकथा	४६०
	छंदकीयकवित्त	३५५
	ज्ञानपंचविंशतिका व्रतोद्यापन	४८१
	(श्रुतस्कंधपूजा)	५४७
	ज्येष्ठजिनवरपूजा	५१६
	पंचकल्याणकपूजा	४६६
	पंचमासचतुर्दशीपूजा	५०४, ५४०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६
	सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन	५५५
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवार्तिक	२६१
सुयशकीर्त्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
सुल्हण कवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४
दैवज्ञ पं० सूर्य—	रामकृष्णकाव्य	१६४
भ० सोमकीर्त्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१
	सप्तव्यसनकथा	२५०
	समवशरणपूजा	५४६
सोमदत्त—	बड़ा सिद्धपूजा (कर्मदहनपूजा)	६३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	९९
	नीतिवाक्यामृत	३३०
	यशस्तिलकचम्पू	१८७
सोमदेव—	सूतक वर्णन	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	सिन्दूरप्रकरण	३४०
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८
	दशलक्षणजयमाल	७६५
	पद्मपुराण	१४८
	मेरुपूजा	७६५
	विवाहपद्धति	५३६
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८
हर्ष—	नैषधचरित्र	१७७
हर्षकल्याण—	पंचमीव्रतोद्यापन	५३६
हर्षकीर्त्ति—	अनेकार्थशतक	२७१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	छंदोशतक	३०६
	पंचमीव्रतोद्यापन	५०४
	भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
	योगचिंतामणि	३०१
	लघुनाममाला	२७६
	लब्धिविधानपूजा	५३३
	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
महाकविहरिचन्द्र—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
	योगबिंदुप्रकरण	११६
	षट्दर्शनसमुच्चय	१३६
हरिरामदास—	पिंगलछंदशास्त्र	३११
हरिषेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६, ५१४
	कथाकोश	२१६
हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि नाममाला	२७१
	अनेकार्थसंग्रह	२७१
	अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	५७३
	छंदानुशासनवृत्ति	३०९
	द्वाश्रयकाव्य	१७९
	धातुपाठ	२६०
	नेमिनाथचरित्र	१७७
	योगशास्त्र	११३
	लिंगानुशासन	२७७
	वीतरागस्तोत्र	१३६, ४१३
	वीरद्वात्रिंशतिका	१३८
	शब्दानुशासन	२६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शब्दानुशासनवृत्ति	२६४
	हेमीव्याकरण	२७०
	हेमीव्याकरणवृत्ति	२७०

हिन्दी भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकूमल—	शीलबत्तीसी	७५०
अखयराज—	चौदहगुणस्थानचर्चा	१६
	भक्तामरभाषा	७५५
अखयराम—	पद	५८५, ५८६
अगरदास—	कवित्त	७४८, ७६८
	कुंडलिया	६६०
अचलकीर्त्ति—	मनोरथमाला	७६४
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
		६५०, ६७०, ७७४, ६६४
	मंत्रनवकाररास	६४७
अजयराज—	चारमित्रोंकीकथा	२२५
	पद	५८१, ६६७
		७२४, ५८०, ५८१
	विनती	७७६, ७८३
	वंसतपूजा	७८३
ब्रह्मअजित—	हंसतिलकरास	७०७
अनन्तकीर्त्ति—	पद	५८५
अबजद—	शकुनावली	२८२
अभयचन्द—	पूजाष्टक	५१२
अभयचन्दसूरि—	विक्रमचौबोलीचौपई	२४०
मुनिअभयदेव—	थंसणपार्श्वनाथस्तवन	६१६
अमृतचन्द—	पद	५८६
अवधू—	बारहग्रनुप्रेक्षा	७२२
आणंद—	चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तवन	४३७
	तमाखूकीजयमाल	४३६
	पद	७७७
आनन्द—	कोकसार	३५३
आनन्दघन—	पद	७१०
आनन्दसूरि—	चौबीसजिनमातापिता स्तवन	६१६
	नेमिराजुलबारहमासा	६१८
	साधुवंदना	६१७
साह आलू—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६, ६६१
आशानंद—	पूजाष्टक	५१२
आसकरण—	समकितढाल	६२
इन्द्रजीत—	रसिकप्रिया	६७६, ७४३
इन्द्रजीत—	मुनिसुव्रतपुराण	१५३
उत्तमचंद—	पद	४४५
उदयभानु—	भोजरासो	७६७
उदयराम—	पद	७८६, ७६८
उदयलाल—	चारुदत्तचरित्र	१६८
	त्रिलोकस्वरुपव्याख्या	३२२
	नागकुमारचरित्र	१७६
ऋषभदास—	मूलाचारभाषार	५१६, ५३०
	रत्नत्रयपूजा	७६
ऋषभहरी—	पद	५८५
कनककीर्त्ति—	आदिनाथकीविनती	५६१
		७२५
	जिनस्तवन	७७६
	तत्वार्थसूत्रटीका	३०, ७२६
	पार्श्वनाथकीआरती	५६१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१
	पद	६६४, ७०२
		७२४, ७७४
	विनती	६२१
	स्तुति	६०१, ६५०
कनकसोम—	आद्रकुमारधमाल	६१७
	आषाढभूतिचौढालिया	६१७
	मेघकुमारचौढालिया	६१७
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०
कपोत—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
ब्र. कपूरचन्द—	पद	४४५
		५७०, ६२४
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१
	पद	७७७, ७९३
	साखी	७२३
कमलकलश—	पंचगणवाडीस्तवन	६१६
कमलकीर्ति—	आदिजिनवरस्तुति (गुजराती)	४३६
कर्मचन्द—	पद	५८७
कल्याणकीर्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७
किशन—	छहढाला	६७४,
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६
किशनदास—	पद	६४९
किशनलाल—	कृष्णबालविलास	४३७
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३
	पद	५६०, ७०४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	रात्रिभोजनकथा	२३८
कुवलयचन्द्—	नेमिनाथपूजा	७९३
कुशललाभगणि—	ढोलामारुवणीचौपई	२२५
कुशल विजय—	विनती	७८२
केशरगुलाब—	पद	४४५
केशरीसिंह—	सम्मेदशिखरविलास	९२
	वर्द्धमानपुराण	१५४
		१६६
केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
	सदयवच्छसावलिंगा की चौपई	२५४
केशवदास—I	वैद्यमनोत्सव	६४९
केशवदास—II	कवित्त	६४३, ७७०
	कविप्रिया	१६१
	नखसिखवर्णन	७७२
	रसिकप्रिया	७७१, ७९९
	रामचन्द्रिका	१९४
केशवसेन—	पंचमीव्रतोद्यापन	६३८
कौरपाल—	चौरासीबोल	७०१
कृपाराम—	ज्योतिषसारभाषा	२८४
		५९८
कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
कृष्णदास—	सतसईटीका	७२७
कृष्णराय—	प्रद्युम्नरास	७२२
खड्गमल—	सतियों की सज्झाय	४५१
खड्गसेन—	त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
		६८६, ६९०,
खानचन्द—	परमात्मप्रकाशबालावबोधटीका	१११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
खुशालचन्द—	अनन्तव्रतकथा	२१४
	आकाशपंचमीकथा	२४५
	आदित्यव्रतकथा (रविवारकथा)	७७५
	आरतीसिद्धांकी	७७७
	उत्तरपुराणभाषा	१४५
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	२२४ २४४, २४६
	जिनपूजापुरन्दरकथा	२४४
	ज्येष्ठजिनवरकथा	२४४
	धन्यकुमारचरित्र	१७३, ७२६
	दशलक्षणकथा	२४४, ७३१
	पद्मपुराणभाषा	१४६
	पल्यविधानकथा	२३३
	पुष्पांजलिव्रतकथा	२३४ २४४, ७३१
	पूजाएवंकथासंग्रह	४१६
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४ ७३१
	मुक्तावली व्रतकथा	२४५
	मेघमालाव्रतकथा	२३६ २४४
	यशोधरचरित्र	१८१, ७११
	लब्धिविधानकथा	२४४
	शांतिनाथपुराण	१५५
	षोडशकारणव्रतकथा	२४४
	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	२४४
	हरिवंशपुराण	१५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५८२, ६२४ ६६४, ६६८, ७०१, ७८३, ७९८
खेतसिंह—	नेमीश्वर का बारहमासा	७६२
	नेमीश्वरराजुलकोलहुरि	७७६
	नेमिजिनंदव्याहलो	६३८
खेमचन्द—	चौबीसजिनस्तुति	४३७
	पद	५८०, ५८३, ५९१, ६४६
गङ्ग—	पद्यसंग्रह	७१०
गंगादास—	रसकौतुक राजसभारंजन	५७६
गंगादास—	आदिपुराणविनती	७०१
	आदित्यवारकथा	७६५
	झूलना	७५७
	त्रिभुवनकीवीनती	७७२
गंगाराम—	पद	६१५
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
गारवदास—	यशोधरचरित्र	१६१
गिरधर—	कवित्त	७७२, ७८६
गुणकीर्त्ति—	चतुर्विंशतिछप्पय	६०१
	चौबीसगणधरस्तवन	६०६
	सीलरास	६०२
गुणचन्द्र—	आदीश्वरकेदशभव	७६२
	पद	५८१, ५८५, ५८७ ५८८
गुणनंदि—	रत्नावलिकथा	२४६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७९८
गुणप्रभसूरि—	नवकारसज्झाय	६१८
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	४४०
	शांतिनाथस्तवन	७०२
गुमानीराम—	पद	६९९
गुलाबचन्द—	कक्का	६४३
गुलाबराय—	बडाकक्का	६८५
ब्रह्म गुलाल—	कक्काबत्तीसी	६७९
	कवित्त	६७०, ६८२
	गुलालपच्चीसी	७१४
	त्रेपनक्रिया	७४०
	द्वितीयसमोसरण	५६६
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलब्याहलो	२३२
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७
गोविन्द—	बारहमासा	६९६
घनश्याम—	पद	६२३
घासी—	मित्रविलास	३३४
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तुति	६८५, ७२०
	पद	५८७, ७९३
	गुणस्थानचर्चा	८
चंद्रकीर्त्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५९४
चन्द्रभान—	पद	५९१
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासंग्रह	२२८
चम्पाबाई—	चम्पाशतक	४३७
चम्पाराम—	धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार	६१
	भद्रबाहुचरित्र	१८३
चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
चतर—	चन्दनमलयागिरिकथा	२२३
चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	मधुमालतीकथा	२३५
चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
चिमना—	आरतीपंचपरमेष्ठी	७९१
चैनविजय—	पद	५८८, ७९८
चैनसुखलुहाडिया—	अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५२
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५२
	पद	४४६, ७९८
	श्रीपतिस्तोत्र	४१८
छत्रपतिजैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०९
	मनमोदनपंचशतीभाषा	३३४
छाजू—	पार्श्वजिनगीत	४ ८
छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५, ६८५
छीहल—	पचेन्द्रियबेलि	६३८
	पंथीगीत	७६५
	पद	७२३
	वैराग्यगीत (उदरगीत)	६३७
छोटीलालजैसवाल—	तत्वार्थसारभाषा	३०
छोटेलालमित्तल—	पंचकल्याणकपूजा	५००
जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	६०५
जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२, ५८४, ६१५, ६९७, ६९९, ७२४, ७५७, ७८३, ७९८, ७९९

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनवाणीस्तवन	३६०
जगतराय—	पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	६७
	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२
जगनकवि—	रामबत्तीसी	४१४
जगराम—	पद	४०५, ६६८, ७८५
जगरूप—	प्रतिमास्थापककू उपदेश	७०
	पार्श्वनाथस्तवन	६८१
	श्वेतांबरमतके ८४ बोल	७७६
जनमल	पद	५८५
जनमोहन—	स्नेहलीला	७७१
जनराज—	षट्ऋतुवर्णनबारहमासा	६५६
जयकिशन—	कवित्त	६४३
जयकीर्त्ति—	पद	५८५ ५८८
	बंकचूलरास	३६३
	महिम्नस्तवन	४२५
	रविव्रतकथा	६६६
जयचन्दछाबडा—	अध्यात्मपत्र	६६
	अष्टपाहुडभाषा	६६
	आप्तमीमांसाभाषा	१३०
	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	१०४
	चंद्रप्रभचरित्रभाषा	१६६
	ज्ञानार्णवभाषा	१०८
	तत्वार्थसूत्रभाषा	२६
	देवपूजाभाषा	४६०
	देवागमस्तोत्रभाषा	३६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	परीक्षामुखभाषा	१३६
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
	समयसारभाषा	१२४
	सर्वार्थसिद्धिभाषा	४६
	सामायिकपाठभाषा	६६, ५६७
जयलाल—	कुशीलखंडन	५२
पांडे जयवंत—	तत्वार्थसूत्रटीका	२६
जयसागर—	चतुर्विंशतिजिनस्तवन (चौबीसीस्तवन)	६१६, ७०६
	जिनकुशलसूरिचौपई	६१८
जयसोमगणि—	बारहभावना	६१७
जवाहरलाल—	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
जसकीर्त्ति—	ज्येष्ठजिनवरकथा	२२५
जसराज—	बारहमासा	७८०
जसवतसिंहराठौड—	भाषाभूषण	३१२
जसुराम—	राजनीतिशास्त्रभाषा	३३५
जादूराम—	पद	४४५
जिनचंद्रसूरि—	आदीश्वरस्तवन	७००
	पार्श्वजिनस्तवन	७००
	बारहभावना	७००
	महावीरस्तवन	७००
	विनतीपाठस्तुति	७००
जिनसागरगणि—	नेमिस्तवन	४००
जिनसिंहसूरि—	चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	७००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	बीसतीर्थंकरस्तुति	७००
	शालिभद्रचौपई	७००
जिनचंद्रसूरि—	कयवन्नाचौपई	२२१
	क्षमाबत्तीसी	९४
जिनदत्तसूरि—	गुरुपारतंत्रएवंसप्तस्मरण	६१६
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६
पं० जिनदास—	चेतनगीत	७६२
	धर्मतरुगीत	७६२
	पद	५८१, ५८८, ६६८
		७६४, ७७२, ७७४
	आराधनासार	७५७
	मुनीश्वरोंकीजयमाल	५७१
		५७६, ६२२, ६५८
		६८३, ७५०, ७९१
	राजुलसज्झाय	७५०
	विनती	७७५
	विवेकजकडी	७२२, ७५०
	सरस्वतीजयमाल	६५८
		७७८,
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१
		६०३, ६२२, ६३९
		६५२, ७०३, ७१२
		७२३
	मालीरासो	५७९
जिनदासगोधा—	सुगुरुशतक	३४० ४४७
ब्र० जिनदास—	अठावीसमूलगुणरास	७०७
	अनन्तव्रतरास—	५६०
	चौरासीन्यातिमाला	७९५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धर्मपचविंशतिका	६१
	निजामणि	६५
	मिच्छादुक्कड	६८६
	रैदव्रतकथा	२४६
	समकितमिथ्यात्वरास/समकितविणबोधर्म	७०१
	सुकुमालस्वामीरास	३६६
	सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७
जिनरंगसूरि—	कुशलगुरुस्तवन	७७९
जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास	३६२
जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन	६१८
जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
जिनहर्ष—	धन्नरनिसाणी	३८७, ७३४
	उपदेशछत्तीसी	३२४
	पद	५९०
	नेमिराजुलगीत	६१८
	पार्श्वनाथकीनिशानी	४४८
जिनहर्षगणि—	श्रीपालरास	३६५
जिनेन्द्रभूषण—	बारहसौचौंतीसव्रतकथा	७९५
जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वरविधान	४९४
जीवणदास—	पद	४४५
जीवणराम—	पद	५८०
जीवराम—	पद	५९०, ७६१
जैतराम—	जीवजीतसंहार	२२५
जैतश्री—	रागमालाके दोहे	७८०
जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
जोधराजगोदीका—	चौआराधनाउद्योतकथा	२२५
	गोडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	जिनस्तुति	७७५
	धर्मसरोवर	९३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिजिनस्तवन	६१८
	प्रवचनसार	११४
	प्रीतिंकरचरित्र	१८३
	भावदीपक	७७
	वारिषेणमुनिकथा	२४०
	सम्यक्त्वकौमुदीभाषा	२५२, ६८६
	समन्तभद्रकथा	७५८
	पद	४४५, ६६४, ६६६, ७८६, ७९८
जौहरीलालबिलाला—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	५३५
	आलोचनापाठ	५६१
ज्ञानचंद—	लब्धिविधानपूजा	५३८
ज्ञानभूषण—	अक्षयनिधिपूजा	४५४
	आदीश्वरफाग	३६०
	जलगालणरास	३६२
	पोसहरास	७६२
ब्र० ज्ञानसागर—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४
	अष्टाह्निकाकथा	७४०
	आदिनाथकल्याणकथा	७०७
	कथासंग्रह	२२०
	दशलक्षणव्रतकथा	७६४
	नेमीश्वरराजुलविवाद	६१३
	माणिक्यमालाग्रंथ प्रश्नोत्तरी	६०४
	रत्नत्रयकथा	७४०
	लघुरविव्रतकथा	२४४
	सोलहकारणकथा	७४०
झांझूराम—	पद	४४५
टीकमचंद—	चतुर्दशीकथा	७५४, ७७३
	चंद्रहंसकथा	६३६
	श्रीपालजीकीस्तुति	६३६
	स्तुति	६३६
टीलाराम—	पद	७८२
टेकचंद—	कर्मदहनपूजा	४६५, ५१८, ७१२
	तीनलोकपूजा	४८३
	नंदीश्वरव्रतविधान	४६४, ५१८
	पंचकल्याणकपूजा	५०१
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३, ५१८
	पंचमेरुपूजा	५०५
	पुण्याश्रवकथाकोश	२३४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३१
	सुदृष्टितरंगिणीभाषा	६७
	सोलहकारणमंडलविधान	५५६
टोडर—	पद	५८२, ६१४, ६२३, ७६७, ७७६, ७७७
पं० टोडरमल—	आत्मानुशासनभाषा	१०२
	क्षपणासारभाषा	७
	गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा	४३
	गोम्मटसारजीकाण्डभाषा	१०
	गोम्मटसारपीठिका	११
	गोम्मटसारसंदृष्टि	१२
	त्रिलोकसारभाषा	३२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा	६६
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०
	लब्धिसारभाषा	४३
	लब्धिसारक्षपणासार	४३
	लब्धिसारसंदृष्टि	४३
टक्कुरसी—	कृपणछंद	६३८
	नेमीश्वरकीबेलि (नेमीश्वरकवित्त)	७२२
	पंचेन्द्रियबेलि	७०३
		७२२, ७६५
कविठाकुर—	णमोकारपच्चीसी	४३६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४
डालूराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५
	चतुर्दशीकथा	७४२
	द्वादशांगपूजा	४६१
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३
	पंचमेरुपूजा	५०५
डूंगरकवि—	होलिकाचौपई	२५५
डूंगावैद—	श्रेणिकचौपई	२४८
तिपरदास—	श्री रुकमणिकृष्णजी को रासो	७७०
तिलोकचंद—	सामायिकपाठभाषा	६६
तुलसीदास—	कवित्तबंधरामचरित्र	६९७
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७
		६७३
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपंचासिका	७५५
	पद	७१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
थानजीअजमेरा—	बीसतीर्थंकरपूजा	५२३
थिरूमल—	लूवणआरती	७७८
दत्तलाल—	बारहखडी	७४५
दयादयाल—	पद	५८७
दयालराम—	जकडी	७४९
दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	पद	७४९
दलजी—	बारहभावना	५७१
दलाराम—	पद	६२०
दशरथनिगोत्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
दास—	पद	७४९
मुनिदीप—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	४१५
दीपचन्द—	अनुभवप्रकाश	४८
	आत्मावलोकन	१००
	चिद्विलास	१०५
	आरती	७७७
	ज्ञानदर्पण	१०५
	परमात्मपुराण	११०
	पद	५८३
दुलीचंद—	आराधनासारवचनिका	५०
	उपदेशरत्नमाला	५१
	जैनसदाचारमार्तण्ड	
	नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
	जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
	निर्माल्यदोषवर्णन	६५
	पद	६६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्रतिष्ठापाठभाषा	५२२
	बाईसअभक्ष्यवर्णन	७५
	सुभाषितावली	३४४
देवचन्द—	मुष्टिज्ञान	३००
देवचंद—	अष्टप्रकारीपूजा	७६०
	नवपदपूजा	७६०
देवसिंह—	पद	६६४
देवसेन—	पद	५८६
देवाब्रिल—	उपदेशसज्झाय	३८१
देवापाण्डे—	जिनवरजीकीविनती	६८५
देवाब्रह्म—	कलियुगकोविनती	६१५, ६८५
	चौबीसतीर्थंकरस्तुति	४३८
	पद	४४६, ७८३, ७८५
	विनती	४५१, ६६५, ७८०
	नवकारबडीवीनती	६५१
	मुनिसुव्रतवीनती	४५०
	सम्मेदशिखरविलास	६३
	सासबहूकाझगडा	६४८
देवीचन्द—	हितोपदेशभाषा	७४४
देवीदास—	कवित्त	६७५
	जीववेलडी	७५७
	पद	६४६
	राजनीतिकवित्त	३२६, ७५२
देवीसिंहछाबडा—	उपदेशरत्नमालाभाषा	५२
देवेन्द्रकीर्त्ति—	जकडी	६२१
देवेन्द्रभूषण—	पद	५८७
	रविव्रतकथा	७०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	संकटचौथव्रतकथा	७६४
दौलतराम—	छहढाला	५७, ७४६, ७०७
	जिनस्तवन	७०७
	पद	४४६, ६५४
	बारहभावना	५६१, ६७५
दौलतरामपाटनी—	व्रतविधानरासो	७७६
दौलतराम—	आदिपुराण	१४४
	चौबीसदण्डकभाषा	५६, ४२६, ४४८, ५११, ६७२
	त्रेपनक्रियाकोश	५६
	पद्मपुराणभाषा	१४६
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	पुण्याश्रवकथाकोश	२३३
	सिद्धपूजाष्टक	७७७
	हरिवंशपुराण	१५७
दौलतआसेरी—	ऋषिमंडलपूजा	४६४
द्यानतराय—	अष्टाह्निकापूजा	७०५, ४६०
	अक्षरबावनी	६७६
	आगमविलास	४६
	आरतीसंग्रह	६२१, ६२२, ७७७
	उपदेशशतक	३२५, ७४७
	चर्चाशतक	१४, ६९४, ७६४
	चौबीसतीर्थंकरपूजा	७०४
	छहढाला	६५२, ६७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७
	गुरुअष्टक	७७७
	जकडी	६४३
	तत्त्वसारभाषा	७४७
	दशबोलपच्चीसी	४४८
	दशलक्षणपूजा	५१९, ७०५
	दानबावनी	६०५, ६८९
	द्यानतविलास	३२८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२
	धर्मविलास	३२८
	धर्मपच्चीसी	७१०, ७४७
	पंचमेरुपूजा	५०५, ७०५
	पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६९
		६१५, ४०६
	पदसंग्रह	४४५, ५८३
		५८४, ५८५, ५८६
		५८८, ५८९, ५९०
		६२२, ६२४, ६४३
		६४९, ६५४, ७०४
		७४६, ७८७
	भावनास्तोत्र	६१४
	रत्नत्रयपूजा	५२९, ७०५
	वाणीअष्टकजयमाल	७७७
	षोडशकारणपूजा	५११
		५१९, ५५६, ७०५
	संघपच्चीसी	३७५
	संबोधपंचासिका	१२८
		६०५, ६४८, ६८५, ६९३
		७१३, ७१६, ७२५
	संबोधअक्षरबावनी	११९
	समाधिमरणभाषा	१२६
	सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	४२९
	अष्टपदपूजा	५२४
द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७१
धनराज—	तीनमियांकीजकडी	६२१
	पद	७९८
	शिखरविलासभाषा	७९१
धर्मचन्द्—	अनन्तकेछप्पय	७५७
धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
धर्मपाल—	पद	५८८, ७९८
धर्मभूषण—	अंजनाकोरास	५६३
धर्मसी—	दानशीलतपभावना	६०
धीरजसिंहराठौड—	भाषाभूषण	६९८
नन्ददास—	अनेकार्थनाममाला	७०६
	अनेकार्थमंजरी	२७१, ७११
	पद	५८७, ७०४
		७७०
	नाममंजरी	६९७, ७६६
	मानमंजरी	२७६, ६९१
	विरहमंजरी	६२७, ७२६
	श्यामबत्तीसी	६८३
नन्दूराम—	योगसारभाषा	११६
	रूकमणबत्तीसी	७३२
नैणनन्दलाल—	[illegible]कवित्त	७८२
नवलकवि—	रसालकुंवरकीचौपई	५७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नथमलबिलाला—	अष्टाह्निकाकथा	२१५
	जीवंधरचरित्र	१७०
	दर्शनसारभाषा	१३३
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	महीपालचरित्र	१८६
	भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा	२३४, ७२०
	रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा	८३
	रत्नत्रयजयमालभाषा	५२८
	षोडशकारणभावना जयमाल	८८
	सिद्धान्तसारभाषा	४७
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१
नयविमल—	पद	५८१
नयनसुख—I	वैद्यमनोत्सव	३०४, ६०३, ६९५, ७६८, ७९४
नयनसुख—II	पद	४४५, ५८३
	भजनसंग्रह	४५०
नरपाल—	पद	५८८
नरेन्द्रकीर्ति—	ढालमंगलकी	६५५
	रत्नावलीव्रतों की तिथियों के नाम	६५५
नवलराम—	गुरुओंकीवीनती	७०४
	जिनपच्चीसी	६५१, ६७०, ६७५, ६९३, ७२५
	पद	४४५, ५८२, ५८६, ५९०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५ ७८२, ७८३, ७९८
	बारहभावना	११५, ४२९, ५७१
	भद्रबाहुचरित्र	१८३
	शिक्षाचतुष्क	६६८
नाथूरामदोसी—	समाधितंत्रभाषा	१२६
ब्रह्मनाथू—	चेतावनीगीत	७५७
	पद	६२२
	पार्श्वनाथस्तवन	६२२
नाथूराम—	अकलंकचरित्रगीत	१६०
	गीत	६२२
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६९
	जातकसार	६८३
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३९३
	रक्षाबंधनकथा	२३७
	स्वानुभवदर्पण	१२८
नाथूलालदोसी—	सुकुमालचरित्र	२०७
नानिगराम—	दोहासंग्रह	६२३
निर्मल—	पद	५८१
निहालचंद अग्रवाल—	नयचक्रभावप्रकाशिनी टीका	१३४
नेमीचन्द—	जकड़ी	६२२
	तीनलोकपूजा	४८३
	चौबीसतीर्थंकरोंकी वंदना	७७६
	पद	५८०, ६२२
	प्रीत्यंकरचौपई	७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१
	सुहरि	६२२
	विनती	६६३
नेमीचंद पाटनी—	चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा	४७२
	तीनचौबीसीपूजा	४८२
नेमीचंद बख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१
नेमीदास—	निर्वाणमोदकनिर्णय	६५
न्यामतसिंह—	पद	७६५
	भविष्यदत्ततिलका—सुन्दरीनाटक	३१७
	पद	७६५
पदमभगत—	कृष्णरुक्मिणीमंगल	२२१
पद्मकुमार—	आतमशिक्षासज्झाय	६१६
पद्मतिलक—	पद	५८३
पद्मनंदि—	देवतास्तुति	३६४
	पद	६४३
	परमात्मराजस्तवन	४०२
पद्मराजगणि—	नवकारसज्झाय	६१८
पद्माकर—	कवित्त	७५६
चौधरी पन्नालाल संघी—	आचारसारभाषा	४६
	आराधनासारभाषा	४६
	उत्तरपुराणभाषा	१४६
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	जिनदत्तचरित्र	१७०
	जीवंधरचरित्र	१७१
	तत्त्वकौस्तुभ	२०
	तत्त्वार्थसारभाषा	२३
	तत्त्वसारभाषा	२१
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	धर्मप्रदीपभाषा	६१
	नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४
	नवतत्त्ववचनिका	३७
	न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	पांडवपुराण	१५०
	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा	७०
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३७
	भक्तिपाठ	४४६
	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
	भूपालचौबीसीभाषा	४६१
	मरकतविलास	७८
	योगसारभाषा	११६
	यशोधरचरित्र	१६२
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३
	वसुनंदिश्रावकाचारभाषा	८५
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
	षट्आवश्यकविधान	८७
	श्रावकप्रतिक्रमणभाषा	८६
	सद्भाषितावलीभाषा	३३८
	सम्यक्त्वकौमुदीभाषा	२२७
	सरस्वतीपूजा	५५१
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सुभाषितावलीभाषा	३४४
पन्नालालचूधरीवाले—	पंचकल्याणकपूजा	५०१
	विद्वज्जनबोधकभाषा	८६
	समवसरणपूजा	८००
पन्नालालबाकलीवाल—	बालपद्मपुराण	१५१
परमानंद—	पद	६८४, ७७०
परिमल्ल—	श्रीपालचरित्र	२०१, ७७३
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	समाधितंत्रभाषा	१२६
पारसदासनिगोत्या—	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
	सारचौबीसी	४५२
पारसदास—	पद	६५४
पार्श्वदास—	बारहखडी	३३२
पुण्यरत्न—	नेमिनाथफागु	७४८
पुण्यसागर—	साधुवंदना	४५२
पुरुषोत्तमदास—	दोहे	६८७
	पद	७८५
पूनो—	पद	७८५
	मेघकुमारगीत	६६१, ७२२, ७४१, ७५०, ७६४, ७७५
	वीरजिणंदकीसंधावली	७७५
पूरणदेव—	पद	६६३
पेमराज—	वैदरभीविवाह	२४०
पृथ्वीराजराठौड—	कृष्णरुक्मिणिबेलि	३६४, ६५६, ७००
महाराजासवाईप्रतापसिंह—		
	अमृतसागर	२९६
	चंदकुंवरकीवार्ता	२२३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
प्रभुदास—	परमात्मप्रकाशभाषा	७६५
प्रसन्नचंद्र—	आत्मशिक्षासज्झाय	६१६
फतेहचंद—	पद	५७६, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३
बंशी—	न्हवणमंगल	७७७
बंशीदास—	रोहिणीविधिकथा	७८१
बंशीधर—	द्रव्यसंग्रहबालावबोधटीका	७६१
बखतराम—	पद	५८३, ५८६, ६६८, ७८३, ७८६
	मिथ्यात्वखंडन	७८
	बुद्धिविलास	७५
बखतावरलाल—	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७३
	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
बधीचन्द—	रामचन्द्रचरित्र	६६१
बनारसीदास—	अध्यात्मबत्तीसी	६६
	आत्मध्यान	१००
	कर्मप्रकृतिविधान	५, ३६०, ६७७, ७४६
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५, ४२६, ५६६, ५९६, ६०३, ६४३, ६४८, ६५०, ६६१, ६६२, ६६५, ६७०, ७०३, ७०५
	कवित्त	७०६, ७७३
	जिनसहस्रनामभाषा	६६०, ७४६
	ज्ञानपच्चीसी	६१४, ६२४, ६५०, ७४३, ७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानबावनी	१०५, ७५०
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०
	नवरत्नकवित्त	७४३,
	नाममाला	२७६, ७०६
	पद	५८२, ५८३
		५८५, ५८६, ५८६,
		५६०, ६१५, ६२१
		६२२, ६२३ ६६७
	पार्श्वनाथस्तुति	७२३
	परमज्योतिस्तोत्रभाषा	४०२
		५६०
	परमानंदस्तोत्रभाषा	५६२
	बनारसीविलास	६४०
		६८६, ७०६
	मोहविवेकयुद्ध	७१५, ७६४
	मोक्षपैड़ी	८०, ७१६
		७४६
	शारदाष्टक	७७६
	समयसारनाटक	१२३, ६०४
		६३६, ६४०, ६५७
		६ ०, ६८३, ६८८
		६८६, ६६४ ६६८
		७०२, ७१६, ७२०
		७२१, ७३१, ७५६
		७७८, ७८७
	साधुवंदना	६४०, ६५२
		७१६
	सिन्दूरप्रकरण	१४०, ७१०
		७१२, ७४६
बलदेव—	पद	७६८
बाबूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूजा	५३६
बालचंद—	पद	६२६
बिहारीदास—	आरती	७७७
	कवित्त	७७०
	पद	५८७
	पद्यसंग्रह	७१०
	बंदनाजकड़ी	४४६, ७२७
बिहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
		६८८, ७२७, ७६८
बुधजन—	इष्टछत्तीसी	६६१
	छहढाला	५७
	तत्त्वार्थबोध	२१
	दर्शनपाठ	४३६
	पञ्चास्तिकायभाषा	४१
	पद	४४५, ४४६, ५७१
		६४८, ६५३, ६५४
		७८५, ७६८
	बंदनाजकड़ी	४४६
	बुधजनविलास	३३२
	बुधजनसतसई	३३२, ३३३
	योगसारभाषा	११७
	षटपाठ	४१६
	संबोधपंचसिकाभाषा	५७०
	सरस्वतीपूजा	५५१
	स्तुति	७०५
बुधमहाचंद—	सामायिकपाठभाषा	६५
बुलाकीदास—	पाण्डवपुराण	१५०, ७४५
	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	७०
बूचराज—	टंडाणागीत	७२२, ७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भुवनकीर्त्तिगीत	६६६
भगतराम—	पद	७६८
भैयाभगवतीदास—	आहारके ४६ दोष वर्णन	५०
	अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	६६४, ७२०
	चेतनकर्मचरित्र	७४०
		६१३, ६०५, ६८६
	अनित्यपच्चीसी	६८६
	निर्वाणकाण्डभाषा	३६६
		४२६, ५६२, ५६५,
		५७०, ६५०, ५६६
		६००, ६०५, ६१४
		६२०, ६४३, ६५१
		६६२, ७०४, ७२०
	ब्रह्मविलास	३३३
	बारहभावना	७२०
	वैराग्यपच्चीसी	६८५
	श्रीपालजीकीस्तुति	६४३
	सप्तभंगीवाणी	६८८
भगौतीदास—	वीरजिणंदगीत	५६६
भगवानदास—	आ. शांतिसागरपूजा	४६१
		७८६
भगोसाह—	पद	५८१
भद्रसेन—	चन्दनमलयागिरी	२२३
भाऊ—	आदित्यवारकथा (रविव्रतकथा)	२३७, २४४
		६०१, ६८५, ७४०
		७४५, ९५६, ७६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५८७
	नेमीश्वरकोरास	६३८
भागचंद—	उपदेशसिद्धान्तरत्न माला	५१
	ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१७
	नेमिनाथपुराण	१४६
	प्रमाणपरीक्षाभाषा	१३७
	पद	४४५, ४४६, ५७०
	श्रावकाचारभाषा	६१
	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
भागीरथ—	सोनागिरपच्चीसी	६८
भानुकीर्त्ति—	जीवकायासज्झाय	६१६
	पद	५८३, ५८४, ६१५
	रविव्रतकथा	७५०
भारामल्ल—	धर्मपच्चीसी	७६६
	चारुदत्तचरित्र	१६८
	दर्शनकथा	२२७
	दानकथा	२२८
	मुक्तावलिकथा	७६४
	रात्रिभोजनकथा	२३८
	शीलकथा	२४७
	सप्तव्यसनकथा	२५०
भीषनकवि—	लब्धिविधानचौपई	७७२
भुवनकीर्त्ति—	नेमिराजुलगीत	६१८
भुवनभूषण—	प्रभातिकस्तुति	६३३
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
		४२६, ४४८, ६५२
		६६२, ७१६, ७२०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०
	गुरुओंकीवीनती	४४७, ५११, ६१४, ६४२, ६६३
	चर्चासमाधान	१५, ६०६, ६४६
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६
	जकडी	६५०, ७१६
	जिनदर्शन	६०५
	जैनशतक	३२७, ४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६६८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२
	दशलक्षणपूजा	५६२
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०, ७७७
	पंचमेरुपूजा	५०५, ५६६, ७०४, ७५६
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४, ७६१
	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा	६६
	पद	४४५, ५८०, ५८६, ५६०, ६१५, ६२०, ६४८, ६६४, ६५४, ६६४, ७७६, ७७७, ७८५, ७८६, ७६८
	बाईसपरीषहवर्णन	७५, ६०५
	बारहभावना	११४
	वज्रनाभिचक्रवर्त्तिकी भावना	८५, ४४८, ७३६
	विनती	६४२, ६६३, ६६४
	स्तुति	७१०
भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय वचनिका	६६
भेलीराम—	पद	७७६
भैरवदास—	पंचकल्याणकपूजा	५०१
भोगीलाल—	बृहद्घंटाकर्णकल्प	७२६
मंगलचंद—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	पदसंग्रह	४४७
मकरंदपद्मावतिपुरवाल—	षट्संहननवर्णन	८८
मक्खनलाल—	अकलंकनाटक	३१६
मजलसराय—	जैनबद्रीदेशकीपत्री	५८१
मतिकुसल—	चन्द्रलेहारास	३६१
मतिशेखर—	ज्ञानबावनी	७७२
मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	३६८
मनरंगलाल—	अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	४५४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७३
	निर्वाणपूजापाठ	४६६
मनरथ—	चिंतामणिजीकीजयमाल	६४४
मनराम—	अक्षरगुणमाला	७४६
	गुणाक्षरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	६६०, ७२३, ७२४ ७६४, ७६६, ७७६
मनसाराम—	पद	६६३, ६६४
मनसुखलाल—	सम्मेदशिखरमहात्म्य	९२
मनहरदेव—	आदिनाथपूजा	५११
मन्नालालखिन्दूका—	चारित्रसारभाषा	५६
	पद्मनंदिपच्चीसीभाषा	६८
	प्रद्युम्नचरित्रभाषा	१८२
मनासाह—	मानकीबडीबावनी	६३८
	मानकीलघुबावनी	६३८
मनोहर—	पद	४४५, ७६३, ७६४ ७८५, ७८९
मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि	१८, ७१४ ७३६
	ज्ञानपदवी	७१८
	ज्ञानपैडी	७५७
	धर्मपरीक्षा	३५७, ७१६
मलूकचंद—	पद	४४६
मलूकदास—	पद	७९३
महमत—	वैराग्यगीत	४१६
महाचन्द—	लघुस्वयंभूस्तोत्र	७१६
	षट्आवश्यक	८७
	सामायिकपाठ	४२९
महीचन्द्रसूरि—	पद	५७९
महेन्द्रकीर्त्ति—	जकडी	६२०
	पद	७८९
माखनकवि—	पिंगलछंदशास्त्र	३१०
माणकचंद—	तेरहपंथपच्चीसी	४४८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	४४७, ४४८, ७९८
	समाधितंत्रभाषा	१२५
	साधुबंदना	४५२
	हुण्डावसर्पिणीकाल दो वर्णन	९८
मानकवि—	मानबावनी	३३४, ६०१
	विनतीचौपडकी	७८१
	संयोगबत्तीसी	६१३
मानसागर—	कठियारकानडरीचौपई	२१८
मानसिंह—	आरती	७७७
	पद	७७७
	भ्रमरगीत	७५०
	मानविनोद	३००
मारू—	पहेलियां	६५१
मिहरचंद—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
मुकन्ददास—	पद	६९०
मेरूनन्दन—	अजितशांतिस्तवन	६१६
मेरूसुन्दरगणि—	शीलोपदेशमाला	२४७
मेला—	पद	७७६
मेलीराम—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	७८६
महेशकवि—	हमीररासो	३६७
मोतीराम—	पद	५९१
मोहन—	कवित्त	७७२
मोहनमिश्र—	लीलावतीभाषा	३६७
मोहनविजय—	चन्दनाचरित्र	७९१
	मानतुंगमानवतिचौपई	२३५
रंगविजय—	आदीश्वरगीत	७७९
	उपदेशसज्झाय	
रंगविनयगणि—	मंगलकलशमहामुनि चतुष्पदी	१८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रइधू—	बारहभावना	११४
रघुराम—	समासारनाटक	३३८
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५
रत्नकीर्त्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२
	नेमीश्वररास	६३८
		७२२
रतनचंद—	चौबीसीविनती	६४६
	देवकीकीढाल	४४०
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीरास	६१७
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५६४
रल्हकवि—	जिनदत्तचौपई	६८२
रसिकराय—	नेहलीला	६६४
राजमल—	तत्वार्थसूत्रटीका	३०
राजसमुद्र—	कर्मबत्तीसी	६१७
	जीवकायासज्झाय	६१६
	शत्रुञ्जयभास	६१६
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६
	सोलहसतियोंकेनाम	६१६
राजसिंह—	पद	५८७
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१
	सुन्दरशृंगार	६८३, ७२६
राजाराम—	पद	५६०
राम—	पद	६५३
	रत्नपरीक्षा	१५८
रामकृष्ण—	जकड़ी	४३८
	पद	६६८
रामचंद्र—	आदिनाथपूजा	६५१
	चंद्रप्रभजिनपूजा	४७४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७२, ६६६, ७२७, ७२६, ७७२
	पद	५८१, ६६८, ६८६
	पूजासंग्रह	५२०
	प्रतिमासान्तचतुर्दशी व्रतोद्यापन	५२०
	पुरुषस्त्रीसंवाद	७८६
	बारहखड़ी	७१५
	शांतिनाथपूजा	५४५
	शिखरविलास	६६३
	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
	सीताचरित्र	२०६, ७२५, ७५६
	सुपार्श्वनाथपूजा	५५५
ऋषिरामचन्द्र—	उपदेशसज्झाय	३८०
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५
	नेमिनाथरास	३६२
रामचन्द्र—	रामविनोद	३०२
रामदास—	पद	५८३, ५८८, ६६३, ६६७, ७७२
रामभगत—	पद	५८२
मिश्ररामराय—	बृहद्चाणिक्यनीति शास्त्रभाषा	३३६
रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
ब्र० रायमल्ल—	आदित्यवारकथा	७१२
	चिंतामणिजयमाल	६५५
	छियालीसठाणा	७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीचरित्र	७१०
	निर्दोषसप्तमीकथा	६७६
	नेमीश्वरफाग	३६३, ६०१
		६२१, ६३८, ७५२
	पंचगुरुकीजयमाल	७६३
	प्रद्युम्नरास	३६५, ६३६
		७१२, ७३७, ७४६
	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	४०८
	भविष्यदत्तरास	३६४, ५६४
		६४८, ७४०, ७५१
		७५२, ७७३, ७७५
	राजाचन्द्रगुप्तकीचोपई	६२०
	शीलरास	७४६
	श्रीपालरास	६३८
		६८४, ७१२
		७१७, ७४६
	सुदर्शनरास	३६६, ६३६
		७१२, ७४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ५६५
		५६६, ७१७, ७३४
		७४०, ७५२
		७४४, ७६२
साधर्मीभाईरायमल्ल—	ज्ञानानन्दश्रावकाचार	५८
रूपचंद—	अध्यात्मदोहा	७४६
	जकडी	६५०, ७५२
		६६१, ७५५
	जिनस्तुति	७०२
	पंचमंगल	४०१, ४२८, ४४७
		५१८, ५६५, ५७०
		६२४, ६४२, ६५०
		६५८, ६६१, ६६४,
		६७३, ७०४, ७०५
		७१५, ७२०
	पंचकल्याणकपूजा	५००
	दोहाशतक	७४०, ७४३
	पद	५८५, ५८७, ५८८
		६२४, ६६१, ७२४
		७४६, ७५५, ७६३
		७६५, ७८३
	परमार्थगीत	७६४
	परमार्थदोहा	७०६
	परमार्थहिंडोलना	७६४
	लघुमंगल	६२४, ७१६
	विनती	७६५
	समवसरणपूजा	५४६
पांडे रूपचंद—	तत्त्वार्थसूत्रभाषाटीका	६४०
रूपदीप—	पिंगलभाषा	७०६
रेखराज—	पद	७६८
लक्ष्मण—	चन्दकथा	७४८
लक्ष्मीवल्लभ—	नवतत्त्वप्रकरण	३७
लक्ष्मीसागर—	पद	६८२
लब्धिविमलगणि—	ज्ञानार्णवटीकाभाषा	१०८
पं० लाखो—	पार्श्वनाथचोपई	४४८
लाल—	पद	४४५, ६८६
लालचन्द—	आरती	६२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन	६१७
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६
	नेमिनाथमंगल	६०५, ७२२
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१
	पद	५८२, ५८३, ५८७
	पूजासंग्रह	७७७
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
	सम्मेदशिखरमहात्म्य	६२
ऋषि लालचद—	अठारहनातेकीकथा	२१३
	मरुदेवीसज्झाय	४५०
	महावीरजीचौढाल्या	४५०
	विजयकुमारसज्झाय	४५०
	शान्तिनाथस्तवन	४१७
	शीतलनाथस्तवन	४५१
लालजीत—	तेरहद्वीपपूजा	४८४
लालचंद—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५
लालवर्द्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८
लालसागर—	णमोकारछंद	६८३
लूणकरणकासलीवाल—	चौबीसतीर्थंकरस्तवन	४३८
	देवकीकीढाल	४३६
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा (चौढाल्या)	६२३
		७२३, ७७५, ७८०, ७६८
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७९
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२
		७८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वजिनपूजा	५०७
	पूजाष्टक	५१२
	षट्लेश्यावेलि	३६६
वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
वाजिद—	वाजिदकेअडिल्ल	६७३
वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके कवित्त	६७३
विजयकीर्त्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	पद	५८०, ५८२
		५८३, ५८४, ५८५
		५८६, ५८७, ५८६
	श्रेणिकचरित्र	२०४
विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
	शीलरास	३६५, ६१७
विजयमानसूरि—	श्रेयांसस्तवन	४५१
विद्याभूषण—	गीत	६०७
विनयकीर्त्ति—	अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
		७८०, ७६४
विनयचंद—	केवलज्ञानसज्झाय	३८५
विनोदीलाललालचंद—	कृपणपच्चीसी	७७३
	चौबीसीस्तुति	७७३, ७७६
	चौरासीजातिका जयमाल	३६६
	नेमिनाथकेनवमंगल	४४०
		६८५, ७२०, ७३४
	नेमिनाथकाबारहमासा	७५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पूजाष्टक	७७७
	पद	५९०, ६२३, ७५७, ७८३, ७९८
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३४
	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२
	राजुलपच्चीसी	६००, ६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८५, ७४७, ७५३
विमलकीर्त्ति—	बाहुबलीसज्झाय	४४९
विमलेन्द्रकीर्त्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६५८
	जिनचौबीसीभवान्तर रास	५७८
विमलविनयगणि—	अनाथीसाधचौढालिया	६८०
	अर्हन्नकचौढालियागीत	४३५
विशालकीर्त्ति—	धर्मपरीक्षाभाषा	७३५
विश्वभूषण—	अष्टकपूजा	७०१
	नेमिजीकीमंगल	५६७
	नेमिजीकीलहुरि	७४६, ७७८
	पद	४४५, ६६८
	पार्श्वनाथचरित्र	५६८
	विनती	६२१
	हेमभारी	७९३
विश्वामित्र—	रामकवच	६६७
विसनदास—	पद	५८७
वीरचंद—	जिनान्तर	६२७
	संबोधसताणु	३३९
वेणीदास [ब्र० वेणु]—	पांचपरवीव्रतकीकथा	६२१, ६८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
वृजलाल—	बारहभावना	६८५
वृन्दकवि—	वृन्दसतसई	३३६, ६७५, ७५१, ७८५
वृन्दावन—	कवित्त	६८२
	चतुर्विशतितीर्थंकरपूजा	४७१
	छंदशतक	३२७
	तीसचौबीसीपूजा	४८३
	पद	६२५, ६४३
	प्रवचनसारभाषा	११४
शंकराचार्य—	मुहूर्त्तमुक्तावलिभाषा	७९८
शांतिकुशल—	अञ्जनारास	३६०
ब्र० शांतिदास—	अनन्तनाथपूजा	६९०, ७९५
	आदिनाथपूजा	७९५
शालिभद्र—	बुद्धिरास	६१७
शिखरचंद—	तत्वार्थसूत्रभाषा	३०
शिरोमणिदास—	धर्मसार	६३, ६९९
ऋषिशिव—	नेमिस्तवन	४००
शिवजीलाल—	चर्चासार	१९
	दर्शनसारभाषा	१३३
	प्रतिष्ठासार	५२२
शिवनिधानगणि—	संग्रहणीबालावबोध	४५
शिवलाल—	कवित्तचुगलखोरका	७८२
शिवसुन्दर—	पद	७५०
शुभचन्द्र—	अष्टाह्निकागीत	६८६
	आरती	७७६
	क्षेत्रपालगीत	६२३
	पद	७०२, ७२४, ७७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शिवादेवीमाताकोआठवों	७२४
शोभाचन्द—	क्षेत्रपालभैरवगीत	७७७
	पद	५८३, ७७७
श्यामदास—	तीसचौबीसी	७५८
	पद	७६४
	श्यामबत्तीसी	७६६
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१
श्रीपाल—	त्रिषष्ठिशलाकाछंद	६७०
	पद	६७०
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६
	पद	५८३
श्रीराम—	पद	५६०
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१६
संतदास—	पद	६५४
संतराम—	कवित्त	६६२
संतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४
संतीदास—	पद	७५६
संतोषकवि—	विषहरणविधि	३०३
मुनिसकलकीर्त्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६८५
	कर्मचूरव्रतवेलि	५६२
	पद	५८८
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७
	मुक्तावलिगीत	६८६
	सोलहकारणरास	५६४
		६३६, ७८१
सदासागर—	पद	५८०
सदासुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१
	अकलंकाष्टकभाषा	३७६
	ऋषिमंडलपूजा	७२६
	तत्वार्थसूत्रभाषा	२६
	दशलक्षणधर्मवर्णन	५६
	नित्यनियमपूजा	४६६
	न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भगवतीआराधनाभाषा	७६
	मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८२
	षोडशकारणभावना	८८, ६८
सबलसिंह—	पद	६२४
सभाचन्द—	लुहरि	७२४
सवाईराम—	पद	५६०
समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
समयसुन्दर—	अनाथीमुनिसज्भाय	६१८
	अरहनासज्भाय	६१८
	आदिनाथस्तवन	६१६
	कर्मछत्तीसी	६१६
	कुशलगुरुस्तवन	७७६
	क्षमाछत्तीसी	६१७
	गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
		६१६
	गौतमपृच्छा	६१६
	गौतमस्वामीसज्भाय	६१८
	ज्ञानपंचमीबृहद्स्तवन	७७६
	तीर्थमालास्तवन	६१७
	दानतपशीलसंवाद	६१७
	नमिराजर्षिसज्भाय	६१८
	पंचयतिस्तवन	६१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५७६, ५८८
		५८६, ७७७
	पद्मावतीरानीग्राराधना	६१७
	पद्मावतीस्तोत्र	६८५
	पार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पुण्यछत्तीसी	६१८
	फलवधीपार्श्वनाथस्तवन	६१६
	बाहुबलिसज्झाय	६१६
	बीसविरहमानजकडी	६१७
	महावीरस्तवन	७३५
	मेघकुमारसज्झाय	६१८
	मौनएकादशीस्तवन	६२०
	राणपुरस्तवन	६१६
	बलदेवमहामुनिसज्झाय	६१६
	विनती	७३२
	शत्रुञ्जयतीर्थरास	६१७, ७००
	श्रेणिकराजासज्झाय	६१६
	सज्झाय	६१८
सहसकीर्त्ति—	ग्रादीश्वररेखता	६८२
साईदास—	पद	६२०
साधुकीर्त्ति—	सत्तरभेदपूजा	७३५, ७६०
	जिनकुशलकीस्तुति	७७८
सालम—	ग्रात्मशिक्षासज्झाय	६१६
साहकीरत—	पद	७७७
साहिबराम—	पद	४४५, ७६८
सुखदेव—	पद	५८०
सुखराम—	कवित्त	७७०
सुखलाल—	कवित्त	६५६
सुखानंद—	पंचमेरुपूजा	५०५
सुगनचंद—	चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा	४७३
सुन्दर—	कपडामाला का दूहा	७७३
	नायिकालक्षण	७४२
	पद	७२४
	सहेलीगीत	७६४
सुन्दरगणि—	जिनदत्तसूरिगीत	६१८
सुन्दरदास—I	कवित्त	६४३
	पद	७१०
	सुन्दरविलास	७४५
	सुन्दरश्रृंगार	७६८
सुन्दरदास—II	सिन्दूरप्रकरणभाषा	३४०
सुन्दरभूषण—	पद	५८७
सुमतिकीर्त्ति—	क्षेत्रपालपूजा	७६३
	जिनस्तुति	७६३
सुमतिसागर—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	६३८
		७६५
	व्रतजयमाला	७६५
सुरेन्द्रकीर्त्ति—	ग्रादित्यवारकथाभाषा	७०७
	जैनबद्रीमूडबद्रीकीयात्रा	३६६
	पद	६२२
	सम्मेदशिखरपूजा	५५०
सूरचंद—	समाधिमरणभाषा	१२७
सूरदास—	पद	६८४
		७६१, ७६३
सूरजभानग्रोसवाल—	परमात्मप्रकाशभाषा	११२
सूरजमल—	पद	५८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४
	बारहखडी	६६, ३३२, ७१५, ७८८
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६
	आदिनाथपूजा	६७४
	कवित्त	७७२
	जिनगुणपच्चीसी	४४७
	जिनयशमंगल	४४७
	पद	४४७, ७८६, ७६८
	निर्वाणकाण्ड	७८८
	नेमिनाथकीभावना	६७४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२
सेवारामसाह—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७०
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४
सोम—	चिंतामणिपार्श्वनाथ जयमाल	७६२
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८
सोमसेन—	पंचक्षेत्रपालपूजा	७६५
स्यौजीरामसौगाणी—	लग्नचंद्रिका	७२१
स्वरूपचंद—	ऋद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११, ६६३
	जयपुरनगरसंबंधी चैत्यालयोंकीवंदना	४३८, ५११
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	त्रिलोकसारचौपई	५११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा	४६८
	पंचकुमारपूजा	७५६
	पूजापाठसंग्रह	५११
	मदनपराजय	३१८
	महावीरस्तोत्र	५११
	बृहद्गुरावलीशांतिमंडल (चौसठऋद्धिपूजा)	४७६, ५११
	सिद्धक्षेत्रोंकीपूजा	५५३, ७८६
	सुगन्धदशमीपूजा	५११
हंसराज—	विज्ञप्तिपत्र	१७४
हठमलदास—	पद	६२४
हरखचंद—	पद	५८३, ५८४, ५८५
हरचंदअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	पंचकल्याणकपाठ	४००, ७६६
हुर्गुलाल—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
हर्षकवि—	चंद्रहंसकथा	७१४
	पद	५७६
हर्षकीर्त्ति—	जिणभक्ति	४३८
	तीर्थंकरजकडी	६२२
	पद	५८६, ५८७, ५८८, ५६०, ६२१, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०, ७६३, ७६४
	पंचमगतिवेलि	६२१, ६६१, ६६८, ७५०, ७५५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथपूजा	६६३
	बीसतीर्थंकरों की जकडी (जयमाल)	६४४, ७२२
	बीस विरहमानपूजा	५६५
	श्रावककीकरणी	५९७
	षट्लेश्यावेलि	७७५
	सुखघडी	७४६
हर्षचन्द—	पद	५८५, ६२०
हर्षसूरि—	अवंतिपार्श्वजिनस्तवन	३७९
पांडेहरिकृष्ण—	अनन्तचतुर्दशीव्रत कथा	७९६
	आकाशपंचमीकथा	७९४
	निर्दोषसप्तमीकथा	७९४
	निशल्याष्टमीकथा	७९५
हरिचरणदास—	कविवल्लभ	६८८
	बिहारीसतसईटीका	६८७
हरीदास—	ज्ञानोपदेशबत्तीसी	७१३
	पद	७७०
हरिश्चन्द्—	पद	६४९
हरिसिंह—	पद	५८२, ५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६९९, ७७२, ७७६, ७९९
	विनती	६६३
	स्तुति	७७६
हीरकवि—	सागरदत्तचरित्र	२०४
हीराचंद—	पद	४४७, ५८१
	पूजासंग्रह	५१९
हीरानंद—	पंचास्तिकायभाषा	४१
हीरालाल—	चन्द्रप्रभपुराण	१४६
हेमराज—	गणितसार	३६७
	गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१३
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७३३
	पंचास्तिकायभाषा	४१
	पद	५९०
	प्रवचनसारभाषा	११३
	नयचक्रभाषा	१३४
	बावनी	६५७
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०, ५९६, ६४८, ६६१, ७०७, ७७४
	साधुकीआरती	७७७
	सुगन्धदशमीकथा	२५४, ७९५
मुनिहेमसिद्ध—	आदिनाथगीत	४३६



शासकों की नामावलि

अकबर ६, १२२, १६७, ५६१, ५६२
(इकब्बर) ६८१, ७६७, ७७३
अजैपालपंवार ५६२
अणहलगुवाल ५६२
अनंगपालतुंवर ५६१
अरविंद ५६८
अलाउद्दीन ३५६, ३५६
(अलावदीन)
अलावलखां १५७
अलावद्दीनलोदी ५६
अहमदशाह २१६, ५६१
आलम २५१
औरंगजेब ६७, ४७८, ५५४, ६६८
औरंगसाहि पातसाहि ३१, ३६, ५६२
इन्द्रजीत ७४३
इब्राहीमलोधी १४२
इब्राहीम (सुलितान) १४५
ईसरीसिंह २२६
ईश्वरसिंह २३१
उदयसिंह २०६, २५१, ५६१, ५६२
उमैसिंह २१६
किशनसिंह ५६२
कीर्तिसिंह २६५
कुशलसिंह ४८
केसरीसिंह १४७
खैतसी ५६०
गयासुद्दीन ५३
गजुद्दीहबहादुर १२५
घडसीराम १७२
चन्द्रगुप्त ६२०
चित्रंगदमोडीये ५६२
छत्रसाल ४०६
जसवंतसिंह १७०, १८१, ३६६, ७७६
जगपाल ६६
जयसिंह (सवाई) ५३, ७१, ६३, ६६, १२०
१२८, २०४, ३०५, ४८२
५१५, ५२०, ५६१
जयसिंहदेव १४५, १७६
जहांगीर ४१, १४४
जेतसी ५६२
जैसिंह (सिधराव) ५६२
जोधावत ५६१
जोधै ५६१
टोडरमल ७९७
डूंगरेन्द्र १७२
तैतवो ५६१
देवडो ५६२
नाहरराव (पवार) ५६१
नौरंगजीव ३०५
नौरंग ४४८
पूरणमल्ल ११४
पेरोजासाह ७८
पृथ्वीराज १०७
पृथ्वीसिंह ७३, १४४, ६८३, ७६७
प्रतापसिंह २७, १४६, १८६ ४५७, ४६१
फतेसिंह ४८०
बख्तावरसिंह ७२६
बहलोलशाह ६२

बाबर १९३
बीकै ५९१
बुधसिंह ५, २००
भगवंतसिंह ३४
भाटीखेसे १५१, १८८
भारामल ५९१
भावसिंह ७१
भावसिंह (हाडा) ३९
भोज ५९१
भोजदेव ३५
मकरधुज ४३९
मदन
महमदखां १०
महमदसाह १५६
महमूदसाहि १८८
महाशेरखांन ५३
माधोसिंह १०४, १६२, ५५१, ६३९
माधवसिंह ६३८
मानसिंह ३४, १५६, १८४, १८९, १९२, १९६, ३१३, ४७९, ४८०
मालदे ५९१, ५९२
मूलराज १३२
मोहम्मदराज ६००
रणधीरसिंह ३८९
राजसिंह १३१, २७१, ३१३
राजामल्ल ७२९
रामचन्द्र ७७, २४०
रामसिंह २७, १४९, २७४, २७५, ६१०, ६११
रामस्यंघ २२६
रायचद ४४
रायमल्ल ३८१
रायसिंह २४९, ३२०
लालाह ५२२
लिछमणस्यंघ २२६
वसुदेव ४३९
विक्रमसाहि ५६७
विक्रमादित्य २५१, २५३, ६१२
विजयसिंह २८३
विमलमंत्रीश्वर ५९२
विशनसिंह २८३
वीदै ५९१
वीरनारायण (राजाभोजकापुत्र) ५९१
वीरमदे ५९२
वीरबल ६८१
शक्तिसिंह ३७
शाहजहां ६८२, ६९८
श्रीपाल ३५
श्रीमालदे १९०
श्रीराव ५६५
श्रेणिक ३६३
सलेमसाह ७७, २०९, २१२
सांवलदास १८४
सिकन्दर १४५
सूर्यसेन ४, १९४
सूर्यमल्ल २९९
संग्रामसिंह २९३
सोनकारे ५९१
हमीर ३७८, ५९१, ६०९

ग्राम एवं नगरों की नामावलि

अंजनगीई ७२९
अंबावतीगढ (आमेर) ४, ३४, ४०, ७१, १२०, १६३, १८७, १९६, ४५९
अकबरानगर ४७९
अकबराबाद ९, ३६१
अकब्बरपुर २५०
अकीर ३९७
अजमेर २१९, ३२१, ३४७, ३७३, ४६६, ५०५, ५९२, ७२९
अटोणिनगर १२
अणहिलपत्तन (अणहिल्लराट) १७५, ३५१
अमरसर ६१७
अमरावती ४८७
अवंती ६६, २७९, ३९७
अर्गलपुरदुर्ग (आगरा) २०६, ३४९
अराह्मयपुर १७
अलकापुरी ४३५
अलवर २४, ५९७
अलाउपुर (अलवर) १४४
अलीगढ (उ. प्र) ३०, ४३७
अवन्तिकापुरी ६६०
अहमदाबाद २३३, ३०५, ५९१, ५९२, ७५३
अहिपुर (नागौर) ८९, २५१
आंधी ३७२
अंबावती ३७२
आवां महानगर १९४
आंबेर (आमेर) १०७
आगरा १२३, २०१, २५५, ५९१, ७४६, ७५३, ७७१
आभानेरी ७४८
आमेर ३१, ७१, ९३, ११९, १२०, १३२, १३३, १७२, १८४, १८८, १९०, २३३, २६४, ३३७, ३६४, ३६५, ४२२, ४६२, ६८३, ७५९
आऊगढ १५१
आलमगंज २०१
आवर (आमेर) १८१
आश्रम नगर ३५
इन्दौर (तुकोगंज) ५४७
इन्द्रपुरी ३५८, ३६३
इंबावतिपुर (मालवदेश में) ३४०
इंदोखली ३७१
ईडर ३७७
ईसरदा २७, ३०, ५०३
उग्नियाबास ३१९
उज्जैन १२१, ६८३
उज्जैणी (उज्जैन) ५९१
उदयपुर ३९, १७९, १९६, २४२, २९३, ५९१
एकोहमा नगर ४५४
एलिचपुर १८१
औरंगाबाद ७०, ५६२, ६१७
कंकणलाट ३९७
कच्छोविदा ५९२

कटक २५४
कम्पोलपुर १९१
कमठाउ ३६७
कनौग्राम १९३
कनारा (जिला) २२
कर्णाटक ३८६
करहाटक ३६७
करौली ६०४
कलकत्ता १५१
कल्पवल्लीपुर ३६३
कलिंग ३६७
काकंदीग्राम २४९
काणोता ३७२
कानपुरकोट १३४
कामानगर १२०
कारंजा २०४
कालख ८२
कालाडेरा (कालाडेहरा) ४५, २१०
३०६, ३७२
किरात ३६७
किशनगढ ५४, २५३, ५६२
किहरोर २१८
कुंकुणदेश ५२२
कुचामण ४४१
कुंभनगर २२
कुंभलमेरुदुर्ग २५१
कुंभलमेर ३६७
कुरंगण ३६७
कुरुजांगलदेश १४९
केकडी २००
केरल ३६७
केरवाग्राम २५०
कैलाश १८२
कोटपुतली ७५७
कोटा ६४, २२७, ४५०
कोरटा ३२३
कौशाम्बी ५६२
कृष्णगढ १८३, २२१, २६८, ३१६
कृष्णाद्रह (कालाडेहरा) २१०
खण्डार ४८०
खतौली ३३०
खिराडदेश ७१
खेटक २५१
गंधार १५५
गऊड ३६७
गढकोटा ६३८
गाजीकाथाना ७१४
गिरनार ६७०
गिरपोर ३६२
ग्रीवापुर ४०८
गुजरात २२४
गुज्जर (गुजरात) ३६७
गुर्ज्जरदेश (गुजरात) ३६३
गुरूवनगर ४३६
गूलर ३७१
गोपाचलनगर (ग्वालियर) १५५, १७२, २६५, ४५३
गोलागिरि ३७२
गोवटीपुरी १८१
गोविन्दगढ ४१०
गौन्देर (गोनेर) ३७२

ग्वालियर १७२, ४५३
घड़सोला ४७५
घाटड़ै ३७१
घाटमपुर ४१२
घाटसल २३४
घऊड ३९७
चन्द्रपुरी ४१, १८८, ५३१
चन्द्रापुरी १७, ३०३
चन्देरीदेश ५३, १७१
चंपनेरी ५६३
चम्पावती (चाकसू) ३०२, ३२८
चम्पापुर १६४
चमत्कार क्षेत्र ६९३
चाकसू २२५, २८७, ४३४, ४६७, ४९८, ५६३, ७८०
चान्दनपुर ५४८
चावडल्य ३७२
चावली (आगरा) ५४७
चितौड़ २१३, ५९२
चित्रकूट ३९, १३९, २०९
चीतौड़ा १८५, १८६
चूक ५०२
चोमू ४४०
जम्बूद्वीप २१८
जयदुर्ग २७३
जयनगर (जयपुर) १६, ११२, १२४, १९८, ३०१, ३१६
(सवाई) जयनगर (जयपुर) १६६, १७०, २९८, ३१८, ३३०
जयपुर (सवाई) जयपुर ७, १६, २५, २७, ३१, ३४, ३६, ४२, ४४, ५२, ५३, ६१, ६९, ७१, ७२, ७४, ७७, ७९, ८५, ८९, ९२, ९३, ९६, ९८, १०२, १०४, ११०, १२१, १२८, १३०, १३४, १४०, १४२, १४५, १५२, १५३, १५४, १५५, १५८, १६२, १६९, १७२, १७३, १८०, १८२, १८३, १८८, १९५, १९६, १९७, १९८, २००, २०१, २०२, २०५, २०७, २२०, २२५, २३०, २३१, २३४, २३५, २३६, २३९, २५०, २५३, २५५, २६२, २७४, २७५, २८०, ३०२, ३०४, ३०८, ३०९, ३४१, ३५०, ३५७, ३६२, ३६४, ३७५, ३८६, ३९४, ४१०, ४११, ४२१, ४४५, ४५०, ४५६, ४६०, ४६१, ४६६, ४७२, ४८१, ४८७, ४९४, ४९६, ५०४, ५०५, ५११, ५२०, ५२१, ५२७, ५३३, ५४९, ५७७, ५९१, ६००, ६१५, ६१९, ६८३, ७१५, ७२९, ७४४, ७६८, ७७५, ७७६
जलपथ (पानीपत) ७०
जहानाबाद ४१, ७०, ९१, १४२, ५५२, ६९८
जागक ३८०

जालौर १०६, २०५, ५९२
जैतलपुर १३२
जैसलमेर ५११, ६२०
जोगिनीपुर २५, ३१, ९१, ४४९, ५०२, ६०१
जोधपुर २०५, ३८१, ५९१
झंझेर २६, ३४, ७४, २३१, २९३, ३०२, ३३३, ४५५, ४६१, ४६६, ४८७, ४९१, ६४४
झालरापाटन १६३
झालाणा ३७२
झिलती ३१४
झिलाय १७०, ३२९, ४७७
झोटवाडा ३७२
टहूटडो ३०२
टोंक ३२, १८९, २०३
टोडाग्राम १४८, ३१३
ड्योडीग्राम २९३
डिग्गी ४१
डिडवाना ३११, ३७१
ढूंढारदेश ३१९, ३२८
णागवचाल (नागरचाल) ३९७
तक्षकगढदुर्ग (टोडारायसिंह) ७७, १३८, १७५, १८३, २००, २०५, २३९, ३१३, ४९४
तमाल ३९७
तारणपुर २०१
तिजारा १४४, १५७
तिलंग ३९७
तिलास ३९७
तुरुक ३९७
तुरुष्क ३९७
तोडा (टोडा) ६०९
दक्खण ३, ९७
दविण ३९७
दाह ३६५
दिल्ली–देहली ३७, ८८, १२८, १४०, १५६, १७५, १९७, ४४८, ४४९, ५९१, ७५९, ७९७
दिवसानगर (दौसा) ३५५
दूदू १७२
दूनी ३८०
देवरणाग्राम २९१
देवगिरि (दौसा) १७३, २८९, ३६४
देवपल्ली १५६
दैलुली ९६
दैवल ३७१
दौसा–द्यौसा १७३, ३२८, ३७२, ३७३
द्रव्यपुर (मालपुरा) २६२, ४०६
द्वारिका ३९७
धवलक्कपुर ३९८
धारणानगर १८
धारानगरी ३५, १३३, १४५, १६९
नंदतटग्राम ६२
नंदपुर ७७४
नगर २२७, ५९२
नगरा ४१५
नयनपुर ११८
नरवरनगर ५२

नरंवल २९६
नरायणा ११७, ३५३, ३६२, ४१४
नरायणा (बड़ा) २८४
नलकच्छपुरा १४५
नलवर दुर्ग ५२४
नवलखपुर २१२
नांमल ६७२
नागरचालदेश ४४८
नागपुरनगर ३३, ३५, ८८, २८०, २६२
३८४, ४७३, ५४३
नागपुर (नागौर) ७३५, ७६१
नागौर ३७३, ४६६, ४८८
५९०, ७१८, ७६२
नामादेश ३७
निर्मलपुर ४०७
निरांणो (नरायणा) ६७०
निवासपुरी (सांगानेर) २८६
नीमेड़ा ७९६
नैवटा १९८, २५०, ४८४, ४८७
नैणवा १७, ३४१
पईठणपुर ४३९
पंचेवरनगर ४२, ४८०
पईन ३८७
पैनवाडनगर ७१
पनाको ५६२
पांचोलास ६३
पाटण २३०, ३०४, ३६६, ५९२
पाटनपुर ४४९
पानीपत ७७०
पालम ६८२
पाली ३९३
पावटा ६४९, ७८६
पावागिरि ७३०
पिपलाद ३९३
पिपलौन ६७३
पुन्या ७४१
पुरासागानेर ३८०
पूरवदेश ३६७
पेरोजकोट २७८
पेरोजापत्तन ६२
पोदनानगर ५१८
फतेहपुर ३७१
फलौधी ५६२
फागपुर ३४
फागी ३१, ३८, ३७०
फोफली ३७१
बंग १२७
बंगाल ४७८
बंधगोपालपुर ३६३
बंगरू ६६
बगरू-नगर ७४, ३६०
बणाहटा १४३, ४७८
बटेरपुर १३३
बनारस ४८३
बरवार ३६७
बराड ३६७
बसई (बस्सी) १८९, २६६, ४१५
बसवानगर ११५, १७०, ३२८, ४४६
४८४, ७३१
बहादुरपुर १९७, १४८

बागडदेश ६७, १५४, २३४
बाणपुर ११९
बामनगर ५७९
बारहदरी ३७२
बालाहेडी २८८
बासी ५०६
बीकानेर ५९१, ५९२, ६८४
बून्दी ८४, ४०९
बैराठ ६७, ५६४
बैराड (बैराठ) २०४
बौलीनगर ४८, १५६, १८३
ब्रह्मपुरी ६९८
भडौच ३७१
भदावरदेश २५४, ३४०
भरतखण्ड १४३
भरतपुर ३८९
भानगढ ३७२
भानुमतीनगर ३०५
भावनगर ११७
भिण्ड २५४
भिरूद २९७
भिलोड १६८
भैंसलाना ३०३
भोपाल ३७३
भृगुकच्छपुरी २१०
मंडोवर ५९१
मंढानगर ७०९
मांडोडी ३७१
मांडोगढ ५३
मुंबावती ७४
मंडलाणापुर २५१
मथुरा ४७८
मधुपुरी ३१९
मनोहरपुरा ७५९
मलारना ७७९
मरूस्थल ३९७
मसूतिकापुर ४०
मलयखेड २०४
महाराष्ट्र २५३
महुवा २५, २६४, ४५५, ४७३
महेबो ५९१
माधोपुर २९८
माधोराजपुरा ३३३, ४५५
मारवाड ४४०
मारोठ १९३, ३१२, ३७२
३८४, ५९२, ५९३
मालकोट ५९१
मालपुरा ४, २८, ३४, ५६, १२२, १३०
२३१, २४८, २४९, २६२, ३०१
३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५९२
६३९, ७६८
मालवदेश ३५, २००, ३४०, ३९७
माल्हपुर ३४
मिथिलापुरी ५४३
मुकन्दपुर ७७०
मुलतान १११, ५९२
मूलताण (मुलतान) १७७
मेडता १८४, ३७२, ५११
मेहूरग्राम ३०
मेदपाट २०५, ३८१
मेवाड ३७१
मेवाडा ३७२

मोहनवाडी	४६०	रैणवाल	४१०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	२००
मैनपुरी	४९	लखनऊ	१२५
मौजमाबाद	५६, ७१, १०४, १७४, १९२, २०८, २५५, ४११, ४१२, ४१६, ४१७, ५४३	ललितपुर	१७८
		लश्कर	२३९, ३८६, ७००
		लाखेरी	६६५
यवनपुर	३४३	लाडणा	१८९
योगिनीपुर (दिल्ली)	२६४	लावा	४२
यौवनपुर	३०७	लालसोट	३०
रणतभंवर (रणथंभौर)	३७१	लाहौर	६९८, ७७१
रणथम्भोरगढ	७१२, ७४३	लूणकर्णसर	७
रणस्तभदुर्ग (रणथंभौर)	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रुहितगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	३१४, २२३
राजपुर नगर		विदाष	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५९२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
रांडपुरा	४५०	वुन्दावती नगरी	५, ३९, १०१, १७८, २००, ४२२
राणपुर	६१६	वृन्दावन	४, ११०, २७९
रामगढ नगर	१४९, ३७०	वैसरे ग्राम	५३
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वैरागर ग्राम	४९, २१०
रामपुरा	५६, ४५१	वेराट (वैराठ)	१०६
रामसर (नगर)	१८१	वोराव (वोराज) नगर	५६४
रामसरि	६६	वेमल्लासा नगर	३५४
रायदेश	१६७	शाकमडगपुर	४५८
रावतफलोधी	५६१	शाकम्भाटपुर	३५०
राहेरी	३७२	शाहजहांनाबाद	४७, १०८, ५०२, ६०१
रैवाडी	९३, २५१		
रैणपुरा	५९२		

नाम	पृष्ठ
शिवपुरी	७३५
शुजाउलपुर	८०
शेरगढ	६८२, ७७१
शेरपुर	५०, २१२, ३६६
शेरपुरा	१३६
श्रीपत्तन	१३८
श्रीपथ	८५, ३६५
संग्रामगढ	२१४
संग्रामपुर	३४१, ५५४
सांचोरा	१६०
सांगानायर (सांगानेर)	६७८
सांगानेर	३४, ६३, ७३, ६३, १३६, १४४, १४८, १४६, १५३, १५६, १६४, १८१, २०२, २०७, २२६, ३०१, ३७१, ३८४, ३६५, ४०८, ४२०, ४६०, ४८५, ४८८, ७७५
सांगावती (सांगानेर)	१६५
सांभर	३७१
सम्भारणा नगर	२६०
सलावद	३४२
सबरपुर	४८७
समोरपुर	११७
सम्मेदशिखर	३०३, ६७८
सल्लक्षणपुर	२४३
सवाई माधोपुर	६३, ७०, १३२, १५४
	३७०, ६६३
सहारनपुर	३३७
सहिजानन्दपुर	२७६
साकेत नगरी	३

नाम	पृष्ठ
सागपत्तन नगर (सागवाडा)	६५४
सागवाडपुर	५००
सागवाडा	६७, १४१
सादडी	३११
सामोद	८३
सारकग्राम	७
सारंगपुर	८५, १२१
सालकोट	५६६
साहीवाड	४६०
सिकंदरपुर	४४
सिकंदराबाद	७७, १४२, १४७, ३६७
सिमरिया	५६५
सिरोंही	५६२
सीकर	४६६
सिरोज	८४, ६१३
सीलपुर	२५६
सीसोरनगर	१४, १२६
सुपोट	३६७
सुवेट	३६७
सुभोट	३६७
सुम्हेरवाली ग्रांघी	३७२
सुरंगपत्तन	३८१
सुप्रानगर	५८१
सूरत	६७०
सूर्यपुर	५५६
सेवाणो	५६१
सोनागिरि	५५६, ६७४, ७३०
सोझंना (सोजत)	११९
सौरठदेश	५३७
हांसी	१८१

न २५०, २६१, ७०१, ७२१
कंतपुर ५६७
सीर १८४
गढ) हरसौर ६३१
र्ग २००, २६६
पुर १६७
सूरि ७३४
ौती ६०४

हाथरस १४३
हिएौड २०२
हिमाचल ३६७
हिरणोवा ६४४
हिसार ६२, २७८
हीरापुर २३०
हुडवतीदेश १७
होलीपुर १८८



★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र पृ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	धिकउ	किथउ
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×९	३०४	३१४
१७×१९	१८१४	१८४४
३१×११	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थ सूत्र भाषा–जयवंत
३८×१०	वे. सं. २३१	वे. सं. १९९२
४४×५	५४५	५४६
४४×२४	वष	वर्ष
४८×२२	—	५९९
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	सह	साह
५९×१५	र. काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६९×१०	भूवरदास	भूधरमिश्र
६९×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविवेध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
९८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
९९×९	१४ वीं शताब्दी	१९ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

पृ० सं० पं० कि	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
[illegible]	ग्र	ग्र
[illegible]	१७२८	१८२८
		र० कालसं० १६६६
[illegible]	र० काल	ले० काल
[illegible]	१०४०	२०४०
[illegible]	सं० १[illegible]	सं० १५८५
[illegible]	क्र० सं० २[illegible] से ३०५८	क्र० सं० २१०० से २१५८
[illegible]	[illegible]	कवि तेजपाल
[illegible]	ढमल्ल	नाढमल्ल
[illegible]	३२१[illegible]	२३१८
[illegible]	भट्टा[illegible]	भट्टारक
[illegible]	१७[illegible]	१७१५
[illegible]	[illegible]	आकाशपंचमीकथा
२१६	[illegible]	देवेन्द्रकीर्त्ति
२४२	[illegible]	वर्द्धमानमानम्य
२६४	२१[illegible]०	[illegible]०
३१[illegible]	३[illegible]	३२८०
३१[illegible]	[illegible]	पद्मनन्दि
३२[illegible]	३[illegible]	३३६३
३३६×१३	[illegible]	भक्तिलाभ
३६६×—	३[illegible]–[illegible]	३६६–३७६
[illegible]८५×१	[illegible] स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
[illegible]८६×५	[illegible]	और
[illegible]६×४	[illegible]	कनककुशल
[illegible]	[illegible]	भूपालचतुर्विंशतिटीका
[illegible]	[illegible]	हिन्दी
[illegible]	[illegible]पुरी	भाषवासुवी
[illegible]	[illegible] पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
[illegible]	[illegible]	पाटोदी

पत्र पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
[illegible]	[illegible]	हिन्दी
[illegible]	"	[illegible]
[illegible]		हिन्दी
[illegible]	हिन्दी	[illegible]
[illegible]	"	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	मानसिंह
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	"	अपभ्रंश
[illegible]	[illegible]	[illegible]

